



रायवहादुर बुधसिंहजी दुधेरिया.

जैनधर्मसिंधुके आश्रयदाता

# जैनधर्मसिंधु.

यथामती सशोधन करके

श्रीपूज्याचार्य श्रीनरपतिचंद्र सूरेश्वर

जीकी आज्ञानुसार

रायवहाडुर बाबु साहब बुधसिंघजीकी

सहायतासे

संग्रह और प्रकाशकर्ता.

यति मनसुखलाल नेमिचंद्रजीने

मुयई नगरमें

निर्णयसागर प्रेसमें छापकर प्रसिद्ध किया

वीर सप्त २४३४ विक्कम सवत १९६४ सने १९०८

मर्ने हफ़ खाधीन

મિલનેકા પત્તા.

મુંવઈ.

યત્તિજ્ઞાનચંદ્રજી. ટિ. પાયધોણી શ્રીશાંતિનાથજી જૈન-  
મંદિર જૈનપત્ર ઓફીસ. ટિ. કષ્ટમહાજસ રોડ. મુંવઈ.  
સેઠ. કસ્તુરચંદ નાનચંદ ટિ' ત્રાંવાકાંટા.

અહમદનગર.

સેઠ વાહીલાલહાથીજાઈ. નવી કાપરુમારકેટ.

વાલાપુર.

શ્રીજિનમંરુલી ઓફીસ. નવાદેરાસર.

## अर्पण पत्रिका.

रायबहादुर बाबु साहेब श्रीयुत  
बुधसिंघजी डुधेरिया.

जो कि अजी मुर्शिदाबादांतर्गत अजिमगंजमें रहते हैं. इनोके आश्रयसे यह पुस्तक प्रकाशित हुवा इस लिए उक्त महोदयका सहित जीवन वृत्तांत प्रकाशित करनेकी आवश्यकता देखते हैं

बाबुसाहेबके पूर्व पुरुष हरजीमलजी डुधेरिया पहिले मारवा-  
रुशे मुर्शिदाबादमे व्यापारके लिए आय वसे थे हरजीमलके पुत्र सवाईसिंघजी और तिनके कुलदीपक सुपुत्र हरखचंदजी जो की अपने आश्रय दाता महोदयके पिता थे उन महोदयने व्यापार और जागिरदारीके व्यापार में कितनाक न्यायोपार्जित धन्य उपार्जन किया

बाबु साहेब हरखचंदजी सने १८६२ में स्वर्गस्थ हुवे. जब उनको सर्वलोग परिपूर्ण श्रीमंत कहते थे और वो अड्डी नामंदारी धारण करतेथे. वे महोदय अपने पीठानी रायबहादुर श्रीयुत बुधसिंघजी और श्रीयुत विसनसिंघजी डुधेरिया दो सुपुत्रें रख गए थे.

यह दोनो सुपुत्रें अपने पिताके मरण समय लघु (बाब्यास्थामे) थे उन समय अपने पिताकी लहमी और बन्नाजारी व्यापार उन दोनोके हाथमे आया यह दोनों महोदयें ज्यों ज्यों बढ़ते गए त्यों त्यों ऐक्य और सलाह संपसे रहते थेके द्वितीयाके चंडवत् अपना अच्युदयमें और बलबुद्धी पराक्रममें बढ़ते गए- राय बहादुर बुधसिंघजी विनयवान् धैर्यवान् विवेकी और मिलनसार व उद्योगी हुवे



रायवहापुर बाबु विसनसिंघजी वचपन सेंहि व्यापारी लाइ-  
नकी अद्भुत शक्ती धारक जिनोमें बुद्धी कला कुशलता,  
दृढता परिपूर्ण थी. सर्वजनोसे हाजिर जवाबी और विशेषकर  
बहुत परिणाम दर्शां थे.

उनोने धीरधारका धंधा बढ़ाया और कलकत्ता, सिराज-  
गंज, माडमेनसींग, जंगीपोर, अजीमगंजमें वेङ्कें खोली.

यह वेङ्केंमें वेङ्करोके अथाग परिश्रमसे अथाग विश्वास  
आनेसे फतेहमंद रीतीसे कार्यवाही चलने लगी. रहते रहते जमी-  
नदारो व जागीरदारोको धनधीरनेका कार्य सिरु किया जिस्के  
परिणामसे दोनों महोदयें बने जागीरदार होगए.

मुर्शादाबाद, माडमेनसींग, बीरजुम, नदीया, पसीकोट, पूर-  
णीया, दिनाजपुर, राजसाई, मालदा, जागलपुर, कुमका विग-  
रह ग्रामोंकी जमीनके मालेक हुवे

दोनों बधु मात्र धन्य संपादान करनेमेंहि प्रवर्त्ते थे एसा नहीं  
परं उनके साथ उनोका पुण्यकर्ममेंची प्रयत्न चालु था.

दीन दुःखी और हजारों गरव व लाचारोंके लिए अन्नक्षेत्र  
स्थापन कीये. जिस्की कारकीर्दी अजीजी ऊलाऊल ऊलकती है

( जैनमंदिरे, उपाश्रयें, धर्मस्थानेमें बहुत

धन व्यय कीया जिनकी विगत )

प्रथमतः अपनी जन्मचूमी मुर्शादाबादमें श्रीचितामणजी,  
नेमिश्वरजी, श्रीशामलाजी, अष्टापदजी, दादाजीके मंदीरोंका  
जीर्णोद्धार कराया.

नेमिश्वरजीके मंदिरमें दो रत्नकी प्रतिमा है और सिद्धच-  
क्रजीका गढ़ा हैं सो ची उक्त महोदयने स्थापित किये है.

अजीमगंजसे ठ मील अंतरसे कासम बजारमें श्रीनेमिनाथ-  
जीका मंदिरकाची जीर्णोद्धार कराया जिस्में रत्नकी प्रतिमाजी  
विशेष दर्शनके लायक है

रायबहादुरजीकी सखावत इकिले बंगालेमेंहीं नहीं है परं यत्र यत्र उनको आवश्यकीय लगा उहां धर्म धन खर्चनेमेंजी पीठी पानी जरी नहीं.

सुरत पासके कतार गामके जीणोंघारके वास्तेजी बहुत प्रशंसा पात्र मदद किई

हज्जीयकुंरु और सुविधिनाथ जगवंतके चवन, जन्म, ज्ञान, कल्याणकवाले काकंदीनगरीके तीर्थमे शीखरबंधी मंदीर बनाये.

महावीर स्वामीकी निर्वाणज्मी पावापुरीमें और जहा वीस तीर्थकर मोक्ष पधारेथे ऐसे श्रीसमेत शिखरजी तीर्थमें जानेके स्टेसन गरेकीमेजी मंदिरजी बनाया

जगीपुरमेंजी नया मंदीर बनाया जाता है. और मारवार, राजपुताना, अजीमगंज, शीखरजी, पावापुरी, काकंदी, राणी-गाम, आबुराज, उपरांत मुबझमेजी जैन यात्रालुयोको आश्रय-दायी धर्मशालायें उक्त महोदयकी ऊलाऊल अचल कीर्ति स्थंज रूप सुशोजित है

तीर्थाधिराज श्रीशत्रुंजय तीर्थकी तलहटीमें सदाव्रत दीया जाता है और सिद्धाचलजी, तलाजा, बला, प्रमुख कीतनेहि स्थानोंपर उक्त महोदयके नामकी जैनपाठशालायें स्थापित होके ज्ञानवृद्धीका उद्योगजी सिरु किया गया है

तदुपरांत उक्त महोदयने श्रीसिद्धाचलजी, पावापुरी, समेत शिखरजी, अयोध्याजी विगेरह स्थानोपर तीर्थयात्रा लेजानेका श्रीसघजी निकालके संघवी तिलकजी करायेथे

उक्त महोदय ऐसे पुण्य प्रतापी है की जिनकी संपूर्ण प्रशंसा लिखनेमें कलमकी ताकत नहीं है.

उक्त महोदयने १९०४ में बनोदे वाली तीसरी जैन श्वेतांबर कौनफरन्सके प्रमुख होके समस्त जैनोमे एक अग्रेसरपद लियाथा उक्त महोदयके धार्मिक और सार्वजनीक हितकार्यकी उदार

वृत्तिकी प्रतिष्ठा विजलीकी माफक प्रकाशक होती रही जिनका प्रत्यक्ष दृष्टांत यह है की सने १८८८ ता २ जानेवारीके रोज बंगालाके सरकारने अत्यंत प्रसन्न चित्त होके रायबहादुरका मानवंता खिताब समर्पित कीया और मुर्शीदाबाद लालबागकी कचेरीमें ओनररी मेजीस्ट्रेटका मानवंता होदा इनायत किया और अपनी वकतावर मर्हुम श्रीमती महाराणीकी कायमंर जुबीलीकि यादगारीके प्रसंगमे ता. २० मी जुन स. १९९९ के रोज बादशाही मानका “ खरीता ” दीया गया था. तैसेहिं ता. १ ली जानेवारी स १९०३ के रोज अपने नामदार शेहे-नशाह सातवे एरुवरने हिंदुस्थानकी बादशाही स्वीकारी जिसकी यादगारीमें देहली दरवारके जव्य समारंजके समय रायबहा-दुरकी उदारता और अपने लोकोपयोगी सार्वजनीक हितकार्यकी पीठानमे दुसरी वार “ खरीता ” दिया गया था. यह राजमान होदेकोजी अछी तोरसें दीपातेहे.

इस दरम्यान सने १८९९ मे दोनो ज्ञाज्ञ्योने सलाह संपसे अपना अपना व्यापार जिन्नजिन्न चलाना सिरु किया हे परं जमीन जागीरोंका हिस्सा ज्योका त्यों रक्खा हे.

यद्यपि व्यापारादि कार्य जिन्नथे तथापि पारस्परिय सलाह संपसे अजिन्नता समानहि प्रवर्तनथा

सने १८९४ मे रायबहादुर बाबु विसनचंदजी अपनी पीठे १४ वर्षकी उमरके राजा विजयसिंघजी नामक कुमारको ठोरुके यह फानी दुनियाको ठोरु गएथे

श्रीयुत बाबु विसनचंदजीके गणवाद अपने ठोटे जतीजे और उनकी वमी दोलत समालनेका और जोखमदारीका कार्य उक्त महोदयके सिरपर आय पमाथा

कायदेकी रीतसेंजी मुर्शीदाबाद जिंहे जजकी कोर्टसेंजीउक्त

महोदयही राजा विजयसिंघजी और उनकी दोलतके रक्षक निमाये गएथे.

उक्त महोदयने अपनी बहादुरी और चालाकीसे उस काममें अपनी फर्ज बहुतहि अच्छी तरहसे बजायके उनकी झुझीमें अधिकता करी और राजा विजयसिंघजीकों इंग्लिश, बंगाली, जैनधर्म प्रमुखकी अच्छी केलवणी देके आगे बढाये.

बाबु विजयसिंघजीकों सने १९०० मे ता. २२ मीसंवरके रोज लायक उमरवान होनेसे उनकी मिल्कतका कबजा सूपरत कर दीया.

अच्छी जैसी आशायी वैसेहि बाबु विजयसिंघजी एक युवक बुझीमान् पराक्रमी पुरुष हुए

बाबु विजयसिंघजीका स्वभाव उनके पिताके माफक सद्गुणी व परोपकारी और धर्मकार्यमेन्नी बहुत सतत प्रयत्नशील हुवा

उपरोक्त दोनो महोदयोंने पुण्यानुवंधी प्राग्जार पुण्यके उदयसे जो जो आवश्यकीय कार्य किये है जिनका पूरेपुरा वर्णन करनेमें हमारी कलमको पूरे तोरके शब्दकोश देखनेका अवसर देखना पकता है.

हमारे लोके गद्यके श्रीमंत श्रावक गणमे देशणोकवाले राय-बहादुर चादमलजी ढढा, रीयावाले राय सेठजी चादमलजी, अजमेरवाले रायबाहादुर सेठजी शोन्नागमलजी ढढा, जयपुरवाले राजमान्य सेठजी लक्ष्मीचंदजी व गुलाबचंदजी ढढा, एम. ए. रायबहादुर गणपतसिंघजी डुगर, रायबहादुर महाराज बहादुर सिंघजी डुगर, रायबहादुर नरपतसिंघजी डुगर, राय लक्ष्मीपति सिंघजी उन्नसिंघजी डुगर, रायबहादुर शतावचंदजी नाहार विगरह विगरह पुण्यवतोने यद्यपि अनेकानेक धार्मिक व्यवहारीक कार्यों करके जैन धर्मकों अनेकवार दीपाया है विशेषकर बाबु लक्ष्मीपति सिंघजीनेन्नी अनेकानेक स्थानोंपर जिन मंदिर बन-

वाये और रायवहापुर श्रीधनपतसिंघजीने तो श्रीसिद्धाचलजीकी तलहट्टीपर तीर्थनायककी स्थापना समय अंजनशलाका करवा-  
यके लोकेगढपर आय परुता अपूजैरोंका आक्षेप दूर कराय  
दियाथा जिनसे इन महोदयोंका इस अवसरपर उपकार मानना  
दुरस्त धारत है उपर लिखें महाशयोने यद्यपि लोके गढको  
शोचाया पर रायवहापुर श्रीमंत महोदय श्रीबुधसिंघजी दुधे-  
रियाने तो अनेक तीर्थस्थानोपर अपने पुण्यकर्मोपार्जित न्याय  
लक्ष्मीको सफल करनेमे अत्यतहि अगवानी करी है इतनाहिं  
नहि पर लोके गढवाले ढूँढक हैं ऐसा जो आरोप था उनको  
परास्त कर जैन धर्मको अत्यत दीप्यमान करश्रीसिंघमें ( तीसरी  
कोन्फरन्समें ) अग्रणीय पद धारण कीया इत्यादि इत्यादि  
कौटिक गुणगण संपन्न प्राग्भार पुण्यवंत सेठजी रायवहापुर  
श्रीबुधसिंघजी दुधेरियाकेहि हस्तकमलमे यह अनेकानेक जन-  
मनानंद प्रद यह ग्रंथ समर्पण कर महोदयके अचल कीर्ति स्थं-  
भेक साथ इनकोजी अचल कीर्तिवंत करते हैं जिनके वांचन  
मनन श्रवण कर अनेकानेक ज्ञव्य सत्त्वोंको अनंतानंद अद्भ्य  
ज्ञानपदकी प्राप्ति हो यह हमारी अजीष्टार्थ सिद्धी है तथास्तु.





सामायिक लेवानो विधि- .	.... ८९
सामायिक पारवानो विधि.	... ९१
पञ्चस्काण पारवानो विधि.	९१
पन्निसेहण विधि.	९२
देवसि प्रतिक्रमण विधि.	९३
राइ प्रतिक्रमण विधि	.. ९९
परकी प्रतिक्रमणविधि- .	१०२
चउम्मासी प्रतिक्रमण विधि.	१०६
संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि	१०६
पोसह ग्रहण विधि	१०७
पोसह पारण विधि.	११०
पोसह मंडला विधि.	११२
जय तिहुण चैत्यवंदन	११३
जय महाजस	११९
खरतर प्रात सामायक विधि	११९
खरतर देवसी प्रतिक्रमण विधि.	१२१,
खरतर राइ प्रतिक्रमण विधि	१२४
खरतर परकी प्रतिक्रमणविधि	१२७
अचल गच्छ प्रतिक्रमणविधि.	१२७
अचलगच्छ गमणागमण.	१३०
अचलगच्छ अव्यक्षेत्र कावजाव	१३१
अचलगच्छ लघुअतिचार	१३३
अचलगच्छ जयजय महाप्रभु चैत्यवं	१४०
अचलगच्छ गुरुवंदणा.	१४२
अचलगच्छ सजाय	१४४
अचलगच्छ सामायक पारणगाथा.	१४६
अचलगच्छ राउप्रतिक्रमण विधि.	१४८

लौकागच्छ सामायक विधि.	..	, १५०
लौकागच्छ सामायक पारण विधि	..	१५१
लौकेगच्छ प्रतिक्रमण विधि.		१५२
लौकेगच्छ लघुश्रुतिचार		१५३
लौकागच्छ राष्ट्रप्रतिक्रमण विधि.		१६०
लौकेगच्छ पारिकप्रतिक्रमणविधि		१६१
लौकेगच्छ चोमासी प्रतिक्रमणविधि.		१६२
लौकेगच्छ संवत्सरी प्रतिक्रमणविधि		१६२
लौकेगच्छ तपश्चितवणी काष्ठस्सग्ग		१६३
लौकेगच्छ नंदिका पाठ		१६६
सागरगच्छ प्रतिक्रमणविधि		१६७
श्रानंदसूरियगच्छ प्रतिक्रमणविधि		१६७
वडगच्छ प्रतिक्रमणविधि		१६७
राजसूरीयगच्छ प्रतिक्रमणविधि		१६७
लहुनी पोसाळ गच्छ प्रतिक्रमणविधि		१६७
कमलकलसा गच्छ प्रतिक्रमणविधि		१६७
कवल्लेगच्छ प्रतिक्रमणविधि		१६७
विजयगच्छ प्रतिक्रमणविधि		१६७
पायचंद्रगच्छ प्रतिक्रमणविधि		१६७
विमलकेवल सिद्धाचल चैत्यव		१६९
सुरकीन्नरनागनरिंदनतं २४ जिन चैत्यवं		१६९
आजदेव अरिहंत पंचतीर्थी चैत्यवं		१७०
सुविध धर्म बीज चैत्यवंदन		१७१
त्रिगडे वेठा वीरजिन पंचमी चैत्यवदन		१७१
महाशुदी आठम अष्टमी चैत्यवदन		१७२
शासननायकधीरजी एकादशी चैत्यवं		१७३
विशस्थानक चैत्यव पहिले पद अरिहंत.	...	१७४



विशस्थानक चैत्यवं चोवीस पनर.	१७४
रोहिणी चैत्यवं रोहिणीतपश्चारा	१७५
तीर्थवंदनचैत्यवं० सीमधर प्रमुखनमुं.	१७५
तीर्थकरराशी चैत्यवं० शांतिनमी०	१७६
अरिहंतनमो जगवंनमो चैत्यवं	१७६
जिनवर्ण चैत्यवं प्रज्ञप्रजने वासुपूज्य	१७७
जिनजगणना चैत्यवं प्रथम तीर्थकर.	१७७
जिनगणधर चैत्यवं गणधरचोराशी	१७७
परमेष्ठीगुण चैत्यवं. वारगुण अरिहंतदेव.	१७८
सीमंधरस्तुति श्रीसीमंधरजिनवर	१७८
सीमंधरस्तुति श्रीसीमंधर देवसुहकर	१७८
बीजीतिथीस्तुति दिन सकलमनोहर	१७९
पंचमीस्तुति. श्रावणसुदिनपंचमीए	१८०
अष्टमीस्तुति. मंगलआठकरीजस	१८०
एकादशीस्तुति एकादशीअतिरुअडी	१८१
शातिजिनस्तुति शातिजिनेसरसमरियें	१८१
आदिजिनस्तुति आदिजिनवरराया.	१८२
सिद्धचक्रस्तुति जिनशासनवंच्छित.	१८२
पर्युपणस्तुति सत्तरजेदि	१८३
पुण्यनुंपोपण	१८३
सिद्धाचलस्तुति श्रीसिद्धाचलतीर्थसार	१८४
पार्श्वजिनस्तुति संखेसरपासजी	१८४
सिद्धाचलस्तुति पुडरिगिरी महिमा	१८५
सिद्धचक्रस्तुति नितप्रतिहुप्रणमु	१८५
पार्श्वस्तुति ङॅङ्कीधपमप	१८६
पर्युपणस्तुति वलिवलिहुंध्यां	१८६
तीर्थमालाचैत्यव सद्गत्तया देवलोके	१८७

निर्वाणतप	२३७
केवलज्ञानतप.	"
जिनदीक्षातप	२३८
जिनचवन जन्मकट्याणक तप	"
गौतमपडघातप.	"
लघुपंचमीतप	"
पंचमीतप	२३९
पुंरुरीकतप.	"
गुणरत्नसंवत्सरतप.	"
आयविलवर्द्धमानतप.	२४०
अक्षयनिधितप	"
चांझायणतप.	२४१
श्रावकदिनचर्या	२४२
मंगलाष्टक	२४५
अथ द्वितीय वर्ग	२४६
अष्ट प्रकार पूजा विधि.	२५१
एकविसप्रकारी पुजाकिविधि.	२५४
पूजाकाफल	२५४
अथ त्रितीयवर्ग.	२५८
अथ चतुर्थवर्ग	२६५
अथ पंचमवर्ग	२६८
अथ षष्ठमवर्ग	२७३
वार्षिकचर्या	२७७
आजन्मकृत्य.	२७८
सीमधरजिन स्तवन.	२८१
युगमधरजिन स्तवन	२८२
बीजनुं स्तवन	२८३

निगोदायुतप. . .	. २२२
कमलार्जली. " "	२२२
मेरुकट्याणक. " . .	... २२३
लठतप.	२२३
पदकमीतप.	२२४
सिद्धवधुकंठाञ्जरातप. " .	२२४
आगम केवलीतप. " .	.. २२५
अंगविशुद्धीतप.	.. २२५
परतपालीतप .	२३१
त्रिपर्यतघनतप ..	२३१
वर्गतप	२३१
श्रेणितप	२३२
घनतप. " .	२३२
निर्वाणदीपकतप . .	२३२
वज्रीसकट्याणकतप. " .	२३३
कर्मचक्रवाद्यतप.	"
शिवकुमारवेदातप.	"
कर्मसुडनतप	"
अखंडदशमीतप. .	२३४
अमृताष्टमीतप.	"
सत्तरीसयजिनतप	"
अद्भुतःखद्भुतःखिततप .	"
पंचमेरूतप	२३५
बडासमवसरणतप	"
मोक्षदंडतप. .	२३६
दवयंतीतप. .	"
ऊणोदरीतप ....	.. " .

निर्वाणतप	२३५
केवलज्ञानतप.	"
जिनदीक्षातप	२३७
जिनचवन जन्मकट्याणक तप	"
गौतमपडघातप	"
लघुपंचमीतप	"
पचमीतप.	२३९
पुंरुरीकतप	"
गुणरत्नसंवत्सरतप.	"
आयधिलवर्द्धमानतप.	२४०
अक्षयनिधितप	"
चांद्रायणतप.	२४१
श्रावकदिनचर्या	२४२
मंगलाष्टक.	२४५
अथ द्वितीय वर्ग.	२४९
अष्ट प्रकार पूजा विधि	२५१
एकविसप्रकारी पुजाकिविधि	२५४
पूजाकाफल	२५४
अथ त्रितीयवर्ग.	२५७
अथ चतुर्थवर्ग.	२६५
अथ पचमवर्ग	२६७
अथ षष्ठमवर्ग	२७३
वार्षिकचर्या	२७७
आजन्मकृत्य.	२७७
सीमधरजिन स्तवन.	२७९
युगमधरजिन स्तवन	२८२
बीजनुं स्तवन	२८३

पंचमीनुंलघु स्तवन	..	.	२८४
ज्ञानपंचमीनुं स्तवन.	..	..	२८५
अष्टमीनुं स्तवन.	..	....	२८३
एकादशी स्तवन.	..	....	२८७
आराधनानुं स्तवन.	..	.	३०१
सिद्धचक्रजीनुं स्तवन समरीसारदमाय.			३११
नवपदजीनुं स्तवन, नवपदध्यान.	.		३१२
मङ्गलमुरतपाशकी.	..	..	३१३
आजमहोत्सवरंगरखीरी.		.	११
मङ्गलराजेगिरनार.			११
गावोमङ्गलचार.	.	.	३१४
कीजेमंगलाचार	.	.	११
आजकीरेणसोहाई		...	३१५
पोढोपोढोजीरूपजप्यारे.	...	...	११
राखोनाथवडाइ	.	...	११
आवोगावोवधाईमोरीसाथनीयां.	.	.	११
आजतोवधाई राजानाजिकेदरवार.	..		३१६
मंगलरेगावत सकलसुरनार.	.	.	११
आजकीरेणसोहानि	.	.	३१७
प्रभुकोनामअमोलहे	.	.	११
बलिहारीमरूदेविनन्दकी	.	.	११
जगदीशतुमेराप्रभु			३१८
आजप्रभुतेरेचरणलाग...			११
नेमजिनंदसुंआंखरुली	..	.	११
हृगनजररीदेखनदेमुखचंद	..	.	११
मेरीखागीलगन	..	.	३१९
रातगई अवप्रातहोनजयो	..	.	११

आदीजिनंद .. ..	..	..	..	..
नवरीया मोरी कोन उत्तारे वेडापार.	.	.	३२०	
जरलावेकटोराकेसरका	.	.	..	
ह्यारोमुनेकवमिलस्यैमनमेखु ..	..	.	.	
ईन्जाणीप्रजुकेवेगीआज्यो कजरा-	.	.	..	
नयनापीहरवागयेनयनावदल-			३२१	
सखीरीह्यारोनेमगयोगिरनार.	..	.	..	
मेतोदासीतुमारीविनादामकी ..	..	.	३२२	
वस्तुगतवस्तुनोलक्षण ..	..	.	..	
वसोजीमेरेनेननमेमहाराज			३२३	
दिनकेनाथदयालसवनकी			..	
प्रजुजीमोसेकवनवहानेघोखो.		.	..	
जविकनरसेबोशांतिजिनन्द		.	..	
मेरेजाईजुईगुलावरी .	.	.	३२४	
कुणवनवीरसमोसर्था			..	
आदिनाथजिनप्पाराहो			३२५	
समऊपरीमोहेसमऊपरी .	.	.	..	
चितमेधरोप्यारो			..	
दोनु दसतोमे अगीया रचावो .	.	.	३२६	
मेरोमनलागीरह्योमहावीरचरणमे .	.	.	..	
प्रजुमेरीविनतडीछरधारो	.	.	३२७	
नाथजयेवैरागीहमारो			..	
तारियेमोहेशीतलस्वामी			..	
क्योंकरजक्तिकरूपप्रजुतेरी			३२८	
ससारनामजिस्का	.	.	३२८	
मेश्वरजकरूसुनोमाहाराज ..	..	.	३२९	
सुमतीजिनदाप्रजुआजजुहारो. ...	...	.	..	

नेमिजिनतुमरो दरसनलागेप्यारोरे	.	....	॥
सूरतएसीसावरी.	...	.	॥ ३३०
सुमतीजिनमुजरोहमारोप्रभुलीजेजी	.	.	॥
हजुरतुमसैकहुमेंदिलकीवेजार	..	.	३३०
साहिवतेरीवदगीमैभुलतानही	. .	.	॥ ३३१
ढीलेनादानकुसमजायाचायके.	...	.	३३१
आवोनेमरहजावोसदन.	.	.	३३१
कधीप्रभुपदमेमनलायातोहोता.	.	.	३३३
शातीवदनकजदेखनैनमधुकरमनलीनोरे.	.	.	३३३
दिवानातेरेदरसकायारमैहु.	.	.	३३३
ध्यानमेंजिनकेसदाखलीनहोनाचाहीये.	.	.	३३४
आदीनाथजीदेखदरस,	.	.	३३४
जीनंदकीमेवारीठवीप्यारी	..	.	३३५
एहालअपनाकहुमैकासे	.	.	३३५
पचतीर्थजिनस्तुति.	.	.	३३५
आदिनाथनुस्तवन	.	....	३३६
सजवनाथजिनस्तवन	.	..	३३७
अर्जिनन्दनजिनस्तवन	.	.	३३८
सुमतिनाथजिनस्तवन	....	..	॥
पदमप्रभुजिनस्तवन.	.	.	॥ ३३९
सुपार्श्वनाथनुंस्तवन	.	.	॥
चक्रप्रभुजीनुस्तवन	.	.	३४०
सुविधिनाथस्तवन	..	.	॥
शीतलनाथस्तवन	.	.	३४१
श्रैयासजिनस्तवन	. .	.	॥
वासुपुज्यस्वामीनुंस्तवन	.	.	॥ ३४२
विमलनाथस्तवन	..	..	॥ ३४३









जुठी जगतकी माया.	४५३
मान कहा अब मेरा.	४५३
सुदयोन्नमत कहारे	४५४
जागरे वटाउ	४५४
विणसत चार न लागे.	४५४
जुठी जगमाया नर केरी.	४५५
मेरे घट ज्ञान ज्ञान ज्यो	४५५
थापुदगद्वका क्या विश्वासा	४५६
गौतमाष्टक ठंद.	४५७
तिजयपहुत	४५८
नमिऊणनामक स्मरण.	४५९
नक्तामर स्मरण	४६१
कट्याण मंदिर स्तोत्रम्.	४६७
वृद्ध गोतम स्वामीनो रास	४७३
महावीरजिन ठंद	४८१
नवकारनो ठंद.	४८३
शोलसतिनो ठंद	४८६
नवकार लघु ठंद	४८७
जिनपजर स्तोत्र	४८९
ग्रहशान्तिस्तोत्रम्	४९१
मंत्राधिराज स्तोत्रम्.	४९२
लघुजिनसहस्रनाम.	४९५
पार्श्वजिन स्तुति.	४९८
शखेश्वर जिनस्तव	४९९
पार्श्वजिन स्तोत्रम्	५००
परमात्मा स्तोत्रम्	५०२
नमस्कार स्तोत्रम्.	५०३



श्रीश्रमण सूत्र पगामसंज्ञाय.	११५
पाक्षिक अतिचार.	१६१
पाक्षिक सूत्र	१६६
पाक्षिक खामणा.	१८७
प्रातः पन्निहणकी विधि	१८८
संध्या पन्निहण विधि.	१९०
पोरसी विधि.	१९१
पञ्चखाण पारणेकि विधि	१९१
गोचरीआलोयण विधि.	१९४
स्थंडिलशुद्धिका विधि	१९५
संशारापोरसिकी विधि	१९६
पाक्षिक प्रतिक्रमण ठीकनी थुई.	१९६
ठमासि काउसग करनेकि विधि.	१९७
अंतिम देव वंदनकि विधि	१९८
सोल संस्कार नाम	६०१
संस्कार करानेयोग्य गुरु.	६०१
गर्जाधान संस्कार विधि	६०२
शांतिदेवीमंत्र	६०४
शांतिदेवीस्तोत्र	६०५
अथियोजनमंत्र	६०६
अथिवियोजनमंत्र	६०८
जैनवेदमंत्रोत्पत्ति	६०८
पुसवनसंस्कारविधि	६१०
जन्मसंस्कारविधि	६१३
जलमंत्र	६१४
रक्षामंत्र	६१५
चञ्चसूर्यदर्शनसंस्कारविधि	६१६

सूर्यमंत्र.	.	६१६
चंद्रमंत्र		६१७
श्रीराशनसंस्कारविधि.	.	६१८
पृथ्वीसंस्कारविधि	.	६२०
मातृकापूजन		६२१
सूचिकर्मसंस्कारविधि	..	६२४
नामकरणसंस्कारविधि		६२६
अन्नप्राशनसंस्कारविधि.	..	६२८
कर्णवेधसंस्कारविधि	.	६३२
द्वारकरणसंस्कारविधि		६३४
उपनयनसंस्कारविधि.		६३६
चारोंवर्णकी जित्ता	.	६४१
जिनोपवीतस्वरूप.		६४१
उपनयनार्थ	.	६४२
उपनयनश्चरत्त		६४५
मेखलामंत्र	.	६४७
कोपीनमंत्र.	. ..	६४८
उपनयनधारणमंत्र	.	६४८
व्रतवधनविधि	( नमस्कारमहिमा )	६५१
व्रतादेशविधि	.	६५२
ब्राह्मणव्रतादेश		६५५
हृत्रियव्रतादेश.	.	६५८
वैश्यव्रतादेश		६६०
चातुर्वर्ण्यव्रतादेश		६६१
व्रतविसर्गविधि.	.	६६६
गोदानविधि	.	६६८
दानग्रहणमंत्र	.	६७२

शूद्रकों उत्तरीय.	.	...	६५३
वटु करण विधि.	..		६५६
विद्यारंज संस्कार विधि.	...	.	६८१
विवाहसंस्कारविधि.	...	..	६८३
ब्राह्मविवाहप्रकार.	..	...	६८५
प्राजापत्यविवाहप्रकार.	..		६८६
आर्षविवाहप्रकार	..	....	६८६
दैवतविवाहप्रकार	..	.	६८६
कन्यादानविधि		.	६८९
कुलकरस्थापना.	..		६९१
हस्तबंधनमंत्र.	.	.	६९३
वेदिप्रतिष्ठा.	.		६९८
तोरणप्रतिष्ठा	.	.	६९९
अग्निस्थापनमंत्र	.	.	६९९
हवनमंत्र			७००
मधुपर्कादिविधि	.		७०१
प्रथमलाजाकर्म ( प्रथम प्रदक्षिणा )	.	..	७०२
द्वितीयलाजाकर्म ( द्वितीय प्रदक्षिणा )	.		७०४
तृतीयलाजाकर्म ( तृतीय प्रदक्षिणा )			७०५
चतुर्थलाजाकर्म ( चतुर्थ प्रदक्षिणा )			७०६
करभोचन.	.		७०८
वरवधूविसर्जन.	.	.	७०९
कुलकरविसर्जन	.		७१०
अतारोपसंस्कारविधि	..		७११
गुरुलक्ष्ण.	.		७१२
गुरु ऋषीसगुण.	.	.	७१३
श्रावक ऋषीसगुण.	.	.	७१४

सम्यक्कारोहण	७१५
देववन्दन	७१६
अर्घ्यादिस्तोत्र ( स्तवन )	७२२
सम्यक्तदंरुक	७२६
नियमप्रदान	७२७
देवतत्वस्वरूप	७३१
मिथ्यात्वस्वरूप	७३३
अदेवलक्षण	७३७
गुरुलक्षण	७३७
अगुरुलक्षण	७४०
धर्मलक्षण	७४१
अधर्मलक्षण	७४१
देशविरतीसामायिकारोपण	७४४
छादशत्रतारोपणविधि	७४५
प्रतिमावहनविधि	७४५
उपधानविधि	७५५
नवकारउपधान	७५५
उरियावहीउपधान	७६०
शक्रस्तव ( नमुश्रुणं ) उपधान.	१६७
चैत्यस्तव ( अरिहतचेष्टाण ) उपधान	७६४
लोगस्तउपधान	७६६
पुस्करवरदीउपधान	७६६
मिञ्जाणंबुञ्जाणंउपधान.	७६८
मालारोपणविधि	७६८
श्रावकदिनचर्या	७७१
कट्टपोक्तजिनपूजनविधि	७८०
अत्यसस्कारविधि	७८०



बृहत् आराधनाविधि.	....	. .	.... ८०६
क्षामणाविधि.	....	.	८१५
व्युत्सर्गविधि	...	...	८१६
अनशनविधि.	...	....	८२०
अग्निसंस्कारविधि.	. .	.	८२१
कालज्ञानस्वरूपं			.... ८२१
समाप्तिमंगल	..	..	८२४

## जाहिर खवर

हमारा तर्फसे "जैन विवेक प्रकाश" मासिक पुस्तक प्रत्येक मास प्रसिद्ध होता है जिस्मे वालबोध लिपी, हिंदी जापामें धार्मिक, व्यावहारीक, नैतीक, सामाजिक विविध विषयें प्रत्येक मास प्रगट होते हैं वार्षिक लवाजम टपालसह एक रुपया तीन आना.

- |   |                |
|---|----------------|
| ( १ ) पंच प्रतिक्रण सूत्र                         | किमत एक रुपया. |
| ( २ ) जैन संस्कार विधि.                           | किमत एक रुपया  |
| ( ३ ) चंपक चंदावती, गुजराती                       | किमत चार आना.  |
| ( ४ ) जैन गर्वावली                                | किमत तीन आना   |
| ( ५ ) वालमित्रस्तवनावली जागपहिला                  | ,, दो आना.     |
| ( ६ ) ,, जाग दुसरा                                | ,, चार आना.    |
| ( ७ ) ,, जाग तिसरा                                | , चार आना.     |
| ( ८ ) प्राप्तव्य मासिक गुजरातीवार्ता              | ,, एक आना      |
| ( ९ ) प्रश्नोत्तररत्नमाळा, व, मूर्खशतक हिंदी टीका | एक आना.        |
| ( १० ) मूर्त्ती पूजा मंडन हिंदी जापा              | किमत एक आना    |
| ( ११ ) विदेशी खाडकी चृष्टता                       | ,, एक आना.     |

मिलनेका पत्ता. मुंबई पायधोणी श्री शातिनाथजी मंदिर.

यतिज्ञानचंद्र.

# ॥ जैनधर्मसिंधुः ॥

॥ श्रीश्रावकस्य पंचप्रतिक्रमणादि सूत्राणि ॥

॥ १ ॥ प्रथमनवकार पंचमंगलरूप ॥

॥ नमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥  
नमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ नमो उवज्जायाणं ॥ ४ ॥  
नमो लोए सवसाहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच नमु  
कारो ॥ ६ ॥ सवपावप्पणासणो ॥ ७ ॥ मंग  
लाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं  
॥ ९ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ २ ॥ अथ पंचिंदिअ ॥

॥ पंचिंदिअ संवरणो ॥ तह नवविह वंजचेर  
गुत्ति धरो ॥ चउविह कसाय मुक्को ॥ इअ अ  
छारस गुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंच महव्वय जुत्तो ॥  
पंचविहायार पावणसमणो ॥ पंच समिजं ति  
गुत्तो ॥ वत्तीस गुणो गुरु मज्झ ॥ २ ॥ इति ॥ २ ॥

॥ ३ ॥ अथ खमासमण ॥

॥ इत्थमि खमासमणो वंदिजं ॥ जावणिज्जाए  
निसीहिआए ॥ मव्वएण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

॥४॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृष्ठा ॥

॥ इत्थकारि सुहराइ सुहदेवसी ॥ सुख तप  
शरीर निराबाध ॥ सुख संजम यात्रा निर्वहो  
गेजी ॥ स्वामी शाता ठेजी ॥ ज्ञात पाणीनो  
लाज देजो जी ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ ५ ॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इत्ठाकारेण संदिसह जगवन् ॥ इरियाव  
हियंपम्किमामि ॥ इत्थं इत्थामि पडिक्कमिजं ॥ १ ॥  
इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥ गमणाग  
मणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे वीयक्कमणे हरियक्कमणे ॥  
जसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कमा संताणा  
संकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥  
एगिंदिया बेइदिया तेइदिया चउरिंदिया पंचि  
दिया ॥ ६ ॥ अजिहया वत्तिया लेसिया संघा  
इया संघट्टिया परियाविया ॥ किलामिया उह  
विया ठाणाउठाणं संकामिया जीवियाउ ववरो  
विया ॥ तस्स मित्थामि डुक्कमं ॥ ७ ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ ६ ॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥ पायवित्तकरणेणं ॥  
विसोहीकरणेणं ॥ विसह्वीकरणेणं ॥ पावाणं

कम्माणं ॥ निग्घायण्ठाए ॥ ठामि कानुस्सग्गं  
॥ ८ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ ७ ॥ अथ अन्नञ्ज उससिएणं ॥

॥ अन्नञ्ज उससिएणं नीससिएणं खासिए  
णं वीएणं जंजाइएणं उडुएणं वायनिसग्गेणं  
जमलिए पित्तमुत्ताए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचा  
लेहिं ॥ सुहुमेहिं खेत्तसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं दिठ्ठि  
संचालेहि ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं ॥ अ  
जग्गो अविराहिजं ॥ हुज्ज मे कानुस्सग्गो ॥ ३ ॥  
जाव अरिहंताणं जगवंताणं नमुक्कारेण न पा  
रेमि ॥ ४ ॥ तावकायं ठाणेणं मोणेणं छाणेणं  
अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ ८ ॥ अथ लोगस्स ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तिब्बयरेजि  
णे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं ॥ चउवीसंपि केवली  
॥ १ ॥ उसज्ज मज्झिअं च वंदे ॥ संज्जव मज्झिणं  
दणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं  
च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सी  
अत्त सिज्जंस वासुपुज्जं च ॥ विमल मणंतं च  
जिणं ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं

च मद्धि वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च ॥ वंदा  
 मि रिठ्ठनेमिं ॥ पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं  
 मए अज्जिथुआ ॥ विट्ठय रयमत्ता पहीण जर  
 मरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तिठ्ठयरामे प  
 सीयंतु ॥ ५ ॥ कित्ति य वंदिय महिया ॥ जेए  
 लोगस्सउत्तमासिद्धा ॥ आरुग्ग बोद्धिजात्रं ॥  
 समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मल-  
 यरा ॥ आइचेसु अहियं पयासयरा ॥ सागर  
 वर गंजीरा ॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ६ ॥  
 सबलोए ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ ९ ॥ अथ सामायिकनुं पच्चखाण ॥

॥ करेमि जंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्च  
 खामि ॥ जाव नियमं पज्जुवासामि ॥ डविहं ति  
 विहेणं मणेणं वायाए काएणं ॥ न करेमि, न  
 कारवेमि तस्स जंते पक्किमामि निंदामि गरि  
 हामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ९ ॥

॥ १० ॥ अथ सामायिक पारवानुं ॥

॥ सामाइयवयजुत्तो ॥ जाव मणे होइ निय  
 म संजुत्तो ॥ बिन्नइ असुहं कम्मं ॥ सामाइअ  
 जत्तिआ वारा ॥ १ ॥ सामाइअंमि उ कए ॥ स

माणो इव सावर्ज हवइ जम्हा ॥ एएण कारणे  
 णं ॥ बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ ५ ॥ सामायि  
 क विधिं लीधुं विधिं पारिजं ॥ विधि करतां जे  
 कोइ अविधि हुजं होय ते सवि हुं मन वचन  
 कायाये करी ॥ मिठामि डुकडं ॥ इति ॥१०॥

॥११॥अथ जगचितामणि चैत्यवंदन ॥

॥ इठाकारेण संदिसह जगवन् ॥ चैत्यवंद  
 न करुं ॥ इत्थं ॥ जगचितामणि जगनाह ॥ जग  
 गुरु जगरक्खण ॥ जगवंधव जगसत्तवाह ॥ जग  
 ज्ञाव विअक्खण ॥ अछावय संठविअ ॥ रुव  
 कम्मठ विणासण ॥ चउवीसंपि जिणवर ॥ जयं  
 तु अप्पडिहयसासण ॥ १ ॥ कम्मजूमिहिं क  
 म्मजूमिहिं ॥ पढम संघयणि ॥ उक्कोसय सत्त  
 रिसय ॥ जिणवराण विहरंत लज्जइ ॥ नव को  
 डिहिं केवलिण ॥ कोडि सहस्स नव साहु गम्म  
 इ ॥ संपइ जिणवरवीसमुणि ॥ बिहुं कोडिहि  
 वरणाण ॥ समणह कोडि सहस डुअ ॥ थुणि जि  
 अनिच्च विहाणि ॥ १ ॥ जयउ सामी जयउ सामी ॥  
 रिसह सत्तुंजि ॥ उज्जित पहु नेमिजिण ॥ जयउ  
 वीर सच्चउरि मंण ॥ जरुअठहिं मुणिसुवय ॥

मुहरिपास डह डरिअखंमण ॥ अवर विदेहिं  
 तिब्बयरा ॥ चिहुं दिसि विदिसि जिं केवि ॥ ती  
 अणागय संपइअ ॥ वंडं जिण सवेवि ॥ ३ ॥  
 सत्ताणवइ सहस्सा ॥ लस्का ठप्पन्न अठकोडि  
 जं ॥ वत्तीस वासिआइं ॥ तिअलोए चेइए वंदे  
 ॥ ४ ॥ पनरस कोमि सयाइं ॥ कोमी बायाल  
 लस्क अम्वन्ना ॥ वत्तीस सहस असिआइं ॥  
 सासयविंवाइं पणमामि ॥ ५ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ १२ ॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ जं किंचि नाम तिब्बं ॥ सग्गे पायालि मा  
 णुसे लोए ॥ जाइं जिण विंवाइं ॥ ताइं सव्वा  
 इं वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ १३ ॥ अथ नमुहुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुहुणं अरिहंताणं, जगवंताणं ॥ १ ॥  
 आइगराणं, तिब्बयराणं, सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥  
 पुरिसोत्तमाणं, पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंमरी  
 आणं, पुरिसवरगंधहवीणं ॥ ३ ॥ लोगोत्तमा  
 णं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपई  
 वाणं, लोगपज्जो अगराणं ॥ ४ ॥ अजयदया  
 णं, चकुदयाणं ॥ मग्गदयाणं, सरणदयाणं,

बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसिया  
 णं ॥ धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर  
 चाउरंतचक्कवट्ठीणं ॥ ६ ॥ अप्पमिहयवर  
 नाणदंसणधराणं, विअट्ठ वज्जमाणं ॥ ७ ॥  
 जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं  
 बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सबन्नूणं  
 सब्बदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मरुक्क  
 य मद्वावाह मपुण्णरावित्ति ॥ सिद्धि गइ नाम  
 धेयं ॥ ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअ ज  
 याणं ॥ ९ ॥ जेअ अइअ जेअ सिद्धा ॥ जेअ  
 जवि र्ससंति णागए काले ॥ संपइअ वट्ठमाणा ॥  
 सबे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ १४ ॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उट्ठेअ अहेअ तिरि  
 अलोएअ ॥ सब्बाइं ताइं वंदे ॥ इहसंतो तव  
 संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ १५ ॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ जावंत केवि साहू ॥ जरहेरवय माहाविदे  
 हे अ ॥ सब्बेसिं तेसि पणउ ॥ तिविहेण तिदं  
 ड विरयाणं ॥ १ ॥ इति ॥



॥१६॥ अथ परमेष्ठिनमस्कार ॥

॥नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुज्यः॥

इति ॥ १६ ॥

॥१७॥ अथ उपसर्गहरस्तवन ॥

॥ जवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्म  
घणमुक्कं ॥ विसहरविसनिन्नासं ॥ मंगलक  
द्वाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं ॥  
कंठे धारेइ जो सया मणुजं ॥ तस्स गहरोगमा  
री डुठजरा जंति जवसामं ॥ २ ॥ चिठ्ठु दूरे  
मंतो ॥ तुज्ज पणामोवि बहुफलो होइ ॥ नर ति  
रिएसुवि जीवा ॥ पावंती न डुक्क दोहग्गं ॥ ३ ॥  
तुह सम्मत्तेल्लहे ॥ चिंतामणि कप्पपायवज्जहिए  
॥ पावंति अविग्घेणं ॥ जीवा अयरामरं ठाणं  
॥ ४ ॥ इअ संथुजं महायस ॥ जत्तिअरनिअिरे  
एहिअएण ॥ ता देव दिज्ज बोहिं जवे जवे  
पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥१८॥ अथ जयवीअराय

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ मम तुह  
पजावजं जयवं ॥ जवनिवेजं मग्गा ॥ एण सारि  
आ ठइ फलसिद्धि ॥ १ ॥ लोगविरुद्धज्जाउ ॥

गुरुजणपूआ परत्तकरणं च ॥ सुहगुरुजोणे  
तवयण ॥ सेवणा आत्तव मखंडा ॥ १ ॥ वरि  
जइ जइवि निआण ॥ वंधणं वीअराय तुह  
समए ॥ तहवि मम हुज्ज सेवा ॥ जवे जवे तुह  
चलणाणं ॥ ३ ॥ डक्कक्कळं कम्मक्कळं ॥ =  
माहि मरणं च बोहिलाजो अ ॥ संपज्जु न्ह  
एअं ॥ तुह नाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥ =  
मंगलमांगलयं ॥ सर्वकल्याणकारणम् ॥ ~~अथ~~  
सर्वधर्माणां ॥ जैनं जयति शासनम् ॥ ~~अथ~~

॥ १९ ॥ अथ अरिहंत चेइआणं ॥

॥ अरिहंत चेइआणं ॥ करेमि ~~कम्म~~

॥ १ ॥ वंदण वत्तिआए, पूअण ~~वत्तिआए~~

सक्कार वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए ॥ ~~अथ~~

लाज वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग ~~वत्तिआए~~

सधाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए ~~अथ~~

वह्ममाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ ३ ॥ ~~अथ~~

॥ १० ॥ अथ कल्लाणकंदं ~~अथ~~

॥ कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं ~~अथ~~

नेमिजिणं सुणिंदं ॥ पासं पयसं ~~अथ~~

॥ जत्तीइ वंदे सिरि वह्ममाणं ~~अथ~~

सारसमुद्गपारं ॥ पत्ता सिवं दिंतु सुइक्सारं ॥  
 सवे जिणंदा सुरविंदवंदा ॥ कट्ठाणवल्लीणवि  
 सालकंदा ॥ २ ॥ निव्वाणमग्गे वर जाणकप्पं॥  
 पणासिया सेस कुवाइदप्पं ॥ मयं जिणाणं स  
 रणं बुहाणं ॥ नमामि निच्चं तिजग प्पहाणं॥३॥  
 कुंदिङ्गोस्कीरतुसारवन्ना ॥ सरोजहत्ता कमले  
 निसन्ना ॥ वाएसिरी पुत्तयवग्गहत्ता ॥ सुहाय  
 साअह्म सया पसत्ता ॥ ४ ॥

॥ २१ ॥ अथ स्नातस्यानी स्तुति ॥

॥ स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे, शच्यावि  
 ज्ञोः शैशवे ॥ रूपालोकनविस्मयाहतरस, त्रांत्या  
 भ्रमच्चक्षुषा ॥ उन्मृष्टं नयनप्रज्ञाधवलितं, क्षीरो  
 दकाशंकया ॥ वक्रं यस्य पुनः पुनः सजयति,  
 श्रीवर्धमानो जिनः ॥ १ ॥ हंसांसाहत पद्मरे  
 णुकपिशक्षीरणवाञ्छोभृतैः ॥ कुञ्जैरप्सरसां प  
 योधरत्नरप्रस्पर्दिजिः कांचनैः ॥ येषांमंदररत्न  
 शैलशिखरे जन्माजिषेकः कृतः ॥ सर्वैः सर्वसु  
 रासुरेश्वरगणैस्तेषां नतोऽहं क्रमान् ॥ २ ॥ अ  
 र्हद्वक्रप्रसूतं गणधररचितं द्वादशांगं विशालं,  
 चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषजैर्धारितं बुद्धि

मन्त्रिः ॥ मोक्षाग्रद्वारचूतं व्रतचरणफलं हे  
यज्ञावप्रदीपं, ज्ञप्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुतमहम  
खिलं सर्वलोकैकसारम् ॥ ३ ॥ निष्पंकव्योम  
नीलद्युतिमलसदृशं बालचञ्जभदंष्ट्रं, मत्तं धं  
टारवेण प्रसृतमदजलं पूरयन्तं समन्तात् ॥ आ  
रूढो दिव्यनागं विचरति गगने कामदः काम  
रूपी, यक्षः सर्वानुचूतिर्दिशतु मम सदा सर्व  
कार्येषु सिद्धिम् ॥ ४ ॥ इति श्रीमहावीरजि  
नचतुर्दशीस्तुतिः ॥ ११ ॥

॥ अथ संसारदावानी स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं ॥ संमोहधूली  
हरणे समीरम् ॥ मायारसादारणसारसीरं ॥  
नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ ज्ञावावनाम  
सुरदानवमानवेन ॥ चूलाविलोलकमलावलि  
मालितानि ॥ संपूरिताजिनतलोकसमीहि  
तानि ॥ कामं नमामि जिनराजपदानि तानि  
॥ २ ॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराजिरामं ॥  
जीवाहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चू  
लावेलं गुरुगममणीसंकुलं दूरपारं ॥ सारं वी  
रागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥ आम्

लालो लधूली बहुलपरिमला लीढलो लालिमा ला ॥  
 ऊंकारारावसारामलदलकमलागारजूमिनिवासे ॥  
 ग्यासंज्ञारसारे वरकमलकरे तारहाराजिरा  
 मे ॥ वाणीसंदोहदेहे नवविरहवरं देहि मे देवि  
 सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ २३ ॥ अथ पुस्करवरदी ॥

॥ पुस्करवरदीवहे ॥ धायइसंमे अ जंबुदी  
 वे अ ॥ जरहे रवय विदेहे ॥ धम्माइगरे नमं  
 सामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपमलविधंसण,  
 स्स ॥ सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधर  
 स्स वंदे ॥ पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ २ ॥  
 जाई जरामरणसोगपणासणस्स ॥ कल्लाण  
 पुक्कलविसालसुहावहस्स ॥ को देवदाणवन  
 रिंदगणच्चिअस्स ॥ धम्मस्स सार सुवल्लभ  
 करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेओपयजं णमो जिणम  
 ए, नंदी सया संजमे ॥ देवं नाग सुवन्न कि  
 न्नर गण, स्ससुअ जावच्चिए ॥ लोगो जठ पइ  
 ठिजं जगमिणं, तेलुक्कमच्चासुरं ॥ धम्मो वह्जं  
 सासवजं, विजयजं, धम्मुत्तरं वह्ज ॥ ४ ॥ सुअस्स  
 जगवजं केरमि काउस्सगं वंदणवत्तिआए ॥

॥२४॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं, बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगया  
णं ॥ लोअग्ग मुवगयाणं, नमो सया सबसि  
द्धाणं ॥१॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली  
नमंसंति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे म  
हावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवस  
हस्स वद्धमाणस्स ॥ संसारसागराजं तारेइ  
नरंव नारिंवा ॥३॥ उज्झित सेल सिहरे, दिक्का  
नाणं निसीहिआ जस्स ॥ तं धम्मचक्क वट्ठि, अ  
रिठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दसदो  
य, वंदिया जिणवरा चउवीसं ॥ परमठ निठि  
अठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति२४

॥२५॥ अथ वेयावच्चं गराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्महिठि  
समाहि गराणं ॥ इति ॥ २५ ॥ करेमि काज  
स्सग्गं ॥ अन्नव ॥

॥२६॥ अथ जगवानादि वंदन ॥

॥ जगवान् हं ॥ आचार्य हं ॥ उपाध्याय  
हं ॥ सर्वसाधु हं ॥ इति ॥ २६ ॥

॥१७॥ अथ देवसिञ्च पडिक्कमणे ठाजं ॥

॥ इञ्जाकारेण संदिसह जगवन् ॥ देवसिञ्च पडिक्कमणे ठाजं ॥ इहं सवस्सवि देवसिञ्च इ चिंतिञ्च ॥ इञ्जासिञ्च इच्चिठिञ्च ॥ तस्स मि ङामि इक्कडं ॥ इति ॥ १७ ॥

॥१८॥ अथ इङ्गामि ठामि ॥

॥ इङ्गामि ठामि काजस्सग्गं ॥ जो मे देव सिज्जं अइञ्चारो कज्जं ॥ काइज्जं वाइज्जं माणसिज्जं जस्सुत्तो जम्मग्गो अकप्पो ॥ अकरणिज्जो इ ङाज्जं ॥ इच्चिचिंत्तिज्जं अणायारो ॥ अणिठिञ्च धो ॥ असावगपाजग्गो ॥ नाणेत्तह दंसणे चरित्ता चरित्ते ॥ सुए समाइए ॥ तिन्हं गुत्तीणं ॥ चज्जन्हं कसायणं ॥ पंचन्हमणुवयाणं ॥ तिन्हं गुण वयाणं ॥ चज्जन्हं सिक्कावयाणं ॥ बारसवि हस्स सावगधम्मस्स ॥ जं खंडिञ्चं जं विरा हिञ्चं ॥ तस्स मिङ्गामि इक्कडं ॥ इति ॥ १८ ॥

॥१९॥ अथ अतिचारनी आठ गाथा ॥

॥ नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमित हय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा जणिज्जं ॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे

उवहाणे तदय निन्हवणे ॥ वंजण अठ तडुन्न  
 ए, अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ निस्संकि  
 अ निक्कंखिअ, निव्वित्तिगिन्हा अमूढ दिठीअ॥  
 उववूह ठिरीकरणे, वडल पचावणे अट्ट ॥ ३ ॥  
 पणिहाणजोगजुत्तो पंचहिं समिईहिं तीहिं  
 गुत्तीहिं ॥ एस चारित्तायारो, अठविहोहोइ ना  
 यवो ॥ ४ ॥ बारसविहंमि वि तवे, सञ्चितरवा  
 हिरे कुसलदिठे ॥ अगिलाइ अणाजीवी, ना  
 यवो सो तवायारो ॥ ५ ॥ अणसणमूणोअरि  
 या, वित्ती संखेवणं रसञ्चारु ॥ कायकिळेसो  
 संली, ए याय ववो तवो होई ॥ ६ ॥ पाय  
 वित्तं विणउं, वेयावच्चं तहेव सञ्चारु ॥ जाणं उ  
 रसग्गो विय, अञ्चितरउं तवो होई ॥ ७ ॥ अण  
 गूहिअ वल विरिउं, पडिक्कमइ जो जुहुत्त मा  
 उत्तो ॥ जुंजइअ जहायामं, नायवो वीरिआया  
 रो ॥ ८ ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ ३० ॥ अथ सुगुरुवांदणां ॥

॥ इहामि खमासमणो वंदितुं, जावणि  
 जाए निसीहिआए ॥ अणुजाणइ मे मि उग्ग  
 हं निसीहि ॥ अहो कायं काय संफासं, खम



णिज्जो जे किलामो ॥ अप्पकिलंताणं बहु सुजे  
 ण जे, दिवसो वइकंतो जत्ता जे ॥ जवणिज्जं  
 च जे, खामेमि खमासमणो ॥ देवसिआए वइक  
 मं आवसिआए, पन्निमामि खमासमणाणं ॥  
 देवसिआए, आसायणाए ॥ तित्तीसन्नयराए  
 जं किंचि मिहाए, मण्डुकमाए वयड्कडए ॥  
 कायड्कमाए कोहाए, माणाए, मायाए, लोना  
 ए, सब्बकालिआए ॥ सब्ब मिहोवयाराए, सब्बध  
 म्माइकमणाए ॥ आसायणाए जो मे अइआ  
 रो कउं, तस्स खमासमणो पन्निमामि ॥ निं  
 दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ बी  
 जीवारने वांदणे आवसिआए ए पद न कहेवुं  
 अने रात्रियें राइउं वइकंतो, तथा चउमासीयें  
 चउमासी वइकंतो, पस्कीयें पस्को वइकंतो सं  
 वत्तरीयें संवत्तरो वइकंतो ॥ एवी रीतें पाठ क  
 हेवो ॥ इति ॥ ३० ॥

॥ ३१ ॥ अथ देवणिअं अलोउं ॥

॥ इहाकारेणसंदिसह जगवन् देवसिअं आ  
 लोउं इहं ॥ आलोएमि जोमेण ॥ इति ॥ ३१ ॥

॥३२॥ अथ सातलाख ॥

॥ सात लाख पृथ्वीकाय ॥ सात लाख  
अप्पकाय ॥ सात लाख तेजकाय ॥ सात लाख  
वाजकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥  
चउद लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ वे लाख  
वेइंजिया॥वे लाख तेंजिय ॥ वे लाख चौरिजिया॥  
चार लाख देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार  
लाख तिर्यंच पंचेंजिय ॥ चौद लाख मनुष्य ॥  
एवं कारे चौराशीलाख जीवायोनिमांदि, माहारे  
जीवें जे कोइजीव हण्यो होय, हण्णाव्यो होय, ह  
णता प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सबेहुं 'मनेवचने  
कायायें करीतस्स मिठामि डक्कं ॥इति॥ ३२ ॥

॥३३॥ अथ अठार पापस्थानक ॥

॥ पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद त्री  
जें अदत्तादान, चौथे मैथुन, पांचमे परिग्रह  
बळे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे  
लोभ, दशमे राग, इग्यारमे द्वेष, बारमे कल  
ह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमें पैशुन्य, पन्नरमे  
रति अरति, सोलमे परपरिवाद, सत्तरमे माया  
मृषावाद, अठारमे मिथ्यात्वशल्य, ए अठार पा

पस्थानमांहे, म्हारे जीवें जे कोइ पाप सेव्युं  
 होय, सेंवराव्युं होय, सेवता प्रत्यें अनुमोद्युं  
 होय, ते सबे हुं मनैं, वचनैं, कायायें करी तस्स  
 मिळामि डक्कमं ॥ इति ॥ ३३ ॥

॥३४॥ अथ सबस्सवि ॥

॥ सबस्सवि देवसिअ डच्चिंतिअ, डप्पासी  
 अ डच्चिठ्ठिअ ॥ इत्ताकारेण संदिसह जगवन्  
 इत्तं ॥ तस्स मिळामि डक्कडं ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥३५॥ अथ श्रावकवंदितासूत्र ॥

॥ वंदितु सब सिद्धे, धम्मायरिएअ सब  
 साहूअ ॥ इत्तामि पन्निक्कमिजं, सावगधम्माइ  
 आरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह  
 दंसणे चरित्तेअ ॥ सुहुमो अ वायरो वा, तं निं  
 दे तं च गरिहामि ॥२॥ डविहेपरिग्गहंमि, सा  
 वजे बहुविहेअ आरंजे ॥ कारावणेअ करणे, प  
 डिकमे देसिअं सबं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं,  
 चउहिं कसाएहिं अप्पसत्तेहिं ॥ रागेण व दोसे  
 ण व, तं निदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे  
 निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणान्नोगे ॥ अज्जि  
 उंगेअ निउंगे, पडिक्कमे ॥ ५ ॥ संका कंख वि

गेष्ठा, पसंस तद् संथवो कुलिङ्गीसु ॥ सम्मत्त  
 स्स इञ्जारे, पडिक्कमे० ॥ ६ ॥ षक्कायसमारंजे,  
 मयणे अ पयावणेय जे दोसा ॥ अत्तछाय पर  
 णा, उन्नयछा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचएहमणुव  
 याणं, गुणवयाणं च तिण्ह मइयारे ॥ सिक्का  
 णं च चउएह, पडिक्कमे० ॥ ८ ॥ पढमे अणुवयं  
 मि, थूलग पाणाइवाय विरईजं ॥ आयरिअ  
 मप्पस्सत्ते, इत्थं पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वहवंध  
 ववित्तेए, अइ जारे जत्त पाण बुत्तेए ॥ पढम व  
 यस्स इञ्जारे, पडिक्कमे० ॥ १० ॥ वीए अणुव  
 यंमि, परिथूलगअलिवयणविरईजं ॥ आ  
 यरिअमप्पस्सत्ते, इत्थं पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥  
 सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे  
 अ ॥ वीय वयस्स इञ्जारे, पडिक्कमे० ॥ १२ ॥  
 तइए अणुवयंमि, थूलग परदवहरणविरईजं ॥  
 आयरिअ मप्पस्सत्ते, इत्थं पमायप्पसंगेणं ॥  
 ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पजंगे, तप्पडिरूवे विरूढ ग  
 मणे अ ॥ कूमतूल कूममाणे, पडिक्कमे० ॥ १४ ॥  
 चउत्ते अणुवयंमि, निच्चं परदारगमण विरईजं  
 ॥ आयरिअ मप्पस्सत्ते, इत्थं पमायप्पसंगेणं

॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग वीवाह  
 तिअ अणुरागे ॥ चउठ वयस्स इआरे, पडिक्क  
 मे० ॥ १६ ॥ इत्तो अणुवए पंचमंमि आयरि  
 अ मप्पसहंमि ॥ परिमाण परिठेए, इठ पमाय  
 प्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्तू, रुप्प सु  
 वन्ने अ कुविअ परिमाणे ॥ डुपए चउप्पयंमि, प  
 डिक्कमे० ॥ १८ ॥ गमणस्सउ परिमाणे, दिसा  
 सु उहं अहेअ तिरिअं च ॥ बुद्धिसइअंतरअ,  
 पढमंमि गुणवए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमिअ मंसं  
 मिअ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्लेअ ॥ उवज्जोगे  
 परिज्जोगे, वीयंमि गुणवए निंदे ॥ २० ॥ सच्चि  
 ते पन्निवहे, अप्पोल डुप्पोलिअं च आहारे ॥  
 तुहोसंहि ज्ञकणया, पन्निक्कमे० ॥ २१ ॥ इं  
 गाली वणसाडी, ज़ाडी फोमी सुवज्जए कम्मं ॥  
 वाणिज्जं चेवय दंत, लक्क रस केस विसविस  
 यं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिह्वण, कम्मं निह्वं  
 णं च दवदाणं ॥ सरदह तलाय सोसं, असई  
 पोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सच्चिगि मुसल जंत  
 ग, तणकठे मंत मूल जेसजे ॥ दिन्ने दवाविं  
 वा, पन्निक्कमे० ॥ २४ ॥ न्हाणूवट्टण वन्नग, वि

देवणे सद्वरूव रस गंधे ॥ वहासणआज्जर  
 णे, पम्किमे ० ॥ १५ ॥ कंदप्पे कुक्कइए, मोहरि  
 अहिगरण जोग अइरित्ते ॥ दंमंमि अण्ठाए,  
 तइअंमि गुणवए निंदे ॥ १६ ॥ तिविहे डप्पणि  
 दाणे, अणवठाणे तहा सइविहूणे ॥ सामाइअ  
 वितह कए, पढमे सिक्कावए निंदे ॥ १७ ॥  
 आणवणे पेसवणे, सहे रूवे अ पुग्गलस्केवे ॥  
 देसावगासिअंमि, वीए सिक्कावए निंदे ॥ १८ ॥  
 संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव ज्ञोयणा  
 ज्ञोए ॥ पोसह विहि विवरीए, तइए सिक्काव  
 ए निंदे ॥ १९ ॥ सच्चित्ते निक्खिण्णे, पिहिणे  
 ववएस मन्तरे चेव ॥ कालाइक्कमदाणे, चउठे  
 सिक्कावए निंदे ॥ २० ॥ सुहिए सुअ इहिए  
 सुअ, जामे असंजएसु अणुकंपा ॥ रागेणव  
 दोसेणव, तं निंदे तंच गरिहामि ॥ २१ ॥ साहू  
 सु संविजागो, न कउं तव चरणकरणजुत्तेसु ॥  
 संते फासु अ दाणे, तं निंदे तंच गरिहामि  
 ॥ २२ ॥ इह लोए परलोए, जीविअ मरणे अ  
 आसंसपज्जगे ॥ पंचविहो अइआरो, मा मऊ  
 हुज्ज मरणंते ॥ २३ ॥ काएण काइणस्स, पम्कि

क्रमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसिअ  
 स्स, सवस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय  
 सिखागा, रवेसु सन्ना कसाय दंडेसु ॥ गुत्ती  
 सुअ समिईसुअ, जो अइआरो अ तं निंदे  
 ॥ ३५ ॥ सम्महिठी जीवो, जइ विहु पावं समा  
 यरे किंचि ॥ अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निं  
 धसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पिहुसपम्किमणं, सप्प  
 रिआवं सजत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवसामेइ वाहि  
 व सुसिखिउं विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुठ  
 गयं, मंत मूल विसरया ॥ विज्जा हणंति मंते  
 हिं, तो तं हवइ निविसं ॥ ३८ ॥ एवं अठविहं  
 कम्मं, राग दोस समज्जिअं ॥ आलोअंतो अ  
 निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावउं ॥ ३९ ॥ कय  
 पावोवि मणुस्सो, आलोइअ निदिअ गुरुस  
 गासे ॥ होइ अइरेग लहुउं, उहरिअ जरुव  
 जारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावउं  
 जइवि बहुरउं होइ ॥ इक्काण मंत किरिअं,  
 काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा  
 बहुविहा, नयसंजरिआ पम्किमणकाले ॥ मूल  
 गुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥

तस्स धम्मस केवलि पन्नत्तस्स ॥ अञ्जुठिजमि  
 आरा, हणाए विरजमि विराहणाए ॥ तिविहेण  
 पम्भिकंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥ जावं  
 ति चेइआइं ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू ॥  
 ४५ ॥ चिरसंचिय पाव पणासणीइ, जवसय  
 सहस्स महणीए ॥ चउवीस जिण विणिग्गय  
 कदाइं, वोळंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल  
 मरिहंता सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ॥सम्म  
 द्विठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ प  
 निसिद्धाणं करणे, किच्चाण मकरणे पम्भिकम  
 णं ॥ असहहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए  
 अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सब जीवे, सबे जीवा खमं  
 तु मे ॥ मित्ती मे सबजूएसु, वेरं मज्जं न केणइ  
 ॥ ४९ ॥ एव महं आलोइअ, निंदिअ गरहि  
 अ डुगंठिअं सम्मं ॥ तिविहेण पम्भिकंतो, वंदा  
 मि जिणे चउवीसं ॥ ५० ॥ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ ३६ ॥ अथ अञ्जुठिजं ॥

॥ इच्छाकरेण संदिसह जगवन, अञ्जुठि  
 जमि, अञ्जितर देवसिअंखामेजं ॥ इत्तं खामेमि  
 देवसिअं, जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं ॥ ज



ते पाणे विणए वेआवच्चे, आलावे संलावे उ  
च्चासणे ॥ समासणे अंतरजासाए, उवरिजासा  
ए जं किंचि ॥ मज्जा विणय परीहिणं, सुहुमं  
वा वायरं वा ॥ तुप्पेजाणह, अहं न याणामि ॥  
तस्स मिढामि डुकमं ॥ इति ॥ ३६ ॥

॥ अथ आयरिअ उवद्याए ॥

॥ आयरिअ उवद्याए, सीसे साहम्मिए  
कुल्लगणेअ ॥ जे मे केइ कसाया, सव्वेतिविदेण  
खामेमि ॥ १ ॥ सवस्स समण संघस्स, जगव  
उ अंजलिं करिअ सीसे ॥ सव्वं खमावइत्ता,  
खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीव  
रासिस्स, जावउ धम्मो निहिअ निअचित्तो ॥  
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्सअहयंपि ॥ ३ ॥

॥ ३७ ॥ अथ नमोस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ इत्थामो अणुसठिं, नमो खमासमणाणं ॥  
नमोर्द्धत् ॥ नमोस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय  
कम्मणा ॥ तज्जायावाप्तमोद्दाय, परोद्दाय कुती  
र्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या, ज्यायः  
क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं  
प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः

॥ ९ ॥ कषायतापादितजंतुनिवृत्तिं, करोति  
यो जैनमुखांबुदोज्जतः ॥ सशुक्रमासोज्जववृष्टि  
सन्निजो, ददातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥३॥

॥३९॥ अथ विशाललोचन ॥

॥ विशाललोचनदलं, प्रोद्यद्दंताशुकेशरम् ॥  
प्रातर्वीरजिनैजस्य, मुखपद्मं पुनातु वः ॥ १ ॥  
येषामन्निषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षजरात् सुखं  
सुरेजाः ॥ तृणमपि गणयन्ति नैव नाकं, प्रातः  
संतु शिवाय ते जिनैजाः ॥ ९ ॥ कलंकनिर्मुक्त  
ममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयम् ॥ अ  
पूर्वचञ्जं जिनचञ्जजापितं, दिनागमे नौमि बुधै  
र्ममस्कृतम् ॥ ३ ॥ इति ॥ ३९ ॥

॥४०॥ अथ सूत्रदेवक्षेत्रदेव स्तुतिः ॥

॥ सुअदेवयाए करेमि काजस्सग्गं ॥ सुअ  
देवया जगवई, नाणा वरणीअ कम्म संघायं ॥  
तेसिं खवेज सययं, जेसिं सुअसायरे जत्ती ॥१॥

॥४१॥ अथ खित्तदेवयाए करेमि ॥

॥ जीसे खित्ते साहू, दंसण नाणेहिं चरण  
सहिणहिं ॥ साहंति मुक्कमग्गं, सा देवी हरज  
डुरिआई ॥ १ ॥ ॥ इति ॥ ४१ ॥

॥४२॥ अथ कमलदलस्तुति ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी क  
मलगर्जसमगौरी ॥ कमले स्थिता जगवती,  
ददातु श्रुतदेवता सिद्धिम् ॥ ॥१॥ इति ॥ ४२॥

॥४३॥ अथ जुवणदेवयादिस्तुति ॥

॥ जुवण देवयाए करेमि काउस्सग्गं ॥  
यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुज्जिः साध्यते क्रि  
याः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, जूयान्नः सुखदा  
यिनी ॥ १ ॥ इति ॥ ४३ ॥

॥४४॥ अथ ज्ञानादिगुणयुतानां ॥

॥ ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्याय संय  
मरतानां ॥ विदधातु जुवनदेवी, शिवं सदा स  
र्वसाधूनाम् ॥ १ ॥ इति ॥ ४४ ॥

॥४५॥ अथ अट्ठाइजेसु मुनिवन्दन ॥

॥ अट्ठाइजेसु दीव मुसद्देसु, पन्नरसु कम्म  
जूमिसु ॥ जावंत केविसाहू, रयहरण गुच्च पडि  
ग्गह धारा ॥ पंचमहद्वयधारा, अठारस सहस्स  
सीलंगधारा ॥ अक्कयायारचरित्ता, ते सब्बे सि  
रसा मणसा मच्चएण वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ ४५ ॥

॥ ४६ ॥ अथ वरकनक ॥

॥ वरकनकशंखविद्रुम, मरकतघनसन्निभं वि  
गतमोहम् ॥ सप्ततिशतं जिनानां, सर्वामरपू  
जितं वन्दे ॥ १ ॥ इति ॥ ४६ ॥

॥ ४७ ॥ अथ लघुशांतिस्तवः ॥

॥ शांतिं शांतिं निशांतं, शांतं शांता शिवं  
नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदै  
शांतये स्तौमि ॥ ३ ॥ उमिति निश्चितवचसे,  
नमो नमो जगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांतिजिनाय  
जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥  
सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्या  
य ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च नमो नमः शांतिदे  
वाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिक सं  
पूजिताय निजिताय ॥ जुवनजनपालनोद्यत,  
तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वद्विषितौ  
घनाशनकराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्ट  
ग्रहभूतपिशा, च शाकिनीनां प्रमथनाय ॥  
॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्योपयो  
गकृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च  
नुता नमत तं शांतिम् ॥ ६ ॥ जवतु नमस्ते ज

गवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥ अपरा  
 जिते जगत्यां, जयतीति जयावहे भवति ॥ ७ ॥  
 सर्वस्यापि च संघस्य, ऋजुकल्याणमंगलप्रददे  
 ॥ साधूनां च सदा शिव, सुतुष्टिपुष्टिप्रदे  
 जीयाः ॥ ८ ॥ ऋज्व्यानां कृतसिद्धे, निर्वृत्ति  
 निर्वाणजननि सत्त्वानाम् ॥ अत्रयंप्रदाननिर  
 ते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुज्यम् ॥ ९ ॥ भक्तानां  
 जंतूनां शुभावहे नित्यमुद्यते देवि ॥ सम्यग्  
 दृष्टीनां धृति, रतिमतिबुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥  
 जिनशासननिरतानां, शांतिनतानां च जग  
 ति जनतानाम् ॥ श्रीसंपत्कीर्तियशो, वर्धनि  
 जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सखिलानलविष  
 विषधर, दुष्टग्रहराजरोगराण्यनयतः ॥ राक्ष  
 सरिपुगणमारी, चौरैतिश्वापदादिज्यः ॥ १२ ॥  
 अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शांतिं च कुरु  
 कुरु सदेति ॥ तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्व  
 स्तिं च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥ भगवति गुणवति  
 शिवशां, ति तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरु कुरु जना  
 नाम् ॥ ॐ मिति नमो नमो ह्रीं, ह्रीं ह्रूं ह्रूः ॥  
 यः ह्रः ह्रीं ह्रूं ह्रू ह्रू स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्ना

माद्वर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवि ॥ कुरुते  
 शांतिं नमतां, नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥  
 इति पूर्वसूरिदर्शित, मंत्रपदविदर्शितः स्तवः  
 शांतेः ॥ सखिलादिजयविनाशी, शांत्यादिक  
 रश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा  
 शृणोति ज्ञावयति वा यथायोग्यम् ॥ स हि शां  
 तिपदं यायात्, सूरिश्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उ  
 पसर्गाः क्षयं यांति, विद्यंते विघ्नवह्नयः ॥ मनः  
 प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ स  
 र्वमंगलमांगल्याम्, सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधा  
 नं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १९ ॥  
 ॥ इति श्री लघुशांतिस्तवः ॥ ४७ ॥

॥ ४८ ॥ अथ श्री चणकसाय ॥

॥ चणकसाय पडिमल्लूरणु, डङ्गाय मयण  
 बाणु मुसुमूरण ॥ सरस पिञ्चंगु वन्नुगयगामि  
 उ, जयउ पासु चुवणत्तयसामिउ ॥ १ ॥ जसु  
 तणु कांति कडप्पसिणिञ्ज, सोहइ फणि मणि  
 किरणालिञ्ज ॥ नं नव जलहर तमिळ्ळय लंठि  
 उ, सो जिणु पासु पयञ्ज उ वंठिउ ॥ २ ॥ इति  
 चणकसाय ॥ ४८ ॥

॥ ४ए ॥ अथ श्री जरहेसरनी सधाय ॥

॥ जरहेसर बाहुबली, अजयकुमारो अ ढ  
 ढण कुमारो ॥ सिरिज अणियाजत्तो, अइमुत्तो  
 नागदत्तो अ ॥ १ ॥ मेअज्ज थूलिजद्दो, वयर  
 रिसी नंदिसेण सीहगिरि ॥ कयवन्नो अ सुको  
 सल, पुंरुजिं केसि करकंमू ॥ २ ॥ इद्ध विद्ध  
 सुदंसण, साल महासाल सालिजद्दो अ ॥ ज  
 द्दो दसन्नजद्दो, पसन्नचंदो अ जसजद्दो ॥ ३ ॥  
 जंबुपहु वंकचूलो, गयसुकुमालो अवंतिसुकु  
 मालो ॥ धनोइलाइपुत्तो, चिलाइपुत्तो आ बाहु  
 मुणी ॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्जरक्खिअ, अज्जसु  
 हवी उदायगो मणगो ॥ कालयसूरि संबो, प  
 ज्जुन्नो मूलदेवो अ ॥ ५ ॥ पन्नवो विन्दुकुमारो  
 अद्दकुमारो दढप्पहारीअ ॥ सिज्जंस कुरगमू अ  
 सिज्जंजव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥ एमाइ महा स  
 त्ता, दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता ॥ जेसिं नाम  
 गहणे पावपबंधा विलयंजंति ॥ ७ ॥ सुलसा  
 चंदनबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती ॥ न  
 मयासुंदरी सीया, नंदा जद्दा सुजद्दा य ॥ ८ ॥  
 राइमई रिसिदत्ता, पजमावइ अंजणा सिरी दे

वी ॥ जिष्ठ सुजिष्ठ मिगावइ, पञ्चावई चिह्नणा  
 देवी ॥ ए ॥ बंजी सुंदरी रुपिणि, रेवई कुंती  
 सिवा जयंती य ॥ देवइ दोवइ धारिणी, कलाव  
 ई पुष्पचूला य ॥ १० ॥ पञ्मावई य गोरी, गं  
 धारी लस्कमणा सुसीमा य ॥ जंवूवइ सच्चना  
 मा, रुपिणि कन्हठ महिसीर् ॥ ११ ॥ जस्का  
 य जस्कदिन्ना, जूआ तह चेवजूअदिन्ना य ॥  
 सेणा वेणा रेणा, जयणीर् थूलिन्नहस्स ॥ १२ ॥  
 इच्चाइ महासइर्, जयंति अकलंकसीलकलि  
 आर् ॥ अज्जावि वज्जाइ जासिं, जस पडहो तिहु  
 अणे सयले ॥ १३ ॥ ॥ इति सता सतीयोनी  
 सद्याय ॥ ४९ ॥

॥ ५० ॥ अथ श्री मन्हजिणाणं सद्याय ॥

॥ मन्हजिणाणं आण, मिहं परिहरह धर  
 सम्मतं ॥ ब्विह आवस्सयंमि, उज्जुत्तो होइ  
 पइ दिवसं ॥ १ ॥ पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सीलं  
 तवो अ जावो अ ॥ सजाय नमुक्कारो, परोवया  
 रो अ जयणा अ ॥ २ ॥ जिणपूआ जिनथूणि  
 णं, गुरुथुअ साहम्मिआणा ववह्वं ॥ ववहार  
 स्स य सुधी, रहजुत्ता तिठजुत्ता य ॥ ३ ॥ उव



सम विवेक संवर, ज्ञासासमिई बजीव करुणा  
 य ॥ धम्मिअ जण संसग्गो, करणदमो चरिण  
 परिणामो ॥ ४ ॥ संघोवरि बहु मानो, पुण्य  
 लिहणं पञ्चावणा तिहे ॥ सट्ठाण किच्च मेअं नि  
 चं सुगुरूवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥ ५० ॥

॥ ५१ ॥ अथ श्री तीर्थवंदना ॥

॥ सकल तीर्थ वंडु करजोड्य, जिनवरना  
 मे मंगल कोड्य ॥ पहले स्वर्गे लाख वत्रीश,  
 जिनवर चैत्य नमुं निशदीस ॥ १ ॥ बीजे ला  
 ख अछाविश कहां, त्रीजे बार लाख सर्दह्यां ॥  
 चोथे स्वर्गे अरु लख धार, पांचमे वंडु लाख  
 ज चार, ॥ २ ॥ षष्ठे स्वर्गे सहस पचास, सातमे  
 चालिश सहल प्रासाद ॥ आठमे स्वर्गे ठ ह  
 जार, नव दसमे वंडु शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार  
 बारमे त्रणशे सार, नवग्रैवेयके त्रणशे अढा  
 र ॥ पांच अणुत्तर सर्वे मली, लाख चोराशी  
 अधिकां वली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणुं त्रेविश सा  
 र, जिनवर जुवन तणो अधिकार ॥ लांवां शो  
 जोजेन विस्तार, पचास अंचां वोहोंतेर धार ॥  
 ॥ ५ ॥ एकशो एंशी विंव परिमाण, सज्जासहि

त एक चैत्ये जाण ॥ शो कोम वावन कोम स  
 जाल, लाख चोराणुं सहस चौंआल ॥ ६ ॥ सा  
 तशें उपर साठ विशाल, सवि विंव प्रणमु  
 त्रण काल ॥ सात कोमि ने बोहोतेर लाख ॥  
 जुवनपतिमां देवल ज्ञांख ॥ ७ ॥ एकशो एं  
 शी विंव प्रमाण, एक एक चैत्ये संख्या जाण  
 ॥ तेरशे कोम नेव्याशी कोम, साठ लाख वंदूं  
 कर जोमि ॥ ८ ॥ बत्रीशे ने उगणसाठ, ति  
 र्लोकमां चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं  
 हजार, त्रणशे वीश ते विंव जुहार ॥ ९ ॥  
 व्यंतर जोतिषिमां वली जेह शाश्वता जिनवर  
 वंडुं तेह ॥ रुषज चंजानन वारिखेण, वर्द्धमान  
 नामे गुणश्रेण ॥ १० ॥ समेतशिखर वंदूं जि  
 न वीश, अष्टापद वंडुं चोवीश ॥ विमलाचल  
 ने गढ गिरनार, आवु ऊपर जिनवर जुहारा  
 ॥ ११ ॥ शंखेश्वर केशरियो सार, तारंगे श्री  
 अजित जुहार ॥ अतरीक वरकाणो पास, जीरा  
 वलो ने थंजण पास ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पा  
 टण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह ॥ विहर  
 मान वंडुं जिन वीश, सिध अनंत नमुं निशि

दीस ॥ १ ३ ॥ अढीद्वीपमां जे अणगार, अ  
 ठार सहस सिद्धांगना धार ॥ पंच महाव्रत सु  
 मिती सार, पाळे पळावे पंचाचार ॥ १४ ॥  
 बाह्य अश्रितर तप उजमाल, ते मुनि वंडं गु  
 णमणि माला ॥ नित नित ऊठी कीर्त्ति करूं, जीव  
 कहे जवसायर तरूं ॥ १५ ॥ इति ॥ ५१ ॥

॥ ५२ ॥ अथ श्री सकलार्हत् ॥

॥ सकलार्हत्प्रतिष्ठान, मधिष्ठानं शिवश्रियः  
 ॥ भूर्भुवः स्वस्वयीशान, मार्हत्यं प्रणिद्धम  
 हे ॥ १ ॥ नामाकृतिद्वयजार्हैः, पुनतस्त्रिजगज्ज  
 नं ॥ क्षेत्रे काले च सर्वस्मि, नर्हतः समुपास्महे  
 ॥ २ ॥ आदिमं पृथिवीनाथ, मादिमं निःपरि  
 ग्रहम् ॥ आदिमं तीर्थनाथं च, रुषजस्वामिनं  
 स्तुमः ॥ ३ ॥ अर्हतमजितं विश्व, कमलाकर  
 ज्जास्करम् ॥ अम्लानकेवलादर्श, संक्रांतजगतं  
 स्तुवे ॥ ४ ॥ विश्वज्जव्यजनाराम, कुल्यातुल्या  
 जयंतु ताः ॥ देशनासमये वाचः, श्रीसंजवज  
 गत्पतेः ॥ ५ ॥ अनेकांतमतांजोधि, समुद्धास  
 नचंचमाः ॥ दद्यादमंदमानंदं, जगवानजिनंद  
 नः ॥ ६ ॥ द्युसत्किरीटशाणायो, तेजितांज्जिन

खावलिः ॥ जगवान्सुमतिस्वामी, तनोत्वज्जिम  
तानि वः ॥ ७ ॥ पद्मप्रज्ञप्रज्ञोर्देह, ज्ञासः पु  
ष्पांतु वः श्रियम् ॥ अंतरंगारिमथने, कोपाटो  
पादिवारुणाः ॥ ८ ॥ श्रीसुपार्श्वजिनेन्द्राय, महें  
द्रमहितांक्षये ॥ नमश्चतुर्वर्णसंघगगनाज्ञो  
गज्ञास्वते ॥ ९ ॥ चंद्रप्रज्ञप्रज्ञोश्चंद्र, मरीचि  
निचयोज्ज्वला ॥ मूर्तिर्मूर्त्तिसितध्यान, निर्मितेव  
श्रियेऽस्तु वः ॥ १० ॥ करामलकवद्भिः, कल  
यन् केवलश्रिया ॥ अचिंत्यमाहात्म्यनिधिः सुवि  
धिर्बोधयेऽस्तु वः ॥ ११ ॥ सत्त्वानां परमानंद,  
कंदोद्भेदनवांबुदः ॥ स्याद्वादादमृतनिस्यंदी, शीत  
लः पातु वो जिनः ॥ १२ ॥ चवरोगार्त्तजंतुना,  
मगदंकारदर्शनः ॥ निःश्रेयसश्रीरमणः, श्रे  
यांसः श्रेयसेऽस्तु वः ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकी  
भूत, तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः ॥ सुरासुरनरैः पूज्यो,  
वासुपूज्यः पुनातु वः ॥ १४ ॥ विमलस्वामिनो  
वाचः, कतकक्षोदसोदराः ॥ जयंति त्रिजगच्चे  
तो, जलनैर्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥ स्वयंभूरमण  
स्पर्धि, करुणारसवारिणा ॥ अनंतजिदनंतां वः,  
प्रयत्नतु सुखश्रियां ॥ १६ ॥ कल्पद्रुमसधर्माणा,

मिष्टप्राप्तौ शरीरिणाम् ॥ चतुर्धा धर्मदेष्टारं, ध  
 र्मनाथमुपास्महे ॥ १७ ॥ सुधासोदरवाग्यो  
 त्स्ना, निर्मलीकृतदिङ्मुखः ॥ मृगलक्ष्मा तमः  
 शान्त्यै, शान्तिनाथजिनोऽस्तु वः ॥ १८ ॥ श्री  
 कुंथुनाथो जगवान्, सनाथोतिशयार्द्धिः ॥ सु  
 रासुरनृनाथाना, मेकनाथोऽस्तु वः श्रिये ॥ १९ ॥  
 अरनाथस्तु भगवां, श्रुतार्थारनजोरविः ॥ चतु  
 र्थपुरुषार्थश्री, विदासं वितनोतु वः ॥ २० ॥  
 सुरासुरनराधीश, मयूरनववारिदम् ॥ कर्मदून्मू  
 लनेहस्ति, मद्धं मद्धिमज्जिष्ठुमः ॥ २१ ॥ जग  
 न्महामोहनिजा, प्रत्यूषसमयोपमम् ॥ मुनिसुव्र  
 तनाथस्य, देशनावचनं स्तुमः ॥ २२ ॥ बुधंतो  
 नमतां मूर्ध्नि, निर्मलीकारकारिणम् ॥ वारिप्ल  
 वाश्व नमेः, पांतु पादनखांशवः ॥ २३ ॥ यङ्गवंश  
 समुद्धुः कर्मकद्वहुताशनः ॥ अरिष्टनेमिर्ज  
 गवान्, जूयाद्वोऽरिष्टनाशनः ॥ २४ ॥ कमठे धर  
 णीं दे च, स्वोचितं कर्म कुर्वति ॥ प्रभुस्तुल्यम  
 नोवृत्तिः पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तु वः ॥ २५ ॥ श्री  
 मते वीरनाथाय, सनाथायाङ्गुतश्रिया ॥ महानं  
 दसरोराज, मराळायाहते नमः ॥ २६ ॥ कृता

पराधेपि जने, कृपामंथरतारयोः ॥ ईषद्वाष्पार्द  
योर्जङ्ग, श्रीवीरजिननेत्रयोः ॥ २७ ॥ जयति वि  
जितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितः श्रीमान् ॥  
विमलस्त्रासविरहित, स्त्रिञ्चुवनचुमामणिर्जगवा  
न् ॥ २८ ॥ वीरः सर्वसुरासुरेज्जमहितो वीरं  
बुधाः संश्रिताः, वीरेणाजिहतः स्वकर्मनि  
चयो वीराय नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्र  
वृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपो, वीरे श्रीधृति  
कीर्त्तिकांतिनिचयः श्रीवीरजङ्ग दिश ॥ २९ ॥  
अवनितलगतानां कृत्रिमाकृत्रिमानां, वरञ्चुवन  
गतानां दिव्यवैमानिकानाम् ॥ इह मनुजकृतानां  
देवराजार्चितानां, जिनवरञ्चुवनानां जावतोहं  
नमामि ॥ ३० ॥ सर्वेषां वेधसामाद्य, मादिमं  
परमेष्ठितम् ॥ देवाधिदेवं सर्वज्ञं, श्रीवीरं प्रणिद  
ध्महे ॥ ३१ ॥ देवोऽनेकज्वार्जितोर्जितमहा  
पापप्रदीपानलो, देवः सिद्धिबधू विशाल हृदया  
ऽलंकारहारोपमः ॥ देवोऽष्टादशदोपसिंधुरघटानि  
र्जदपंचाननो, ज्ञानां विदधातु वाञ्छितफलं  
श्रीवीतरागो जिनः ॥ ३२ ॥ ख्यातोऽष्टापदप  
र्वतो गजपदः सम्मेतशैलान्निधः, श्रीमान् रैव

तकः प्रसिद्धमहिमा शत्रुंजयो मंरुपः ॥ वैज्जारः  
कनकाचलोऽर्बुदिगिरिः श्रीचित्रकूटादय, स्तत्र  
श्रीरुषभादयोजिनवराः कुर्वतु वोमंगलम् ॥३३॥

॥ ५३ ॥ अथ श्री अजितशांतिस्तवन ॥

॥ अजिञ्चं जिञ्चसवन्नयं, संतिं च पसंतं  
सवगयपावं ॥ जयगुरु संति गुणकरे, दोविजि  
णवरे पणिवयामि ॥१॥ गाहा ॥ ववगय मंगुल  
जावे, तेहिं विजल तवनिम्मल सहावे ॥ निरुवम  
महप्पजावे, थोसामि सुदिठ सज्जावे ॥ २ ॥  
गाहा ॥ सवड्ढस्कप्पसंतीणं, सव पावप्पसं  
तिणं ॥ सया अजियसंतीणं, नमो अजिञ्चसं  
तिणं ॥३॥ सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पव  
त्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं ॥ तहय धिइ  
मइ प्पवत्तणं, तवय जणुत्तम संतिकित्तणं  
॥४॥ मागहिञ्चा ॥ किरिञ्चाविहि संचिञ्च कम्म  
किलेसविमुक्कयरं, अजिञ्चं निचिञ्चं च गु  
णेहिं महामुणि सिद्धिगयं ॥ अजिञ्चस्स य सं  
ति महामुणिणोवि अ संतिञ्चरं, संयय मम नि  
बुइ कारणयंचनमंसणयं ॥ ५ ॥ आलिङ्गणयं ॥  
पुरिसा जइ ड्ढक्कवारणं, जइञ्च विमग्गह सु

स्तकारणं ॥ अजिञ्चं संतिं च ज्ञावञ्चं, अञ्च  
 यकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिञ्चा ॥ अ  
 रइ रइतिमिर विरहिञ्च मुवरय जरमरणं, सुर  
 असुर गरुड पुञ्चगवइ पयय पणिवइञ्चं ॥  
 अजिञ्च महमविञ्च सुनय नय निजण मज्जय  
 करं, सरण मुवसरिञ्च जुवि दिविजमहिञ्चं  
 सयय मुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तंच जिणुत्तम  
 मुत्तम नित्तम सत्तधरं, अज्जव महव खंतिविमु  
 त्ति समाहि निहिं ॥ संतिञ्चरं पणमामि दमुत्तम  
 तिञ्चयरं, संति मुणी मम संतिसमाहिवरं दिसञ्च  
 ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावञ्चिपुषपञ्चिवं च वरहञ्चि  
 मञ्चय पसञ्च विञ्चिन्न संथिञ्चं, थिर सरिञ्च वञ्चं  
 मयगल लीलायमान वर गंध हञ्चि पञ्चाण प  
 ञ्चियं संथवारिहं ॥ हञ्चिहञ्च वाहुं धंतकण्णग रुञ्च  
 ग निरुवहय पिंजरं, पवर लक्खणो वचिञ्च सो  
 मचारु रूवं, सुइ सुहमणाजिराम परम रमणि  
 ज्ज वरदेव उञ्चहि निनाय महुरयरय सुहगिरं  
 ॥ ९ ॥ वेट्टञ्चं ॥ अजिञ्चं जिञ्चारिगणं, जिञ्च स  
 वञ्चयं ज्ञवो हरिञ्चं ॥ पणमामि अहं पयञ्चं, पावं  
 पसमेञ्च मे ज्ञयवं ॥ १० ॥ रासाबुद्धञ्चं ॥ कुरु



जणवयहञ्जिणार, नरीसरो पढमं तज्जं महाच  
 क्ववट्ठिओए महप्पजावो, जोवावत्तरि पुरवर सह  
 स्स वर एणगर निगम जणवय वंइ,वत्तीसा राय  
 वर सहस्साणुजाय मग्गो ॥ चउदस वर रयण  
 नव महानिहि चऊसठि सहस्स पवर ऊवइण  
 सुंदरवइ, चुलसी हय गय रह सय सहस्स  
 सामी, उन्नवइ गाम कोडि सामी आसिज्जो जा  
 रहंमि जयवं ॥ ११ ॥ वेट्ठुजं ॥ तं संतिं संतिअरं  
 संतिं सव्व जया ॥ संतिं थुणामि जिणं, संतिं  
 विहेउमे ॥ १२ ॥ रासानंदिअयं ॥ इरुवाग वि  
 देहनरीसर, नरवसहा मुणिवसहा ॥ नव सारय  
 ससि सकलाणण, विगय तमा विहुअरया ॥ अ  
 जियउत्तम तेअ गुणेहिं महामुणि,अमिअवला  
 विऊलकुला ॥ पणमामि ते जवजय मूरण, जग  
 सरणा मम सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दा  
 णविंद चंद सूरवंद हठ तुठ जिठ परम, लठ  
 रूव धंत रुप्प पट्ट सेअ सुइ निइ धवद ॥ दं  
 तपंति संति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर,  
 दित्त तेअ विंदधेअ सवल्लोअ जाविअप्पजाव  
 णे अ पईअसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायणं ॥

विमल ससिकलाश्रेष्ठ सोमं, वितिमिर सूरं क  
 लाश्रेष्ठ तेष्ठं ॥ तिष्ठसवद् गणाश्रेष्ठ रूवं,  
 धरणीधर पवराश्रेष्ठ सारं ॥ १५ ॥ कुसुम  
 लया ॥ सत्ते अ सया अजिष्ठं, सारीरे अबले  
 अजिष्ठं ॥ तव संजमे अ अजिष्ठं, एस शु  
 णामि जिणमजिष्ठं ॥ १६ ॥ शुभ्रंगपरिरिं  
 णि ॥ सोमगुणेहिं पावद् न तं नवसरय ससी, ते  
 अ गुणेहिं पावद् न तं नवसरयरवी ॥ रूवगुणे  
 हिं पावद् न तं तिहसगणवद्, सारगुणेहिं  
 पावद् न तं धरणिधरवद्, ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥  
 तिष्ठवर पवत्तयं तमरयरहिष्ठं धीरजण शु  
 अ च्चिष्ठं चुअ कलिकलुसं ॥ संतिसुहप्पवत्तयं  
 तिगरण पयज्जं, संतिमहं महामुणिं सरण सुवण  
 मे ॥ १८ ॥ लल्लिअयं ॥ विणज्जणय सिरिरय  
 अंजलि, रिसिगण संशुअं धिमिअं ॥ विवुहा  
 हिव धणवद् नरवद्, शुअमहिअच्चिष्ठं बहु  
 सो ॥ अद् रुग्गय सरय दिवायर, समहिअ,  
 सप्पज्जंतवसा ॥ गयणंगण वियरण समुद् अ  
 चारण वंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमा  
 ला ॥ असुर गरुल परिवंदिअं, किन्नरोरगन

मंसियं ॥ देवकोमिसयसंशुभ्रं, समणसंघपरि  
 वंदियं ॥ १० ॥ सुमुहं ॥ अन्नयं अणहं अरयं  
 अरुयं अजिअं अजिअं पयउं पणमे ॥ ११ ॥  
 विज्जुविलसिअं ॥ आगयावर विमाण, दिव्व  
 कणग रह तुरय पदकर सइहिं हुलिअं ॥  
 ससंजमो रयण खुज्जिअ, लुलिअ चल कुंरु  
 लं गय तिरीड सोहंत मज्जलिमाला ॥ १२ ॥  
 वेट्ठउं ॥ जं सुरसंघा सासुर संघा वेर विज्जता न  
 त्ति सुज्जता, आयर नूसिअ संजमपिंदिअ सुट्ठ  
 सुविहिअ सबवलोघा ॥ उत्तम कंचण रयण प  
 रुविअ, नासुर नूसण नासुरिअंगा ॥ गाय स  
 मोणय नत्तिवसा गय, पंजलिपेसिथसीस पणा  
 मा ॥ १३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिज्जण थोज्जण तो  
 जिणं, त्रिगुणमेवय पुणो पयाहिणं ॥ पणमिज्ज  
 णयं जिणं सुरासुरा, पमुइआ सज्जवणाइंतो ग  
 या ॥ १४ ॥ खित्तयं ॥ तं महासुणि महंपि पंजलि,  
 राग दोस नय मोह वज्जिअं ॥ देवदाणव नरिं  
 द वंदिअं, संतिमुत्तम महातवं नमे ॥ १५ ॥  
 खित्तयं ॥ अंबरंतरविआरणियाहिं, ललिअ  
 हंस बहुगामिणियाहिं ॥ पीण सोणत्थण सा

लिणियाहिं, सकल कमलदल लोअणिआ  
हिं ॥२६॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर थणअरविण  
मिय गायलयाहिं, मणि कंचण पसिठिलमेह  
ल सोहिअ सोणितमाहिं ॥ वरखिखिणि नेजर  
सतिलय वलय विजूसणियाहिं, रइकर चजर  
मणोहर सुंदर दंसणिआहिं ॥ २७ ॥ चित्तक  
रा ॥ देवसुंदरीहिं पाय वंदियाहिं, वंदिआय ज  
स्स ते सुविक्रमाक्कमा अप्पणो निलामएहिं मंम  
णोड्डुणप्पगारएहिं केहिं केहिं वि अवंगतिल  
य पत्तलेह नामएहिं चिह्नएहिं संगयं गयाहिं  
अत्ति सन्निविठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदिया  
पुणो पुणो ॥२८॥ नारायण ॥ तमहं जिणचंदं,  
अजिअं जिअमोहं ॥ धुअसव्वकिलेसं पयउं पण  
मामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥ अुअवंदिअस्सा  
रिंसीगण देवगणेहिं, तो देव वहुहिं पयउं पण  
मिअस्सा ॥ जस्स जगुत्तमसासणयस्सा, अत्ति  
वसागयपिंडिअयाहिं ॥ देव वरवरसावहुआ  
हिं, सुरवर रइगुण पंडिअआहिं ॥३०॥ आसुर  
यं ॥ वंस सह तंति तालमेलए तिउकराजिराम  
सह मीसए कए अ, सुइसमाणणेअ सुइ स

ज्ञा गीञ्च पाय जालघंटिआहिं ॥ वलय मेहला  
 कलावनेजरात्रिराम सह मीसए कए अ देवन  
 द्विआहिं ॥ हावजाव विभ्रमप्पगारएहिं न  
 च्चिजण अंग हारएहिं वंदिआय जस्स ते सुवि  
 क्रमाक्रमा ॥ तयंतिलोअ सब सत्त संतिकारयं  
 पसंत सब पाव दोस मेस हं नमामि संतिमुत्त  
 मं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायजं ॥ ठत्त चामर पमाग  
 जूअ जव मंडिआ, ऊयवर मगर तुरय सि  
 रिवठ सुलंबणा ॥ दीवसमुद्द मंदिरदिसाग  
 यसोहिया, सत्तिअवसहसीहणासिरिवठसुलंब  
 णा ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलठा समप्पइठा,  
 अदोस इठा गुणेहिं जिठा ॥ पसायसिठा तवे  
 ण पुठा, सिरीइ इठा रिसीहिं जुठा ॥ ३३ ॥ वा  
 णवासिआ ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया, सब  
 लोअहिअ मूल पावया ॥ संथुआ अजिअसंति  
 पायया, हुंतु मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥  
 अपरांतिका ॥ एवं तव बल विजलं, शुअं  
 मए अजिअ संति जिणजुअलं ॥ ववगय  
 कम्म रयमलं, गयं गयं सासयं विमलं ॥ ३५ ॥  
 गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, सुख सुहेण परमे

ए अविसायं ॥ नासेज मेविसायं, कुणज अ प  
रिसाविअ पसायं ॥३६॥ गाहा ॥ तं मोएजअ  
नंदिं, पावेज अ नंदिंसेणमजिनंदिं ॥ परिसा  
विय सुहनंदिं, मम य दिसज संजमे नंदिं ॥३७॥  
गाहा ॥ पक्खिअ चाजमासे, संवडरिए अव  
स्स जणिअवो ॥ सोअवो सब्बेहिं, उवसग्ग नि  
वारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जोअ निसुण  
इ, उज्जं कालंपि अजिअसंतिथुयं ॥ न हु हुंति  
तस्स रोगा, पुब्बुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइइ  
ब्ह परम पयं, अहवा किन्ती सुविड्डा जुवणे ॥  
तातेल्लुकुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥४०॥

॥ इति श्रीअजितशांतिस्तवनं ॥ ५३ ॥

॥ ५४ ॥ अथ श्री मोहोटी शांति ॥

॥ ओ ओ ज्व्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्व  
मेतत्, ये यात्रायां त्रिजुवनगुरोरार्हतां जक्तिजा  
जः ॥ तेषां शांतिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रजावा  
दारोग्यश्रीधृतिमतिकरीकेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥  
ओओ ज्व्यलोका इहहि जरतैरावतविदेहसं  
भवानां, समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकं पानं  
तरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषा

घंटाचालनानंतरं सकलसुरासुरेभ्यः सहसमागत्य  
 सविनयमर्हज्जटारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृं  
 गे विहितजन्माग्निषेकः शांतिमुद्घोषयति  
 ततोहं कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो येन गतः  
 संपत्त्याः इति न व्यजनैः सह समागत्य स्नात्रपीठे  
 स्नात्रं विधाय शांतिमुद्घोषयामितत्पूजायात्रास्ना  
 त्रादिमहोत्सवानंतरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा निश  
 म्यतां निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं पुण्याहं  
 प्रीयतां प्रीयतां जगवतोर्हतः सर्वज्ञाः सर्वदर्शि  
 नस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकपूज्यास्त्रि  
 लोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतकराः ॥ ॐ १ श्री रुषज, २  
 अजित, ३ संजव, ४ अजिनंदन, ५ सुमति, ६  
 पद्मप्रज, ७ सुपार्श्व, ८ चंद्रप्रज, ९ सुविधि, १०  
 शीतल, ११ श्रेयांस, १२ वासुपूज्य, १३ विमल,  
 १४ अनंत, १५ धर्म, १६ शांति, १७ कुंथु, १८  
 अर, १९ मल्लि, २० मुनिसुव्रत, २१ नमि, २२  
 नेमिपार्श्व, २३ वर्धमानांताः २४ जिनाः शांताः शां  
 तिकरा भवंतु स्वाहा ॥ ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपु  
 विजयहर्जिहकांतारेषु हर्गमार्गेषु रक्षंतु वो नित्यं  
 स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं श्री धृति, मति, कीर्ति, कांति,

बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या साधन, प्रवेश निवश  
 नेषु ॥ सुगृहीतनामानो जयंतु ते जिनेन्द्राः ॥ ॐ  
 रोहिणी, प्रज्ञप्ति, वज्रांशुखला, वज्रांकुशी, अ  
 प्रतिचक्रा पुरुषदत्ता, काली, महाकाली, गोरी,  
 गांधारी, सर्वास्त्रा, महाज्वाला, मानवी, वैरुद्ध्या,  
 अन्नूता, मानसी, महामानसी, एता षोरुश  
 विद्यादेव्यो रक्षंतु वो नित्यं स्वाहा ॥ ॐ आ  
 चार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य ॥ श्रीश्रमणसं  
 घस्य ॥ शान्तिर्भवतु ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॥  
 ॐ ग्रहाश्विंजसूर्योगारकबुधवृहस्पतिशुक्रशनैश्च  
 रराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सोमयमवरुण  
 कुबेर वासवादित्यस्कंद विनायकोपेताः येचा  
 न्येपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्तेसर्वे प्रीयंतांप्री  
 यंताम् ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारानर पतयश्च  
 भवंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्र, मित्र, भ्राता, कलत्र,  
 सुहृद्, स्वजन, संबंधि, बंधुवर्ग, सहिताः  
 नित्यं चामोदप्रमोदकारिणो भवंतु अस्मिंश्च  
 भूमंडलायतननिवासीनां साधु साध्वी श्रावक  
 श्राविकाणां रोगोपसर्ग व्याधि दुःख दुर्निदो  
 र्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टि पु



ष्टि रुद्रि, वृद्धि, मांगल्योत्सवाः ॥ सदा प्राङ्  
 र्भूतानि पापानि शम्यंतु डुरितानि ॥ शत्रवः  
 पराङ्मुखा ऋवंतु स्वाहा ॥ श्रीमते शांतिना  
 थाय, नमः शांतिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामरा  
 धीश, मुकुटान्यर्चिताह्वये ॥ १ ॥ शांतिः शांति  
 करः श्रीमान्, शांतिं दिशतु मे गुरुः ॥ शांतिरेव  
 सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ उन्मृष्ट  
 रिष्ट डष्ट, ग्रहगति डःस्वप्न डर्निमित्तादि ॥  
 संपादितहित संप, नामग्रहणं जयति शांतेः  
 ॥ ३ ॥ श्रीसंघजगज्जनपद, राजाधिपराजसन्नि  
 वेशानाम् ॥ गोष्ठिकपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याह  
 रेष्वांतिम् ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु ॥  
 श्रीपौरजनस्य शांतिर्भवतु श्रीजनपदानां शां  
 तिर्भवतु ॥ श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु ॥ श्री  
 राजसन्निवेशानां शांतिर्भवतु ॥ श्रीगोष्ठिकानां  
 शांतिर्भवतु ॥ श्रीपौरमुख्यानां शांतिर्भवतु ॥  
 श्रीब्रह्मलोकस्य शांतिर्भवतु ॥ ॐ स्वाहा ॐ  
 स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा  
 शांतिप्रतिष्ठा यात्रास्त्रात्राद्यवसानेषु ॥ शांतिक  
 लशं गृहीत्वा, कुंकुम चंदन कर्पूरागरु धूप वास

कुसुमांजलिसमेतः ॥ स्नात्रचतुष्पिकाया श्री  
संघसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्रचंदनाज  
रणालंकृतः, पुष्पमालां कंठे कृत्वा शांतिमु  
द्घोषयित्वा ॥ शांतिपानीयं मस्तके दातव्य  
मिति ॥ नृत्यंति नित्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायं  
ति च मंगलानि स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति  
मंत्रान्, कल्याणजाजो हि जिनाभिषेके ॥ १ ॥  
शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवतु भू  
तगणाः ॥ दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखीभव  
तु लोकाः ॥ २ ॥ अहं तिष्ठयरमाया शिवादेवी  
तुम्हन्नयन निवासिनी ॥ अम्हशिवं तुम्ह शिवं  
अशिवोपशमंशिवं भवतु स्वाहा ॥ ३ ॥ उपस  
र्गाः क्षयं यांति, विद्यंते विघ्नवद्भय ॥ मनः  
प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ सर्व  
मंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधानं  
सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥ इति  
श्री बृहन्नाति स्तवः संपूर्णः ॥ ५४ ॥

॥५५॥ अथ श्री संतिकरस्तवनं ॥

॥ संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयति  
इ दायारं ॥ समरामि जत्त पालग, निज

तत्र ज्ञानाचारें आठ अतिचार ॥ कालेवि  
 णए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंज  
 ण अत्त तडुजए अठविहोनाण मायारो ॥ १ ॥  
 ज्ञान काल वेलाये जणयो गुणयो नहिं अकाले  
 जणयो, विनयहीन, बहुमानहीन, योगउपधान  
 हीन, अनेरा कन्हें जणी अनेरो गुरु कह्यो, देव  
 गुरु वांदणे, पडिक्कमणे, सच्याय करतां जणतां,  
 गुणतां, कूमो अद्धर कानेमात्रायें अधिको उंगो  
 जणयो, सूत्र कूडुं कह्युं, अर्थ कूडो कह्यो, तडुज  
 य कूडां कहां, जणीने विसाख्यां, साधु तणे धर्म  
 काजें काजो अस्सुज ऋरयां दांडो अणपमिलेहे,  
 वसति अणशोधे, अणपवेसे, असजाइ, अणो  
 जाइमाहे श्री दशवैकालिकप्रमुख सिद्धांत  
 जणयो गुणयो, श्रावकतणे धर्मे थिविरावलि, प  
 डिक्कमणां, उपदेशमाला प्रमुख सिद्धांत जणयो  
 गुणयो, काल वेला काजो अणउद्धये पढियो  
 ज्ञानोपगरण, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली,  
 नोकरवाली, सापमा सापमी, दस्तरी, वही,  
 जलिया प्रमुख प्रत्ये पग लाग्यो, थूंक  
 लाग्युं, थूंक करी अद्धर मांज्यो, जंशीसैं

धस्यो, कने ठतां आहार निहार कीधो, ज्ञानज  
व्य ज्ञतां उपेक्षा कीधी, प्रज्ञापराधे विणसतो  
विणाश्यो, विणसतो जवेख्यो, ठती शक्तियें  
सार संज्ञाल न कीधी, ज्ञानवंतप्रत्ये द्वेष, मत्स  
र, चिंतव्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोइ  
प्रत्ये ज्ञता गणतां अंतराय कीधो, आपणा  
जाणपणातणो गर्व चिंतव्यो, मतिज्ञान, श्रुत  
ज्ञान, अवधिज्ञान, मनः पर्यवज्ञान, केवल  
ज्ञान ए पंच ज्ञान तणी असद्वहणा कीधी-  
कोइ तोतलो वोवडो हस्यो, वितर्क्यो, अन्यथा  
प्ररूपणा कीधी ॥ ज्ञानाचार व्रत विषइजं अ  
नेरो जे कोइ अतिचार पद दिवस ० ॥ १ ॥

दर्शनाचारे आठ अतिचार ॥ निस्संकिय  
निकंखिय, निव्वितिगिवा अमूढदिठीअ ॥ जववू  
ह थिरीकरणे, वल्ल पपजावणे अठ ॥ १ ॥ देव  
गुरू धर्म तणे विषे निःशंकपणं न कीधुं तथा ए  
कांत निश्चय न कीधो. धर्म संबंधीया फल तणे  
विषे निःसंदेह बुद्धि धरी नही. साधु साधवीना  
मल मलिन गात्र देखी झुगंग निपजावी. कुचा  
रित्रीया देखी चारित्रीयाऊपर अजाव हुजं. मि

श्यात्वी तणी पूजा प्रज्ञावना देखी मूढदृष्टिपणुं  
 कीधुं. तथा संघमांहे गुणवंत तणी अनुपबृंहणा  
 कीधी, अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अ  
 न्नाक्ति निपजावी, अवहुमान कीधुं तथा देवद्व  
 व्य, गुरुद्वय, ज्ञानद्वय, साधारणद्वय, जद्वि  
 त उपेक्षित प्रज्ञापराधें विणाश्यो, विणसतो उ  
 वेख्यो. ठती शक्तिये सार संज्ञाद न कीधी  
 तथा साधर्मिक सायें कलह कर्मबंध कीधो. अ  
 धोती, अष्टपरु मुखकोश, पांखें देव पूजा कीधी  
 विंवप्रत्यें वासकूपी, धूपधाणुं कलशतणो ठ  
 वको लाग्यो. विंव हाथथकी पाडगुं. उसास  
 निःसास लाग्यो, देहरे, उपासरे, मलश्लेष्मा  
 दिक लोह्युं. देहरामांहे हास्य, खेल, केलि,  
 कुतूहल, आहार निहार कीधां, पान, सोपारी,  
 निवेदीयां खाधां. ठवणहारी हाथथकी पा  
 डी, पमिलेहवुं विसाखुं, जिनजुवने चोराशी  
 आशातना, गुरु गुरुणी प्रत्यें तेन्नीश आशात  
 ना कीधी होय, गुरुवचन तहत्ति करी पमिव  
 ज्युंनही ॥ दर्शनाचारव्रत विषश्यो अनेरो जे  
 कोइ अतिचार पद दिवस ॥ २ ॥

चारित्राचारं आठ अतिचार ॥ पणिहाण  
जोगजुत्तो, पंचहि समिईहिं तिहिं गुत्तिहिं ॥  
एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायवो ॥ १॥  
ईयां समिति ते अणजोए हिंढ्या, जाषासमि  
ति ते सावद्य वचन बोल्या, एषणा समिति  
ते तृण, मगल, अन्न, पाणी, असूऊतुं लीधुं,  
आदानजंडमत्तनिस्केवणा समिति ते अश  
न शयन, उपकरण मातरुं प्रमुख अणपूंजी  
जीवाकुलजूमिकाये मूक्युं लीधुं, परिष्ठापनि  
कासमिति ते मल, मूत्र, श्लेष्मादिक अणपूंजि  
जीवाकुल जूमिकायें परठव्युं मनोगुप्ति, मन  
मां आर्त्त रौडध्यान ध्यायां, वचनगुप्ति, साव  
द्य वचन बोड्युं, कायगुप्ति ते शरीर अणपमि  
लेह्युं हलाव्युं, अणपूंजे वेछा, ए अष्टप्रवचन  
माता ते, सदैव साधुतणे धर्मे अने श्रावकतणे  
धर्मे, सामायिक पोसह लीधे, रूमीपरे पाळ्या  
नहीं, खंडणा विराधना हुइ ॥ चारित्राचार व्रत  
विषइउं अनेरो जे कोइ अतिचार पद दिवस  
मांही सूद्धम वादर जाणतां अजाणतां हुउं हो  
ते सवि हुं मने, वचने, कायाये करी तस्समिच्छा

द्विण्य लगें तेहनो धर्म मान्यो, कीधो ॥ श्रीस  
म्यकृत्वव्रत विषयिउं अनेरो जे कोइ अतिचार  
पढ़ दिवसमांहि० ॥ १ ॥

पहेले स्थूलप्राणातिपात विरमणव्रते पांच  
अतिचार ॥ वहबंधबविह्ये० ॥ द्विपद चतुष्प  
द प्रत्ये रीषवशे गाढो घाव घाल्यो, गाढे बंध  
ने बांध्यां, अधिक चार घाल्यो, निर्लाभन कर्म  
कीधां, चारापाणीतणी वेलाये सार संजाल न  
कीधी, लेहणे देणे किणहिं प्रत्ये लंघाव्यो, तेणे  
जुखे आपण जम्या, कन्हे रही मराव्यो, बंधी  
खाने घलाव्यो, शल्यां धान्य तावमे नाख्यां,  
दलाव्यां, जरमाव्यां. शोधी न वावख्यां इंधण  
गणां, अणशोध्यां बाल्यो तेमांहि साप, विं  
ढी, खजूरा, सरवलां, मांकम, जूआ, गिंगो  
डा, साहतां मुआ, झुहव्या, रूडे स्थानके न  
मूक्या. कीमी मंकोडीनां इंडां विगोह्यां. लीख  
फोडी. उदेही, कीडी, मंकोमी, घीमेल, कातरां,  
चूडेल, पतंगियां, देडकां, अलसीयां, इअल,  
कुंता, मांस, मसा, वगतारा, माखी, तीर प्रमुख  
जीव विणठा. माला हलावतां चलावतां पंखी,

चरकलां, काग, तणां इडां फोड्या, अनेरा एकें  
 जियादिक जीव विणास्या, चांप्या, डहव्या, कांइ  
 हलावतां, चलावतां, पाणी गंटतां, अनेरा कां  
 इस्काम काज करतां, विरंधसपणुं कीधुं. जीवर  
 दारूमी न कीधी, संखारो सूकाव्यो, रूडुं गलणु  
 न कीधुं, आणगल पाणी वावखुं. रूडी जयणा  
 न कीधी. अणगल पाणीयें जील्या, लुगमां धो  
 यां, खाटला तावमे नाख्या, जाटक्या, जीवाकु  
 लजूमि लींपी, वाशीगार राखी, दलणें, खांडणें,  
 लींपणे, रूमी जयणा न कीधी. आठम चउद  
 शना नियम जांग्या. धूणी करावी ॥ पहेले स्थू  
 लप्राणातिपात विरमण व्रत विषइत्त अनेरोंजे  
 कोइ अतिचार पद्द दिवसमांहि० ॥ १ ॥

वीजे स्थूलमृषावाद विरमणव्रते पांच अ  
 तिचार ॥ सहसारहस्सदारे० ॥ सहसात्कारे  
 कुणहींप्रत्ये अजुगतुं आल अन्याख्यान दीधुं.  
 स्वादारामंत्र जेद कीधो. अनेरा कुणहनो मंत्र,  
 आलोच मर्म प्रकाश्यो. किणहीनें अनर्थ पाड  
 वा कूमी बुद्धि दीधी. कूडो लेख लख्यो. कूमी  
 साख जरी. थापणमोसो कीधो. कन्या, गौ, ढो



र, जूमिसंवंधी लेहणे देणे व्यवसायें वाद वढ  
 वाम करतां मोटकुं जूतुं बोल्या. हाथ पग तणी  
 गाल दीधी. करडका मोड्या. मर्म वचन बो  
 द्यां ॥ बीजे स्थूलमृषावाद विरमणव्रत विषइ  
 उं अनेरो जे कोइ अतिचार पद्द ॥ १ ॥

त्रीजे स्थूलअदत्तादान विरमण व्रतें पां  
 च अतिचार ॥ तेनाहडप्पयोगे ॥ घर बाहिर  
 खेत्र, खले, पराइ वस्तु अणमोकली लीधी.  
 वावरी, चोराइ वस्तु मोललीधी, चोर धाडप्रत्यें  
 संकेत कीधो. तेहनें संवल दीधुं. तेहनी वस्तु  
 लीधी. विरुद्धराज्यातिक्रम कीधो नवां, पुराणा,  
 सरस विरस, सजीव, निर्जीव वस्तुना जेल सं  
 जेल कीधा. कूमे काटले, तोले, माने, मापे, व  
 होख्यां. दाणचोरी कीधी, किणहीने लेखे वरां  
 स्यो. साटे लांच लीधी. कूडो करहो काढ्यो. वि  
 श्वासघात कीधो. परवंचना कीधी. पाशंग कूमां  
 कीधां. मांमी चढावी. लहके त्रहके कूमा का  
 टला मान, मापां कीधां. माता, पिता, पुत्र,  
 मित्र, कलत्र, वंची किणहीने दीधुं. जूदी गांठ  
 कीधी, आपण उलवी. किणहीनें लेखे पलेखें

भूलव्युं. पत्नी वस्तु जलवीलीधी ॥ त्रीजे स्थूल  
अदत्तादान विरमणव्रत विषयिजं अनेरो जे  
कोइ अतिचार पद दिवस ॥ ८ ॥

चोथे स्वदारासंतोष. परस्त्री गमन विरमण  
व्रते पांच अतिचार ॥ अपरिगृहीया इतर ॥  
अपरिगृहीतागमन इत्वर ॥ अपरिगृहीता गम  
न कीधुं. विधवा, वेश्या परस्त्री, कुलांगना, स्वदा  
राशोकतणे विषे दृष्टिविपर्यास कधो. सराग  
वचन बोल्यां. आठम, चउदश, अनेराइ पर्व  
तिथे नियम लइ जांग्या. घरघरेणां कीधां करा  
व्यां. वर वहु वखाण्यां. कुविकल्प चिंतव्यो. अ  
नंग क्रीमा कीधी, स्त्रीनां अंगोपांग निरख्यां.  
पराया विवाह जोड्या. ढिंगला ढिंगली परणा  
व्यां. कामजोगतणे विषे तीव्र अजिलाष कीधो.  
अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार,  
सुहणे स्वप्नांतरे हुआ. कुस्वप्न लाधां. नट,  
विट, पुरुषांशु हांसुं कीधुं ॥ चोथा स्वदारासंतोषव्र  
तविषयिजं अनेरा जे कोइ अतिचार पद ॥ ९ ॥

पांचमे स्थूल परिग्रह परिमणव्रते पांच अ  
तिचार ॥ धण धन खित्तवहु ॥ धन, धान्य, खेत्र

वस्तु, रूप, सुवर्ण, कुप्य, द्विपद, चतुष्पद  
नवविध परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी  
मूर्त्तालगें संक्षेप न कीधो. माता, पिता, पुत्र,  
स्त्रीतणे लेखे कीधो. परिग्रह परिमाण लीधुं  
नहीं, लेइने पढिउं नहीं. पढिउं विसाखुं. अ  
लीधुं मेढ्युं. नियम विसर्या ॥ पांचमे परिग्रह  
परिमाणव्रत विषयिउं अनेरो जे कोइ अति  
चार पद दिवसमांहि ॥ ५ ॥

ठे दिगपरिमाणव्रते पांच अतिचार ॥ गम  
णस्सय परिमाणे ॥ ऊर्ध्वदिशि, अधोदिशि,  
तिर्यग्दिशियें जावा आववातणा निमम लेइ  
जांग्या. अनाजोगे विस्मृत लगे अधिक जुमि  
गया. पाठवणी आधी पाढी मोकली. वहाण  
व्यवसाय कीधो. वर्षाकालें गामतरू कीधुं, जु  
मिका एकगमा संखेपी, बीजीगमा वधारी ॥ ठे  
दिगपरिमाणव्रतविषयिउं अनेरो जे कोइ अ  
तिचार पद दिवसमांहि ॥ ६ ॥

सातमें जोगोपजोग विरमण व्रतें जोजन  
आश्री पांच अतिचार अने कर्महुंती पंदर अ  
तिचार एवं बीश अतिचार ॥ सच्चित्तेपडिवहे ॥

सचित्त नियम लीधे, अधिक सचित्त लीधुं ॥  
 अपक्काहार, उपक्काहार, तुज्जोषधि तणुं जइण  
 कीधुं. उंला, उंवी, पोंक, पापमी कीधां ॥ सच्चि  
 त्त दध्विगइ, पाणह तंवोल वठ कुसुमेसु ॥  
 वाहण सयण विलेवण, वंजदिसि न्हाण जत्तेसु  
 ॥ १ ॥ ए चउद नियम दिनगतरात्रिगत लीधा  
 नहीं. लेइने जांग्या. बावीश अजइय, वत्रीश  
 अनंतकायमांहि आइं, मूला, गाजर, पिंम,  
 पिंमादू, कचुरो, मूरण, कुलि आंवली, गलो,  
 वाघरमां खाधां. वाशी, कठोल, पोली, रोट,  
 ली त्रण दिवसनुं उंदन लीधु. मधु, महुडा,  
 माखण, माटी, वैगण, पीलु, पीचु, पंपोटा, विष,  
 हिम, करहा, घोलवमां, अजाण्यां फल, टिंबरु,  
 गुंदां, महोर अथाणुं, आमणबोर, काचुं मीतुं,  
 तिल, खसखस, काचा कोठिंवडां खाधां. रात्रि  
 जोजन कीधो. लगजग वेलायें व्यालुं कीधुं. दि  
 वस विणजगे शीराव्या. तथा कर्मतः पंदरक  
 मांदान ॥ इंगालकम्मे, वणकम्मे, सामिकम्मे,  
 जामिकम्मे, फोमिकम्मे, ए पांचकर्म ॥ दंतवा  
 णिज्जे, लखवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, केसवाणिज्जे,

विसवाणिजे, ए पांच वाणिज्य ॥ जंतपिद्वण  
 कम्मे, निद्वंणकम्मे, दवग्गि दावणया, सर  
 दह तलाय सोसणया, असइ पोसणया, ए  
 पांच सामान्य, ॥ ए पांच कम्म, पांचवाणिज्य  
 पांच सामान्य, एवं पंदर कर्मादान बहुसावद्य,  
 महारंज, रांगण, लीहाला, कराव्या. इंट, नि  
 जामा पचाव्या. धाणी, चणा पक्कान्न करी वेच्या  
 वाशी मांखण तपाव्या. तिलवहोस्या फागण  
 मास उपरांत राख्या. दलीदो कीधो. अंगीठा  
 कराव्या. श्वान, विद्वान्नाडा, शूडा, सालहि, पोश्या.  
 अनेरा जे कांइ बहु सावद्य खरकर्मादिक समा  
 चख्या. वाशीगार राखी. लीपणें, घूंपणें, माहा  
 रंज कीधो. अणशोध्या चूला संधूक्या. घीतेल,  
 गोल, ठाश तणांजाजन उघामां मूक्यां. तेमांहि  
 माखी, कुंति, उंदर, गिरोली पनी. कीडी, चढी  
 तेनी, जयणा न कीधी ॥ सातमे जोगोपजोग  
 विरमणव्रतविषयिउ अनेरो जे कोइ अतिचार  
 पद्द दिवसमांहि ॥ ७ ॥

आठमे अनर्थदंरु विरमणव्रतें पांच अति  
 चार ॥ कंदप्पे कुकुए ॥ कंदर्पलगे विटचेष्टा,

हास्य, खेल, कूतूहल कीधां, पुरुष स्त्रीना हाव  
 जाव, रूप, शृंगार, विषयरस वखाण्या. राज  
 कथा, ज्ञक्तकथा, देशकथा, स्त्रीकथा कीधी.  
 पराइ वात कीधी. तथा पैशुन्यपणुं कीधुं, आर्त्त  
 रौडध्यान ध्यायां. खांमां, कटार, कोश, कुहामा,  
 रथ जखल, मुशल, अग्नि, घरटी, निसाह, दा-  
 तरमां, प्रमुख अधिकरण मेली दाक्षिण लगें  
 माग्यां आप्यां. पापोपदेश दीधो. अष्टमी चतु  
 र्दशीये खांमवा दलवा तणानियम जांग्या.  
 मूरखपणा लगें असंवद्ध वाक्य बोल्या. प्रमा  
 दाचरण सेव्या. अंधोले नाहणे, दातणे, पग  
 धोअणे, खेलपाणि, तेल अकिध वांट्यां. जील-  
 णे जील्या. जूवटें रम्या, हिंचोले हिंच्या, नाटक  
 प्रेक्षणक जोयां, कण कुवस्तु, ढोर लेवराव्यां.  
 कर्कश वचन बोल्यां, आक्रोश कीधा, अवोला  
 लीधा. करकमा मोड्या. मठर धर्यो. संचेडा  
 लगाड्या. सराप दीधा. जेंसा, शाढ, हुसु, कू  
 कमा, श्वानादिक जुळाव्या, जूळतां जोयां.  
 खादिलगें अदेखाइ चिंतवी, माटी, मीतुं. कण,  
 कपाशीया, काजविण चांप्या. तेजपर वेठा.

आली वनस्पति खुंदी, सुइ शस्त्रादिक निपजा  
व्या. घणी निजा कीधी. राग द्वेष लगे एकने  
रुद्धि परिवार बांढी. एकने मृत्यु हानी बांढी ॥  
आठमे अनर्थ दंभविरमाणव्रत विषयिउं अने  
रो जे कोइ अतिचार पद्द दिवसमांहि ॥ ८ ॥

नवमे सामायिकव्रते पांच अतिचार ॥ तिवि  
हे छप्पणिहाणे ॥ सामायिक लीधे मन आहट्ट,  
दोहट्ट, चिंतव्युं. सावद्य वचन बोल्या. शरीर  
अणपमिलेह्युं हलाव्युं. ठती वेलाये सामा  
यिक न लीधुं. सामायिक लेइ उघामे मुखे  
बोल्यां. उंघ आवी, वात विकथा घरतणी चिंता  
कीधी. बीज दीवा तणी उज्जेहि हुइ, कण कपा  
शीया, माटी, मीठु, खमी, धावमी, अरणोटो पा  
षाण प्रमुख चांप्या, पाणी, नील, फुल, सेवाल  
हरीयकाय, बीयकाय, इत्यादिक आज्ञायां,  
स्त्री तिर्यच् तणा निरंतर परस्पर संघट्ट हुआ,  
मुहुपत्तियो संघट्टि, सामायिक अणपूग्युं पाखुं,  
पारखुं विसाखुं ॥ नवमे सामायिकव्रत विषयिउं  
अनेरो जे कोइ अतिचार पद्द दिवस ॥ ९ ॥

दशमे देशावगाशिकव्रते पांच अतिचार ॥

आणवणे पेसवणे ॥ आणवणप्पजंगे, पेसवण  
प्पजंगे, सदाणुवाई रूवाणुवाई, बहिया, पुग्गल  
पस्केवे ॥ नियमित जूमिकामांहे बाहेरथी कांई  
अणाव्युं. आपण कन्हेथकी बाहेर कांई मोक  
व्युं. अथवा रूप देखामी, कांकरो नाखी, साद  
करीआपपणुं ठतुं जणाव्युं ॥ दशमे देशावगा  
शिक व्रत विषयिज अनेरो जे कोई अतिचार  
पक्ष दिवसमांहि ॥ १० ॥

इग्यारमे पोषधोपवासव्रतें पांच अतिचार ॥  
संथारुच्चारुविहि ॥ अप्पडि लेहिय डप्पमि  
लेहिय सज्जासंथारए ॥ अप्पडिलेहिय डप्पडि  
लेहिय उच्चार पासवण जूमि ॥ पोसह वीधे सं  
थारा तणी जूमि न पूंजी. बाहिरला लहुडां  
वमां स्थंडिल दिवसें शोध्यां नही. पडीलेह्यां  
नही. मातरुं अणपूज्युं हलाव्युं. अणपूंजी जू  
मिकाये परठव्युं. परठवतां "अणुजाणहजस्स  
ग्गो" न कह्यो. परठव्या पूठें वारत्रण "वोसिरे  
वोसिरे" न कह्यो. पोसह सालामांही पेसतां  
"निसिही" निसरतां "आवस्सहि" वार त्रण  
जणी नही. पुढवी, अप्प, तेज, वाज, वनस्पति,



त्रसकाय तणा संघट्टपरिताप, उपज्जव, हुआ.  
 संथारा पोरिसी तणो विधि जणवो विसार्यो.  
 पोरिसीमांहे उंध्या. अविधे संथारोपाथर्यो. पा  
 रणादिक तणी चिंता कीधी. कालवेलाये देव न  
 वांध्या. पम्किमणुं न कीधुं. पोसह असूरो ली  
 धो. सवेरो पाखो. पर्वतिथे पोसह लीधो नही ॥  
 इग्यारमे पोषधोपवासव्रतविषयिजं अनेरो जे  
 कोई अतिचार पद्द ० ॥ ११ ॥

वारमेअतिथिसंविज्ञाग व्रते पांच अति  
 चार ॥ सच्चित्ते निस्खिवणे ० ॥ सचित्त वस्तु देठे  
 उपरबतां महात्मा महासती प्रत्ये असूऊतुं  
 दान दीधुं. देवानी बुद्धे असूऊतुं फेडी सूऊतुं  
 कीधुं, देवानी बुद्धे परायुं फेडी आपणुं कीधुं,  
 अणदेवानी बुद्धे सूऊतुं फेडी असूऊतुं कीधुं, अ  
 णदेवानी बुद्धे आपणुं फेडी परायुं कीधुं, वहो  
 रवा वेला टली रह्यां, असूरे करी महात्मा तेड्या  
 मत्तर धरी दान दीधुं, गुणवंत आवे जक्ति न  
 साचवी, बती शक्ते साहम्मी वात्सल्य न कीधुं  
 अनेराई धर्मक्षेत्र सीदाता बती शक्तिये उद्धस्यां  
 नही, दीन क्षीण प्रत्ये अनुकंपादान न दीधुं ॥

बारमे अतिथिसंविज्ञाग्रत विषयिज् अनेरो जे  
कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ १२ ॥

संक्षेपणातणा पांच अतिचार ॥ इहलोए  
परलोए० ॥ इहलोगासंसप्पज्जे, परलोगासं  
पप्पज्जे, जीवियासंसप्पज्जे, मरणासंसप्पज्जे  
कामजोगासंसप्पज्जे ॥ इहलोके धर्मना प्रज्ञा  
वल्लगें राजरुद्धि, सुख,सौभाग्य,परिवार, वांढयां  
परलोके देव, देवेंड, विद्याधर, चक्रवर्ति तणी  
पदवी वांढी, सुख आवे जीवितव्य वाढ्युं, दुःख  
आवे मरण वाढ्युं, कामजोग तणीवांढ कीधी  
॥ संक्षेपणाग्रत विषयिज् अनेरो जे कोई अति  
चार पक्ष दिवसमांहि० ॥ १३ ॥

तपाचार बार जेद ठ बाह्य, ठ अज्यंतर ॥  
अणसण मूणोयरिआ० ॥ अणसण जणीउप  
वास विशेष पर्वतियें वती शक्तियें कीधो नहीं,  
ऊणोदरीग्रत ते कोलिया पांच सात ऊणारह्या  
नहीं, वृत्तिसंक्षेप ते अव्य जणी सर्व वस्तुनो  
संक्षेप कीधो नहीं, रसत्याग तथा विगयत्याग  
न कीधो, कायक्लेश लोचादिक कष्ट कस्या न  
ही, संलीनता अंगोपांग संकोची राख्या नहीं-

पञ्चस्काण जांग्यां, पाटलो मगमगतो फेड्यो नहीं,  
 गंठसी, पोरसी, साढूपोरिसि, पुरिमट्ट, एकास  
 णुं, बेअसणुं नीवि, आंबिल प्रमुख पञ्चस्का  
 ण पारवुं विसाखुं, वेसतां नवकार न जणयो,  
 उठता पञ्चस्काण करवुं विसाखुं, गंठसीजं जा  
 ग्युं, नीवी, आंबिल, उपवासादिक, तप करी  
 काचुं पाणी पीधुं, वमन हुजं, बाह्य तप विषयि  
 जं अनेरो जे कोई अतिचार पद० ॥ १४ ॥

अज्यंतरतप ॥ पायडित्तं विणजं० ॥ मन  
 शुद्धं गुरु कन्दे आलोअणालीधी नहीं, गुरु  
 दत्त प्रायश्चित्त तप लेखा शुद्धं पहुंचाड्यो नहीं,  
 देव, गुरु, संघ, साहम्मी प्रत्ये विनय साचव्यो  
 नहीं, बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी प्रमुखतुं वै  
 यावच्च न कीधुं, वांचना; पृच्छना, परावर्त्तना,  
 अनुप्रेक्षा, धर्मकथालक्षणा पंचविध स्वाध्याय  
 न कीधो, धर्मध्यान, शुक्लध्यान न ध्याया, आ  
 र्तध्यान, रौद्रध्यान ध्यायां, कर्म क्षय निमित्तें  
 लोगस्स दशवीशनो काजस्सग्ग न कीधो ॥  
 अज्यंतर तप विषयीजं अनेरो जे कोई अति  
 चार पद दिवसमांहि० ॥ १५ ॥

वीर्याचारना त्रण अतिचार ॥ अणगूहिअ  
बलविरज्ज ॥ पढवे, गुणवे, विनय वैयावच्च,  
देवपूजा, सामायिक, पोसह, दान, शील, तप,  
जावनादिक धर्मकृत्यने विषे मन, वचन, काया  
तणुं ठतुं बल वीर्य गोपव्युं, रूमा पंचांग खमा  
समण न दीधां, वांदणा तणा आवर्त्तविधिसाच  
व्या नहिं. अन्यचित्त निरादरपणें बेठा, उताव  
लुं देववंदन, पडिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचार वि  
षयियो अनेरो जे कोइ अतिचार पढ ॥ १६ ॥

नाणाइअठ पइवय, समसंलेहणु पण पनरक  
स्मेसु बारस तव विरिअतिगं, चउवीसंसय अइ  
यारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाणं करणे ॥ जिन प्रतिषेध  
अज्जदय, अनंतकाय, बहुवीजज्जदण, महारंज  
परिग्रहादिक कीधां, जीवाजीवादिक सूद्धम वि  
चार सद्व्या नहीं, आपणी कुमति लग्गे उत्सूत्र  
प्ररूपणा कीधी, तथा प्राणातिपात, मृषावाद,  
अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया,  
लोभ, राग, द्वेष, कलह, अज्याख्यान पैशु,  
न्य, रति अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद,  
मिथ्यात्वशल्य, ए अठार पापस्थानक कीधां,

कराव्यां, अनुमोक्षां होय, दिनकृत्यप्रतिक्रमण, विनय, वैयावच न कीधा, अनेरु जे कांइ वीतरागनी आझा विरुद्ध कीधुं, कराव्युं, अनुमोद्युं होय ॥ ए चिहुं प्रकारमांहे अनेरो जे कोइ अतिचार पद्द दिवसमांहि सूद्धम, वादर, जाणतां, अजाणतां हुजं होय ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी तस्स मिळामि डक्कडं ॥१७॥

एवंकारे श्रावकतणे धर्मे, श्री समकित मूल वारव्रत, एकसो चोवीस अतिचारमांहे अनेरो जे कोइ अतिचार पद्द दिवस मांहि सूद्धम, वादर, जाणतां अजाणतां हुजं होय ते सवि हुं मने वचने कायायें करी तस्स मिळामि डक्कडं ॥ इति श्रीश्रावकपक्की, चोमासी, संवत्तरी अतिचार समाप्त ॥ ५६ ॥

॥ अथ प्रज्ञातना पञ्चस्काण ॥

॥५७॥ प्रथम नमुक्कार सहि मुठसहिनुं ॥

॥ उगगय सुरे, नमुक्कार सहिअं, मुठिसहिअं पञ्चस्काइं ॥ चउव्विहंपि आहारं, असणं पाणं खाइमं, साइमं ॥ अन्नवणाजोगेणं, सहसागारेणं, महत्त रागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥६७॥

॥५८॥ वीजुं पोरिसि, साढूपोरिसीनुं ॥

उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, सा  
ढूपोरिसिं, मुठिसहिअं, पच्चस्काइ ॥ उग्गए सूरे,  
चउविहंपि, आहारं असणं, पाणं, खाइमं, सा  
इमं ॥ अन्नवण्णाजोगेणं, सहस्सागारेणं, पठ  
न्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरा  
गारेणं, सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥५८॥

॥५९॥ वीजुं वीयासणा एकासणानुं ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कार सहिअं, पोरिसिं, मु  
ठिसहिअं पच्चस्काइ ॥ उग्गए सूरे, चउविहं  
पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥  
अन्नवण्णाजोगेणं, सहसागारेणं, पठन्नकालेणं  
दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं,  
सब समाहिवत्तियागारेणं ॥ विगइज्ज पच्चस्काइ  
॥ अन्नवण्णाजोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं,  
गिहवसंसठेणं, उस्सित्तविवेगेणं, पडुच्चमस्सि  
एणं पारिष्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सब  
समाहिवत्तियागारेणं वियासणं, पच्चस्काइ ति  
विहंपि आहारं असणं, खाइमं, साइमं, अन्न  
वण्णाजोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं,

आनट्टणं पसारेणं, गुरु अञ्जुठाणेणं, पारिठा  
वणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सब समाहिव  
त्तियागारेणं ॥ पाणस्स लेवेण वा अलेवेणवा  
अत्तेण वा, बहुलेवेण वा, ससिन्हेणवा, अ  
सिन्हेणवा, वोसिरे ॥ जो एकासणानुं पच्चस्काण  
करवुं होय तो, वियासणंने ठेकाणे एकासणं  
नो पाठ केहवो ॥ इति वियासणा एकासणानुं  
पच्चस्काण समाप्त ॥ ५९ ॥

॥६०॥ चोशुं आयंविद्वनुं पच्चस्काण ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कार सहिअं पोरिसिं, सा  
ढपोरिसिं, मुठिसहिअं पच्चस्काइ ॥ उग्गए सूरे  
चउविहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, सा  
इमं, अन्नवण्णाजोगेणं, सहसागारेणं, पच्चन्नका  
लेणं दिसामोहेणं, साहुवयणेणं महत्तरागारेणं,  
सबसमाहिवत्तियागारेणं ॥ आयंविद्वं पच्चस्काइ  
॥ अन्नवण्णाजोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं  
गिह्वसंसठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पारिठावणिया  
गारेणं, महत्तरागारेणं सब समाहिवत्तिगारे  
णं ॥ एगासणं पच्चस्काइ ॥ तिविहंपि आहारं  
असणं, खाइमं साइमं ॥ अन्नवण्णाजोगेणं

सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउट्टण प  
सारेणं, गुरुअञ्जुठाणेणं, पारिठवणियागारेणं,  
महत्तरागारेणं, सबसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पा  
णस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अत्ते एवा, बहु  
लेवेणवा, ससिन्हेण वा, असिन्हे एवा ॥ वोसिरे  
॥ इति आयंविज्जनुं पच्चस्काण ॥ ६० ॥

॥६१॥ पांचमुं तिविहार उपवासनुं ॥

॥उग्गए सूरे,अअत्तठं पच्चस्काइ ॥ तिविहंपि  
आहारं, असणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नवणा  
जोगेणं, सहसागारेणं पारिठवणियागारेणं,  
महत्तरागारेणं, सबसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पा  
णहार पोरिसिं, साढ पोरिसिं, मुठिसहिअं,  
पच्चस्काइ ॥ अन्नवणाजोगेणं, सहसागारेणं  
पच्चन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं मह  
त्तरागारेणं, सबसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पाणस्स  
लेवेण वा, अलेवेणवा, अत्तेण वा, बहुलेवेण  
वा, ससिन्हेण वा असिन्हेण वा वोसिरे ॥ इति  
तिविहार उपवासनुं पच्चस्काण ॥ ६१ ॥

॥६२॥ उहुं चउविहार उपवासनुं ॥

॥ सूरे उग्गए अअत्तठं पच्चस्काइ ॥ चउवि



हंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्न  
 ञ्णा जोगेणं, सहसागारेणं, पारिष्ठावणियागा  
 रेणं, महत्तरागारेणं, सबसमाहिवत्तियागारेणं  
 वोसिरे ॥ इति चउविहारउपवासनुं ॥ ६२ ॥

॥ अथ सांऊनां पच्चस्काण ॥

तहां प्रथम वीयासणं, एकासणं, आयं  
 विल, तिविहार उपवास, अने ठठ जे करे तो  
 तेणे पाणहारनुं पच्चस्काण करवुं ते आवी रीतेः—  
 ॥६३॥ पाणहार दिवसचरिमं पच्चस्काइ ॥ अन्नञ्  
 णाजोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सब  
 समाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ ६३ ॥

॥६४॥ बीजुं चउविहारनुं पच्चस्काण ॥

॥ दिवस चरिमं पच्चस्काइ ॥ चउविहंपि आ  
 हारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नञ्णा  
 जोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सबस  
 माहिवत्तियागारेणं, वोसिरे ॥ इति ॥ ६४ ॥

॥६५॥ त्रीजुं तिविहारनुं पच्चस्काण ॥

॥ दिवस चरिमं पच्चस्काइ ॥ तिविहंपि आहा  
 रं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नञ्णा जोगेणं  
 सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सबसमाहिवत्ति

यागारेणं, वोसिरे ॥ इति तिविहारनुं ॥ ६५ ॥

॥६६॥ चोयुं डविहारनुं पञ्चस्काण ॥

॥दिवस चरिमं पञ्चस्काइ ॥ डविहंपि आहा  
रं, असणं, खाइमं, अन्नवण्णाजोगेणं, सहसा  
गारेणं, महत्तरागारेणं सब समाहिवत्तियागा  
गारेणं वोसिरे इति ॥ ६६ ॥

॥ पांचमुं जे नियम धारे तेने देशावगासिय  
नुं पञ्चस्काण करवुं तेनो पाठ कहे ठे ॥

॥६७॥ देसावगासिअं उवजोगं परिजोगं पञ्च  
स्काइ ॥ अन्नवण्णाजोगेणं, सहसागारेणं, मह  
त्तरागारेणं सब समाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ६७

॥६८॥ ठुं पोसहनुं पञ्चस्काण ॥

॥ करेमि जंते पोसहं, आहारपोसहं देसजं  
सवजं, सरीर सक्कार, पोसहं सवजं, वंजचेर  
पोसहं सवजं, अघावारपोसहं सवजं, चउबिदे  
पोसहं ठामि ॥ जाव दिवसं अहोरतं पज्जुवा  
सामि ॥ डविहं तिविहेणं ॥ मणेणं, वायाए,  
काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स जंते पडि  
क्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसि  
रामि ॥ इति पञ्चखाणानि संपूर्णानि ॥ ६८ ॥

॥ ६९ ॥ अथ पोसह पारतां गाथा ॥

॥ सागरचंदो कामो, चंदवडिंसो सुदंसणो  
धन्नो ॥ जेसिं पोसह पन्निमा, अखंमिआ जी  
विअं तेवि ॥ १ ॥ धन्ना सलाहणिजा, सुलसा  
आणंद कामदेवाय ॥ जेसिं पसंसइ नयवं, ह  
ढवयं तं महावीरो ॥ २ ॥ पोसहविधे लीधनं  
विधे पारीजं विधि करतां जे कोइ अविधि हुउं  
होइ, ते सवि हुं मने वचने कायायें करी मि  
ठामि डक्कडं ॥ ॥ इति ॥ ६९ ॥

॥ ७० ॥ अथ संथारापोरिसी ॥

॥ निसिही निसिही निसिही ॥ नमो खमास  
मणाणं, गोयमाइणं ॥ महामुणीणं ॥ ए पाठ त  
था नवकार तथा करेमि जंतं समाइअं ॥ एट  
ला सर्व पाठ त्रण वार कहीने ॥ अणुजाणहजि  
ठिजा ॥ अणुजाणह परमगुरू, गरुगुणरय  
णेहिं मंमियसरीरा ॥ बहुपन्निपुन्नापोरिसि, रा  
इय संथारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं  
बाहुवहाणेण वामपासेणं ॥ कुकुन्निपायपसा  
रण अंतरंत पमज्जाए जूमिं ॥ २ ॥ संकोइअ  
संमासा, उवडंते अ काय पन्निमेहा ॥ दवइ उ

वर्जं, उसास निरुञ्जणा लोए ॥ ३ ॥ जइ मे  
हुज्ज पमाज्ज, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ॥  
आहार सुवहि देहं, सबं तिविहेणं वोसिरिअं  
॥ ४ ॥ चत्तारि मंगलं ॥ अरिहंता मंगलं ॥ सि  
द्धा मंगलं ॥ साहु मंगलं ॥ केवल्लिपन्नत्तो ध  
म्मो मंगलं ॥ ५ ॥ चत्तारि लोगुत्तमा ॥ अ  
रिहंता लोगुत्तमा ॥ सिद्धा लोगुत्तमा ॥ साहु  
लोगुत्तमा ॥ केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो  
॥ ६ ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि ॥ अरिहंते स  
रणं पवज्जामि ॥ सिद्धे सरणं पवज्जामि ॥ साहु  
सरणं पवज्जामि ॥ केवल्लिपन्नत्तं धम्मं सरणं  
पवज्जामि ॥ ७ ॥ पाणाइवाय मलिअं, चोरिक्कं  
मेहुणं दविण सुव्वं ॥ कोदं माणं मायं, लोचं  
पिज्जं तदा दोसं ॥ ८ ॥ कलहं अन्नखाणं पेसु  
न्न रई अरई समाजत्तं ॥ परपरिवायं माया,  
मोसं मिच्चत्तसद्धं च ॥ ९ ॥ वोसिरिसु इमाइं  
मुख्क मग्ग संसग्ग विग्घज्जुआई ॥ डग्गइ नि  
वंधणाई अठारस पावठाणाई ॥ १० ॥ एगोदं  
नत्ति मे कोइ, नाह मन्नस्स कस्सई ॥ एवं अ  
दीण मणसों, अप्पाण वणुसासई ॥ ११ ॥ ए

गोमे सासउं अप्पा, नाण दंसण संजुज्जो॥सेशा  
मे बाहिरा मावा, सब्बे संजोगल्लखण ॥ १२ ॥  
संजोगमूला जीवेण, पत्ता डुक्कपरंपरा ॥ तम्हा  
संजोग संबंधं, सब्बं तिविहेण वोसिरिञ्चं॥१३॥  
अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सु साहुणो गुरु  
णो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इच्च सम्मत्तं मए गहि  
ञ्चं ॥ १४ ॥ खमिच्च खमाविच्च मइ खमिच्च  
सब्वह जीव निकाय ॥ सिद्धह साख आलोयण  
ह, सुद्धह वइर न जाव ॥ १५ ॥ सब्बे जीवा क  
म्म वस्स चउदह राज जमंत ॥ ते मे सब्ब ख  
माविच्चा, सुद्धवि तेह खमंत ॥ १६ ॥ जं जं म  
णेण बद्धं, जं जं वाएण मासिञ्चं पावं ॥ जंजं  
काएण कयं, मिठामि डुक्कमं तस्स ॥ १७ ॥

॥ इति संधारा पोरिसी ॥ ७० ॥

॥ अथ चैत्यवंदन

॥ तत्र प्रथमं सीमंधरजिनचैत्यवंदनं ॥

॥ सीमंधर परमात्मा, शिव सुखना दाता ॥  
पुस्कल वइ विजये जयो, सर्व जीवना त्राता  
॥ १ ॥ पूर्व विदेह पुंम्परीणिणी, नयरीये शोहे॥  
श्री श्रेयांस राजा तिहां, जविअणनां मन मो

हे ॥१॥ चउद सुपन निर्मल लही, सत्यकी रा  
णी मात ॥ कुयुं अर जिन अंतरे, श्री सीमंधर  
जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमे प्रजु जनमीया, वली  
यौवन पावे ॥ मात पिता हरखे करी, रुकमिणी  
परणावे ॥ ४ ॥ जोगवी सुख संसारनां, संजम  
मन लावे ॥ मुनिसुव्रत नमी अंतरे, दीक्षा प्र  
जु पावे ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो दय करी, पाम्या  
केवल नाण ॥ रिखज लंठने शोजता, सर्व जा  
वना जाण ॥६॥ चौरासी जस गणधरा, मुनि  
वर एक शो कोरु ॥ त्रण जुवनमां जोयतां, न  
हीं कोइ एहनी जोरु ॥ ७ ॥ दस लाख कह्या  
केवली, प्रजुजीनो परिवार ॥ एक समय त्रण  
कालना, जाणे सर्व विचार ॥ ८ ॥ उदय पेढाल  
जिनांतरे ए, थाशे जिनवर सिद्ध ॥ जश विज  
य गुरु प्रणमतां, शुभ वांछित फल लीध ॥९॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुंचैत्यवंदन ॥

॥ विमल केवल ज्ञानकमला, कलित त्रिजु  
वन हितकरम् ॥ सुरराजसंस्तुतचरणपंकज,  
नमो आदिजिनेश्वरम् ॥ १ ॥ विमलगिरिवर  
शृंगमंडण, प्रवरगुणगणभूधरम् ॥ सुर असुर

किन्नर कोडि सवित ॥ नमो० ॥ २ ॥ करती ना  
 टक किन्नरी गण, गाय जिन गुण मनहरम् ॥  
 निर्जरावली नमे अहोनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥ पुंरु  
 रिक गणपति सिद्धि साधी, कोमि पण मुनि म  
 नहरम् ॥ श्रीविमल गिरिवर शृंग सिद्धा ॥ नमो०  
 ॥ ४ ॥ निजसाध्य साधन सुरिंद मुनिवर, कोडि  
 नंत ए गिरिवरम् ॥ मुक्ति रमणी वर्या रंगे ॥ न  
 मो० ॥ ५ ॥ पाताल नर सुरलोक मांही, विमल  
 गिरिवरतोपरम् ॥ नहि अधिक तीरथ तीर्थपात  
 कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ इम विमल गिरिवर शि  
 खर मंडण, दुःख विहंडण ध्याइये ॥ निज शुद्ध  
 सत्ता साधनार्थ, परम ज्योति निपाइये ॥ ७ ॥  
 जित मोह कोह विगोह निजा, परमपद स्थित  
 जयकरम् ॥ गिरिराज सेवाकरण तत्पर, पद्मवि  
 जय सुहित करम् ॥ ८ ॥ इति ॥ ७३ ॥

॥ अथ सिद्धाचलनुं चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीशत्रुंजय सिद्ध खेत्र, दीठे छुर्गति वारे ॥  
 ज्ञाव धरीने जे चढे, तेने जवपार उतारे ॥ १ ॥  
 अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनोराय ॥  
 पूर्व नवाणुं शखजदेव, ज्यां ठविआ प्रजुपाय

॥ २ ॥ सूरज कुंरु सोहामणो, कविड जह्नु अ  
जिराम ॥ नाजिराया कुलमंडणो, जिनवर करुं  
प्रणाम ॥ ३ ॥ इति चैत्य ० ॥ ७४ ॥

॥ अथ श्रीपरमात्मानुं चैत्यवंदन ॥

॥ परमेसर परमातमा, पावन परमिष्ठ ॥  
जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणें में दिष्ठ ॥ १ ॥  
अचल अकल अविकार सार, करुणा रससिं  
धु ॥ जगती जन आधार एक, निःकारण बंधु  
॥ २ ॥ गुण अनंत प्रभु ताहारा ए, किमही क  
ह्या न जाय ॥ राम प्रभु जिन ध्यानथी, चिदा  
नंद सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥ ७५ ॥

अथ सीमंधर जिनस्तवनं ॥

॥ सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासे  
जावजो ॥ सुज विनतमी, प्रेमधरीने एणि परे  
तुमें संजलावजो ॥ ए आंकणी ॥ जे अण्यजुव  
ननो नायक ठे ॥ जस चोसछ इंदें पायक ठे ॥  
नाण दरिसण जेहनें खायक ठे ॥ सुणो ॥ १ ॥  
जेनी कंचन वरणी काया ठे ॥ जस धोरीलंबन  
पाया ठे ॥ पुंडरीगिणि नगरीनो राया ठे ॥ सु  
णो ॥ २ ॥ वार पर्षदामिहिं विराजे ठे ॥ जस



ચોત્રીશ અતિશય ઠાજે છે ॥ ગુણ પાંત્રીશ વા  
 ણીએ ગાજે છે ॥ સુણો ૦ ॥ ૩ ॥ જીવિજનને તે પ  
 ડિવોદે છે ॥ તુમ અધિક શિતલ ગુણ શોદે છે ॥  
 રૂપ દેખી જીવિજન મોદે છે ॥ સુણો ૦ ॥ ૪ ॥  
 તુમ સેવા કરવા રસીયો તું ॥ પણ જીરતમાં હો  
 વસીયો તું ॥ મહામોહ રાય કર ફસીયો તું ॥  
 સુણો ૦ ॥ ૫ ॥ પણ સાહિવચિત્તમાં ધરીયો છે ॥  
 તુમ આણા સ્વદ્ધ કર ગ્રહીયો છે ॥ પણ કાંઈક  
 મુજથી મરીયો છે ॥ સુણો ૦ ॥ ૬ ॥ જિન ઉત્તમ  
 પુંઠેં હુવે પૂરો ॥ કહે પદ્મવિજય આઝં શૂરો ॥ તો  
 વાંધે મુજ મન અતિ નૂરો ॥ સુ ૦ ॥ ૭ ॥ ઇતિ ॥

॥ અથ શ્રીસિદ્ધાચલસ્તવનં ॥

॥ જશોદા માવડી ॥ એ દેશી ॥

॥ જાત્રા નવાણું કરીયે વિમલગિરી ॥ જાત્રા  
 નવાણું કરિયે ॥ એ આંકણી ॥ પૂરવ નવાણું વા  
 ર શેત્રુંજગિરિ, રૂઝન જિણંદ સમોસરીયે ॥  
 વિ ૦ ॥ ૧ ॥ કોમિ સહસ જીવ પાતક ત્રૂટે ॥ શેત્રું  
 જ સાહામો મ્હા જરીયે ॥ વિ ૦ ॥ ૨ ॥ સાત બઠ  
 દોય અઠમ તપસ્યા, કરી ચઢીયે ગિરિવરીયે ॥  
 વિ ૦ ॥ ૩ ॥ પુંડરીક પદ જપીયે હરશે, અધ્ય

वसाय शुभ्र धरीये ॥ वि० ॥ ४ ॥ पापी अन्न  
व्यी न नजरे देखे, हिंसक पण उद्धरीये ॥ वि० ॥  
॥ ४ ॥ जुइं संथारो ने नारी तणो संग, दूरथकी  
परिहरीये ॥ वि० ॥ ६ ॥ सचित्त परिहारीनें एकल  
आहारी, गुरु साथे पद चरीये ॥ वि० ॥ ७ ॥ पम्नि  
क्रमणा दोय विधिशुं करीये, पाप पम्न विखहरी  
ये ॥ वि० ॥ ८ ॥ कलिकालें एतीरथमोढुं, प्रवह  
ण जिम जव दरीए ॥ वि० ॥ ९ ॥ उत्तम ए गिरि  
वर सेवंतां, पद्मकहे जव तरीये ॥ विमल ० ॥ १० ॥

॥ अथ श्री सिद्धचलजीनुं स्तवन ॥

॥ आंखडीये रे में आज, शत्रुंजो दीठोरे ॥  
सवा लाख टकानो दहामो रे, लागे मुने मी  
ठो रे ॥ ए आंकणी ॥ सफल थयो मारा मननो  
ऊमाहो ॥ वाला मारा ॥ जवनो संशय जांग्यो  
रे ॥ नरक तिर्यंच गति दूर निवारी, चरणे प्रभु  
जीने लाग्यो रे ॥ शत्रुं ० ॥ १ ॥ मानवजवनो  
लाहो लीधो ॥ वा० ॥ देहडी पावन कीधी रे ॥  
सोना रूपाने फूलडे वधावी, प्रेमे प्रदहणी  
दीधी रे ॥ शत्रुं ० ॥ २ ॥ डधडे पखालीने केशर  
घोली ॥ वा० ॥ श्री आदीश्वरपूज्यारे ॥ श्रीसि,

श्वाचल नयणें जोतां, पापमेवासि ध्रुज्यारे ॥ श  
 त्रुं० ॥ ३ ॥ स्वयमुखसुधर्मा सुरपति आगे ॥ वा० ॥  
 वीरजिणंद इम बोले रे ॥ त्रण जुवनमां तीरथ  
 मोढुं, नहिं कोइ शत्रुंजा तोले रे ॥ शत्रुं० ॥ ४ ॥  
 इंड सरीखा ए तीरथनी ॥ वा० ॥ चाकरीचित्त  
 मां चाहेरे ॥ कायानी तो कासल टाले, सूरज  
 कुंडमां नाहे रे ॥ शत्रुं० ॥ ५ ॥ कांकरे कांकरे  
 श्रीसिद्ध खेत्रे ॥ वा० ॥ साधु अनंता सीधा रे ॥  
 ते माटे ए तीरथ मोढुं, उद्धार अनंता कीधारे  
 ॥ शत्रुं० ॥ ६ ॥ नाजिराया सुत नयणे जोतां ॥ वा० ॥  
 मेह अमीरस वूढ्यारे ॥ उदयरतन कहे आज  
 मारे पोते, श्रीआदीश्वर तूढ्यारे ॥ शत्रुं० ॥ ७ ॥  
 इति स्तवनं ॥ ८० ॥

॥ अथ श्रीशंखेश्वरपार्श्वजिन स्तुतिः ॥

॥ शंखेश्वर पासजी पूजियें, नरजवनो ला  
 हो लीजियें ॥ मन वंछित पूरण सुततरु, जय वा  
 मासुत अलवेसरु ॥ १ ॥ दोय राता जिनवर अति  
 जला, दोय धोला जिनवर गुणनिदा ॥ दोय  
 लीला दोय सामल कह्या, शोले जिन कंचन व  
 र्ण लह्या ॥ २ ॥ आगम ते जिनवरें जाखीयो, ग

एधर ते ह्रीयमे राखीयो॥ तेहनो रस जेणे चाखी  
यो, ते हुजं शिव सुख साखीयो ॥ ३ ॥ धरणी  
धर राय पद्मावती, प्रभु पार्श्व तणा गुण गाव  
ती ॥ सहु संघना संकट चूरती, नयविमलना  
वंवित पूरती ॥ ४ ॥ ॥ इति ॥ ८५ ॥

॥ अथ शिखामण सजाय ॥

॥ जीव वारुं तुं मोरा बालमां, परनारीथी  
प्रीति म जोरु ॥ परनारीनी संगत नहीं चली,  
तारा कुलमां लागशे खोड ॥ जीव० ॥ १ ॥ जी  
व आ संसार ठे कारमो, दीसे ठे आल पंपाल॥  
जीव एहवुं जाणी चेतजो, आगल मागीमे ना  
खी ठे जाल ॥ जी० ॥ २ ॥ जीव मात पिता  
जाइ बेनमी, सहु कुटुंब तणो परिवार ॥ जीव  
वेती वारे सहु सगुं, पळें लांवा कीधा जुहार ॥  
जीव० ॥ ३ ॥ देहली लगें सगो आंगणो, शे  
रीअ लगें सगीमाय ॥ जीव सीम लगें साजन  
जलो, पळें हंस एकीलो जाय ॥ जीव० ॥ ४ ॥  
जीव जातां थकां नवि जाणीयुं, नवि जाण्यो  
वार कुवार ॥ जीव गाडुं जरीयुं ईंधणे, वली खो  
खरी हांडलीसार ॥ जीव० ॥ ५ ॥ जीव आठ

म पाखि न जलखी, जीव बहुला कीधा पाप  
जीव सुमतिविजय मुनि एम जणे, जीव आ  
वागमण निवार ॥ जीव० ॥ ६ ॥ इति ॥ ८७ ॥

॥ अथ श्री अनाथी मुनिनी सहाय ॥

॥ श्रेणिक रयवामी चढ्यो, पेखीयो मुनि ए  
कंता॥वररूप कांतें मोहीज, राय पूढे ए कहोनें  
विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिक राय हुंरे अनाथी नि  
ग्रंथ ॥ तिणे में लीधोरे साधुजीनो पंथ ॥ श्रेणि  
क० ॥ ए आंकणी ॥ इणें कोसंवी नयरी वसे,  
मुळ पिता परिगलधन्न ॥ परिवार पूरें परिवस्यो,  
हुं हुं तेहनो रे पुत्ररतन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ एक  
दिवस मुळ वेदना, ऊपनी में न खमाय ॥ मात  
पिता सहु झूरी रह्या, पण समाधि किणे नवि  
थाय, ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरडी गुण मणिजंरमी,  
चोरमी अवला नार ॥ कोरडी पीडा में सही,  
कोणे न कीधी मोरमी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु  
राज्य वैद्य बोलाविया, कीधला कोडि उपाय  
॥ वावना चंदन चरचिया, तोहिपण रे समाधि  
न थाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ जगमांहि को केहनो न  
हीं, ते जणी हुं रे अनाथ ॥ वीतरागना धरमसा

रिखो, नहीं कोइबीजो रे मुक्तिनो साथे ॥ श्रे० ॥  
 ॥ ६ ॥ वेदना जो मुऊ उपशमे, तो लेउं संजम ज्ञा  
 र ॥ इम चिंतवतां वेदन गई, व्रत लीधुं में हर्ष  
 अपार ॥ श्रे० ॥ ७ ॥ कर जोमी राय गुण स्त  
 वे, धन धन ए अणगार ॥ श्रेणिक समकित  
 पामीयो, वांदी पोहोतो रे नगर मजार ॥ श्रे० ॥  
 ॥ ८ ॥ मुनि अनाथी गावतां तूटे कर्मनीकोड  
 गणि समय सुंदर तेहना, पाय वंदे रे वे कर  
 जोड ॥ श्रे० ॥ ९ ॥ इति अनाथीनी सव्वाय ॥ ८८ ॥

॥ अथ सामायिक लेवानो विधि

॥ प्रथम उंचें आसनें पुस्तक प्रमुख मूकी  
 श्रावक श्राविका कटासणुं, मुहपत्ती, चरवडो  
 लेइ, शुद्ध वस्त्र, जग्या पूंजी, कटासणा उपरवे  
 सी, मुहपत्ती डावा हाथमां मुख पासैं राखी,  
 जमणो हाथ आपनाजी सन्मुख राखी, एक न  
 वकार गणी, पंचिदिअ कहीयें; अने जो आ  
 गलथी ते स्थानकें आचार्यप्रमुखनी स्थापना क  
 रेखी होय, तो तिहां पंचिदिय न कहेवुं, पढी इ  
 ञामि खमासमाण देइ, इरियावहिया ० तथा त  
 रस उत्तरी ० अने अन्नच उससीएणं कही, एक

लोगस्सनो अथवा चार नवकारनो काउस्सग  
 करी पारी, प्रगट लोगस्स कही, खमासमाण  
 देइ, “इच्छाकारेण संदिसह जगवन् सामायि  
 क मुहपत्ती पडिलेहुं ॥ इत्थं” ॥ एम कही मुहपत्ति  
 तथा अंगनी पम्पिलेहणना पच्चास बोल कही,  
 मुहपत्ती पडिलेहीयें, पढी खमासमाण देइ,  
 “इच्छाकारेण संदिसह जगवन् सामायिक,  
 संदिसाहुं ॥ इत्थं ॥ कही खमा० इच्छा० ॥  
 सामायिक ठाउं, इत्थं” एम कही, बेहाथ जोडी,  
 एक नवकार गणी, इच्छाकार जगवन् पसाय  
 करी, सामायिक दंडक उच्चरावो जी. तेवारें व  
 डिल, करेमि जंते कहे, पढी खमासमाण देइ इ  
 च्छा० ॥ बेसणें संदिसाहुं ॥ इत्थं ॥ खमा० ॥ इत्थं  
 ॥ बेसणें ठाउं ॥ इत्थं ॥ खमा० ॥ इच्छा० ॥ सज्जाय  
 संदिसाहुं ॥ इत्थं ॥ खमा० ॥ इच्छा० ॥ सज्जाय

(खमा० होय, त्या खमासमाण देवुं इच्छा० होय, त्यां इच्छा  
 कारेण संदिसह जगवन् कहेवुं, तथा ए सर्व विधि जे लख्यो छे,  
 ते स्थापनाजी संन्मुख क्रिया करवा आश्रयी समजवो, परंतु  
 साक्षात् गुरु विराजमान होय तो इच्छाकारेण संदिसह जगवन्  
 सज्जाय संदिसाहु, एम शिष्य कहे तेवारें गुरु कहे “संदिसह”  
 तथा इरियावहि पडिकमवाना आदेशमा गुरु “पम्पिकमेह” कहे,  
 एम सर्व स्थानकें समजी खेवुं )

करुं ॥ इत्थं ॥ एम कही त्रण नवकार गणवा॥  
पढी वे घनी सजायधर्मध्यानकरवुं॥इति॥ए६॥

॥ अथ सामायिक पारवानो विधि ॥

॥ खमासमण देइ ॥ इरियावहिपम्किमवाथी  
यावत्लोगस्स सुधी कही ॥ खमा० ॥ इत्ता० ॥  
मुहपत्ती पढीलेहुं एम कहीमुहपत्ती पम्किदेही,  
खमासमण देइ ॥ इत्ता० ॥ सामायिक पारुं ॥  
यथाशक्ति ॥ वली खमा० इत्ता० ॥ सामायिक  
पारुं ॥तद्वत्ति॥ कही पढी जमणो हाथ चरवला  
उपर अथवा कटासणाउपर थापी एक नवका  
र गणी “ सामाश्यवयजुत्तो ” कहियें ॥ पढी  
जमणो हाथ थापना सामो सवलो राखीने ए  
क नवकार गणी उठवुं ॥ इति सामायिक पार  
वानो विधि समाप्त ॥ ए७ ॥

॥ अथ पाञ्चस्काण परवानो विधि ॥

॥ प्रथम “इरियावहियाए” पडिक्कमी याव  
त् “जगचिंतामणि” नुं चैत्यवंदन “जयवीय  
राय” सुधी करवुं ॥ पढी “मन्हजिणाणं” नीस  
जाय कही मुहपत्ति पडिलेहवी ॥ पढी खमास  
मण देइ इत्ताकारेण संदिसह भगवन् पञ्च



स्काण पारुं यथाशक्ति " इत्तामि० इत्ता०  
 पञ्चस्काण पाखुं " तहत्ति " एम कही जमणो  
 हाथ कटासणां अथवा चरवला उपर थापी,  
 एक " नवकार " गणी, पञ्चस्काण कखुं होय  
 तेनुं नाम कहीने पारवुं. ते लखीये ठैयें:-  
 उग्गएसूरे नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, सारुपोरिसिं,  
 गंतिसहिअं, मुठिसहिअं, पञ्चस्काण कखुं; चउवि  
 हार, आंविअ, निवी, एकासणुं, वे आसणुं कखुं,  
 तिविहार पञ्चस्काण, फासिअं, पाविअं, सोहि  
 अं, तीरिअं, कट्टिअं, आराहिअं, जं च न आ  
 राहिअं, तस्स मित्तामि उक्कमं, एम कही एक  
 नवकार गणवो ॥ इति ॥ ९८ ॥

॥ अथ पण्डितेहण करवानो विधि ॥

॥ नवकार पंचिंदिअं कही, इरियावहियाए  
 कहेवुं, थापना होय तो नवकार पंचिंदिअ न  
 कहेवो. पढी तस्स उत्तरी कही एक लोगस्स अ  
 थवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, प्रगट  
 लोगस्स कही, उजे पगें बेसी मुहपत्ती, चरवलो  
 कटासणुं, उत्तरासणुं, धोतीयुं, कंदोरो आदि  
 नुं पण्डितेहण करवुं, पढी काजो काहामी, जीव

कलेवर सचित्त आदि जोबुं, पढी काजो काहा  
ढनार आपनाजी सामो ऊजो रही, इरियावहि  
पम्किमी, काजो परठववा जग्या शोधी, त्रण  
वार अणुजाणह जस्सग्गो कही, काजो परठवी  
ने पढी त्रणवार “वोसिरे” कहे ॥ इति ॥ एण्ण ॥

॥ अथ देवसि प्रतिक्रमणविधि ॥

॥ प्रथम सामायिकलीजें, पढी पाणी वाव  
खुं होय तो, मुहपत्ति पम्फिहवी, अने आहार  
वावखो होय तो, वांदणां वे देवां, त्यां बीजा  
वांदणामां “आवसियाए” ए पाठ न कहेवो ॥  
पढी यथाशक्ति पञ्चकाण करवुं ॥ पढी खमा  
समण देई इत्ताकारेण संदिसह जगवन् चै  
त्यवंदन करु “इत्तं” एम कही, वमेरायें अथवा  
पोतें चैत्यवंदन कहेवुं ॥ पढी जंकिंचि कही  
नमुत्तुणं कहेवुं ॥ पढी ऊजा थईने अरिहंत  
चेइयाणं० अन्नत्तं० कही एक नवकारनो काऊ  
स्सग्ग करी, पारीने, जेने वमेरा हुकम आपे  
ते धणीयें “नमोऽर्हत्” कहीने प्रथम थोय क  
हेवी ॥ पढी प्रगट लोगस्स कही, सबलोए अ  
रिहंतचेइयाणं कही, एक नवकारनो काऊस्सग्ग

पारी बीजी थोय कहेवी ॥ पढी पुस्करवरदी  
 कही, “सुअस्स जगवज करेमि काजस्सग्गं वंद  
 णवत्तिआए” कही, एक नवकारनो काजस्सग्ग  
 करी, त्रीजी थोय कहेवी ॥ पढी सिद्धाणं बुद्ध  
 णं० वेयावच्चगराणं० करेमिकाजस्सग्गं अन्न  
 उ० नो पाठ कही, एक नवकारनो काजस्सग्ग  
 करी पारी “नमोऽर्हत्” कही, चौथी थोय क  
 हेवी ॥ पढी वेशी हाथ जोडीने “नमुत्तुणं” कही  
 खमासमण देइ, “जगवानहं” कहेवुं, वली बीजुं  
 खमासमण देइ, “आचार्यहं” कहेवुं, वली त्रीजुं  
 खमासमण देइ, “उपाध्यायहं” कहेवुं वली  
 चौथुं खमासमण देइ, सर्व साधुज्योऽहं ” क  
 हेवुं, ए रीते चार खमासमण देवापूर्वक जग  
 वानादि चारने थोज वंदन करीये ॥ पढी खमा  
 समण आपी इत्ताकारेण संदिसह जगवनू “दे  
 वसिप्रतिक्रमणे ठाजं” एम कही जमणो हाथ  
 चरवला अथवा कटासणा ऊपर आपीने, इत्तं  
 सवस्सवि देवसिअं० नो पाठ कही ऊजा थई,  
 करेमि जंतं० इत्तामि ठामि काजस्सग्गं जो मे दे  
 वसिउ० तस्स उत्तरि० कही अतिचारनी आठ

गाथानो काउस्सग्ग करवो, जो आठ गाथा  
न आवमती होय तो आठ नवकारनो काउ  
स्सग्ग करवो, ते पारीने प्रगट लोगस्स कहेवो ॥  
पढी बेशीने त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ति पडि  
लेहीने वांदणां वे देवां ॥ पढी ऊजा थईने  
इत्ताकारेण संदिसह जगवन् देवसिअं आलोउं  
इत्तं आलोएमि कही जो मे देवसिउं कहेवुं,  
पढी सात लाख० कही, अठार पापस्थानक  
आलोइने, “सवस्सवि देवसियं” कहेवुं ॥ पढी  
नीचें बेसी जमाणो ढींचण ऊजो राखी,  
एक नवकार गणी, करेमिजंते० इत्तामि पडिक्क  
मिउं० कही वंदितासूत्र संपूर्ण कहीने वांदणां वे  
देवां ॥ पढी खमासमण देई इत्ताकारेण संदि  
सह जगवन् अञ्जुठिउंहं अञ्जितर देवसियंखा  
मेउं एम कही, अञ्जुठिउं खामीने वांदणांवेवार  
देवां ॥ पढी ऊजा थई “आयरिय उवज्जाय”  
कही करेमि जंते इत्तामि ठामि काउस्सग्गं जो  
मे देवसिउं० कह “तस्स उत्तरी” कही वे लो  
गस्सनो अथवा आठ नवकारनो काउस्सग्ग  
करी पारीने प्रगट लोगस्स कहेवो ॥ पढी सब

लोए अरिहंतचेइआणं कही, एक लोगस्स  
अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग पारी पढी  
पुस्करवरदी, सुअस्स जगवज्ज, करेमि काउस्सग्गं  
वंदणं० अन्नत्तं० कही, एक लोगस्स अथवा  
चार नवकारनो काउस्सग्ग पारीने पढी सिद्धाणं  
बुद्धाणं कही, सुअ देवयाए करेमि काउस्सग्गं  
अन्नत्तं० कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी,  
“नमोऽर्हत्तु” कही, पुरुषें “सुअदेवया” नी  
पहेली थोय अने स्त्रीयें “कमलदल” नी पहेली  
थोय कहेवी ॥ पढी खित्तदेवयाए करेमि काउ  
स्सग्गं० कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी  
“नमोऽर्हत्तु” कही खित्तदेवयानी बीजी थोय  
स्त्रीयें तथा पुरुषें कहेवी ॥ पढी प्रगट एक नव  
कार गणी, बेशीनें ठठा आवश्यकनी सुहपत्ति  
पडिलेही वांदणां बे देईने, इच्छाकारेण संदिसह  
जगवन् सामायिक, चउविसत्तो, वंदनक, पढि  
क्रमणुं, काउस्सग्ग, पच्चस्काण, कस्युं ठे जी, ए  
रीते ठ आवश्यक, संजारवां ॥ पढी “इच्छामो  
अणुसंघि” “नमोखमासमणाणं०” “नमोऽर्ह  
त्तु” कही, पुरुष, नमोस्तु वर्धमानाय कहे अ

ने स्त्री संसारदावानी त्रण थोयो कहे ॥ पढी न  
मुत्तुणं कही, खमासमण आपी इच्छाकारेण सं  
दिसह जगवन् स्तवन त्रणुं. एम कही नमोऽर्ह  
त० कही स्तवन कहेवुं ॥ पढी वरकनक० कही  
पूर्वली रीतें चार खमासमणपूर्वक जगवान्  
आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, ए चारने बांदी  
जमणो हाथ उपधि ऊपर थापी अट्टाइजेसु०  
मुनिवंदन कहेवुं ॥ पढी खमासमण आपी इच्छा  
कारेण संदिसह जगवन् देवसिय पायवित्तवि  
सोदण्णं काउस्सग्ग करुं, इत्थं देवसिय पाय  
वित्त विसोदण्णं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्तस  
सिएणं० कही चार लोगस्स अथवा शोल नव  
कारनो काउस्सग्ग करवो, ते पारी प्रगट लोग्ग  
स्स कहीने नीचे वेशी खमासमण देइ इच्छा  
कारेण संदिसह जगवन् सज्जाय संदिसाहुं, इ  
त्थं कही वली बीजुं खमासमण देइ इच्छाकारेण  
संदिसह जगवन् सज्जाय त्रणुं एम सज्जायनो  
आदेश मागी एक नवकार गणी सज्जाय कहेवी  
॥ पढी एक नवकार गणी, खमासमण देइ इ  
च्छाकारेण संदिसह जगवन् डक्ककडं कम्मस्क

उं निमित्तं काउस्सग्ग करुं, इत्थं डुक्ककउं क  
 म्मक्कउं निमित्तं करेमि काउस्सग्गं “अन्नव०”  
 कही “संपूर्ण चार लोगस्स अथवा शोल न  
 वकार” नो काउस्सग्ग करवो, ते जेने लघु शां  
 ति कहेवी होय एवो एक वडेरो, अथवा पोते  
 शांति कहेवावालो होय तो पोतेज पारीने  
 “नमोऽर्हत्त०” कही लघुशांति कहीने प्रगट  
 लोगस्स कहे ॥ पढी इरियावही अने तस्स उ  
 त्तरी कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकार  
 नो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कहेवो ॥  
 पढी चउक्कसाय कही, नमुध्युणं कही, जावंति  
 चेइअइं कही खमासमण देइ जावंति केवि  
 साहु कही उवसग्गहरं कही हाथ जोडी मस्तकें  
 राखी जयवीथराय कही खमासमण देइ मुहप  
 त्ति पम्हिलेहवी ॥ पढी खमासमण देइ इत्ठाका  
 रेण संदिसह जगवन् सामायिक पारुं. आ  
 स्थानकें जो साक्षात्गुरु विराजमान होय तो  
 ते कहे के “पुणोवि कायवं” तेवारें शिष्य “यथाश  
 क्ति” कही फरी खमासमण देइ इत्ठाकारेण संदि  
 सह जगवन् सामायिक पाखुं. तेवारें गुरु कहे

“आयरं न मुत्तवं” ते सांजली शिष्य तद्वत्ति  
 कहे ॥ पढी जमणो हाथ चवला अथवा कटा  
 सणा ऊपर थापी एक नवकार गणी ” सामाइ  
 यवयजुत्तो०’ कहीने थापेली थापना होय तो  
 तेनी सामो जमणो हाथ राखी एक नवकार ग  
 णी ऊठे ॥ ए देवसि प्रतिक्रमणनो विधि सा  
 मान्य पणे कह्यो, बाकी अंतर्विधि वेमराथी स  
 मजवो ॥ इति ॥ १०१ ॥

॥ अथ राइप्रतिक्रमणविधि ॥

॥ प्रथम पूर्वली रीतें सामायिक लेवुं तेज्यां  
 सुधी त्रण नवकार गणीयें तिहां सुधी सर्व वि  
 धि जाणवो ॥ पढी खमासमण देई इच्छाकारेण  
 संदिसह जगवन् कुसुमिण डसुमिण राइजवट्ट  
 णि पायठित्तविसोदणठं काजस्सग्ग करुं. इठं  
 करेमि काजस्सग्ग ”अन्नत्त उससिएणं०”  
 कही चार लोगस्स अथवा शोलनवकारनो  
 काजस्सग्ग करी पारीने प्रगट लोगस्स क  
 हेवो ॥ पढी खमासमण देई इच्छाकारेण सं  
 दिसह जगवन् चैत्यवंदन जयवीरराय सुधी,  
 कहवुं ॥ पढी पूर्वोक्त देवसीनी रीतें जगवान्



आचार्य, उपाध्याय अने सर्वसाधु, ए चारेने  
 प्रत्येके एकेकुं खमासमण देइ वांदवा ॥ पढी वे  
 खमासमण देवापूर्वक सज्जायनो आदेश मागी  
 एक नवकार गणी नरहेसरनी सज्जाय कही  
 फरी एक नवकार गणी इष्ठाकार सुहराई०  
 कही इष्ठाकारेण संदिसह नगवन राईप्रतिक्र  
 मणे ठाउं एम कही जमणो हाथ उपधि ऊपर  
 थापी इत्थं सबस्सवि राइय छ्वितिय० कहीये  
 पढी नमोत्तुणं,० करेमि नंते० इच्छामि ठामि का  
 उस्सग्गं, जोमे राइउं०, तस्सउत्तरी० कही  
 एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्स  
 ग्ग पारी प्रगट लोगस्स कहीने सबलोए अरि  
 हंतचेइयाणं कही एक लोगस्स अथवा चार  
 नवकारनो काउस्सग्ग करवो ॥ पढी पुस्करवर  
 दी०, सुअस्स०, वंदण०, कही, अतिचारनी  
 आठ गाथा (अथवा) गाथा न आवमे तो आ  
 ठ नवकारनो काउस्सग्ग पारी सिद्धाणं बुद्धाणं  
 कही वेसीने त्रीजा आवश्यकनी सुहपत्ति पमि  
 लेही वांदणां वे देवां ॥ पढी ऊजायई इष्ठाकारे  
 ण संदिसह नगवन् राइयं आलोउं इत्थं आ

लोएमि जो मे राइज अइआरो कजं० कही  
 “ सातलाख ” नो पाठ कही, अठार पापस्था  
 नक आलोई सबस्सवि राइयंनो पाठ कहेवो ॥  
 पढी बेशीने जमणो ढींचण ऊजोराखी एक न  
 वकार गणी करेमि जंते० इठामि पम्किमिजं० क  
 हीवंदितासूत्र संपूर्ण कही बे वार वांदणां देवा.  
 वली अझूठिजं० अझितर राइयं खामीने फरी  
 बे वार वांदणां देवा ॥ पढी ऊजा थईने आय  
 रियउवजाए करेमि जंते० इठामि ठामि काजस्स  
 गगं जोमे राइज० कही तस्सउत्तरी० कही तप चिं  
 तामणि करतां न आवमे तो चार लोगस्स अ  
 थवा शोल नवकरनो काजस्सगग करी प्रगट  
 लोगस्स कही ठछा आवश्यकनी मुहपत्ति पडि  
 लेहीने वांदणां बे वार देवां ॥ पढी सकल तीर्थ  
 वंदन करीने यथाशक्तिये पञ्चखाण करवुं ॥ प  
 ढी इगकारेण संदिसह जगवन् सामाधिक, चउ  
 विसठो, वंदनक, पम्किमण, काजस्सगग, पञ्च  
 खाण कस्युं ठेजी एम ठ आवश्यक संजारवां ॥  
 पढी पञ्चखाण कस्युं होय तो कस्युं ठे जी, धास्युं  
 होय तो धास्युं ठे जी, कहेवुं ॥ पढी इगमोअण

सठि नमो गमासमणाणं कही नमोऽर्हत् ० कही  
 ये॥ पढी विशाललोचन, ० नमुबुणं, ० अरिहंत चे  
 इयाणं, ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी  
 नमोऽर्हत् ० कही कल्लाणकंदनी प्रथम थोय क  
 हेवी पढी लोगस्स ० पुस्करवरदी, ० सिद्धाणं बु  
 षाणं, ० कही अनुक्रमें चार थोयो कहीयें ठैयें,  
 तिहां सुधी सर्व कहेवुं ॥ पढी नमुबुणं ० कही ज  
 गवान् आदि चारने चार खमासमणे वांदवा ॥  
 पढी जमणो हाथ उपधि ऊपर थापी "अट्ठाइ  
 जेसु" कहेवुं ॥ पढी ईशान खुणानी सन्मुख  
 श्रीसीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवी  
 यराय, काउस्सग्ग थोय पर्यंत कहीयें, तिहां  
 सुधी सर्व करवुं ॥ पढी खमासमण देई श्रीसि  
 ष्चालजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय,  
 काउस्सग्ग थोय पर्यंत कहीयें ठैयें, तिहां सुधी  
 सर्व करवुं ॥ पढी सामायिक पारवाना विधिनी  
 रीतें सामायिक पारवा सुधीनो सर्व विधि करवो ॥  
 इति राइप्रतिक्रमणविधिः समाप्तः ॥ २ ० १॥

॥ अथ पस्कि प्रतिक्रमणविधि ॥

॥ प्रथम दैवसिकप्रतिक्रमणमां वंदित्तु कही

रहियें तिहां सुधी सर्व कहेवुं, पण चैत्यवंदनस  
 कलाऽर्हतनुं कहेवुं, अने थोयो स्नातस्यानीक  
 देवी. पढी खमासमाण देईनें इठाकारेण संदि  
 सह जगवन् देवसिञ्चं आलोइअ पक्किंता इ  
 ठाकारेण० पक्की मुहपत्ति पडिलेहुं. एम क  
 ही मुहपत्ति पडिलेहियें पढी वांदणां वे दीजें,  
 पढी इठाकार० संबुद्धा खामणेणं अञ्जुठिजहुं  
 अञ्जितर पक्किञ्चं खामेजं इठं खामेमि पक्किञ्चं  
 पनरस दिवसाणं, पनरस राइआणं, जंकिंचि  
 अपत्तियं० ॥ कही इठाकारेणसं० ॥ पक्किञ्चं  
 आलोएमि इठं आलोएमि जो मे पक्किजं अ  
 इआरो कजं० कही इठाकारेण सं० ॥ पक्कीअ  
 तिचार आलोजं एम कही अतिचार कहियें. प  
 ढी एवंकारे श्रावकतणे धर्मे श्रीसमकित मूल वा  
 रव्रत, एकशो चोवीश अतिचारमांहे जे कोइ  
 अतिचारपद्ददिवसमांहे सूद्धम, वादर, जाणतां  
 अजाणता हुजं होय, ते सवे हुं मने, वचनें,  
 कायायें करी मिठामि डक्कडं॥सवसवि पक्किअ  
 डुचिंत्तिअं, डुप्पासिय, डुच्चिठिअ, इठाकारेण  
 संदिस्सह जगवन् तस्स मिठामि डक्कडं॥इठाका

રિ જગવન્ પસાર્જ કરિ પક્કિ તપપ્રસાદ કરો  
 જી. એમ ઉચ્ચાર કરીને આવી રીતે કહિયે:-  
 ઝહેણં એક ઉપવાસ, બેઆંવિલ, ત્રણ નીવિ,  
 ચાર એકાસણાં, આઠ બે આસણાં, બે હજારસ  
 ઝાય,યથાશક્તિ તપ કરી (પ્રવેશ)કયો હોય તો  
 પડ્દી કહિયે, અને કરવોહોય તો તહત્તિ કહી  
 યે, તથા ન કરવો હોય તો અણબોલ્યા રહીયે.  
 પઠી વાંદણાં બે દીજે. પઠી ઇઞ્ઞાકા ॥ પત્તેઅ  
 સ્વામણેણં અણ્ણુઠિઝંહં અણ્ણિતર પક્કિઅં સ્વામે  
 ઝં ઇઞ્ઞં સ્વામેમિ પક્કિઅં પનરસ દિવસાણં પન  
 રસ રાઙ્ગાણં જંકિંચિ અપત્તિયં ॥ પઠી વાંદણાં  
 બે દીજે. પઠી દેવસિઅં આલોઙ્ગા પન્નિકંતાઙ્ગ  
 ઞાકા ॥ જગવન્ ॥ પક્કિઅં પન્નિકમું સમપહિ  
 ક્કમામિ ઇઞ્ઞં એમ કહી કરેમિજંતે સામાઙ્ગ ॥  
 કહી ઇઞ્ઞામિ પહિક્કમિઝં જો મે પક્કિઝં ॥ કહે  
 વું. પઠી સ્વામાસમણ દેઙ્ગ ઇઞ્ઞાકારેણસંદિ ॥ પ  
 ક્કિસૂત્ર પહું. એમ કહી ત્રણ નવકારગણી સા  
 ધુ હોય તો પક્કિસૂત્ર કહે અને સાધુ ન હોય  
 તો ત્રણ નવકાર ગણીને શ્રાવક વંદિતું કહે  
 પઠી સુઅદેવયાની ઓય કેહેવી. પઠી હેઠા વેસી

जमणो ढिंचण जजो राखी एक नवकार गणी  
करेमि जंते० ॥ इजामि पडि० ॥ कही वंदित्तुं  
कहेवुं. पढी करेमि जंते० इजामि ठामि काज  
स्सग्गं जोमे पस्किजं० ॥ तस्सजत्तरी० ॥ अ  
न्नज्ज० ॥ कहीने वार लोगस्सनो काजस्सग्ग  
करवो. ते लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा सुधी क  
हेवा. अथवा अडतालीश नवकारनो काजस्स  
ग्ग करी पारवो. पारीने प्रगट लोगस्स कही सु  
हपत्ति पडिलेहिनें वांदणां वे दीजें, पढी इज्जा  
का०॥समाप्त खामणेणं अप्पुठिजं हं अश्रितरं०  
॥ पस्किअं० ॥ खामेजं इवं खामेमि पस्किअं  
एक पस्काणं पनरस दिवसाणं पनरस राइया  
णं जंकिंचि अपत्तिअं कही पढी खमासमण दे  
इनें इज्जाका० ॥ पस्कि खापणां खामुं. एम कही  
एक खमासण देई तीन तीन नवकार गुणी  
एम खामणां चार खामवां. पढी देवसि प्रतिक्र  
मणामां वंदित्तुं कह्या. पढी वे वांदणां देइने ति  
हांथी ते सामायिक पारीयें तिहां सुधी सर्व देव  
सीनी पेठे जाणवुं, पण सुअदेवयानी थोयोने  
ठेकाणे “ज्ञानादि”नीथोयो कहेवी.स्तवन अजि

ય શાંતિનું કહેવું. સઘાયને ઠેકાણે જવસગ્ગદરં  
તથા સંસારદાવાની થોયો ચાર કહેવી. અને  
લઘુશાંતિને ઠેકાણે મહોટી શાંતિ કહેવી ॥  
इति पस्किप्रतिक्रमणविधिः ॥

॥ अथ चउम्मासीप्रतिक्रमणविधिः ॥

॥ એ ઉપર કહ્યા મુજબ પસ્કીના વિધિ પ્રમા  
ણે કરવું, પણ એટલું વિશેષ જે વાર લોગસ્સના  
કાજસ્સગ્ગને ઠેકાણે વીશ લોગસ્સનો કાજસ્સ  
ગ્ગ કરવો, અને પસ્કીના આગારને ઠેકાણે ચઠ  
માસીના કેહવા તથા તપને ઠેકાણે ઘઠેણં બે જ  
પવાસ, ચાર આંવિલ, ઠ નીવિ, આઠ એકાસ  
ણાં શોલ બે આસણાં, ચાર હજાર સઘાય, એ  
રીતે કહીયે ॥ इति ॥

॥ अथ संवत्सरीप्रतिक्रमणविधिः ॥

॥ એ પણ ઉપર લખ્યા મુજબ પસ્કીના વિધિ  
પ્રમાણે કરવું, પણ વાર લોગસ્સના કાજસ્સગ્ગ  
ને ઠેકાણે ચાલીસ લોગસ્સનો કાજસગ્ગ તપને  
ઠેકાણે અઠમ જત્તં એટલે ત્રણ ઉપવાસ, ઠ આં  
વિલ નવ નીવિ, વાર એકાસણાં, ચોવીસ બે આ  
સણાં, અને ઠ હજાર સઘાય એ રીતે કહેવું” ને

પરખીના આગારને ઠેકાણે સંવત્સરીના આગાર  
કહેવા ॥ इति संवत्सरीप्रतिक्र० सं० ॥

પોસહ લેવાની વિધિ.

પ્રથમ ચમાસમણ દડ, પ્રગટ લોગસસ કહે  
વા પર્યંત ઇરિયાવહિ પડિક્કમી, ઇઞાકારેણ સં  
દિસહ જગવાન્ પોસહ મુહપત્તી પડિલેહુ! એમ  
બોલી, ગુરુ આદેશ આપે એટલે ‘ઇઞં’ કહીને  
મુહપતિ પડી લેહવી. પઠી ચમા० ઇઞા० પોસહ  
સંદિસાહુ? ઇઞં ચમા० ઇઞા० પોસહ ઠાઞં? પઠી  
ઇઞં કહી બે હાથ જોમી નવકાર ગણી, ઇઞકારી  
જગવન્ પસાય કરી પોસહ દંડક ઝચ્ચરાવોજી.  
કહેવું એટલે ગુરુ પોસહની કરેમિજંતે ઝચ્ચરાવે.

પઠી ચમાસમણ દડ ઇઞા० સામાયિક મુહ  
પતિ પડિ લેહું? ઇઞં કહી, મુહપતિ પડીલેહીને,

૧ ચમા० ચમાસમણ દેવું

૨ ઇઞા० ઇઞાકારેણ સંદિસહ જગવન્ કહેવું

૩ કરેમિ જંતેમા ચાર પહોરનો દિવસનો કરનારને માટે “જાવ  
દિવસ ” કહેવું, આઠ પહોરનો કરનારને માટે ‘ જાવ અહોરત્ત’  
કહેવું રાત્રીના ચાર પહોરવાલાને ‘જાવ શેષ દિવસ રત્ત’ કહેવું અને  
દિવસનો ચાર પહોરનો કરનારજ રાત્રિનો ચાર પહોરનો પણ કરે  
તો કોટીસહિત ઠે માટે ‘જાવ અહોરત્ત’ કહેવું



खमा० इच्छा० सामायिक संदिसाहुं? इच्छं. ख  
 मा० इच्छा० सामायिक ठाजं? इच्छं कही वे हाथ  
 जोडी नवकार गणी इच्छाकारी जगवन् पसाय  
 करी सामायिक दंडक उच्चारवोजी, गुरु 'करेमि  
 जंते सामाश्यं' नो पाछ कहे. तेमां एट्ठुं विशेष  
 ष जे जावनियमं ने ठेकाणे जावपोसहं कहेवुं.  
 पढी खमा० इच्छा० बेसणे संदिसाहुं? इच्छं ख  
 मा० इच्छा० बेसणे ठाजं? इच्छा. खमा० इच्छा०  
 सजाय संदिसाहु? इच्छं. खमा० इच्छा० सजाय  
 करुं? इच्छं कही, त्रण नवकार गणवा. पढी खमा०  
 इच्छा० बहुवेल संदिसाहुं? इच्छा० बहुवेल इच्छं.  
 खमा० इच्छा० बहुवेल करशुं. इच्छं खमा० इच्छा०  
 पम्बिलेहण करुं? इच्छं कहीने मुहपत्ति विगेरे पां  
 चवाना पडिलेहवा. 'मुहपत्ति ५० बोलथी, चर  
 वलो १० बोलथी, कटासणुं १५ बोलथी. सुत्र  
 नो कंदोरो १० बोलथी अने धोतीयुं १५ बोल

१ मुहपत्तिना ५० बोल पाठल लख्या ठे. उंठा बोल होय  
 त्यां ते ५० माहेना प्रथमना ग्रहण करवा

२ पोसहमा आचूषण पहेरवा न जोश्ये कंदोरो सुत्रनो जोड  
 ये ते ठोमी, पम्बिलेही, पाठो बाधीने ते संबंघना इरियावहीतेज  
 घखत पम्बिकमवा ( वंझे टंकनी पडिलेहणामा समजवुं.

थी पम्हिलेहवुं. पढी खमासमण दइ, इच्छाकारी  
 जगवन् पसाय करी पम्हिलेहणा पम्हिलेहावोजी.  
 एम कही वडीलनुं अण पडिलेह्युं एक वस्त्र उ  
 त्तरासन पम्हिलेहवुं. पढी खमा० इच्छा० उपधि  
 मुहपत्ति पम्हिलेहुं? इत्तं कही मुहपत्ति पम्हिलेहवी  
 पढी खमा० इच्छा० उपधि संदिसाहुं? इत्तं खमा०  
 इच्छा० उपधि पम्हिलेहुं? इत्तं कहीने पूर्वे पम्हिले  
 हतां बाकी रहेल उत्तरासण, मात्रुं करवा जवानुं  
 वस्त्र अने रात्री पोसह करवो होय तो कामली  
 विगेरे १५ पचीस बोलथी पम्हिलेहवा. पढी एक  
 जणे डंडास ए जाची लेवुं तेने पडिलेही, इरि  
 यावही पडिकमीने काजो लेवो. काजो शुभ एटले  
 तपासीत्यांज स्थापनाचार्यनी सन्मुख उज्जडक  
 बेसीने इरियावही पडिकमवा. पढी काजो यथा  
 योग्य स्थानके अणुजाणह जस्सग्गो कहीने  
 परठववो. परठव्या पढी त्रणवार वोसिरे क  
 हेवुं. पढी मूल स्थानके आवीने सौ साथे देव  
 वांदि अने सजाय करे.

---

१ काजामा सचित्त एकेंछी नीकले तो गुरु पासे आलोयण  
 लेवी. तस जीव नीकले तो यतना करवी.

## ॥ પોસદ પારવાની વિધિ ॥

ખમા૦ દઈ ઇરિયાવહી પમ્મિક્કમી, ચઠક્કસા  
યથી જયવિયરાય પર્યંત કહીને, ખમા૦ ઇઞા૦  
મુહપત્તિ પમીલેહું ? ઇઞં કહી મુહપત્તિ પમીલે  
હવી. પઠી ખમા૦ ઇઞા૦ પોસદ પારું ? યથાશ  
ક્તિ ખમા૦ ઇઞા૦ પોસદ પાર્યો. તદ્દત્તિ કહી  
નવકાર ગણી ચરવલા ઉપર જમણો હાથ સ્થા  
પીને સાગરચંદો૦ કહે ॥

પઠી ખમા ૦ ઇઞા૦ મુહપત્તિ પમ્મિહું ? ઇઞં કહી  
મુહપત્તિ પડિલેહીને ખમા૦ ઇઞા સામાયિકપારું!  
યથાશક્તિ. ખમા૦ ઇઞા૦ સામાયિક પાર્યું.  
તદ્દત્તિ કહી, ચરવલા ઉપર હાથ સ્થાપી નવકાર  
ગણીને સામાયિક વયજુત્તો કહે. પઠી વિધિ  
કરતાં જે કાઈ અવિધિ થઈ હોય તસ્સમિઞ્ઞામી  
હક્કમં કહે. ઇતિ

હવે જેણે સવારે આઠ પહોરનોજ પોસદલી  
ધો હોય તે સાંજના દેવ વાંચ્યા પઠી' કુંમલ લી  
ધા ન હોય તો લઈને તથા મંત્રાસણ અને રાત્રી

---

૧ કુંડલ-રૂના પુત્રના તે બે કાનમા રાખે જો ગુમાવેતો  
આલોચણ આવે

ने माटे अचित्त पाणी चुनो नाखेळुं जाची रा  
खीने पत्ती खमा० दइ इरियावही पम्किमीने  
खमा० इगा० स्थडिल पडिलेहुं ? इहं कही  
चोवीश मांडला करे ते आ प्रमाणे—

आ मांमला वडी नीति लघु नीति विगेरे प  
रठववा योग्य जग्या प्रतिलेखण निमित्ते कर  
वाना ठे तेमां प्रथम संथारापासेनी जग्याए ठ  
मांडला करवा—

- १ आघामे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे
- २ आघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे,
- ३ आघामे मजे उच्चारे पासवणे अणहियासे.
- ४ आघाडे मजे पासवणे अणहियासे.
- ५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे,
- ६ आघाडे दूरे पासवणे अणहियासे,
- १ आघामे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे,
- २ आघामे आसन्ने पासवणे अहियासे,
- ३ आघाडे मजे उच्चारे पासवणे अहियासे,
- ४ आघामे मजे पासवणे अहियासे,
- ५ आघामे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे
- ६ आघामे दूरे पासवणे अहियासे,

- १ अघामे आसन्ने उच्चारे पासवणे आणाघाडे,
- २ आघामे आसन्ने पासवणे आणाघामे,
- ३ आघाडे मज्जे उच्चारे पासवणे आणाघामे,
- ४ आघाडे मज्जे पासवणे आणाघामे,
- ५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे आणाघामे,
- ६ आगामे दूरे पासवणे आणाघामे,

बीजा व उपाश्रयना वारणानी मांहेनी तर फना मांमला उपर प्रमाणेज कहेवा.

त्रीजा व मांमला उपाश्रयना वारणा बहार नजीक रहीने करवाना तथा चोथा व मांमला उपाश्रयथी सो हाथने आशरे दूर रहीने करवाना तेमां पण त्रीजा व मांमला प्रमाणे अणाघामे शब्द कहेवो वाकीना शब्दो उपरना त्रण मांडला प्रमाणे

ए प्रमाणे २४ मांमला कस्या पढी इरियाव ही पम्किमीने चैत्यवंदन पूर्वक प्रतिक्रमण पूर्ववत् करे. इति श्रीतपगढ प्रतिक्रमणविधि॥

॥ अथ खरतरगन्धप्रति०

॥ अथ जयतिहुअण विख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्क जय जिण धनं  
तरि, जय तिहुअण कद्धाणकोस डरिअक्करिके  
सरि ॥ तिहुअण जण अविलंघियाण जुवणत्त  
य सामिअ, कुणसुसुहाइं जिणेसपास अंजणय  
पुरिअ ॥ १ ॥ तइं समरंत व्हंतिअत्तिवर पु  
त्त कलत्तहि, धम्म सुवन्न हिरम्म पुम्म जणजुंजहि  
रज्जहि ॥ पिक्कहि मुक्क असंखसुक्क तुह पासप  
साइण, इयतिहुअण वरकप्परुरक्क सुरक्कहि कुण  
महजिण ॥ २ ॥ जरजजार परिजुम्म कणुणहु  
ठ सुकुठिण, चरकुरकीणखण्णखुड्डुनरसद्धिअ  
सूद्धिण ॥ तुह जिण सरणरसायणेण वहु हुंतिपु  
णस्सव, जय धम्मंतरिपास महवि तुहुं रोगहरो  
जव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस मंत तंत सिद्धिज अपय  
त्तिण, जुवणज्जुअ अठविह सिद्धि सिद्धिइ तुह  
नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तजवि जण होइ  
पवित्तज, तं तिहुअण कद्धाणकोस तुह पास  
निरुत्तज ॥ ४ ॥ खुह पवत्तइ मंत तंत जंताइं वि  
सुत्तइ, चरथिरगरव गहुग्गखग्ग रिउवग्गवि

गंजइ, डठियसठ अणठ घठ निठारइ दय  
 करि, डरिअइं हरउ सुपासदेव डरिअकरिके  
 सरि ॥५॥ तुह आणाथंजेइ नीमदप्पु ऋर सुरव  
 र, ररकस जरक फणिंद विंद चोरानलजलहर ॥  
 जलथलचारिरजदखुह पसुजोइणि जोइअ, इय  
 तिहुअणअविलंधिआण जय पास सुसामिअ  
 ॥ ६ ॥ पठिअ अठ अणठहिठजत्तिअरनिअर,  
 रोमं चंचिअचारुकाय किअरनरसुरवर ॥ जसु  
 सेवहि कमकमलजुअल परकालिअकलिमलु,  
 सो जुवणत्तयसामि पास महमदउ रिजबलु ॥७॥  
 जय जोइअ मणकमलजसल जय पंजरकुंजर,  
 तिहुअणजणआणंदचंदजुवणत्तयदिणयर ॥ ज  
 य मइमेइणि वारिवाह जयजंतु पिआमह, थंज  
 णयठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥८॥ बहु  
 विहवसुअवसु सुसु वसिउठप्पसहि, मुरकधम्म  
 कामठकाम नर नियनिय सठ हि ॥ जं जायइ  
 बहु दरिसणठ बहु नाम पसिअउ, सो जोइअ  
 मण कमलजसलसुह पास पवअउ ॥ ९ ॥ जय  
 विअल रणऊणिरदसण थरहरिअ सरीरय, तर  
 लिअ नयणविससुसुगगिरगिरकरुणया ॥ तइं

सहसत्तिसरंति हुंतिनरनासिञ्च गुरुदर, महवि  
 ज्जविसज्जसइपास जय पंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइं  
 पासविविञ्चसंतनित्तपत्तंतपवित्तिय, वाहपवाह  
 पवूढरूढ डहदाहसुपुल्लइय ॥ मसहिमसुसज्ज  
 पुसञ्चप्पाणं सुरनर, इयतिहुञ्चण आणंदचंदज  
 य पास जिणेसर ॥ ११ ॥ तुह कट्ठाणमहेसुघंट  
 टंकारव पिद्धिञ्च, वट्ठरमट्ठ महट्ठज्जत्ति सुरवर  
 गंजुद्धिञ्च ॥ इट्ठुप्फलिञ्च पवत्तयंति जवणेहि  
 मट्ठसव, इय तिहुञ्चण आणंदचंदजयपाससुहु  
 ञ्चव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनियरविहु  
 रिञ्च तमपहयर, दंसिञ्च सयलपयत्तसत्तवित्तरि  
 ञ्च पहाजर ॥ कलिकलुसिञ्च जण घूञ्चलोयलो  
 यणहञ्चगोयर, तिमिरइ निरुहर पासनाह जुव  
 णत्तय दिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरणजलवरिससि  
 त्त माणव मइ मेइणि, अवरारसरसुहुमत्तवोह कं  
 दलदल रेइणि ॥ जायइ फलजरजरिय हरिय ड  
 हदाह अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाह दिसि  
 पास मइं मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कट्ठाणव  
 द्धिज्जलूरियडहवणं, दाविञ्चसग्गपवग्गमग्ग ड  
 ग्गइग्गम वारणं ॥ जयजंतुहजणएणतुट्ठजंजणि



यहियावहु, रम्म धम्म सो जयउ पास जय जं  
 तुपिआमहु ॥ १५ ॥ जुवणारणनिवासदरिअ  
 परदरिसणदेवय, जोइणिपूअणखित्तवाल खुद्दा  
 सुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठ अविसंठुल  
 चिठहिं, इय तिहुअण वणसीह पास पावाइ प  
 णासहिं ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरयण करं  
 जिअनहयल, फलिणी कंदलदलतमाल निह्लु  
 प्पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग संसग्ग  
 अगंजिअ, जय पच्चकजिणेस पास थंजणयपुर  
 ठिअ ॥ १७ ॥ महमाणुतरलपमाणेय वायावि  
 विसंठुल, नियतणुरवि अविणयसहाव आल  
 सविहिलंघलु ॥ तुहमाहप्पपमाणदेव कारुण  
 पवत्तउ, इयमहमाअवहीरपासपालहिविलवं  
 तउ ॥ १८ ॥ किंकिंकप्पिजणेयकलुणुकिंकिंवनजं  
 पिज, किं वनचिठिउकिठदेवदीणय मविलंबिउ  
 ॥ कासुनकियनिप्पल्ललल्लुअहेहिंइहत्तइं, तह  
 विनपत्तजताण किंपि पइं पहु परिचत्तइं ॥ १९ ॥ तु  
 हुं सामिहुतुहुंमायवप्पतुहुंमित्तपियंकरु, तुहुंग  
 इतुहुंमइतुंहिज ताण तुहुं गुरु खेमंकरु ॥ इजं इ  
 हजरजारिअवराज राजलनिअग्गउ, लीणउ तुह

कमकमल सरणजिणपालहि चंगु ॥ १० ॥ प  
इंकिविकयनीरोयलोयकिविपावियसुहसय, कि  
विमइं मंतमहंतकेवि किविसाहियसिवपय ॥ कि  
वि गंजिअरिउवग्गकेविजसधवल्लिअ भूअल,  
मइं अवहीरहि केणपाससरणागयवढल ॥ ११ ॥  
पच्चुवयारनिरीदनाहनिप्पसपयोअण, तुहुं जिण  
पासपरोवयार करुणिकपरायण ॥ सत्तुमित्त सम  
चित्तवित्तिनयनिंदिअसममण, माअवहीरिअजु  
ग्गलविमइं पासनिरंजण ॥ १२ ॥ इउं बहुविदड  
हतत्तगततुहुं इहनासणपरु, हउं सुयणहकरुणि  
कठाण तुहुं निरुकरुणाकरु ॥ इउं जिणपासअ  
सामिसालुतुहुं तिहुअणसामिअ, जं अवहीरहि  
मइं ऊखंतइय पासनसोहिअ ॥ १३ ॥ जुग्गाजुग्ग  
विजागनाहनहुजोअणतुहसमजवणुवयारसहा  
वजाव करुणारससत्तम ॥ समविसमह किंघण  
नएइ जुविदाहुसमंतउ, इय इहबंधवपासनाह  
मइं पालथुणंतउ ॥ १४ ॥ नयदीणहदीणयमुए  
विअसुविकिविजुग्गय, जं जोइयउवयारुकरइउ  
वयारसमुज्जय ॥ दीणहदीणनिहीणजेणतुहनाह  
एचत्तउ, तोजुग्गउअहमेव पासपालहिमइं चं

गत ॥२५॥ अहअस्सविजुग्गयविसेसकिविमस्स  
 हि दीणह, जं पास विजवयारुकरइ तुहनाहसम  
 गगह ॥ सुच्चिअकिल कल्लाणुजेण जिण तुम्ह प  
 सीयह, किं अस्सुण तंचेव देव मामइअवहीरह  
 ॥ २६ ॥ तुह पत्तण नहु होइ विहल जिणजाण  
 उ किं पुण, हउं डुक्खिउ निरुसत्तचत्तडुकुउ उस्सु  
 यमण ॥ तं मस्सउ निमिसेण एण एउविजाइ ल  
 अइ, सच्चं जं जुक्खियवसेण किं उंवरु पच्चइ ॥  
 ॥ २७॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइं अप्पप  
 यासिउ, किज्जउ जं नियरूवसरिसुनमणुंवहुजंपि  
 उ ॥ अस्सु ण जिणजगतुहसमोविदक्खिस्सदयास  
 उ, जइ अवगिस्ससि तुंहिजअहहकिंहोइसदया  
 सउ ॥ २८॥ जइ तुहरूविणकिणविपेअ पाइणवे  
 लविउ, तउजाणुं जिणपासतुह्महउंअंगीकरिअ  
 उ ॥ इयमहइच्चिअ जं न होइ सातुहउंहावण,  
 रक्कंतह नियकित्तिणेयजुज्जइअवहीरण ॥ २९॥  
 एवमहारिहजत्तदेवइयन्हवणमहूसउ, जं अण  
 लिय गुणगहण तुह्म सुणिजणअणिसिद्धउ ॥  
 इय मइं पसियसुपासनाहयंजणयपुरठिअ, इय  
 सुणिवरसिरि अजयदेव विस्सवइ अणिंदिअ॥

॥ ३० ॥ इति श्रीस्तंजनक तीर्थराज श्रीपार्श्व  
नाथस्तवनम् ॥

॥ पीठें जय महायस कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंभः ॥

॥ जय महायस जय महायस जय महाज्ञा  
ग जय चिंतिय सुह फलय ॥ जय समष्ट परम  
ष्ठ जाणय, जय जय गुरु गरिम गुरु ॥ जय ड  
हत्त सत्ताण ताणय, अंजणयठिय पासजिण ॥  
अवियह जीम अबुहु, अब अवणंता णंत गुण  
तुळ तिसंऊ नमोहु ॥ १ ॥ इति ॥

अथ सदाकालका अवश्य कर्तव्य सामायक  
पडिक्रमणा शास्त्रानुसारे विधि लि० ॥

॥ प्रणम्य श्री जिनाधीशं सद्गुरुं च विशेष-  
षत श्राद्धाहोरात्रकृत्यानि लिख्यन्ते लोक  
जाषया ॥ १ ॥

॥ श्रावक दोय घडी रात्र रह्या पोशह शा  
लाये ( अथवा ) गुरुकने अथवा घरने एक प्र  
देशे ( आवी ) प्रथम दिवस संध्याये पन्निसे  
ह्या वस्त्र पहिरी ( जो ) गुरुनो जोग न हुवे ( तो )  
आप प्रमार्जित थानकै खमासमाणपूर्वक तीन

नवकार गुणी थापनाजी थापै (पठै) खमासमण  
 देई कहे इच्छाकारेण संदिस्सह जगवनसामाय  
 कमुहपत्ती पडिलेहुं ( गुरु कहै पमिलेह ) पठै  
 इच्छं कही, दूजीखमासमण देई मुहपत्ती पडिले  
 है उज्जो होय खमा० कहै ॥ इच्छा० सं ॥ ज०  
 सामायक संदिस्साजं ( गुरु कहै संदिस्सावैह )  
 पठै इच्छं कही, वलेख० देने कहै इच्छाका० सं  
 ज० ॥ सामायिक ठाजं ( गुरु कहै ठाएह ) इच्छं  
 कही खमासमण देई अर्धवनतकाय उज्जो रही  
 तीन नवकार गुणी कहै इच्छकार जगवन पसा  
 व करी सामायक दंड उच्चरावोजी ( गुरु कहै  
 उचरावे मो ) पठै करेमि जंतेसामाइयं ( इत्यादि )  
 सामायक सूत्र गुरु वचन अनुज्ञाषण करतो  
 थको तीन वार उच्चरी खमासमण देई ॥ इच्छा०  
 सं० ज० इरियावहियं पडिक्कमामि ( गुरु कहै  
 पमिक्कम है ) पठै इच्छं कही ॥ इच्छामि पडिक्क  
 मिजं इरियावहियाए ( इत्यादि पाठ कहे ) इ  
 रियावही पडिक्कमि ॥ एक लोगस्सनो काजसग्ग  
 करी णमो अरिहताणं कही काजसग्ग पारीमुखे  
 प्रगट लोगस्स कही खमा० देई ॥ इच्छा० सं०

ॐ वेसणो संदिस्साजं (गुरु कहै संदिस्सावेह)  
 पठै इत्थं कही खमा० देई इत्ता० सं० ॐ वे  
 सणोठाजं (गुरु कहै ठाए है) पठै इत्थं कही  
 खमासमाण देई ॥ इत्ता० सं० ॐ सिद्धाय सं  
 दिस्साजं (गुरु कहे संदिस्सावेह) पठै इत्थं  
 कही ॥ पांगरणोपनिग्धाजं (गुरु कहै पडिग्धा  
 एह) पठै ॥ इत्थं ॥ कही ॥ वस्त्र ग्रहण करै.  
 इति प्रज्ञातसामायक ग्रहणविधि ॥

॥ अथ देवसी प्रतिक्रमण ॥

॥ प्रथम चैत्यवंदन ॥ जयतिहुणनी पांच  
 गाथा पहलाथी और दोय गाथा ठेडानी कही  
 जय महाशय १ कहीने सक्रस्तव आदि चारे  
 थोऊ देववंदन करीनीचा वैसीने नमोठणं० कहे  
 पठे वांदणापूर्वक श्री आचर्यमिश्र १ श्रीउपा  
 ध्यायजी मिश्र २ श्री वर्तमानजद्वारक श्री पूज्य  
 जीनो नाम लेइ वांदीये ३ सर्व साधु साध्वी  
 वांडं ॥ पठे सबसवि राईय देवशिय० करेमि  
 नंते० इत्तामि ठामि० तस्सुतरि० अन्नतू०  
 आठ नवकारनो काजसग्गकरे मुंहडे लोगस्स  
 कहे पठे तीजे आवश्य करी मुहपत्ती पमिले

हवी ॥ दोय वांदणा देवे देवसियं आलोएमी०  
 पढै ठाणेकमणे० पढे चौंपुरा दिंवसना लघु  
 अतिचार ॥ अठार पापस्थानक आलोई सब  
 सविदेवसिय० पढे तीन नवकार तीन करेमि०  
 पढे वंदेतूसूत्र कहे पढे वांदणा दोय देवे ॥ पढे  
 अष्टुछिजमि कही फेर ९ वांदणां देई ॥ आय  
 रिज उवझाए० करेमि० तस्सुतरी० अन्नहू०  
 दोय लोगस्सनो काजसग करे मुंहमे लोगस्स  
 कहे ॥ वंदण० अन्नहू० पढे एक लोगस्सनो काज  
 सग ॥ मुंहडे पुष्करवरदी वढे० वंदण० अन्न०  
 एक लोगस्सनो काजसग मुंहडे सिद्धाणं बुद्ध  
 णं० पढे सुहदेवीयाए करेमि काजसग ॥ अन्न० १  
 नवकारनो काजसग करे ॥ सुवर्णसांलिनीदे  
 यात् ० एक गाथा कहे पढे क्षेत्रदेवीयाए करेमि  
 काजस्सग अन्न० १ नवकारनो काजसग करे  
 पढे यासांषेत्रगतासंति गाथा १ कहे १ नव  
 कारगुणी बढे आवश्य करी मुहपत्ती पडिलेहे  
 दोय बार वांदणा देवे ॥ इत्तामो अणुसठियं  
 नमोखमासमणाणं ॥ नमोस्तुवर्द्धमानाय० तीन  
 गाथा कहे ॥ नमोवणं कही नमोतवन कहे,

पठे श्री आचार्यजी मिश्र, १ श्रीउपाध्यायमिश्र  
 ९ सर्वसाधु साध्वी वाङ्मं अह्मा इज्जे सु० कह  
 ना फेर खमासमण देइ ॥ पठे देवसीप्रायश्चित्त  
 विसोधवानिमित्तं करेमि काउसगं अन्न० ४ लो  
 गस्सनो काउस्सग करे पठेमुंहमे लोगस्स कहे  
 पठे द्दोपजव उड्डाहनिमित्तं करेमि काउसगं  
 अन्न० ४ लोगस्सनो काउस्सग करे मुंहडे लो  
 गस्स कहे ॥ पठे सिद्धायं संदिस्साएमि सिद्धाय  
 करेमि ॥ पठे श्रीसेट्ठी कहे ॥ पठे नमोवृणं० कही  
 गोटो तवन कहे पठे जयवीराय कहे पठे सिरथं  
 जण्ठियपाससामिणो० कहै पठे श्रीथंजना पा  
 र्श्वनाथजी आराधना निमित्तं करेमि काउस्स  
 ग वंदण० अन्न० ४ लोगस्सनो काउसग  
 करे पठे श्रीखरतरगञ्जशृणुगारहारजंयमयुगप्र  
 धानजट्टारक दादाजी श्रीजिन दत्तसूरिजी महा  
 राज चारित्र चूडामणी आराधवानिमित्तं करेमि  
 काउसगं अन्न० १ लोगस्सनो काउसग करे ॥  
 इणीहीतरे दादाजी श्रीजिनकुशलसूरिनो १ लो  
 गस्सनो काउसग पारी एक नवकार गुणी चै  
 त्यवंदन करे चउक्कसाय० कहै ॥ नमोवृणं जय



वीरायसूधी पठै लघु शांति कहै पठे सामायक पारै  
॥ हवे राईप्रतिक्रमण विधि ॥

॥ एक खमासमण देई ॥ इच्छा० सं० ज० ॥ चै  
त्यवंदन करुं (गुरुं कहै करेह) इत्थं ॥ कही जय  
जसामी ९ रिसहसेत्रुंज उजित पहुनेमि जिण  
जयज वीरसच्चरमंण जरुअच्छहिमुणिसुव्वयम  
हुरिपास डहडुरियखंडण अवरविदेहिंतिव्वयर  
चिहुं दिशिविदिशि जंकेवि तीआणागयसंपयं  
वंडंजिणसव्वेवि कम्मजुमिहिं ९ पढमसंघयण  
उकोसज सत्तरिस जजिणवराणविहरंत लज्जई  
नवकोमिकेवल्लिण कोडिसहसनव साहू संपयसं  
पइ जिणवरवीसमुणिड्यको निवरनाण समणा  
कोमिसहसड्यथुणिजयणिच्च विहाण सत्ताण  
वइ सहस्सा लस्का षपन्न अठकोडिजं चजसय  
ठयासिया तिद्धुके चेइये वंदे वंदेनवकोडिसयं  
पणवीसं कोडि लस्क तेपन्ना अठावीस सहस्सा  
चजसय अठासिया पमिमा ॥ जं किचि इत्यादि  
जयवीरायसूधी चैत्यवंदन करै ॥ पठै खमा०  
देई ॥ इच्छाकारेण संदिस्सहै ज० कुसुमिण ड  
स्समिणराई प्रायचित्त विसोहणवं करेमि काउ

सगगं ( गुरु कहै करेह ) अन्न० ॥च्यार०॥४॥  
लोगस्सनो काजस्सग करी पारी प्रगट लो  
गस्स कहै ॥ पन्निक्कमणो ठाववानो अवसर  
हूवां १ खमासमण देई ॥ (श्री आचार्यजीमिश्र)  
कही वांदियेफेर खमासमण देई॥(श्रीउपाध्याय  
जी मिश्र)पवै वांदणा दई(जंगमयुग प्रधानज  
हारक श्रीपूज्यजीका नाम कही वांदिये ॥ बले  
खमासमण देई साधूजी वांदीये ॥ इम च्यार  
खमासमणें पन्निक्कमण ठावी॥इच्चकारसमस्त श्रा  
वको वादूं(कही)गोमा लिये वेसी मस्तक नमावी  
दोय हाथे मुहपती मुखे देई सबसविराईय (इ  
त्यादि कहै ) पिण इच्चकारेण संदिस्सह (इसो  
न कहै ) पवै सक्रस्तव कही ॥ ऊनो थई करे  
मि० इच्चामि ठाजं काजस्सगं० ( इत्यादि पाठ  
कही ) तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० चारित्र शुद्ध नि  
मित्तं १ लोगस्सनो काजसगग करी ( पारी )  
दर्शन शुद्धि निमिते लोगस्स कही सबलोए अ  
रिहंत चेइआणं ॥ करमि काजसगगं इत्यादि  
कही १ लोगस्सनो काजसगग करी ( पारी )  
ज्ञानातिचारनिमित्ते पुक्खरवरदी वट्टे (कही)

सुयस्स जगवज्जं करेमि का० वंदणवतीयाए (इ  
 त्यादि कही ) काजस्सग्ग करे काजस्सग्गमाहे  
 चौपुहरी रात्रि मांहे सातलाख इत्यादि आलोय  
 णचिंतवे(अथवा) आठ नवकार चिंतवे (पढी)  
 काजसग्ग पारी ॥ सिद्धाणं बुद्धाणं कही संडा  
 साप्रमार्जनपूर्वक वैसी मुहपत्ती पडिलेह  
 पढेदो वांदणा देई अञ्जुछिज्जमि खामि  
 वांदणा वेदीजै तेविधि देवसीनी परे जा  
 णवुं पढे सबसवि० ॥ इत्ता० ज० ए पद क  
 हवे करी आलोया अतीचारनो प्रायश्चित्त मांगे  
 पढे इत्तं तस्समिठामि डुकमं ॥ पढे जीमणो  
 गोडो उंचो करी तीन नवकार तीन करेमि०  
 इत्तामि पम्भिमिजं जोमेराईयो इत्यादि कही  
 वंदितूसूत्र तंनिंदे तंच गरिहामि सूधी कहै ॥  
 पढे वांदणां देवै । पेढे अञ्जुछि० कही फरवां  
 दणां वेदेवा पढे० आयरिज्ज वज्जाए० करेमिजं  
 ते० इत्ता मिठामि काजसग्गं । तस्सुतरी० अन्न  
 तु० ६ लोगस्सनो काजसग्ग अथवा चौवी न  
 वकारनो काजसग्ग करै । पढे मुंहमै लोगस्स क  
 है पढे मुहपत्ती पम्भिलहै वांदणां देवै सग

ला तीर्थानि याद करै पठै पञ्चस्काण करै पठै  
 इत्थामो अणुसठिं (इसोपद कहै, ) पठै नमोख  
 मा समणाणं नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व  
 सा धुञ्ज्यः पठै संसारदावा० (अथवा) परसमय  
 तिमिरतरणं तीनगाथा कहै नमोबुद्धाणं० अरि  
 हंतचे ईयाणं करेमिकाउसग्गं वंदण० अन्न  
 तू० १ नवकारनो काउसग्गकरे पठै थूईरी १  
 गाथा कहै पठै लोगस्स कही वंदण० अन्नबु  
 १ नवकारनो काउसग्ग पठै थूईरीडुजी गाथा  
 कहै पठै पुष्करवरदी वढे० वंदण० अन्नच० १ न  
 वकारनो काउसग्ग थुईरी तीजी गाथा कहै पठै  
 सिचाणं बुद्धाणं कहै पठै १ नवकारनोकाउस  
 ग्ग करी पठै थूईरी चौथी गाथा कहै पठै श्री  
 आचार्यजी मिअ १ श्रीउपाध्यायजी मिश्र० स  
 र्वसाधूवांडं ॥ इतिराई प्रतिक्रमण॥ पठै श्रीसीमं  
 धर चैत्पवंदन करवो पठै सिद्धगिरीनौचैत्पवंद  
 न करी सामायकपारवा ॥  
 ॥ हवे पाखी पडिक्कमणो लि०॥ तिहां प्रथम वं  
 दिज सूत्र पर्यंत देवसी पडिक्कमी पठे इत्थाकारेण  
 संदिस्सह जगवन् देवसियं आलोईयं पडिक्कंतं

परकी मुहपती पडिलेह पढे दो वांदणा देवै ॥  
 पाखी पडिक्रमणो हुवे तो पाखीरो नाम लेवे  
 अथवा चोमाशी वा संवत्सरी, होय तो सोही  
 नाम लेवे परकोवइ कंतो कहणो ॥ पढे वांदणा  
 दिया पढे पुन्यवंतो बीक जयणा करज्यो मधुर  
 श्वरे पडिक्रमज्यो ॥ खासे सुविवरा करी खासज्यो  
 मांरुल मांहे सावचेतसावधान रहिज्यो देवसीरे  
 ( थानके ) पाखी चोमासी षमढरी जणज्यो ॥  
 पढे इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन संबुद्धाखाम  
 णेणं ॥ अज्झुठिउंमि अज्झितर पखीयं खामेमि  
 इत्तं खामेमि ॥ पखियं पन्नरसदिवसाणं पन्नरस  
 राईणं (चोमासी) मांहे चउन्हं मासाणं अठन्हं  
 पखाणं एकसोवीसरायं दियाणं (संवत्सरी) पमि  
 क्रमणो हुवे तो डुवालसन्नमासाणं चोवीसन्ने  
 पषाणं तीनसे साठ रायं दियाणं जंकिंचिपतियं  
 सर्वकहणो पढे इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन  
 पखियं (३) आलोउं जोमे पखिउं अयारोकउं ॥  
 सर्वकहणो पढे नाणंमिदंसणंमिअ ॥ वृद्ध अ  
 तिचार आलोयणा कहणा सब सवि पखिय ३  
 सर्व कहणो पढे वांदणा वे देवे पढे इच्छाकारेण

संदिस्सह जगवन् देवसिय आलोइयं पम्किंतं  
 पत्तेय खामणेणं अझुठिंजमि अञ्जितरपखियं  
 लारेकह्यो जिण रीतें सगलोकहणो पढे वांदणा  
 देवे पढे (पाखी) सूत्र कहे श्रावक श्राविका वंदेत्  
 कहे पम्किमे देवसियं के ठिकाणे पखीयं ३  
 इसो कहणो तीन नवकार तीन करेमि जंते  
 कहीने वंदेतु कहे मूलगुण उत्तरगुण अतीचार  
 विशुद्धनिमित्तं करेमि काजसगं इत्थमि ठा  
 मि काजसगं जोम० पढे तस्सुतरी० अ  
 न्न० पढे पाखी पडिक्कमाणे १९ चोमासे ९०  
 संवत्सरी ४० लोगस्सनो काजसग करे पढे  
 प्रगट लोगस्स कहे पढे मुहपत्ती पम्क्खेह दोय  
 वांदणा देवे पढे इत्थाकारेण वंदिस्सह जगवन्  
 समाप्त खामणेणं अझुठिंजमि अञ्जितर पखीयं  
 ३ लारे कह्यो जिणतरे कहे पढे इत्था० ज० खाम  
 णाखामुं पुन्यवंतो एकखमासमण देई तीन तीन  
 नवकार गुणी चारवार पाखीसमाप्त खामणाषा  
 मो पढे खामणा खामी पढे पुन्यवंतोपाखीने लेषे  
 एक उपवास अथवा दोय आंविज तीन नीवी  
 (अथवा) चार एकासणा (अथवा) दोय हजा

र सिद्धाय करी पाखीनी पेठ पूरज्यो पाषीने  
 स्थानके देवसी जणज्यो इम डणाडण चोमासि  
 ( अने ) त्रिगुण संवत्सरीये सर्व कहवो पढे दे  
 वसी प्रतिक्रमण बोड्यो ज्यांथी वांदणा अन्न  
 छिज्जमि फेर वांदणा इत्यादि सर्व करणो देवसी  
 कीरीते समजणो ॥ इति खरतरगठसामायिक  
 ( तथा ) पंच प्रतीक्रमण वीधी समाप्त

॥ अथ आंचलगठ प्रतिक्रमण विधि ॥

॥ प्रथम नवकार कही एक ख० देई इडकार  
 सुहराई सुह देवसी कही गुरुनेसुखसाता  
 पूर्वी इरिया वही० तस्सोत्तरी० अन्नगठ० कही  
 एक लोगस्सनो उसगग करी(प्रगट)लोगस्सक  
 है ( पढी ) इडाका० सं० जग० गमणागमण  
 आलोउं तेकहै वै

॥ गमणा गमण ॥

मारगनेविषे जातां आव तां पृथ्वी काय अप  
 काय तेजकाय वाजकाय वनस्पतिकाय, त्रसकाय,  
 नील, फूलमाटी, पाणी, कण, कपाशिया, खी आदी  
 तणो संघट्ट हुवो होय ते सविहुमन वचन  
 कायार्ये करी तस्स मिडामिडकमं ॥

॥ इच्छाकारेण सदिससह जगवन् सामायिकठा  
वा त्रण नवकार गणुजी एम कही नीचा वैसी  
तीन नवकार कहै पढी उच्चा थई इच्छा० ज०  
जीवराशी खमाजं पढे सात लाख कहै अठार  
पाप स्थानक आलोवै पढी इच्छा० ज० गुरु  
स्थापनाक रुंजी एम कही पचेंदिय कहै इति (प्र  
थम) खमासमण ॥ खमासमण पूर्वक नीचे वैसी  
ने इच्छा० ज० ज्व्य, क्षेत्र काल जाव धारुंजी १

॥ अथ ज्व्य क्षेत्र काल जाव ॥

॥ ज्व्य थकी ब्रूगमां, लत्ता, घरेणां, गांठां पा  
थरणुं नोकरवाली, धाख्या प्रमाणें मोकलां ठे. क्षेत्र  
थकी उपाशराना वारणानी मांहेली कोरें काल  
थकी सामायिक, निपजे, तिहांसुधी, जावथकी यथा  
शक्तिने राग द्वेषें रहित व्रतीसंघातें बोलवुं  
गुर्वा दिक संघातें बोलवानो आगार ठे. अव्रती  
संघातें बोलवानुं पच्चरकाण ठे. ए रीतें ठे कोटियें  
करी सामायिक करुं. सामायिक व्रत उच्चार करवा  
(एक) नवकारनो काउसग्गकरुंजी. एम कही उच्चा  
थइने एक नवकार गणीयें. ॥ पढी इच्छाकारेण  
संदिसह जगवन्! सामायिक व्रत उच्चार करावो



जी. पढी गुरु (तथा) वडेरो करेमि जंते कहै ॥  
 पढी इच्छामि खमासमण पूर्वक इच्छाकारेण  
 संदिसह जगवन्! बीजा आवश्यक जणी इरि  
 यावहियं पम्किमुं जी. एम कही इरियावहि प  
 डिकमी, पढी तसजत्तरी० कहेवी. पढी एक लो  
 गस्सनो काजस्सग्ग करी, लोगस्स प्रगट कहे  
 लोगस्स कहेतां दर्शनाचार निर्मल आय ए बी  
 जुं आवश्यक अने त्रीजुं खमसमण अयुं, पढी इ  
 च्छामि खमासमण पूर्वक हेठा वेसीने इच्छाकारेण  
 संदिस्सह जगवन् ठेमानुं पम्बिहेहण करुं जी  
 एम कही उत्तरासंगना ठेमानुं पम्बिहेहण करवुं.  
 पढी इच्छामि खमासमण पूर्वक इच्छाकारेण संदि  
 सह जगवन् त्रीजा आवश्यक जणी आवश्यक  
 वांदणां करुं जी. पढे वांदणां देवै एम गुरु समी  
 पे वांदणां वे वार दीजें, त्यां बीजी वारने वांदणे  
 आवस्सिआए, ए पद न कहेवुं; अने राइपडि  
 कमणे; राइज वइक्कंतो कहेवुं (परकीयें) परिकजं  
 वइक्कंतो कहेवुं (चउमासियें) चउमासिजं वइक्कं  
 तोकहेवुं. (संवत्सरियें) संवत्तरोवइक्कंतो कहेवुं  
 ए वांदणां देतां ज्ञानादि त्रण निर्मल आय. ए

त्रीजुं आवश्यक अनेचोथुं खमासणथयुं. इहा  
 पोंताने सुखें, संध्या होय तो चउविहार अने  
 सवार होय तो नवकारसी प्रमुखनुं पञ्चरकाण  
 मनने जावें धारे, तेथी तपाचार निर्मल आय ॥  
 पढी एक जण उजोथइने इठामि खमास  
 मण पूर्वक इठाका० सं० जगवन् ! चोथा  
 आवश्यक जणी लघु अतिचार आलोउं जी. ॥

॥ अथ लघु अतिचार ॥

॥ प्रथम नवकार कहीने, इठं अरिहंतदेव,  
 सुसाधु गुरु, जिनप्रणीतधर्म, जावतो समकित  
 प्रतिपालुं; जव्यतो लौकिक लोकोत्तर देवगत,  
 गुरुगत, पर्वगत मिथ्यात्वविषे जयणा करुं. ए  
 श्रीसमकित तणा पांच अतिचार शोधुं. शंका,  
 कंखा, वितिगिढा, परपाखंमीपरसंसा, परपाखं  
 डी संधुजं. ए पांच अतिचार मांहे जे कोई  
 अतिचार हुजं होय, ते सवि हुं, मने, वचनें  
 कायायै करी मिठामि डक्कमं. ॥

१ ए बार व्रतमांहे पहेलुं प्राणातिपात विर  
 मण व्रतस्थूल वेंजियादिक व्रस जीव निरपराध  
 उपेतकरण संकटपी करी दणवा नियम, अपारं

ॠ जयणा, ए पहेला प्राणातिपातविरमणव्रत  
तणा पांच अतिचार शोधुं.॥ वंधे, वहे, ठविठेए,  
अइजारे, जत्तपाणवुठे ए ॥ ए पांच अतिचा  
रमांहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सविहुं  
मन, वचने, कायायें करी मिठामि डक्कडं. ॥ १ ॥

२ बीजुं स्थूलमृषावादविरमणव्रत पंचवि  
ध, कन्नालीए, गोवालीए, जूमालीए, नासाव  
हारे, कूडसरिकजे. ए पांच मोटकां कूमां आप  
एने काजें, स्वजनने काजें धर्मने काजें मूकी, प  
रकाजें कूमुं बोलवा नियम, सूद्धम अलिक तणी  
जयणा करुं ॥ ए बीजा स्थूलमृषावादविरमण  
व्रततणा पांच अतिचार शोधुं. सहस्साज्जका  
णे, रहस्साज्जकाणे, सदारामंतजेए, मोसोवए  
से, कूमलेहकरणे ॥ ए पांच अतिचारमांहे जे  
कोइ अतिचार हुज होय, ते सविहु मने,  
वचने, कायायें करी मिठामि डक्कडं. ॥ २ ॥

३ बीजुं स्थूल अदत्तादानविरमणव्रत. स  
चित्त, अचित्त, राजनिग्रह कारीजं. पियारुं अ  
णदीधुं लेवा नियम. सूद्धम तृण, इंधण, पथि  
पतित ववहार नियोगे, दाणचोरी जयणा ॥ ए

त्रीजा स्थूलअदत्तादान व्रत तणा पांच अति  
चार शोधुं. तेनाहमे, तकरप्पजंगे, विरुद्धरज्जाइ  
कमे, कूरु तुल्लकूडमाणे, तप्पमिरूअगववहारे ॥  
ए पांच अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार हुजं  
होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मि  
ठामि डक्कं ॥ ३ ॥

४ चोथुं शीलव्रत. यथाशक्ते स्वदारासंतोष,  
परदाराविवर्जनारूप. ए चोथा शीलव्रत तणा  
पांच अतिचार शोधुं ॥ इत्तरपरिग्गहियागम  
णे, अपरपरिग्गहियागमणे, अनंगक्रीमा, पर  
विवाहकरणे, कामभोगतिवाज्जिलासे ॥ ए पांच  
अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार हुजं होय, ते  
सवि हुं, मने वचने, कायायें करी मिठामि डक्कंडं.

५ पांचमुं परिग्रहपरिमाणव्रत नवविध. खि  
त्त, घर, इट्ठ, वाडिय, कुविय, धण, धन्न, हिर  
सु, सुवसु, अइपरिमाण डुप्पय, चउप्पयमिय.  
नवविह परिग्गह वयंतो ॥ ए पांचमा परिग्रह  
परिमाणव्रततणा पांच अतिचार शोधुं. खित्त  
वहुप्पमाणाइकमे, हिरसुसुवसुपमाणाइकमे,  
धणधन्नप्पमाणाइकमे, डुप्पय चउप्पयप्पमा

णाइकमे, कुवियप्पमाणाइकमे ॥ ए पांच अति  
चारमांहेजे कोइ अतिहार हुजं होय, ते सवि  
हुं मने, वचने कायायें करी मिठामि डुकडं ॥

६ बडुं दिशिब्रत त्रिविधें जाणवुं. उट्टुदिसि  
वए, अहोदिसिवए, तिरियदिसिवए ॥ ए बडा  
दिशिब्रततणा पांच अतिचार शोधुं ॥ उट्टुदि  
सिप्पमाणाइकमे, अहोदिसिप्पमाणाइकमे, ति  
रियदिसिप्पमाणाइकमे, खित्तवुट्ठि, सयंतरअ ॥  
ए पांचअति चार मांहे जे कोइ अतिचार हु  
वो होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी  
मिठामि डुकमं ॥ ६ ॥

७ सातसुं जोगोपजोगव्रत द्विविध. जोजन  
तः कर्मतश्च. तत्र जोजनतः “सच्चित्तद्व विग  
इ, उवाण तंवोल चीर कुसुमेसु ॥ वाहण सय  
ण विलेवण, वंज दिसिन्हाण जत्तेसु ॥ १ ॥ ए  
सातमा जोगोपजोग व्रत तणा पांच अतिचार  
शोधुं ॥ सच्चित्त आहारे, सच्चित्त पडिवअ  
हारे, अप्पोसहि जस्कणया डप्पोसहि जस्कण  
या तुठो सहिजस्कणया ॥ ए पांच अतिचार मा

हैं जे कोइ अतिचार हुज होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मिठामि डक्कडं. ॥ ७ ॥

॥ कर्मतो पन्नरे कर्मादान. इंगालकम्मे, वण कम्मे, सानी कम्मे, ज्ञानी कम्मे, फोडीकम्मे, दंत वाणिज्जे, लस्क वाणिज्जे, रस वाणिज्जे, विस वाणिज्जे, केस वाणिज्जे, जंतपीलण, कम्मे निह्वंण कम्मे, दवग्गिदावणया, सर दह तलाय सो सणया, असई पोसणया. ए पन्नर कर्मादांन स्थूल नियम, सूक्ष्म तणी जयणा ॥ ए पन्नर कर्मादांनमांहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मिठामि डक्कडं.

८ आठसुं अनर्थदंमविरमणव्रत, चतुर्विध. अवस्साणायरिए, प्पमायायरिए, हिंसप्पणयाणे, पावकम्मोवएसे ॥ ए आठमा अनर्थ दंमविरमणव्रततणा पांच अतिचार शोधुं ॥ कंदप्पे कुकुई ए, मुहरिए, संजुत्ताअहिगरणे, उवज्जोगपरिजोग, अइरेगे ॥ ए पांच अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मिठामि डक्कडं ॥ ८ ॥

९ नवसुं सामायिकव्रत. सामइय नाम साव

द्यजोगपरिवज्जणं, निरवज्जजोग आसेवणं च॥ ए  
नवमा सामायिकव्रततणा पांच अतिचार शोधुं  
माण डुप्पणिहाणे, वयडुप्पणिहाणे कायडुप्पणि  
हाणे, सामाइयस्स अकरणया, सामाइयस्स अ  
णवुठ्ठिअस्स करणया ॥ ए पांच अतिचारमांहे  
जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं  
मने, वचने, कायायें करी मिळामि डुक्कमं. ॥ ९ ॥

१० दशमुं देशावगाशिकव्रत ॥ दिसिवयग-  
हियस्स, दिसापরিमाणस्स पइदिणं परिमाणक-  
रणं ॥ ए दशमा देशावकाशिकव्रत तणा पांच  
अतिचार शोधुं ॥ आणवणप्पजगे पेसवणप्प-  
जगे सद्दाणुवाइ, रूवाणुवाइ वहियापुग्गलपर-  
स्केवे ॥ ए पांच अतिचार मांहे जे कोइ अ-  
तिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने, वचने, का-  
यायें करी मिळामि डुक्कमं. ॥ १० ॥

११ इग्यारमुं पौषधव्रत, चिहुं जेदे जाणवुं  
आहारपोसहे, सरीर सक्करपोसहे, वंजचेरपो  
सहे, अघार पोसहे ॥ ए इग्यारमापौषध व्रत  
तणा पांच अतिचार शोधुं ॥ अप्पमिलेहिय  
डुप्पमिलेहियसिज्जासंथारे, अप्पमज्जिय डुप्पम

जिज्जि सिज्जासंथारे, अप्पडिलेहिय डुप्पमिलेहि  
यज्जचारपासवणञ्जुमि, अप्पमज्जिअ डुप्पमज्जि  
अज्जचारपावसण ञ्जुमि, पोसहोववासस्स सम्मं  
अप्पसुपादणया ॥ ए पांच अतिचारमाहे जे  
कोइ अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने,  
वचने, कायार्ये करी मिळामि डक्कडं ॥ ११ ॥

१२ वारसुं अतिथिसंविजागव्रत, अतिथि  
संविजागोनाम. नाया गयाणं, कप्पणिज्जाणं,  
अन्न पाणाइणं, दवाणं, देस, काल, सद्वास  
कार कम्मजोए पराइ नत्तीए आयाणुग्गह बु  
द्धिए संजयाणं दाणं ॥ ए वारमा अतिथि संवि  
जाग व्रत तणा पांच अतिचार शोधुं ॥ स  
चित्त निरकेवणया, सचित्त पिहणया, काला  
इक्कमदाणे परोवएसे, मत्तरया ॥ ए पांचअ  
तिजारमाहे जे कोइ अतिजार हुवो होय तेसवि  
हुं मने वचने कायार्ये करी मिळामि डक्कडं १२

॥ संदेषणा तणा पांच अतिचार शोधुं. इ  
ह लोगासंसप्पज्जे, परलोगासंसप्पज्जे, जि  
विआसंसप्पज्जे, मरणासंसप्पज्जे कामजोगा



संसप्पज्जे ॥ ए पांच अतिचारमांहे जे को  
इ अतिचार हुवो होय ते सवि हुं मने, वचने,  
कायायें करी मिळामि डक्कं.

॥ एवंकारे श्री समकित मूल वार व्रतविषे  
पंच्याशी अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार,  
अनाचर, अतिक्रम, व्यतिक्रम, हुज होय त  
था जाणते, अजाणते, सूक्ष्म, बादर, कानो, मा  
त्रा, मिमी पद, अक्षर, उंगो, अधिको, हलवो,  
जारी, आगल, पाठल, कह्यो कहेवाणो होय ते  
सविहुं मने वचने, कायायें करी मिळामि डक्कंडं ॥

॥ देसावगासिञ्चं उवज्जोग परिज्जोग पच्च  
स्सामि अन्नज्जणाज्जोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरा  
गारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि ॥  
इति लघु अतिचारःसंपूर्णम् ॥

॥ ए पडिक्कमणनामं चोशुं आवश्यक, अने  
पांचमुं खमासमण थयुं. पढी इत्तामि खमास  
मण पूर्वक हेठा बेसीने इत्ताकारेण संदिस्सह  
जगवन् चैत्यवंदन करुं जी ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ इत्तं ॥ जय जय महाप्रज्जु, देवाधिदेव, स

वैष्ण, श्रीवीतराग देव ॥ मुह दीतुं परमेश्वर, सुं  
 दर सोम सहाव ॥ जूरि ज्वंतर संचिउं, नछो  
 सो सवि पाव ॥ जे में पाप किया बालपणे, अ  
 ह्वा अज्ञाणे ॥ अणज्वंतर सो सोखंडज  
 यो परमेश्वर तुह मुंह दिठं सिरि पास जिणेश्वर  
 ॥ पास पसी पसाउ करी वीनतनी अवधार ॥  
 संसारडो वीहामणो स्वामीआवा गमणनिवार ॥  
 हठडाते सुल्लखणा जेजिनवर पूजंत ॥ एके पुष्पे  
 बाहिरा सो परघर काम करंत कवणेश्वामीवाविया  
 कवणेश्वर गुंथ्यां फूल ॥ कवणेश्वर जिनवर चाढिया  
 जाव सरीसां मुल ॥ वामी वेलो महोरीयो सोवन  
 कुंपलीए ॥ पास जिणेश्वर पूजिये पंचेअंगु  
 लीए ॥ दो धोला दो सामला दो रत्तोपल वन्न  
 मरगय वन्ना मुन्नि जिण सोलस कंचनवन्न ॥  
 नियनिय मान करावियां, जरहेस रनयणानंद ॥  
 ते में जावें वंदिया, ए चोवीसे जिणंद ॥

॥ वहु ॥ कम्मजुमीहिं, कम्म जुमीहिं, पढम  
 संघयणि, उक्कोसयसत्तरिसय, जिणवराण विह  
 रंत लप्पई, नवकोमीहिं केवलीए ॥ कोमीसहस्स  
 नव साहु गम्मइ, संपइ जिणवर वीस मुणि;

विहुं कोडीहिं वरनाण, समणह कोमी सहस्स  
 डअ, शुणिसुं निच्च विहाण ॥ जयउ सामीएरि  
 सह सिरि सित्तुंजी उज्जंतपहु नेमिजिण; जयउ  
 वीर सच्चउरिमंडण ॥ ञरुअठेहिं मुणिसुव्वय मु  
 हरि पास डह डरिय खंमण, अवरविदेहिं तिठ  
 यरा, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि, तीअणागय  
 संपइय, वंदूं जिण सव्वेवि ॥ सत्तावणइ सहस्सा,  
 लस्का वपन्न अठकोडीउ ॥ पंचसयं चउत्तीसा,  
 तियलोए चेइए वंदे ॥ इति चैत्यवंदन ॥

इहां चार स्तवन अथवा अष्टोत्तरी कहेवी  
 पढीउजा यइने उवसग्गहरं कहेवुं. पढी, वेसीनें  
 जंकिंचि नाम तिठंसग्गे पायालि माणुसे लोए॥  
 जाइं जिणविंवाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ पढी  
 नमुत्तणं (नमो जिणाणं) सुधी कहेवुं,

(ए वट्ठुं खमासमण.) पढी इत्तामि खमासमण  
 पूर्वक इत्ताकारेण संदिसह ञगवन् ! गुरुवंदना  
 करुं जी. एम कही गुरुवंदना कहीयें. ॥ ॥

॥ अथ गुरुवंदना ॥

॥ अट्ठाज्जेइसु दीव समुद्देसु, पनरससु कम्म  
 ञ्मीसु ॥ जावंत केवि साहू, रयहरण गुत्त पडि

गगह धारा ॥ १ ॥ पंचमहद्वय धारा, अठार स  
हस्स सीलंग धारा, अखयायारचरित्ता, ते सवे  
सिरसा मणसा मठएण वंदामि ॥ २ ॥ पुज्ज सि  
रिअज्जरस्सिय, गुरुणो तप्पट्टिय पुज्जजयसिंहा  
॥ सूरिसिरि धम्मघोसा, महिंद सिंहा तज्ज गुरु  
णो ॥ ३ ॥ तप्पयसिरिसिंहपहा, तेसिं पइअ  
जियसिंह वरगुरुणो ॥ देविंदसिंहगुरुणो तप्पय  
सिरिधम्मपह सूरि ॥ ४ ॥ सिरिसिंहतिद्धसूरी,  
तप्पइ सिरिमहिंदपह गुरुणो ॥ सिरिमेरुतुंग  
गुरुणो, तप्पय जयकित्तिगुरुराज ॥ ५ ॥ सिरि  
जयकेसरिसूरी, तप्पइ सिद्धंत सायरो सुगुरु ॥  
सिरिजावसायर गुरु, तप्पय सूरि गुण निहाणो  
॥ ६ ॥ सिरिधम्ममुत्तिसूरी, तप्पइ कल्लाण सा  
यर मुणिंदो ॥ सिरि अमर सार गुरु, कल्लाण  
कुणज संघस्स ॥ ७ ॥ तप्पट्टि पुव्व पुव्वय चाणु  
विज्जाय सायरं सूरि ॥ सिरिजदय सायर सूरि,  
तप्पय गुणमणि रुहाणं ॥ ८ ॥ श्रीकीर्तिसागर  
सूरि, श्री पुण्यसागरसूरि, श्रीराजेंडसागरसूरि  
श्री मुक्तिसागर सूरियं वंदे, विहरमान श्री वि  
वेकसागर सूरियं वंदे. अचल गठनायकं वंदे.

विधिपद्मगवनायकं वंदे. पहेले पाटें सुधर्मास्वामी, बीजे पाटें जंवृस्वामी, त्रीजे पाटें प्रज्जवस्वामी, चोथे पाटें सिज्जंनवसूरि, पांचमे पाटें यशो ज्जसूरि, षठे पाटें संचूतिविजय सूरि, सातमे पाटे ज्जवाहु स्वामी, आठमे पाटें थूलिज्जस्वामी, एवा पाटानु पाट ठेला श्री छप्पसहना मा आचार्य थारो, तेने महारी एकशो ने आठ वार त्रिकाल वंदना होजो ॥ इति विधिपद्मगुरु वंदन ॥ ए सातमुं ( खमासमण. )

पढी इहामि खमासमण पूर्वक इह्वाकारेण संदिसह जगवन् सञ्ज्ञाय कहुं, सञ्ज्ञाय सांजहुं जी. अहीं नवकार कहीने सञ्ज्ञाय कहेवी, ॥

॥ अथ सञ्ज्ञाय ॥

॥ अरिहंता मंगल मुज्जा, अरिहंता मुज्जा देवाव ॥ अरिहंता कित्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मुज्जा सिद्धायमुज्जा देवया ॥ सिद्धाय कित्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ २ ॥ आयरिया मंगलं मुज्जा आयरियामुज्जा देवया ॥ आयरिया कित्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ३ ॥ उवज्जाया मंगलं

मुक्ता, उवज्जाया मुक्ता देवया ॥ उवज्जाया  
 कित्तिं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ४ ॥  
 साहु मंगलं मुक्ता, साहु मुक्ता देवया ॥ साहु कि  
 त्तिं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ५ ॥ ए पंचे  
 मंगलं मुक्ता, ए पंचे मुक्ता देवया ॥ ए पंचे कि  
 त्तिं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ६ ॥ एसो  
 पंच एमुक्कारो, सब पावप्पणासणो ॥ मंगलाणं  
 च सबेसिं, पढमं होइ मंगलं ॥ ७ ॥ इति स  
 ज्ञाय ॥ ए आठमुं खमासमण ॥ ॥

पढीइठामि खमा० इठाकरेण संदिसह  
 जगवन् पांचमा आवश्यक जणी दैवसिक प्रा  
 यश्चित्त विशोधनार्थ करेमि काउस्सगं. अन्नठ०  
 इत्यादिककहीने चंदेसुनिम्मलयरा सुधी  
 चार लोगस्सनो काउस्सगग करवो. पढी  
 नमो अरिहंताणं, कहीने काउसगग पारी  
 पढी प्रगट लोगस्स कहीये. ए ( नवमुं ) ख  
 मासमण. फरी इठामि खमासमण पूर्वक इठा  
 कारेण संदिसह जगवन् अज्जिजव काउस्सगग  
 ठाउं. ( इठं ) अज्जिजव अशेष डुक्ककय  
 कम्मकय निमित्तं करेमि काउस्सगगं अन्न०

इत्यादिक कहिने “ सिद्धा सिद्धिं ममदिसतुं ”  
 पर्यंत ( पांच ) लोगस्सनो काउस्सग्ग  
 करवों. पढी नमो अरिहंताणं ए पद कहिने  
 काउस्सग्ग पारवो, पढी प्रगट लोगस्स कहवो.  
 ए ( दशमुं ) खमासमण ( अने ) पांचमुं आव  
 श्यक पूरुं थयुं, एणें करी पम्किमणामांजे अ  
 शुद्ध आचार रह्या ते आचार ए पांचे लोगस्स  
 ना कउस्सग्गथी शुद्ध आय ठे. ॥

पढी खमासमणपूर्वक इत्ठाकारेण संदिसह  
 जगवन् ! वद्धा आवश्यकजणीपच्चरकाण वां  
 दप्पां करूं जी. एम कही वे वार वांदणं दीजे  
 पढीगुरु मुखें पच्चरकाण करवुं. ए अगीयारमुं  
 खमासमण अने ठड्डुं आवश्यक पूरुं थयु

पढी खमासमणपूर्वक हेठा वेशी ने इत्ठा  
 कारेण संदिसह जगवन् ! सामायिकीपारवा  
 त्रण नवकार मनमां गणवा. पढी नमो अरिहं  
 ताणं ए एक पद प्रगट कहिने इत्ठाकारेण सं  
 दिसह जगवन्(सामायिक पारवा गाथा जणुंजी

॥ अथ सामायिक पारवानी ॥

॥ जं जं मणेण वद्धं, जं जं वायाय जासियं

पावं ॥ काएण वि छठकयं, मिठामि डुकुं त  
 स्स ॥ १ सव्वे जीवा कम्मवस, चउदह रज्ज न  
 मंत ॥ ते में सव्व खमाविया, मुझवि तेह खमं  
 त ॥ २ ॥ खमी खमावी मेंखमी, ठव्विह जीव  
 निकाय ॥ शुद्ध मनं आलोवतां, मुळ मन वेरन  
 थाय ॥ ३ ॥ दिवसें दिवसें लरकं, देइ सुव्वन्नस्स  
 खंभियंएगो एगोपुल्लसामाइयकरेइन पुहुप्यएत  
 स्स ॥ ४ ॥ कुण्णे पमाए बोलीजं, हुई विरुइवुद्धि ॥  
 जिण सासण में बोलजं, मिठा मुक्कड सुद्धि ॥ ५ ॥  
 ॥ सामायिक व्रत फासिअं, पालिअं, पूरिअं,  
 तीरिअं, कित्तिअं, आराहिअं, विधे, लीधु, विधेकी,  
 धुं, विधे पाल्युं, विधे करतां कीसी अविधि, अशा  
 तना हुइ होय, ते सवि हूं मनं, चनवें कायाये  
 करी मिठामि डुकुडं ॥ १ ॥ पाटी, पोथी, कवली,  
 ठवणी, नोकरवली कागलें पग लगाड्यो, होय  
 गुरुने आसने, वेसने, उपगरने पग लगाड्यो, होय  
 ज्ञान अव्यतणी आशातना अइ होय. ते सवि  
 हूं मनं, वचनें कायायें करी मिठामि डुकुडं. अ  
 ढी द्वीपने विषे साधु, साध्वी, श्रावक श्राविका,



जे कोइ प्रभु श्री वीतराग देवनी आझा पावे.  
 पलांवे, जणे जणावे, अनुमोदे, तेहने महारी  
 त्रीकाल वंदना होजो. सीमंधर प्रमुख वीश  
 विहरमांन जिनने महारी त्रिकाल वंदना होजो,  
 अतीत चोवीशी, अनागत चोवीशी, वर्तमान  
 चोवीशीने महारी त्रिकाल वंदना होजो. श्रव  
 ज्ञानन, चंद्रानन, वर्द्धमान, वारीषेण, ऐ चार  
 शाश्वता जिनने महारी त्रिकाल वंदना होजो,  
 दश मनना, दश वचनना बार कायाना ए वत्री  
 श दोषमांहेलो सामायिकव्रतमांहे जे कोइ  
 दोष लाग्यो होय, ते सविहुं, मनैं, वचनैं कायायें  
 करी मिठामि डुक्कमं, साचानी सहहणा, जूठाना  
 मिठामि डुक्कडं. पढी त्रण नवकार मनमां गणी  
 त्रण खमासमण देइजयणावर्पूक उठवुं ए  
 ( बारसुं ) खमासमण ॥ इति देवसीप्रतिक्रमणं

॥ अथ राइपडिक्रमणः ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण आपी इठाका  
 र० कहीने इरियावही० पडिक्रमी पढी तस्स  
 उत्तरी० कही एक लोगस्सनो काउस्सग करी

प्रगट लोगस्स कही गमणागमण आलोवुं  
 एटले मार्गनेविषे जातां आवतां० ॥ ए कही  
 पढी सामायिक ठावा त्रण नवकार गुणीयें.  
 पढी जीवराशि खमावी अठार पाप स्थानक आ  
 लोइ पढी गुरुस्थापना निमित्त पंचिंदिय कही  
 ज्वय, क्षेत्र, काल, जाव धारवा. पढी एक नवकार  
 गुणी सामायिक व्रत उच्चार करीयें. पढी फरी  
 बीजा आवश्यक जणी इरियावही० ॥ तस्स  
 उत्तरी० ॥ कही पढी एक लोगस्सनो काउस्स  
 गग करी लोगस्स प्रगट कही पढी बीजा आव  
 श्यक जणी इत्थं अजिजव अशेष डुरकरकय  
 कम्मरकय निमित्त(पांच)लोगस्स नो काउस्सगग  
 करवो. पढी लोगस्स एक प्रगट कही, पढी  
 कुसुमिण डसुमिण उद्दामि निमित्तं करेमि का  
 उस्सगगं. एम कही(४) लोगस्स नो काउस्सगग  
 करवो. पढी एक लोगस्स प्रगट कही पढी उत्तरा  
 संगनोबेह्मो पडिलेही पढी चोथा आवश्यक जणी  
 वेवार वांदणां देइने पढी एकजण उजोरही पां  
 चमाआवश्यक जणी लघु अतिचार कहे. पढी  
 चैत्यवंदन कही ( चार ) स्तवन कहेवां. पढी

जवस गगहरं० नमुत्तुणं० कही गुरु वंदन करी  
सज्जाय कहीयें, पढी ठठा आवश्यक त्रणी वां  
दणां वे वार देखने पच्चरकाण करीये. पढी सा  
मायिक पारवा त्रण नवकार गणीयें. पढी 'जंजं  
मणेण बद्ध' इत्यादिक गाथा कही प्रतिक्रमण  
समाप्त करीयें ॥ इति विधिपद्ध प्रतिक्रमणः स०

॥ अथ लोकागठ प्रतिक्रमण विधिः ॥

सामायिक लेवानी विधिः

प्रथम पोंढाणानां सर्व वस्त्र पम्पिलेहवां त  
था यत्तायें आसनियुं पाथरबुं, ते पढी गुरुने  
इत्तामि खमासमणो० ॥ इत्यादिक त्रण वां  
दणां देवां, पढी श्रीमंधरजीनें त्रणवांदणदेई  
पढी नीचे बेसीने नवकार गणवो, पढी पचें  
दिअनो पाठ कहेवो. पढी इरियावहि० तस्स  
उत्तरी० कही (एक) लोग्गस्स (अथवा) चार  
नवकारनो काजस्सग्ग करवो, पढी नमो अ  
रिहं ताणं कही काजस्सग्ग पारवो प्रगट लो  
ग्गस्स कही गुरुनी पासे सामायिकनी आझा  
मागवी. (कदापि) गुरु न होय तो सीमंधर  
स्वामी पासेथी आझा मागीने करेमी जंते

नो पाठ कहेवो. पढी डावो ढींचण उंचो राखी  
ने नमोवुणंकहेवुं. ॥ इति सामायिक विधि.

॥ अथ सामायिक पारवान विधिः ॥

प्रथम नककार गणी, इरियावहि० तस्स  
उत्तरी०कही, एक लोगस्स (अथवा)  
चार नवकारनो काजस्सग्ग करी नमो अरिहंता  
णं पूर्वक काजस्सग्ग पारी प्रगट लोग्गस्स क  
हीने मावो ढींचण उंचो करी नमोवुणंनो पाठ  
कहेवो. पढी सामाइय वयजुत्तो कही, दश म  
नना, दश वचनना, बार कायाना, इत्यादि पाठ  
कहेवा ॥ इति सामायिक पारवाविधि॥

॥ अथ दैवसिक प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम गुरु पासे आझा मागीये ठैये,  
तेवी रीते आझा मागीने पढी नवकार ग  
णी, लोगस्स कही, डावो ढींचण उंचो करी,  
नमोवुणंनो पाठ कही वे खामणां देवां, तिहां  
वीजे खामणे आवसिआए ए पाठ न कहेवो  
पढी पम्भिक्रमण ठाववुं तेमां आवस्सइठाकारेण  
ए पाठ जणवो. पढी उज्जा थइ(नवकार गणवो.)  
पढी करेजीजंते कहीने इठामिठामि० पढी तस्स

ઉત્તરી ૦ કહી આઠ નવકારનો કાઝ સસગ્ગ કરવો. પઠી નમો અરિ હંતાણં કહી કાઝ સસગ્ગ પારી. પ્રગટ લોગ સસકહી વલી વે સ્વામણાં દેવાં, દેહને પઠી અતિચારનાં વે સ્થુલ તેમાં. એક તો શ્રી જ્ઞાનને વિષે અને બીજો દર્શન (એટલે) સમ્યક્ત્વ રત્નને વિષે એ વે પાઠ ગુરુ પાસે કહેવરાવવા, (અને ગુરુ ન હોય) તો પોતે કહેવા, તે પઠી શ્રાવકના અતિચાર કહેવા.

અથ અતીચાર લિખ્યતે

શ્રી જ્ઞાનને વિષે જે અતિચાર લગા હોય તે આલોહં. જં વાહ્લં વચ્ચા મેલિઅં, હિણસ્કરં અન્નસ્કરં પયહીણં જોગહીણં ઘોસહીણં, સુદ્ધુ દિન્નં હુદ્ધુ પહિલિયં અકાલે, કહં સજ્ઞાહં કાલે ન કહં સજ્ઞાહં, અસજ્ઞાએં સજ્ઞાયં સજ્ઞાએન સજ્ઞાયં, જે કોઈ જ્ઞાનના ચતુદ્ધ અતિચારને વિષે, દિવસ સંવંધિ દોષ લાગો હોય. તસ્સ મિઠા જિ હુક્કહં. ॥ ૧ ॥

દર્શન શ્રી સમકેત રત્નને વિષે જે, અતિચાર લાગો હોય, તે આલોહં, શ્રી જિન વચન સમાં સર્વહ્યાં ન હોય, પ્રતીત્યા ન હોય, રોચવાં ન

होय, परदर्शनीनी आकांक्षा कीधी होय, फल  
प्रत्ये संदेह आयो होय, पर पाखंमीनी प्रशंसा  
कीधी होय, परपाखंडीनो संस्तव, परिचय कीधो  
होय परपाखंमी संघाते आलाप संलाप कीधा  
होय, जे कांइ समकितरत्नने विषे आठ प्रकारें,  
जाणतां अजाणतां दिवस संबंधि, दोष लगा-  
ड्यो होय तस्स मित्रामि डक्कमं ॥ २ ॥

पहेलुं स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रतने  
विषे जे अतिचार लागो होय, ते आलोउं. री  
शवशें गाढो घाव घाड्यो होय, गाढे बंधनें बां  
ध्यो होय, अवयवनो ठेद कीधो होय अतिचार  
जख्यो होय, जात पाणीनो विच्छेद कीधो होय,  
जे कांइ दिवस संबंधि दोष लागो होय, तस्स  
मित्रामि डक्कमं. ॥ ३ ॥

बीजुं स्थूल मृषावाद विरमण व्रतनेविषे,  
जे अतिचार दोष लागो होय, ते आलोउं तुं.  
सहसात्कारें कोइ प्रत्ये कूमां आल दीधां होय,  
रहस्य बानी वात प्रगट कीधी होय, स्त्रीपुरुषना  
मर्म प्रकाश्यां होय, कोइने अपाय पाडवा जणी  
मृषा उपदेश दीधो होय कूडा लेख लख्या

होय कूमी सांख पूरी होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागो होय तस्स मिठामि डुकमं ॥

त्रीजुं स्थूल अदत्तादान विरमणव्रतने विषे जे अतिचार ला० चोराइ वस्तु लीधी होय, चोरने सहाय दीधुं होय, राज्य विरुद्ध कीधुं होय कूडां तोला, कूमां मापकीधां होय, वस्तुमां जेल संजेल कीधा होय, सखरी देखाडी नखरी आपी होय जे कोइ दिवस संबंधि दोष लाग्यो होय, तस्स मिठामि डुकडं ॥

चोथुं स्थूल स्वदारा संतोष परदारा गमन विरमण व्रतने विषे जे अतिचार ला० इत्तर थोडा कालनी राखीशुं गमन कीधां होय अपर ग्रहीतनां गमन कीधा होय, अनंग क्रीमा कीधी होय, परायां विवाह नातरां जोमया होय, काम जोग तीव्र अजिलाषे सेव्या होय, सेवराव्या होय, सेवतां प्रत्ये अनुमोद्या होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागो होय, तस्स मि०

पांचमां ईडापरिग्रह परिमाण व्रतने विषे जे अतिचार लागो होय, ते आलोउं. धन धान्यनुं, खित्तवथ्युनुं, रूपा सोनानुं, डुप्पद चउ

पदकु विधातनुं परिमाण अति क्रम्युं होय, जे कोइ दिवस संबंधी दोष लागो होय तस्स मित्रामि डक्कमं ॥ ७ ॥

वृष्ठा दिशि परिमाण व्रतने विषे जे अतिचार लागो होय, ते आलोउं, उंची, नीची, त्रीठी, दशे दिशिनुं परिमाण, अतिक्रम्यु होय, व्यतिक्रम्यु होय एक दिशि वधारी होय, एक दिशि घटाडी होय पंथने संदेहे मर्यादा लोपी आघो चाल्यो होय, जे कोइ दिवस संबंधी दोष लागो होय, तस्समि० ॥ ८ ॥

सातमुं उपजोग परिजोग परिमाण व्रतने विषे जे अतिचार लागो होय, ते आलोउं. पञ्च स्काण उपरांत सचित्तनो आहार कीधो होय, सचित्त पडिवध्नो आहार कीधो होय, अपक्क डुपक्कनो आहार कीधो होय, तुज्जोषधिना न द्दण कीधां होय जे कोइ दिवस संबंधी दोष लागो होय, त० ॥ ९ ॥

पन्नरे कर्मादान श्रावकने जाणवां. पण स माचरवा नहीं, इंगालकम्मे वणकम्मे सकट कम्मे साडिकम्मे जामीकम्मे फोडीकम्मे, दंतवाणिजे



लस्कवाणिज्जे रसवाणिज्जे विसवाणिज्जे केसवा  
णिज्जे एवंखुजंत पिह्वणकम्मं निह्वंगण कम्मं, द  
वतुं देवुं सरदह तलाय सोसंच, असयंती जन  
नां जरण, पोषण कीधां होय, जे कोइ दिवस  
संबंधि दोष लाग्यो होय, त० ॥ १० ॥

आठमां अनर्थ दंरु विरमण व्रतने विषे जे अ  
तिचार लाग्ना होय, ते आलोउं बुं. कंदर्पनी कथा  
कीधी होय, जाम्कुचेष्टा कीधी होय, मुखरी वचन  
बोल्यां होय, पापनां अधिकरण जोमी मूक्यां होय  
जवजोग परिजोग अधिकां वधास्यां होय जे कोइ  
दिवस संबंधि दोष लाग्यो होय त० ॥ ११ ॥

नवमां श्री सामायिक व्रतनें विषे जे अति  
चार दोष लाग्ना होय, ते आलोउं बुं. मन,  
वचन, कायाना जोग पामुवे ध्याने प्रवर्ताव्या हो  
य, सामायिक मांहे समतान कीधी होय अणपू  
ग्युं पाखुं होय, पारतां वीसाखुं होय जे कोइ दि  
वस संबंधि दोष लागो होय, तस्स मिच्छा० १२

दसमां देसावगासिक व्रतने विषे जे अ०  
नीमि जुमिका बाहेरथी वस्तु अणावी होय त  
था मोकदावी होय, शब्द करी रूप देखानी पु

दुगल नाखी आपणपुं ठतुं जणाव्युं होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागो होय त०॥१३॥

अगीआरसुं पोषध व्रतने विषे जे अ० ला० सखा संधारो अप्रति लेख्यो होय, दुःप्रति लेख्यो होय, अप्रमाज्यो दुःप्रमाज्यो होय, उच्चार पासवण जुमिका अप्रति लेखी होय, दुःप्रति लेखी होय, अप्रमार्जि होय, दुःप्रमार्जि होय, पोसह मांहे वात विकथा निजा प्रमादे करी काल निर्गम्यो होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लाग्यो होय त० ॥ १४ ॥

वारमां अतिथिसंविज्ञाग व्रतने विषे जे अ० सूजती वस्तु सचित्त उपर मूकी होय, सचित्त करी ढांकी होय, काल अतिक्रम्यो होय, आपणी वस्तु परायी कीधी होय, मठर सहित दान दीधुं होय, जाणे वेठां साधु, साधवीनी चिंतवणा न कीधी होय, नवकार नमो श्युणं ज्ञाया गण्या विना व्रत पञ्चस्काण पास्युं होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागो होय, तस्समिन्नामि दुक्कडं ॥

संदेष्टवणा व्रतना पांच अतिचार लाग्ता० इह

લોગા સંસપ્પઓગે પરલોગા સંસપ્પઓગે જીવિ  
આ સંસપ્પઓગે મરણીયા સંસપ્પઓગે કામ  
ઓગની વાંઠા કીધી હોય, જે કોઈ દિવસ સંવં  
ધિ દોષ લાગો હોય, તસ્સ ॥ ૧૬ ॥

અઢારે પાપસ્થાનક લાગાં હોય, તે આલોઝ  
પહેલું પ્રાણાતિપાત ॥ ૧ ॥ વીજું મૃષાવાદ ॥૨॥  
ત્રીજું અદત્તા દાન ॥ ૩ ॥ ચોથું મૈથુન ॥ ૪ ॥  
પાંચમું પરિગ્રહ ॥૫॥ ષઠું ક્રોધ ॥૬॥ માન ॥૭॥  
માયા ॥ ૮ ॥ લોઝ ॥૯॥ રાગ ॥૧૦॥ દ્વેષ ॥૧૧॥  
કલહ ॥ ૧૨ ॥ અન્યાખ્યાન ॥ ૧૩ ॥ પૈશુન્ય  
॥ ૧૪ ॥ પરપરિવાદ ॥ ૧૪ ॥ રતિઅરતિ ॥ ૧૬ ॥  
માયા મોસો ॥ ૧૭ ॥ મિથ્યા દરસણ શૈલ્ય ॥ ૧૮ ॥ એ  
અઢારે પાપસ્થાનક સેવ્યાં હોય, સેવરાવ્યાં હોય  
સેવતાં પ્રત્યે અનુમોદ્યાં હોય જે કોઈ દિવસ સં  
વંધિ દોષ લાગો હોય તસ્સ મિઠામિ હુ ॥ ૧૭ ॥

અતિક્રમ. વ્યતિક્રમ, અતિચાર, અનાચાર  
મૂલગુણ ઉત્તર ગુણને વિષે જે કોઈ દિવસ સંવં  
ધિ દોષ લાગો હોય, તસ્સ મિઠા ॥ ૧૮ ॥

ઈઠં આલોપમિ જોમે દેવસિઓ અઈઆરો  
કઓકાઈઓ વાઈઓ માણસિઓ ઝસ્સુતો ઝ

म्मग्गो इत्यादि यावत् जंखंमियं जं विराहिअं  
तस्स मिठामि डक्कमं ॥ १९ ॥

सव्वस्सवि दिवसिअ डच्चिंतिअ डम्भासिय  
डच्चिट्ठिअ तस्समि० सूत्रजणेमि सूत्र सांजलेमि  
सूत्रनो आदेस. ॥ इति अतिचार ॥

पढी नवकारकही करेमि जंते कहेवुं. पढी इठा  
मिठामि कहेवुं. पढी वंदितुं सूत्र कहेवुं ते कही  
रह्या पढी पूर्वोक्त रीते बे खामणां देवां. पढी अ  
श्रुठिजंमि० कहीने खमाववुं. पढी सात लाख क  
हेवा. पढी आयरिय जवझाए कहेवुं पढी आ  
वस्सइठाकारेण संदिसह जगवन् देवसियं प्रा  
यत्तित्त विशोधनार्थं करेमि काजस्सग्गं ए पाठ  
कही(१)नवकार गणीकरेमिजंते कहेवुंपढी इठा  
मिठामि० तस्सजत्तरी० कही ( चार )  
लोगस्स (अथवा) शोल नवकारनो काजसग्ग  
करी नमो अरिहताणं कही काजस्सग्ग पारी  
प्रगट लोगस्स कहीने वली पूर्वोक्त रीते बेखा  
मणां देवा. पढी चजविहारनुं पच्चस्काण लेवुं.  
पढी सामायिक, चजविसत्तो, वांदणां पडिक्कम  
णुं काजस्सग्ग, अने पच्चस्काण, ए ठ आवश्यक

कने विषे जे कोई दोषलागो होय ते सविमन  
वचनकायायें करी तस्समिच्चामि डुक्कमं ए पाठ  
कही, मावो ढींचण उंचो करी नमुथुणं कहेवुं,  
पढी नवकार गणी स्तवन कहेवुं. तेवार पढी क  
र्मद्वय निमित्त करेमि काउस्सग्गं अनत्त एम क  
हीने चारलोगस्सनो काउसग्ग करवो पारी प्रगट  
लोगस्स कही पढी नवकार गणीने सस्साय कहे  
वी. पढी नंदि कहेवी॥ इति देवसीप्र०

॥ अथ राइ प्रतिक्रमणविधि ॥

प्रथम गुरु पासे आज्ञा मागी सामायिक क  
रवो पढी नवकार गणी राइ कर्मद्वय निमित्ते  
करेमि काउस्सग्गं कही वे लोगस्सनो काउस्स  
ग्ग पारी, प्रगट लोगस्स कही नीचे वेसी नवका  
र कही, चउव्वीसत्तो कहिये, पढी वांदणां तथा  
खामणां लीजे, पढी उज्जा थइने राइ पायवित्त  
विशोधनार्थं करेमि काउस्सग्गं कही, एक नवका  
र गणी, करेमिज्जंते, इच्चामि छामि. काउस्सग्गं  
जोमे राइउं अइअारो कउं इत्यादिक कही,  
तस्सउत्तरीनो पाठ कहेवो. पढी चार लोगस्स  
नो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कही पढी

तरत उजा अइने आवस्स ईळाकारेण संदिस  
 हजगवन् राइ पम्भिकमणें ठामिं राईज्ञान दर्श  
 न चारित्रतप, वीर्य अतिचार चिंतवनार्थ करेमि  
 काजस्सग्गं, एम कहि एक नवकारगणी, करेमि  
 जंते ० इच्छामि ठामि ० तस्स उत्तरी ० कही पढी  
 नाणंमिनोकाजस्सग्ग करीये. पढी देवसिनी पेठे  
 सर्व पाठ कहिये. परंतु ज्यां चार लोगस्सनो का-  
 जस्सग्ग आवे, ते स्थानके वरसी तपनो काज-  
 स्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही, पढी वे वादणां  
 आपीने यथाशक्ति पच्चख्खाण लीजे. तेवार पढी  
 स्तवन, सच्चायो, प्रजातनां केहेवाता होयते  
 कहेवा. त्यार पढी नंदि कहेवी. ॥ इति ॥

अथ पाहिक प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम तो देवसिनी पेठे वंदिता सुधी सर्व  
 कहेवुं, आलोअंतो निदंतों, देवसियं आलो  
 एमि, पख्खि जणेमि, ए रीते कहेवुं, पढी त्यांथी  
 पावुं वली वे खामणाथी मांणीने चार लोग्गस्स  
 ना काजस्सग्ग पर्यंत कहेवुं, पण चार लोग्ग-  
 स्सने ठेकाणे अहीं बार लोगस्सनो काजस्सग्ग  
 करवो, अने बडो पच्चख्खाण आवश्यक आवे

કને વિષે જે કોઈ દોષલાગો હોય તે સવિમન વચનકાયાયેં કરી તસ્સમિચ્છામિ હુક્કમં એ પાઠ કહી, માવો ઢાંચણ ઝંચો કરી નમુથુણં કહેવું, પઠી નવકાર ગણી સ્તવન કહેવું. તેવાર પઠી કર્મદાય નિમિત્ત કરેમિ કાઝસ્સગ્ગં અનઠ એમ કહીને ચારલોગસ્સનો કાઝસગ્ગ કરવો પારી પ્રગટ લોગસ્સ કહી પઠી નવકાર ગણીને સસ્યાય કહેવી. પઠી નંદિ કહેવી॥ ઇતિ દેવસીપ્ર०

॥ અથ રાઙ પ્રતિક્રમણવિધિ ॥

પ્રથમ ગુરુ પાસે આજ્ઞા માગી સામાયિક કરવો પઠી નવકાર ગણી રાઙ કર્મદાય નિમિત્તે કરેમિ કાઝસ્સગ્ગં કહી બે લોગસ્સનો કાઝસ્સ ગ્ગ પારી, પ્રગટ લોગસ્સ કહી નીચે બેસી નવકાર કહી, ચઝઘ્વીસઠો કહિયે, પઠી વાંદણાં તથા શામણાં લીજે, પઠી ઝજ્ઞા થઈને રાઙ પાયઞ્ચિત્ત વિશોધનાર્થ કરેમિ કાઝસ્સગ્ગં કહી, એક નવકાર ગણી, કરેમિઞ્ચંતે, ઇચ્છામિ ઇચ્છામિ. કાઝસ્સગ્ગં જોમે રાઙઞ અઙ્ગારો કઞ્ચ ઇત્યાદિક કહી, તસ્સઝત્તરીનો પાઠ કહેવો. પઠી ચાર લોગસ્સનો કાઝસ્સગ્ગ કરી પ્રગટ લોગસ્સ કહી પઠી

तरत उजा यइने आवस्स ईञ्जाकारेण संदिस  
 हज्जगवन् राइ पम्भिकमणें ठामिं राईज्ञान दर्श  
 न चारित्रतप, वीर्य अतिचार चिंतवनार्थं करेमि  
 काज्जस्सग्गं, एम कहि एक नवकारगणी, करेमि  
 जंतें ० इच्छामि ठामि ० तस्स उत्तरी ० कही पढी  
 नाणंमिनो काज्जस्सग्ग करीये. पढी देवसिनी पेठे  
 सर्व पाठ कहिये. परंतु ज्यां चारलोगस्सनो का-  
 ज्जस्सग्ग आवे, ते स्थानके वरसी तपनो काज्ज-  
 स्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही, पढी वे वादणां  
 आपीने यथाशक्ति पच्चख्खाण लीजे. तेवार पढी  
 स्तवन, सद्यायो, प्रजातनां केहेवाता होयते  
 केहेवा. त्यार पढी नंदि केहेवी. ॥ इति ॥

अथ पाक्षिक प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम तो देवसिनी पेठे वंदिता सुधी सर्व  
 केहेवुं, आलोच्यंतो निदंतों, देवसियं आलो  
 एमि, पख्खि जणेमि, ए रीते केहेवुं, पढी त्यांथी  
 पातुं वली वे खामणाथी मांमीने चार लोग्गस्स  
 ना काज्जस्सग्ग पर्यंत केहेवुं, पण चार लोग्ग-  
 स्सने ठेकाणे अहीं वार लोग्गस्सनो काज्जस्सग्ग  
 करवो, अने ठडो पच्चख्खाण आवश्यक आवे



कने विषे जे कोई दोषलागो होय ते सविमन  
वचनकायायें करी तस्समिठामि डक्कनं ए पाठ  
कही, भावो ढींचण उंचो करी नमुथुणं कहेवुं,  
पढी नवकार गणी स्तवन कहेवुं. तेवार पढी क  
र्मक्षय निमित्त करेमि काउस्सग्गं अनठ एम क  
हीने चारलोगस्सनो काउसग्ग करवो पारी प्रगट  
लोगस्स कही पढी नवकार गणीने सशाय कहे  
वी. पढी नंदि कहेवी॥ इति देवसीप्र०

॥ अथ राइ प्रतिक्रमणविधि ॥

प्रथम गुरु पासे आज्ञा मागी सामायिक क  
रवो पढी नवकार गणी राइ कर्मक्षय निमिते  
करेमि काउस्सग्गं कही वे लोगस्सनो काउस्स  
ग्ग पारी, प्रगट लोगस्स कही नीचे वेसी नवका  
र कही, चउव्वीसठो कहिये, पढी वांदणां तथा  
खामणां लीजे, पढी उज्जा थइने राइ पायवित्त  
विशोधनार्थं करेमि काउस्सग्गं कही, एक नवका  
र गणी, करेमिज्जंते, इठामि ठामि. काउस्सग्गं  
जोमे राइउं अइअारो कउं इत्यादिक कही,  
तस्सउत्तरीनो पाठ कहेवो. पढी चार लोगस्स  
नो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगरस कही पढी

तरत उच्चा यश्ने आवस्स ईच्छाकारेण संदिस  
 हज्जगवन् राइ पम्भिकमणें ठामिं राईज्ञान दर्श  
 न चारित्रतप, वीर्य अतिचार चिंतवनार्थं करेमि  
 काजस्सग्गं, एम कहि एक नवकारगणी, करेमि  
 जंतें ० इच्छामि ठामि ० तस्स उत्तरी ० कही पढी  
 नाणंमिनो काजस्सग्ग करीये. पढी देवसिनी पेठे  
 सर्व पाठ कहिये. परंतु ज्यां चार लोगस्स नो का-  
 जस्सग्ग आवे, ते स्थानके वरसी तपनो काज-  
 स्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही, पढी वे वादणां  
 आपीने यथाशक्ति पच्चख्खाण लीजे. तेवार पढी  
 स्तवन, सद्वायो, प्रजातनां केदेवाता होयते  
 केदेवा. त्यार पढी नंदि केदेवी. ॥ इति ॥

अथ पाक्षिक प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम तो देवसिनी पेठे वंदिता सुधी सर्व  
 कहेवुं, आलोच्यंतो निदंतों, देवसियं आलो  
 एमि, पख्खि जणेमि, ए रीते कहेवुं, पढी त्यांथी  
 पाळुं वली वे खामणार्थी मांमीने चार लोग्गस्स  
 ना काजस्सग्ग पर्यंत कहेवुं, पण चार लोग्ग-  
 स्सने ठेकाणे अहीं वार लोग्गस्स नो काजस्सग्ग  
 करवो, अने ठेको पच्चख्खाण आवश्यक आवे

तेवारे चउविहारने स्थानके धारणा प्रमाणे प-  
चचख्खाण लेवुं, त्यांथी पाठो आलोअंतो निं-  
दंतो पख्खिअं आलोएमि देवसिअं जणेमि  
कहिने तेवार पढीतो वंदिता सूत्र कही रह्या  
पढी जे वे खामणां आपीये ठैये, त्यांथी सर्वदे-  
वसि पडिक्कमणानी पेठे चलाववुं. ॥ इति ॥

अथ चोमासी प्रतिक्रमण विधि.

परखीनी पेठे चोमासी प्रतिक्रमणनो सर्व  
विधि जाणवो, परंतु जे ठेकाणे बार लोगस्सनो  
काउस्सग्ग आवे ठे, ते ठेकाणे वीश लोगस्स-  
नो काउस्सग्ग करवो, तथा जे जे स्थानके प-  
खीयं पाठ आवे ते ते स्थानके चउम्मासियं  
पाठ कहेवो. ॥ इति ॥

अथ संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि.

पाखीनी पेठे संवत्सरी पडिक्कमणानो पण सर्व  
विधि जाणवो. परंतु एटलुं विशेष के जे ठे-  
काणे बार लोगस्सनो काउस्सग्ग आवे ठे, ते  
ठेकाणे अहीं चाळीश लोगस्सनो काउस्सग्ग  
करवो, तथा जे जे स्थानके पखियं पाठ  
आवे, ते स्थानके संवत्सरियं पाठ कहेवो. ॥ इति ॥

अथ वरसी तपना काउस्सग्गनो पाठ ॥

अणसण मूणोअरिया, वत्ति संकेवणं रस-  
च्चाउं ॥ कायकिल्लेसो संली, ए आय बद्धो तवो  
होइ ॥ १ ॥ पायच्चित्तं विणउं, वेआवच्चं तद्देव  
सच्चाउं ॥ ज्ञाणं उस्सग्गोविय, अङ्घितरउं  
तवो होइ ॥ २ ॥ धन्य श्री रुषभदेव स्वामीने  
जेणे वरसी तप कखुं, धन्य श्री महावीरस्वा-  
मीने जेणे ठम्मासी तप कखुं, एमज जे पंच-  
मासी तप करे, तेने धन्य, जे चार मासी तप  
करे, तेने धन्य, जे त्रीमासि तप करे, तेने धन्य,  
जे बे मासी तप करे, तेने धन्य, जे पच्चावन उ-  
पवास करे, तेने धन्य, जे पच्चास उपवास करे,  
तेने धन्य, जे पिस्तालीश आगमना पीस्तालीश  
उपवास करे, तेने धन्य, जे चालीश उपवास  
करे, तेने धन्य, जे पांत्रीश वाणी रूप सत्य व-  
चनना पांत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे चो-  
त्रीश अतिशयना चोत्रीश उपवास करे, तेने  
धन्य, जे तेत्रीश आशातना टालवा निमित्त ते-  
त्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे वत्रीश योग  
संग्रहना वत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे ए-

कत्रीश सिद्धना गुण पामवाने एकत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे त्रीश प्रकारें महा मोहनीय कर्म टालवाना त्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे उगणत्रीश पापशास्त्र टालवाना उगणत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे साधुनी अष्टावीस लब्धिना अष्टावीश उपवास करे, तेने धन्य, जे साधुना सत्तावीश गुणना सत्तावीश उपवास करे, तेने धन्य, जे षष्ठीश दशा कल्पना षष्ठीश उपवास करे, तेने धन्य, जे पञ्चीश क्रिया टालवाना पञ्चीश उपवास करे तेने धन्य, जे चोवीश तीर्थकरना नामना चोवीश उपवास करे, तेने धन्य, जे श्री सूर्य गडांगना त्रेवीश अध्ययनना त्रेवीश उपवास करे, तेने धन्य, जे बावीश परिसह जीतवाना बावीश उपवास करे, तेने धन्य, जे एकवीश सबल दोष टालवाने एकवीश उपवास करे तेने धन्य, जे वीश असमाधिना स्थानक टालवाने वीश उपवास करे तेने धन्य, जे श्री ज्ञाता सूत्रना प्रथम श्रुतस्कंधना उगणीश अध्ययनना उगणीश उपवास करे, तेने धन्य, जे अठार पा-

પસ્થાનક ટાલવાના અઢાર ઉપવાસ કરે, તેને ધન્ય, જે સત્તર પ્રકારે સંયમ પાલવાના સત્તર ઉપવાસ કરે, તેને ધન્ય, જે શ્રી સૂય ગઢાંગના પ્રથમ શ્રુતસ્કંધના શોલ અધ્યનના શોલ ઉપવાસ કરે, તેને ધન્ય, જે પંદર પરમાધામિના કર્મ નિવારવાના પંદર ઉપવાસ કરે, તેને ધન્ય, જે ચૌદ પ્રકારના જીવની દયા પાલવાના ચૌદ ઉપવાસ કરે, તેને ધન્ય, જે તેર કાઠીઆ નિવારવાના તેર ઉપવાસ કરે, તેને ધન્ય, જે ત્રી-ચુની બાર પડિમાના વાર ઉપવાસ કરે, તેને ધન્ય, જે શ્રાવકની અગીઆર પડિમાના અગીઆર ઉપવાસ કરે, તેને ધન્ય, જે દશવિધ યતિ ધર્મ પામવાના દશ ઉપવાસ કરે, તેને ધન્ય, જે નવ પ્રકારે બ્રહ્મચર્ય પાલવાના નવ ઉપવાસ કરે, તેને ધન્ય, જે આઠ કર્મ ટાલવાના આઠ ઉપવાસ કરે, તેને ધન્ય, જે સાત વ્યસન નિવારવાના સાત ઉપવાસ કરે તેને ધન્ય, જે ઢક્કાયની રક્ષાના ઠ ઉપવાસ કરે, તેને ધન્ય, જે પાંચ પ્રમાદ ટાલવાના પાંચ ઉપવાસ કરે, તેને ધન્ય, જે ચાર કષાય ટાલવાના ચાર ઉપ-

વાસ કરે, તેને ધન્ય, જે ત્રણ દંડ ટાલવાના ત્રણ ઉપવાસ કરે, તેને ધન્ય, જે રાગ દ્વેષ ટાલવાના બે ઉપવાસ કરે, તેને ધન્ય, જે એક ઉપવાસ કરે, તેને ધન્ય, આયંબિલ કરે, તેને ધન્ય, એકાસણું કરે, તેને ધન્ય, જે એક ટાણું કરે, તેને ધન્ય, જે પૂરિમાર્દ કરે, તેને ધન્ય, જે પોરસિ કરે, તેને ધન્ય, જે નવકારસિ કરે, તેને ધન્ય, જે ગંઠસીઝં મુઠ સીઝં કરે, જે કોઈ શ્રી જિનાજ્ઞા પ્રમાણે ચાલે તે જીવને ધન્ય છે, ધન્ય ધન્ય ધન્ય ધન્ય નમો અરિહંતાણં ॥. ઇતિ વરસી તપના કાઝસ્સગંગનો પાઠ સંપૂર્ણ ॥

અથ નંદીનો પાઠ.

જયઈ જગજીવ જોણી, વિચ્છાણઈ જગ ગુરુ જગાણંદો, જગનાહો જગબંધૂ, જયઈ જગપ્પિયા મહો જયવં ॥ ૧ ॥ જયઈ સુચ્છાણં પ્પજ્જવો તિહયરાણં અપહ્મિમો જયઈ, જયઈ ગુરુલોગાણં જયઈ મહપ્પા મહા વીરો ॥ ૨ ॥ જહં સઘ્ઝ જગુજ્જો, યગસ્સ જહં જિણસ્સ વીરસ્સ, જહં સુરા સુર નમં, સિયસ્સ જહં ધૂયરયસ્સ ॥ ૩ ॥ ગુણ જવણ ગહણ સુયરયણ, જરિય દંસણ વિસુદ્ધ

रत्नागा, संघ नयर अदंतै, अखंड चरित्त  
पागारा ॥ ४ ॥ संजम तवं तु बारस्स, नमो स-  
म्मत्त पारियद्धस्स ॥ अप्पडिचक्क सज्जं. होउ  
सया संघचक्कस्स ॥ ५ ॥ अदं सील पडा गुसि  
यस्स, तव नियम तुरय जुत्तस्स ॥ संघरहस्स  
अगवज्जं, सज्जडाय सुनंदि घोसस्स ॥ ६ ॥ नंदि  
आनंदि सदा संघने जय जय कारणी. आनंद  
कारणी, कल्याण कारणी, श्री जिनेन्द्र देव श्री-  
गुरुदेवने त्रिकाल वंदना. ॥

सागर गच्छ प्रतिक्रमण विधि.

सागरगच्छ प्रतिक्रमण विधि तपे गच्छ समान  
जाणना परं विशेष मात्र इतनाहे की प्रतिक्रम-  
णपारनेकी समय इर्यावही न प्रतिक्रमतेहें.

आनंद सूरीयगच्छ प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगच्छ प्रतिक्रमण समान जा-  
णना विशेष मात्र सागरगच्छ प्रमाण जाणना.

वडगच्छ प्रतिक्रमण विधि.

समग्र विधि तपेगच्छके प्रतिक्रमण विधि स-  
मान जाणना बिलकुल फरकनही.



राजसूरीय गह्व प्रतिक्रमण विधि.

समग्र विधि तपेगह्व समान जाणना.

लहुडी पोसाल गह्व प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगह्व प्रतिक्रमण समानजाणना.

कमल कलसा गह्व प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगह्वके प्रतिक्रमणके विधि  
समान जाणना.

कवलागह्व प्रतिक्रमणविधि.

समग्रविधि तपेगह्वके प्रतिक्रमणविधि स-  
मान जाणना.

विजयगह्व प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगह्वके प्रतिक्रमण समान जा  
णना विशेष मात्र इतना हे की कर्मक्षय निमित्त  
काजसगके पश्चात् शांतिलोगस्स कहके कहते.

पायचंद्रगह्व प्रतिक्रमण.

तमामविधि तपगह्व समान जाणना परं वि-  
शेष मात्र यहहे की प्रथम देव वंदनके समय  
पुरकरवरदीवहे प्रमुख न कहते चारों धुइ मात्र  
एक साथ कहदेतेहे. और कितनीक संकलना-  
मात्र जिन हे.

॥ अथ सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदनप्रारंभः ॥

॥ विमल केवलज्ञानकमला, कलितत्रिभुवन,  
हितकरं ॥ सुरराजसंस्तुत चरणपंकज नमो आदि  
जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ विमलगिरिवर, शृंगमण्डण, प्रव-  
रगुण गणधूरं ॥ सुर असुर किन्नर, कोमिसेवित ॥  
नमो ॥ २ ॥ करति नाटिक किन्नरीगण, गाय  
जिनगुण मनहरं ॥ निर्झरा वली नमे अहोनिश ॥  
नमो ॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधि, कौमि  
पण मुनि मनहरं ॥ श्रीविमलगिरिवर शृंग सिद्धा  
॥ नमो ॥ ४ ॥ निज साध्यसाधन सुर मुनिवर,  
कोडीनंत ए गिरिवरम् ॥ मुक्तिरमणी वर्या रंगें ॥  
नमो ॥ ५ ॥ पाताल नर सुर लोकमांहि, विमलगि-  
रिवर तोपरं ॥ नहि अधिक तीर्थ तीर्थपति कहे ॥  
नमो ॥ ६ ॥ एम विमल गिरिवर शिखरमंरुण,  
दुखविहंडण ध्याश्यें ॥ निज शुद्ध सत्ता साधना-  
र्थ, परम ज्योति निपाश्यें ॥ जितमोह कोह  
विठोह निद्रा, परम पदस्थित जयकरम् ॥ गिरि-  
राज सेवा करण तत्पर, पद्मविजय सुहितकरं ॥ ७ ॥  
इति चैत्यवंदनं समाप्तं ॥

॥ अथ चोवीसजीननुं चैत्यवंदन ॥

॥ सुर किन्नरनागनरिदनतं, प्रणमामि युगादिम  
जिनमजितं ॥ संजवमजिनंदनमथ सुमतिं, पद्मप्रज-

सुज्ज्वलधीरमतिं ॥ १ ॥ वंदे च सुपार्श्व जिनेन्द्र महं,  
 चंद्रप्रचमष्टकुर्मदहं ॥ सुविधिप्रभुशीतल जिनयुग  
 लं, श्रेयांसमसंशयमतुलवलम् ॥१॥ प्रभुमर्चय नृपव  
 सुपूज्यसुतं, जिनविमलमनंतमजिह्ननतम् ॥ नम धर्म  
 मधर्मनिवारिगुणं, श्रीशांतिमनुत्तरकांतिगुणम् ॥ ३ ॥  
 कुंथू श्रीश्वर मल्लीशजिनान्, मुनिसुव्रतनमिनेमिस्तम-  
 सिदिनान् ॥ श्रीपार्श्वजिनेन्द्रमिजेन्द्रसमं, वंदे जिन-  
 वीरमजीरुतमं ॥ ४ ॥

॥ कलश ॥

॥ इति नागकिन्नर, नरपुंदर, वंदितक्रम, पंकजा  
 ॥ निर्जितमहारिपु, मोहमत्सर, मानमदमकरध्वजाः ॥  
 विद्वसंति सततं, सकलमंगल, केलिकानन, सन्निजाः,  
 सर्वे जिनामे, हृदयकमले, राजहंस, समप्रजाः ॥ ५ ॥  
 इति चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥

॥ अथपंचतीर्थी चैत्यवंदन ॥

आजदेवशरीरहंतनमुं, समरुं तारुं नाम ॥ ज्यां  
 ज्यां प्रतिमा जिनतणी, त्यां त्यां करुं प्रणाम ॥ १ ॥  
 शत्रुंजय श्रीआदिदेव, नेम नमुं गिरनार ॥ तारंगे  
 श्री अजित नाथ, आबू रिखज जुहार ॥ २ ॥ अ  
 ष्ठापदगिरि ऊपरें, जिन चोवीशी जोय ॥ मणिमय  
 मूरति मानशुं, जरतें जरावी सोय ॥ ३ ॥ समेतशि  
 खर तीरथ वडुं, ज्यां वीशे जिनपाय ॥ वैज्जारगिरि  
 ऊपरे, श्री वीरजिनेश्वर राय ॥ ४ ॥ मांरुवगढनो

राजीयो नामें देव सुपास ॥ रिखज कहे जिन सम  
रतों, पढ़ोंचे मननी आश ॥ ५ ॥ इति ॥ ० ॥

॥ अथ बीजनं चैत्यवंदन ॥

॥ पुविध धर्म जिणें उपदिश्यो, चोथा अजिनं-  
दन ॥ बीजे जन्म्या ते प्रभु, जवहुःखनिकंदन ॥ १ ॥  
पुविध ध्यान तुम्हें परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥  
एम प्रकाश्यं सुमति जिनें, तेचविया बीज दिन ॥ २ ॥  
दोय बंधन राग द्वेष, तेहनें जवि तजीयें ॥ मुजपरें  
शीतल जिन कहे, बीजदिन शिव जजीयें ॥ ३ ॥  
जीवाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥ बीज दि-  
नें वासु पूज्य परें, लहो केवल नाण ॥ ४ ॥ निश्चय  
नय व्यवहार दोय, एकांत न ग्रहीयें ॥ अर जिन  
बीज दिनें चवी, एम जिन आगल कहीयें ॥ ५ ॥  
वर्त्तमान चोवीशीयें, एम जिन कल्याण ॥ बीज  
दिनें केइ पामीया, प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम  
अनंत चोवीशीयें ए, हुआं बहु कल्याण ॥ जिन  
उत्तम पद पढ़नें; नमता होय सुखखाण ॥ ७ ॥

॥ अथ पंचमीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ त्रिगडे वेठा वीरजिन, जाखे जविजन आगें ॥  
त्रिकरणं त्रिहुं लोक जन, निसुणो मन रागें ॥ १ ॥  
आराहो जलि जातसें, पांचम अजुवाली ॥ ज्ञान  
आराधन कारणें, एहज तिथि निहाली ॥ २ ॥ ज्ञान  
विना पशु सारिखा, जाणो एणें संसार ॥ ज्ञान

आराधनथी लक्षुं, शिवपद सुखश्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान  
रहित क्रिया कही, काशकुसुम उपमान ॥ लोकालो  
क प्रकाशकर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी सा  
सोह्वासमें, करे कर्मनो खेह ॥ पूर्व कोमी वरसां  
लगे, अज्ञानें करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया  
कही, सर्व आराधक ज्ञान ॥ ज्ञान तणो महिमा  
घणो, अंग पांचमे जगवान ॥ ६ ॥ पंच मास लघु  
पंचमी, जावज्जीव उत्कृष्टी ॥ पंच वरस पंच मास  
नी, पंचमी करो शुजदृष्टि ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो  
ए, काउस्सग लोगस्स केरो ॥ उजमणुं करो जाव  
शुं, टाले जवफेरो ॥ ८ ॥ एणी परें पंचमी आराहीयें  
ए, आणी जाव अपार ॥ वरदत्त गुणमंजरी परें,  
रंगविजय लहो सार ॥ ९ ॥ इति पंचमीचैत्यवंदन ॥

॥ अथ अष्टमीजुं चैत्यवंदन ॥

॥ माहा शुदि आठमने दिनें, विजया सुत जायो  
॥ तेम फागुण शुदि आठमे, संजव चवि आयो ॥ १ ॥  
चइतर वदनी आठमें, जन्म्या कृषज जिणंद ॥ दी  
हा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥  
माधवशुदि आठमदिनें, आठ कर्म कस्यां डुर ॥  
अजिनंदन चोथा प्रभु, पाम्या सुख जरपूर ॥ ३ ॥  
एहिज आठम उजव्ही, जन्म्या सुमति जिणंद ॥  
आठ जाति कलशें करी, न्हवरावे सुर इंद ॥ ४ ॥  
जन्म्या जेठ वदि आठमे, मुनिसुवत स्वामी ॥ नेम

आपाठ शुदि आठमे, अष्टमी गति पामी ॥ ५ ॥  
 श्रावण वदनी आठमे, नमि जन्मया जगजाण ॥  
 तिम श्रावण शुदि आठमे, पासजीनुं निर्वाण ॥ ६ ॥  
 नाद्रवा वदि आठमदिने, चविया खामी सुपास ॥  
 जिन उत्तम पदपद्मनें, सेव्याथी शिववास ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ शासन नायक वीरजी, प्रभु केवल पायो ॥  
 संघ चतुर्विध थापवा, महसेनवन आयो ॥ १ ॥ मा  
 धव सीत एकादशी, सोमल छीज यज्ञ ॥ इन्द्रचू  
 तिआदें मळ्या, एकादश विह्व ॥ २ ॥ एकादशसें  
 चउगुणा, तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अवलो करे,  
 मन अजिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संशय  
 हरी ए, एकादश गणधार ॥ वीरें थाप्या वंदीयें,  
 जिन शासन जयकार ॥ ४ ॥ मल्लि जन्म अर मल्लि  
 पास, वरचरण विलासी ॥ रुषज अजित सुमति न  
 मि, मल्लि घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रज शिव  
 वास पास, जवजवना तोडी ॥ एकादशी दिन आ  
 पणी, रुद्धि सघली जोडी ॥ ६ ॥ दश खेत्रे त्रिहुं  
 कालनां, त्रणशें कल्याण ॥ वरस अग्यार एकादशी,  
 आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अगीयार अंग लखावीयें,  
 एकादश पाठां ॥ पूंजणी ठवणी विंटणी, मशी का  
 गल काठां ॥ ८ ॥ अगीयार अव्रत ठाम्वां ए, व्हो

પડિમા અગિયાર ॥ શિમાવિજય જિન શાસને, સપ  
લ કરો અવતાર ॥ ૯ ॥ ઇતિ ॥

॥ અથ શ્રીવિશસ્થાનકનું ચૈત્યવંદન ॥

॥ પહેલે પદ અરિહંત નમું, વીજે સર્વ સિદ્ધ ॥  
ત્રીજે પ્રવચન મન ધરો, આચારજ સિદ્ધ ॥ ૧ ॥ ન  
મોયેરાણં પાંચમે, પાઠક ગુણ ઠઠે ॥ નમો લોણ સ  
વસાહુણં, જે ઠે ગુણ ગરિઠે ॥ ૨ ॥ નમો નાણસ્સ  
આઠમે, દર્શન મન જાવો ॥ વિનય કરો ગુણવંતનો,  
ચારિત્રપદ ધ્યાવો ॥ ૩ ॥ નમો વંજ વયધારીણં, તેર  
મે કિરિયાણં ॥ નમો તવસ્સ ચૌદમે, ગોયમ નમો  
જિણાણં ॥ ૪ ॥ ચારિત્ર જ્ઞાન સુઅસ્સને એ, નમો  
તિઠ્ઠસ્સ જાણી ॥ જિન ઉત્તમપદ પદ્મને, નમતા હો  
યે સુલ્લખાણી ॥ ૫ ॥

॥ અથ વિશસ્થાનકના કાઊસ્સગનું ચૈત્યવંદન ॥

॥ ચોવીશ પંદર પિસતાલીશનો, ઠત્રીશનો કરી  
યે ॥ દશ પંચવીશ સત્તાવીશનો; કાઊસ્સગ મન ધ  
યે ॥ ૧ ॥ પંચ સહસ્સઠને દશ વલી, સીત્તેર નવ પણવી  
શ ॥ બાર અઢવીશ લોગસ્સ તણો, કાઊસ્સગ ધરો  
ગુણીશ ॥ ૨ ॥ વિશ સત્તર ઇગવન, દ્વાદશ ને પંચ ॥  
ણી પરે કાઊસ્સગ જો કરે, તો જાયે જવ સંચ  
॥ ૩ ॥ અનુક્રમે કાઊસ્સગ મન ધરો, ગુણી લેજો  
વીશ ॥ વિશ ધ્યાનક એમ જાણીયે, સંદેપથી લેશ  
॥ ૪ ॥ જાવ ધરી મનમાં ઘણો એ, જો એક પદ

आराधे ॥ जिन उत्तमपद पद्मने, नमी निज का  
रज साधे ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री रोहिणीतपचैत्यवन्दन ॥

॥ रोहिणी तप आराधीये, श्रीश्री वासुपूज्य ॥  
डुख दोहग दूरें टले, पूजक होये पूज्य ॥ १ ॥ पहे  
ला कीजें वासुदेव, प्रह उठीने प्रेम ॥ मध्यान्हें क  
री धोतीयां, मन वच काया खेम ॥ २ ॥ अष्ट प्रका  
रनी रचीयें, पूजा नृत्य वाजित्र ॥ जावे जावना जा  
वीयें, कीजें जन्म पवित्र ॥ ३ ॥ त्रिहुं कालें लेइ धूप  
दीप, प्रभु आगल कीजें ॥ जिनवर केरी जक्तिशुं,  
अविचल सुख लीजें ॥ ४ ॥ जिनवर पूजा जिन स्त  
वन, जिननो कीजे जाप ॥ जिनवर पदने ध्याइये,  
जिम नावे संताप ॥ ५ ॥ कोड कोड गुण फल दीयें,  
उत्तर उत्तर जेद ॥ मान कहे ए विधि करो, जुं  
होये जवनो ठेद ॥ ६ ॥

॥ अथ तीर्थवन्दनं चैत्यवन्दन ॥

॥ सीमंधर प्रमुख नमुं, विहरमान जिन वीश ॥  
रिखजादिक वली वंदीये, संपइ जिन चोवीश ॥ १ ॥  
सिद्धाचल गिरनार आबु, अष्टापद वलि सार ॥ स  
मेतशिखर ए पंचतीर्थ, पंचमी गति दातार ॥ २ ॥  
ऊर्ध्व लोके जिनहर नमुं, ते चोराशी लाख ॥ सह  
स सत्ताणुं ऊपरें, त्रेविश जिनवर जांख ॥ ३ ॥ एक  
शो घावन कोमि वली, लाख चोराणुं सार ॥ सहस



चुम्माली सातशें, शाठ जिन पडिमा उदार ॥ ४ ॥  
 अधोलोकें जिनजवन नमुं, सात कोमि वोहोंतेर  
 लाख ॥ तेरशें कोमि नेव्याशी कोमी शाठ लाख  
 चित्त राख ॥ ५ ॥ व्यंतर ज्योतिषीमां वली ए, जि  
 न जवन अपार ॥ ते जवि नित्य वंदन करो, जेम  
 पामो जवपार ॥ ६ ॥ तिर्ठा लोके शाश्वतां, श्रीजि  
 नजवनविशाल ॥ बत्रीशशें ने उगणशाठ, वंडुं थइ  
 उजमाल ॥ ७ ॥ लाख त्रण एकाणुं सहस, त्रणशें  
 विश मनोहार ॥ जिनपडिमा ए शाश्वती, नित्य नि  
 त्य करुं जुहार ॥ ८ ॥ त्रण जुवनमांहे वली ए, नामा  
 दिक जिन सार ॥ सिद्ध अनंता वंदीयें, महोदय प  
 द दातार ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ चोवीश तिर्थकरनी राशिनुं चैत्यवंदन ॥

॥ शांति नमी मल्ली मेघ ठे, कुंथु अजित वृषजा  
 ति ॥ संजव अजिनंदन मिथुन, धर्म करक सिंह  
 सुमति ॥ १ ॥ कन्या पद्मप्रज नेम वीर, पास सुपा  
 स तुला ए ॥ शशि वृश्चिक धन ऋषजदेव, सुविधि  
 शीतल जिनराय ॥ २ ॥ मकर सुव्रत श्रेयांसने ए,  
 चारमा घट मीन लील ॥ विमल अनंत अर नामथी,  
 सुखीया श्री शुजवीर ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचंदकेवलीना रासमांथी चैत्यवंदन ॥

॥ अरिहंत नमो, जगवंत नमो, परमेसर जिन

राज नमो ॥ प्रथम जिनेसर प्रेमे पेखत, सिद्धां  
सधलां काज नमो ॥ अ० ॥ १ ॥ प्रजु पारंगत  
परम महोदय, अविनाशी अकलंक नमो ॥  
अजर अमर अद्भुत अतिशयनिधि, प्रवचन जल-  
धिमयंक नमो ॥ अ० ॥ २ ॥ तिहुअण जविगण  
जण मण वंठिय, पूरण देव रसाल नमो ॥ ललि  
ललि पायनमुं हुं जालें, कर जोमीनें त्रिकाल नमो  
॥ अ० ॥ ३ ॥ सिद्ध बुद्ध तूं जग जन सज्जन, नय  
नानंदन देव नमो ॥ सकल सुरासुर नर वर नायक,  
सारे अहो निश सेव नमो ॥ अ० ॥ ४ ॥ तूं तीर्थ  
कर सुखकर साहिव, तूं निःकारण वंधु नमो ॥ शर  
णागत जविने हितवत्सल, तूंही कृपारसासिंधु नमो  
अ० ॥ ५ ॥ केवलज्ञानादर्श दर्शित, लोकालोकस्व  
जाव नमो ॥ नाशित सकल कलंक कलुपगण डु  
रित उपद्रवजाव नमो ॥ अ० ॥ ६ ॥ जगचिंताम  
णि जगगुरु जगहित, कारक जगजननाथ नमो ॥  
घोर अपार जवो दधितारण, तूं शिवपुरनो साथ  
नमो ॥ अ० ॥ ७ ॥ अशरण, शरण नीराग निरंजन,  
निरुपाधिक जगदीश नमो ॥ बोधि दीर्घ अनुपम  
दाने सर, ज्ञानविमल सूरीश नमो ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ अथ श्रीचोवीश जिननावर्णनु चेत्यवंदन ॥

॥ पद्मप्रज्ञ ने वासुपूज्य दोय राता कहीयें ॥  
चंद्रप्रज्ञ ने सुविधिनाथ, दो उज्ज्वल लहीयें ॥१॥

मह्विनाथ, ने पार्श्वनाथ, दो नीला निरख्या ॥ मुनि  
सुव्रत ने नेमनाथ, दो अंजन सरिखा ॥१॥ शोले जिन  
कंचनसमा ए, एवा जिन चोवीश ॥ धीरविमल पं-  
डित तणो, ज्ञान विमल कहे शिष्य ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चोविश जिन समकितजव गण ॥  
तीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम तीर्थकर तणा हुवा, जव तेर कही जे  
॥ शांतितणा जव चार सार, नव जव नेम लहीजे  
॥ १ ॥ दश जव पासजिणंदने, सत्तावीश श्रीवीर ॥  
शेष तीर्थकर त्रिहुं जवें, पाम्या जवजल तीर ॥२॥  
ज्यांश्री समकित फरसीयुं, त्यांश्री गणीए तेह ॥  
धीरविमल पंडित तणो, ज्ञानविमल गुण गेह ॥३॥ इति ॥

॥ अथ चउदशें वावन गणधरनुं चैत्यवंदन ॥

॥ गणधर चोराशी कह्या, वली पंचाणुं ठेक ॥  
दोय अधिक इग सय गणा, शोल अधिक शत एक  
॥ १ ॥ शत सुमतिने गणधरा, एक सय अधिका  
सात ॥ पंचाणु त्राणु तथा, अडसी इगसी वात ॥२॥  
ठोहोतेर ठासठ सगवन, पंचास तेंतालीस ॥ ठत्तिस  
पणतिस कुंथने, अर गणधर तेत्रीश ॥ ३ ॥ अडवी  
स अष्टादश कह्या, नमि सत्तर गणधार ॥ एकादश  
दश शिव गया, वीर तणा अगीयार ॥ ४ ॥ रिख  
जादिक चोविशना, एक सहस्स सय चार ॥ अधि  
केरा वावन कह्या, सर्व मली गणधार ॥ ५ ॥ अक्षय

पद वरिया सबे, सादि अनंत निवास ॥ करीयें शु  
ज चित्त वंदना, जब लग घटमां शास ॥६॥ इति ॥

॥ अथ श्रीपंच परमेष्ठि चैत्यवंदन ॥

॥ वार गुण अरिहंत देव, प्रणमीजें जावें ॥  
सिद्ध आठ गुण समरतां, दुःख दोहग जावे ॥ १ ॥  
आचारज गुण ठत्रीस, पंचवीश उवजाय ॥ सत्ता  
वीश गुण साधुना, जपतां सुख थाय ॥ २ ॥ अष्टो  
त्तर सय गुण मली ए, एम समरो नवकार ॥ धीर  
विमल पंडित तणो, नय प्रणमे नित सार ॥३॥इति॥

॥ अथ श्री सीमंधर जिन थोय ॥

॥ श्री सीमंधर जिनवर, सुखकर साहेव देव ॥  
अरिहंत सकलनी, जाव धरी करुं सेव ॥ सकल  
आगम पारग, गणधर जाखित वाणी ॥ जयवंती  
आणा, ज्ञानविमल गुणखाणी ॥ १ ॥ (ए थोय चार  
वखत पण कहेवाय ठे )

॥ अथ श्री सीमंधर जिन थोय ॥

॥ श्री सीमंधर देव सुहंकर, मुनि मन पंकज हं  
साजी ॥ कुंथु अर जिन अंतर जनम्या तिहुअण  
जश परशंसा जी ॥ सुव्रत नमि अंतर वरदीक्षा,  
शिद्धा जगत निरासेजी ॥ उदय पेढाल जिनांतर  
मां प्रभु, जाशे शिव बहु पासेंजी ॥ १ ॥ चत्रीश च  
उसठी चउसठी मलिया, इग सय सठि उक्किछा  
जी ॥ चउ अरु अरु मली मध्यम कालें, विश जि

नेश्वर जिष्ठार्जी ॥ दो चउ चार जघन्य दश जंबु,  
 धायइ पुस्कर मोऊरेंजी ॥ पूजो प्रणमो आचारां  
 गें, प्रवचन सार उऊरेंजी ॥ २ ॥ सीमंधर वर के  
 वल पामी, जिनपद खवण निमित्ते जी ॥ अर्थ नि  
 देशन वस्तु निवेशन, देतां सुणत विनीतेंजी ॥ द्वा  
 दश अंग पूरवयुत रचियां, गणधर लब्धि विकसि  
 यां जी ॥ अप्पज्जावसिय जिनागम वंदो, अक्षरपद  
 ना रसियां जी ॥ ३ ॥ आणारंगी समकितसंगी, वि  
 विध जंग व्रतधारीजी ॥ चउबिह संघ तीरथ रख-  
 वाली, सहु उपद्रव हरनारीजी ॥ पंचांगुली सूरि  
 शासन देवी, देती तस जस रुद्धिजी ॥ श्रीशुचवी  
 र कहे शिव साधन, कार्य सकलमां सिद्धिजी ॥ ४ ॥

॥ अथ बीजतिथिनी स्तुति ॥

॥ दिन सकल मनोहर, बीज दिवस सुविशेष ॥  
 राय राणा प्रणमे, चंद्र तणी ज्यां रेख ॥ तिहां चंद्र  
 विमाने, शाश्वता जिनवर जेह, हुं बीज तणे दिन,  
 प्रणमुं, आणी नेह ॥ १ ॥ अजिनंदन चंदन, शीत  
 लशीतल नाथ ॥ अरनाथ सुमतिजिन, वासुपूज्य  
 शिव साथ ॥ इत्यादिक जिनवर, जन्म ज्ञान नि  
 र्वाण ॥ हुं बीज तणे दिन, प्रणमुं ते सुविहाण  
 ॥ २ ॥ परकाश्यो बीजें, दुविध धर्म जगवंत ॥ जेम  
 विमल कमल दोय, विउल नयन विकसंत ॥ आगम  
 अति अनुपम, जिहांनिश्चय व्यवहार ॥ बीजें सवि

कीजें, पातकनो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी का-  
मिनी, कमल सुकोमल चीर ॥ चक्केसरी केसरी, सर  
स सुगंध शरीर ॥ कर जोकी वीजें हुं प्रणमुं तस  
पाय ॥ एम लब्धिविजय कहे, पूरो मनोरथ माय ४  
॥ अथ पंचमीनी स्तुति ॥

॥ श्रावण शुदि दिन पंचमी ए, जन्म्या नेम  
जिणंद तो ॥ श्यामवरण तन शोजतुं ए, मुख शार  
दको चंद तो ॥ सहस वरस प्रजु आयुखु ए, ब्रह्म  
चारी जगवंत तो ॥ अष्ट करम हेळें हणी ए, पद्मो  
ता मुक्ति महंत तो ॥ १ ॥ अष्टापदपर आदि जिन  
ए, पद्मोता मुक्ति मोजार तो ॥ वासुपूज्य चपापुरी ए  
नेम मुक्ति गिरनार तो ॥ पावापुरी मांहे वलि ए  
श्रीवीरतणुं निर्वाण तो ॥ समेत शिखर विश सिद्ध  
हुआ ए, शिर वहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥ नेमना  
थहानी हुवा ए, जांखे सार वचन तो ॥ जीवदया गु  
ण बेलकी ए, कीजे तास जतन तो ॥ मृषा न बो  
लो मानवी ए, चोरी चित्त निवार तो ॥ अनंत ती  
र्थकर एम कहे ए, परहरियें परनार तो ॥ ३ ॥ गो  
मेद नामे यक्ष जलो ए, देवी श्री अंबिका नाम  
तो ॥ शासन सान्निध्य जे करे ए, करे वलि धर्मनां  
काम तो ॥ तपगुण नायक गुण निलो ए, श्रीविज  
यसैन्य सूरिराय तो ॥ रिखजदास पाय सेवतां ए,  
सफल करो अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमीनी स्तुति ॥

॥ मंगल आठ करी जस आगल, जाव धरी सु  
रराज जी ॥ आठ जातिना कलश करीने, न्हवरावे  
जिनराज जी ॥ वीरजिनेश्वर जन्म महोत्सव, कर  
तां शिव सुख साधेजी ॥ आठमनुं तप करतां अम  
घर, मंगल कमला बाधे जी ॥ १ ॥ अष्ट करम वय  
री गजगंजन, अष्टापद परें बढीया जी ॥ आठमे  
आठ स्वरूप विचारी, मद आठे तस गढीया जी ॥  
अष्टमी गति पहोता जे जिनवर, फरस आठ नहिं  
अंग जी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, नित्य नि  
त्य बाधे रंग जी ॥ २ ॥ प्रातिहारज आठ विराजे  
समवसरण जिन राजे जी ॥ आठमे आठशो आग  
म जांखी, जवि मन संशय जांजे जी ॥ आठे जे प्रव  
चननी माता, पाळे निरतिचारो जी ॥ आठमने दि  
न अष्टप्रकारें, जीवदया चित्त धारो जी ॥ ३ ॥ अष्ट  
प्रकारी पूजा करीने, मानव जवफल लीजें जी ॥  
सिद्धाई देवी जिनवर सेवी, अष्टमहासिद्धि दीजें  
जी ॥ आठमनुं तप करता लीजें, निर्मल केवल ज्ञा  
नजी ॥ धीर विमल कवि सेवक नय कहे, तपशी  
कोमि कढ्याण जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

॥ एकादशी अति रूअमी, गोविंद पूठे नेम ॥  
कोण कारण ए पर्व महोदंड, कहो मुऊशुं तेम ॥ जि

नवर कट्याणक अति घणां, एकशोने पंचास ॥ ते  
 ऐं कारण ए पर्व महोदुं, करो मौन उपवास ॥ १ ॥  
 अगियार श्रावक तणी प्रतिमा, कहे ते जिनवर दे  
 व ॥ एकादशी एम अधिक सेवो, वन गजा जिम  
 रेव ॥ चोवीश जिनवर सयल सुखकर, जैसा सुरत  
 रु चंग ॥ जेम गंग निर्मल नीर जेहवुं, करो जिनशुं  
 रंग ॥ २ ॥ अगीश्वार अंग लखावियें, अगीयार पा  
 ठां सार ॥ अगिश्वार कवली वींटणां, ठवणी पूंजणी  
 सार ॥ चावली चंगी विविध रंगी, शास्त्र तणे अनु  
 सार ॥ एकादशी एम उजवो, जेम पामियें जवपार  
 ॥ ३ ॥ वर कमलनयणी कमलवयणी, कमल सुको  
 मलकाय ॥ जुजदंड चंरु अखंड जेहने, समरतां सुख  
 आय ॥ एकादशी एम मन वशी, गणि हर्ष पंक्ति  
 शिस ॥ शासन देवी विघन निवारो, संघ तणां निशदीस  
 ॥ अथ शांतिजिन स्तुति ॥

॥ शांति जिनेसर समरियें, जेहनी अचिरा माय ॥  
 विश्वसेन कुल उपना मृग लंठन पाय ॥ गजपुर  
 नयरीनो धणी, सोवन वरणी काय ॥ धनुष चालिस  
 जस देहमी, वरस लाखनुं आय ॥ १ ॥ शांति जिने-  
 सर सोलमा, चक्री पंचम जाणुं ॥ कुंथुनाथ चक्री  
 ठगा, अर नाथ वखाणुं ॥ एत्रिणे चक्री सही, देखी  
 आणदू ॥ संयम लइ सुतें गया, नित्य उठीने वंदू  
 ॥ २ ॥ शांति जिनेसर केवली, वेठा धर्म प्रकाशे ॥



दान शील तय जावना, नर सोहें अज्यासे ॥ एह  
वचन जिनजी तणा, जेणे हियडे धरियां ॥ सुणतां  
शिवगती निर्मली, दिसे केवल वरियां ॥ ३ ॥ समेत  
शिखर गिरि उपरे, जइने अण सण कीधुं ॥ काउ-  
सग मुद्रायें रह्या, तिणे मुक्तीज लीधुं ॥ गरुडयक्ष  
सेवुं सदा, देवी निरवाणी ॥ नविक जीव तुमें  
सांजलो, रूपनदासनी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुति ॥

॥ आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया ॥ मरु-  
देवी जस माया, धोरी लंठन पाया ॥ जगत स्थिति  
निपाया, शुद्ध चारित्र पाया ॥ केवल सिरि राया,  
मोक्ष नगरे सधाया ॥ १ ॥ सविजन सुखकारी, मोह-  
मिथ्या निवारी ॥ दुरगति दुःख नारी, शोकसंताप  
वारी ॥ श्रेणि रूपक सुधारी, केवलानंतधारी ॥  
नमिये नरनारी जेह विश्वोपकारी ॥ २ ॥ समव  
सरण वेठा, लागे जे जिनजी मीठा ॥ करे गणप  
पइठा, इंद्र चंडादि दीठा ॥ द्वादशांगी वरीठा  
गुंथता टाळे रीठा ॥ नविजन होय हिठा, देखी  
पुण्ये गरीठा ॥ ३ ॥ गुर समकितवंता, जेहकळे  
महंता ॥ जेह सुजन संता, टाळिये मुजचिंता ॥ जिनवर  
सेवंतां, विघ्नवारे दुरंता ॥ जिनउत्तम शुणंतां, पद्मने  
सुख दिंता ॥ ४ ॥ इति

अथ सिद्धचक्रजीनी स्तुति ॥

जिनशासन वंछित पुरणदेव रसाल ॥ जावे ज-  
वि जजिये, सिद्धचक्र गुणमाल ॥ त्रिहुं काळे एहनी  
पुजा करे उजमाल ॥ ते अमर अमरपद सुख  
पामे सुविशाल ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्धवंदो, आचा-  
रज उवझाय ॥ मुनिदरसण नाण चरण तप ए स  
मुदाय ॥ ए नवपद समुदित, सिद्धचक्र सुख दाय ॥  
ए ध्याने जविनां, जव कोटी दुःखजाय ॥ २ ॥ आ  
शो चैत्रीमां शुद्ध सानमथी सार ॥ पुनम लगी कीजे,  
नव आंबिल निरधार ॥ दोय सहस गणेंबुं, पद  
सम साढाचार ॥ एकाशी आंबिल तप आगम अ-  
नुसार ॥ ३ ॥ श्रीसिद्धचक्र सेवक, श्रीविमलेश्वर-  
देव ॥ श्रीपालतणीपरे सुख पूरे स्वयमेव ॥ दुःख  
दोहग नावे, जे करे एहनी सेव ॥ श्रीसुमती सु-  
गुरुनो राम कहे नितमेव ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथपर्यूपण स्तुति ॥

सत्तर जेदी जिन पूजा रचीने. स्नात्र महोत्सव  
कीजेजी ॥ ढोल ददामां जेरी नफेरी, ऊह्वरी नाद  
सुणीजेजी ॥ वीरजिन आगे जावना जावी, मानव  
जव फल लीजेंजी ॥ पर्व पजूसण पुरव पुण्ये, आ-  
व्यां एम जाणीजे जी ॥ १ ॥ मास पास वली द-  
सम दुवालय, चत्तारी अठ कीजेंजी ॥ उपर वली

दश दोय करीने, जिन चोवीस पूजीजेंजी ॥ वक्रा  
कलपनो ठछ करीने, वीर चरित्र सुणीजेजी ॥ पड-  
वेने दिन जन्म महोत्सव, धवल मंगल वरतीजेजी  
॥ २ ॥ आठ दिवस लगे अमारी पलावी, अछमनुं  
तप करियें ॥ नागकेतु नी परें केवल लहियें, जो  
शुच जावें रहियेजी ॥ तेलाधर दिन त्रण कल्याण-  
क गणधरवाद वदीजेजी ॥ पास नेमीसर अंतर  
त्रीजें, कृष्ण चरित्र सुणीजेजी ॥ ३ ॥ बारसैं सूत्रने  
सामाचारी, संवहरी पडिक्कमियेजी ॥ चैत्य प्रवाही  
विधिसुं कीजे, सयल जंतु खामीयेंजी ॥ पारणाने  
दिन स्वामी बहल, कीजे अधिक वक्राइजी ॥ मान  
विजय कहे सकल मनोरथ, पूरो देवी सिद्धाइजी ॥४॥

॥ अथ पर्यूपण स्तुति ॥

पुण्यनुं पोपण, पापनुं शोषण, पर्व पजूसण पा-  
मीजी ॥ कल्प घेर पधरावो स्वामी, नारी कहे शि-  
र नामीजी ॥ कुंवर गयवर स्कंध चक्रावी, ढोल नि-  
साण वजडावोजी ॥ सदगुरु संगे चढते रंगे, वीर  
चरित्र सुणावोजी ॥ १ ॥ प्रथम वखाण धरम सार  
थी पद, बीजे स्वपना चार जी ॥ त्रीजे स्वपन पा-  
ठक वली चोथे, वीर जन्म अधिकारजी ॥ पांचमे  
दीक्षा ठछे शिवपद, सातमें जिन त्रेवीशजी ॥ आ-  
ठमे स्थविरावली संजलावी, पिउडा पूरो जगीश-  
जी ॥ २ ॥ ठछ अछम अछाई कीजें, जिनवर चैत्य

नमीजैजी ॥ वरसी पन्निक्कमणुं मुनिवन्दन, संघसयल  
खामीजेजी ॥ आठ दिवस लगे अमर प्रज्ञावना,  
दान सुपात्रें दीजेजी ॥ जडवाहु गुरु वयण सूणीने,  
ज्ञान सुधारस पीजेजी ॥ ३ ॥ तीरथमां विमलाचल  
गिरिमां; मेरु महीधर नेमजी ॥ मुनिवरमांहिं जि-  
नवर मोहोटा, पर्व पजूसण तेमजी ॥ अवसर पामी  
स्वामी वढल, बहु पकवान वरुईजी ॥ खिमा वि-  
जय जिन देवी सिद्धाई, दिन दिन अधिक वधा-  
ईजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धाचलजीनी स्तुति ॥

श्रीसिद्धाचल तीरथ सार, गिरिवरमां जेम मेरु  
उदार, ठाकुर राम अपार ॥ मंत्रमाहें नवकारज  
जाणुं, तारामां जेम चंद्र वखाणुं, जलधरमांहें जल  
जाणु ॥ पंखीमांहें जेम उत्तम हंस, कुलमांहें जिम  
रूपजनो वंश, नाजि तणो जे अंस ॥ कृमावंतमाहे  
जिम अरिहंता, तप सूरु मुनिवर महंता, शत्रुजय  
गिरि गुणवंता ॥ १ ॥ रूपज अजितसंजव अजिनंदा,  
सुमतीनाथ मुख पुनमचदा, पद्मप्रज सुखकंदा ॥ श्रीसु-  
पार्श्व चंद्रप्रज सुविधि, शितल श्रेयांस सेवो बहु बुद्धि,  
वासु पूज्य मती शुद्धि ॥ विमल अनंत जिन धर्म  
ए शांति, कुंथु अर मल्लि नमुं एकांति, मुनिसुव्रत  
शुद्ध पंथी ॥ नमी पासने वीर चोवीस, नेम विना  
ए जिन त्रेवीस, सिद्धगिरि आव्याईश ॥ २ ॥ ज-

दश दोय करीने, जिन चोवीस पूजीजेंजी ॥ वरु  
 कलपनो ठठ करीने, वीर चरित्र सुणीजेजी ॥ पढ-  
 वेने दिन जन्म महोत्सव, धवल मंगल वरतीजेजी  
 ॥ १ ॥ आठ दिवस लगे अमारी पलावी, अष्टमनुं  
 तप करियें ॥ नागकेतु नी परें केवल लहियें, जो  
 शुभ जावें रहियेजी ॥ तेलाधर दिन त्रण कल्याण-  
 क गणधरवाद वदीजेजी ॥ पास नेमीसर अंतर  
 त्रीजें, रूपन चरित्र सुणीजेजी ॥ ३ ॥ वारसैं सूत्रने  
 सामाचारी, संवहरी पडिक्कमियेजी ॥ चैत्य प्रवामी  
 विधिसुं कीजे, सयल जंतु खामीयेंजी ॥ पारणाने  
 दिन स्वामी वल्ल, कीजे अधिक वरुइजी ॥ मान  
 विजय कहे सकल मनोरथ, पूरो देवी सिद्धाइजी ॥४॥

॥ अथ पर्यूपण स्तुति ॥

पुण्यनुं पोषण, पापनुं शोषण, पर्व पजूषण पा-  
 मीजी ॥ कटप घेर पधरावो स्वामी, नारी कहे शि-  
 र नामीजी ॥ कुंवर गयवर स्कंध चरुावी, ढोल नि-  
 साण वजडावोजी ॥ सदगुरु संगे चढते रंगे, वीर  
 चरित्र सुणावोजी ॥ १ ॥ प्रथम वखाण धरम सार  
 थी पढ, बीजे स्वपना चार जी ॥ त्रीजे स्वपन पा-  
 ठक वली चोथे, वीर जन्म अधिकारजी ॥ पांचमे  
 दीक्षा ठठे शिवपद, सातमें जिन त्रेवीशजी ॥ आ-  
 ठमे स्थिविरावली संनलावी, पिउडा पूरो जगीश-  
 जी ॥ २ ॥ ठठ अष्टम अछाई कीजें, जिनवर चैत्य

नमीजैजी ॥ वरसी पम्किमणुं मुनिवन्दन, संघसयल  
खामीजेजी ॥ आठ दिवस लगे अमर प्रजावना,  
दान सुपात्रे दीजेजी ॥ ञ्जवाहु गुरु वयण सूणीने,  
ज्ञान सुधारस पीजेजी ॥ ३ ॥ तीरथमां विमलाचल  
गिरिमां; मेरु महीधर नेमजी ॥ मुनिवरमांहिं जि-  
नवर मोहोटा, पर्व पजूसण तेमजी ॥ अवसर पामी  
स्वामी वढल, बहु पकवान वमाईजी ॥ खिमा वि-  
जय जिन देवी सिद्धाई, दिन दिन अधिक वधा-  
ईजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धाचलजीनी स्तुति ॥

श्रीसिद्धाचल तीरथ सार, गिरिवरमां जेम मेरु  
उदार, ठाकुर राम अपार ॥ मंत्रमाहे नवकारज  
जाणुं, तारामां जेम चंद्र वखाणुं, जलधरमांहे जल  
जाणु ॥ पंखीमांहिं जेम उत्तम हंस, कुलमांहे जिम  
रूपजनो वंश, नाजि तणो जे अंस ॥ कृमावंतमाहे  
जिम अरिहंता, तप सूरु मुनिवर महंता, शत्रुंजय  
गिरि गुणवंता ॥१॥ रूपज अजितसंजव अजिनंदा,  
सुमतीनाथ मुख पुनमचंदा, पद्मप्रज सुखकंदा ॥ श्रीसु-  
पार्श्व चंद्रप्रज सुविधि, शितल श्रेयांस सेवो बहु बुद्धि,  
वासु पूज्य मती शुद्धि ॥ विमल अनंत जिन धर्म  
ए शांति, कुंथु अर मद्धि नमुं एकांति, मुनिसुव्रत  
शुद्ध पंथी ॥ नमी पासने वीर चोवीस, नेम विना  
ए जिन त्रेवीस, सिद्धगिरि आव्याईश ॥ २ ॥ न-

दश दोय करीने, जिन चोवीस पूजीजैजी ॥ वक्रा  
कलपनो ठठ करीने, वीर चरित्र सुणीजेजी ॥ पड-  
वेने दिन जन्म महोत्सव, धवल मंगल वरतीजेजी  
॥ २ ॥ आठ दिवस लगे आमारी पढावी, अष्टमनुं  
तप करियें ॥ नागकेतु नी परें केवल लहियें, जो  
शुच जावें रहियेजी ॥ तेलाधर दिन त्रण कल्याण-  
क गणधरवाद वदीजेजी ॥ पास नेमीसर अंतर  
त्रीजें, रूपन चरित्र सुणीजेजी ॥ ३ ॥ वारसैं सूत्रने  
सामाचारी, संवहरी पडिक्कमियेजी ॥ चैत्य प्रवाही  
विधिसुं कीजे, सयल जंतु खामीयेंजी ॥ पारणाने  
दिन स्वामी बहल, कीजे अधिक वसाइजी ॥ मान  
विजय कहे सकल मनोरथ, पूरो देवी सिद्धाइजी ॥ ४ ॥

॥ अथ पर्यूपण स्तुति ॥

पुण्यनुं पोपण, पापनुं शोसण, पर्व पजूसण पा-  
मीजी ॥ कटप घेर पधरावो स्वामी, नारी कहे शि-  
र नामीजी ॥ कुंवर गयवर स्कंध चक्रावी, ढोल नि-  
साण वजडावोजी ॥ सदगुरु संगे चढते रंगे, वीर  
चरित्र सुणावोजी ॥ १ ॥ प्रथम वखाण धरम सार  
थी पद, बीजे स्वपना चार जी ॥ त्रीजे स्वपन पा-  
ठक वली चोथे, वीर जन्म अधिकारजी ॥ पांचमे  
दीक्षा ठठे शिवपद, सातमें जिन त्रेवीशजी ॥ आ-  
ठमे स्थविरावली संजलावी, पिउडा पूरो जगीश-  
जी ॥ २ ॥ ठठ अष्टम अछाई कीजें, जिनवर चैत्य

નમીજેંજી ॥ વરસી પમિક્રમણું મુનિવંદન, સંઘસયલ  
 લામીજેજી ॥ આઠ દિવસ લગે અમર પ્રજાવના,  
 દાન સુપાત્રેં દીજેજી ॥ જડવાહુ ગુરુ વયણ સૂણીને,  
 જ્ઞાન સુધારસ પીજેજી ॥ ૩ ॥ તીરથમાં વિમલાચલ  
 ગિરિમાં; મેરુ મહીધર નેમજી ॥ મુનિવરમાંહેં જિ-  
 નવર મોહોટા, પર્વ પજૂસણ તેમજી ॥ અવસર પામી  
 સ્વામી વઢલ, વહુ પકવાન વઢાઈજી ॥ ચિમા વિ-  
 જય જિન દેવી સિદ્ધાઈ, દિન દિન અધિક વધા-  
 ઈજી ॥ ૪ ॥ ઇતિ ॥

॥ અથ સિદ્ધાચલજીની સ્તુતિ ॥

શ્રીસિદ્ધાચલ તીરથ સાર, ગિરિવરમાં જેમ મેરુ  
 ઉદાર, ઠાકુર રામ અપાર ॥ મંત્રમાંહેં નવકારજ  
 જાણું, તારામાં જેમ ચંદ્ર વચાણું, જલધરમાંહેં જલ  
 જાણુ ॥ પંચીમાંહેં જેમ ઉત્તમ હંસ, કુલમાંહેં જિમ  
 રૂપજનો વંશ, નાજિ તણો જે અંસ ॥ દમાવંતમાંહે  
 જિમ અરિહંતા, તપ સૂરા મુનિવર મહંતા, શત્રુંજય  
 ગિરિ ગુણવંતા ॥૧॥ રૂપજ અજિતસંજવ અજિનંદા,  
 સુમતીનાથ મુખ પુનમચંદા, પદ્મપ્રજ સુખકંદા ॥ શ્રીસુ-  
 પાર્શ્વ ચંદ્રપ્રજ સુવિધિ, શિતલ શ્રેયાંસ સેવો વહુ બુદ્ધિ,  
 વાસુ પૂજ્ય મતી શુદ્ધિ ॥ વિમલ અનંત જિન ધર્મે  
 એ શાંતિ, કુંથુ અર મહિ નમું એકાંતિ, મુનિસુવ્રત  
 શુદ્ધ પંથી ॥ નમી પાસને વીર ચોવીસ, નેમ વિના  
 એ જિન ત્રેવીસ, સિદ્ધગિરિ આવ્યાઈશ ॥ ૨ ॥ જ-



रतराय जिन साथे बोले, स्वामी शत्रुंजय कुण तोले,  
 जिननुं वचन अमोले ॥ ऋषज कहे सुणो नरतरा-  
 य, ठहरी पालंता जे नर जाय, पातक नूको थाय॥  
 पशुपंखी जे इण गिरि आवे; जव त्रीजे ते सिद्धज  
 थाय, अजरामरपद पावे ॥ जिनमतमें शत्रुंजो व-  
 खाण्यो, तेमें आगम दिलमाहें आण्यो, सुणतां सुख  
 उर आण्यो ॥ ३ ॥ संघपति नरत नरेसर आवे,  
 सोवन तणा प्रासाद करावे, मणिमय मूरती ठावे ॥  
 नाजिराया मरुदेवी माता, ब्राह्मी सुंदरी वेन विख्या  
 ता, मूर्ति नवाणु ज्ञाता ॥ गोमुखने चक्रेसरी देवी,  
 शत्रुंजय सार करे नित्यमेवी, तपगछ उपर हेवी ॥  
 श्रीविजयसेन सूरेश्वर राया, श्रीविजयदेव सूरि प्र-  
 णमी पाया, ऋषजदास गुणगाया ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्रीशंखेश्वर जिन स्तुति ॥

॥ शंखेश्वर पासजी पूजियें ॥ नर जवनो दाहो  
 लीजियें ॥ मन वंछित पूरण सुरतरू ॥ जय वामा-  
 सुत अलवेसरू ॥ १ ॥ दोय राता जिनवर अतिज-  
 ला ॥ दोय धोला जिनवर गुणनिला ॥ दोय लीला  
 दोय सामल कहा ॥ शोले जिन कंचन वर्ण लह्या  
 ॥ २ ॥ आगम ते जिनवर जांखियो ॥ गणधरें ते  
 हियडे राखियो॥तेहनो रस जेणेंचाखियो॥ते हुजं शि  
 व सुख साखियो ॥ ३ ॥ धरणीधर राय पद्मावती ॥

प्रभु पार्श्व तणा गुण गावती ॥ सहु संघना संकट  
चूरती ॥ नयविमलना वंठित पूरती ॥ ४ ॥ इति॥

॥ सिद्धाचलजीनी स्तुति ॥

पुंरु गिरि महिमां आगममां प्रसिद्ध ॥

विमलाचल जेटी लहिये अविचल रुद्धि ॥

पंचमी गती पोहोता मुनिवर कोडा कोड ॥

इण तीर्थे आबी कर्म विपातिक ठोड ॥ १ ॥

( आ स्तुति चार बार पण कहेवाय ठे )

॥ अथ नवपद शुद्धि ॥

॥ नित प्रति हुं प्रणमुं सिद्धचक्र सुज्ञ जाव ।  
हिवकारज सिद्धिनो लाधो एह उपाय ॥ तुज नाम  
पसायें अरति व्याधि पुलाय । इग तुज अनुग्रहथी  
सुख संपति मुज थाय ॥ १ ॥ श्री अरिहंत नमिये  
सिद्ध सूरि उवजाय । मुनिवर त्रिण करणें दंसण  
नाण सुहाय । दुगविधि चारित्तें बुधविध तप मन  
जाय । ये नवपद ध्यातां निरुपम शिव सुख थाय  
॥ २ ॥ विद्या प्रवाढे जाणो ए अधिकार ॥ श्रीगुरु उ  
पदेशें सिद्धचक्र उद्धार । प्रवचन अनुसारें जाण्यो  
एह विचार; जविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणजं-  
कार ॥ ३ ॥ जिनधरम अनुरागी चक्रे सरि सुखका-  
र । सेवकनें आपे सुख संपति परिवार । हिव निद्धि  
उदयकरि चारित्र नंदी मन जाय । जिनचंद सूरि  
सर खरतर पति सुपसाय ॥ इति ॥ नवपदस्तुतिः ॥

॥ अथ पार्श्व जिनस्तुतिः ॥

डेंडेंकि धपमप धुधुमि धोंधों ध्रसकि धरधप धौ  
 रवं । दोंदोंकि दोंदों दागिडदि दागिरुदिकि ड्रमकि-  
 डणरण ड्रेणवं । ऊजिऊँकि ऊँऊँ ऊणणरणरण निज-  
 कि निज जन रंजनं । सुरशैलशिखरे जवति सुखदं  
 पार्श्व जिनपति मज्जनं ॥ १ ॥ कटरेंगि थोंगिनि  
 किटति गिगरुदां धुधुकि धुटनटपाटवं । गुणगणण  
 गुणगण रणकि ऐंऐं गुणणगुण गण गौरवं । ऊजिऊँकि  
 ऊँऊँ ऊणण रणरण निजकि निज जन सज्जना । कल-  
 यंति कमला कलितकलमल मुकलमीस महेजिनाः  
 ॥ २ ॥ वूँकि वूँकि वूँवूँठ वूँठवूँठ वूँठपट्टा ताड्यते ।  
 तललौंकि लौंलौं त्रेंपित्रेंपिनि रेंपिरेंपिनि वाद्यति ।  
 उँउँ किउँउँ थुंगि थुं गिनि धोंगि धों गिनि कलरवे ।  
 जिन मतमनंतं महिमतनुतानमतिसुरनर मुष्ठवे ॥ ३ ॥  
 पुंदांकि पुषुदां पुषुरुदि पुंदां पुषुडदि दोंदों अंवरै,  
 चाचपट चच पटरणकि ऐं ऐं रुणण रेंरें रुंवरै । तिहां-  
 सरगमपधुनि निधपमगरस सस ससस सुरसेवता ।  
 जिननाटयरंगें कुशल मनिशं दिसतु शासन देवता  
 ॥ ४ ॥ इति ॥

वलि वलिहुं ध्यावुं गाऊं जिणवरवीर । जिण पर  
 वपजूसण दाख्याधरमनी सीर । आसाढचोमासे हुं  
 तीदिनपंचास । पडिक्कमणोसंवहरी करियेंत्रिणउप  
 वास ॥ १ ॥ चोवीसे जिनवर पूजा सतरप्रकार ।

करियें जलजावें जरिये पुण्यचंडार । वल्लिचैत्यप्रवारें  
 फिरतां लाजअनंत । इह परवपजूसण सहुमें महि  
 मावंत ॥ १ ॥ पुस्तकपूजावी नव वाचनायें वचाय ।  
 श्रीकटपसूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय । प्रतिदिन  
 परजावन धूपअगर उखेवो । इम जवियण प्राणी  
 परवपजूसणसेवो ॥ ३ ॥ वल्लिसामी वच्छल करिये वारं  
 वार । केइ जावनाजावे केइ तपसी सीलधार । अड  
 दीहपजूसण इमसेवत आणंद । सुयदेवी सानिध  
 कहे जिनलाज सुरिंद ॥ ४ ॥ ॥ इति श्रीपर्जु पणा  
 पर्व स्तुतिः ॥

अथ तीर्थ माला चैत्यवंदन.

सङ्गत्तयादेवलोके रविशशिचुवने व्यंतराणां नि  
 काये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तार काणां वि  
 माने, पाताले पन्नगेंद्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांड्रा  
 धकारे, श्रीम तीर्थकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चै  
 त्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढये मेरुशृंगे रुचकगिरेवरे कुंरु  
 ले हस्तिदंते, वह्दारे स्फुटनंदी श्वर कनक गिरे नै  
 पधे नीलवंते, चित्रे शैले विचित्रे यमकगिरिवरे चक्र  
 वाले हिमाद्रौ, श्रीम तीर्थकराणां ॥ २ ॥ श्रीशैले  
 व्यंध्यशृंगे विमलगिरिवरे अर्बुदे पावके वा, संमेते  
 तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले, सय्याद्रौ  
 चोंझायते विपुलगिरिवरे गूर्जारे रोहणाद्रौ, श्रीम  
 तीर्थकराणां ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितटमु

कुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च घाटें विटपि घन  
तटे देवकूटे विराटे, कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे  
चक्रकोटे च जोटे, श्रीम तीर्थकराणां० ॥४॥ श्रीमाले  
मालवे वा मलयनि निखिले मेखले पिष्ठले वा, नेपाले  
नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले मेहले वा, माहाले  
कौशले वा विगलित सलिले जंगले वा तमाले, श्रीम  
तीर्थकराणां० ॥ ५ ॥ अंगे वंगे कलिंगे मगधजन-  
पदे सप्रयागेतिलंगे, गौडे चौडे मुरंडे वरतरङ्गविडे  
उडियाने च पुंडे, आड्रे मुड्रे पुलिंड्रे ड्रविलकुवलये  
कन्यकुब्जे सुराष्ट्रे श्रीम तीर्थकराणां० ॥ ६ ॥ चंपायां  
चंद्रमुख्यां गजपुरमथुरापत्तने चोज्जायिन्यां, कौशाव्यां  
कौशलायां कनकपुरवरे देवगिर्याचक्राद्यां, नाशक्ये  
राजगेहे दशपुरनगरे जहले तामलिह्यां, श्रीम तीर्थ-  
कराणां० ॥ ७ ॥ स्वर्गेमर्त्यैतरिक्षे गिरिशिखरहृदि  
स्वर्नदीनीरतीरे शैलाग्रे नागलोके जलनिधि पुलिने  
भूरुहाणां निकुंजे, ग्रामेरण्ये वने वा स्थलजल विषमे  
दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं, श्रीम तीर्थकराणां० ॥ ८ ॥ इत्थं  
श्रीजैनचैत्य स्तव मिद मऽनिशं जक्तिजाजा स्त्रिसंध्यं,  
प्रोद्य त्कल्याणहेतुः कलिमलहरणं ये पठन्ती ह नित्यं,  
तेषां श्रीतीर्थयात्राफल मऽतिविपुलं जायते मानवानां,  
कार्यं सिद्धं तथो चैः प्रजवति सततं चित्त मानंदका-  
रि ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपदजली करण विधिलिख्यते ॥

(प्रथम) आसोज शुदि ९ (अथवा) चैत्रसु-  
दि ९ सें जली सरू करै । (कदास) तिथि घटी  
हुवे तो ( ६ ) से बढी होय तो आठिम सें सरू  
करै । (पिण) आंविल (ए) पूनिमताई करै । (तिहां)  
प्रथम जूमि शुद्ध करके । मारुणादिक सें चित्रित  
करै । पीठे बाजोट ऊपरि सिद्धचक्र थापे त्रिकाल  
पूजा करे । ( सोलिखते हैं ) प्रजात समय राई  
पडिकमणो करिके । पीठै वस्त्र पडिलेहै । ( जहां )  
सिद्ध चक्र स्थापना हे ( तहां ) आयके पांच शक्र  
स्तवे देव बाँदै । पीठै नव चैत्ये । (अथवा) नव  
प्रतिमा आगे । नव चैत्यवंदण करै । वास क्षेप पूजा  
करै । पीठे केसर चंदनसें पूजा करै । पीठे मध्याह्न  
समय पांच शक्र स्तवे देव बाँदै । पीठे गुरु पास  
आयके । राई आलोवे । अब्जुद्धिर्जमि खमायके  
आंविलनो पञ्चस्काण करै । प्रथम अरिहंत पदके  
वरण सपेद है । (इससें) आंविल में चावल (और)  
गरम पाणी यह दोइ द्रव्य लेसुं । औसो आंविल  
पचखके । पीठै अरिहंत पदके बारे गुण है सो चिं  
तवि के बारे नमस्कार करै । सो लिखते हैं (प्रथम  
सब ठिकाणें) इष्टामि खमासमणो । वंण इत्यादि  
कहि के नमस्कार करै ॥

- १ अशोकवृक्षप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः।
- २ पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ।
- ३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ।
- ४ चामरयुग प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ।
- ५ स्वर्णसिंहासण प्रातिहार्यसंयुताय श्री० अरि० ।
- ६ नामंरुल प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ।
- ७ डुंडुजिप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ।
- ८ वत्त्रत्रय प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ।
- ९ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअरि० ।
- १० पूजातिशयसंयुताय श्रीअरि ० ।
- ११ वचनातिशय संयुताय श्रीअरि ० ।
- १२ अपायापगमातिशयसंयुताय श्रीअरि० ।

॥ इति द्वादश अरिहंतगुणाः ॥

॥ इत्यादि नमस्कार करिके । अन्नत्थू ससियेणं ।  
 (कहिके) (१२) वारे लोगस्सनो काउसगग करै । एकलो  
 गस्स प्रगट कहै । पीठेस्वस्थानक जाके । चैत्यवंदन करै  
 पचरकाण पारिकेआंचिल करै । पहले जल पीवे (जव)  
 चैत्यवंदन करिके पीवे । पीठेफेर चैत्यवंदन करिके तिबि  
 हार पच्चरकाण करै गुणणो (१०००) ऊँ ह्रीं एमो अरि  
 हंताणं । इस पदको करै । श्रीपालका चरित्र नवपद  
 महिमा सुणें । पूण पहिर दिन रहणेसैं (तीसरीवेर)  
 पांच शक्रस्तवे देव वांदै । सामायिक लेके दिन ठते पक्कि  
 मणो करै । आरतीके समय दीप धूप कुसम पूजा करै ।

(अथवा) पहिले आरती प्रमुख करिके । पीठे पङ्क्ति मणो करै । (सोणैके समय) इरिया वही पङ्क्तिमके चैत्यवन्दन करिके। राई संधारा गाथागुणके सोवै । निद्रा न आवे जहांतक नवपदका गुण स्मरण करै ॥ इति प्रथम दिवसविधिः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय दिवस विधिलि० ॥

॥ अब इसीतरे दूसरे दिन प्रजाति करणी सब करिके सिद्धपदको लालवर्ण है । (इसीसें) गहुंकी रोटीको अंवल करै ऊँ ह्रीं एमो सिद्धाणं (इसपदको) गुणणो दो हजार करै । सिद्धपदके आठगुण । सो (७) गुणों को गुरु नमस्कार करावे (सो लिखते हैं) ।

१ अनन्तज्ञानसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः० ।

२ अनन्तदर्शन संयुताय श्रीसि० ।

३ अव्याबाध गुणसंयुताय श्रीसि० ।

४ अनन्तसम्यक्त चारित्रगुण संयुताय श्रीसि० ।

५ अक्षयस्थितिगुण संयुताय श्रीसि० ।

६ अरूपी निरंजनगुण संयुताय श्रीसि० ।

७ अगुरुलघु गुणसंयुताय श्रीसि० ।

८ अनन्तवीर्यगुण संयुताय श्रीसि० ।

॥ इतिसिद्धोके अष्टौ गुणाः ॥

॥ यह आवे नमस्कार करिके । अन्नत्यूससि० आठलोगस्सनो कालसंग करै । एकलोगस्स कहिके



पारै पीठे पूर्वोक्त करणी अनुक्रमसैं करै ॥ इति  
द्वितीय दिवसविधिः ॥ ५ ॥

॥ अथ तृतीय दिवसविधि लि० ॥

॥ पूर्वोक्त विधिसैं प्रजातकर्त्तव्य करै आचार्यपद  
पीठे वर्ण है ( इसीसैं ) चिणाकी दालका आंवल  
करै । ( उँझी हीं एमो आयरियाणं ) इस पदको गु.  
एणो दोहजार करै । आचार्य पदके ( ३६ ) गुण  
याद करके ठत्तीस नमस्कार करै ।

॥ अथ आचार्य पदके ( ३६ ) गुण लि० ॥

- १ ॥ प्रतिरूप गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
- २ सूर्यवत्तेजस्वी गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
- ३ युगप्रधानागम संयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
- ४ मधुरवाक्य गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
- ५ गांर्जीय गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
- ६ धैर्यगुण संयुताय श्रीआ० ।
- ७ उपदेश गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
- ८ अपरिश्रावी गुणसंयुताय श्रीआचा० ।
- ९ सौम्यप्रकृति गुणसंयुताय श्रीआ० ।
- १० शीलगुणसंयुताय श्री० ।
- ११ अविग्रह गुणसंयुताय श्री० ।
- १२ अविकथक गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
- १३ अचपल गुणसंयुताय श्रीआ० ।
- १४ प्रसंत वदनगुण संयुताय श्रीआ० ।

- १५ क्षमागुण संयुताय श्रीआ० ।
- १६ क्रजुगुण संयुताय श्रीआ० ।
- १७ मृदुगुण संयुताय श्रीआ० ।
- १८ सर्व संगमुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ।
- १९ द्वादश विधतपगुण संयुताय श्रीआ० ।
- २० सप्तदशविध संयमगुण संयुताय श्रीआ० ।
- २१ सत्यव्रतगुण संयुताय श्रीआ० ।
- २२ सौचगुण संयुताय श्रीआ० ।
- २३ अकिंचन गुण संयुताय श्रीआ० ;
- २४ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ० ।
- २५ अनित्य जावना जावकाय श्रीआ० ।
- २६ असरण जावना जावकाय श्रीआ० ।
- २७ संसार स्वरूप जावना जावकाय श्रीआ० ।
- २८ एकत्व स्वरूप जावना जावकाय श्रीआ० ।
- २९ अन्यत्व जावना जावकाय श्रीआ० ।
- ३० अशुचि जावना जावकाय श्रीआ० ।
- ३१ आश्रव जावना जावकाय श्रीआ० ।
- ३२ संवर जावना जावकाय श्रीआ० ।
- ३३ निर्जरा जावना जावकाय श्रीआ० ।
- ३४ लोकस्वरूप जावना जावकाय श्रीआ० ।
- ३५ बोधिदुर्लभ जावना जावकाय श्रीआ० ।
- ३६ धर्म दुर्लभ जावना जावकाय श्रीआ० । इति.

॥ इति षड्विंशदाचार्य गुणाः ॥

यह तृतीय नमस्कार करिके । अन्नहउससिएणं  
( इत्यादि कहिके ) तृतीय ( ३६ ) लोगस्सनो का  
उसगग करै । पारिके एक लोगस्स जंचै खरसैं  
कहि यथोक्त करणी । अनुक्रमसैं करै । इति तृतीय  
दिवस विधि ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि लि० ॥

॥ ( उँ छीणमो उवझायाणं ) इस पदको ( १ )  
हजार गुणणो करै । हस्या मूंगकी दाल प्रमुखनो  
आंबिल करै । उपाध्याय पदके ( १५ ) गुण याद  
करि के । नमस्कार करै ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ उपाध्याय पदके १५ गुणलि० ॥

- १ आचारांगसूत्र पठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्याये नमः ।
- २ सुयगरांगसूत्र पठन गुणयुक्ताय श्रीउपाध्याय ०
- ३ श्रीठाणांगसूत्र पठनगुणयुक्ताय श्रीउ० ।
- ४ श्रीसमवायांगसूत्र पठगुण युक्ताय ० ।
- ५ श्रीजगवतीसूत्र पठनगुण युक्ताय ० ।
- ६ श्रीज्ञातासूत्र पठनगुणयुक्ताय ० ।
- ७ श्रीउपासकदशासूत्र पठनगुण युक्ताय ० ।
- ८ श्रीअन्तगडदशासूत्र पठनगुण युक्ताय ० ।
- ९ श्रीअणुत्तरोववाईसूत्र पठनगुण युक्ताय ० ।
- १० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्र पठन यु० ।
- ११ श्रीविपाकसूत्र पठनगुण यु० ।

- १२ उत्पादपूर्व पठनगुण यु० ।
- १३ आग्रायणी पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
- १४ वीर्यप्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
- १५ अस्तिप्रवाद पूर्व पठनगुणयुक्ताय० ।
- १६ ज्ञानप्रवाद पूर्व पठनगुणयुक्ता० ।
- १७ सत्यप्रवाद पूर्व पठनगुण यु० ।
- १८ आत्मप्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
- १९ कर्म प्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
- २० प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
- २१ विद्याप्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
- २२ अविध्यप्रवाद पूर्व पठनगुण यु० ।
- २३ प्राणायामप्रवाद पूर्व पठनगुण यु० ।
- २४ क्रियाविसाल पूर्व पठनगुण यु० ।
- २५ लोकविंदुसार पूर्व पठनगुण यु० ।

॥ इति पंचविंशति उपाध्याय गुणाः ॥

इस रीतसे पचवीस नमस्कार करें ( खमाहोके )  
अन्नत्थूस० इत्यादि कहिके पचवीस लोगस्तका का  
उस्तग्न करै । पारके एक लोगस्त कहके । ( पीठे )  
पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति चतुर्थ दिवस विधिः ॥

अथ पंचमदिवस विधि

॥ ( उँ झी एमो लो ए सबसाहृणं ) इस पदका  
( २ ) हज्जार गुणनो करै । साधुपद कालै वर्णहे इस  
सें उडदका आंवल करै । सर्व साधुपदके सत्ताईस  
गुण चिंतवके नमस्कार करै ॥ ॥ ॥

॥ अथ साधुपदके (२७) गुणलि० ॥

- १ प्राणातिपात विरमणव्रत गुण युक्ताय श्रीसाधवेनमः
- २ मृषावाद विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।
- ३ अदत्तादान विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।
- ४ मैथुन विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।
- ५ परिग्रह विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।
- ६ रात्रिज्ञोजन विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।
- ७ पृथ्वीकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
- ८ अप्पकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
- ९ तेजकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
- १० वाजकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
- ११ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
- १२ त्रसकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
- १३ एकेंद्री जीवरक्षकाय श्रीसा० ।
- १४ वेइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।
- १५ तेइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।
- १६ चौरिंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।
- १७ पंचेंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।
- १८ लोचनियग्रहकारकाय श्रीसा० ।
- १९ क्षमागुण युक्ताय श्रीसा० ।
- २० गुज्जनावना जावकाय श्रीसा० ।
- २१ प्रतिलेखनादि क्रिया शुक्लकारकाय श्रीसा० ।
- २२ संयम योगयुक्ताय श्रीसा० ।

## द्वितीयपरिच्छेद.

- २३ मनोगुप्ति युक्ताय श्रीसा० ।  
 २४ वचनगुप्ति युक्ताय श्रीसा० ।  
 २५ कायगुप्ति युक्ताय श्रीसा० ।  
 २६ सीतादि द्वाविंशति परीसहसहण तत्पराय० ।  
 २७ मरणांत उपसर्ग सहण तत्पराय श्रीसा० ।

॥ इति सप्तविंशति साधु गुणाः ॥ ५ ॥

इस रीतसें सत्तावीस नमस्कार करै । ( खडा हो के अन्नन्न स० ( इत्यादि कहिके ) सातवीस लोग स्तकाकाउस्सग करै । पारके एक लोगस्स कहके ( पीठे ) पूर्वोक्तकरणी करै । ( यह पंच परमेष्टि पदके सब गुण मिलाएँ सैं ( १०८ ) होय ( इसीसैं ) मालाके दाणे ( १०८ ) होते हैं । इति पंचम दिवस विधिः ॥

॥ अथ षष्ठ दिवस विधिलि० ॥

॥ ( ॐ ह्रीं नमो दंसणस्स ) इस पदको ( १ ) हजार गुणनो करै । दर्शनपद सपेदवर्णहे ( इससैं ) तंडुलका आंचिल करै । सम्यक्तके समसत्तिगुण चित्तवके नमस्कार करै ॥

॥ अथ सम्यक्तके समसत्ति जेदलि० ॥

- १ परमार्थ संस्तवरूप श्री सदृशनाय नमः ।
- २ परमार्थ ज्ञातृसेवनरूप सदृशनाय नमः ।
- ३ व्यापन्नदर्शन वर्जनरूप सदृशनाय नमः ।
- ४ कुदर्शन वर्जनरूप सदृशनाय नमः ।

- ५ शुश्रषारूप सद्वर्शनाय नमः ।
- ६ धर्मरागरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- ७ वैयावृत्तरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- ८ अर्हच्चिनयरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- ९ सिद्धविनयरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- १० चैत्यविनयरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- ११ श्रुतविनयरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- १२ धर्मविनयरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- १३ साधुवर्ग विनयरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- १४ आचार्य विनयरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- १५ उपाध्याय विनयरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- १६ प्रवचन विनयरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- १७ दर्शन विनयरूप सद्वर्शनाय नमः ।
- १८ संसारे जिनमतसार मिति चिंतनरूप सद्व० ।
- १९ संसारे जिनमतिसार मिति चिंतन० ।
- २० संसारे जिनमतिस्थित साध्वादिसार मिति० ।
- २१ शंका दूषण रहिताय सद्वर्शनाय नमः ।
- २२ कांक्षा दूषण रहिताय सद्वर्शनाय नमः ।
- २३ विचिकित्सारूप दूषण रहिताय० ।
- २४ कुदृष्टि प्रसंसा दूषणरहिताय० ।
- २५ तत्परिचय दूषण रहिताय० ।
- २६ प्रवचन प्रज्ञावकरूप सद्व ।
- २७ धर्मकथा प्रज्ञावकरूप स० ।

- १८ वादी प्रज्ञावक० स० ।
- १९ नैमित्तक प्रज्ञावक० स० ।
- २० तपस्वी प्रज्ञावक० सद० ।
- २१ प्रज्ञप्त्यादि विद्या नृत्प्रज्ञावक० स० ।
- २२ चूर्णा जनादि सिद्धप्रज्ञावक० स० ।
- २३ कविप्रज्ञावकरूप सदृशनाय नमः ।
- २४ जिनशासने कौसल्यता जूपण० स० ।
- २५ प्रज्ञावना जूपणरूप स० ।
- २६ तीर्थसेवा जूपण० स० ।
- २७ स्थैर्यता जूपणरूप सदृशनाय नमः ।
- २८ जिनशासने जक्ति जूपण० ।
- २९ उपशम गुणरूप सदृशनाय नमः ।
- ४० संवेग गुणरूप श्रीस० ।
- ४१ निर्वेद गुणरूप श्रीसदृशनाय नमः ।
- ४२ अनुकंपा गुणरूप श्रीस० ।
- ४३ आस्तिक्यता गुणरूप श्रीस० ।
- ४४ परतीर्थकादि वंदन वर्जन रूप श्रीस० ।
- ४५ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जन० श्रीस० ।
- ४६ परतीर्थकादि आलाप वर्जन० ।
- ४७ परतीर्थकादि संलाप वर्जन० ।
- ४८ परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन० श्रीस० ।
- ४९ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषण वर्जन० श्रीस० ।
- ५० राजाजियोगाकार युक्ताय श्रीस० ।



५१ गणान्नियोगाकार युक्ताय श्रीस० ।

५२ वलान्नियोगाकार युक्ताय श्रीस० ।

५३ सुरान्नियोगाकार युक्ताय श्रीस० ।

५४ कांतारवृत्त्याकार युक्ताय श्री० ।

५५ गुरु निग्रहाकार युक्ताय श्रीस० ।

५६ सम्यक्त चारित्रधर्मस्य मूलमिति चिंतन० श्री०

५७ चारित्र धर्मपुरस्य द्वारमितिचिंतन० श्रीस०

५८ चारित्र धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतन० श्रीस०

५९ चारित्र धर्मस्याधारमिति चिंतन श्रीस० ।

६० चारित्र धर्मस्य जाजनमिति चिंतन० श्री० ।

६१ चारित्र धर्मस्य निधिसन्निभमिति चिं० श्रीस०

६२ अस्ति जीवेति श्रद्धानस्थान यु० श्रीस० ।

६३ सचजीव नित्येति श्रद्धान स्थान यु० श्रीस० ।

६४ सचजीव कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्थान यु०

६५ सचजीव कृतकर्माणि वेदयतीति श्रद्धान स्था०

६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धान स्थान यु० ।

६७ अस्ति पुनर्मोक्षो पायेति श्रद्धानस्थान यु० श्री०

॥ इति सप्तपष्टि दर्शनस्य गुणाः ॥

॥ इस रीतिसें समस्त ठि नमस्कार करै । ( खना  
होके ) अन्नत्यू ससि एणं० ( इत्यादि कहिके ) (६७)  
लोगस्स ( अथवा ) ७ लोगस्स नो काउस्सग्ग करै ।  
एक लोगस्स कहके । ( पीठे ) पूर्वोक्त करणी  
करै ॥ इति पष्ट दिवस विधिः ॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि लि० ॥

॥ ( ॐ ह्रीं नमो नाणस्स ) इस पदको ( १ ) ह  
गुणनो करै । ज्ञानपद उज्ज्वल वर्ण । तंदुलका  
आंवल करै । इकावन जेद ग्यानपदके चिंतवके  
नमस्कार करै ॥

॥ अथ ज्ञानपदके ( ५१ ) जेदलि० ॥

- १ स्पर्शनैड्रीय व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
- २ रसनैड्रीय व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
- ३ घ्राणैड्रीय व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
- ४ श्रोत्रैड्रीय व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
- ५ स्पर्शनैड्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
- ६ रसनैड्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
- ७ घ्राणैड्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
- ८ चक्षुरिड्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
- ९ श्रोत्रैड्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
- १० मनःस्थानावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
- ११ स्पर्शनैड्रीय ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
- १२ रसनैड्रीय ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
- १३ घ्राणैड्रीय ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
- १४ चक्षुरिड्रीय ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
- १५ श्रोत्रैड्रीय ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
- १६ मनै करी ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
- १७ स्पर्शनैड्रीय अपाय मतिज्ञानाय नमः ।

- १८ रसनैन्दी अपाय मतिज्ञानाय नमः ।  
 १९ घ्राणैन्दी ईहा मतिज्ञानाय नमः ।  
 २० चक्षुरिन्दी अपाय मतिज्ञानाय नमः ।  
 २१ श्रोत्रैन्दी अपाय मतिज्ञानाय नमः ।  
 २२ मनेकरी अपाय मतिज्ञानाय नमः ।  
 २३ स्पर्शनैन्दी धारणा मतिज्ञानाय नमः ।  
 २४ रसनैन्दी अपाय मतिज्ञानाय नमः ।  
 २५ घ्राणैन्दी धारणा मतिज्ञानाय नमः ।  
 २६ चक्षुरिन्दी धारणा मति० ।  
 २७ श्रोत्रैन्दी धारणा मति० ।  
 २८ मनो धारणामति ज्ञानाय नमः ।  
 २९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ।  
 ३० अनक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ।  
 ३१ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ।  
 ३२ असंज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ।  
 ३३ सम्यक् श्रुतज्ञानाय नमः ।  
 ३४ मिथ्या श्रुतज्ञानाय नमः ।  
 ३५ सादि श्रुतज्ञानाय नमः ।  
 ३६ अनादि श्रुतज्ञानाय नमः ।  
 ३७ सपर्यवसित श्रुतज्ञानाय नमः ।  
 ३८ अपर्यवसित श्रुतज्ञानाय नमः ।  
 ३९ गमिक श्रुतज्ञानाय नमः ।  
 ४० अगमिक श्रुतज्ञानाय नमः ।

- ५१ अंगप्रविष्ट श्रुत० ।  
 ५२ अनंग प्रविष्ट श्रुत० ।  
 ५३ अणुगामि अवधिज्ञानाय नमः ।  
 ५४ अननुगामि अवधिज्ञानाय नमः ।  
 ५५ वर्द्धमान अवधि० ।  
 ५६ ह्रियमान अवधि० ।  
 ५७ प्रतिपाती अवधि० ।  
 ५८ अप्रतिपाती अवधि० ।  
 ५९ कृजुमति मनः पर्यवज्ञाय नमः ।  
 ५० विपुलमति मनः पर्यवज्ञानाय नमः ।  
 ५१ लोकालोक प्रकाशक श्री केवलज्ञानाय नमः ।

॥ इति एकपंचासत ज्ञानशेदाः ॥

इस रीतसें ( ५१ ) नमस्कार करै । ( खमा होके )  
 अन्नतथ उससिएण० ( इत्यादि कहै ) ( ५१ ) लोग  
 स्सके काउ सगग करिके । प्रगट लोगस्स कहै । पीठे  
 सब पूर्वोक्त करणी करै । इतिसप्तम दिवस विधिः ॥७॥

॥ अथ अष्टम दिवस विधि लि० ॥

॥ ( ॐ ह्रीं एमो चारित्तस्स ) इस पदको ( १ )  
 हजार गुंणनो करै । चारित्रपदका उज्ज्वल वर्णहे । ( इ-  
 सीसें ) तंदुलका आंवल करै । सित्तर जेद चारि-  
 त्रपदके । चिंतवके नमस्कार करै ॥

॥ अथ चारित्रपदके ( ७० ) जेदलि० ॥

१ प्राणातिपात विरमणरूप चारित्राय नमः ।

- २ मृषावाद विरमणरूप चारित्राय नमः ।
- ३ अदत्तादान विरमणरूप चारित्राय नमः ।
- ४ मैथुनविरमणरूप चारित्राय० ।
- ५ परिग्रह विरमणरूप चारित्राय० ।
- ६ क्षमा धर्म रूप चारित्रेज्यो नमः ।
- ७ आर्यव धर्म रूप चारित्रेज्यो नमः ।
- ८ मृदुता धर्म रूप चारित्रेज्यो नमः ।
- ९ मुक्ति धर्म रूप चारित्रेज्यो नमः ।
- १० तपो धर्म रूप चारित्रेज्यो नमः ।
- ११ संयमधर्मरूप चारित्रेज्यो नमः ।
- १२ सत्यधर्म रूप चारि० ।
- १३ सौच धर्मरूप चारि० ।
- १४ अकिंचनधर्मरूप चारि० ।
- १५ ब्रह्मचर्यधर्मरूप चारि० ।
- १६ प्रथवी रक्षासंयम चारित्रेज्यो नमः
- १७ उदग रक्षासंयम चारि० ।
- १८ तेज रक्षा संयम चारि० ।
- १९ वाज रक्षासंयम चारि० ।
- २० वनस्पति रक्षासंयम चारि० ।
- २१ वेङ्ग ड्री रक्षासंयम चारि० ।
- २२ तेङ्ग ड्री रक्षासंयम चारि० ।
- २३ चौरिं ड्रीरक्षा संयम चारि० ।
- २४ पंचेन्द्री रक्षासंयम चारि० ।

- २५ अजीव रक्षासंयम चारि० ।
- २६ प्रेक्षासंयम चारि० ।
- २७ उत्प्रेक्षासंयम चारि० ।
- २८ अतिरिक्तवस्त्रजक्तादिपरठणत्यागरूपसंय चारि०
- २९ प्रमार्जन रूप संय चारि० ।
- ३० मनसंयम चारि० ।
- ३१ वाक्संयम चारि० ।
- ३२ कायासंयम चारि० ।
- ३३ आचार्य वैयावृत्त्यरूप संयम चारि० ।
- ३४ उपाध्याय वैयावृत्त्यरूप संयम चारि० ।
- ३५ तपस्वी वैयावृत्त्य रूप चारि० ।
- ३६ लघुशिष्यादि वैयावृत्त्य रूपचारि० ।
- ३७ गिलाणसाधु वैयावृत्त्यरूप चा० ।
- ३८ साधु वैयावृत्त्यरूप चारि० ।
- ३९ श्रमणोपासक वैयावृत्त्यरूप चा० ।
- ४० संघ वैयावृत्त्यरूप चारि० ।
- ४१ कुल वैयावृत्त्यरूप चारित्रे० ।
- ४२ गण वैयावृत्त्य रूप चारि० ।
- ४३ पशुपंरुगादि रहित वशति वसण ब्रह्मगुप्तचारि०।
- ४४ स्त्रीहास्यादि विकथावर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ।
- ४५ स्त्रीआसन वर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ।
- ४६ स्त्रीश्रंगोपांग निरीक्षणवर्जन ब्रह्म० ।
- ४७ कुड्यंतर सहित स्त्रीहाव जावश्रवण वर्जन ब्रह्म० ।

॥ अथ तपस्या ग्रहण करें कों गुरुके पास  
जाएँकी विधि लि० ॥

॥ प्रथम शुच दिन शुच घडी देखके । अष्टा  
वस्त्र आचूषण पहरे । लिलाममे तिलक करे । दोव ।  
सरखुं । मस्तकमें धारण करे । हाथके मोली बांधके ।  
अक्षत । सुपारी । श्रीफल । नेवेद्य । यथाशक्ति रोक  
नाणो लेके । नवकार गुणतो थको । गुरुके पास जा-  
वे । द्वादशावर्त्त बाँदणा करके । ज्ञान पूजा करे पीठे  
बहुत प्रमोदवन्त होके । गुरुके मुखसे तप ग्रहण करे.

॥ अथ संक्षेप ऊजमणाविधि लि० ॥

॥ पंच वर्णके धान्यसें सिद्धचक्रका मंडल करै ।  
सिद्धचक्रजी के चौतरफ तीन गढ चूनीके आकार  
बनावै पहिलै गढमाँहे । अष्टदल कमलके आकार  
नव पद स्थापन करै । पद पद के वर्ण गुण प्रमा  
णै । रक्तादिक चढावे । (ओर) पंचवर्णके धान्य ।  
नवनालेर प्रमुखके गोटा रंगके । जिसपदके जैसे  
वर्णके होइ (तैसे ही) रंगका गोला चढावै । पंच  
वर्णी (ए) धजा चढावै । दूसरै वलयमें । सोले श्री  
फल (अथवा) पूंगी फल चढावै । तीसरै वलयमें  
(४७) बुहारा खारक चढावै । नव निधानके ठिकाणें (ए)  
नव बडा फल चढावै दश दिग्पाल । नवग्रहकों ।  
पक्कान्न प्रमुख चढावै । इत्यादिक विधिसंयुक्त । सिद्ध  
चक्र स्थापना । घर देहरासर आगे करै । और जि

नमंदिर मांहे । बाह्य मंत्रपै ५ ॥ ७ हाथ प्रमाणें मंडल रचना करै । विस्तारसैं सब विधि गुरूके वचन सैं करके । नव पदजी की पूजा पढायके कलस ढालै । धवल मंगल गीतगान गावे । वाजिल वजावे । (इसी तरे) महामोहद्वय । उदारचित्तसैं करे । मंगल दीप आरती प्रमुख करे । दुसरे दिन विसर्जन करे । इति संखेप सिद्धचक्र मंत्रल विधिः ।

उद्यापनमें ज्ञान शक्तिके कारण । ए पूठा । ए । वीटांगणा । ए पुस्तक ए लेखण । ए ठवणी । नव तोरण । ए रुमाल । ए दोरा । ए कटासणा । ए थापना । ए चंद्रआ । ए पूठिआ । ए आरती ए । कलश ए जापमाला । ए मंदर । ए प्रतिमा । ए तिलक । ए मुगट । (इत्यादिक) अनेक नव नव चीज बणावे । शक्ति न होय तो यथाकै रोकनाणो चढावै । देव पदको देवद्रव्यमै देवे । गुरु पदको गुरु कों देवे । ग्यानपद को ग्यानखाते लगावे । इत्यादिकयथाजोग्य शुभ क्षेत्रे खरच करे । इति सिद्धचक्र संक्षेप उद्यापनविधिः ॥

॥ अथ बीस स्थानक तपकरण विधि लि० ॥

॥ तिहां प्रथम सुज महूर्त्तके दिन । नंदी स्थापना पूर्वक । सुविहित गुरूके समीप । बीस स्थानक तप । विधि पूर्वक उच्चरे । जंली दो माससैं लेके (या वत्) ठम्मामे पूरी करे । (कदाचित्) ठम्मामे मध्ये



पूरी न कर सके ( तो ) वा उल्टी गिणती में । न  
 हों । और नवी करणी पडे । एक उल्टीके बीस पद  
 हे ( तिहां ) कोई बीस दिनसें । बीसों पद जूदा २  
 गिणें । कोई बीसों दिन में एकज पद गिणें । दू-  
 सरे बीसों दिनमें दूसरो पद । ( ऐसें ) बीसों पद-  
 की बीस उल्टी करे । तिहां पदाराधनके दिन प्रबल  
 शक्तिवंत । अष्ठम तप करिकें आराधै । बीस अष्ठ-  
 में एक उल्टी होय । ऐसें बीसउल्टी ( ४०० ) अष्ठमें  
 आराधै । और तिसमें हीनशक्ति ठठ तप करके आ-  
 राधै । तिससें हीनशक्ति चौविहार उपवास करके  
 आराधे । तिससें हीन शक्ति त्रिविहार उपवास क-  
 रके आराधे । हीन शक्ति आंधिल ( तथा ) त्रिवि-  
 हार एकासण करके आराधे । तिहां शक्तिवान प्रा-  
 णी । सब तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करे ।  
 ( हीन शक्ति ) दिन पोसह करे । बीसों पद पोसह  
 सेती आराधे ( जो ) पोसह शक्ति सर्व पदमें न हो  
 ( तो ) आचार्य पदे १ उपाध्याय पदे २ शिवर पदे  
 ३ साधू पदे ४ चारित्र पदे ५ गौतम पदे ६ तीर्थ  
 पदे ७ यह सात थानक तो पोसहज करके आरा-  
 धे । तथापि शक्ति नही ( तो ) तिस दिन देसाव-  
 गासिक करे । सावद्य व्यापार त्यजे । सो पिण न  
 होइ ( तो ) यथाशक्ति तप करी आराधे । अपनी  
 हीनताजावे ( तथा ) मृतक जातक का सूतकमें उ

पवासादि तप गिणै न जावे । स्त्रीयां पिण ऋतु समय का तप न गिणै ( तथा ) तपके दिन पोसह सहित करे ( तो ) बहोत श्रेयकारी हे । सो नही होसके ( तो ) तपके दिन उन्नय टंक पम्किमणा करे । तीन टंक देव वंदन करे । दो सहस्र ( १००० ) एक पदका जप करे । ब्रह्मचर्य पाले । भूमि शयन करे । तपके दिन अतिसावध आरंभ व्यापार न करे । असत्य न बोले । सब दिन तप पदके गुण कीर्तनमें रहे । ( तथा ) तपके दिन पोसह करे । ( तो ) पारणै के दिन जिन जक्ति करके पारणो करे । करावे । जावना जावे । ( तथा ) तपकै दिन पदके गुण जेद प्रमाण संख्याई काउसग्न करे । ( ता वन्मात्र ) तिणकेगुण स्मरण पूर्वक खमासमण देई वंदनाकरे । उस पदका महिमा गुण याद करके उदात्त खरे स्तवना करे । हर्षित रहे ॥

॥ अब बीस स्थानक गुणनो और काउसग्नका प्रमाण लिखते है ॥

॥ ( एमो अरिहंताणं ) ( १००० ) गुणनो । लोगस्स ११ काउसग्न ॥ १ ॥ ( एमो सिद्धाणं ) ( १००० ) गुणनो । लोगस्स १५ काउसग्न ॥ २ ॥ ( एमो पवयणस्स ) ( १००० ) दो हजार गुणनो । लोगस्स ७ काउसग्न ॥ ३ ॥ ( एमो आयरियाणं ) ( १००० ) दो हजार गुणनो । लोगस्स ३६ काउसग्न ॥ ४ ॥

( एमो थेराणं ) ( १००० ) दो हज़ार गुणनो ।  
 लोगस्स १५५ काउसग्ग ॥ ५ ॥ ( एमोउवज्जायाणं )  
 दो हज़ार गुणनो । लोगस्स १५ काउसग्ग ॥ ६ ॥  
 ( एमो लोए सव्वसाहूणं ) ( १००० ) गुणनो । लो  
 गस्स १७ काउसग्ग ॥ ७ ॥ ( एमो नाणस्स ) १०००  
 गुणनो । लोगस्स ५ काउसग्ग ॥ ८ ॥ ( एमो दंसं  
 णस्स ) ( १००० ) गुणनो । लोगस्स ६७ काउसग्ग  
 ॥ ९ ॥ ( नमो विनयसंपन्नाणं ) ( १००० ) गुण  
 नो । लोगस्स १० काउसग्ग ॥ ( एमो चारित्रस्स )  
 ( १००० ) गुणनो । लोगस्स ६ काउसग्ग ॥ ११ ॥  
 ( एमो वंजद्वयधारीणं ) ( १००० ) गुणनो । लोग  
 स्स ९ काउसग्ग ॥ १२ ॥ ( एमो किरियाणं )  
 ( १००० ) गुणनो । लोगस्स १५ काउसग्ग ॥ १३ ॥  
 ( एमो तवस्सीणं ) १००० गुणनो । लोगस्स १२  
 काउसग्ग ॥ १४ ॥ ( एमो गोयमस्स ) १००० गुण  
 नो । लोगस्स १८ काउसग्ग ॥ १५ ॥ ( एमो जि  
 णाणं ) १००० गुणनो । लोगस्स १० काउसग्ग ॥ १६ ॥  
 ( एमो चरणस्स ) दो हज़ार गुणनो । लोगस्स  
 १२ काउसग्ग ॥ १७ ॥ ( एमो नांणस्स १००० गुण  
 नो । लोगस्स ५ काउसग्ग ॥ १८ ॥ ( एमो सुअ्वना  
 णस्स ) १००० गुणनो लोगस्स १० काउसग्ग ॥ १९ ॥  
 ( एमो तित्थस्स ) १००० गुणनो । लोगस्स ५ का  
 उसग्ग करे ॥ २० ॥ इतिवीस स्थानिक गुणनो संपूर्ण ॥

इत्यादि विधिसंयुक्त बीसों उंलीमें सब पदके उठव महोठव प्रज्ञावना ऊजमणा पूर्वक करे । जि न साशनके उन्नति के कारण करे । इतनी शक्ति न हो ( तो ) एक उंली ( तो ) विशेष उठवादि सहित करणी चाहिये ॥ इहां विधि प्रपाक ग्रंथसें बीस स्थानक सेवनविधि संक्षेप मात्र लिखीहै (जो) गुरुको संयोग हय । तबतो विस्तारसें बीसों पदकी जूदी विधि । गुरुके मुखसे समजके करे जो गुरुका जोग न हो ( तो ) विवेक संयुक्त इस विधिको देखके बीस स्थानक तप सेवन करे । बीस स्थानक तवन पढे ( वा ) सुणें । बीस स्थानकजी की पूजा करावे । अपनी शक्ति माफक बीस बीस ज्ञानोपगरण करावे । देव पदको देव खाते लगावे । ज्ञान पदको ज्ञान खाते लगावे । गुरु पदको गुरु महाराजकोदेवे । सब तीर्थों की यात्रा करे । साहमी वछल करे. ॥ इति बीसस्थानक तप विधि समाप्ता ॥

॥ मोक्ष करंडक तप ॥ उपवास, आयंवित्र, नी-  
वी, एकाशना, पुरिमह ए एक उंली हुइ एसें पांच  
वारउंली करनेसें पच्चीस दिनसे यह तप पुरा करना  
इस्मे नमो सिद्धाणं पदकी बीस नवकारवाली गुण-  
नी उद्यापनमे एक रुक्मे नैवेद्य जरके जिनमंदिर-  
में ढोकना पूजा पढानी. ॥

स्वर्ग करंरुक तप ॥ प्रथम चारे एकाशना, नव नी-  
वी, पांच आयंबिल, एक उपवास, ऐसे १७ दिनसे यह  
तप पुरा होता है. सिद्धाणं पदका गुणणा गुणना ॥

॥ सौजाग्य सुंदर तप ॥ एक उपवास और एक  
आयंबिलकी एक उंली. ऐसे सोखे उंली करनी अ-  
र्थात् वत्तीस दिनसे यह तप पूरा करना ॥ सिद्ध  
पद गुणना ॥ उद्यापन उपर प्रमाणे करना.

॥ चोसठिया तप ॥ एकासना आयंबिलकी एक  
उंली एसी वत्तीस उंली करनेसे तप पूरा होय ॥  
इस्मे सिद्धाणं पद गुणणा ॥

॥ अष्टाहिका तप ॥ एकेक जिनवरके पांच पां-  
च कल्याणक के एकासने करनेसे चोवीस जिनके  
ए६० एकासने करने ॥ जिस तीर्थकरका कल्याणक  
होवे उसी जिनके नामकी नवकारवाली बीस गु-  
णनी । यह कल्याणक तप जेसा तप है. परं अनु-  
क्रम जिन्न है ॥ उद्यापनमे चोवीश प्रकारके पक्काश  
चोवीश तिलक, प्रभुजिके सन्मुख रखना ॥ संघ  
पूजा करनी ॥

॥ ठन्नुजिन तप ॥ अतीत अनागत वर्तमान मी  
लके तीन चोवीशी तथा सीमंधरादिक बीश विहर  
मान जिन और चार शाखते जिन मील ठन्नु जिन  
आश्रयि एकेक उपवास करना और तिस तिस जि  
नके नामकी नवकार वाली गुणनी. ठन्नु दिनसे यह

तप पूरा होता है उद्यापनमे ठन्नवे मोदक मंदिरमें  
ढोकना गुरु भक्ति करना

॥ अष्टमी तप ॥ अष्टमी अष्टमीके दिन उपवा-  
स अथवा आयंबिल करके आराधना करनी. उद्या  
पनमे दूधसे चरा हुवा कलसके उपर श्वेत वस्त्र ढां  
कके तिसके उपर सक्कर के आठ मोदक रखके और  
ज्ञानोपकरण सहित कर्म दाय निमित्त प्रतिमा  
वा पुस्तककी पास रखनेसे उद्यापन होताहै. इसमे  
तपके दिन चंद्रप्रज जिनाय नमः ए गुणना गुणना॥

॥ अष्टापद पाहुडी तप ॥ आशोज अष्टमीसे पू  
र्णिमा तक आठ दिन एकाशना करना ॥ अष्टापद  
तीर्थायनमः ए पद गुणना उद्यायनमें जिन पूजा प-  
ढावी और नैवेद्यादिक ढोकन करना ॥

॥ अशोक वृद्ध तप ॥ आशोजके मासमें एक  
उपवास एक एकासणा ऐसे तीस दिनका यह तप  
है. सिरूपदको गुणना. उद्यापनमे अशोक वृद्ध चां  
दिका वनाके मंदीरमे स्थापनकर पूजा पढानी

॥ चांद्रायण तप ॥ सुदि प्रतिपदासे एक उपवास  
एक आयंबिल ऐसे पनरादिनका यह तपहै. सिरूपद  
गुणना उद्यापनमे पनरे लारु और चांदीकी चंद्र  
मूर्ति मंदरमे रखे और पूजा पढावे ॥

॥ सूरायन तप ॥ कृष्ण पक्षके प्रतिपदासे उपवा  
स आयंबिल पनरेदिन तक करे. सिद्धाणं पद गूणे.

उद्यापनमें पनर लाख और सोना अथवा चांदीकी सूर्य मूर्ति रखके पूजा पढावे ॥

॥ तीर्थकर वर्द्धमान तप ॥ यह तप आयंबिल अथवा नीवीसे किया जाताहे. प्रथम तीर्थकरका एक आयंबिल, दुसरे के दो, तीसरेके तीन चोथेके चार चोवीसमे के चोवीस करने. फिर चोवीसमेका एक, तेवीसमे के दो, चाईसमें के तीन यों पहिले जगवानके चोवीस आयंबिल करे. जो जो जगवानकी उंली होय उसके नामकी नवकारवा ली गुणे और पूजा करे. उद्यापनमे नैवेद्य चढावे । संघ पूजा करे देवगुरु जक्ति करे.

॥ जैन जनक तप ॥ निरंतर बत्तीस आयंबिल करनेसे यह तप पूरा होता हे । उद्यायनमे बडे ठा ठमाछसे जिन पूजा करनी ॥

॥ निगोदायुक्षय तप ॥ एक उपवास एकासणा दो उपवास एकासना. तीनउपवास एकासना. दो उपवास एकासना७ एक उवववास एकासना. सिद्ध पद गुणना । उद्यानमें. चौंदा मोदक वाटने और चौंदा मोदक मंदरजीमे चढाने और पूजा करानी ॥

॥ कमल उंलीतप ॥ एकांतर आठ उपवासकी एक उंली करनी एसी नव उंली एकहि वर्षमे कर नी चहीये. सिद्धपद गुणणा और उद्यापनमे सोना चांदीके नव नव कमल ढोकना गुरुजक्ति करनी,

॥ मेरु कल्याणक तप ॥ एक तेला एक विश्वा  
सणा एक तेला एक विश्वासणा ऐसे तीन तेले क  
रने पीठे एकांतर ठे उपवास करना. पारण्येके दिन  
विश्वासना करना ॥ जो पहिले तीन तेला न कर श  
के तो पहिले दो तेले करके बीचमे ठ उपवास क  
के ठेला एक तेला कर देवें परं यहसब एकहि व  
र्षमें करना. इसमे यह नियमहेकी मेरु त्रयोदशीके  
दिन ठेला तप होना चाहिये. इसमे श्रीरूपदेव पा-  
रंगताय नमः ए पद गुणना चाहिये. यथाशक्ती उ-  
द्यापन अवश्य करना चाहिये.

॥ ठठ तप ॥ इसमे ११९ वेला करना और पा-  
रणामे विश्वासणा करणा. सब मील इसके ४५७ उ  
पवास गिने जाते हे. सिरूपद गुणणा ॥ उद्यापनमे  
मोदक डोकना.

॥ पद कमी तप ॥ पहिले एक उपवास पारणा.  
दो उपवास पारणा. एक उपवास पारणा. ॥ प्रथम  
जंली ॥ एक उपवास पारणा दो उपवास पारणा.  
एक उपवास पारणा ॥ दुसरी जंली ॥ एक उपवास  
पारणा. दो उपवास पारणा. तीन उपवास पारणा.  
दो उपवास पारणा. एक उपवास पारणा ॥ तीसरी  
जंली ॥ एक उपवास पारणा दो उपवास पारणा  
तीन उपवास पारणा. चार उपवास पारणा. तीन  
उपवास पारणा. दो उपवास पारणा. एक उपवास



पारणा. सिद्धपद गुणणा ॥ उद्यापनमे मोति और  
प्रवाल चढावना । पुजा पढाना गुरुभक्ति करना ॥

सिद्धि वधू कंठाक्षरण तप ॥ प्रथम दो उपवास  
(वैला) पारणा. एक उपवास पारणा. तीन उपवास  
पारणा. दो उपवास पारणा. एक उपवास पारणा  
एसे नव उपवास करनेसे तप पूरा होता है. सि,  
रूपद गुणना गुरु ज्ञान भक्ति करना ॥

॥ रत्नारोहण तप ॥ एकाशन एक, नीवी एक.  
आयंबिल एक उपवास एक ॥ प्रथमावली ॥ नीवी,  
आयंबिल, उपवास, एकासन. ॥ द्वितीयावली ॥ आ  
यंबिल, उपवास, एकाशन, नीवी. तृतीयावली ॥ उ,  
पवास, एकासन, नीवी, आयंबिल ॥ चतुर्थावली ॥  
एक उपवास बिगई, निविता रहित नीवी, आयंबि-  
ल ॥ पंचमावली ॥ इसतरे पांच आवलीसे रत्नारोह  
ण तप होता है. सिद्धपद गुणना. उद्यापनमें रत्नम-  
य नवकारवाली पांच, रत्नमय स्थापनाचार्य पांच,  
रत्नमय जिन बिंब पांच, मोदक बीस, इतनी वस्तु  
पुस्तकके पास ढोकना. तप के दिन ब्रह्मचर्य पाल  
ना. ज्ञान दर्शन चारित्रका आराधन करना. पार-  
णाके दिन गुरु भक्ति करनी. अष्ट प्रकारी पूजा क-  
रनी. इस तपसे संतान प्राप्ती होती है. गर्जश्राव  
होना बंध होता है आशोज सुदिपंचमीसे ए तप  
सक करना.

॥ आगमोक्त केवली तप ॥ आयंविल निरंतर दश, उपर एक उपवास, सिद्धपद गुणणा. उद्यापन में इग्यारे मोदक, इग्यारे श्रीफल, पुस्तकके पास ढोकना. अष्टप्रकारी पूजा पढानी गुरु जक्ति करनी॥

॥ अंगविशुद्धी तप ॥ आयंविल तीन, नीवी ती न, एकासणा तीन, एक उपवास अतमे करना. सिद्धपद गुणणा. उद्यापनमे तेरे तेरे वस्तु पुस्तक के आगे ढोकना पूजा पढानी गुरु जक्ति करनी

॥ पद्मोत्तरतप॥नव पांखडीके कमलको पद्मकह-तेहे. इस्मे नव उंली करनी चाहिये एकेक उंली के निरंतर अथवा एकांतर आठ आठ उपवास करना. एसी नव उंली करनी सिद्धपदगुणणा उद्यापनमें अष्ट दल कमल सुवर्णका अथवा चांदी-का नया बनाकर विचमे गौतमस्वामीकी प्रतिमा-का आकार करके स्थापन करना और अष्ट प्रकारी पूजा करना श्रीसंघ औरगुरुजक्तिकरे ॥

॥ गणधरतप॥वर्धमान स्वामीके इग्यारे गणधरके इग्यारह उपवास अथवा आयंविल करना. उनके नामकी नवकार वाली गुणना उद्यापनमे गुरुको इग्यारह वेश ( चारित्रोपकरण ) वेहेराना. संघ-जक्ति गुरुजक्ति और पूजा पढानी.

॥ माणिक्य प्रस्तारिका तप ॥ आशोज सुदी इ-ग्यारसको उपवास वारसकों एकासणा तेरसकी

नीवी. चौदशका आयंबिल. पुनमका उपवास-  
करना. पाठांतरमे दुसरी रीती यहहे की आशोसुदी  
वारसका आयंबिल. तेरसकी नीवी. चौदशका ए-  
कासणा. पुनमका उपवास. पुनमके उपवासके दिन  
उद्यापन करना सो यहरीतसे की पुनमके दिन  
सूर्योदय पहिले पवित्रहोके अपनी पसलीमे  
आजूषण श्रीफल, अक्षत लेके वाजिन्नादि महोत्सव  
पूर्वक जिनप्रसादमे जाना. प्रथम प्रदक्षिणा करके  
उपरोक्त वस्तु ढोकना. दुसरी प्रदक्षिणामें विजोरा  
ढोकनां. तीसरी प्रदक्षिणामे तांबूलपत्र सहित सुपारी  
ढोकनी. चतुर्थ प्रदक्षिणामे ठकमो (डव्य) ढोकना.  
सात जातिके धान ढोकनां. लवण. कापरु. कसुंव. क-  
पास. पुरी १०८ तांबे पीतलका वेहेका ढोकनां ए-  
कसो सोढे दीपक करने. एक दीपकमे चांदीकी  
दीवट सुवर्णका कोडिया ढोकना. गुरुजक्तिसं  
घजक्ति करना.

॥ श्रुत देवता तप ॥ सुदपक्षकी एकादशीका  
उपवासकरना और मौनरहना. एसी इग्यारह एका-  
दशी करनी. श्रुतदेवताकी पूजा करनी उद्यानमे  
अपने घर सरस्वतीकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठाकराय के  
पधरावनी. और गाठमाठसे पूजा पढानी ज्ञान  
ज्ञानीकी और संघकीजक्ति करनी.

॥ अंधिकातप ॥ कृष्ण पंचमीके दिन श्रीनेम

नाथजीकी पूजा पूर्वक अंबिका देवीकी स्थापना करके एकाशन तप करके पूजा करनी. नैवेद्यफल ढोकना. ऐसे पांचवार करना उद्यापनमें साधुजीको वस्त्र, अन्न, पान, बेहेराना. अंबिकाकी मुर्ति दोपुत्रसहित आम्न वृद्धकेनीचे होय ऐसे देखा वकी करानी.

॥ मुकुट सप्तमी तप ॥ आपाढवदि सप्तमीके दिन उपवास करके श्रीविमल नाथजीकी पूजा करनी. कार्तिकवदि सप्तमी के दिन उपवास करके श्रीआदिनाथजी की पुजा करनी. मिगसर वदि सप्तमीके दिने उपवास करके श्रीमहावीर स्वामीकी पूजा करना. पोषवदि सप्तमीका उपवास करके श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी पूजा करनी उद्यापनमे लोक नालकी स्थापना करके मुकुट स्थानमे रहि जिना बलिको रत्न जन्त मुकुट चढाना. ठाठसें पुजा पढाना एकेक जिनको सात सात वस्तु चढाना ज्ञान गुरु संघकी जक्ति करना.

॥ स्वर्गस्वस्तिक तप ॥ चार एकासणा निरंतर करके उपर एक उपवास करना उद्यापनमे पांच जातिके एकएकमण धानके स्वस्तिक जिन मंदिरमे करा के पूजा पढावी. ज्ञान गुरु संघजक्ति करना

॥ शत्रुंजयमोदक तप ॥ पुरीमढ, एकासणा, नीवी. आयंविल, उपवास निरंतर पांच दिन तक करना,

शत्रुंजय नाम गुणना. उद्यापनमें पांचशेरगोधुमका एक लारु ऐसे पांच लारु चढावना ज्ञानगुरु संघ न्तिकरना.

॥ सात सौख्य तप ॥ निरंतर सात एकासणा करके उपर एक उपवासकरना. उद्यापनमें सात मोदक ढोकना. आठमा मोदक चतुर्गुण बनाकरना । सोलज्जातिके पकवान चढाना. ज्ञानगुरु न्तिकरना.

॥ क्षीर समुद्र तप ॥ श्रावणमासमे करना । निरंतर आठ एकासणा करके उपर एक उपवास करना. उद्यापनमे क्षीर खांड और घृतसे जरा हुवा थाल प्रज्जुकों ढोकना. ज्ञानगुरु संघ न्तिकरनी.

॥ ठमासी तप ॥ एकाशनांतरित यथाशक्ति १०० उपवास करना. उद्यापनमे एकसो अस्सी मोदक मंदरमे चढाना ज्ञान गुरु न्तिक करना महावीर स्वामीके नामकी नवकार वाली तपके दिन गुणनी.

॥ संवत्सरी तप ॥ एकाशनांतरित ३६० उपवास करना ॥ ऋषज देवजीके नामकी नवकारवाली गुणनी. उद्यापनमें चांदीका घट सेलडीके रससें जरके मंदीरमे चढाना. अक्षयतृतीयाके दिनपारणा आवे तेसें तप आदरना । ज्ञानगुरु संघकी न्तिक करनी ॥

॥ अष्ट मासिक तप ॥ मध्यम बावीस तिर्थकर आश्रयिक एकांतरित २४० उपवास करना. । जिस जिस जिन कातप आवे उन उनके नामकी नव-

कार वाली गुणना. उद्यापनमे ३४० मोदक चढाना ज्ञान गुरु चक्ति करे.

॥ चतुर्विध श्री संघ तप ॥ प्रथम दो उपवास ( वेला ) करके एकांतरीत साठ उपवास करने । उद्यापनमे चतुर्विध श्री संघकी और ज्ञान गुरु चक्ति करनी.

॥ अष्ट कर्मोत्तर प्रकृति तप ॥ ज्ञानावरणीनी उत्तर प्रकृति ५, दर्शना वर्णीनी नव, वेदनीकी दो, मोहिनी कर्मकी अष्टादश, आयुर्कर्मकी चार, नाम कर्मकी एकशतीन, गोत्र कर्मकी दो, अंतरायकर्मकी पांच, सब मील १५० प्रकृतिके १५० उपवास एकाशनांतरित करना ऐसे करनेसे एक उल्लो हुइ. एसी आठउल्लो करनेसे यह तप पुरा होताहे सिद्ध पद गुणना. उद्यापनमे १५० मोदक जिनमंदिरमे चढावणा ज्ञानपूजा गुरुपूजा संघपूजा करनी पूजा पढावणी ॥

॥ द्वार तप ॥ प्रथम दो उपवास करके एकाशनांतरित सात उपवास करना पीछे उपवास तीन ( तेला ) करके एकाशनांतरित सात उपवास करना अंतमे वेला करना एवं तपो दिन एक बीस और पारणा सत्तर होय. सिद्ध पद गुणना. उद्यापनमें सुवर्ण, माणक, मोति, विज्रुम, रजत, पदक काहलीका सहित द्वार बनाके बर्द्धमान स्वामीको

चढाना. अथवा सुवर्ण हार बनाकै कंठारोपित करना । ज्ञानज्ञक्ति गुरुज्ञक्ति संघज्ञक्ति करना.

॥ अहव दशमी तप ॥ प्रत्येक वर्षकी जाइवा सुद दशमीके दिन यथा शक्ति उपवासादि तप करके अंबिकादेवी के पास संगीतादिक करके रात्रि जागरण करना. मोदक फल पुष्पादिक ढोकना. धूप दीपादिक करना. अगले दिन स्वामी वत्सलकरके मुनिको दान देके पारणा करना. रेशमी चुनमी चढानी. ऐसे दशवर्ष करना. दूसरे वर्ष फलादिक दुगुने चढाने. तीसरे वर्ष तीगुने चोथेवर्ष चोगुने चढाने. ज्ञान गुरु संघज्ञक्ति करना

॥ लघु संसार तारण तप ॥ निरंतर तीन आयं विल करके एक उपवास करणा सिद्धपद गुणना. ऐसे तीन उंली करते बारे दिनसे तप पुराहोय.

॥ बृहत्संसार तारण तप ॥ निरंतर तीन उपवास ( तैला ) करके एक आयंविल करना. सिद्धपद गुणना. एसी तीन उंली करनी. इस्मे नव उपवास तीन आयंविलसे तप पूरा होय. जयापनमे चांदी का जाहाज बनाके एक थालीमे दुधनरके दुधमे जहाज तिरानां. जहाजमे मोतिमुंगा रखना. स्वा मीवठल ज्ञानगुरु ज्ञक्ति करना पूजा पढाना ॥

लाखी परुवा तप ॥ कार्तिक सुदि प्रतिपदाकेदिन गौतमस्वामीके नामका उपवास करना. गौतम स्वामी.

के नामकी नवकार वाली गुणनी ॥ एक वर्षकी वा रे सुद पडवाको इसीतरें तपकरना । द्वितीयाको दुध चावलसे पारणा करना. समाप्तीके उद्यानमे पांच पांचसेर सवजातिके धान मंदिरजीमे ढोकना पूजा पढानी. ज्ञान गुरु संघजक्ति यथा शक्ति महोत्सव करना यह तप करनेसे सौभाग्यकी प्राप्ति होय अष्टावीस लब्धीकी प्राप्ति होती हे ॥

॥ परतपाली तप ॥ पंचवर्ष यावत् श्रीवीर निर्वाणसे प्रारंभ कर तीन उपवास करना पीठे वत्री स नीवी करनी समाप्तिमे तीन उपवास करना. प्रतिवर्ष पांचसेरकी लापसी सुगंधीदार बनावे स्थाल मे जरके महोत्सव पूर्वक ढोकना. ज्ञान गुरु संघजक्ति प्रज्ञावना करना. वीरनामगुणना ॥

॥ त्रिपर्यंत घन तप ॥ १ २-३. ए प्रथमउंली. २. १. ३. ए द्वितीयाउंली ३ २. १. ए त्रतीया उंली १ ३. २ ए चतुर्था उंली. २ ३ १ ए पंचमी उंली. ३. १. २ ए षष्ठी उंली १. २. ३. ए सातमी उंली. ३ २. १. अष्टमी उंली. २. ३ १ नवमी उंली. सवमील तपोदिन ५४ पारणे दिन २७ सर्व दिन ७१ उद्यापनमे ज्ञानगुरु साधर्मिक जक्ति०

॥ वर्ग तप ॥ १. २ २ १ २. १ १. २. ए उपवाससे प्रथमउंली. २. १. १. २ १. २. २. १. दूसरी उंली २ १. १. २ १. २. २ १. तीसरी उंली. १. २.



सैं ठेदन करना. सिरूपदगुणना. ज्ञान गुरु संघ  
जक्ति करना.

॥ अखंड दशमी तप ॥ सुक्ल पक्षकी दशमीके  
दिन एकाशनादि तपकरनां सिरूपदगुणना. एसी  
दश एकादशी करनी तपके दिन अखंड अन्नका  
जोजन करना. उद्यापनमें दश जातिके धान्य फल  
पकवान जिनमंदिरमें ढोकन करना. शुद्ध वस्त्र च-  
ढाना. ज्ञान गुरु जक्ति करना. यह तपके करनेसैं  
विधवा न होय एसा महिमा हे.

॥ अमृताष्टमी तप ॥ सुक्ल पक्षकी अष्टमीके  
दिन आयंबिल करनां एसी आठ अष्टमी करना.  
सिरूपदगुणना. देवपूजा करनी. उद्यापनमे दूधसे जरा  
कलस एक, कंचुकी नवीन एक, मोदक एक, जल  
घट एक, जिन मंदिरमे चढाना. ज्ञान गुरु संघ  
जक्ति करना.

॥ सत्तरी सय जिन तप ॥ सित्तेरसय जिन आ-  
श्रयि एकसो सित्तर एकांतर उपवास वा एकासना  
करना । गुणणा गुरु मुखसे धारके जपना. उद्याप-  
नमें एकसो सित्तर आविकाको जिमाना ज्ञान गुरु  
जक्ति करना.

॥ अष्टुःख ङुःखित तप ॥ सुद पक्षकी प्रतिप-  
दाको पहिला उपवास, सुद ङुजका ङुसरा, सुद  
तीजका तीसरा उपवास, यह प्रथम उली. एसी

पांच उल्टी करनी. सिरूपद गुणना तपके दिन  
रूपदेवकी मूर्तिको अखंड पुष्प माला चढानी.  
नवीन नवीन नैवेद्य ढोकना उद्यापनमे एक चां-  
दीका वृद्ध वनाके उसकी शाखामे सोनेका पारणा  
छटकावै. रेसमकी पाटसे रेसमी तलाइ रखके उस-  
मे सुवर्ण मय पुतली रखके जिन मंदीरमे ढोकना  
रूपदेवकी पूजा करना ज्ञान गुरु संघजक्ति करना.

॥ पंचमेरु तप ॥ एक मेरुके एकांतर पांच उप-  
वास करना. सुदर्शन मेरुका नाम गुणना दुसरे वख-  
त पांच उपवासमे विजय मेरु गीणना तीसरे पांच  
उपवासमे अचल मेरु गिणना । चोथी वारके पांच  
उपवासमे मंदिर मेरु नाम गिणना पांचमी वार  
पांच उपवासमें विद्युन्माली मेरु नाम गिणना इसमे  
निरंतर करेतो १५ उपवास और १५ पारणा मिल-  
के पचास दिनमे तप पूरा होय उद्यापनमे सुवर्ण  
मय मेरु वनाके मंदीरमे रखना १५. १५ वस्तु  
ढोकना ज्ञान गुरु संघ जक्ति करना

॥ बड़ा समवसरण तप ॥ प्रथम चार उपवास  
करके पारणे एकासणा न बनेतो वियासणा करणा.  
एसी चार उल्टी करते पञ्चपणकी पंचमीके दिन पा-  
रणा आवे तेसैं तप करणा. ऐसे चार वर्ष करनेसे  
ए तप पुरा होताहे. उद्यापनमे यथा शक्ति ज्ञान  
गुरु संघजक्ति करे.

॥ मोक्ष दंडक तप ॥ गुरुके हाथमे रखनेका दंड-  
क अपने हाथमें लेके अपनी मुठ्ठीसे जरना जित-  
नी मुठ्ठी होय उतना एकांतर उपवास करना. अथ-  
वा दूसरी विधि यह है की एकासणा बार, नीवी  
नव, आयंविल पांच, उपवास एक, एवं सत्तावीस  
दीन तप करना. सिद्ध पद गुणना. उद्यापनमें  
ठेठले उपवासके दिन एक थालमे चावल जर श्री-  
फल रोकक अन्न रखके वाजिन्न सहित गीतगाते  
गुरुके पास जाके दंडकी पूजा करके थाल जेट कर-  
ना. वस्त्रादिक बेराना. ज्ञानकी संघकी जक्ति करनी.

॥ दवयंती तप ॥ एकेक जिन आश्रयी बीस आयं-  
विल करना. एसी चोवीस उंली करना. यह वरु  
तप होनेसे एक पच्चीसमी उंली शासन देवीके ना-  
मकी करनी और गुणणा अनुक्रमसे जिस जिस  
जिनकी उंली होय तिस्का नाम गुणणा और  
शासना देवीकी उंलीमे शासना देवीका नाम गुण  
णा. इस्में पांचसे आयविल और चोवीस पारणा  
होतेहैं. उद्यापनमें चोवीस जिनकी पूजापढानी.  
चोवीस तिलकचढाने. पांचसे मोदक चढाने. और  
यथाशक्ती ज्ञान गुरु साधर्मिकजक्ति अवश्यकरना.

॥ जणोदरी तप ॥ पुरुषको वत्तीस और स्त्रीको.  
अष्टावीस कवलका आहार होताहै तिस्मेसें यथा  
शक्ती न्यून करना उसकों लोक प्रवाहमें उनोदरी

तप कहतें हे. प्रथमदिन आठ दूसरे दिन चार  
तीसरे दिन शोले, चौथे दिन चोवीस, पांचमे दिन  
एकत्रीस, कवलका आहार करणा और एकासणा  
का पचखान करना. सिद्ध पद गुणणा. सब मिल-  
के पुरुषको ८१ स्त्रीको ८७ कवल आहार पांच दिन-  
में लेणा. उद्यापनमे कवलकी संख्या प्रमाण मोदक  
चढाना. ज्ञान गुरु संघजक्ति करना.

॥ निर्वाण तप ॥ आदि नाथजीके निर्वाणके ठ  
उपवास करना. वीर प्रभुके निर्वाण पर उपवास  
दो करने. शेष तीर्थ करके निर्वाणके एकांतर उप-  
वास तीस तीस करने. जिन जिन तीर्थ करके नि-  
र्वाणका तप, चलता होय तब उन उन तीर्थ करके  
नाम की नोकार वाली गुणनी. उद्यापनमे चोवीस  
तीलक, चोवी पकान, चोवीस फल, चोवीस संख्या-  
मे सर्व वस्तुयें ढोकनी. ज्ञान गुरु श्री संघकी जक्ति  
करनी.

॥ केवल ज्ञान तप ॥ श्रीआदिनाथजी, मह्वीना-  
थजी, पार्श्वनाथजी, नेमनाथजी ए चार तीर्थकरोके  
केवलज्ञान कढ्याणक के तीन तीन उपवास करने.  
वासुपूज्यज्यस्वामीका एक उपवास और सब उन्नीस  
तीर्थकरोके दोदो उपवास करने. सबमील ५१ उप-  
वास करने उद्यापनमें ५२ मोदकफल, फूल, नैवेद्य,  
ढोकना गुरुजक्ति करना

॥ जिन दीक्षा तप ॥ वीस तीर्थकरोने दीक्षा समय ठठ कीये तिस्के वेले करने. वासुपूज्यका एक उपवास. मल्लीनाथ पार्श्वनाथजीके तीन तिन उपवास करना. सुमतिनाथ स्वामीके नामका एका शना करना. सबमिल ४९ उपवास एक एकाशणा होताहे. उद्यापनमे ४७ मोदकादिक चढावने अष्ट प्रकारी पूजा ज्ञान गुरु भक्तिकरना.

॥ जिन चवन जन्म कढ्याणकतप ॥ एके के जिनके चवन कढ्याणक के उपवास करणा. जिनजिन तीर्थरका तप होय तिसदिन तिनके नामकी नव-कारवाली गुणे. उद्यापनमें चोवीस चोवीस चीजे चढावे ज्ञानगुरु भक्ति करे.

॥ गौतमपरुधातप ॥ पंदरे पूर्णिमा पर्यंत एकाशनादितप करना. गौतमस्वामिकी प्रतिमाके पास क्षीरका पात्र जरके ढोकना अष्टप्रकारी पूजा करनी. गौतमस्वामीकी प्रतिमाके अज्ञावे महावीर स्वामी की पूजाकरनी. उद्यापनमें चांदीका परुधा ( पात्रें ) क्षीरजर के गौतमस्वामी अथवा महावीरस्वामिके पास ढोकनां गुरुजीको जोली पात्रे प्रमुख देनां.

॥ लघुपंचमी तप ॥ सुदी और वदीकी पंचमीका उपवास करना नमोनाणस्स गुणणा. एक वर्षके चोवीस और एक उपर उपवास करके २५ उपवाससे यह तप पूराकरना. यथाशक्ति उद्यापन करना।

यह तप पौष अथवा चैत मासमें सरु नहि करना.

पंचमी तप ॥ पांच वर्ष और पांच मास तक सु-  
दि पांचमीका चोवी हार उपवासकरना. नमोनाण  
स्स पद गुणना. यथाशक्ति उद्यापन करना. यहतप  
कार्तिक मिगसर, माघ, फाल्गुन, वैशाख, जेष्ठ, आ-  
षाढ, ए सात मासमेंसे हरेक मासमें सरु कीया  
जाता हे । अखंड करना उद्यापन करना

॥ पुंरुरीक तप ॥ चैत्री पुनमके दिन उपवास  
करके पुंरुरीक गण धरके नामकी नवकार वाली गु  
णे और पुजा करें एसे सात वर्ष करे. उद्यापनमें  
अगणित श्रावकोंको जिमावे अथवा प्रज्ञावना करे  
अगणित द्रव्यसे ज्ञान जक्ति करे अगणित अन्न पान  
मुनिको बेरावे । जो चिज दीजावे सो गिणनानहि  
योंहि पसली जरके बेरावे । और प्रज्ञावनाजि पस  
ली जरके देवेपरंगिनेनही

॥ गुणरत्न संवत्सर तप ॥ यह तप के सेवन क-  
रने वालोंको दिवसमें उकरु आसनमें रहना और  
रात्रिकों वीरासनमें रहना चाहिये (वस्त्र रहित रह  
ना. ) यह तप शोलेमासतक करना. तिस्मे प्रथम मा  
समें एकांतर उपवास करनां दुसरे मासमें दो दो  
उपवास पारणा करनां. तीसरे मासमें तीन तीन  
उपवास पारणा करना. चोथा मासमें चार चार उप-  
वास उपर पारणा करना. एसें एकेक मासमें एकेक

## तृतीय परिच्छेद प्रारंभः ।

अथ श्रावकोंकी दिन चर्या कहते हैं.

॥ चिदानंद स्वरूप, रूपसे रहित, रक्षक और परम ज्योतिरूप, ऐसे सिद्ध परमात्माकों मेरा नमस्कार हो. मनः शुद्धिकों धरने वाले योगीश्वरों, ध्यान रूपी दृष्टि करके जिसका स्वरूपकों देखतेहैं; ऐसे परमेश्वरकी मैं स्तवना करताहूं. प्राणिगण सुख समूहकों चाहतेहैं. और सर्व सुख समूह मोक्षमेंहै. वो मोक्षपदकी प्राप्ति ध्यानसें होतीहै. और ध्यान मनकी शुद्धीसें होताहै मनोशुद्धी कषायोंके जयसें होतीहै कषायोंका जय इंद्रियोंके विजयसें होताहै. इंद्रियोंका विजय सदाचारसें होताहै. गुणोंका निबंधन करानेवाला सदाचार सद्गुणपदेशसें प्राप्त होताहै. सद्गुणपदेशोंसें समृद्धिकी प्राप्ति होतीहै समृद्धि प्राप्त होनेसें सर्वत्र गुण प्राप्त होनेका उदय होताहै. सद्गुणोंके उदयकी प्राप्तिके लिए आचारोंपदेश नामक ग्रंथकी रचना करी जातिहै. सदाचारके विचारोंका निरूपण करनेमें रुचिकारक, विचक्षण पुरुषोंको मनन करने योग्य, देवानु प्रियोंकों अत्यानंदकारी, यह ग्रंथ; पुण्यवंत प्राणियोंको, विशेष श्रवण करने लायकहै.

अनंत पुज्य परावर्तों करके पुनः दुष्प्राप्य यह मनुष्य जन्मको प्राप्त होके विवेकी प्राणिकों धर्म

उपर अवश्य आदरवंत होना चाहिये. क्योंकि सुन-  
नेसे, देखनेसे, करनेसे, दूसरोंसे करानेसे, अनुमो-  
दनेसे यह धर्म सातों कुलकों निश्चय पवित्र करताहे.  
धर्म, अर्थ, काम, यह तीन वर्गके साधन विना यह  
मनुष्य जन्म पशुवत् निष्फलहे. तीन वर्गके साधन-  
में जी धर्म वर्गको अधिक साधन करना क्योंकि धर्म-  
वर्ग विना अर्थ और काम न प्राप्त होशक्तेहे मनुष्य-  
जव, आर्यदेश, उत्तमजाति, सर्व इंद्रियोंकी सुदृढता,  
परिपूर्ण दीर्घायुष, इतनी चिजें विना पुण्य प्राप्त न  
होशक्तीहे. कदापि पुण्ययोगसे उपरोक्त मील शक्तेहें.  
तथापि वीतरागके वचन पर श्रद्धा होनी दुर्लभहे  
कदापि श्रद्धा होतीहे तथापि सुगुरुका योग सुपुण्य  
विना मिल शक्ता नहीहे.

न्यायसे राजा, सुगंधसे पुष्प, उत्तम पदार्थसे,  
जोजन ज्यों शोजनीक होताहे त्यों उपरोक्त वस्तु  
जी सदाचारसेहि शोजनीक होतीहे सदाचार  
तत्पर पुरुष शास्त्रोक्त विधिसे परस्पर अविरोध क-  
रके तीनों वर्गका खुसीसे साधन कर शक्ताहे.

पंक्ति पुरुष रात्रिके चतुर्थ प्रहरसे वा पीठली  
दो घन्टी रात्रिसे उठे. निद्राकों त्याग कर पंच-  
परमेष्ठी मंत्र पढे. दक्षिण अथवा वाम दोनोमेंसे जो  
नाशिका बहती होय उस तरफका पग शय्यासे  
उठती वरुत प्रथम धरती पर धरे. शय्याकों और  
जयनके वस्त्रोंका त्याग करके दूसरे गुरु वस्त्र



पहिन सुस्थान पर बैठके पंचपरमेंष्टीका ध्यान करे. पूर्व अथवा उत्तर दिशा सन्मुख बैठके शरीर और स्थानकी शुद्धि करके मन समाधिसे जाप करे.

पवित्र हो किंवा अपवित्र हो. सुस्थित हो वा दुःस्थित हो परं पंचपरमेष्टी नवकारमंत्रके जपनेसे प्राणि सर्व पापसे रहित होता है. अंगुलीके अग्र जागसें, मेरुकों उल्लंघन करके, संख्यारहित, जो जाप करे सो प्रायः अद्वय फल कारक होता है.

उत्कृष्ट, मध्यम, अधम ए तीन प्रकारके जाप कहे जातेंहैं. उसमें कमलादिक विधिसे जाप किया जायसो उत्कृष्टहै. जपमालासे जाप किया जाय सो मध्यमहै. विना मौन, विना संख्या, विना चित्त स्थिर रखे, विना अचल आसन, विना ध्यान जो जाप किया जाय सो अधम जाप कहा जाताहै. पीठे गुरुके पास जाके अथवा अपने घरमें अपने पापकी शुद्धीके वास्ते आवश्यक (प्रतिक्रमण) करे.

रात्रिके पापकी शुद्धीके वास्ते राई, दिनके पापकी शुद्धीके वास्ते दैवसिक, पनरे दिनकी शुद्धीके वास्ते पाक्षीक, चारमासके पाप. शुद्धीके वास्ते चोमासी, बारमासके पापकी शुद्धीके वास्ते सां वत्सरीक; एसें पांच प्रतिक्रमण कहेहैं. प्रतिक्रमण करके, कुल क्रमकों याद करके, हर्षित चित्त होके मंगल स्तुतिका पाठको याद करे.

मंगलाष्टक.

मंगलं जगवान् वीरो, मंगलं गौतमः प्रभुः ॥  
 मंगलं धूलिजडाद्या, जैनो धर्मोस्तु मंगलं ॥ १ ॥  
 नाज्ञेयाद्याः जिनाः सर्वे, जरताद्याश्च चक्रिणः ॥  
 कुर्वंतु मंगलं सर्वे, विष्णवः प्रति विष्णवः ॥ २ ॥  
 नाज्ञि सिद्धार्थं जूपाद्या, जिनानां पितरः स मे ॥  
 पालिताखंरु साम्रज्या, जनयंतु जयं मम ॥ ३ ॥  
 मरुदेवी त्रिशलाद्या, विख्याता जिन मातरः ।  
 त्रिजगज्जनितानंदा, मङ्गलाय जवंतु मे ॥ ४ ॥  
 श्रीपुंरुरीकेंद्रजूति, प्रमुखा गण धारिणः ।  
 श्रुत केवलिनो पीह, मंगलानि दिशंतु मे ॥ ५ ॥  
 ब्राह्मी चंदन बालाद्या, महासत्यो महत्तरा ।  
 अखंरु शील लीलाद्या, यद्यंतु मम मंगलं ॥ ६ ॥  
 चक्रेश्वरी सिद्धायिका, मुख्य शासन देवताः ।  
 सम्यगूढशां विघ्नहरा, रचयंतु जयस्त्रियं ॥ ७ ॥  
 कपर्दी मातंग मुख्या, यद्वा विख्यात विक्रमाः ।  
 जैन विघ्नहरा नित्यं, दिशंतु मंगलानि मे ॥ ८ ॥  
 यो मंगलाष्टक मिदं पटुधी रधीते,  
 प्रातर्नरः सुकृत जावित चित्त वृत्तिः ॥  
 सौजाग्य जाग्य कलिता धुत सर्वविघ्नो,  
 नित्यं स मंगल मलं लज्जते जगत्याम् ॥ ९ ॥

पीठें मंदिरजीमे जाके निःसह्नी कहके सर्व आ-  
 शातनाका त्याग करके तीन अदक्षिणा देवे. विलाश,

हास्य, थुंक (बलगम) का गिराना, निद्रा, कलह, विकथा, चार प्रकारका आहार, जिनमंदिरमें नहि करना. “हे जगन्नाथ तुमको नमस्कार हो” इत्यादि स्तुतिका पाठ बोलके फल, अक्षत, सुपारी, जिन. राजके सन्मुख रखवे. राजा, देव, गुरु, निमित्त शास्त्र वेत्ता इनके पास खाली हाथसे नहि जाना क्योंकि फलसे फल मीलताहे. जगवंतके दक्षिण जागमे पुरुष, दहिने जागमे स्त्री नव अथवा साठ हाथ दूर रहकर वंदना करे. पीठे उत्तरासण लगाके, योगमुद्रासें बैठके, मधुर ध्वनीसे चैत्य वंदन करे. पेटके उपर दो हाथकी कोणी रखकर, कमल डोडाके आकार दोहाथकी दश अंगुलीयों संयोजित करे उनको योगमुद्रा कहतेहे. पीठे अपने घर जाके प्रातः क्रिया करे ( जोजन, वस्त्र, घरके परिवारकी यथायोग्य व्यवस्था करे. ) बांधव, नोकरों प्रमुखोंको अपने अपने कार्योंमें नियोजित करके बुद्धिके आठ गुण धारक पौषध शालामें जावें. शुश्रूषा ( गुरुकी सेवा ) श्रवण ( उपदेशका सुनना ) ग्रहण ( स्वीकार करना ) धारणा ( याद रखना ) उहा ( तर्क करना ) अपोह ( शमाधान करना ) अर्थ ( अज्ञिप्राय समजना ) तत्त्वज्ञान ( तत्त्वसमजना ) यह बुद्धीके आठ गुण हे धर्मका जाणकार होना, दुर्बुद्धिका त्याग करना, ज्ञानको प्राप्त होना और

वैराग आना ए सब सुननेसे प्राप्त होतेंहे आचार्य और साधुओंको पंचांग नमस्कार करके आशातना त्याग करके गुरुके सन्मुख बैठना. दों ढीचण, और दो हाथ लगाया हुवा मस्तक, धरतीपर टिकायके नमस्कार करनेको पंचांग नमस्कार कहतेंहैं.

पलांठी बांधके, लंबे पग पसारके, पग उपर पग चढाके, दो कांख दिखाते, अगामी, पीठाडी, बरोबर दोनुं तरफ, गुरुके पास बैठना नहीं. अपनेसे पूर्व आए हुवेकी बातें पूर्ण हुवे विना गुरुको बुलाना नहीं. आशयका समजदार गुरुके मुख सामने दृष्टि रखकर चित्तकी एकाग्रतासे धर्म शास्त्र सुने. वारख्यान पूर्ण हुवे पीठे अपनी शंकाका समाधान करे ( पुछे ) और देव गुरुके गुण गाने वाले ( जाट जोजक ) को यथोचित दान देवे. जिस्ने प्रातः प्रतिक्रमण न किया होय सो वांदणा देके गुरुको वांदे। धर्मप्रिय श्रावक नवकारसहीत प्रमुख यथाशक्ती पञ्चरकाण करे. दान देनेवालेजी जोब्रत पञ्चरकाण न करेतो तिर्यंच योनीमें उत्पन्न होतेहे हाथी घोडा प्रमुखमे उत्पन्न हो केजी बंधनमे पकतेंहे. जो दाताहे सो नरकमें न जाय. जो ब्रत पञ्चरकाण करता हे सो तिर्यंच न होय जो दयावंत होय सो हीन आयुष्य न होय. सत्यवादी होय सो दुखर ( दुष्ट अवाजवाला )

न होय. तपश्चर्या हे सो सर्व इंद्रियों रूप मृगको वश्यकरनेमे जाल ( फांसा ) समान हे और कषाय रूप तापको मिटानेके लिये द्राक्षासमान ह फिर कर्म रूप अजीर्णकों मिटानेके लिए जातिवंत उत्तम हरडे समान हे. जो दूरहे, दुराराध्य ( दुःखसँ मिलने लायक ) हे, देवताओंकोजी जो दुर्लभहे, सो सब तपसँ मिल शक्ताहे. क्यो कि तपकों कोई उल्लंघन करने समर्थ नहीं. पीठे. वजारमें जाके अपने अपने कुलके उचित द्रव्यो पार्जनका उद्यम करे. मित्रोंके उपकारके वास्ते, बांधवोंके उदयके वास्ते, न्यायवंत न्याय लक्ष्मीका उपार्जन करे. क्योंकि केवल अपना पेट कोन नहीं भर शक्ता हे ?

नीच जनोचित व्यापार करना नहीं और दूसरोंसँ जी कराना नहीं. क्योंकि संपदा पुण्यकर्मसे बढ़तीहे परं पापसे बढ़ती नहि. कदापि पाप व्यापारसे लक्ष्मी बढे परं उसका परिणाम अन्ना नहींहे. जिस व्यापारमे बहुत आरंभहोय, महापापहोय, लोकमे निंदाहोवे एसा होय, इह लोक परलोकसे विरुद्ध होय एसे व्यापार ( काम ) नहीं करने. लोहार, चमार, मदिराकार, तेली, प्रमुख नीच जनो से अधिक लाज होय तोजी व्यवहार नहीं रखना.

एवं चरन् प्रथम याम विधि समग्रं ।

श्राद्धो विशुद्ध विनयो नय राजमानः ॥

विज्ञान मान जन रंजन सावधानो ।

जन्म कृत्यं विरचये त्सकलं स्वकीयम् ॥ १ ॥

इति दिनचर्यायां प्रथम वर्गः समाप्तः ॥

॥ अथद्वितीय वर्गः । प्रारब्धते ॥

दूसरा प्रहरदिन चढते अपने घर आयेके विच-  
क्षण जन जहां जीवाकुल जूमी नहोय ऐसे स्थान  
पर पूर्वदिशा सन्मुख बैठके स्नान करे स्नान करनेके  
लिए चार पगवाला, जिस्मे नल लगाया होय ऐसा,  
एक बाजोट ( पट्टा ) बनावे जिस्का पाणी दुसरे  
बासणमे लेके निर्जीव स्थानमे डाला जाता होय तो  
जीवकी ठीक यत्ना होशकतीहे. रजस्वला अथवा  
नीच जातिका स्पर्श हुवा होय, अथवा सूतक आ-  
या होय, घरमे कोइका मरण हुवा होय तो मस्त-  
कसे सर्वांग स्नान करना उपरोक्त कारण सीवाय  
देव पूजाके वास्ते बुद्धिवंत मस्तकवर्जित उष्ण  
जलसे स्नान करे योगी पुरुष कहतेंहैं की चंद्र,  
सूर्यके किरणोंके स्पर्शसे समग्र जगत शुरू होजा-  
ताहे तों मस्तकजी उनके किरणोंसे स्पर्शित होनेसें  
सदा पवित्र गिना जाताहे

हर रोज शिर जीजोनेसें जीवघात होताहे. इस-  
लिए नही जिजोना. दया एहि हे सार जिस्मे ऐसे

सदाचार हैं सो सब धर्मके हेतुहे. अर्थात् कृपा धर्मका परिपालनके लिए सदाचार पालाजाताहे. निर्मल तेजका धारण करने वाला आत्मा सदा मस्तकमे रहताहे इस लिए और सदा वस्त्रसे वेष्टित रहनेसे मस्तक कच्ची अपवित्र होता नही. अइ जन स्नानके लिए जास्ति पाणी ढोलतेहे और उससे बहुत जीवकी विराधना करतेंहैं; ऐसा स्नान करके शरीरकों पवित्र और आत्माकों मत्नीन करतेंहैं. स्नान करनेमें जीजोया वस्त्र दूरकरके दूसरा वस्त्र पहिनके जहां तक पेर जीने रहे तहां तक अर्हत्का स्मरण करता उहांहि खमा रहे. जो खमा न रहेतो पगमें मेल लगेगा और पग अपवित्र होवेंगें. फिर कितनेक जीवोके घातकाजी संभव होवेगा. इससे पापका जागीजी होवेगा. गृहमंदिर (घरदेरासर) में जाके प्रथमसे प्रमार्जना करके पूजा करने लायक वस्त्र पहिनके अष्टपट मुखकोश बांधे. मन, वचन, काया, वस्त्र, भूमि. पूजाके उपकरण, स्थिति (स्थिरता) यह सात प्रकारकी शुद्धी पूजाके समय करनी. स्त्रीका पहिना हुवा वस्त्र पुरुष पूजा समय नहि पहिरे और पुरुषका पहिना हुवा वस्त्र स्त्री नहि पहिरे क्योंकि उससे कामरागकी वृद्धि होतीहै. उत्तम कलसमे जरा जलसे जगतकों जलका अन्निपेक करे और पीठे उत्तम वस्त्रसे अंग बुंठन करके चंदना-

दिकसैं पूजा करे. केशर चंदन चढाते नीचे लिखित  
काव्य उच्चार करके चढावे

सच्चंदनेन घनसार विमिश्रितेन,  
कस्तूरिका ड्रव युतेन मनोहरेण ।  
रागादि दोष रहितं महितं सुरेंद्रै,  
श्रीमज्जिनं त्रिजगतः पति मर्चयामि ॥

पुष्प चढाने समय नीचे लिखित काव्य बोले.

जाति जपा वकुल चंपक पाटलाद्यै,  
मंदार कुंद शत पत्र वरारविंदैः ।  
संसार नाश करणं करुणा प्रधानं,  
पुष्पैः परैरपि जिनेन्द्र महं यजामि ॥

धूप करने समय नीचे लिखित काव्य बोले.

कृष्णागुरु प्रचुरिता सितया समेतं,  
कर्पूर पूरमहितं विहितं सुयत्नात् ।  
धूपं जिनेन्द्र पुरतो गुरुतोष पोषं,  
जक्तयोत्क्षिपामि निज दुष्कृत नाशनाय ॥

अक्षत चढानेके समय नीचे लिखित श्लोक बोले.

ज्ञानंच दर्शन मथो चरणं विचिंत्य,  
पुंज त्रयंच पुरतः प्रविधाय जक्तया ।  
चोद्धादतैः कणगणैः रपरै रपीह,  
श्रीमंतमादि पुरुषं जिन मर्चयामि ॥

फल चढाने समय नीचे लिखित काव्य बोले.

सन्नालिकेर पनसामल बीजपूर,



जंवीर पूग सहकार मुखैः फलैस्तैः ।

स्वर्गाद्यनल्प फलदं प्रमदा प्रमोदं,

देवाधिदेव मधुना प्रशमं महामि ॥

नीचे लिखित काव्य बोलके नैवेद्य चढावे.

सन्मोदकैर्वटक मंरुक शालि दालि,

मुख्यै रसंख्यरस शालिजि रत्नजोज्यैः ।

क्षुत्त्रद्रव्यथाविरहितं स्वहिताय नित्यं,

तीर्थाधिराज महमादरतो यजामि ॥

नीचे लिखा काव्य बोलके दीपक चढावे.

विध्वस्त पाप पटलस्य सदोदितस्य,

विश्वावलोकन कला कलितस्य ज्वत्त्या ।

उद्योतयामि पुरतो जिननायकस्य,

दीपंतमः प्रशमनाय शमांबुराशेः ॥

नीचे लिखित काव्य बोलके जल चढावे.

तीर्थोदकैर्धृतमलै रमलस्वजावं,

शश्वन्नदी हृदसरोवर सागरोष्ठैः ।

डुर्वार मार मद मोह महाहितादर्य,

संसार ताप शमनं जिनमर्चयामि ॥

नीचे लिखित काव्य बोलके हाथ जोड नमस्कार करे.

पूजाष्टक स्तुति मिमा मसमा मधीत्य,

योनेन चारु विधिना वितनोति पूजां ।

शुक्का नरामरसुखान्यविखंक्षितानि,

धन्यः सुवास मचिराह्वजते शिवेपि ॥

नया मंदिर बनाना चाहे तो अपने घरमें प्रवेश करते मायें हाथपर जमीनसे देढ हाथ उंचे शद्व्य रहित पवित्र स्थानपर मंदिर बनावे. पूजा करने-वाला पूर्व अथवा उत्तर दिशाके सन्मुख बैठे परं विदिशामें न बैठे और दक्षिण दिशातो सर्व कार्यमें वर्जितहे

पूर्व दिशा सामने बैठके पुजा करनेसें लक्ष्मीका लाज होय. अग्नि दिशामे बैठेतो संताप उपजावे दक्षिण दिशामे मृत्यु कारक नैरुतमें बैठेतो उपद्रव करे. पश्चिम और वायव्य दिशामें बैठेतो संतानकी हानी करे. दो पांच, दो ढीचण, दोहाथ, दो स्कंध ( खजा ) एक मस्तक यह नव स्थान पर अनुक्रमसें जगवंतकी प्रथम पूजा करे उत्तम चंदन और केशर विना पूजा न करनी ललाट, मस्तक कंठ, हृदय, पेट, इतने स्थानपर अपने तिलक करना.

प्रजातें शुद्ध वाससें, मध्यान्हें पुष्पादिकसे संध्या समय धूप दीपसें जगवंतकी पूजा करनी एक पुष्पके दो विजाग नहि करना कलिको च्छेदनानहि पत्र, पांखमि, कलिकों छेदन करनेसें हिंसा जेसा पाप लगताहे हस्तसें गिरा, पेरकोलगा, जमीन पर परा, शीर पर धरा ऐसे पुष्पोंसें कहि पूजा न करनी. गंध रहित, तीव्र सुगंध वाला, नीच जातिजन फर्शित, कीटक दंशित, मलीन वस्त्रसे वेष्टित, ऐसे पुष्पसें पूजा कर-

नी नहीं. जगवंतके वामांगमें धूप रखना. जल पात्र सन्मुख रखना. पान अथवा फल हस्तमें रखना. उपरोक्त अष्ट प्रकारी पूजा हररोज करनी और नीचे लिखि एक बीस प्रकारी कोइ पर्व तिथीमें अथवा तीर्थ स्थानोंपर अवश्य करनी

एकीस प्रकारी पूजाके नाम.

स्नात्र, चंदन, दीप, धूप, पुष्प, नैवेद्य, जल, ध्वजा, वासद्धेय, अक्षत, सुपारी, तांबुल, जंकारवृद्धि, फल, वाजित्र, गीत, नाटक, स्तुति, उत्र, चामर, आभूषण.

विशेष लाजार्थी श्रावक शुद्ध वस्त्रसे सुशोजित होके अशुचि मार्गको छोडके अच्छे मार्गसे ग्रामचैत्य ( पंचायतीमंदिर ) दर्शनके लिए जाय.

पूजाका फल विषे

मंदिरमें दर्शनके लिए जाउंगा ऐसा विचार करनेसे एक उपवासका, जानेंकों उछेंतो दो उपवासका, मंदिरके मार्गमें चलेतो तीन उपवासका, मंदिरको देखनेसे चार उपवासका, मंदिरके दरवाजेपर आनेसे ठउपवासका, मंदिरके अंदर जाके दर्शन करनेसे पंदरे उपवासका, जिन पूजा करनेसे एक मासके उपवासका फल मिले तीन वार "निःसीही" शब्दकों उच्चारके मंदिरमें प्रवेश करना. मंदिरकी प्रथम सारसंज्ञाल (देखरेख )करके पीठे पूजा करना.

मूलनायककी प्रथम पूजा करके पीठे अंदर बाहार सब जिनविंवकी पूजा करना. अवग्रहसे बाहिर नीकलके पीठें चक्र सहित वंदना करे. फिर सामने बैठके चैत्य वंदना करे. एक नमुश्रुणंका पाठसे जघन्य, दो नमुश्रुणंसे मध्यम, पांच नमुश्रुणंसे उत्तम चैत्य वंदना जाणनी. फिरजी दुसरी प्रकार-सेंजी तीन प्रकारकी चैत्य वंदना होतीहे. स्तुति पाठ बोलते योग मुद्रा, वंदना करते जिनमुद्रा, प्रणिधानके समय मुक्ताशुक्ति मुद्रा, करनी. (नमुश्रुणंका पाठ उच्चरते योग मुद्रा, जावंति चेष्ट्याइं यहपाठ बखत जिनमुद्रा, जयवियराय उच्चरते मुक्ताशुक्ति मुद्रा करी जातीहे ) ( यह परंपरागत आम्नायहे ) पेटके उपर दो हाथकी कुणी स्थापन करके, कमल डोराके अकार दोहाथकों एकिके संयोजित करके परस्पर अंगुलियोंकों योजित करने कों “योग मुद्रा” कहते हे. ( यह चैत्यवंदन करने के बखत होती हे ) चार आंगुली आगे, और तीन आंगुली पीछे, पिडुलि (पोहोली) रखे, फिर दोहाथ अपने घुटणके पास टटार रखके, नीची दृष्टीसे खर्रा रहनेको “जिनमुद्रा” कहतें हैं. ( यह कायोत्सर्ग समय होतीहे ) दो घोटणके बिचमें रहे हुवे, मोति पकनेकी दो ठीपके समान दोनुं हाथ परस्पर जुडे हुवे होय, ऐसे आकारवाले दो हाथोंकों अप

नी ललाट ( कपाल ) पर लगाना उसको "मुक्ता शुक्ती" मुद्रा कहते हैं ( यह मुद्रा जय वीरराज कहती बख्त करी जाती है )

जगवंतकों नमस्कार करके मंदिजीसे बहार निकलती बख्त "आवस्सही" एशा उच्चार करके निकले. फिर घर जायके अपने जाइ मित्रोको साथ लेके जदय अजदयका (विचारवाला) जोजन करे . (११

पग धोया सिवाय, क्रोधांध होके, दुर्वचन बोलता दक्षिण दिशाके सन्मुख बैठके जोजन करेसो राक्षस जोजन कहा जाताहै.

पवित्र वस्त्र और शरीरसें अठे स्थानपर बैठके स्थिरतासें देव गुरुको याद करके, जोजन किया जाय सो मानुष्य जोजन गिना जाताहै. स्नानादिकसें शरीर शुद्ध करके, जिनपूजाकरके पूज्य जनो ( माता पिता ) को प्रसन्न करके, मुनिजनोकों और सत्पात्रों को दानादिक देके पीठे जोजन किया जाय. सो उत्तम जोजन गिना जाताहै.

जोजन, मैथुन, वमन ( कय उलटी ) दातण, लघु नीति, बड़ीनीति ( जामा पेसाव ) करनेके समय बुद्धिमानोंको मौन रहना चाहिये. क्यों की ज्ञान आशातना होतीहै. अग्नि कौन, नैरुत कोन, और दक्षिण दिशि यह तीन दिशा जोजनके वास्ते वर्जित हैं सूर्यके उदय और अस्त समय, चंद्रसूर्यके ग्रहण

मय अपने विरादरोंका शव ( मुरदा ) पडा होय,,  
तहां तक, जोजन नहीं करना.

संपदा ठते जोजन में लोभ रखे सो बन्ना मूर्ख  
हैं. मानों वो पुरुष अन्य जनोकें लिए धन कमाताहे

अशुद्ध और अज्ञात जाजनमें, जाति बाहिरके  
घरका वा उनके हाथका, अज्ञात और निषिद्ध  
अन्न पान फलादिक खाना नहीं

वाल, स्त्री, गर्जपात, गो, ए चार हत्याके करने  
वालेकी, आचार त्रष्टो की, कुलमर्यादाका उलंघन  
करनेवालोकी पंक्ति मे वेठ के जाणकार होके जो-  
जन करना नहीं.

मदिरा, मांस, सेहेत, अक्षय ( लुंणी मसका )  
बड पीपल उवर वृद्धादि पांच जाति के फल, अनं-  
तकाय, अज्ञात फल, फूल, साक, पत्र, रात्रि जोज-  
न, कच्चे गोरससें मीला हुवा विदल, फूग लगाहुवा  
अन्न, दोदिन उपरांत का दहि, विगन्ना हुवा अन्न,  
जिस्में जीव पडे होय ऐसे फल, पत्र, पुष्प, औरजी  
जिस्मे जीव उत्पन्न होनेका संभव होय ऐसे अचा-  
रादिक सब अन्नद्यों कों धर्मवन्त प्राणी वर्जित करे.  
जोजन उर बडीनीतिमे विशेष देरलगाना नहि. पा-  
णी पीनेमें और स्नान करनेमें उतावल करना नहि.

पानी पीना जोजनकी आदिमे विष समान अं-  
तमें शिद्धासमान और मध्यमे अमृत समान जाणना

अजीर्ण हुवा होय तहां तक जोजन नहीं करना. पूर्ण क्षुधाकालमें अग्ने कों रूचे सो जोजन करना जोजन किये पीठे मुख शुद्धि जल सुपारी तां बूलादिकसे करनी.

विवेकी जन रस्तेमें चलते तांबूल न खाय. सुपारी प्रमुख अक्षत फल दांतोंसें चांगना नहीं. क्यों की उससें जीव घात होता है.

जोजन कीये पीठे उष्णकाल सिवाय सोना नहीं क्यों की सोनेसे शरीरमें व्याधिका संभव होता है. इति दिनचर्यायां द्वितीयः वर्गः समाप्तः

॥ अथ तृतीय वर्ग प्रारंभः ॥

जोजन किये पीठे अपने घरकी शोजा देखता, विचक्षणोंसें वार्त्तालाप करता, पुत्रादिकोंकों शिखा वन देता थका सुखसें दो घड़ी चार विवेकी जन अपने घरमें ठहरे.

गुणकी प्राप्तिकरनी यह अपने स्वाधीन है. धनादिकका सुख दैवाधीन है. ऐसे तत्त्ववेत्तोओंको कभी गुणकी हानी नहि होती है.

कुल हीन पुरुषजी अपने गुणसें उच्च दशाको प्राप्त कर शक्ताहे देखिये किचरुसें उत्पन्न होने वाला पंकज (कमल) कों सब अपने शिरपर धारण करतेहे और पंक (कादा किचरु) पेरसें घिसा जाता है

गुण उत्पन्न होनेके लिए कोइ कुल वा खाण न-  
ही है परं उत्तम प्राणि अपने गुण करके प्रख्यात  
और उच्चदशा प्राप्त होता है. जैसे सत्वादि गुण  
युक्त प्राणी राज्य योग्य हो जातेहैं तेसें एक विश  
शक्ति गुण युक्त होनेसें प्राणिगण धर्म योग्यहो शक्ते है.

(१) जिसका हृदय ह्रुद्र (तुठ) नहो, (२) सौम्य  
होय, (३) रूपवंत हो (४) जन वद्वज हो (५) क्रुर  
न हो, (६) जवज्जीरु (संसारसे जन्म जरामरणादि-  
कसे करताहो)(७) मूर्ख न हो (८) दाक्षिणतावाला  
हो (९) लज्जावंत हो (१०) दया सहित हो (११)  
मध्यस्थ हो (१२) सौम्यदृष्टि हो (१३) गुणरागी हो  
(१४) सद्गुता हो (१५) सुपरिवारयुक्त हो (१६)  
दीर्घदृष्टी हो (१७) कुल परंपराको माननेवाला हो  
(१८) विनीत हो. (१९) गुणको झूलनेवाला न हो-  
(२०) परहित हितार्थी हो (२१) सब बातोका सम  
जदार हो यह इकिस गुण युक्त प्राणी धर्म रत्नके  
योग्य हो शक्ताहै.

पंडित पुरुषोने बहुत करके राज कथा, देशक  
था, स्त्री कथा, जक्त कथा नही करनी क्यों की  
एसी विकथा करनेसें कुल लाज तो होता नही परं  
अनर्थका तो बरोबर सजव है

धर्म कथाजी अपने सुमित्रो और बंधवोसें कर-



नी. धर्मशास्त्रके रहस्य के जाणकारोंके साथ धर्म (तात्वीक) विचार जरूर करना चाहिये.

जिससे पाप (अधर्म) बुद्धिकी वृद्धि होय ऐसे लोगोंमें मित्रता और सहवासजी नहि रखना. कोशका कोप, वचन सहन करना परं अपने न्याय-को न ठोकना.

अवर्णवाद तो कोशकाजी विचक्षणने बोलना नहीं. और पिता गुरु, स्वामी, राजादिकका तो अवर्णवाद जरूर बोलनाहि नहीं.

मूर्ख, दुष्ट, अनाचारी, मलीनजातिवाला, धर्म-निंदक, कुशीलिया, लोचि, चोर, इतनेकी संगती कजी नहि करनी.

“अज्ञात जनकी प्रसंशा करनी, अज्ञातको अपने घरमें स्थान (उत्तरा) देना, अज्ञात कुलसे सादी करना, अज्ञातकों नोकर रखना, अपनेसे बड़े लोगोंसे कोप वा विरोध करना, गुणिजनसे तकरार करनी, अपनेसे अधिक दरज्जेवालोंको नोकर रखना, करजा करके धर्ममे धन लगाना, अपनी दुःखी अवस्थामेंजी अपना धन पराये हाथमें होयसों नहीं याचना, अपने विरादरोमें विरोध करना, स्वजनों को ठोडकर अन्यजनोंसे मैत्री करना, शक्ति ठते धर्ममे उद्यम नहीं करना, नोकरोका दंड करके उस धनसे अपने मजा उठानी, दुःखी अवस्थामें अप-

ने बांधवोंका साहाय याचना, अपने मुखसे अपने गुणका वर्णन करना, अपने बोलते बोलते हंसना, जिस तिसका खाना," यह सब कार्य लोक विरुद्ध है और मुखताके चिन्ह हैं सो त्याग करना. न्यायसे धन उपार्जन करना. अपनी रीत रीवाजोंमें देश, कालके विरुद्धका त्याग करना राज विरोधियोंका संग और महाजनसे विरोध न करना. कुल, शील, आचारमे अपने समान जनसे और जिन गोत्रवालेसे व्यावसायी करना. अपनी जातिवालोंके पड़ोसमें अपना निवास रखना. जहां उपद्रव होवे ऐसे स्थानका त्याग करना. अपनी पैदासीके प्रमाणमे खर्च रखना लोकमे निंदा न होय ऐसा अपनी संपदानुसार वेष रखना अपने देशका आचारको और अपने धर्मको न ठोकना.

जो अपना आश्रय चाहे उनके हितमें रहना. अपना बढावलाका विचार रखना. अपने हित अहितका विशेष विचार रखके कार्यमें प्रवर्तना. अपनी इंद्रियोंको वश रखना देव व गुरुमें बड़ा भक्ति भाव रखना. स्वजन, दीन हीन दुःखी, अतिथी की यथायोग्य आगता स्वागता करनी यह विचार चातुर्यताको अपने चित्तमें रखना. विचक्षणोंसे शास्त्र सुनता, वा सीखता थाका विचक्षण कितनाक समय को व्यतीत करे. नसीब पर विश्वास रखकर निरु

द्यम बेठा न रहे परं धन उपार्जनका उपाय करे  
 क्रयो की उद्यम विना नसीव कच्ची फल देता नहीं  
 है. कूमा तोल, कूडा माप, कूमाखेख प्रमुख अनर्थ  
 कार्योको त्याग करके शुद्ध व्यवहारसे व्यापारमे स  
 दा प्रवर्त्ते. अंगारकर्म, वनकर्म, शकटकर्म, ज्ञाटक  
 कर्म, स्फोटककर्म, दंतवाणिज्य, लाक्षावाणिज्य, रस  
 वाणिज्य, केशवाणिज्य, विषवाणिज्य, यंत्रपीठन, नि  
 र्वाहिन, ( बेलके कर्ण नाक अंड नख रोम ठेदना )  
 असतीजन पोष ( कुत्ते विद्धे तोते प्रमुख जानवरोसे  
 आजीविका करनी ) दवदान ( दव लगाना ) सर ड  
 ह तलाव शोषण करना. यह पंदरे कर्मादानका व्या  
 पार श्रावक न करे.

लोखंरु, महुडाके पुष्प, मदिरा, सेहेत ( मधु )  
 कंद, मूल, पान, फल, प्रमुख वस्तुका आजीविका  
 निमित्त श्रावक व्यापार न करे.

उष्ण कालमें बहुत जीव विराधना होनेके जय  
 सैं विचक्षण श्रावक फाल्गुण माससैं उपरांत तिल,  
 गुड, टोपरा, ज्राक्षा प्रमुख मेवा प्रमुखका व्या  
 पार न करे.

चातुर्मासमें श्रावक गाम्भीमे घोडे बेलोंको जोगे  
 नहीं. बहुत आरंज प्रवर्त्तक कृषि कर्म श्रावक करे  
 करावे नहीं

योग्य मोल मिलता होय तो लेण देण करना. बहु-

त लाजके लिए अधिक लोभ न करना क्यों की अधिक लाजके लोभसें कोइ समय मूल धनकाजी नाश हो जाता है. विशेष लाज होता होय तथा पि उद्धार कोइको न देना. दगिने ररेक सिवाय धनके लोभसें कोइको व्याजसे धन न देना.

चौरीका माल निश्चय हुवे पीठे थोडे मोलसे मि लता होय तो जी न लेना. सरस निरस वस्तुका जेल सेल न करना चोर, चंमाल, मलीन परिणाम वाला, धर्मचूष्ट, इनोके साथ इह लोक परलोकके सुख बांछकोने व्यवहार न करना

विवेकी जन विक्रय समय असत्य न बोले. और लेनेके समय अपने वचनकी कबुलातको लोपनही करे

अदृष्ट वस्तुका सट्टा नहि करना सोना, चां-दी हीरा मणि प्रमुख पदार्थोंकी सत्यसत्य परिक्षा कीये बिना लेना नही.

राज बल सिवाय अनर्थ और विपत्तीका निवारण होशक्ता नही इसके लिए राज्यमें मैत्रता, परिचय, रखनी चाहिये परं राज्यमे पराधीन न होना ( स्वाधीन रहना योग्य है.)

तपस्वी, कवि, वैद्य, मर्मका जानकार, रसोइ करनेवाला, मंत्रवादी, अपने पूज्य ( माता पिता धर्म गुरु विद्यागुरु ) इनपर क्रोध न करना. द्रव्यार्थी पुरु

षकों अतिक्लेश, धर्मका उल्लंघन, नीचकी नोकरी, विश्वास घात, न करना.

लेण देणके कार्यमें अपने वचनका लोप करना नहि क्यों की अपने वचन पालनेवालोंकी वन्नी प्रतिष्ठा होती है.

विचक्षणोंको अपना धन मालका नुखसान होते ठते नी अपने वचन पालनेकी वन्नि जरूरत है. स्व द्यप लाजके वास्ते अपने वचनका लोप करनेवाले वसुराजाके न्याय दुःखी होते हैं.

एसे एसे व्यवहारमे तत्पर पुरुषो तीसरा और चोथा प्रहर दिन बितावे. और संध्या समय व्यालु करनेको अपने घरजावे. एकाशनादिक तप जिसने किया होय उनोने संध्या समय प्रतिक्रमणके वास्ते अपने गुरुके पास जाना.

दिवसके अष्टम जागमे ( चार घन्टी दिन ठते ) व्यालु करना. सूर्यास्त समय और रात्रिकों विवेकी ने जोजन करना नही. आहार, मैथुन, निद्रा, स्वा ध्याय ( पठन पाठन ) यह चार कृत्य संध्या समय प्राणिगणको विशेषकरके त्यागने चाहिये.

क्यों की सूर्यास्त समय जोजन करनेसे व्याधि होती है. मैथुन करे तो दुष्ट गर्ज होता है. निद्रा करे तो जूतादिकोंका उपद्रव होता है. पठन पाठ नसे निर्वुद्धी होता है.

व्यालु किये पश्चात् अवश्य दिवस ठते चोवीहा रका पञ्चस्काण करना कदापि नहीं वन शके तो छु विहार तेविहार तो अवश्यमेव करनाहि चाहियें क्यों की रात्रिजोजन त्यागनें से दररोज एकाशन करने जितना लाज मिल शक्ता हे

जो प्राणी रात्रि जोजनमें दोष जाणके सवेर और सांझकों दो दो घन्टी आहारको आगेसे त्याग करतेंहे सो प्राणी पुण्यशाली जाणना जो प्राणी यावज्जीव रात्रि जोजनकों त्याग करतेंहे सो अवश्य अपने समग्र आयुष्यका अर्धभाग के उपवासका फलको सहज मात्रमें प्राप्त कर शक्ता हे और वो धन्य वादके योग्य होता हे दिवस, रात्रिकों जो प्राणि मरजीमें आवे तब खाया करे और व्रत पञ्चस्काणसे विमुख हे सो प्राणि अवश्य श्रृंग पुच्छ विनाका पशु समजनां

रात्रिजोजन करनेवाले पुरुष घूँअडे, काक, विह्व मांजार, गीध, सांवर, सूअर, सर्प, विह्व, घीरोली, के अवतार प्राप्त करते हे रात्रिको हवन, श्राद्ध देवपूजा, दान, स्नान, और जोजन तो विशेष कर के नहींज करना ऐसा अन्य शास्त्रोमेजि लिखाहे

इति दिनचर्यायां तृतीय वर्ग. समाप्तः ॥

स्वल्प जलसें हाथ पग और मुखको प्रक्षालित करके धन्य धन्य मानता बडे हर्षसे संध्या समय धूप दीपादिकसें पुनः जिनपूजा करे

एक दिन मात्रजी शील पालनेको समर्थ नहो शकें हे. हे संसार समुद्र. मदिराजेसेमदयुक्त नेत्रोंवाली स्त्रीरूप दुस्तर पहाड विचमें न होते तो तेरा पार कों प्राप्त करना कुछ दूर नथा. मुक्ति पदकों अंतराय करनेवाली स्त्रीये प्राणिगणको अवश्यमेव एक शि ह्वारूपहि गिणनी चाहिये. असत्य, साहस (उतावल) माया (कपट) मूर्खता, लोभकी अधिकता, अपवित्रता, दया रहितता, इतने दोष स्त्रीयोंमे स्वभावसेंहि होतें हे.

जो स्त्री (मुक्ति) रागी उपरजी वैरागी होती हे एसी स्त्रीकों कोन जोगवेगा ? जो पंक्ति होगा सोहि जोगवेगा. क्यों कि मुक्ति रूपिणी स्त्री वैरागी उपर बरोबर रागी हे परं रागी उपर रागी नहीहे.

एसा स्त्रीयोंके विषयमे असारता विचारता थका समाधिमे कितनाक काल निद्रा करे. परंतु पर्वति श्री प्रमुख उत्तम दिनोमे उत्तम श्रावक स्त्रीयोंसे विषय जोग करे नही

विवेकीगण बहुत काल निद्रामें व्यतीत न करे. क्यों की विशेष निद्रा करनेसें धर्म अर्थ और सुख ए तीनोंका नाश होता हे

जो प्राणी स्वल्प ( थोमी ) निद्रा करे, स्वल्प आहार लेवे, स्वल्प आरंज करे, स्वल्प परिग्रही, स्वल्प क्रोध करनेवाला होय ऐसे लक्षणवालोंको अवश्यमेव स्वल्प संसार होता हे.

निद्रा, आहार, जय, स्नेह, लज्जा, काम, कलि ( लडाइ ) क्रोध. यह चिजें ज्यों ज्यो अधिक कीये जांय त्यो त्यो अधिक बढ़ती जाती है

विघ्न रूप बह्लिका समुदायकों छेदनमें साक्षात् कुहाडा समान श्री नेमिनाथ जगवंतकों याद कर के सयन करे तिनको अवश्यमेव दुष्ट स्वप्नोंका पराजय न हो शक्ता है.

अश्वसेन राजा और वामादेवी राणीके पुत्र, श्रीपार्श्वनाथजीका नाम स्मरण करके सोवे तो अवश्यमेव अनर्थ कारक दुष्ट स्वप्न न देखें महसेन राजा और लक्ष्मणा नाम राणीके पुत्र श्री चंद्रप्रज्ञा स्वामीका स्मरण करनेसे सुखसें निद्रा आती है सर्व विघ्नरूपी सर्पके दूर करनेमें साक्षात् गरुड समान, परम सर्व सिद्धिके प्रदायक, श्री शांतिनाथ स्वामीका जो ध्यान करताहै उनको विलकुल जय न हो शक्ता है

॥ इति दिनचर्यायां चतुर्थ वर्गः ॥

सर्व जवोमें उत्तममें उत्तम यह मनुष्य जन्मको प्राप्त होके प्राणि गणने उसे सुकृत करके सकल सफल करना निरंतर धर्मके सेवनसे सुखजी तदनुसार अचल मिल शक्ता है वास्ते दान, विद्याध्ययन, शुद्धध्यान जप तपादिक सुकृत्योंमें अपने दिन अवंध्य ( अखंड ) करना

आयुषके तीसरे जागमे अथवा अंत्य समयमे



जीव आगंतुक जवका शुचाशुच आयुष्य बांधताहे-  
आयुष्य बंधका तीसरा जाग बहुत करके पंच पर्वी  
की तिथीयोके दिन आताहे इसलिए पंच पर्वणीमे  
आरंज त्यागादिक सुकृत्यों कीये जाय तो अवश्य  
शुच आयुष्य बंध होय वास्ते पंच पर्वणीमे अवश्य  
विशेष धर्म कृत्य करना उचित हे.

प्राणी द्वितीया तिथीके आराधनसें रागद्वेषकों  
जय करके आगंतुक जवमें साधु श्रावक यह दो प्र  
कारके धर्मकी प्राप्ति कर शक्ताहे.

पंचमीके आराधनसे पंच ज्ञानकों प्राप्त करके  
फिर पंच विध प्रमादका त्याग होनेसें शुद्ध चारित्र  
धर्मकों प्राप्त हो शक्ता हे.

दुष्ट अष्ट कर्मोंके नाश करनेके लिए और अष्ट  
मदका जय करनेके लिए पुनः अष्ट प्रवचन माता  
का परिपालनके लिए अष्टमी तिथीकी आराधना  
करना ठीक हे

एकादशीके आराधनसे ग्यारह अंगके ज्ञानकी  
प्राप्ति होतीहे और ग्यारह श्रावककी प्रतिमाकों व  
हनेकी योग्यता प्राप्त होती हे

चतुर्दशीके आराधनसें प्राणी चउद पूर्वके ज्ञान  
योग्य होके चउदे राजके उपर सिद्धत्वावस्थाकों  
प्राप्त होता हे.

यह पंच पर्वणीका महिमां याद करके पंच पर्व

णीमें जो धर्माराधन करेतो अवश्य शुच फलकों प्राप्त कर शक्ता है.

अतएव पंच पर्वणीमें विशेष धर्माराधन तप जपा दिक करना और उत्तर गुणकी वृद्धिके लिए स्नान, मैथुनादिकका अवश्य त्याग करना पर्वणीमें अवश्य पौषध करना न बन शके तोजी प्रतिक्रमण सा मायक जप तपादि अवश्य करना

पर्वणीमें कल्याणकादि तप करना उपवास एका शणा, आयंविह, वियाशणा, नीवी प्रमुख तपसे वि शति स्थानक तप आराधना

जो विधि पूर्वक यह तप आराधन किया जाय तो परम सुखके प्रदायक, सर्वोत्कष्ट तीर्थकर गोत्र उपार्जन हो शक्ता है

पंचम्यादि तपका उद्यापन करनेसे प्रणिधानकी पूर्णाहुती होतीहै और विशिष्ट फलकी प्राप्ति हो शक्ती है वास्ते उद्यापन अवश्य सब तपके करना उपवास करके जो प्राणी पाक्षिक प्रतिक्रमण कर ताहै सो अवश्य पंदरे दिनके पापकी शुद्धी करता है और उनके उन्नय पक्ष शुद्ध होशक्ते हैं तीन चोमासीमें (आषाढ, फादगुण, कार्तिक की चउद सीमे ) अवश्य पष्ट (बेला) करना चाहिये

आष्ठम चउदश पंचमीकेदिन उपवास, प्रतिक्र मण, आरंजवर्जन, अवश्य करना चादोंकी श्रीपर्यु

षण्णपर्वणीमें अवश्य कट्पसूत्र सुनना. और यथा शक्ती विशेष धर्म कर्म करना. श्रावक धर्म कर्ममें संतोष न करे परं आरंजादिकमें संतोष करके अवश्यत्याग करे. उत्तम श्रावक एकवीस वार जो कट्प सूत्रकों सुनेतो अवश्य आठजवमें सिद्धि पदको प्राप्त हो शक्ता है. निरंतर सम्यक्तके और ब्रह्मचर्यके पालनेसें जो लाज होताहै उससें अधिक कट्प सूत्र सुननेसें होशक्ता है. दान देनेसें विचित्र तप करनेसें, सत्तीर्थके सेवन करनेसें, जो प्राणिगणके पाप क्षय होते हैं सो सब शास्त्र श्रवण का महिमा है. मुक्तिसे कोई अधिक तप, शत्रुंजय से अधिक कोई तीर्थ, सम्यक्तसे कोई तत्त्व, कट्प सूत्रसें अधिक महिमावंत कोई सूत्र नहीं है. दीवालीकी अमावास्याकी रात्रिको जगवंत महावीर स्वामी मोक्ष गए और उसी प्रतिपदाके प्रातः काल श्री गौतम स्वामीजी केवल ज्ञान पाये हैं इसलिए यह दोदीन अतीव पवित्र है वास्ते उपरोक्त महा पुरुषोंका उसदिन ध्यान स्मरण करना दीवालीमें दोठ पवास, करके धूप, दीप, करके अखंरु चावलसे गौतम स्वामीके नामका वा मंत्रका जाप करे तो इह लोक परलोकमें महोदय सुख पायें. अपने घरमें वा ग्राम चेत्यमें विधि पूर्वक पूजा करके आरती मंगल दीपक करके अपने घर जायके अपने जाइ मित्र

पुत्रादिक कों साथ लेके जोजन करनां. जगवंतके पंचकल्याणकों के दिनमे यथाशक्ती सत्पात्रोंको और याचकों को दानदेना

॥ इति दिन चर्यायां पंचम वर्गः ॥

उत्तम श्रावक धर्म कर्ममे प्रवृत्ति रखता थाका पूर्ण निवृत्तिको प्राप्त कर शक्ताहै इसलिए अतृप्त मनसे निरंतर धर्म कर्म अवश्यमेव करना

जिस धर्मसे यह मंषदाको प्राप्त हुवा है तो अवश्य उस अपने उपकारीकों सेवन किये बिना कोन रहेगा. ऐसा कोन मूर्ख होय की जिससे आगामी कालमे लाज होने वालाहै ऐसे स्वामी ( धर्म ) को सेवन करनेमें प्रमाद रखके आप स्वामी ओहीका पातकी बने ?

दान, शील, तप, ज्ञाव यह चतुर्विध धर्मकों धीर पुरुष आराधके (पुण्यानुवधिपुण्य) और मोक्ष सुखक्यो प्राप्त करलेता है थोमामेसेंजी थोमा दानदेना परं बहुत मिलनेकी अपेक्षा न रखनी,क्योंकी इष्टानु सारी लक्ष्मी क्या मालम कब मिलेगी ?

ज्ञानदानसे ज्ञानवान् होता है. अजयदानसें निर्जय होता है. अन्नदानसें सुखी होता है. औषध दानसें प्राणि अवश्य निरोगी होता है.

पुण्यकर्मसे कीर्त्ति होतीहै दान है सो मात्र कीर्त्तिके लिए नहीं है परं मोक्ष सुखके वास्ते दिया

जाताहे. मात्र कीर्तिके लिए जो प्राणी दान देते हैं सो दान धर्म नहीं है परंतु वो व्यसन है. (विनोद मात्र है ऐसा जानना. ) व्याजमे धन दुगुणा होता है व्यापारसें चोगुणा लाभ होता है. क्षेत्रसे सो गुणा लाभ होता है. परं पात्रदानमें अनंतगुण लाभ हो शक्ता है.

साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, प्रतिमाजी, मंदिरजी, ज्ञान यह सात क्षेत्रमे धनका बोना बीजके न्याय विशेष लाभ दायक होता है. जो प्राणि जक्ति जावसे जिन मंदिर नया बनाताहे उसमे बहुत लाभहै. क्यो की नये बनाये मंदिरके जितने परमाणु ( रजकण ) की संख्या होती है तितने पट्योपम प्रमाण देव सुख जोगता हैं.

औरजी यह है कि जितने दिन नया मंदिर रहता है तितने हजार वर्ष मंदिर बलानेवाला देवायु जोक्ता होसक्ता है

सोना, चांदी, पापाण, रत्न, मृत्तिका प्रमुखकी याशक्ति जो प्राणी नयी प्रतिमां जरावे तो जरानेवाला प्राणी तीर्थकर पद पामताहे कममे कम एक अंगुष्ठमात्रकीजी जो प्राणी नयी प्रतिमा जरावे सो प्राणी अवश्य देवादि सुख जोगके परमानंद पद प्राप्त होता है. मोक्षफलका देनेवाला धर्मरूप वृद्ध का मूल समान यह जैनागमको जो प्राणी लिखा

ताहे वांचताहे और जावसे सुनताहे तो उनको अत्यंत जावकी ( सम्यक्तकी ) विशुद्धी होती हे

जो प्राणि जैनागम लिखाके गुणिजनोंको वांचने के लिए समर्पण कताहे उनकों उस शास्त्रके वर्ण मात्र अक्षरकी संख्या जितने वर्ष देवलोक गति प्राप्त होती हे ।

जो ज्ञानकी जक्ति करी जातीहे वो ज्ञान विज्ञानसे शोजनीक होताहे ज्ञान विज्ञानकी प्राप्तिकरने वाला अन्नदानहे इसलिये उत्तमजन हर वर्ष यथा शक्ती एकैक स्वामीवृत्तल करे वांधव कुटुंबको जिमाना यह संसार हेतुहे परं जस्मेजी साधर्मीक वृत्तल किया जायतो अवश्यमेव विशेष लाभ प्रद होता हे अर्थात् जवसंसारसे तारकता गुणनिष्पादक हो सकता हे

हर वर्ष सर्व प्राणीने अपने अपने तरफसे अवश्यमेव एक बार तो स्वामी वृत्तल करना हि चाहिये विवेक वान् श्रावक हर वर्ष एक बार तो अवश्यमेव श्रीसंघपूजा ( प्रजावना ) यथाशक्ति करे. योग्य आहार वस्त्र प्रमुख श्रीगुरुको जलीजक्ति जावसे देवे यद्यपि अपनी विशेष शक्ति न होय तथापि यथाशक्ती सत्पात्रोंको असन, पान, खादिम स्वादिम, वस्त्र, पात्र, औषध प्रमुख अवश्य मेव देवे.

कूवा, आराम, वगीचा, वृक्ष, तलाव, गौ प्रमुख जो दान करते हैं तथापि उनका जल प्रमुखको हानी नहीं आती है प्रत्युत उनकी वृद्धि होती है तेसैं सत्पात्रमें दान देनेसैं धन जाता नहीं हैं परं प्रत्युत उनकी वृद्धि करता है ऐसा समजना चाहिये.

प्रत्यक्ष देखियें की दान देने में और शुक्तजोगी होनेमें कितना बड़ा अंतर(फरक) देखाजाता है. शुक्त जोग (खायापीया) दुसरे दिनहि विष्टारूप होजाता है. और दान दिया अक्षत होता है (वृद्धि पामता है) वास्तव में विचार किजीयें की देनेमें अधिक लाभ हुवा कीखाय खरचाय वेष्टनेमें अधिक लाभ होता है? सो विचारवंत आपहि समज सक्ते हैं.

शतसः प्रयाश करके प्राप्त किया और प्राणसेंजी अधिक बल्वज, यह धन है. उनकी गती (कार्य) मात्र एकदानहि है. अन्य गतिजो देखिजाती है सो मात्र विपत्ती समजीजाती है न्यायमार्गसे उपार्जित कि ये धनको जो विवेकी जन सप्त क्षेत्रमें नियोजित करते हैं सो श्रावक अपने धन और जीवितकों स फल कर सक्ते हैं.

॥ इति दिनचर्यायां षष्ठः वर्गः समाप्तः ॥

इति चारित्रसुंदर गणि विरचितः आचार ग्रंथः  
समाप्तः

### अथ वार्षिकचर्या माह

जैनोको वर्षदिनमे अवश्य ग्यारह कृत्य करने चाहिये सो बताते हे प्रथम संघपूजा करनी सो यथाशक्ती नवकारवालीसैं लेके सोंनामोहोर प्रमुख सब श्रावकोंमे अथवा अपने अपने गछमे बाटनी. अज्ञी वर्तमानकालमे जिस्कों ( पहिरावनी ) कहते हैं सो यथाशक्ती वर्षमे एक दो चार वार अवश्य करना चाहिये ( इससैं महालाज होता हे )

दूसरा कृत्य साधर्मीक वात्सल्य दरवर्षमे एकवारतो अवश्यमेव करना. दुःखी जैनोका यथायोग्य यथाशक्ती समुद्धरण करना गुप्त दान करना श्रावकोंको आमंत्रण करके अंतरंग जक्तिजावसे जिमाना. और तांबुल पुष्पादिक देके प्रणाम करके सबका सत्कार करना इससैं तीर्थकर गोत्र बंध होता हे.

तीसरा कृत्यमे अष्टाहिक यात्रा सो अष्टान्हिका महोत्सव मंदरजीमें करना. नही बनेतो एक वर्षमे एक वार पूजा तो अवश्य पढानी ॥ चोथा कृत्यमें रथयात्रा सो एक वर्षमे एक वार अवश्य रथ निका लना एकिलेसे नबनेतो कितनेक समुदाय मिलके- ज्ञी अवश्य करना. ॥ पांचमां कृत्यमे तीर्थयात्रा सो पंचतीर्थी वा हर कोशजी तीर्थकी समुदायसहित यथाशक्ती हरएकवर्ष एक यात्रा तो अवश्यकरनी.



ठठे कृत्यमें देवद्रव्य वृद्धि करना. यथाशक्ती यथायोग्य एकवार तो चंडार ढोकना. चक्रावा बोलना.

सातमे कृत्यमे स्नात्रादि पूजा पढाना. पुण्यवान प्राणी नित्य स्नात्र पढातेहे यदि न वनेतोत्री पर्वणी प्रमुखमे पढानी और एकवर्षमे जघन्यसे एकवारता अवश्यमेव स्नात्रपूजा पढानीइससेंजी अधिक लाभहे.

आठमें कृत्यमे हरवर्ष एकवारतो अवश्य विशेष विधिसे श्रुत ज्ञान पूजा करना. यद्यपि ज्ञान पूजा हरहमेशका कर्तव्य हे तथापि ज्ञान पंचमी प्रमुख सब पंचमीके दिन यथाशक्ती वासक्षेप धूप दीप नैवेद्य रोकनाणा वस्त्रादिकसे ज्ञानपूजा अवश्य करनी.

॥ नवमें कृत्यमे हरवर्ष एक उद्यापन करना. इसमें यह विचारहे की हरेक प्राणीकों हरवर्ष एकेक तपतो नया जघन्यसें करनाहि चाहिये. जो तप करना उस्का उद्यापन अवश्य करना. यद्यपि सब तपके उद्यापन नहि बन शके तो एक तपका तो जरूर करना.

॥ दशमे कृत्यमे तीर्थ प्रज्ञावना करना. इसमे रथ नीकालना. गुर्वादीकोका नगर प्रवेश मोठव करना ग्यारमें कृत्यमे हरवर्ष पापकी शुद्धीकेलिए गुरुके पास वार्षिक पापकी आलोचना लेणी. वर्ष दिवसमे अपने जाणतां अणजाता जो कुठ पाप हुवे होय सो गुरुको कहना और उन पापकी शुद्धीकेवास्ते जो

प्रायश्चित्त (तप) करना कहेसो स्विकार करना ॥  
इति दिनचर्यायां वार्षिक कृत्यानि ॥

॥ अथ आजन्म कृत्यान्याह ॥

त्रिवर्ग सिद्धिकेलिए सर्व प्राणिमात्रनें अपने जन्मसें जीवित पर्यंत अठारह कृत्य करना सो कहते हैं.

प्रथम कृत्य यहहे की जैनोने धर्म, अर्थ, काम यह तीन वर्ग यथायोग्य साधन हो शके ऐसे स्थान पर निवास करना क्योंकी जहां जिनमंदिर, अपने स्वजातीयजन, अपने गुरुकी जोगवाई, खान पान शुद्धी न होय ऐसे स्थानपर रहनेसें सुख न हो सकेगा.

दुसरा कृत्य यहहे की त्रिवर्गसिद्धिके लिए यथायोग्य विद्याज्यास करणा क्यों की संपूर्ण विद्या न होय तो सर्व प्रकारसे हानी प्राप्त होवेगी त्रिवर्ग संसिद्धि न हो शकेगी

तीसरा कृत्य उत्तम स्त्रीसे लग्न करना क्यों की स्त्री बिना त्रिवर्गका सुख साधन न हो सक्ता हे

चोथा कृत्यमे सन्मित्रोंसे मित्रता रखणी क्यों की सन्मित्रोंके सहवाससे कश्कड वातोका लाभ मिल शक्ता हे नहिबणे तोजी एक दो धर्ममित्रतो अवश्य रखना चाहिये

पंचम कृत्य यहहे की उत्तम प्राणीने यथाशक्ती एक जिन मंहरि अवश्य करना क्यों की इससे लक्ष्मी की साफल्यता और जन्म सफल होता हे.

ठठे कृत्यमें अपने न्यायो पार्जित वित्तसे बहुत नहितो एक दो चारजी प्रतिमा जरावणी.

सातमे कृत्यमें यथाशक्ती प्रतिष्ठा अंजन शलाकाके महोत्सव करने.

आठमे कृत्यमें पुत्रादिकोंको धर्मयोग्य करने.

नवमें पदस्थोके पद महोत्सव यथाशक्ती करना.

दशमें कृत्यमे नीति, व्यवहारीक, धार्मीक शास्त्रों वांचनेका, संग्रह करनेका सोख रखणा.

ग्यारहमें कृत्यमें पौषधशाला, विद्याशाला, धर्मशाला, औषधशाला, पांशुलाशाला यथाशक्ती करना.

चारहमें कृत्यमे धर्मशुद्धिके लिए प्रतिमा बहना.

तेरहमे कृत्यमें जीवित पर्यंत सम्यक्त पालना.

चवदमे कृत्यमें जीवित पर्यंत यथाशक्ती व्रत पक्काणकों निरतिचार परिपालन करना.

पंदरेमे कृत्यमें शक्ती होय तो दीक्षा लेना.

सोलहमे कृत्यमें वृद्धावस्थामें आरंज परिग्रह और अधिक खटपटोंका त्याग करना.

सत्तरामे कृत्यमे वृद्धावस्थामे शीलपरिपालन.

अठारहमें कृत्यमें अपना

॥ अथ चतुर्थ परिच्छेद प्रारंभः ॥

॥ अथ श्री सीमंधरजिन स्तवन ॥ रासडाना राग  
मां ॥ रुपैयो ते आलुं रोकनो. महारा  
वालाजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ मनरुं ते महारुं मोकले, महारावालाजीरे ॥  
ससिहर साथें संदेश ॥ जश्ने कहेजो महारावाला  
जी रे ॥ ए आंकणी ॥ जरतना जक्तने तारवा ॥  
मा० ॥ एक वार आवोने आदेश ॥ ज५० ॥ १ ॥  
प्रजुजी वसो पुष्करावती ॥ मा० महाविदेह खेत्र  
मजार ॥ ज५० ॥ पुरी राजें पुंडरिगिणी ॥  
मा० ॥ जिहां प्रजुनो अवतार ॥ ज५० ॥ २ ॥ श्री  
सीमंधर साहेबा ॥ मा० ॥ विचरंता वीतराग ॥  
ज५० ॥ पन्विहो बहु प्राणीने ॥ मा० ॥ तेहनो पामे  
कुण ताग ॥ ज५० ॥ ३ ॥ मन जाणे ऊनी मलुं  
॥ मा० ॥ पण पोतें नही पांख ॥ ज५० ॥ जगवंत  
तुम जोवा जणी ॥ मा० ॥ अलजो धरे ठे ए आंख  
॥ ज५० ॥ ४ ॥ दुर्गम महोटा रुंगरा ॥ मा० ॥ नदी  
नालानो नहिं पार ॥ ज५० ॥ घाटीनी आंटी घणी ॥  
मा० ॥ अटवीपंथ अपार ॥ ज५० ॥ ५ ॥ कोनी  
सोनैये कासीदी ॥ करनारो नही कोय ॥ ज५० ॥  
कागलीयो केम मोकलुं ॥ मा० ॥ होंश तो नित्य  
नवली होय ॥ ज५० ॥ ६ ॥ लखुं जे जे  
लेखमां ॥ मा० ॥ लाख गमे अजिलाप ॥ ज५० ॥

तमें लेजाभां ते लहो ॥ मा० ॥ मुज मन पूरे  
 सांग ॥ ज५० ॥ ७ ॥ लोका लोक सरूपना ॥ मा  
 ॥ जगमां तुमें ठो जाण ॥ ज५० ॥ जाण आगें  
 जणावीयें ॥ मा० ॥ आखर अमें अजाण ॥ ज५०  
 ॥ ८ ॥ वाचक उट्यनी विनति ॥ मा० ॥ ससिद्ध  
 कहा संदेश ॥ ज५० ॥ मानी लेजो महारी ॥ मा०  
 वमि दूर विदेश ॥ ज५० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री युगमंधर जिन स्तवन ॥

मघकर्णी देशीमां ॥

केवल नाण जुगल पावे, तो सविवात बनी आवे  
रे ॥ श्रीयुग० ॥ ७ ॥ गजलंघन गजगतिगामी, वि  
चरे विप्रविजय स्वामी, नयरी विजया गुणधामी  
रे ॥ श्रीयुग० ॥ ८ ॥ मात सुतारायें जायो, सुदृढ  
नरपति कुल आयो, पक्ति जिनविजये गायो रे ॥  
श्रीयुग० ॥ इति ॥

॥ अथ बीजतुं स्तवन ॥ फतमल पाणीराने जाय,  
॥ ए देशी ॥

॥ प्रणमी शारद माय, शासन वीर सुहं करूं  
जी ॥ बीज तिथि गुणगेह, आदरो नवियण सुंदरू  
जी ॥ १ ॥ एह दिन पंच कल्याण, विवरीने कहूं ते  
सुणो जी ॥ माहा शुदि बीजे जाण, जन्म अजिनं  
दन तणो जी ॥ २ ॥ आवण शुदिनी हो बीज, सु  
मति चव्या सुरलोकथी जी ॥ तारण नवोदधि तेह,  
तस पद सेवे सुरथोकथी जी ॥ ३ ॥ समेतशिखर  
शुजठाण, दशमा शीतल जिन गणुं जी ॥ चैत्र व  
दिनी हो बीज, वस्या मुक्ति तस सुख घणुं जी ॥ ४ ॥  
फाट्युन पासनी बीज, उत्तम उज्ज्वल मासनी  
जी ॥ अरनाथ तस च्यवन, कर्मद्वयें तव पास  
नी जी ॥ ५ ॥ उत्तम माघज मास, शुदि बीजें वासु  
पूज्यनोजी ॥ एहिज दिन केवल नाण ॥ शरण  
करो जीनराजनोजी ॥ ६ ॥ करणी रूप करो खेत, सम  
कित बीज रोपो तिहां जी ॥ खातर किरियाहो

जाण, खेड शमता करी जिहाजी ॥ ७ ॥ उपशम  
तडुपनीर, समकित ठोरु प्रगट होवे जी ॥ संतोष  
केरी हो वारु, पच्चरकाण व्रत चोकी सोहे जी ॥ ८ ॥  
नासे कर्म रिपु चोर, समकित वृद्ध फट्यो तिहां-  
जी ॥ मांजर अनुजव रूप, उतरे चारित्र फल जि-  
हां जी ॥ ९ ॥ शांति सुधारस वारी, पान करी सुख  
लीजीयें जी ॥ तंबोल सम द्या स्वाद, जीवने संतो  
प रस किजीयें जी ॥ १० ॥ बीज करो वावीश  
उत्कृष्टी वावीश मासनी जी ॥ चोविहार उपवास  
पालियें शील वसुधासनी जी ॥ ११ ॥ आवश्यक दो  
य वार, पकिलेहण दोय लीजीयें जी ॥ देववंदन  
त्रण काल, मन वच कायायें कीजीयें जी ॥ १२ ॥  
ऊजमण शुज चित्त, करी धरीयें संयोगथी जी ॥  
जिन वाणी रस एम, पीजीयें श्रुत उपयोगथी जी  
॥ १३ ॥ एणि विध करियें हो बीज, रागने द्वेष दूरें  
करी जी ॥ केवल पद लहि तास, वरे मुक्ति उलट  
धरी जी ॥ १४ ॥ जिन पूजा गुरु ज्ञाति, विनय करी  
सेवो सदा जी ॥ पद्मविजयनो शिष्य, ज्ञाति पामे सुख  
संपदा जी ॥ १५ ॥ इति श्री बीज तिथिनुं स्तवन ॥

॥ अथ श्री पंचमीनुं लघुस्तवन लिख्यते ॥

॥ पंचमीतप तमें करो रे प्राणी, जेम पामो नि  
र्मल ज्ञान रे ॥ पहेलुं ज्ञानने पठी क्रिया, नहिं को  
इ ज्ञानसमान रे ॥ पंचमी ॥ १ ॥ नंदीसूत्रमां झा

न वखाएयुं, ज्ञानना पांच प्रकार रे ॥ मति श्रुत अ  
वधि ने मनःपर्यव, केवल एक उदार रे ॥ पंचमी०  
॥ २ ॥ मति अठावीश श्रुत चउदह विह, अवधि  
असंख्य प्रकार रे ॥ दोय जेदें मनः पर्यव दाख्यु, के  
वल एक उदार रे ॥ पंचमी० ॥ ३ ॥ चंद्र सूर्य ग्रह  
नक्षत्र तारा, जेहवो तेज आकाश ॥ केवलज्ञान स  
मुं नहिं कोइ, लोकालो प्रकाश रे ॥ पंचमी० ॥ ४ ॥  
पारसनाथ प्रसाद करीने, ह्यारी पूरो उमेद रे ॥ स  
मयसुंदर कहे हुं पण पामुं, ज्ञाननो पांचमो जेद रे  
॥ पंचमी० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ ज्ञानपंचमी स्तवनं

॥ पुण्य प्रशंसीयें ॥ एदे शी ॥ सुत सिद्धारथ  
भूपनोरे ॥ सिद्धारथ जगवान ॥ वारह परषदा  
आगलें रे ॥ जापें श्रीवर्द्धमानोरे ॥ १ ॥ जवियण  
चित्त धरो ॥ मन वच काय अमायो रे ॥ ज्ञान  
जक्ति करो ॥ ए आंकणी ॥ गुण अनंत आतम  
तणारे, मुख्यपणे तिहां दोय ॥ तेमां पण ज्ञानज  
वरुरे ॥ जिण्णी दंसण होयरे ॥ २ ॥ ज० ॥ ज्ञाने  
चारित्र गुण वधेरे, ज्ञान उद्योत सहाय ॥ ज्ञानें  
स्थविरपणुं लहेरे, आचारज उवझायरे ॥ ३ ॥  
ज० ॥ ज्ञानी आसो आसमांरे, कठिण करम करे  
नाश ॥ वन्हि जिम इंधण दहे रे, कणमां ज्योति प्र-  
काशो रे ॥ ४ ॥ ज० ॥ प्रथम ज्ञान पठे दया



रे, संवर मोह विनाश ॥ गुण ठाणंग पग थादीयें  
 रे, जेम चढे मोह आवासो रे ॥ ५ ॥ ज० ॥ मइ  
 सुअ उहि मणपळावा रे, पंचम केवल ज्ञान ॥ चउ  
 मुंगा श्रुत एक ठे रे, स्वपर प्रकाश निदान रे ॥ ६ ॥  
 ज० ॥ तेहनां साधन जे कहां रे, पाटी पुस्तक आ-  
 दि ॥ लखे लखावे सांचवे रे, धर्मी धरी अप्रमादो  
 रे ॥ ७ ॥ ज० ॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, ज  
 णतां करे अंतराय ॥ अंधा बहेरा वोवडा रे, मुंगा  
 पांगुला आयरे ॥ ८ ॥ ज० ॥ जणतां गुणतां न आ  
 वडे रे, न मले बल्लज चीज ॥ गुण मंजरी वरदत्त  
 परेरे, ज्ञान विराधन बीज रे ॥ ९ ॥ ज० ॥ प्रेमें पूठे  
 परखदा रे, प्रणमी जग गुरु पाय ॥ गुणमंजरी वर  
 दत्तनो रे, करो अधिकार पसायो रे ॥ १० ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ कपूर होये अति उजळोरे  
 ए देशी ॥

॥ जंबुद्धीपना जरतमां रे, नयर पदम पुरखास ॥  
 अजितसेन राजा तिहां रे, राणी यशोमती तास रे  
 ॥ १ ॥ प्राणी आराधो वर ज्ञान ॥ एहज मुक्ति नि  
 दान रे ॥ प्राणी० ॥ ए आंकणी ॥ वरदत्त कुंवर ते  
 हनो रे, विनयादिक गुणवंत ॥ पितरे जणवा मूकि  
 जेरे, आठ वरस जव हुंत रे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ पमि  
 त यत्न करे घणो रे ठात्र जणावण हेत ॥ अक्षर  
 एक न आवडे रे, ग्रंथतणी शी चेत रे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥

कोठें व्यापी देहकी रे, राजा राणी संचित ॥ श्रेष्ठी  
 तेहीज नयरमां रे, सिंहदास धनवंत रे ॥ ४ ॥ प्राण॥  
 कपूरतिलका गेहिनी रे, शीखे शोजित अंग ॥ गुण  
 मंजरी तस वेढडी रे, मुंगी रोगे व्यंग रे ॥ ५ ॥  
 प्राण ॥ शोल वरपनी सा अइ रे, पामी यौवन वेश॥  
 दुर्जग पण परणे नहीं रे, मात पिता धरे खेद रे  
 ॥ ६ ॥ प्राण ॥ तेणें अवसरे उद्यानमां रे, विजयसे  
 न गणधार ॥ ज्ञान रयण रयणायरू रे, चरण करण  
 व्रतधार रे ॥ ७ ॥ प्राण ॥ वनपालक झूपाखने रे,  
 दीध वधाई जाम ॥ चतुरंगी सेना सजी रे, वंदन  
 जावे ताम रे ॥ ८ ॥ प्राण ॥ धर्मदेशना सांजले रे,  
 पुरजन सहित नरेश ॥ विकसित नयन वदन मुदा  
 रे, नहिं प्रमाद प्रवेश रे ॥ ९ ॥ प्राण ॥ ज्ञान विराधन  
 परजवे रे, मूरख परआधीन ॥ रोगे पीड्या टलवले  
 रे, दीसे दुःखीया दीन रे, ॥ १० ॥ प्राण ॥ ज्ञान  
 सार संसारमां रे, ज्ञान परमसुखहेत ॥ ज्ञान विना  
 जग जीवना रे, न लहे तत्व संकेत रे ॥ ११ ॥ प्राण॥  
 श्रेष्ठी पूठे मुणीदने रे, जांखो करुणावंत ॥ गुण  
 मंजरी मुज अंगजा रे, कवण कर्म विरतंत रे ॥  
 १२ ॥ प्राण ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ सूरती महिनानी देशीमां ॥

॥ धातकी खंडना जरतमां, खेटक नयर सुठाम॥  
 व्यवहारी जिन देव ठे, घरणी सुदरी नाम ॥ १ ॥

अंगज पांच सोहामणा, पुत्री चतुरा चार ॥ पंक्ति  
 पासैं शीखवा, तातें मुक्या कुमार ॥ १ ॥ बालस्वप्ना  
 वें रामत, करतां दहामा जाय ॥ पंक्ति मारे त्यारें,  
 मा आगल कहे आय ॥ २ ॥ सुंदरी सुखिणी शी  
 खवे, जणवानुं नहीं काम ॥ पंड्यो आवे तेम्वा, तो  
 तस हणजो ताम ॥ ४ ॥ पाटी खनिया देखण,  
 वाली कीधां राख ॥ शठने विद्या नवि रुचे, जेम क  
 रहानें डाख ॥ ५ ॥ पाम्नापरें सहोटा थया, कन्या  
 न दीये कोय ॥ शेठ कहे सुण सुंदरी, ए तुज कर  
 णी जोय ॥ ६ ॥ त्रटकी जांखे जामिनी ॥ वेटा बाप  
 ना होय ॥ पुत्री होये मातनी, जाणे ठे सहु कोय  
 ॥ ७ ॥ रे रे पापिणी सापिणी, सामा बोल म बोल ॥  
 रीसाली कहे ताहरो, पापी बाप निटोल ॥ ८ ॥  
 शेठें मारी सुंदरी, काल करी ततखेव ॥ ए तुज वेटी  
 उपनी, ज्ञानविराधन हेव ॥ ९ ॥ मूर्खागत गुणमंज  
 री, जातिसमरण पामि ॥ ज्ञान दिवाकर साचो, गु  
 रुने कहे शिरनामि ॥ १० ॥ शेठ कहे सुणो स्वामी,  
 केम जाये ए रोग ॥ गुरु कहे ज्ञान आराधो, साधो  
 वंठित योग ॥ ११ ॥ उज्ज्वस पंचमी सेवो, पंच व  
 रस पंच मास ॥ “नमो नाणस्स” गणणुं गुणो, चो  
 विहार उपवास ॥ १२ ॥ पूरव उत्तर सन्मुख, ज  
 पियें दोय हजार ॥ पुस्तक आगल ढोइये, धान्य  
 फलादिउदार ॥ १३ ॥ दीवो पंच दीवट तणो, सा

थियो मंगल गेह ॥ पोसहमां न करी शके, तेणवि  
धि पारण एह ॥ १४ ॥ अथवा सौजाग्य पंचमी, उ  
ज्ज्वल कार्तिकमास ॥ जावज्जीव लगें सेवीयें, उजम  
णा विधि खास ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ ढाल चोथी ॥ एकवीशानी देशीमां ॥

॥ पांच पोथी रे, ठवणी पाठां विटांगणां ॥  
चावखी दोरा रे, पाटी पाटला वतरणां ॥ म  
सी कागल रें, कांची खनीआ लेखणी ॥ कवली डा  
वली रे, चंद्राआ जरमर पुंजणी ॥ १ ॥ त्रूटक ॥ प्रा  
साद प्रतिमा तास जुपण, केसर चंदन गावली ॥  
वासकूंपि वालाकूंची, अग लूहणां ठावनी ॥ कलश  
थाली मंगलदीवो, आरतीने धूपणां ॥ चरवला मुह  
पत्ती साहमीवडल, नोकरवाली थापना ॥ २ ॥  
ढाल ॥ ज्ञान दरिसण रे, चरणनां साधन जे  
कह्यां ॥ तप संयुत रे, गुणमंजरीये सदह्यां ॥ नृप  
पूढे रे, वरदत्त कुंवरनें अंग रे ॥ रोग उपनो रे, क  
वण करमना जंग रे ॥ ३ ॥ त्रूटक ॥ मुनिराज जा  
से जंवु छीपें, जरत सिंहपुर गाम ए ॥ व्यवहारी  
वसु तास नंदन, वसु सार वसुदेव नाम ए ॥ वन  
मांहे रमतां दोय वंधव, पुण्य योगें गुरु मळ्या ॥ वे  
राग्य पामी जोग वामी, धर्मधामी संवर्या ॥ ४ ॥  
ढाल ॥ लघु वांधव रे, गुणवंत गुरु पदवी लहे ॥ प  
णसय मुनिने रे, सारण वारण नितु दिण ॥ कर्म

योगे रे, अशुभ उदय थयो अन्यदा ॥ संथारे रे  
 पोरिसी जणी पोढ्यो यदा ॥ ५ ॥ ब्रूटक ॥ सर्वघा  
 निंद व्यापी, साधु मागे वायणां ॥ उंघमां अंतराय  
 थातां, सूरि हुआ दूमणा ॥ ज्ञान ऊपर छेप  
 जाग्यो, लाग्यो मिथ्या भूतमो ॥ पुण्य अमृत  
 ढोली नाखुं, जस्यो पाप तणो घडो ॥ ६ ॥ ढाल ॥  
 मन चिंतवे रे, कां मुज लागुं पाप रे ॥ श्रुत  
 अज्यास्यो रे, तो एवढो संताप रे ॥ मुजबांध  
 वरे जोयण सयण सुखें करे ॥ मूरखना रे,  
 आठ गुणो मुख उच्चरे ॥ ७ ॥ ब्रूटक ॥ बार वासर  
 कोइ मुनिने, वायणा दीधी नहीं ॥ अशुभ ध्यानें  
 आयु पूरी, जूप तुज नंदन सही ॥ ज्ञानविराधन  
 मूढ जरुपणुं, कोढनी वेदन लही ॥ वृद्धवांधव मान  
 सरवर, हंसगति पाम्यो सही ॥ ८ ॥ ढाल ॥ वरद-  
 त्तने रे, जातिस्मरण उपनुं ॥ जव दीगो रे, गुरु प्र-  
 णमी कहे शुभमनो ॥ धन्य गुरुजी रे, ज्ञानजगत्रय  
 दीवको ॥ गुण अवगुण रे, जासन जे जग परवडो  
 ॥ ९ ॥ ब्रूण ॥ ज्ञानपावन सिद्धि साधन, ज्ञान कहो  
 केम आवडे ॥ गुरु कहे तपथी पाप नासे, टाढ जेम  
 घन तावकें ॥ जूप पचणें पुत्रने प्रभु, तपनी शक्ति  
 न एवमी ॥ गुरु कहे पंचमी तप आराधो, संपदा  
 द्यो वेवडी ॥ १० ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥

॥ सजरुवयण सुधारसें रे, जेदी साते धात ॥ त  
पशुं रंग नागो ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नागो रो  
गमिथ्यात्व ॥ त० ॥ १ ॥ पंचमी तप महिमा घणो  
रे, पसस्यो महीयल मांही ॥ त० ॥ कन्यासहस सयं  
वरा रे, वरदत्त परण्यो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥ जूपें  
कीधो पाटवी रे, आप थयो मुनि जूप ॥ त० ॥ जी  
म कांत गुणें करी रे, वरदत्त रवि शशि रूप ॥ त०  
॥ ३ ॥ राज रमा रमणी तणा रे, जोगवे जोग अ  
खंड ॥ त० ॥ वरसें वरसें उजवे रे, पंचमी तेज  
प्रचंड ॥ त० ॥ ४ ॥ जुक्तजोगी थयो संयमी रे, पा  
खे व्रत खट काय ॥ त० ॥ गुणमंजरी जिनचंद्रनेरे,  
परणावे निज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख विलसी थइ  
साधवी रे, वैजयंतें द्योय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण  
ऊपनो रे, जिहां सीमंधर देव ॥ त० ॥ ६ ॥ अमर  
सेन राजा घरें रे, गुणवंत नारी पेट ॥ त० ॥ लक्ष  
ण लक्षित रायने रे, पुण्यें कीधो जेट ॥ त० ॥ ७ ॥  
शूरसेन राजा थयो रे, शो कन्या जरतार ॥ त० ॥  
सीमंधर सामी कने रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥  
त० ॥ तिहां पण ते तप आदखुं रे, लोक सहित,  
जूपाल ॥ त० ॥ दश हजार वरसां लगे रे, पाले रा  
ज्य उदार ॥ त० ॥ ८ ॥ चार महाव्रत चौपशुं रे  
श्रीजिनवरनी पास ॥ त० ॥ केवल धरि मुक्ते गयो

रे, सादि अनंत निवास ॥ त० ॥ १० ॥ रमणी वि  
जय शुजापुरी रे, जंबु विदेह मजार ॥ त० ॥ अम  
रसिंह महीपालने रे, अमरावती घरनार ॥ त० ॥  
११ ॥ वैजयंतथकी चवी रे, गुणमंजरीनो जीव ॥  
त० ॥ मान सरस जेम हंसलो रे, नाम धखुं सुग्रीव  
॥ त० ॥ १२ ॥ वीशे वरसें राजवि रे, सहस चोरा  
शी पुत्र ॥ त० ॥ लाख पुरव समता धरे रे, केवल  
ज्ञान पवित्र ॥ त० ॥ १३ ॥ पंचमीतप महिमाविषे  
रे, जांखे निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणें जेहशी सु  
ख लखुं रे, तेहने तस उपकार ॥ १४ ॥ त० ॥ इति ॥

॥ ढाल ठठी ॥ करकंजुने करुं वंदना ॥ ए देशी ॥

॥ चोवीश दंरुक वारवा ॥ हुं वारी लाल ॥ चो  
वीशमो जिनचंदरे ॥ हुं वारी लाल ॥ प्रगट्यो प्राण  
त स्वर्गशी ॥ हुं ॥ त्रिशला जर सुखकंदरे ॥ हुं  
॥ १ ॥ महावीरने करुं वंदना ॥ हुं ॥ ए आंकणी ॥  
पंचमी गतिने साधवा ॥ हुं ॥ पंचम नाण विद्यास  
रे ॥ हुं ॥ माहानिशीथ सिद्धांतमां ॥ हुं ॥ पंच  
मी तप प्रकाश रे ॥ हुं ॥ २ ॥ अपराधी पण उरु  
ख्यो ॥ हुं ॥ चंरु कोशियो साप रे ॥ हुं ॥ यज्ञ  
करता ब्रामणो ॥ हुं ॥ सरखा कीधा आप रे ॥ हुं  
॥ ६ ॥ देवानंदा ब्राह्मणी ॥ हुं ॥ रिखजदत्त वली  
विप्ररे ॥ हुं ॥ व्याशी दिवस संबंधशी ॥ हुं ॥  
कामित पुख्यो द्विप्र रे ॥ हुं ॥ ४ ॥ कर्म रोगने

टाकवा ॥ हुं० ॥ सवि औपधनो जाण रे ॥ हुं० ॥  
 आदस्यो मे आशा धरी ॥ हुं० ॥ मुज उपर हित  
 आणिरे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ श्रीविजयसिंह सूरेशनो ॥  
 हुं० ॥ सत्यविजय पन्यासरे ॥ हुं० ॥ शिष्यकपूरवि  
 जय कवि ॥ हुं० ॥ चंदकिरण जस जास रे ॥ हुं०  
 ॥ ६ ॥ पास पंचासरा सान्निध्यें ॥ हुं० ॥ खिमावि-  
 जय गुरु नाम रे ॥ हुं० ॥ जिनविजय कहे मुज ह  
 जो ॥ हुं० ॥ पंचमी तप परिणाम रे ॥ हुं० ॥ ७ ॥  
 कलश ॥ इय वीर नायक, विश्वनायक, सिद्धि दाय  
 क, संस्तव्यो ॥ पंचमी तप संस्तवन टोकर, गुंथी  
 निज कंठें ठव्यो ॥ पुण्य पाटण, क्षेत्रमांहे, सत्तर त्रा  
 णुं संवत्सरें ॥ श्रीपार्श्व जन्म, कल्याण दिवसे, सक  
 ल जवि, मंगल करे ॥ ७ ॥ इति श्रीपंचमीस्तवनम् ॥

॥ अथ श्री अष्टमीनु स्तवन लिख्यते ॥

॥ हारें मारे ठाम धरमना साडा पचवीश देश  
 जो ॥ दीपे रे त्यां देश मगध सह्रमां शिरें रेलो ॥  
 हारें मारे नगरी तेहमां राजगृही सुविशेष जो ॥  
 राजे रे त्यां श्रेणिक गाजे गज परें रे लो ॥ १ ॥ हारें  
 मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो ॥ विच  
 रंतां तिहा आवी वीर समोसखारे लो ॥ हां० ॥ चउद  
 सहस्स मुनिवरना साथें साथ जो ॥ सुधारे तप  
 संयम शिष्यले अलंकखारे लो ॥ २ ॥ हां० ॥ फूल्या  
 रस जर फूल्या अंव कदंब जो ॥ जाणुं रे गुणशील



वन हसि रोमंचीयो रे लो ॥ हां० ॥ वाया वाय  
 सुवाय तिहा अविळंब जो ॥ वासें रे परि मल चिहुं  
 पासें संचियो रे लो ॥३॥ हां० ॥ देव चतुर्विध आवे  
 कोमा कोड जो ॥ त्रिगडुंरे मणि हेम रजतनुं ते  
 रचे रे लो ॥ हां० ॥ चोशठ सुरपति सेवे होमाहोर  
 जो ॥ आगें रे रस लागे, इंद्राणी नचे रे लो ॥४॥  
 हां० ॥ मणिमय हेम सिंहासन वेठा आप जो ॥  
 ढाळे रे सुर चामर मणि रत्ने जड्यां रे लो ॥ हां० ॥  
 सुणतां डुंडुजि नाद टळे सवि ताप जो ॥ वरसे रे  
 सुर फूल सरस जानू अड्यां रे लो ॥ ५ ॥ हां० ॥  
 ताजे तेजे गाजें घन जेम डुंव जो ॥ राजे रे जिन  
 राज समाजे धर्मने रे लो ॥ हां० ॥ निरखी हरखी  
 आवे जनमन डुंव जो ॥ पोपे रे रस न पडे  
 धोंखे जर्ममां रे लो ॥ ६ ॥ हां० ॥ आगम जाणि  
 जिननों श्रेणिक रायजो ॥ आठघोरे परवरियो  
 हय गय रथ पायगें रे लो ॥ हां० ॥ दइ प्रदक्षिणा  
 बंदी वेठो ठाय जो ॥ सुणवा रे जिनवाणी मोटे  
 जायगें रे लो ॥७॥ हां० ॥ त्रिभुवन नायक लायक तव  
 जगवंत जो ॥ आणीरे जन करुणा धर्मकथा कहे  
 रे लो ॥ हां० ॥ सहज विरोध विस्तारी जगना जंत  
 जो ॥ सुणवा रे जिनवाणी मनमां गह गहेरे लो  
 ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल वीजी ॥ वालम वहेलारे  
आवजो ॥ ए देशी ॥

॥ वीरजिनवर एम उपदिशे, सांजलो चतुर सु  
जाण रे ॥ मोहनी निंदमां कां पको, उलखो धर्मनां  
ठाण रे ॥ विरति ए सुमति धरी आदरो ॥ १ ॥ ए  
आंकणी ॥ परिहरो विषय कपाय रे, वापका पंच  
परमादयी ॥ कां पडो कुगतिमां धाय रे ॥ वि० ॥ १॥  
करी सको धर्मकरणी सदा, तो करो ए उपदेश रे ॥  
सर्वकाले करी नवि शको, तो करो पर्व सुविशेषरे  
॥ वि० ॥ ३ ॥ जू जूआ पर्व पटूनां कहां, फल घणां  
आगमें जोय रे ॥ वचन अनुसारें आराधतां, सर्वथा  
सिद्धिफल होय रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जीवनें आयु परज  
व तणुं, तिथिदिने वंध होय प्रायरे ॥ तेह जणि  
एह आराधतां, प्राणिउं सज्जति जाय रे ॥ वि० ॥ ५ ॥  
तेहवे अष्टमी फल तिहां, पूठे गौतम स्वामरे ॥ ज  
विक जीव जाणवा कारणे, कहे वीर प्रभु तामरे ॥  
वि० ॥ ६ ॥ अष्ट महा सिद्धि होय एहथी, संपदा  
आठनी वृद्धि रे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजे, एह  
थी आठ गुण सिद्धिरे ॥ वि० ॥ ७ ॥ लाज होय  
आठ पडिहारनो, अठ पवयण फल होंयरे ॥ नाश  
अरु कर्मनो मूलथी, अष्टमीनुं फल जोय रे ॥  
वि० ॥ ८ ॥ आदि जिन जन्म दीक्षा तणो, अजि-  
तनो जन्म कल्याण रे ॥ च्यवन संजव तणो एह

तिथें, अजिनंदन निर्वाण रे ॥ वि० ॥ १७ ॥ सुमति सु  
 व्रत नमि जनमीया, नेमनों मुक्तिदिन जाणरे ॥  
 पास जिन एह तिथे सिद्धला, सातमा जिनच्यवन  
 माण रे ॥ वि० ॥ १८ ॥ एह तिथि साधतो राजिउं,  
 दंडवीरज लह्यो मुक्तिरे ॥ कर्म हणवा जणी अष्टमी,  
 कहे सूत्र निर्युक्तिरे ॥ १९ ॥ अतीत अनागत का  
 लना, जिन तणां केश कल्याण रे ॥ एह तिथें  
 वली घणा संयमी, पामशे पढ निर्वाणरे ॥ वि०  
 ॥ २० ॥ धर्मवासित पशु पंखिआ, एह तिथे करे  
 उपवास रे ॥ व्रत धारि जीव पोसों करे, जेहने धर्म  
 अज्यास रे वि० ॥ २१ ॥ जांखियो वीरे आठम  
 तणो, जविक हित एह अधिकार रे ॥ जिन मुखें  
 उच्चरी प्राणिया, पामशे जव तणो पार रे ॥ वि० ॥  
 ॥ २२ ॥ एहथी संपदा सवि लहे, टले कष्टनी कोर  
 रे ॥ सेवजो शिष्य बुध प्रेमनो, कहे कांति करजोर  
 रे ॥ वि० ॥ २३ ॥ कलश ॥ एम त्रिजग जासन, अ  
 चल शासन, वर्द्धमान जिनेश्वरू ॥ बुध प्रेमगुरु,  
 सुपसाय पामी, संश्रूण्यो अल वेसरू ॥ जिन गुण  
 प्रसंगें, जण्यो रंगे, स्तवन ए, आठमी तणो ॥ जे ज  
 विक जावे, सुणे गावे, कांति सुख, पावे घणो ॥ २४ ॥  
 इति अष्टमी स्तवनं समाप्तं ॥

॥ अथ श्री एकादशी स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमि जिणंद, झारिका नगरी .  
समोसस्या ॥ जगपति वंदवा कृष्ण नरिंद, जादव  
कोरुशुं परिवस्या ॥ १ ॥ जगपति द्वीगुण फूल अमू  
ल, नक्तिगुणे माला रची ॥ जगपति पूजी पूठे कृ-  
ष्ण, द्वायिक समकित शिवरुचि ॥ २ ॥ जगपति  
चारित्र धर्म अशक्त, रक्त आरंज परिग्रहे ॥ जगप  
ति मुज आतम उद्धार, कारण तुम विण कोण कहे  
॥ ३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुक्त नाथ, माथे गाजे  
गुणनिलो ॥ जगपति कोय उपाय वताव, जेमकरे  
शिववधू कंतलो ॥ ४ ॥ नरपति उज्ज्वलमागशिर मास  
आराधो एकादशी ॥ नरपति एकशोनेपचाश, कढ्या  
एक तिथि उल्लसी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रे त्रण  
काल, चोवीशी त्रीशे मली ॥ नरपति नेवुं जिननां  
कढ्याण, विवरी कहुं आगल वली ॥ ६ ॥ नरपति  
अर दीक्षा नमि नाण, मल्लिजन्म व्रत केवली ॥  
नरपति वर्त्तमान चोवीशी, मांहे कढ्याणक आवली  
॥ ७ ॥ नरपति मौन पणे उपवास, दोढशो जप मा  
ला गणो ॥ नरपति मन वच कायपवित्र, चरित्र सू  
णो सुव्रत तणो ॥ ८ ॥ नरपति दाहिण धातकीखंरु,  
पश्चिम दिशि इक्षुकारथी ॥ नरपति विजय पाटण  
अजिधान, साचो नृप प्रजापालथी ॥ ९ ॥ नरपति  
नारी चंद्रावती तास, चंद्रमुखी गजगामिनी ॥ नर

पति श्रेष्ठी शूर विख्यात, शीयल सलीला कामिनी  
॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार, सार नृपण ची  
वर धरी ॥ नरपति जाये नित्य जिनगेह, नमन  
स्तवन पूजा करे ॥ ११ ॥ नरपति पोपे पात्र सुपात्र,  
सामायिक पोषध वरे ॥ नरपति देववंदन आवश्य  
क, काल बेलायें अनुसरे ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ एकदिन प्रणमी पाय, सुव्रत सा  
धु तणा री ॥ विनयें विनवे शेठ, मुनिवर करी क-  
रुणा री ॥ १ ॥ दाखो मुऊ दिन एक, थोमो पुण्य  
कीयो री ॥ बाधे जिम वरु बीज, शुज अनुबंधी थ  
यो री ॥ २ ॥ मुनि जासे महानाग्य, पावन पर्व  
घणां री ॥ एकादशी सुविशेष, तेहमां सुण सुमना री  
॥ ३ ॥ सित एकादशी सेव, मास इग्यार लगें री ॥  
अथवा वरस इग्यार, उजवी तपशुं वगे री ॥ ४ ॥  
सांजलि सद्गुरु वेण, आनंद अति उल्लस्यो री ॥  
तप सेवी उजविय, आरण स्वर्ग वस्यो री ॥ ५ ॥  
एकविंश सागर आय, पाली पुण्य वसें री ॥ सांजल  
केशवराय, आगल जेह थशे री ॥ ६ ॥ सोरीपुरमां  
शेठ, समुद्रदत्त वडो री ॥ प्रीतिमति प्रिया तास,  
पुण्ये जोग जड्यो री ॥ ७ ॥ तस कूंखें अवतार, सू  
चित्त शुज स्वपनें री ॥ जनम्यो पुत्र पवित्र, उत्तम  
ग्रह शुक्ले री ॥ ८ ॥ नालनिक्षेप निधान, नूमिथी  
प्रगट हवो री ॥ गर्जदोहद अनुजाव, सुव्रत नाम

ठव्यो री ॥ १० ॥ बुद्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र अ  
नेक जण्यो री ॥ यौवनवय अगीयार, रूपवती स्त्री  
परण्यो री ॥ १० ॥ जिन पूजन मुनिदान, सुवत प-  
ञ्चस्काण धरे री ॥ अगीयार कंचन कोरु, नायक  
पुण्य जरे री ॥ ११ ॥ धर्मघोष अणगार, तिथि अ  
धिकार कहे री ॥ सांजलि सुवत शेठ, जाति स्मरण  
लहे री ॥ १२ ॥ निजप्रत्यय मुनि शाख, जक्ते तप  
उच्चरे री ॥ एकादशी दिन आठ, पहरो पोसो धरे  
री ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ पत्नी संयुते पोसह लीधो, सु-  
वत शेठे अन्यदा जी ॥ अवसर जाणी तस्कर आ  
व्या, घरमां धन लुंटे तदा जी ॥ १ ॥ शासन जक्ते  
देवि शक्ते, थंजाणा ते वापका जी ॥ कोलाहल सुणि  
कोटवाल आव्यो, झूप आगल धर्या रांकडा जी  
॥ २ ॥ पोसह पारी देव जुहारी, दयावंत लेइ जेटणो  
जी ॥ रायने प्रणमी चोर मूकावी, शेठे कीधो पार-  
णो जी ॥ ३ ॥ अन्य दिवस विश्वानल लागो, सो-  
रीपुरमां आकरो जी ॥ शेठजी पोसह समरस वेठा,  
लोक कहे हठ कां करो जी ॥ ४ ॥ पुण्यें हाट व-  
खारो शेठनी, उगरी सह प्रशंसा करे जी ॥ हरखें  
शेठजी तपजणुं, प्रेमदा साथें आदरे जी ॥ ५ ॥  
पुत्रने घरनो चार जलावी, संवेगी शिर सेहरोजी ॥  
चउनाणी विजयशेखर सूरि, पासें तपवत आदरे जी

॥ ६ ॥ एक खट मासी चार चौमासी, दोसय ठठ  
 सो अष्ठम करे जी ॥ बीजां तप पण बहुश्रुत सुव्र-  
 त, मौन एकादशी व्रत धरे जी ॥ ७ ॥ एक अधम  
 सुर मिथ्यादृष्टि, देवता सुव्रत साधुने जी ॥ पूर्वोपा-  
 र्जित कर्म उदेरी, अंगें वधारे व्याधिने जी ॥ ८ ॥  
 कर्म नडीयो पापें जमीयो, सुर कहे जाउ औषध  
 नणीजी ॥ साधु न जाये रोष जराये, पाटु प्रहारें  
 हण्यो मुनि जी ॥ ९ ॥ मुनि मन वचन काय त्रि-  
 योगें, ध्यान अनल दहे कर्मने जी ॥ केवल पामी  
 जिन पद रामी, सुव्रतनेम कहे श्यामने जी ॥ १० ॥

॥ ढाल चोथी ॥ कान पयंपे नेमने ए, धन्य धन्य  
 यादव वंश ॥ जिहां प्रजु अवतख्या ए ॥ मुज मन  
 मानस हंस, जयो जिन नेमने ए ॥ १ ॥ धन्य शि  
 वा देवी मावनी ए, समुद्रविजय धन्य तात ॥ सु-  
 जात जगतगुरु ए, रत्नत्रयी अवदात ॥ जयो ॥ २ ॥  
 चरण विराधीउपनो ए, हुं नवमो वासुदेव ॥ जयो ॥  
 तिणे मन नवि उल्लसे ए, चरण धरमनी सेव ॥  
 जयो ॥ ३ ॥ हाथी जेम कादव गढ्यो ए, जाणुं  
 उपादेय हेय ॥ जयो ॥ तो पण हुं न करी शकुं  
 ए दुष्ट कर्मना जेय ॥ जयो ॥ ४ ॥ पण सरणो ब  
 लियातणो ए, कीजें सीजे काज ॥ जयो ॥ एहवा  
 वचनने सांजली ए ॥ वांह ग्रह्यानी लाज ॥ जयो ॥  
 ॥ ५ ॥ नेम कहे एकादशी ए, समकित युत आरा

ध ॥ जयो०॥ आईश जिनवर बारमो ए, जावि चो  
वीशियें लाध ॥ जयो० ॥ ६ ॥ कलश ॥ इय नेमि  
जिनवर, नित्य पुरंदर, रेवताचल, मंडणो ॥ बाण  
नंदमुनि, चंद वरसें राजनगरें, संशुण्यो ॥ संवेग  
रंग, तरंग जलनिधि, सत्यविजय, गुरु, अनुसरी ॥  
कपूरविजय कवि, हमा विजय गणि, जिन विजय  
जय, सिरि वरी ॥ १ ॥

॥ अथ श्री आराधनानुं स्तवन प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥ सकल सिद्धिदायक सदा, चोवीशे  
जिनराय ॥ सहगुरु सामिनी सरसती, प्रेमें प्रणमुं  
पाय ॥ १ ॥ त्रिभुवनपति त्रिशला तणो, नंदन गुण  
गंजरीर ॥ शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान वरुवी  
र ॥ २ ॥ एक दिन वीर जिणंदने, चरणे करि पर-  
णाम ॥ जविक जीवना हित जणी, पूठे गौतम स्वा  
मि ॥ ३ ॥ मुक्तिमार्ग आराधियें, कहो किण परें अ  
रिहंत ॥ सुधां सरस तव वचन रस, जांखे श्री जग  
वंत ॥ ४ ॥ अतिचार आलोश्यें, व्रत धरीये गुरु शा  
ख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोराशी लाख  
॥ ५ ॥ विधिशुं वली वोसिरावियें, पाप स्थान अढा  
र ॥ चार शरण नित्य अनुसरो, निदो डुरित आ-  
चार ॥ ६ ॥ शुभकरणी अनुमोदियें, जाव जलो मन  
आण ॥ अणसण अवसर आदरी, नवपद जपो सु-  
जाण ॥ ७ ॥ शुभगति आराधन तणा, ए ठे दश



अधिकार ॥ चित्त आणीने आदरो, जेम पामो  
वज्र पार ॥ ८ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ ए ठिंकि किहां राखी ॥ ए देशी ॥

ज्ञान दरिसन चारित्र तप वीरज, ए पांचे  
आचार ॥ एह तणा इह जव परजवना, आलोश्यें  
अतिचार रे ॥ १ ॥ प्राणी ज्ञान जणो गुणखाणी ॥  
वीरवदे एम वाणी रे प्रा० ॥ ज्ञा० ॥ ए आंकणी  
गुरु उलवियें नहिं गुरु विनयें, काळें धरी बहुमान ॥  
सूत्र अर्थ तडुजय करी सूधां, जणीयें वही उपधा  
न रे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ ज्ञा० ॥ ज्ञानोपकरण पाटी  
पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥ तेह तणी कीधी आ  
शातना, ज्ञान जक्ति न संजाली रे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥  
इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ  
जव परजव वलिय जवोजवे, मिढाडुकर तेह रे ॥  
॥ ४ ॥ प्राणी समकित ल्यो शुद्ध जाणी ॥  
ए आंकणी ॥ जिनवचनें शंका नवि कीजे, नवि पर  
मत अजिलाख ॥ साधुतणी निंदा परिहरजो, फ  
लसंदेह म राख रे ॥ ५ ॥ प्रा० ॥ स० ॥ मूढपणुं  
ठंको परसंसा गुणवंतने आदरियें ॥ सामीनें धर्मे  
करी थिरता, जक्ति प्रजावना करीयें रे ॥ ६ ॥ प्रा० ॥  
॥ स० ॥ संघचैत्य प्रासाद तणो जे, अवर्णवाद म  
न लेख्यो ॥ ड्रव्य देवको जेविणसाड्यो, विणसंतां

उवेख्यो रे ॥ ७ ॥ प्रा० स० ॥ इत्यादिक विपरीत  
 पणार्थी, समकित खंड्युं जेह ॥ आज्ञव० ॥ मिष्ठा०  
 ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ चारित्रल्यो चित्त आणी ॥ ए आंक  
 णी ॥ पांच समिति त्रण गुप्ति विराधि, आठे प्रवच  
 न माय ॥ साधुतणे धर्मे परमादे, अशुरू वचनमन  
 काय रे ॥ ए ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ श्रावकने धर्मे सामा  
 यिक, पोसहमां मन वाली ॥ जे जयणा पूर्वक जे  
 आवे, प्रवचन माय न पाली रे ॥ १० ॥ प्रा० ॥ चा० ॥  
 इत्यादिक विपरीतपणार्थी, चारित्र मोढ्युं जेह ॥  
 आज्ञव० ॥ मिष्ठा० ॥ ११ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ वारें  
 जेदे तप नवि कीधुं, ठते योगें निज शक्ते ॥ धर्मे  
 मनवचन काया वीरज, नवि फेरवियो जगतें रे ॥  
 ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ तपवीरज आचारें एणी परें  
 विविध विराध्या जेह ॥ आज्ञव० ॥ मिष्ठा० ॥ १३ ॥  
 प्रा० ॥ चा० ॥ बलीय विशेषे चारित्र केरा,  
 अतिचार आलोश्यें ॥ वीर जिणेसर वयण सुणीने,  
 पाप मयल सवि धोश्यें रे ॥ १४ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥  
 ॥ ढाल वीजी ॥ पामी सुगुरूपसाय रे ॥ ए देशी ॥  
 ॥ पृथिवी पाणी तेड रे, वाड वनस्पति ॥ एपांचे  
 थावर कहां ए ॥ करि करसण आरंज, खेत्र जे  
 खेमीयां ॥ कूवा तलाव खणावीयां ए ॥ १ ॥ घर  
 आरंज अनेक, टांकां जोंयरां ॥ मेडी माल चणावी  
 याए ॥ लिपण घूपण काज, एणी परें परपरें ॥ पृथि

वी काय विराधीया ए ॥१॥ धोयण नाहण पाणी, जील  
 ण अपकाय ॥ ठोतीधोती करी दूहव्यां ए ॥ जाठी  
 गर कुंजार, लोह सोवनगरा ॥ चारुचुंजा लिहाला  
 गरा ए ॥ ३ ॥ तापण शेकण काजें, वस्त्र निखारण  
 ॥ रंगण रांधण रसवतीए ॥ एणी परे कर्मादान, परे  
 परिं केलवी ॥ तेउ वाउ विराधीया ए ॥४॥ वाडीवन  
 आराम, वावी वनस्पति ॥ पान फूल फल चुंटीयां  
 ए ॥ पोहक पापनी शाक, शेक्यां शूकव्यां ॥ ठुंवां  
 ठेव्यां आधीयां ए ॥ ५ ॥ आलसीनें एरंरु, घांणी  
 घालीने ॥ घणा तिलादिक पीलीया ए ॥ घाली  
 कोलुं मांदि, पीली सेलनी ॥ कंद मूल फल वेचीयां  
 ए ॥ ६ ॥ एम एकेंद्रिय जीव, हण्या हणाविया ॥  
 हणतां जें अनु मोदीया ए ॥ आ जव परजव जेह,  
 वलिय, जवोजवें ॥ ते मुऊ मिठामि डुकरं ॥ ७ ॥  
 क्रमी सरमीयां कीना, गारुर गंमोला ॥ इयल पूरा अ  
 लसीयां ए ॥ वाला जलो चुडेल, विचक्षित रसत  
 णा ॥ वली अथाणां प्रमुखनां ए ॥ ८ ॥ एम बे इं  
 द्रिय जीव, जे में दूहव्या ॥ ते मुऊ ॥ उदेही जूं  
 लीख, मांकड मंकोडा ॥ चांचड कीडी कुंथुआ ए  
 ॥९॥ गदहीयां घीमेल, कान खजूरडा ॥ गींगोमांधनेनी  
 यां ए ॥ एम तेइंद्रिय जीव, जे में डुहव्या ॥ ते मु  
 ऊ ॥ १० ॥ माखी मत्सर मांस; मसा पतंगीया ॥  
 कंसारी कोलियावडाए ॥ ढांकणवीडु तीड, जमरा

नमरीयो ॥ कौंता बग खरुमांकरी ए ॥ ११ ॥ एम  
चौरिंद्रिय जीव, जे में दूहव्या ॥ ते मुऊ० ॥ जलमां  
नाखी जाल, जलचर दूहव्या ॥ वनमा मृग संतापी  
या ए ॥ १२ ॥ पीड्या पंखी जीव, पानी पासमां ॥  
पोपट घाव्या पांजरे ए ॥ एम पंचेंद्रिय जीव, जे में  
डूहव्या ॥ ते मुऊ० ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ प्रथम गोवाला तणे नवे जी ॥ ए देशी ॥

॥ क्रोध लोच नय हास्यथी जी, वोढ्यां वचन  
असत्य ॥ कूड करी धन पारकां जी, लीधां जेह अ  
दत्त रे ॥ जिनजी ॥ १ ॥ मिष्टाद्रुकड आज, तुज  
साखें महाराज रे ॥ जिनजी ॥ देश सारुंकाज रे ॥  
जिनजी ॥ मि० ॥ ए आंकणी ॥ देव मनुज ति-  
र्यचना जी, मैथुन सेव्यां जेह ॥ विषयरस लंपटपणे  
जी, घणुं विटंब्यो देह रे ॥ जि० ॥ २ ॥ मि० ॥ प-  
रिग्रहनी ममता करी जी, नव नव मेली आ  
थ ॥ जे जिहांनी ते तिहां रही जी, कोइ न आ-  
वी साथ रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ मि० ॥ रयणी नोजन  
जे कस्यां जी, कीधा नदय अजदय ॥ रसना रसनी  
लासचें जी, पाप कस्यां प्रत्यक्ष रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ मि० ॥  
व्रत लेई विसारीयां जी, वली चांग्यां पच्चस्काण ॥ क  
पटहेतु किरिया करी जी, कीधां आप वखाण रे ॥  
जि० ॥ ५ ॥ त्रण ढाल आवे डूहे जी, आलोया

अतिचार ॥ शिवगति आराधनतणो जी, ए पहेलो  
अधिकार रे ॥ जि० ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ साहेलमीनी देशी ॥

॥ पंच महाव्रत आदरो ॥ साहेलमी रे ॥ अथ-  
वा ल्यो व्रत वार तो ॥ यथाशक्ति व्रत आदरी ॥  
सा० ॥ पालो निरतिचार तो ॥ १ ॥ व्रत लीधां सं-  
जारीयें ॥ सा० ॥ हियडे धरीय विचार तो ॥ शिव  
गति आराधनतणो ॥ सा० ॥ ए बीजो अधिकार-  
तो ॥ २ ॥ जीव सवे खमावियें ॥ सा० ॥ योनि चोरा  
शी लाख तो ॥ मन शुद्ध करो खामणां ॥ सा० ॥  
कोंइशुं रोष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चिं-  
तवों ॥ सा० ॥ कोइ न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष  
एम परिहरो ॥ सा० ॥ कीजें जन्म पवित्रतो ॥ ४ ॥  
साहम्मी संघ खमावियें ॥ सा० ॥ जे उपनी अप्रीति  
तो ॥ सज्जन कुटुंब करी खामणां ॥ सा० ॥ ए जि  
नशासन रीति तो ॥ ५ ॥ खमियें ने खमावियें ॥  
सा० ॥ एहज धर्मनो सार तो ॥ शिवगति आराध-  
नतणो ॥ सा० ॥ ए त्रीजो अधिकार तो ॥ ६ ॥ मृ  
पावाद हिंसा चोरी ॥ सा० ॥ धन मूर्खा मेहुन्नतो ॥  
क्रोध मान माया तृष्णा ॥ सा० ॥ प्रेम द्वेष पैशुन्य  
तो ॥ ७ ॥ निंदा कलह न किजीयें ॥ सा० ॥ कूडां  
न दीजें आल तो ॥ रति अरतिमिथ्या तजो ॥ सा० ॥  
माया मोह जंजाल तो ॥ ८ ॥ त्रिविध त्रिविध वो-

सिरावियें ॥ सा० ॥ पापस्थान आढार तो ॥ शिव  
गति आराधन तणो ॥ सा० ॥ ए चोथो अधिकार तो ॥ ए ॥  
ढाल पांचमी ॥ हवे निसुणो इहां आवीया ए एदेशी

॥ जनम जरा मरणें करीए, ए संसार असार तो  
॥ कस्यां कर्म सह्य अनुजवे ए, कोइ न राखणहार  
तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण सिद्ध न  
गवंत तो ॥ शरण धर्म श्रीजैननो ए, साधु शरण गु  
णवंत तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परहरी ए, चार  
शरण चित्त धार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ए  
ए पांचमां अधिकार तो ॥ ३ ॥ आ जव परजव जे  
कस्यां ए, पापकर्म केई लाख तो ॥ आत्मसाखें  
ते निंदीये ए, पडिक्कमियें गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मि  
थ्यामति वर्त्तावियां ए, जे जांख्यां उत्सूत्र तो ॥ कु  
मति कदाग्रहने वशें ए, वली थाप्यां उत्सूत्र तो ॥  
५ ॥ घड्यां घमाव्यां जे घणां ए, घरटी हल हथी  
यार तो ॥ जव जव मेली मूकीयां ए, करता जीव  
संहार तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोपिया ए, जनम ज  
नम परिवार तो ॥ जनमांतर पडोता पठी ए, कोइ  
न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आ जव परजव जे कस्यां  
ए, एम अधिकरण अनेकतो ॥ त्रिविध त्रिविध वो  
सिरावीयें ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ दुष्कृ  
त निंदा एम करी ए, पाप कस्यां परिहार ॥ शिवग  
ति आराधन तणो ए, ए ठो अधिकार तो ॥ ए ॥

॥ ढाल ठछी ॥ आदर तुं जोइने आपणी ॥ ए देशी ॥

॥ धन्य धन्य ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म ॥  
 दान शीयल तप आचरी, टाढ्यां दुष्कर्म ॥ ध० ॥ १ ॥  
 शत्रुंजयादिक तीर्थनी, जे कीधी यात्र ॥ युगतें जिन  
 वर पूजीया, वली पोंख्यां पात्र ॥ ध० ॥ २ ॥ पुस्तक  
 ज्ञान लखावीयां, जिणहर जिणचैत्य ॥ संघ चतुर्वि  
 ध सांचव्या, ए साते खेत्र ॥ ध० ॥ ३ ॥ पम्क्कमणां  
 सुपरें कस्यां, अनुकंपा दान ॥ साधु सूरि उवजायनें  
 दीधां बहुमान ॥ ध० ॥ ४ ॥ धर्मकारज अनुमोदि  
 यें, एम वारोवार ॥ शिवगति आराधनतणो, ए सा  
 तमो अधिकार ॥ ध० ॥ ५ ॥ जाव जलो मन आ  
 णीयें, चित्तआणी ठाम ॥ समता जावें जावीयें, ए  
 आतमराम ॥ ध० ॥ ६ ॥ सुख दुःख कारण जीवने,  
 कोइ अवर न होय ॥ कर्म आप जे आचख्यां, जो  
 गवियें सोय ॥ ध० ॥ ७ ॥ समता विण जे अनुसरे,  
 प्राणी पुण्यनां काम ॥ ठारउपर ते लीपणुं, जांखर  
 चित्राम ॥ ध० ॥ ८ ॥ जाव जली परें जावीयें, ए ध  
 र्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो, ए आठमो  
 अधिकार ॥ ध० ॥ ९ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ रेवतगिरि उपरें ॥ ए देशी ॥

॥ हवे अवसर जाणी, करीयें संक्षेपण सार ॥ अ  
 णसण आदरीयें, पच्चस्की चार आहार ॥ ललुता स  
 वि मूकी, ठांडी ममता संग ॥ ए आतम खेले, स-

मता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति चारें कीधा, आहार  
 अनंत निःशंक ॥ पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लाल  
 चीयो रंक ॥ डुलहो ए वली वली, अणसणनो प  
 रिणाम ॥ एथी पामीजे, जिवपद सुरपद ठाम ॥ २ ॥  
 धनधन्नाशालिजड, खंधोमेघकुमार ॥ अणसण आ  
 राधी, पाम्या जवनोपार ॥ शिवमंदिर जाशे, करी  
 एक अवतार ॥ आराधन केरो, ए नवमो अधिकार  
 ॥ ३ ॥ दशमे अधिकारे, महामंत्र नवकार ॥ मनथी  
 नवि मूको, शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जा  
 ये, दुर्गति दोष विकार ॥ सुपरे ए समरो, चउद पू  
 रवनो सार ॥ ४ ॥ जन्मांतरे जातां, जो पामे नवका  
 र ॥ तो पातक गाली, पामे सुर अवतार ॥ ए नव  
 पद सरिखो, मंत्र न को संसार ॥ इह जवने परजवे, सु  
 ख संपत्ति दातार ॥ ५ ॥ जुळ जीलने जीलकी रा  
 जा राणी थाय ॥ नव पद महिमाथी, राजसिंह म  
 हाराय ॥ राणी रतनवती वेहु, पाम्या ठे सुरजोग ॥  
 एक जवथी लेशे, सिद्धि वधू संयोग ॥ ६ ॥ श्रीम  
 ती ने ए वली, मंत्र फल्यो ततकाल ॥ फणिधर फी  
 टीने, प्रगट थइ फूलमाल ॥ शिवकुमरे योगी, सोव  
 नपुरिसो कीध ॥ एम एणे मंत्रे, काज घणानां सि  
 ङ्ग ॥ ७ ॥ ए दश अधिकारे, वीर जिणेंसर जांख्यो ॥  
 आराधन केरो, विधि जेणे चित्तमां राख्यो ॥ तेणे



॥ ढाल ठठी ॥ आदर तुं जोइने आपणी ॥ ए देशी ॥

॥ धन्य धन्य ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म ॥  
 दान शीयल तप आचरी, टाढ्यां दुष्कर्म ॥ ध० ॥ १ ॥  
 शत्रुंजयादिक तीर्थनी, जे कीधी यात्र ॥ युगतें जिन  
 वर पूजीया, वली पोंख्यां पात्र ॥ ध० ॥ २ ॥ पुस्तक  
 ज्ञान लखावीयां, जिणहर जिणचैत्य ॥ संघ चतुर्वि  
 ध सांचव्या, ए साते खेत्र ॥ ध० ॥ ३ ॥ पमिकमणां  
 सुपरें कस्यां, अनुकंपा दान ॥ साधु सूरि उवजायनें  
 दीधां बहुमान ॥ ध० ॥ ४ ॥ धर्मकारज अनुमोदि  
 यें, एम वारोवार ॥ शिवगति आराधनतणो, ए सा  
 तमो अधिकार ॥ ध० ॥ ५ ॥ जाव जलो मन आ  
 णीयें, चित्तआणी ठाम ॥ समता जावें जावीयें, ए  
 आतमराम ॥ ध० ॥ ६ ॥ सुख दुःख कारण जीवने,  
 कोइ अवर न होय ॥ कर्म आप जे आचख्यां, जो  
 गवियें सोय ॥ ध० ॥ ७ ॥ समता विण जे अनुसरे,  
 प्राणी पुण्यनां काम ॥ ठारउपर ते लीपणुं, जांखर  
 चित्राम ॥ ध० ॥ ८ ॥ जाव जली परें जावीयें, ए ध  
 र्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो, ए आठमो  
 अधिकार ॥ ध० ॥ ९ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ रेवतगिरि उपरें ॥ ए देशी ॥

॥ हवे अवसर जाणी, करीयें संक्षेपण सार ॥ अ  
 णसण आदरीयें, पच्चस्की चार आहार ॥ ललुता स  
 वि मूकी, ठांडी ममता संग ॥ ए आतम खेले, स-

मता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति चारें कीधा, आहार  
 अनंत निःशंक ॥ पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लाल  
 चीयो रंक ॥ डुलहो ए वली वली, अणसणनो प  
 रिणाम ॥ एथी पामीजे, जिवपद सुरपद ठाम ॥ २ ॥  
 धनधन्नाशालिजड, खंधोंमेघकुमार ॥ अणसण आ  
 राधी, पाम्या जवनोपार ॥ शिवमंदिर जाशे, करी  
 एक अवतार ॥ आराधन केरो, ए नवमो अधिकार  
 ॥ ३ ॥ दशमे अधिकारे, महामंत्र नवकार ॥ मनथी  
 नवि मूको, शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जा  
 ये, दुर्गति दोष विकार ॥ सुपरे ए समरो, चउद पू  
 रवनो सार ॥ ४ ॥ जन्मांतरे जातां, जो पामे नवका  
 र ॥ तो पातक गाली, पामे सुर अवतार ॥ ए नव  
 पद सरिखो, मंत्र न को संसार ॥ इह जवने पर जवे, सु  
 ख संपत्ति दातार ॥ ५ ॥ जुळ जीलने जीलनी रा  
 जा राणी थाय ॥ नव पद महिमाथी, राजसिंह म  
 हाराय ॥ राणी रत्नवती बेहु, पाम्या ठे सुरजोग ॥  
 एक जवथी लेशे, सिद्धि वधू संयोग ॥ ६ ॥ श्रीम  
 ती ने ए वली, मंत्र फट्यो ततकाल ॥ फणिधर फी  
 टीने, प्रगट थड फूलमाल ॥ शिवकुमरे योगी, सोव  
 नपुरिसो कीध ॥ एम एणे मंत्रे, काज घणानां सि  
 ङ्ग ॥ ७ ॥ ए दश अधिकारे, वीर जिणेसर जांख्यो ॥  
 आराधन केरो, विधि ने चित्तमां राख्यो ॥ तेणे

पाप पखाळी, जव जय दूरें नाख्यो ॥ जिन विनय करंतां, सुमति अमृतरस चाख्यो ॥ ८ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ नमो जवि जावशु ए ॥ ए देशी ॥

सिद्धारथ राय कुलतिलो ए, त्रिशलामात मढ्हा र तो ॥ अवनीतले तुमे अवतस्या ए करवा अम उ पगार ॥ १ ॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ ए आंकणी ॥ में अपराध कस्या वणा ए, कहेतां न लहुं पार तो ॥ तुम चरणे आव्या जणी ए, जो तारे तो तार ॥ ११ ॥ ज० ॥ आश करीने आवीयो ए, तुम चरणे माहा राज तो ॥ आव्याने जवेखशो ए, तो केम रहेसो लाज ॥ ३ ॥ ज ॥ कर्म अलुजण आकरां ए, जन्म मरण जंजाल तो ॥ हुं हुं एहशी उजग्यो ए, ठोडा वो देवदयाल ॥ ४ ॥ ज० ॥ आज मनोरथ मुज फ द्या ए, नागां दुःख दंदोल तो ॥ तूवो जिन चोवी शमो ए, प्रगट्या पुण्य कल्लोल ॥ ५ ॥ ज० ॥ जव जव विनय तुमारको ए, जाव जक्ति तुम पाय तो ॥ देव दया करी दीजिये ए, बोध बीज सुपसाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ इति ॥

॥ कलश ॥ इय तरण तारण, सुगति कारण, डु खनिवारण, जग जयो ॥ श्रीवीर जिनवर चरण शु णतां, अधिक मन, उलट थयो ॥ १ ॥ श्री विजय देव, सुरींद पटधर, तीरथ जंगम, इणि जगे ॥ तप गठेपति श्रीविजयप्रज सरि. सरितेजे. जगमगे ॥ ११ ॥

श्रीहीरविजय सूरि, शिष्य वाचक, कीर्त्तिविजय, सु  
रगुरु समो ॥ तस शिष्य वाचक, विनयविजये, शु  
एयो, जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥ इस सत्तर संवत्, उंग  
ए त्रीशे, रही रांदेर चौमास ए ॥ विजय दशमी,  
विजय कारण, किउ गुण अज्यास ए ॥ ४ ॥ नरज  
व आराधन, सिद्धि साधन, सुकृत लील, विदास  
ए ॥ निर्जरा हेतें स्तवन रचियुं, नामे पुण्य, प्रका  
शए ॥ ५ ॥ इति श्रीपुण्यप्रकाशस्तवनं समाप्तं ॥

॥ अथ श्री सिद्धचक्रजीनु स्तवन ॥

॥ आठे लालनी देशी ॥

॥ समरी शारदा माय, प्रणमी निज गुरुपाय ॥  
आठे लाल ॥ सिद्धचक्र गुण गायशुं जी ॥ ए सिद्ध  
चक्र आधार, जवि उत्तरे जवपार ॥ आ० ॥ ते जणी  
नवपद ध्यायशुं जी ॥ १ ॥ सिद्ध चक्र गुणगेह, जस  
गुण अनंत अठेह ॥ आ० ॥ समर्या संकट उपश  
मेजी ॥ लहियें वंठित जोग, पामी सवि संजोग ॥  
॥ आ० ॥ सुरनर आवी बहु नमेजी ॥ २ ॥ कष्ट  
निवारे एह, रोग रहित करे देह ॥ आ० ॥ मय  
णासुंदरी श्रीपालनेजी ॥ ए सिद्ध चक्र पसाय, आ  
पदा झूरें जाय ॥ आ० ॥ आपे मंगल मालने जी ॥  
॥ ३ ॥ ए सम अवर न कोय, सेवे ते सुखीयो होय  
॥ आ० ॥ मन वच काया वश करीजी ॥ नव आं  
विल तप सार, पम्किमणु दोय वार ॥ आ० ॥ देव

वंदन त्रण टंकना जी ॥ ४ ॥ देव पूजो त्रणवार, ग  
 णणुं ते दोय हजार ॥ आ० ॥ स्नान करी निर्मल  
 पणेंजी ॥ आराधे सिद्ध चक्र, सान्निध्य करें तेनी  
 शक्र ॥ आ० ॥ जिनवर जन आगें जणे जी ॥ ५ ॥  
 ए सेवो निशिदीस, कहीयें वीशवा वीश ॥ आ० ॥  
 आल जंजाल सवि परिहरो जी ॥ ए चिंतामणी  
 रत्न, एहना कीजें यल ॥ आ० ॥ मंत्र नही एह  
 उपरें जी ॥ ६ ॥ श्रीविमलेश्वर यक्ष, हो जो मुज  
 परतक्ष ॥ आ० ॥ हुं किंकर हुं ताहरो जी ॥ पाम्यो  
 तुंहिज देव, निरंतर करुं हवे सेव ॥ आ० ॥ दिवस  
 वढ्यो हवे माहरोजी ॥ ७ ॥ विनति करुं तुं एह,  
 धरजो मुजशुं नेह ॥ आ० ॥ तमनें शुं कहियें बली  
 बली जी ॥ श्रीलक्ष्मी विजय गुरुराय, शिष्य केसर  
 गुण गाय ॥ आ० ॥ अमर नमे तुज लली ललीजी ॥ ८ ॥

॥ नवपदजीनुं स्तवन ॥

नवपद ध्यान सदाजयकारी ॥ ए आंकणी ॥ अरिहंत  
 सिद्ध आचारज पाठक, साधु देखो गुणरूप उदारी  
 ॥ नवपद ॥ १ ॥ दरशन ज्ञान चारित्रहे उत्तम, तप  
 दोअभेदे हृदयविचारी ॥ नवपद ॥ २ ॥ मंत्रजडी उर  
 तंत्र घणैरा, उन सवकुं हमदूर विसारी ॥ नवपद ॥ ३ ॥  
 बहुत जीव जवजलसे तारे, गुण गावत हे बहु नरना  
 री ॥ नवपद ॥ ४ ॥ श्रीजीन जक्त मोहन मुनी वंदत;  
 दिनदिन चरुते हरख अपारी ॥ नव ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ मङ्गल ॥

रागिणी कालेंगरा

मङ्गल मूरत पाशकी या ॥ मङ्ग० ॥ दारुण पङ्क  
मकल दुखहारी, दायकहै सुखरासकी या ॥ मङ्ग० १॥  
तेवन ईन्द्र चन्द्र रबी सुरगुरु, चाहत हैं नित जा-  
तकी या ॥ मङ्ग० २ ॥ निरखत नैन सफल जई  
आस्या, करण चरणके दासकी या ॥ मङ्ग० ३ ॥ इति ॥

रागिणी बाहार

आज महोदध रंग रलीरी, जायो सुत त्रिसलादे  
राणी, कामित पूरण काम कलिरी ॥ आ० ॥ सजि सिन-  
गार सकल सूर वनिता, आपन आपन मेल चलिरी ॥  
आवत सिद्धारथके आङ्गण, पूरत मोतीयन चोक  
मीलिरी ॥ आ० १ ॥ ईन्द्र हुकुम करी धनद पठायो  
सब वसुधा धन धान्य जरिरी ॥ कनक रत्नमणि पंच  
वरणके, कुंसुम विखेरत गलीय गलीरी ॥ आ० २ ॥  
इन्द्राणी मिल मङ्गलगावे, नाचत नाटक सूर कुम-  
रीरी ॥ वाजत गहर शब्द कर दुन्दुभी, वीणा  
वेणु मृदङ्ग जलीरी ॥ आ० ३ ॥ जय जय कार जयो  
तिहुं जगमे, व्याधि व्यथा सब दूर टलीरी ॥  
हरखचंद जनमें प्रजु मेरे, मनकी आस्या सफल  
फलिरी आ० ४ ॥ इति ॥

चैतावरकी चाल

मङ्गल राजे गिरनार, नेमपट मङ्गल है ॥ देवा० ॥

राजमती पद पङ्कज, मंगल रहै नेमी राय ॥ ने० १ ॥  
 मंगल धन धन्या मुनिनाथक, सब तपसि विच सार  
 ने० २ ॥ मंगल गणपति मंगल पाठक मंगल सब  
 अनगार ॥ ने० ३ ॥ जयजय २ खेम कुशल गुरु,  
 आनन्द धन अवतार ॥ ने० ४ ॥ इति ॥

### रागिणी काफि

गावो मङ्गलचार, सखीरी वीर प्रभुको जन्म  
 जयो है । अवधी ज्ञान कर ईन्द्र हूकमदीयो, करहुं  
 महोदव सार ॥ स० १ ॥ मेरुशिखर पर देव सकल  
 मिल, करत सुजक्ति अपार ॥ स० २ ॥ वसु विधि  
 पूज रचत प्रभुजीकि, सफल करत अवतार ॥ स० ३ ॥  
 जय जय शब्द करत सूर नर वर, जय जय जगदा-  
 धार ॥ स० ४ ॥ अजर अमर पद दायक प्रभुजी,  
 सेवो शिव सुखकार ॥ स० ५ ॥ इति ॥

### रागिणी ईमन कल्याण

कीजे मङ्गलचार, आज घर नाथ पधारे ॥ की० ॥  
 पहले मङ्गल जीनजीकी पूजा, घस केशर घनसार ॥  
 आ० १ ॥ छुजे मङ्गल धुप जो खेजं, और चढाऊ  
 पुष्प हार ॥ आ० २ ॥ तिजे मङ्गल घण्टा बजावुं,  
 जांजनकी जङ्कार ॥ आ० ३ ॥ चोथे मङ्गल आरती  
 जतारुं, नाचुं येई येई तार ॥ आ० ४ ॥ रूप चन्द कहे  
 कहां लग वरणुं, शिव लहिये जव पार ॥ आ०  
 की० ५ ॥ इति ॥

रागिणी सोहिनी-ताल यत

आज की रेण सोहाई, दरस मोहनकी में पाई ॥  
आ० ॥ पद पङ्कज तेरो मन मधुकर मेरो, सदा रहत  
लपटाई ॥ द० १ ॥ नवपद ध्यान सदा में चाहुं,  
अवर नही दील जाई द० ॥ २ ॥ अजर अमर पद  
चाहत तुमसे, आनन्द मङ्गल वधाई ॥ द० ॥ ३ ॥ इति

रागिणी काफी

पोढो पोढोजी कृपज पीयारे, निद्रा वस नयन  
तिहारे ॥ पोढो० ॥ प्रभु आलस अती ललसानी,  
पुठे मरुदेव्या माई ॥ पोढो० ॥ १ ॥ प्रभु सुनन्द  
सुमङ्गला राणी, जिनरुच रुच सेज सवारी ॥  
पोढो० ॥ २ ॥ प्रभु नवल साजन्य सनेही, तुंती मन  
वन्तित फल देही ॥ पोढो ॥ ३ ॥ इति ॥

रागिणी जैरवी

राखो नाथ वडाई, हमारी ॥ रा० सेवा चोर  
सदा मोहे जानो, दरसन देवोनें गुसाई हमारे ॥  
रा० १ ॥ अनाथनके नाथ जगत जन वञ्चल, सुन्दर  
वदन सुहाई हमारे ॥ रा० २ ॥ जानु चन्द प्रभु जल  
थल अम्बर, जहां देखो तहां सहाई हमारे ॥ ३ ॥ इति

रागिणी कालेंगरा ॥

आवो गावो वधाई मोरी साथनीयां ॥ आवो० ॥  
नृप सुमित्रके पदमा देवी, सुत जायो सुखदाईरी ॥  
आवो० १ ॥ जन्म कल्याणक करीये जाको, मुनि



सुव्रत जिन राईरी ॥ आ० १ ॥ तीन लोकके हित  
कर प्रगट्यो, नाना रूपि हरपाईरी ॥ आ० ३ ॥ इति ॥

रागिणी जैरवी-ताल धिमे तेताला

आजतो वधाई राजा नाजिके दरवाररे ॥ आ० ॥  
सरु देवाजीने वेटो जायो, नाम रूपज कुमाररे ॥ आ०  
१ ॥ अयोध्यामे उठव होवे, मुख बोले जयजयकाररे ॥  
घनन २ घण्टा वाजे, देव करे थैथै कररे ॥ आ०  
२ ॥ इन्द्राणी सब मङ्गल गावै, लावै मोती मालरे ।  
चन्दन चरची पाये लागे, प्रभु जीवो चिरकालरे ॥  
आ० ॥ ३ ॥ नाजि राजा दानदेवे, वरसे अखण्डित  
धाररे ॥ गाम नगर पुर पाटण देवे, देवे मणि जंडाररे  
आ० ४ ॥ हाथी देवे साथी देवे, रथ देवे तुखाररे ।  
हीर चीर पिताम्बर देवे, देवे सब सिनगाररे ॥ आ०  
५ ॥ तिन लोक को दिनकर प्रगट्यो, घर घर मङ्गल-  
चाररे । केवल कमला रूप निरञ्जन, आवागमन  
निवाररे ॥ आ० ६ ॥ इति ॥

रागिणी जैरवी-ताल धिमे तेताला

मङ्गलरे गावत सकल सुरनार ॥ ढेर ॥ मोती-  
यन थाल जरी जाय वधावत, गावत गीत रसाल ॥  
मं० १ ॥ केशर चन्दन आवन जरीयारे, कर दीप  
कंचन थाल ॥ मं० २ ॥ चंद कुशलकी यही अरज  
है रे, जवोदधि पार उतार ॥ मं० ३ ॥ इति ।

चैतावरकी चाल

आजकी रेण सोहानि, देखो आजकी रतियां ॥  
 आ० ॥ पारस प्रभुजीको जनम जयो है, हरष जई  
 देवा हरष जई वामा राणी ॥ देखो० १ ॥ अश्वसेन  
 घर बटत बधाई, घर २ अरी देवा घर २ मङ्गल  
 मांनी ॥ दे० आ० २ ॥ द्वार २ सब तोरण थंज  
 है, चोखे मुख सेज सेगानी ॥ दे० आ० ३ ॥ रतन  
 थाल मुगताफल जरके, चोक पुरे इन्द्रानी ॥ दे०  
 आ० ४ ॥ सुमन अधमको निज पद ढीजे, सुध  
 समकित सहनानी ॥ देखो० आ० ॥ ५ ॥ इति

॥ जैरवीका झूहा ॥

प्रभुको नाम अमोल है, जामे लगत न मोल ।  
 नफा बहोत तोटा नहीं, जर जरके मन तोल ॥  
 ए जीव जूला फीरत है, ममताके कल्लोल ।  
 अश्वसेनके लाडले, श्रीपारस मुख बोल ॥

रागिणी जैरवी-ताल यत्

बलिहारीमरु देवी नन्दकी, जज नाजिके नन्दन  
 अवध विहारी ॥ बलि ० १ ॥ तिन लोक तिन पावन  
 कीन्हें, आनन्द लहर सुनन्दकी ॥ बलि० २ ॥  
 कोशलपूर निकट सरजु तट, पूरण कला सो चन्दकी ॥  
 बलि० ३ ॥ दास तुमारो करत विनति, जयजय  
 रूपज जिनन्दकी ॥ बलि० ४ ॥ इति ॥

पुनः—ताल तेताल

जगदीठा तुं मेरा प्रभु प्यारावे, तेरी आंखियांदी  
मातुं अजब बनी है, सुन्दर श्याम दीवारावे ॥  
जग० १ ॥ घनि २ पल २ सुमरण तेरो, कबहुं न  
दीलसैं न्यारावे ॥ जग० २ ॥ जो तुफ ध्याया तिन  
सुख पावा, दर्शन ज्ञान आधारावे ॥ जग० ३ ॥ इति ॥

पुनः—ताल तेताला

आज प्रभु तेरे चरण लाग, मिथ्यातनींढ मै  
खोईरे । दर्शन कर परशन मन मेरे, आनन्द चित  
अब होईरे ॥ आज० १ ॥ तुम विन देव अवर  
नही डुजो, देखा त्रिजुवन जोईरे ॥ आज० २ ॥  
दास तुमारो करत विनती, तुम विन मेरो न कोईरे ॥  
आज० ३ ॥ इति ॥

पुनःताल कवाली

नेम जिनन्दजीसैं आंखरुली; मोरी रैन दिवस  
नीत लग रहीरे ॥ ने० ॥ १ ॥ पहले आय उन दोस्ती  
कीन्ही, ले पीठे ठिटकाय दर्ईरे ॥ ने० ॥ १ ॥ पसु  
यन पर प्रभु दया करीनै, शिव रमणीनैं वर लईरे  
॥ ने० ३ ॥ केई जविक रसना कर दोस्ती, रत्न विम  
ल पद पाय लई रे ॥ ने० ४ ॥ इति ॥

पनः

झगन जररी देखन दे मुखन चन्द, मोरा देवी  
माता श्रीधन धन, जायोठे रूपन जिनन्द ॥ झ० १

याकुं पूजत अती सुख उपजत, सब जीवन सुख  
कंद ॥ ड० १ ॥ यातें हीतकर अरज करत है, ची  
रंजी रहो तेरानंद ॥ ड० ३ ॥ इति

पुनः

मेरी लागी लगन, नेम प्यारेसे ॥ मे० ॥  
सुनरी सखीएक बात हमारी, कहीयो कन्त हमारे  
से ॥ मे० १ ॥ जोगन होकर सङ्ग चबुद्धी, प्रीत त  
जुं जग सारेसे ॥ मे० २ ॥ नाम लीयासैं आनन्द  
उपजे, कीरत होत जर धारेसे ॥ मे० ३ ॥ इति

पुनः

रात गई अब प्रात होन जयो, क्या सोचे जिया  
जागरे रा० ॥ दोय घनी तडको अब रहियो, ऊठ  
धरममें लागरे ॥ रा० १ ॥ जिन बानी जर बीच  
धारखे, और जरम सब त्यागरे ॥ रा० २ ॥ आन  
न्द सुगुरु वचन हित मानो, ए सुधा शिव मार्गरे ॥  
रा० ४ ॥ इति ॥

रागिणी चैरवी

आदि जिनन्द, मेरो आदि जिनन्द । दरसन  
तेरो है सुखकन्द ॥ मे० १ ॥ तुम दरशन विन क  
ल न पकत है, छिन मे तो दीन हीन पकड्यो स  
रण ॥ मे० २ ॥ दास तिहारो अरज करत है जि  
नजी अवतो तुमावो जवफन्द ॥ मे० ३ ॥

पुनः

नवरिया मोरा कोन उतारे वेमा पार । इह सं  
सार समुद्र गंचीरा, किसविध उतरंगा पार ॥ न०  
॥ १ ॥ राग छेष दोनुं नदियां वहत है । जमर पर  
त गति च्यार ॥ न० ॥ २ ॥ कृषज दासको दरसन  
चहिये । ए वीनती अवधार ॥ न० ३

रागिणी जैरवी-ताल दादरा

जरलावोरे कटोरा केशरका, में नव अंग पूजुं पर  
मेश्वरका ॥ ज० ॥ मरुदेवी कुंखें जन्म दियो है ।  
कुमर नाजि रत्नेसरका ॥ ज० १ ॥ केशर चन्दन  
पुष्प चढाउं ॥ मुख निरखु कृषजेश्वरका ॥ ज० २ ॥  
रत्न जड़ितकी आरती उतारुं । नृत्य करुं परमेश्वर  
का ॥ ज० ३ ॥ मोती चंदकी एहिज वीनती, चरणन  
ठोनुं परमेश्वरका ॥ ज० ४ ॥ इति

पुनः

म्हारो मुंनै कव मिलस्यै मन मेलू ॥ मन मेलू  
विन केलि न कल्लिए । वालै कवल कोई वेलुं ॥ म०  
१ ॥ आप मिलार्थी अंतर रायै ॥ सुमनुष ते नहि  
ले लू ॥ म० ॥ २ ॥ आनन्द घन प्रजु मन मिलियावि  
न ॥ कौ नवि विलगैचेलू ॥ म० ३ ॥

जैरवी-ताल दादरा

ईन्द्राणी प्रजुके वेगी आंज्यो कजरा । मे तो  
नवन करि कर लेही, तुं करले झ्याकी जाप जीरा

॥ १ ॥ ई ॥ मैं पहिराती जुज जुजबंध, पहरा देतुं वाली  
कपमा ॥ ई ॥ १॥ मैं तो मुगट धरुं सीर उपर तुं पहरा  
दे फूलुंके गजरा ॥ ई ॥ ३ ॥ नयनानन्द सुर ईन्द्र  
जगति लख, जविजन सम्यक दृष्टि खरा ॥ ई ॥ ४ ॥

ताल दादरा ।

नयना पीहर वा गये नयना वदल ॥ नयना वदल  
गये वनकुं निकल गये, वृत्तलीना सुधरा ॥ नय १ ॥ व्याह  
नकुं, आये मेरे डुला कहाँ ॥ दे दरस गये तोरणसे  
फिर ॥ नय ० ॥ १ ॥ जोरारथ परमारथ कारण, कंकणको  
तोड लीया संजमको धर ॥ न ० ॥ १ ॥ पशु पुकारे प्रजुजी  
नीहारे । दुखिया विचार ठोडे बन्धन कतर ॥ नय ० ॥ ३ ॥  
लेलो प्यारी ठीमा हमारि । मुँजे वेगी वता दो गिरनार  
की नगर ॥ ने ० ॥ ४ ॥ करुंगी नयन सुखकारी तपस्या  
मे तो लौंगी प्रजुके पद पंकज पकर ॥ न ० ॥

पुनः

सखीरी म्हारो, नेम गयो गिरनार । तारि है  
राजुवनार सखीरी ० ॥ तोरनसे रथ पीठो फेरयो,  
पशुवारी सुनिठे पुकार सखीरी ० ॥ १ ॥ सहसा ब-  
लकी कुंज गलिनमें, पंच महाव्रतधार सखीरी ० ॥ १ ॥  
राजुल उजी अर्ज करत है, आवागमन निवार स  
खीरी ० ॥ ३ ॥ चंद कपुरा कहे कर जोडी, चरण  
सरण आधार सखीरी ० ॥ इति ॥

पुनः

मेंतो दासी 'तुमारी विना दामकी । निजरमें जो  
 ठहरूं किसी कामकी ॥ १ ॥ और देवसे काम नहीं  
 मेरे । दिलमें बसि है सूरत स्यामकी ॥ २ ॥ मे० ॥  
 घडि घडि पल पल बिन बिन निस दिन । रटन  
 लगी है तेरे नामकी ॥ ३ ॥ मे० ॥ राखूगी आखुंमें  
 सुरमें से बढके, जो पांउगी रजमें तेरे धामकी ४  
 मे॥ ४ ॥ तप जप संजममें चित लावो, जेसे मिले राज  
 शिववामकी ॥ ५ ॥ जैनधरम मानव जव पाके । करले ज  
 लाई आतम रामकी ॥ ६ ॥ मे० ॥ दास गुलावकी एहि  
 अरज हे । सार करो मुऊ नामकी ॥ मे० ७ ॥ इति॥

रागिणी गारा जैरवी

वस्तुगतेवस्तुनोलक्षण, गुरुगम विनानहीपावेरे ।  
 गुरुगमविन नहीपावेकोऊ, जटकत जरमावेरे॥ जवन  
 आरिशे श्रानकुकरा निजप्रतिबिंबनिहालेरे ॥ इतर  
 रूपमनमाहि विचारी, महाशुध विस्तारेरे॥ व० १ ॥ निर  
 मलफटक शिलाअंतरगत, करिवर लक्षपर ठाहिरे॥  
 दशनदुराय अधिक दुखपावे, छेपधरत दिलमांहिरे  
 व० ॥ २ ॥ सश लेजाय सिंघकुं पकडे । कुवोदिष्ठ दि-  
 खाईरे ॥ निरख हरितेजांणदुसरो । पड्यो ऊंप तिहां  
 खाईरे ॥ व० ॥ ३ ॥ निजठायावेताल जरमधर ॥ कर  
 तवाव चित, मांहिरे ॥ रजु सर्प करि कोऊ मानत॥  
 ज्यौलौंसमजत नांहिरे ॥ व० ॥ ४ ॥ नलनी ज्रम

मर्कट मुठीजिम ॥ त्रमवशअतिदुखपावेरे ॥ चिदा  
नंद चेतनगुरुगमविना, मृग त्रक्षाधरीधावेरे ॥५॥इति

रागिणी जैरवी-ताल मध्यमान

वसोजी मेरे नेननमें महाराज, सामलि सूरत मोह  
नि मूरत ॥ तारण तरण जिहाज ॥व०॥ वानी सुधारस  
दरस ऊपन्यो ॥ करतां अगम अपार ॥व०॥ चैन विजय  
करजोडी वीनवे, चरण कमल सिरताज ॥व०॥इति॥

रागिणी गारा जैरवी

दीनके नाथ दयाल सवन की । तैं काहेकु कृपा  
विस्तारीरे दीन० ॥ मे हुं दीन अनाथ जगत मै, तूं  
साहिव उपकारीरे । दीन० । पण अपनेकी रीत निव  
हिये । दो संपद सुखकारीरे दी० ॥ दास चुनी सेव  
ककी अरजी । सुनिये प्रभु जसधारीरे ॥ दी०॥इति

पुनः

प्रभु मोसे कवन वहाने बोलो, रैन दिहा मानुं  
ध्यान तुमारा, अंतर दी पट खोलो ॥ प्र० ॥ हाल  
असांमा तुज्जु माळुम, जो खामि दुक जोलो ॥प्र०॥  
आस पुरावो दासको स्वामी, ऊटपट सङ्ग मिला लो ॥  
दास चुनी पायो रत्न अमोलक, वेर २ क्युं तोलो ॥

रागिणी जैरवी-ताल तेताल

जविकनरसेवोशांतिजिनन्द ॥ कञ्चन वरन मनो  
हरमुरती, दीपत तेजदिनन्द । १ज० ॥ पञ्चम चक्रध  
र सोलमजिनवर, विश्वसेननृपकुलचढ ॥ २ स० ॥



जवडुख जंजन जन मनरंजन, लंठन मृग सुखक  
न्द ॥ ३ ज० ॥ गुनविलासपदपङ्कजनेटत ॥ पायोप  
रमानंद ॥ ४ ज० ॥ इति

रागिणी नैरवीमे होली-ताल कवाली

मेरे जाई जुई गुलावरी ॥ आज प्रभु पूजनको  
हरख जयो ॥ एटेक ॥ केतकीचंपक मरुठ मोघरा ॥  
फूलकी पगर जरावरी ॥ आज प्रभु ॥ १ ॥ मुकट  
कुंरुल शिरठत्रविराजे ॥ आंगीशोहे जमावरे ॥ आ  
ज० २ ॥ संत सवे मिली जावना जावो ॥ मादल  
ताल मिलावरी ॥ आज ३ ॥ अनन्तनाथ जीके  
गुणगांठ ॥ लालगुलाल उमावरी । आज० ४ ॥ कर  
जोरी प्रभुआगे अरजी ॥ जवडुखसे ठोमावरी ॥  
आ० ५ आठोपोहोरहे नांम तुह्यारा ॥ ध्यानधरं  
शुजजावरी ॥ आ० ६ आनन्द हरष वधाई उनको  
॥ विनय सहित गुणगावरी ॥ आज० ७ ॥ इति

रागिणी सिन्धनैरवी

कुण वन वीर समोसस्या मैतोसुणिहे श्रवनधुनि  
आजरी कुण ॥ जंगम तीरथ सुरतरु, जगनायक, श्री  
जिनराजरी ॥ १ कुण० ॥ गोतमगधर सारिपा, साथै  
एकादश गणधारी ॥ मुनिचज्जदसहससाथेजला, गुरु  
तारणतरणजिहाजरी ॥ २ कुण० ॥ शमव सरण रच  
ना रची, मिलचउसठसुरराजरी ॥ सूर नर विद्याधर  
मिली ॥ मिलचउविहसंघ समाजरी ॥ ३ कुण० ॥ घ

णारे दीवशनी जावना ह्यारी, सफल फली सब आज  
री । चलो सखी विल्वनकीजीये, वंदीजेश्रीजिनराज  
री ॥ ४ कृणु ॥ जावजगति दिलमें घणी, सजि सा  
थै सामग्रीसाजरी ॥ हरखचंदराणी चेलना ॥ सास्या  
निज आतमकाजरी ॥ ५ कृणु ॥ इति

रागिणी सिन्धु

आदिनाथ जिन प्यारा हो, तेरो दरशन आन  
न्दकारा १ ॥ नाजि राय मारुदेविके नंदा । तुम ता  
रण संसारा ॥ हो ते ॥ तुमरे गुणको पार न पावे, ज  
जन करे जगसारा ॥ हो ते ॥ ३ ॥ बरस दिवसने पारणे,  
स्वामी पीयोस अपारा हो ते ॥ ४ ईन्द्रचन्द्रनी  
आस्या पुरो । मैटो कष्ट हमारा, होते ॥ ५ ॥ इति

रागिणी जैरवी

समज परी मोहे समज परी जगमाया सब जुं  
ठी ज ॥ १ ॥ आजकाल तुं कहा करै मूख, नांहि  
जरोसा दिन एक घरी ज ॥ २ ॥ गाफिल ठिन  
जर नांहि रहो तुम, सिर पर घुमें तेरे काल श्री  
ज ॥ ३ ॥ चिदानंद ये बात हमारी प्यारे, जाणो  
हो नित्त दिल मांहि खरी ज ॥ ४ इति

पुन.

चितमें धरो प्यारे चितमें धरो ये सीख हमारी  
अव चितमे धरो, थोमासा जीवनां काज अरे नर,  
काहेकु ठलपर पंच करो ये ॥ १ ॥ कूरु कपट पर

द्रोह करण तुम, अरे मन पर जव थाह जरो ॥ ए० ॥  
॥ १ ॥ चिदानंद जोए नहीं मानौ तो, जनम मरन  
जव दुखमें परो ॥ ए० ॥ ३ ॥ इति

### ताल दादरा

दोनुं दसतो में अगीया रचावो सखी, नयना  
हमारी प्रभुसेलगी ॥ दोनु० ॥ जादीकी अगीया प्रभुकी  
रचावो ॥ मस्तक मुगट पहनावो सखी ॥ नय० १ ॥  
चलो सखी बागोंमें जईये ॥ चुन २ कलियां चढावो  
सखी ॥ नय० २ ॥ चलो सखी जिनवंदन जईये ॥  
नृत्य करो सब मिलके सखी नय० ॥ ३ ॥ सांवरी  
मूरत खूब रची है, देखतही मन नीहारो सखी ॥  
नय० ४ ॥ संवत जनीसे चऊदेकी साले, माघ वदि  
तीथ नवमी सखी ॥ नय० ॥ सुन्दर विजयजीकी  
एहिअरज है ॥ नित उठ चरण पखावो सखी ॥  
नय० ६ ॥ इति

### रागिणी जैरवी

मेरो मन लागी रह्यो महावीर चरणमें जाय ॥  
सिद्धारथके नन्दन एसे ॥ मातात्रिसला देवीमाय ॥  
मे० १ ॥ जनमतही स्वामी मेरुकंपायो, संसयदीया  
है मिटाय ॥ मे० ॥ द्वात्रीकुंठ स्वामि जनम लिया  
है, मुगत पावा पुरी जाय । मे० जो कोई ध्यावे  
स्वामी सोफल पावे, चंद किरत गुण गाय मे० ॥ इति

पुनः

प्रभु मेरी विनतभीजर धारो । तुम तारण तिहुं  
लोकके स्वामी । मोहे जरोसो तीहारो ॥ १ ॥ मोसे  
पतीत न आ जगमें कोई । मैं हेख्यो जग सारो ॥२॥  
तुम प्रभु तारण पतीत ऊधारण । जवसागरथी  
तारो ॥ ३ ॥ जुल सेवककी चित्त न रीजे, अपनी  
और नीहारो ॥ प्र० ॥ इति

पुनः

नाथ जयेवैरागी हमारे ॥ कासे जाय कहुं मेरी  
सजनी । वीन अवगुन मोहे त्यागी ॥ हमा० ॥  
परवस तुती जांय पनी है तुंहिं तुहि रटणा लागी ॥  
ह० ना० लाल विनोदी ईह रूपको नीरखत । वीर  
ह व्यथा तन जागी ॥ ह० ना ॥ इति

पुन

शीतलनाथनुं स्तवन

तारिये मोहे शीतल स्वांमी ॥ शीतल स्वांमी  
अन्तर जांमी ॥ आंकडी ॥ काल अनादि पुदगलके  
संग, जटकत जयो हुं निकामी ॥ तारि० ॥ १ ॥ एसो  
न रहियो कोई थानक, मरण विनाको अंतरजामी  
॥ २ ॥ ओर फीर सुद्धम वादर पुदगल ॥ परावरत  
कीयो सीरनामी ॥ ३ ॥ तारी० अधम ऊधारण  
विरुद तिहांरो, कृपा करी तारो जव्यजानी । जानुं

चंद कहे प्रभुजीकी सेवा, सिवसुख की है यही  
निशानी ॥ ४ ॥ तारी० इति

पुन

अध्यातम स्तवन.

क्योंकर जक्ति करुं प्रभु तेरी ॥ क्यों० ॥ काम  
क्रोध मद मान विषय रस, ठोडत गेल न मेरी प्र० ॥  
करम नचावत तिमहि नाचत, माया बस नट चेरी  
प्र० ॥ दृष्टि राग दृढबंधन बांध्यो, निकसत न लहे  
सेरी ॥ प्र० ॥ करत प्रसंशा सब मिल अपणी ॥  
परनिदा अधिकेरी ॥ कहत मान जिन जाव जगत  
बिन, शिव गत होत न नेरी ॥ प्र० ॥ इति

पुनः

संसार नाम जिसका, जो सारा असार हैं, इस  
जगमें न कोई मेरा ॥ तेरा नाम सार है ॥ जवजल  
अगम अथाहरे इसका न पार है ॥ चारो गतिकी  
जवरां, पडती अपार है ॥ से० ॥ १ ॥ जिया देख डरा  
मेरारे, तुमसे नहीं ठिपा ॥ तेरे हाथ मेरारे अवतो  
उधार है ॥ सं० ॥ तुम सिवाय देव भै, ध्याउं न  
दूसरा, मैंनेतो अपने दिलमें किया करार हैं ॥  
स० ॥ ३ ॥ अब ठोड सकल वातकुं तेरी शरण गही,  
जिनदास हाथ जोडके करता पुकार हे ॥ सं० ॥ ४ ॥

पुनः ( थियेटर )

मैं अरज करूं, सूनो महाराज । पायो मैं चरण  
सरण राखोने प्रभुजी लाज ॥ सु० १ ॥ सुमति  
जिनन्दा मेरे । सुरत सुहानी तेरे । कुमति न आवे  
नेडे, महिमां कहाँलौं देखो, सफल घनीहे आज  
॥ सु० २ ॥ बेशाख मास जो आया । सहु लोग  
हरप पाया । रोग शोग दुख पुलाया । शुक्ल पक्ष  
देखो सोहे । पंचमी तिथि है आज ॥ सु० ३ ॥  
नविन मंदिर ठाजे । जहां प्रभुजी विराजे । मानुं  
शशि सूरज लाजे । चलो सखी सब मिलि । प्रभु-  
जीकुं पुजु आज ॥ सु० ४ ॥ इति

पुनः

सुमति जिनन्दा प्रभु आज जुहारो । अष्टद्रव्य  
लेके आय ॥ पुजुं प्रभुजीके पाय । मनहिमे हरप  
अति जयोही मेरो ॥ सु० १ ॥ आयो मैं तुमारे  
पास । पुरो मेरी अजिलाप । दीन बन्धु दिनानाथ  
जगत उजियारो । नामिलेगो एसो दाव काज सु-  
धारो ॥ सु० ॥ २ ॥ इति

पुनः ( तुमरि )

नेमि जिन तुमरो दरस लागे प्यारोरे । दरस  
देख मन आनन्द आवे । पातिक हर गयो सारोरे  
॥ ने० १ ॥ मैं हुं दीन अनाथ प्रभुजी । नाथ गरिव  
नेवाज हो तुमहि । कृपा करी मोहे तारोरे ॥ ने० २ ॥

सेवककी प्रभु एहि अरज है । जव सङ्कटसे निवा  
रोरे ॥ ने० ३ ॥ इति

पुनः

सूरत एसी सांवरी । में जांउ वारि १ । प्रभुजी  
एक अरज सुनो मोरी ॥ टे० ॥ समुद्र विजेजीके  
नन्दन प्रभुजी, सेवा देवी माता जिके नयननको ज  
ये गुलजारी ॥ सु० १ ॥ राजुलको परनीजन आ  
ये । पशुयनको निरख रथ फेरके चले गये  
गिरनारी ॥ सु० २ ॥ नव जव प्रीत ठिनमें तो  
की । नेम राजुल मिल हुवे जव मुगतिके अधिका  
री ॥ सु० ३ ॥ दास आस कर अरज करतु है, मे  
हर मोहे कीजे दरस मोहे दीजे । चरनणकी में  
जांउ बलिहारी ॥ सु० ४ ॥ इति

पुनः

सुमति जिन मुजरो हमारो प्रभु लीजेजी ॥ मेघ  
नृपति जीके नन्दन स्वामी मात सुमङ्गलाके प्यारो  
जी ॥ सु० १ ॥ औसो नर जव पायके प्राणि । नित  
नित वन्दन किजेजी ॥ सु० २ ॥ औसे जिनजीको  
पूजत प्राणी । जव जव पातिक ठिजेजी ॥ सु० ३ ॥  
दास तमारो करत वीनति अजर अमर पद दीजे  
जी ॥ सु० ४ इति

पुनः

हजर लुमसै कहं मैं दिलकी बेजार पनमें जो

वीती वतियां । ह० ढेर । न धीर तनमें खुसी न  
दिलमें वेहाल पनमें जराई ठतियां ॥ ह० १ ॥ सि  
द्धार्थ तिसला के नन्द सुनिये कृपाके सिंधु हेवी  
रस्वामी, संसार वनमें कीयो ज़मन में, चोरासि  
दलकी यह च्यार गतियां ॥ ह० २ ॥ कपाय कुमति  
कुकर्म मिलके दे मार च्यारु तरफसे घेरयो । सदासे  
इनकी बेजासही है मैं मेरे दमसे उपाधि अतियां ॥  
॥ ह० ३ ॥ रही न बाकी विपतकी बातें न जानुं  
तुम क्या विशाल ज्ञानी, रहुं सरणमें निहाल कीजै  
अजैकी लागी चरनसै मतियां ॥ ह० ४ ॥

पुनः

साहिव तेरी वंदगी मैं जुलता नहीं, जुलता न  
ही साहव विसरता नहीं ॥ सा० ढेर ॥ अष्टादश  
दोष रहित देव है सहि औरदेव अन्यदेव मानता  
नहीं ॥ सा० सा० १ ॥ मुनि है निग्रथ सो तौ गुरु  
है सहि और गुरु जैसधारी मानता नहीं ॥ सा० २ ॥  
जीव दया सुख सो तो शास्त्र है सहि और शास्त्र  
आस्था रुपी मानता नहीं ॥ सा० ३ ॥ दान शिष्य  
ल तप जप धर्म है सहि और धर्म विषय मानता  
नहीं । सा० ४ ॥ मुक्ति रुपी सिद्ध शिला वांछता  
सहि संसार दुखजाल रुपी मेटीए सहि ॥ सा०  
५ ॥ कहत मुनि खेत माल तारिये मोहि आवाग  
मन मोरी मेटिये सहि ॥ सा० ६ इति



पुनः

दीले नादानकुं समजाया चायगें । हालमें हमकुं  
जगति जली हुवे । सुज शीयल संजमकुं सजवाय  
लायेगें ॥ दी० ॥ अष्टकर्मोंकी प्रकृतिका सञ्चय होए  
जाहिल । बंध वा उदय उदीरण सत्तामें तूं गाफि  
ल । महाराजा मोहकी गति ज्ञाति सें उलजा सा  
मिल । सागर कोमा कोमी सतरे काठीया जव सा  
मिल । चउनाणी अनगार जिनोके हीये इस धाई  
ल । ऐसे कर्म मोह मदन्नकुं जीतावी चायेगे ॥  
दिल० २ ॥ इति

पुनः

आवो नेम रह जावो सदन, हमको न सता  
वोरे । आ० (टेर ॥ व्याहन आए सजकै सज्जन,  
पशुवनकी सुन देख रुदन । गिरनारी चले निज ठांड  
वतन् तकसीर वतावोरे ॥ ये० १ ॥ पूनम जैसें  
चंद वदन, मोहन मुरति श्याम वरण, मेरी नकी  
लागी नव जवकी लगन, मत ठेह दिखावोरे  
॥ २ ॥ ये रिहम० ॥ संजम दूती लागि श्रवन्,  
प्रजुको सिखाए नीके फिरन् । प्रजु तारण ना  
म तुहमारो तरण । रथ फेरिन जावोरे येरि० ३ ॥  
कपूर कहे प्रजुजीके चरन् राजुल मन बेराग धरण  
लेउ दोम नेमि जिनजीकी सरण, शिवपूरतो दिखा  
वोरे ॥ येरिशि० ४ ॥ इति

पुनः ( पहामी )

कधी प्रभु पदमे मन लाया तो होता, अरे नि  
रगुनका गुण गाया तो होता । पडां है बेखवर मा  
याके फंदमें, जगतजंजालसुं बजाया तो होता ॥ ज  
क० १ ॥ अब अवसर आमिला, ठुक सोच प्यारे,  
आत्म हितकार प्रभु ध्याया तो होता ॥ क० २ ॥ तुं  
है मनमोहनके त्रिशूलानंद प्यारा । जिन सेवामें  
सुख पाया तो होता, पुरायो आश चुनीकी प्रभुजी,  
दिल जर दरस दिखलाया तो होता ॥ क० ३ ॥ इति

पुनः

शांति वदनकज देख नैन मधुकर मन लीनोरे ॥  
जलाम० ढेर ॥ श्रीजिनके मकरंद बैन । विरमी ज  
व डुरगन्ध रेंण शिवपुरके सदासुख कंद दैन । सम  
कितरस जीनोरे ॥ ज० १ कामित पूरण काम धेंन ।  
मद मोहके चूरण ठाम फेन, लहे मनको अली  
आराम चैन, गुंजै अति लीनोरे ॥ ज० २ ॥ कपूर  
कहे जिनपदका अैन । उरधारो जवि तारलैन । हो  
य मुक्ति सेऊ पर सार सैन । आगम कह दीनोरे  
॥ जला ॥ इति

पुनः

दिवाना तेरे दरसका पार मै हुं । जो रखता हुं  
तुजसे सरोकार मै हुं ॥ दि० ॥ तेरा ध्यान रहता  
है हरदम मुजको । ठुक एक महर कीजो लाचार

में हूं ॥ दि० ॥ दया जाव धारो प्रभु चरणसे लगा  
लो खबर लगे मेरा गुणैगार में हूं । दि० ॥ दरसवे  
गी दिजीये दया कर चुन्नीको, जगन्नाथ तुम हों,  
तावेदार में हूं ॥ दि० ॥ इति ॥

पुनः

ध्यानमें जिनके सदा लयलीन होना चाहिये,  
ज्ञान गुरु ज्ञानीसे ले परवीन होना चाहिये ॥ राह  
सज्जमका पकर कल्याणकी सूरत मिले, काल गफ-  
लतमे सजन्, नाहक नखोना चाहिये ॥ ध्या० ॥  
धर्मकी खेती किया चाहे जमीकुं साफ रख बीज  
समकितको हृदयमें सच्चेसे बोना चाहिये ॥ ध्या० ॥  
कामना मनकी सफल आनन्दसे पूरन जई, अवतो  
समता सेजउपर सुखसे सोना चाहिये । दास चुन्नी  
अपने घर आंगनमे फूलेगा कलप । जव थिति प  
कनेसें मुक्ति फल सलोना चाहिये ॥ ध्या० ॥ इति ॥

पुनः ( तुमरि )

श्रीआदिनाथजीका देख दरश डुविधा मोरी  
मिट गईरे ॥ आज डुवि ॥ आनंद आज जयो मेरो  
मन ॥ सिव सुख चाहतहुं प्रभु हाथन ॥ जिन की मुर  
त चंदनसे तनमनसे लपट गईरे ॥ आज डुवि०  
॥ १ ॥ अष्टद्वय ले पूजन आये बीतराग के दरश-  
न पाए जिनवांनी कानोंसे सुनी डुरगत मोरी कट  
गईरे ॥ आ० ॥ २ ॥ काल अनादि मैं प्रभु फिरी

यो, कारजएक मेरोनासरीयो, अब में तेरो दरशन  
पायो कुमति मोरी हटगईरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ जवल  
ग मुक्तन आवैं नेडे, तवग जक्तिवसौ उर मेरे, आत्म  
सुरू समकित धरकेशिव रमणी वर लइरे॥आ०४॥इति

पुनः ( खाम्बाज )

जिनंदकी में वारी ठवि प्यारी, वारी जाउं वार  
हजारी ॥ जि० ॥ वदन ठवि मांनुचंद शरदसी, मेढो  
अशुज अंधियारी ॥ जि० ॥ १ ॥ निरख चकोरी ह  
रप जरानी, नैनन मङ्गल कारी ॥ जि० ॥ २ ॥ चुन्नी  
तृत होत दरसनसे, आसा पूरो हमारी ॥

पुनः

एहाल अपना कहूं में कासे, सजन विना जर  
जर आवैं ठतिया ॥ ए० ॥ न ताव तनमें न चयन  
दिलको विरहका मारा वेहाल मतिया ॥ ए० ॥ न  
कोई ऐसा हकीम देखूं जो मेरे दिलको करार आ-  
वैं, सखी खजनका खवर जो पाजं, तो लिख लिख  
पठाजं पतिया ॥ ए० ॥ १॥ जल विन मीन क्योकर  
जीवे, अरज इतना विचार देखो, एजीव जीवन पिया  
दरश विन, कटैगा कैसे अन्धेरी रतियां ॥ ए० ॥ क  
पटके पट खोल आए सजन सखी गये दुख जन  
म जनम कैं । चुन्नी निरुपम दरसकै आगे कहूं में  
अब क्याअनुठी वतियां ॥ ए० ॥ इति ॥

श्री पंच तीर्थ जिन स्तुति.

नृपतनयेवर हे मन माके. ए राह.

श्री जिनराज सदा सुखकारी, दास नमे शिर न मनकरी  
तुम शरणांगत आब्यां वालक, तारो हे प्रभु मेहर करी,

आदि जिनवरा,	अजित प्रभु खरा,
शांतिनाथजी,	शांति करो त्वरा,
पार्श्वनाथने,	वीर जीनवरा,
वालमित्रने,	साह्य करो त्वरा,
जिनवरजी,	करुं अरजी—श्री जीनराज. १
तुमे दया करी,	अम पाप परहरी,
शिववधु प्रभू,	आपजो खरी,
तुम विना विजो,	देवठे वृथा,
जाणी एम अमे,	ठोडीये मिथ्या.
शिवरमणी,	मनहरणी—श्री जिनराज ० २
नगरमां रही,	अर्ज करे सही,
तारक तुमविना,	बीजो कोई नही,
सकल संघना,	कष्ट कापजो,
मनसुखलालने,	मग्न राखजो,
सुख करजी	दुःख हरजी—श्री जिनराज. ३

श्री आदिनाथनुं स्तवन.

आदिजिनेश्वर—अर्ज स्विकारो, कर ग्रही सेवकने  
प्रभु तारो ॥ आदिजिनेश्वर ० ॥ १ ॥ प्रथम नरेश्वर,—  
प्रथम जिनेश्वर, प्रथम युगल तुमे धर्मनिवाह्यो ॥

आदिजिनेश्वर० ॥ १ ॥ आजनी आंगी—अजव वनी  
 ठे ॥ सुंदर मुख शोभे प्रभु सारो ॥ आदिजिनेश्व  
 र० ॥ ३ ॥ रोहिणी पतिथी—फोटी गुणो प्रभु वदन  
 आनंदी दिसेठे तुमारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ४ ॥  
 मृगपतिथी पण अधिक गुणोठे, लंक कटीनो प्रभु  
 जी तुमारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ५ ॥ नाथ निरंज  
 न—जव दुःखजंजन, जवो जव होजो शरण तुमा  
 रो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ६ ॥ युगम् जाव स्तवना  
 वली करवा, बालमित्रनी बुद्धिवधारा ॥ आदिजि  
 नेश्वर० ॥ ७ ॥

श्रीसंजवनाथजिनुं स्तवन ।

त्रिताल चोपाइ—प्रभु पासनुं मुखरुं ॥

संजवजिनजीनु मुखरुं शोहे, नयणा देखी जग  
 सहु मोहे रोहिणीपतिसम वदन विशाल, तस अ  
 र्ककारे दीसे जाल, कांति कनकसरीखी सारी, इंद्र  
 चंद्ररूप जायहारी,

सावथ्यीमां हतो दूकाल, प्रभू जनमतां थयो  
 सुगाल, धान्यनां तिहां संजव थाय, द्रव्य संजवथी  
 नयरी साहाय. फल फूल संजवथया सार, तेथी वर  
 ल्यो त्यां जयजयकार, राय जितारी वीचारी आम,  
 संजवथी पाड्युं संजव नाम, एवा संजव करजो अ-  
 मने, बालमित्र अरज करे तुमने; अहमदनगरमां र  
 हेतां उद्धास, मुनि मनसुखनी पुरोआस ।

श्री अजिनन्दन जिन स्तवन ।

गजल, आज आधी राज हजुरमां ए राह ।

अजिनन्दन आज आनन्दमां, तुम दर्शनै थइ सु  
ज मती; एक दुष्ट कुलटा ठे सही, पूर्व जवनु वेर  
काढ्युं अही; अहोनिश मारे पाठलपडी, मतीत्रष्ट  
कीधी मारी अति ॥१॥ एवी दुष्ट ठे जे कुमती, जस  
सोवते होय दुर्गति । ते दुष्टा दुर निवारिनै, आपो  
अमोने सुमती । अ ॥२॥ रही नगरमां मन भगन  
थइ, बालमित्र अति आनन्दथी, मांगे मुखें थी एम  
कही, आपो अमोने शिवगती । ३

श्रीसुमतिनाथजिनु स्तवन ।

अवर मदन अलवेलो-ए राहमां ।

सुमति जिनेश्वर तारो जवाब्धिथी सुमति जिने  
श्वर तारो । नयरी कोशढ्या धन तुज धरणी, जन्म्यो  
सुमति जिन प्यारो । जवा १ कुल दीपक मेघरथ  
राजाना, त्रण जगत्रने तारो ॥१॥ मङ्गला माता मङ्ग  
ल उदरी, प्रसवे सुमति जिन सारो । जवा ॥३॥ शशी  
सम सोहे वदन प्रचुनुं, क्रौंच लंठन हितकारो । ज.  
॥४॥ सुमती दाता समकित आपो, कुमती दूर निवा  
रो ॥ज.५॥ आप हजुरे लेजो अमने, बुढे आजनमा  
रो । ज.६॥ बालमित्रना प्यारा प्रचुजी, मनसुखदास  
तुमारो । ज ॥ ७ ॥

श्रीपदम प्रभु स्तवन

होरीनी राह सांवरेसे कहियो-ए राह ॥

प्रभु पद्म प्रज जिन प्यारा ॥ ए टेक ॥ सुशिमा  
माता उदरे आब्या, चउद सूपन गुणसारा; लंठन  
शोहे रक्त कमलनुं, नयरी कोसंवी वशनारा, प्रभु  
जीतो मोहन गारा ॥ प्रभु पद्म प्रज जिनप्यारा ॥१॥  
छादशी कार्तिक वदनी सोहे, जनम तिथी ग्रह सा  
रा, कुल इक्ष्वाकु दिणयर प्रगट्या, श्रीधरकुल शण  
गारा, प्रभु सब जन हितकारा ॥ प्रभु पद्म प्रज जिन  
प्यारा ॥२॥ अहमदनगरे आज आनन्दे, गावे गुण  
तुम सारा; बालमित्र करजोड़ी विनवे, पावे जवोद  
धि पारा; जव जव शरण तुमारा ॥ प्रभु पद्म प्रज  
जिनप्यारा ॥ ३ ॥

श्रीसुपार्श्वनाथनुं स्तवन ॥

बनजारानी राह ।

सुपार्श्वजिनन्दप्रभु प्यारा, मुज स्वामी मोहनगा  
रा, ए टेक ॥ वणारशीनां तुमे वाशी, माता पृथ्वीम  
न उड्हाशीजि; रायप्रतिष्ठित कुल श्रगारा, मुज  
स्वामी मोहनगरा ॥ १ ॥ जेष्ठ शुक्लछादशी सार,  
जन्म्या त्रीजगदाधारजी, तुलरार्सीनां धरनारा, मु  
ज स्वामी मोहनगरा ॥ २ ॥ मध्यम त्रैवेयकथी  
आब्या, वान कचनसम सोहाब्याजी ॥ उंचा छिश  
तधनुष ठे सारा, मुज स्वामी मोहनगरा ॥ ३ ॥ वि



श्री अजिनन्दन जिन स्तवन ।

गजल, आज आवी राज हजुरमां ए राह ।

अजिनन्दन आज आनन्दमां, तुम दर्शनै थइ सु  
ज मती; एक दुष्ट कुलटा ठे सही, पूर्व जवनु वेर  
काढ्युं अही; अहोनिश मारे पाठलपडी, मतीत्रष्ट  
कीधी मारी अति ॥१॥ एवी दुष्ट ठे जे कुमती, जस  
सोवते होय दुर्गति । ते दुष्टा दुर निवारिनै, आपो  
अमोने सुमती । अ ॥२॥ रही नगरमां मन मगन  
थइ, बालमित्र अति आनन्दथी, मांगे मुखें थी एम  
कही, आपो अमोने शिवगती । ३

श्रीसुमतिनाथजिनु स्तवन ।

अवर मदन अलबेलो-ए राहमां ।

सुमति जिनेश्वर तारो जवाब्धिथी सुमति जिने  
श्वर तारो । नयरी कोशदया धन तुज धरणी, जन्म्यो  
सुमति जिन प्यारो । जवा० १ कुल दीपक मेघरथ  
राजाना, त्रण जगत्रने तारो ॥१॥ मङ्गला माता मङ्ग  
ल उदरी, प्रसवे सुमति जिन सारो । जवा ॥३॥ शशी  
सम सोहे वदन प्रचुनुं, कौच लंठन हितकारो । ज.  
॥४॥ सुमती दाता समकित आपो, कुमती दूर निवा  
रो ॥ज.५॥ आप हजुरे लेजो अमने, बूटे आजनमा  
रो । ज.६॥ बालमित्रना प्यारा प्रचुजी, मनसुखदास  
तुमारो । ज. ॥ ७ ॥

श्रीपदम प्रभु स्तवन

होरीनी राह सांवरेसे कहियो—ए राह ॥

प्रभु पद्म प्रज जिन प्यारा ॥ ए टेक ॥ सुशिमा

माता उदरे आब्या, चउद सूपन गुणसारा; लंठन  
शोहे रक्त कमलनुं, नयरी कोसंबी वशनारा, प्रभु  
जीतो मोहन गारा ॥ प्रभु पद्म प्रज जिनप्यारा ॥१॥  
छादशी कार्तिक वदनी सोहे, जनम तिथी ग्रह सा  
रा; कुल इक्ष्वाकुं दिणयर प्रगट्या, श्रीधरकुल शण  
गारा, प्रभु सब जन हितकारा ॥ प्रभु पद्म प्रज जिन  
प्यारा ॥२॥ अहमदनगरे आज आनन्दे, गावे गुण  
तुम सारा; वालमित्र करजोड़ी बिनवे, पावे जवोद  
धि पारा; जव जव शरण तुमारा ॥ प्रभु पद्म प्रज  
जिनप्यारा ॥ ३ ॥

श्रीसुपार्श्वनाथनुं स्तवन ॥

वनकारानी राह ।

सुपार्श्वजिनन्दप्रभु प्यारा, मुज स्वामी मोहनगा  
रा, ए टेक ॥ वणारशीनां तुमे वाशी, माता पृथ्वीम  
न उद्धाशीजि; रायप्रतिष्ठित कुल श्रगारा, मुज  
स्वामी मोहनगरा ॥ १ ॥ जेष्ठ शुक्लछादशी सार,  
जन्म्या त्रीजगदाधारजी, तुलरासीनां धरनारा, मु  
ज स्वामी मोहनगरा ॥ २ ॥ मध्यम त्रैवेयकथी  
आब्या, वान कंचनसम सोहाब्याजी ॥ जंचा छिश  
तधनुष ठे सारा, मुज स्वामी मोहनगरा ॥ ३ ॥ वि

शलाख पुरवंतु आयु, दिनकरथी तेज सवायुंजी,  
 ठो स्वस्तिकलंठन धरनारा, मुज स्वामी मोहनगारा  
 ॥ ४ ॥ प्रजु तुम दरशन मनजावे, मुनिमनसुख तुम  
 गुणगावेजी ॥ ठोवालमित्रना प्यारा ॥ मुज स्वामी  
 मोहन गारा ॥ ५ ॥

श्रीचन्द्रप्रजुजीनुं स्तवन ॥

राग माढ—मेवाडो मली—ए राह ॥

चंद प्रजु चित चोरी लीधुं, देखाडी दीदार ॥ मन  
 मोहाव्युं मांहरु. मने देखाकी दीदार ॥ चन्द्रपूरी न  
 यरी विपे, महासेन राजान ॥ लक्ष्मणा माता उदरे,  
 प्रजु आव्या पुरुष प्रधानरे म० ॥ १ ॥ लंठन शोन्ने  
 चन्द्रनुं कांई गुण अनन्त प्रधान ॥ दर्शन करतां  
 आपजो, कांई शिवरमणीनुं दानरे म० ॥ २ ॥ नयणा  
 कमल कचौलडा कांई, नाशा शुक समसार ॥ सम्य  
 क्त दृष्टि जीवने प्रजु, ताहरो ठे आधाररे ॥ म० ॥ ३ ॥ चि  
 तमां लागी चटपटी प्रजु, लटपट मन लोजाय ॥ खट  
 पट शिव वधुने माटे, आवे ठै मुजदायरे ॥ म० ॥ ४ ॥  
 एकला आप वरीने वेठा, करीये सेवक सार ॥ वाल  
 मित्र शुज वन्दन करतां, विनवे वारंवाररे म० ॥ ५ ॥

श्रीसुविधिनाथ स्तवन ॥

ठे अधर सुधारस पान चतुर नर प्रेम थकी करीये ॥

ए राह ॥

नवरंगी आंगी आज दीलमां धरीये, रस अमृ

त जक्ती पान चतुर नर प्रेम थकी करिये ॥ जइ  
जिन मंदिरमां आंगी नव नव रचिये, पल पल वारै  
जिन नाम हृदयमां धरीये, तो मोक्षालयनु द्वार  
सत्तरे वरीये ॥ रस अ० ॥ १ ॥ रुम फुम तुम बू  
म पग थकीनृत्यने करीये, त्यां चैत्यालयमां गीत  
ज्ञान आदरीये, तो जव सागरनो पार शीघ्रथी त  
रीये ॥ रस अ० ॥ रही अहमदनगरे बालमित्र गुण  
गाइयें, प्रभु जक्ती करतां अनन्त सुखने पाइये, तो  
सुविधि जिनेश्वर जजतां सुखीया थईये रस० ॥ ३

शीतल नाथ स्तवन ।

शीतलनाथनी शीतलता जारी, दरशन करतां जाय  
कषायहारी॥कमल सम नेत्र तेज जारी । शीतलना  
नी ॥ १ ॥ शशिसम वदन शीतल कारी, कटी केश  
री लंकारी, रुपे इन्द्र चन्द्र जाये वारी । शीतल  
नाथनी ॥२॥ कान्तिकेवि दिशे कामणगारी ॥ मुरती  
प्रभुजीनी मनोहारी ॥ जगतवत्सल प्रभु जयकारी॥  
शीतलनाथनी ॥ ३ ॥ जवी जीवने शीतलकारी, अ  
रजी मनसुखनी स्वीकारी ॥ बालमित्रने लेजो तारी॥  
शीतलनाथनी ॥ ४ ॥

श्रेयांसजिनस्तवन ।

मातुं लगाडो तो मारा सम ठे सलुंनीरे—ए राग ।  
श्रेयांस प्रभुजी तुमें सहाय करोमारीरे, आपणों किं  
कर जाणी उतारो जवपारीरे, श्रे० ॥ १ ॥ विष्णु पि

ता कुलें आव्या विष्णु माता तारीरे ॥ जगतवच्छल  
 प्रजु तुं ठे आनन्दकारीरे ॥ श्रेण ॥ २ ॥ खरुगीलंठन  
 प्रजु सोहे सुखकारीरे, करुं एक अरजी स्वीकारो प्र  
 जु मारीरे, ॥ श्रेण ॥ ३ ॥ दुष्ट एक रामा मारी, पाठल पनी  
 जारीरे ॥ लीधुं लुंटी द्रव्य मने बहु मार मारीरे; ॥ श्रेण  
 ४ ॥ लोकोमां लज्जावी मने कख्यो ठे खुवारीरे, नामे ठे  
 कुमती तेने काढो प्रजु न्यारीरे; श्रेण ॥ ५ ॥ अहमद  
 नगरे रही करे अर्ज सारीरे; बालमित्र गाय ठे आ  
 नन्द हितकारीरे । श्रेण ॥ ६ ॥

श्रीवासुपुज्य स्वामीनुं स्तवन ।

गमका तराना ए राह ।

वासुपुज्य विलाशी, चंपाना वाशी, पुरो अमारि  
 आश ॥ करुं पुजाहुं खाशी ॥ केशरघासी, पुष्प सुवासी,  
 पुरो । ए टेक. ॥

चैत्यवदनं करुं चित्तथी प्रजुजी, गावुं गीतारसा  
 ल ॥ एम पूजा करी विनती करुं तुं, आपो मोक्ष द  
 याल । दियो कर्मने फांसी, काढो कुवाशी, जेम  
 जाय नाशी । पू ॥ १ ॥ संसार घोर महो दधिथी, का  
 ढो अमने बहार ॥ स्वारथनां सहु कोइ सगा ठे, मात  
 पिता परिवार, बालमित्र उद्वाशी, विनय विलाशी  
 अर्जि खाशी. पुरो ॥ २ ॥

विमल नाथ स्तवन ।

पूजो देव करो तुम सेव कुकर्मो तन न न न न न नुटे ।

जगतमां सार रूप एक जैन धरम, औसा जाण मि  
थ्यात्वकुं ठोडेगें हम, तनका क्या जरोसा निकल  
जावैगा दम । पूजो ॥ १ ॥ जजो जजो प्रजुकुं क्या  
लगता हे दाम ॥ सबसे आगे प्रजुका हम लेवेगें नाम  
सेवे जो विमल नाथ होवेगा काम । पूजो देव ॥  
बालमित्र पूजे चन्दन केशरचंग, चालोशपूजो प्रजुजी  
के नव अंग, कहे करजोडी मनसुख मनरङ्ग । पूजो  
देव ॥ ३ ॥

### वैरागीपद

ठवि ठवि वदन निहार निहार ॥ ठ ॥ प्रोखि  
तपति अगमा गम कीनो विसरी विगत बिहार ॥  
ठ ॥ १ ॥ गये अनादि कालमे ऐसे दीठी न हिय  
दिदार, निरुपम निजर निहार निहारत, रंजिय रूप  
रिऊ वार ॥ ठ ॥ २ ॥ अंतर एक महुरत अंतर  
प्यार करी अणगार, लीने ज्ञान सारपद जीतर, चे  
तनता जरतार ॥ ठ ॥ ३ ॥ इति ॥

श्रीअनन्तनाथजिनुं स्तवन ।

जेखरे उतारो राजा जरथरी ॥ ए राह । अनन्त प्र  
जु मुज तारजो ॥ ए टेक । अवगुण मुजमां अनन्त ठे,  
तुम गुण अनंत अनंतजी; मोहराय वश हुं परयो  
तुमें तो कीधो तस अंतजी ॥ १ ॥ अनंत ॥ हुं रागी घणो  
लालची, तुमें तो थया बीत रागजी । राग छेप मु  
ज टाळीये, चार कपायनो त्यागजी । अनंत ॥ २ ॥ पाप

अनन्ता में कर्या, कुरु कपटनो तुं गेहजी ॥ आ पापी  
 नै उद्धारशो ॥ ठो तारक निसंदेहजी । अनंत ॥३॥  
 तुम सम तारक कोई नहीं, मुज सम पापी न अ  
 न्यजी ॥ करुणा नजर हवे कीजीये, तो थाउं धन्य  
 धन्यजी ॥ अ. ॥ ४ ॥ जवजव जटक्यो तुम विना, म  
 लीया हवे जगवंतजी, बालमित्रने दीजिये, अक्षय  
 ज्ञान अनंतजी । अ. ॥ ५ ॥

श्रीधर्मनाथनुं स्तवन ।

प्रभु धर्म नाथ ( १ ) तुमें धर्मतणा ठो दाता, तुम  
 विना अनंत जव रखरुयो पण मली नहीं कांई शा  
 ता प्र० ॥ १ ॥ हवे तुम ठेढो ( १ ) पकड्योठे करो  
 एक काम, मम घरमां जे तस्वर ठे ते काढो तमे  
 तमाम प्र. ॥ २ ॥ महा मेहेनतयी ( १ ) हुं मेलवुं  
 डव्य अपार ॥ चार चोर लुटी करी मारे ठे मने वहुं  
 मार, प्र. ॥ ३ ॥ तेनि पांच जग्गी ( १ ) ठे दुष्ट कृ  
 त्य करनारी, ते तस त्रातनी साथै मली वहु पाप  
 करावे जारी प्र ॥ ४ ॥ मम मित्र आवे ( १ ) मुज  
 घर मांहे कोई वार, त्रात जग्गी जेगा थई काढे ठे  
 तेने बाहार प्र. ॥ ५ ॥ मुज घर केरो ( १ ) में अश्व  
 महामद मातो ते पण तेणें कबजक्यों ठे कहुं केटली  
 वातो प्र. ॥ ६ ॥ दरशन करतां ( १ ) में औलखीया  
 जगवांन, बालमित्रनी अरज स्वीकारो देजो अक्षय  
 ज्ञान प्र. ॥ ६ ॥

शांतिनाथ जिन स्तवन ।

प्यारी वेनी शोक तमें समावजो—ए राह ॥ प्रभु  
शांतिनाथने समरजो, जिनराज प्रभुनुं ध्यान सदा  
तुमें मनथी, धारजो ॥ शांतिनाथ ध्यावो, सुखी थावो,  
द्वयो लावो, श्रावक कुलमांआवी रुडा गुणथी गाज  
जो ॥ प्र. ॥ १ ॥ पाप त्यजजो प्रभु नजजो अरिदम  
जो ॥ कर्म रिपुने मारी जलदी शिवमां जावजो प्र. २  
गुण गावे, नगति जावैं बहु ध्यावे, अहमदनगरना  
बालमित्रने प्रेमे पालजो प्र ॥ ३ ॥

श्रीकुण्डुनाथजिन स्तवन ।

मुखधीरे मांगु प्रभु तुम पाशे, आपो मोक्ष रत  
न, शिवरमणी नहीं ठोरु प्रभुजी नीश्वे एह वचन;  
मोक्ष वधु नहि मुकुं प्रभुजी निश्वे एह वचन शिव  
वधु वरवा, भोजने करवा, मनमां राखुं मान, नव  
स्थिति पाके, समकित सांखे, आवीस करतो गम  
न । शिव० ॥ १ ॥ क्रोध तजवजो, मान हरवजो  
मायाने मारजो मार; लोज न ठारो नव नव टालो;  
मुज पर राखी मन । शिव० ॥ २ ॥ सुखने करजो  
दुखने हरजो लेजो आप हजूर; कुण्डु जिनवरजी  
बालमित्र अरजी, स्वीकारो थांन मगन । शिव० ३

श्रीअरनाथजीनुं स्तवन ।

जैन धर्म हृदय धरो ठेचिंतामणी, मारो कर्म करो  
ठार वरो शिवरमणी, ए टेक । दुर देशांतर थी तुमें



आव्या ॥ सोदागर गुणवंत; जाबुं ठे हजी छुर तुमारे  
 पकमो कोईक सन्त । वरो ॥१॥ जनम जरा मृत्यु त  
 णा, जय ते अपरम्पार; नरक निगोद थी जमतां २  
 पाम्यो मनुष्यअवतार । वरो. ॥२॥ धर्मरूपी ड्रव्य मे  
 लवी, पहुँचो शिवपूर वास; मनुष्य जव पामी करी,  
 तुमें एवा करीने प्रयास. ॥३॥ वरो ॥ पांचे इंड्री वश करो,  
 मारो चार कषाय; त्रण दलावनी सङ्गत थी, व्यापार  
 ते बहु आय ॥ वरो ॥ ४ ॥ श्रीअरनाथ कृपा करी, देजो  
 मोक्ष आवास ॥ बालमित्रनी वीनती, प्रभु पुरो म  
 ननी आश । वरो ॥ ५ ॥ इति ॥

मह्वीनाथजीनुं स्तवन ।

रागपरज ॥ पानीने गमका मचाया ॥ एराह ॥ मह्वी जिने  
 श्वरवन्दिये । ए टेक ॥ मिथुला नयरी अति शोचती,  
 कुम्भ नरेश्वर राय २ । राणी प्रजावती उदरे, मह्वी  
 नाथ प्रभु आय । म. ॥ १ ॥ पूर्व जवे माया करी  
 तेथी लाग्या बहु पाप २ ; स्त्रीपणे आवीने ऊपना  
 एवो मायानो ठे व्याप । म. २ ठमित्रने प्रतिबोध  
 दां, कीधो बहु उपकार २ । तेम मने प्रतिबोधजो,  
 मारी अरज स्वीकार । म. ३ एबुं जाणीने अमे त्या  
 गशुं, माया कपट विकार २ । बालमित्रनी विनती.  
 अवधारो ते श्रीकार । म. ४

श्रीमुनिसुव्रत जिन स्तवन ।

कुर्वीत कंवर मारा लारुकां ए राह मुनिसुव्रत

जिन सांजलो, शी कहुं दुःखनीरे वात, पापना पिंरु  
समान हुं, तुमैं ठो जग तात । मुनी. ॥ १ ॥ वादर  
सुद्धम नीगोदमां, जम्यो अनंतो काल, । वेदन जे-  
दना वेदना॥ थकी काढो दयाल । मुनी. २ वीती चउ  
रिंझी जीवमां, जम्यो काल असंख्य, जलचर थलचर  
खेचरे, जम्यो संख्यासंख्य । मुनी. ॥ ३ ॥ तेम पंचेंद्रि  
तीर्यन्चमा । कीधा पाप अपार । तेथी वली २ नरक  
मां । उपज्यो बहु वार । मुनी ॥ ४ ॥ साते नरक  
मां वली २, उपनो वार अनंत, परमां धामीनी वेद  
ना, पापी जीव सहंत । मुनी. ॥ ५ ॥ पकरी २ पठा  
रुता, देतां उपर मार, करवत थी शीर वेरता, मारे  
वली तरवार । मुनी ॥ ६ ॥ एम अनंती, वेदना, सही मै  
वार अनन्त; पण आ पापी जीवना, दुखनो आव्यो  
न अन्त । मुनी ॥ ७ ॥ जगवठल जिनराजजी, हवे  
आव्वो तुम पास, ठोडुं नही हवे ठेरुलो, तुजमां ठे  
मुज आश । मुनी. ॥ ८ ॥ जीव अनन्ता ऊधर्या,  
देइ अक्षय ज्ञान, बालमित्रनी विनती, चित धरजो  
जगवान् । मुनी. ॥ ९ ॥

श्रीनमिनाथजिनुं स्तवन ।

दशा आ शी थइ मारी-ए राह । मोहनगारी,  
मनोहारी, शोचा नमीनाथनी जारी ॥ मस्तक मुकुट  
मणीं तणी, कांति अतिचलकंता ॥ जाल स्थल पण जल  
कतुं, कुंरुल थी जलसंत, सकल अंगे शोचाकारी,

ठवि देखी जाउ वारी । मो. ॥ १ ॥ आङ्गी चकी ज  
मावनी ॥ हीरामणि ऊलकंत, मुख ठवि कोटि चन्द्र  
मां॥ नयणा अति विकसंत, जगत शोज्ञानी हरनारी,  
देखी वंदे ठे नरनारी । मो. २ समकीत दे दातार  
तुं, देतुं अक्षय ज्ञान, पद २ ताहरी वंदना, श्रीपति  
श्रीजगवान; वालमित्र जक्ति तारी, सकल सुखनीठे  
देनारी । मो. ॥ ३ ॥

श्रीनेमनाथजी स्तवन ।

प्यारा नेम मानो, नहीं पाठा आवो, दीन दयाल  
कृपा करी आवो; लियो २ संसारनो, लांढ्हो, नहीं  
पाठा आवो । टेक ॥ (राजुल)—तुम विन आ संसा  
रमां॥ अवर न को आधार, आनी आवी उज्जी रहूं,  
क्यां जाशो आवार । (नेमनाथ)—सारथी चाल नहीं  
ऊजुं रहेवायठे, (राजुल)—परण्या विना जोऊं केम  
जवाय ठे । प्यारा ॥ १ ॥

कर ग्रहीने जले पठी जाजो, मानो मानो जादव  
पति जासो । नहीं० (नेमनाथ)—अष्ट जवांतरं हुं रह्यो,  
तुज साथे सुण नार; नवमे जव तुमे हवे, आवो अ  
मारी लार; (राजुल)—मुजथी साथे पण हवे अवाय  
ठे, वाल मित्र मन राजी बहु थाय ठे । प्यारा. ॥१॥

श्रीपार्श्वनाथजी स्तवन,

प्रजु पुरो मारी आस. ॥ एटेक ॥ वसों नयरी बनार  
सी वास॥ त्रेवीसमा जिनश्री पास॥ अहि लंठन धरी

उद्धासरे. प्रभु० ॥१॥ वाहः वदन तुमारुं पास ॥ करे  
 दिनकर सम उजास॥तुम दर्शनथी पापनो नासरे॥प्र  
 भु० २ कल्यां चोरांसी प्रवास ॥ जमी आव्यो हवे  
 तुम पास ॥हुं आप चरणनो दासरे. प्रभु० ॥३॥ क्रो  
 ध मान मोहनो त्रास ॥ वली लोत्ते कीधो लास ॥ कर  
 जोफी करुं अरदासरे प्रभु० ॥४॥ सह्यां नर्क निगो  
 दनां त्रास, करोक्रूर कर्मनो नास, हवे आपो मोक्ष  
 आवासरे. प्रभु० ॥ ५ ॥ वालमित्रनी अरजी खास,  
 कहे मनसुख मन उद्धास.हुं पास प्रभुनो दासरे.प्रभु०६  
 श्रीमहावीर स्वामीनो स्तवन ।

जपती प्रीतमनी जपमाल ए राह करतां जिन  
 वरना गुणग्राम पूजा करुं बहुसारी । पूजा करतां  
 बहु प्यारी ॥जक्ती जाव थकी मेंधारी॥वरसूं प्रेमथी  
 शिवसुन्दरी नारी । करतां ॥ टेक ॥ चार अने चोरा  
 शाना, चक्रे चढयो बहूवार । कूप अरट सम भ्रम  
 णनो ॥ कदीयें न पाम्योपार । मलिया महावीर उप  
 गारी,तसआणा शिरधारी॥वरसूं ॥१॥ मनमहारुं ला  
 गी रहयुं ॥ सुंदरी तारी पास । तुज रूप नयणें निर  
 खवा ॥ मनमां बहू उद्धास । जवोजव सेवना सारी  
 जेटवाजक्ति ठे चारी । वरसुं ॥२॥ नार कुमती यें जोल  
 व्यों ॥ प्रीत थी पारावर । ये नारीना सङ्गमा ॥ कांश्ये  
 नदीगेसार । कुमती न ठारी नारी ॥ तेथी गयोहुं  
 हारी । वरसुं ॥३॥ तुज सम प्रियआजगतमां ॥ अव

र न को देखाय । जिन दरशन करतां अहीं मनसु  
 बहु हरषाय । देखतां तुज देदारी॥वनीश हुं गेहलो  
 चारी । वरसुं ॥ ४ ॥ गुण गातां महावीरना ॥ टलशे  
 कुमती कुनार । मनसुख अने वालमित्रने ॥ मलशे  
 शिवपूरी सार । नंदन वन मोजारी ॥ विनती करे क  
 रारी । वरसुं ॥ ५ ॥

॥ मुंढाला महावीर स्तवन ॥

॥ रागणी केरवा ॥

मारो मुंढालो महावीर ॥ मा ॥ वीरसर्वमां धीर  
 वीर तुं ॥ मुं ॥ देरामा राजायें आवी, मुंढे नाख्यो  
 हाथ ॥ अजिमानि राजाने शिद्धा, दिधि तें जगना  
 थ ॥ १ ॥ मुं० ॥ हाथ नाखतां मुंढो तुटी ॥ पडी  
 देरासर मांय ॥ अजिमानि राजा त्यां नमीयो,  
 ए अचरिज मनमाय ॥ २ ॥ मुं० ॥ ते दिनथी जग  
 मां विख्यातो, मुंढालो महावीर ॥ घाणेरानां डूंग  
 रमाहें, वेठो साहस धीर ॥ ३ ॥ मुं ॥ एकलडुं देहेरुं  
 देखिने, मुगळे कीधी रीस ॥ देरुं पारुवा सुजट सी  
 पाई आढ्या ते दस वीस ॥ ४ ॥ मुं ॥ तुज आणा  
 धारी योगणीयो, करवा लागी युध्द ॥ त्रसुल तणा  
 प्रहारें मार्या, नाछा तेह अबुद्ध ॥ ५ ॥ मुं ॥ मुंढ  
 त्रूटतां पाणी राख्युं, देख्याढ्या जो हाथ ॥ तारण  
 तरण ठे विरुद तुम्हारुं, शिवपुरनो ठे साथ ॥ ६ ॥  
 मुं ॥ घाणेरख स्वामीने जेढ्या, मुंढालो महावीर ॥

अक्षयज्ञान सेवक हम जंपे, जयजय श्री महावीर  
॥ ७ ॥ मुं ॥ इति ॥

रागणी पीलु

तोविना और न जाचुं जिनंद राय ॥ ए टेक ॥  
और देवशिव देवे ए मत, सांजली किम करी राचुं ॥  
एमत जे धारे ते जननुं, समकित किम रहे साचुं ॥  
जि ॥१॥ जवहिं तवहिं तुम देवोगे, एह वचन नही  
काचुं ॥ समकित रत्न देख्वावो तेथी, मानुं हुं सह  
साचुं ॥ जि ॥२॥ आगे अनेक उद्गारे सुनकर, चर  
नकमलपर माचुं ॥ अक्षय ज्ञान दायक देखिने, हर  
पित थइ थइ नाचुं ॥ जि ॥ ३ ॥ इति

रागणी जींजोटी

साचुं ठे जिनंद नाम अवरने न राचुं ॥ मुकुट  
कुंडल चलक फलक, चाल तिलक जाचु ॥ रत्न ज  
मित कुंमलेथी ॥ तरणी तेज काचुं ॥ १ ॥ मोतिहार  
जग जगाट, देखतांज माचुं ॥ वाजुबंध ज्ञानचंद्र,  
गीत गाइ नाचु ॥ साचुं ॥ २ ॥ इति

रागणी पीलु-

धन युवती पर मन ललचाणुं एथी अधिक वी  
जुं कांइ नजाणुं ॥ एटेक ॥ दान शियलमां चित्त  
नव लागे, जप तप सुणतां मन गजराणुं ॥ धन ॥  
॥ १ ॥ सप्त व्यसन सेवनमां रसियो, करवा कपट  
कालजुं कोतराणुं ॥ धन ॥ २ ॥ इर्ष्या द्वेष मत्सर पर

निंदा, ठल प्रपंचथी हृदय जराणुं ॥ धन ॥ ३ ॥ जव  
जव एवा पाप करंता, पापनां चारथी पिंरु जराणुं ॥  
धन ॥ ४ ॥ तुं तारक पण हुं बहु पापी, मारो उध्धार  
करोतो हुं जाणुं ॥५॥ धन ॥ श्रीशंखेश्वर ताहरी कृपा  
थी, अक्षय ज्ञाननुं पेहेरुं घराणुं ॥ धन ॥ ६ ॥ इति ॥

मराठी चालनी साखी

अकल स्वरूपी घट घट व्यापी, अनंत गुणी जग  
वान. लोका लोक प्रकाशक जास्कर, केवल ज्ञान  
निधान ॥ जग हितवच्छल करुणासागर, गुण रत्नाकर  
स्वामी शिव सुख पामी बहु दुःख वामी, त्रिभुवन  
जन विश्रामी. ॥ १ ॥ अशरण शरणा जव जय हरणा.  
तुं प्रभुतारण तरणा ॥ अजर अमरणा, शिवसुख  
करणा, प्रभु वंडु तुज चरणा. तुंजगत्राता तुं पितु  
माता, दे सुख शाता दाता, तुंजगत्राता विश्व  
विख्याता, अक्षय ज्ञान प्रदाता ॥ २ ॥

थियेटर

दीलधर मनकर जिनवर पूजन करवा जश्यें आ  
ज ॥ एटेक ॥ जाव धरीने पूजे जिनने तेहने धन्य  
धन्य ॥ पूजा करतां शिवपूरजावा प्राणी बांधे पुण्य,  
साची जक्ति रीजी स्वामी देजो दरिसन ॥

रागणी गुजराती गरवी

प्रभुतार हवे मारुं अहि शुं थसेरे ॥ कयां पाप  
ते अनंत मारां क्यम जसेरे ॥ १ ॥ प्र० ॥ ताहरुं

शरण मारे हवे अहीं एक ठेरे, ताहरा ध्यानथी अ  
नंत पाप क्षय जसेरे ॥ १ ॥ प्र ॥ जैन गायन मंड  
ली नित्य गाय ठेरे ॥ तेथी अक्षय ज्ञान मने आप  
सेरे ॥ ३ ॥ प्रभु ॥ इति ॥

रागणी दक्षणी थीयेटर

श्री चराचर विश्ववरा, शिवसौख्यकरा, जयजी  
रु हरा, सुरासुरेश्वर बंध तरा ॥ शि ॥ एतेक ॥ ज  
व तारक तु जगनो त्राता, जय वारक विभुविश्व  
विख्याता, तुं सुखशाता, देपितुमाता, अनंतगुणो  
तुजमां प्रवरा, जय धैर्य धरा ॥ १ ॥ शि ॥ अखूट  
खजानो ठे प्रभु ताहरो, हुंहुं सेवक प्रभुजी ताहरो,  
जवसागरथी पार उतारो, कांश्च जुजपर करण करा  
जय शोक हरा, ॥१॥ शि ॥ ताहरुं ध्यान धरुं नित्य रंगे,  
हुं पण याइस प्रभु तुज सगे, अक्षय ज्ञान दे दान  
उमंगे, नाजिनंदन नाम धरा, जयविजय करा ॥ ३ ॥

गजल.

उंमा निसा सा नाखती रे दीकरी छुखी ॥ ए  
राह ॥ निहार यार तार तुं विचार दारहे ॥ गुनेगा  
रकुं उतार पार तुहि दिलदार हे ॥१॥ नि ॥ अव्य  
क्तमे थजाणते यह कर्ममे करे, कृपाकरे प्रभु अहो  
कृपावतारहें ॥ १ ॥ नि ॥ शरण्यहे प्रभुजी तुं शर  
ण दीजीये मुजे, अक्षय ज्ञान दानदे त्रैलोक्य सार  
हे ॥ ३ ॥ निहार इति ॥



## राजुलगीत.

देखा नही कतु सार जगतमे देखा नही कतु  
 सार, आसंसार असार ॥ ज ॥ तुं तारे तो तार ॥ ज ॥  
 माहारे तुं आधार ॥ ज ॥ दे । एटेक ॥ मेंणा दइ  
 दइ हवेहुं थाकी ॥ संदेसानो नही पार ॥ हाय हाय  
 हायरे हवे ॥ ठेक बनी लाचार ॥ ठे ॥ ज ॥ दे ॥ १ ॥  
 रफिरडिहुं आसुंढे जीनी ॥ गमे नही शृंगार ॥ हाय  
 हाय हायरे हवे ॥ अंगवले अंगार ॥ अं । ज । दे ॥ २ ॥  
 फुरी फुरी पिंजर थयुं अंग ॥ वियोगदुः खअपार ॥  
 हाय हाय हायरे हवे ॥ दीक्षाखलं आवार । दी ॥ ज ॥ दे  
 ॥ ३ ॥ जैन गायक मंडली गावे ॥ राजुलगीत उचा  
 र ॥ जाय जाय जायरे एतो । मोक्ष मंदिरमां पधा  
 र ॥ मो ॥ ज ॥ दे ॥ ४ ॥

## रागणी खमाच तुमरी ॥

दरीसन विन अखियां तरस रही ॥ ए राह ॥  
 नव पदसैं मेरे विघन कटे । ज्यौं श्री पालके अघ वि  
 घटे ॥ एटेक ॥ ध्यान स्मरण जो करते तिनके ॥ स्पष्ट  
 अस्पष्ट सब कष्ट कटे ॥ १ ॥ न ॥ नट चिट लंपट  
 सबहि सुधारे, मोह सुजटका जोर हटे ॥ २ ॥ न ॥  
 दान शियल तप ज्ञाव प्रमुख गुण ॥ विनय नयादिक  
 गुण प्रगटे ॥ ३ ॥ न । अघट विघट घटना इह ज  
 गकी ॥ नव पद ध्यानसैं सब सुलटे ॥ ४ ॥ न ॥ पुना  
 जैन गायक मंडलीकु ॥ आक्षय ज्ञान दशा प्रगटे ॥ ५ ॥

धनासिरी.

जवलग विषय घटा न घटी ॥ एटेक ॥ तवलग तप  
जप संयम क्रिया ॥ कहा करत कपटी ॥ लोक दि  
खावन करत हे क्रिया ॥ पहिरत पीत पटी ॥ १ ॥  
ज ॥ ध्यान धरी योगी होय वेष्ठत ॥ वक वृत्ति कप  
टी ॥ वेष्ठ तखत झानी होय वेष्ठत ॥ करे उपदेश  
अती ॥ २ ॥ ज ॥ उग्रविहार धरत आनवर ॥ मुख  
सैं कहत यति ॥ वनवासी तनजस्म लगावत ॥ शिर  
पर धरत जटी ॥ ३ ॥ ज ॥ नग्न रहत पंचाग्नी सेव  
त, साधत योगहठी ॥ शष्ठ हठ कष्ट करे पण मनतो,  
नाचत नृत्यनटी ॥ ४ ॥ जवलग विषय घटा न घटी  
तवलग तुं क्या फलपावेगो, विषयवल्लीनकटी ॥  
जैन गायन मंरुल ताकुं वंदत ॥ जाकी अक्षयज्ञान  
दशा प्रगटी ॥ ५ ॥ जवलग ॥ इति ॥

राग कल्याण

जय जय नव पदा आप संपदा ॥ काप आपदा ते  
शुज ध्यानथी सदा ॥ एटेक ॥ श्वेतरंग अरिहंता  
वंदो, रातासिद्धमहंत ॥ आचारजपीला ने लीला,  
उवकायाजगवंत ॥ १ ॥ ज ॥ सुंदरश्याम सलूंणा साधु ॥  
धवलाठे पद चार ॥ दंशणनाण चरण तपवंदो, सिद्ध  
चक्र एसार ॥ २ ॥ ज ॥ पांच गुणी चउ गुण ठे  
एमां, आधारा आधेय ॥ गुणसेव्याथी गुणीयल  
थाये, जाणोनिः सदेह ॥ ३ ॥ ज ॥ शांतिसारे विघन

निवारे, उतारे जवपार ॥ अक्षय ज्ञान प्रचारक मं  
डल ॥ चंदेवारंवार ॥ ४ ॥

रागणी वरवा

॥ अरे दहि माहरी तुरकवाने घेर लई ॥ एराह  
॥ प्रजुदीजें दरस वमी देर जई ॥ टेक ॥ लखचो  
रासी फेराफिरतां ॥ दुःखसहन करे मेनें केइ केइ  
॥ १ ॥ प्र ॥ जवजव जटकत सरणेंहुं आयो ॥ अव  
तो राखो समकित दान दई ॥ २ ॥ प्र ॥ पुना जैन  
गायक मंरली तो ॥ अक्षय ज्ञान पद चाहाय  
रही ॥ ३ ॥ प्र ॥

तुमरी

॥ हजारों मेरे कानके मोती ॥ एराह ॥ प्रजु  
मेरो ज्ञानकी ज्योती ॥ मानों सुर्यकिरण कोटी ॥  
टेक ॥ घटघट व्यापक ज्ञान कला ठे, निजगुणता  
मोटी ॥ १ ॥ प्र ॥ अनंत गुणीनां गुणनी गणना ॥  
करवी ते खोटी ॥ २ ॥ प्र ॥ ए प्रजुने तो रूप न रे  
खा, वर्णादिक नोती ॥ ३ ॥ प्र ॥ गुणीयनकों जजते  
गुणी होवे ॥ केवलता मोटी ॥ ४ ॥ प्र ॥ अक्षयज्ञान  
दशा प्रगटावे ॥ कर्ममलीन धोती ॥ ५ ॥ इति ॥

राग गोमी

गोडी गाइयें मनरंग ॥ एटेक ॥ एक ध्याने एक  
ताने ॥ कर केदारो संग ॥ १ ॥ गोमी ॥ यात्रा कीजे  
अमृत पीजे ॥ नीर बहे जिम गग ॥ रोग शोक नय

ह्वेस नासे ॥ आलस नावे अंग ॥ १ ॥ गोमी ॥  
पोढंता प्रचुनाम लीजें ॥ आणी मन उठरंग ॥ अ  
जय तेहने नींद माहे ॥ कदिय न होवे चित्त जंग  
॥ ३ ॥ गोमी ॥ इति ॥

### सुमरी

सकल मर्म मल क्षय करके सुगत पुर गए गए  
रे ॥ मु ॥ एटेक ॥ अविनाशी अविकारहे ॥ परमात्म  
शिव धामरे ॥ समाधान सर्वांग अरूपी ॥ मेरेमन  
रहेरहे रे ॥ १ ॥ स ॥ शुरू बुरू अविरुहे ॥ रहे  
अनादि अनंतरे ॥ वीरप्रजुके आगे गौतम ॥ अमृ  
त पद लहे लहेरे ॥ २ ॥ स ॥ इति ॥

### वैरागी पद

कहा कीनो नर जव पाके ॥ रहा मोहमद ठाके  
॥ टेक ॥ वृद्ध अवस्था आयलगी तव ॥ वेष्टो बुद्धि  
गुमाके ॥ क ॥ जुष्ट बोल धन जोरु लीयो हे ॥ जो  
ले जीवनकों समजाके ॥ कुमतीनार संग राच रह्यो  
हे ॥ सुमती गुनकों नसाके ॥ १ ॥ क ॥ मात तात  
सुता सुत नारी ॥ इनसे नेह लगाके ॥ ए सब अ  
पने घरकों आवे ॥ तेरी देह जलाके ॥ ३ ॥ क ॥  
सतगुरु कहे पर जव सुख करले ॥ चरनन चित्त लगा  
के ॥ अब सुनले फिर कोन सुनावे ॥ अवनन सुद्ध  
कराके ॥ ४ ॥ क ॥ इति ॥

राग भाढ ताल पंजावी

अजिहो कहो ज्ञानी, कोठे थांको देश ॥ साची  
तो कहोने ॥ कोठे ॥ एटेक ॥ जन्म लियो तबहो  
ज्ञानी, जुरा होता केस ॥ स्याइकी सपेदी आई ॥  
अज हुं क्युं नहिचेत ॥ १ ॥ कोठे ॥

कोठेका संगती तुम ॥ इठे आया एक ॥ कठिने  
जावोला हो ज्ञानी ॥ जमता एका एक ॥१॥ कोठे॥  
सुखमे संगती घणा ॥ दुखमे न एक ॥ ब्रथाहिपचो  
ठो ज्ञानी ॥ नीका कर देख ॥ ३ ॥ को ॥ धर्म तो  
संगतीसाचो ॥ जुठातो अनेक ॥ अमीचंद साहेव  
ने समरो ॥ राखे थांकीटेक ॥ ४ ॥ को ॥ इति ॥

जजनी पद

जिन रायानां दरिसन पायारे ॥ जलेजले जिनं  
द गुण गाया ॥ तने वंदेठे सुरनररायारे ॥ ज ॥ तुने वं  
दार्थी गुणीमां गणायारे ॥ ज ॥ एटेक ॥ अश्वसेन  
नृपनंदन राया ॥ वामाराणीनां ठो जाया ॥ चिंताम  
णीजी प्रजु चिता चूरोने ॥ जवजवनी जावछहरा  
यारे ॥ ज ॥ १ ॥ स्वप्नाना सुखने अत्रनी ठाया ॥  
एवी संसारनी ठे माया ॥ एवो उपदेश ठे साचो  
तुमारो पण ॥ ठासे जगत जरमाया रे ॥ २ ॥ जले  
॥ जिणंद वाणी अमीय समाणी ॥ साची जाणे ठे  
जवि प्राणी ॥ ठास ठासतो जवि ठांडी देजो ने  
तुमे ॥ माखण लेजो तांणीरे ॥ ३ ॥ जले ॥ धन्य

सफल दिन आज घमिपल ॥ आजनी सुकृत कमा  
णी ॥ वीर्य उद्धास विनानी जे करणी ते ॥ पाणी  
मां जेम लींटी तांणीरे ॥ ४ ॥ जले ॥ साचीतो वा  
णी तेणेज जाणी ॥ जेणें करी ते प्रमाणी ॥ अक्षय  
ज्ञान मुनी स्पर्श ज्ञानविण ॥ चीजु बंधुं धुल धाणी  
रे ॥ ५ ॥ जले ॥ इति ॥

॥ श्रीशांति नाथजी स्तवनं ॥

तुज्यं नमस्ते स्वामी ॥ शांति जिनंदाजी ॥ दृग  
देखे परमानंदा, ॥ मुख पुनमचंदाजी ॥ शां ॥ एटे  
क ॥ जन्मे प्रभु शांति सुधारी ॥ जग मरी निवारी  
जी ॥ प्रभु शांति नाम हितकारी ॥ मेने सेवा धारी  
जी ॥ १ ॥ तुज्यं ॥ तुमविना कोन हे मेरा ॥ तुं  
साहव हेराजी ॥ हरो मिथ्या रोग अंधेरा ॥ हठो  
जव फेराजी ॥ २ ॥ तुज्यं ॥ तुम दीन दयालाजी ॥  
शासनके लालाजी ॥ मे सदा जपुं जप माला ॥  
घर खेम खयालाजी ॥ ३ ॥ तुज्यं ॥ तुम कल्पवृक्ष हित  
कारी ॥ चिंतामन धारीजी ॥ प्रभु आतम शरण तु  
मारी ॥ दो हमे सुधारीजी ॥ अब खुसी तुमारीजी ॥  
॥ ४ ॥ तुज्यं ॥ इति ॥

तुमरी

वीर प्रभुजी तेरी दोस्तिमे ॥ मेरी समता सखी मे  
खान जहरे ॥ एटेक ॥ आपन आए बोध पढाए ॥  
तेरी सुरतपर कुरवान जहरे ॥ १ ॥ वीर ॥ शासन

नायक एहि अरज हे ॥ दीजे दरस वही वेर जइ  
रे ॥ २ ॥ वीर ॥ आशा दासकी पुरन कीजें ॥ चरण  
शरण लपटाय रहरे ॥ ३ ॥ वीर ॥

॥ समेत शिखरथी स्तवन ॥

तुमतो जले विराजोजी ॥ सांवरिया महाराज  
शिखरपर जले विराजोजी ॥ तेरे घाटे चोकी लागे ॥  
यात्री जाण न पावे ॥ हुकुम कियो श्रीपार्श्वजिनेश्वर  
॥ बांह पकड़लेजावे ॥ १ ॥ तु ॥ उंचा नीचा पर्वतसो  
हे ॥ तले जीलका वासा ॥ पेरेपेरे पर सिंह धनुके ॥  
जिहां लिया तुम वासा ॥ २ ॥ तु ॥ टुंक टुंक पर  
धजाविराजे ॥ जालरका ऊणकारा ॥ जालरका ऊण  
कारासेती ॥ गुंजे परवत सारा ॥ तुम ॥ ३ ॥ दूरदेस  
के जात्री आवे ॥ पूजा आन रचावे ॥ अष्ट डव्य  
पूजामे लावे ॥ मन बंठित फलपावे ॥ तु ॥ ४ ॥ सुरनरमुनि  
जनवंदन आवे ॥ महा परम सुखपावे ॥ चंद खुसाल  
चरणको सेवक हरख हरख गुणगावे ॥ तुम ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ विरजिनस्तवन ॥

नाथ कैसें जंबुको मेरु कंपायो ॥ ना ॥ सिद्धा  
रथ सुत नाम धराया ॥ त्रिसला राणीनो जायो ॥  
ठप्पन दिशि कुमरी मील आई ॥ सुची कर्म  
करायो ॥ १ ॥ ना ॥ इंद्र महोत्सव जयतिहां प्रग  
टयो ॥ मेरु शिखरले आयो ॥ इंद्र सिहांसन  
पर ले वेष्टो ॥ मनसदेह चरायो ॥ २ ॥ ना ॥ अब

धि ज्ञानसे तवतिहा देख्यो ॥ अंगुष्ठे मेरु चंपायो  
॥ संशय हरण चरण प्रभुजीके, कलस हजारु ठ  
रायो ॥ ना ॥ ३ ॥ सिद्धारथ घर आयकेरे ॥ मंगल  
चार गवायो ॥ सुमन अधमकों निजपद दीजे, मन  
वंडित फल पायो ॥ ४ ॥ इति ॥

समेत शिखर ॥

सांवरिया जैसें बने तेसें तारो ॥ मेरी करणी  
कहु न विचारो ॥ सा ॥ नागनागनी व्याकुल दोनुं  
॥ जरत अगनीसे उवारो ॥ उनकों राजदियो सुर  
पुरकों ॥ मुजकों क्यों उधारो ॥ १ ॥ सां ॥ अश्व  
सेनके नंदन कहिये ॥ माता वामा देवी प्यारो ॥  
बाल आवस्थामें जोग लियो हे ॥ चार महाव्रत  
धारो ॥ २ ॥ सां ॥ योग निरोधी दसलख श्रावक ॥  
अष्ट करमकों पठारो ॥ काया गाल गए सिवपुरकों  
॥ लोका लोकनिहारो ॥ ३ ॥ सां ॥ धन्यधनी धन्य  
जाग हमारो ॥ शिखर समेत जुहारो ॥ मनबचका  
नमत बुध गंगा ॥ चरण कमल बलि हारो ॥

रागणी माढ.

मेवाडोरे मली ॥ एराह ॥ प्रभु जीव जीवन  
आधाररे, तुमने खमारे खमा ॥ एटेक ॥ श्रीसिद्धा-  
चल मंरुन साहेव, तुं प्रभु आनंद कंद ॥ नव्य  
कमल प्रति बोधन दिनमणि, मुखहुं पुनम चंदरे  
॥ १ ॥ तु ॥ तुज वाणी अमृत करेरे, सागर जेम



नायक एहि अरज हे ॥ दीजे दरस वही वेर जइ  
रे ॥ १ ॥ वीर ॥ आशा दासकी पुरन कीजें ॥ चरण  
शरण लपटाय रहरे ॥ ३ ॥ वीर ॥

॥ समेत शिखरथी स्तवन ॥

तुमतो जले विराजोजी ॥ सांवरिया महाराज  
शिखरपर जले विराजोजी ॥ तेरे घाटे चोकी लागे ॥  
यात्री जाण न पावे ॥ हुकुम कियो श्रीपार्श्वजिनेश्वर  
॥ बांह पकरलेजावे ॥ १ ॥ तु ॥ उंचा नीचा पर्वतसो  
हे ॥ तले जीलका वासा ॥ पेरुपेरु पर सिंह धनुके ॥  
जिहां लिया तुम वासा ॥ २ ॥ तु ॥ टुंक टुंक पर  
धजाविराजे ॥ जालरका ऊणकारा ॥ जालरका ऊण  
कारासेती ॥ गुंजे परवत सारा ॥ तुम ॥ ३ ॥ दूरदेस  
के जात्री आवे ॥ पूजा आन रचावे ॥ अष्ट डव्य  
पूजामे लावे ॥ मन बंठित फलपावे ॥ तु ॥ ४ ॥ सुरनरमुनि  
जनवंदन आवे ॥ महा परम सुखपावे ॥ चंद खुसाल  
चरणको सेवक हरख हरख गुणगावे ॥ तुम ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ विरजिनस्तवन ॥

नाथ कैसें जंघुको मेरुं कंपायो ॥ ना ॥ सिद्धा  
रथ सुत नाम धराया ॥ त्रिसला राणीनो जायो ॥  
ठप्पन दिशि कुमरी मील आई ॥ सुची कर्म  
करायो ॥ १ ॥ ना ॥ इंद्र महोत्सव जबतिहां प्रग  
टयो ॥ मेरु शिखरले आयो ॥ इंद्र सिहांसन  
पर ले वेष्टो ॥ मनसदेह चरायो ॥ २ ॥ ना ॥ अब

धि ज्ञानसे तवतिहा देख्यो ॥ अंगुष्ठे मेरु चंपायो  
॥ संशय हरण चरण प्रजुजीके, कलस हजारु ढ  
रायो ॥ ना ॥ ३ ॥ सिद्धारथ घर आयकेरे ॥ मंगल  
चार गवायो ॥ सुमन अधमकों निजपद दीजे, मन  
वंछित फल पायो ॥ ४ ॥ इति ॥

समेत शिखर ॥

सांवरिया जैसे वने तेसे तारो ॥ मेरी करणी  
कबु न विचारो ॥ सा ॥ नागनागनी व्याकुल दोनुं  
॥ जरत अगनीसे उवारो ॥ उनकों राजदियो सुर  
पुरकों ॥ मुजकों क्योंन उधारो ॥ १ ॥ सां ॥ अश्व  
सेनके नंदन कहिये ॥ माता वामा देवी प्यारो ॥  
वाल आवस्थामें जोग लियो हे ॥ चार महाव्रत  
धारो ॥ २ ॥ सां ॥ योग निरोधी दसलख आवक ॥  
अष्ट करमकों पठारो ॥ काया गाल गए सिवपुरकों  
॥ लोका लोकनिहारो ॥ ३ ॥ सां ॥ धन्यधनी धन्य  
जाग हमारो ॥ शिखर समेत जुहारो ॥ मनवचका  
नमत बुध गंगा ॥ चरण कमल बलि हारो ॥

रागणी माढ.

मेवाडोरे मली ॥ एराह ॥ प्रजु जीव जीवन  
आधाररे, तुमने खमारि खमा ॥ एटेक ॥ श्रीसिद्धा-  
चल मंरुन साहेब, तुं प्रजु आनंद कंद ॥ जव्य  
कमल प्रति बोधन दिनमणि, मुखहुं पुनम चंदरे  
॥ १ ॥ तु ॥ तुज वाणी अमृत जरेरे, सागर जेम

गंजीर ॥ दीन दयाल कृपाकर मुजपर, तारक जव  
जल तीररे ॥१॥ तुं ॥ जवजव जटकत शरणेहुं आ-  
व्यो, जांगो जवनी जीर ॥ मारां तारां सुं करो प्रजु,  
तारक ठो वडवीररे ॥ ३ ॥ तुं ॥ मरुदेवीने तारियां  
प्रजु, तार्या सोये पुत्र ॥ तार्या विना केम चालसे  
प्रजु, हुं पणहुं घर सूत्ररे ॥ ४ ॥ तुं ॥ दीना नाथ  
दयाल दयाकरी, राखो मुजने पास ॥ पुना जैन  
गायक मंरुलीने ॥ अक्षय ज्ञाननी आशरे ॥ ५ ॥

पद.

जगतनी घटना ठे अतिन्यारी ॥ एराह ॥ आंगी  
नी रचना ठे बहुसारी ॥ करतां अनुमोदन पुण्यथाय  
जारी ॥ एटेक ॥ हीरामणि माणक जडेली, मुख-  
ठवी तेज देखी जाय चन्द्रहारी ॥ १ ॥ आं ॥  
मस्तक मुकुट कानेठे कुंरुल, कलक कलक तेज पुंज  
बलिहारी ॥ २ ॥ आं ॥ बांहे बाजुबंध हार गलामा,  
मुक्ताफलना वंदेठे नरनारी ॥ ३ ॥ आं ॥ सर्वांगे  
प्रजुतेज अनंतु, चंद्रसूर्य कोटी तेज जायहारी ॥४॥  
आं ॥ पुना जैनगायन मंडलीने दीजे ॥ अक्षय  
ज्ञानदशा विस्तारी ॥ ५ ॥ आं इति ॥

होरी

॥ सामरो सुख दाई, जाकी ठवी वरनी नजाई  
॥ सा ॥ एटेक ॥ श्रीअश्वसेन वामा नंदनकी, की-  
र्ति त्रिजुवन ठाई ॥ समेत शिखर गिरि मंरुन प्र-

झुको, देख दरस हरखाई ॥ हृदय मेरो अति जल  
साई ॥ १ ॥ सा ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगटे, आज  
आनंद बधाई ॥ तिन लोकको नायक निरख्यो,  
प्रगटी पूर्व पुण्याई, सफल मेरो जन्म कहाई ॥ २ ॥  
सा ॥ प्रभुके सरस दरस बिनुपाए, जव जव जटक्योंमें  
जाई ॥ अवतो प्रभुके चरण चित्तलाग्यो, बाल कहे  
गुणगाई; प्रभु संग लगन लगाई ॥ ३ ॥ सा ॥ इति ॥  
होरी.

राग उपर प्रमाणे ॥ सामपे कहियो वीनती मो-  
री ॥ एतेक ॥ राजुल चंडानकों बोले, आइ वसंत  
रीतु होरी, बागुमें फाग केसीमे खेलुं ॥ सब सखि-  
यनकी टोरी ॥ प्रिया गए हमको ठोरी ॥ १ ॥ सा ॥  
सज सिनगार संग लइ सिखरे, अवीर गुलालकी  
जोरी, अपने पिया संग खेलखेलत हे, केशरको  
रस घोरी, बाजे रुफ ताल टकोरी ॥ २ ॥ ॥ सा ॥  
एते कारन बालम घर आवो, खेलुमें रंगजर होरी ॥  
ए वीनती सुन प्रभुने राजुलकी ॥ दीने सब दुख-  
तोरी ॥ रत्नकहे जइ वरजोरी ॥ ३ ॥ सा ॥ इति ॥

॥ पावा पुर जिन गीतं ॥

अखियां मेरी प्रभुजीसैं आज लगी ॥ डेर ॥ पा-  
वा पुर श्रीवीरजिनेश्वर ॥ देखत दुरगति दुरटली ॥  
अ ॥ १ ॥ मस्तक मुकुटसोहे मनमोहन ॥ विच-  
विच हीरा मोतिलालजनि ॥ २ ॥ अ ॥ रत्नजनि-

त दोयकुंमलसोहे ॥ ॥ गले विच मोतियन माल-  
पनी ॥ ३ ॥ अ ॥ हरखचंद के तुम प्रभुसाहेव ॥  
चरण न ठोडुं पल एक घरी अ ॥ इति ॥

॥ पद ॥

जिन राज नाम तेरा ॥ हो राखुंरे हमारा घटमे  
॥ टेक ॥ जाके प्रजाव मेरा ॥ अज्ञानका अंधेरा ॥ जा  
गा जया उजेरा ॥ १ ॥ रा ॥ सुरत तेरी रागें ॥ दे-  
ख्या विजाव त्यागे ॥ अध्यात्म रूप जागे ॥ २ ॥ रा ॥  
मुद्रा प्रमोद कारी ॥ रूपजेस ज्युं तिहारी ॥ लाग-  
त मोहे प्यारी ॥ ३ ॥ रा ॥ त्रैलोकनाथ तुमही ॥ ह-  
महें अनाथ गुनही ॥ करियें सनाथ अवहि ॥ ४ ॥  
रा ॥ प्रभुजी तिहारी सांखे ॥ जिन हर्ष सुरी जा-  
वे ॥ दिल माहिं येहिं राखेहो ॥ ५ ॥ इति ॥

पीछु वरवा.

अवतो उंधार्यो मोहे चहिये ॥ जिनंदराय, राखुं  
जरोंसो मे प्रभुके चरणको ॥ एटेक ॥ सुनो श्रीश्रेयां  
सनाथ ॥ साचो शिव पुर साथ ॥ विरुद तुमारो प्रभु  
तारन तरनको ॥ १ ॥ अ ॥ सिंह पुरी जन्म ठाम ॥  
पिता विष्णुसेन नाम ॥ विष्णुराणी कुंखें जायो ॥  
कंचन वरनको ॥ २ ॥ अ ॥ वरस चोरासी लाख ॥  
आयुष्य परम जांख ॥ लंठन चरन खग सुखके क-  
रनको ॥ ३ ॥ अ ॥ हुंतोहुं अनाथ तुम नाथनके  
नाथ प्रभु ॥ तुमविना और मेरे दुसरो सरनको

॥ ४ ॥ रा ॥ प्रभुके चरणारविंद पुजत हरषचंद ॥  
काटिये करम दुःखमेटिये मरनको ॥ ५ ॥ अ ॥ इति  
पद.

गुण अनंत अपार प्रभुतेरे ॥ गु ॥ टेक ॥ सहसर  
सना करत सुरगुरु ॥ तोउ न पायोपार ॥ १ ॥ प्र ॥  
कोन अंवर गिने तारा ॥ मेरु गिरको जार ॥ चरम  
सागर लहर माला ॥ करत कोन विचार ॥ २ ॥ प्र ॥  
नक्ति गुण लवलेस जाखें ॥ सुविधिजिन सुखकार ॥  
समय सुंदर कहत हमको ॥ स्वामी तुम आधार ॥ प्रण ॥  
राग कल्याण.

माझ मेरो मन तेरो नंद हरे ॥ एटेक ॥ कंचन  
वरण कमल दल लोचन ॥ निरखत नयन छरे ॥ १ ॥  
पंचवरण मनहरण धरनपर, ठम ठम पांव धरे ॥ रत-  
न जमित कंचन घुघरियां ॥ रुण ऊणकार करे ॥ २ ॥  
मा ॥ हलत लसत मुगता फल माला ॥ पीत वसन  
उपरे ॥ मानु चलिहे मान शिखरते ॥ गंगप्रवाह  
खिरे ॥ ३ ॥ मा ॥ धन त्रिसलादे जाग्य तिहारो ॥  
तुंतिहुं जवन शिरे ॥ तीन जवनको नायक तेरे ॥  
आंगनमे विचरे ॥ ४ ॥ मा ॥ श्रीवर्द्धमान जिनंकी  
मूरत ॥ विनु देखे न सरे ॥ हरखचंद प्रभु वदन  
विलोकत ॥ सवहि काजसरे ॥ ५ ॥ इति ॥

तुमरी

इंजानी सब छमक छमक जन्म महोत्सव आवे ॥

घननननन घननननन, घंटा सुघोखा वाजे ॥एटेक॥  
 ॥ गान तान नाच रंग ॥ इंद्रासन आय ॥ धन्य धन्य  
 आजको दिवस, प्रजुजीको दरिसन पाय ॥ इं ॥ १ ॥  
 वीर काया लघु देखी ॥ इंद्र मन अकलाय ॥ अ-  
 वधि देखी वीर मेरु अंगुठे दवाय ॥ २ ॥ इं ॥ जन्म  
 महोत्सव जिनको करी, इंद्र देव लोक जाय ॥ दा-  
 स नर प्रजु तणा, हरसेन गुन गाय ॥ ३ ॥ इंद्र ॥ इति

॥ राग सौरष्ठ ॥

॥ कहुं कहाँलोंवारुं नणदलवीर ॥ क० ॥ मिथ्या  
 गणकि पूंजीषाइ, वनगए जनम फकीर ॥ क० ॥ १ ॥  
 गर्इय गर्इ सो जलीय रहीसो, धर धर मनको धीर ॥  
 कहाँलों धीर धरुं धीरज धर, विरह जनमवहीर ॥ क०  
 ॥ २ ॥ जाललाल बिंदी नही जावै, आजुषण नही वीर  
 ॥ ग्यानसार वालो आयमिलै घर, तोन रहै कोई पीर ॥

॥ राग पुनः ॥

॥ होजी आली जानै मानै थारी चाहि घणीठै,  
 वहिला वेग पधारो ॥ हो० ॥ आयुकरम बिन सातुं  
 किस्थिति, कोरु सागर इककोरु गुणीठै ॥ हो० ॥  
 १ ॥ के ते दिन चिंतवतां अबकै, ज्युं त्युं प्रीतवणी  
 ठै ॥ २ ॥ जलो बुरो तोही चलि आयो, अंत  
 तो घरको धणी ठै, ग्यानसार कहै ढीलन कीजै,  
 प्रीत अंतरको जणीठै ॥ हो० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ राग जैरुं ॥

॥ रूपज जिणंद आणंद कंद कंदा, याहीते चरण  
सेवे कोट सुर इंदा ॥ ३० ॥ १ ॥ मरुदेवा नाजि नंद,  
अनुजवचकोर चंद ॥ आपरूपकोस्वरूप, कोटज्युं  
दिणंदा ॥ ३० ॥ २ ॥ शिवशक्ती न चाहुं चाहुं न  
गोविंदा ॥ ग्यानसार जक्तिचाहुं, मे हुं तेरा वंदा ॥

आयो हलकारो गोपी मदको ओ राह  
प्रभु नेम कुमरजी आप वीराजो गीरनारमे एतेक ।  
गीरनारी गीरवररे उपर उंची टुंकां शात ॥ शातो  
टुंके चरण पाडुका, में वंडु दिनरातरे. प्रभु नेमकुम  
रजी ॥ १ ॥ शंख लंठन दश धनुषरीकाया. आयु वर  
स हजार ॥ श्याम वरण शीवादेवी नंदन, वंदो बार  
हजाररे ॥ प्रभु नेमकुरजी ॥ २ ॥ काती वद बारश  
चवी आयो. सौरी नयरी मजार ॥ श्रावण सुद पंच  
मि दिन जनम्या वरत्यो जयजय कार रे ॥ प्रभु नेमकु  
॥ ३ ॥ शहशावन जइ शंयम लीनो. ठांडी राजुल  
नार ॥ श्रावणवद पष्टी दीन दीक्षा. प्रभुजी बाल  
कुमाररे. प्रभु नेमकुमरजी ॥ ४ ॥ चोपन दीन ठदम  
स्थ रहीने. आशो वद्य अमाश ॥ वेरुश वृद्ध तले  
प्रभु पायो केवल ज्ञान प्रकाशरे ॥ प्रभु नेमकुमरजी  
॥ ५ ॥ सुदी आपाढ अष्टमी रुनी, शंलेखन एकमा  
स ॥ पदमाशन प्रभु मोक्ष पधारे. अविनाशी आवा  
सरे ॥ प्रभु नेमकुरजी ॥ ६ ॥ कल्याणक पांचो इम



श्रुणतां. पामो अक्षय ज्ञान ॥ बालमित्रकी अरजी  
 श्रवणीध. प्रभुको शरण प्रधानरे ॥ प्रभु नेमकुमरजी ७  
 पद.

किसविध किये कर्म चकचूर ॥ उत्तम क्षमापे  
 अचंचो मने आवे ॥ कि ॥ एक तो प्रभु तुम परम दयालु  
 रोसन तिलतुष मात्र हजूर ॥ दुजे जीव दयाके सागर ॥  
 तीजे संतोषी नरपुर ॥ उ ॥ १ ॥ चोथे प्रभुतुमही  
 तउपदेशी ॥ तारन तरन जगत मसहुर ॥ कौमल  
 वचन सरन सत वक्ता ॥ निर्लोत्री संजम तपसूरा ॥ २ ॥  
 केसे मोह मल्लतुमजीत्यो ॥ अंतराय केसे कियो  
 निरमूल ॥ केसे ज्ञाना वरण निवार्यो ॥ केसे कियेचा  
 रोधातिया दूर ॥ ३ ॥ त्यागी वैरागी हो तुमसाहेब ॥  
 अर्कि चनव्रत धारकनूर ॥ सुरनर मुनी सेवेचर्नतुमारे  
 तोजीनहि प्रभुजीकेगर ॥ ४ ॥ करत आसअरदास  
 नेनसुख ॥ दीजेअव मोहेदान जरूर ॥ जन्मजन्म  
 पद पंकज सेबुं ॥ ओरन कतुचित चाहेहजूर ॥ ५ ॥

॥ इति चतुर्थ परिच्छेदः समाप्तः ॥



॥ अथ पंचम परिच्छेद. प्रारब्धते ॥

॥ अथ श्री सीताजीनी सच्चाय प्रारंभ ॥

॥ जनक सुता हुं नाम धराबुं, राम ठे अंतरजा  
मी ॥ पालव मारो मेलने पापी, कुलने लागे ठे  
खामी ॥ अरुशो मांजो, मांजो मांजो मांजो ॥ अ०  
॥ महारो नाहलीउं डुहवाय ॥ अ० ॥ मने संग के  
नो न सुहाय ॥ अ० ॥ माहारुं मन मांहेथी अकु  
लाय ॥ अ० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मेरु महीधर ठा  
म'तजे जो, पछर पंकज जगे ॥ जो जलधि मर्यादा  
मूके, पांगलो अंवर पूगे ॥ अ० ॥ २ ॥ तो पण तुं  
सांजल रेरावण, निश्चय शील न खंरुं ॥ प्राण अ  
मारो परलोक जाये, तो पण सत्य न ठंरु ॥ अ० ॥  
॥ ३ ॥ कुण मणिधरनी मणि लेवाने, हैडे घाले  
हाम ॥ सती संघातें खेह करीने, कहो कुण साधे  
काम ॥ अ० ॥ ४ ॥ परदारानो संग करीने, आखर  
कोण जगरियो ॥ जंडुं तो तुं जोवे आलोची, सही  
तुज दाहामो फरियो ॥ अ० ॥ ५ ॥ जनकसुता हुं  
जग सहु जाणे, चामंरुल ठे जाई ॥ दशरथ नंदन  
शिर ठे स्वामी, लखमण करशे लमाई ॥ अ० ॥ ६ ॥  
हुं धणीयाती पीउ गुणराती, हाथ ठे महारे ठाती  
॥ रहे अलगा तो ज वयणें न चलुं, कां कुलें वाये ठे  
काती ॥ अ० ॥ ७ ॥ उदयरतन कहे धन्य ए अव

લા, સીતા જેહનું નામ ॥ સતીયો માંહે શિરોમણિ  
કહીયે, નિત્ય નિત્ય હોજો પ્રણામ ॥ અ૦ ॥ ૬ ॥

॥ અથ વણજારાની સઘાય ॥

॥ નરજવ નયર સોહામણું ॥ વણજારા રે ॥ પા  
મીને કરજે વ્યાપાર ॥ અહો મોરા નાયક રે ॥ સ  
ત્તાવન સંવર તણી ॥ વ૦ ॥ પોઠી જરજે ઉદાર ॥ ૧ ॥  
॥ અ૦ ॥ શુભ પરિણામ વિચિત્રતા ॥ વ૦ ॥ કરિયા  
ણાં વહુ મૂલ ॥ અ૦ ॥ મોદ્દ નગર જાવા જણી ॥  
વ૦ ॥ કરજે ચિત્ત અનુકૂલ ॥ અ૦ ॥ ૨ ॥ ક્રોધ દાવાન  
લ ઝેલવે ॥ વ૦ ॥ માન વિપ્પ મિરિરાજ ॥ અ૦ ॥  
ઝેલંઘજે હલવે કરી ॥ વ૦ ॥ સાવધાન કરે કાજ ॥  
॥ અ૦ ॥ ૩ ॥ વંશ જાલ માયા તણી ॥ વ૦ ॥ નવિ  
કરજે વિશરામ ॥ અ૦ ॥ ચાકી મનોરથ જટ તણી  
॥ વ૦ ॥ પૂરણનું નહીં કામ ॥ અ૦ ॥ ૪ ॥ રાગ દ્વેષ  
દોય ચોરટા ॥ વ૦ ॥ વાટમાં કરશે હેરાન ॥ અ૦ ॥  
વિવિધ વીર્ય ઝલ્લાસથી ॥ વ૦ ॥ તે હણજે શિરઠાય  
॥ અ૦ ॥ ૫ ॥ હમ સવિ વિઘન વિદારીને ॥ વ૦ ॥  
પહોંચજે શિવપુર વાસ ॥ અ૦ ॥ સ્વયં ઉપશમ જે  
જાવના ॥ વ૦ ॥ પોઠી જસ્યા ગુણ રાજ ॥ અ૦ ॥ ૬ ॥  
ચાચિકજાવે તે થશે ॥ વ૦ ॥ લાજ હોશે તે અપાર  
॥ અ૦ ॥ ઉત્તમ વણજ જે એમ કરે ॥ વ૦ ॥ પદ્મ  
નમે વારંવાર ॥ અ૦ ॥ ૭ ॥ ઇતિ ॥ વણજારાની સઘાય ॥

॥ अथ सोदागरनी सवाय ॥

॥ लावो लोवोने राज, मोघां मुलनां मोती ॥

॥ ए देशी ॥

॥ सुण सोदागर वे, दिलकी बात हमेरी ॥ तैं  
सोदागर दूर विदेशी, सोदा करनकुं आया ॥ मोस  
म आये माल सवाया, रतनपुरीमां गाय ॥ सु० ॥  
॥ १ ॥ तिनुं दलाखकु हर समजाया, जिनसें बहोत  
न फाया ॥ पांचुं दीवानुं पाजुं जगाया, एककुं चो  
की बिठाया ॥ सु० ॥ २ ॥ नफा देख कर माल बि  
हरणां, चुआ कटे न थुं धरनां ॥ दोनुं दगावाजी  
दुर करनां, दीपकी ज्योतसें फिरनां ॥ सु० ॥ ३ ॥  
औरदिन बली मेहेलमे रहनां, बंदरकुं न हलानां ॥  
दश सेरसें दोस्तिहि करनां, उनसें चित्त मिलानां ॥  
॥ सु० ॥ ४ ॥ जनहर तजनां, जिनवर जजनां, स  
जना जिनकुं दलाइ ॥ नवसरहार गलेमें रखनां, ज  
खनां लखकी कटाइ ॥ सु० ॥ ५ ॥ शिरपर मुकुट  
चमर ढोलाइ, अस घर रंग बधाइ ॥ श्रीशुजवीर  
विजय घर जाइ, होत सतावी सगाइ ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आपस्वजावनी सवाय ॥

॥ आप स्वजावमां रे, अवधु सदा मगनमें रहे  
नां ॥ जगत जीव हे करमाधीना, अचरिज कतुअ  
न दीना ॥ आ० ॥ १ ॥ तुम नहीं केरा कोइ नही  
तेरा, क्या करे मेरा मेरा ॥ तेरा है सो तेरी पासे,

अवर सवे अनेरा ॥ आ० ॥ २ ॥ वपु विनाशी तुं  
 अविनाशी, अव हे इनकुं विदासी ॥ वपु संग जब  
 दूर निकासी, तव तुम शिवका वासी ॥ आ० ॥ ३ ॥  
 रागने रीसा दोय खवीसा, ए तुम दुःखका दीसा ॥  
 ॥ जब तुम उनकुं दूर करीसा, तव तुम जगका ई  
 सा ॥ आ० ॥ ४ ॥ परकी आसा सदा निरासा, ए  
 हे जग जन पासा ॥ ते काटनकुं करो अज्यासा, ल  
 हो सदा सुखवासा ॥ आ० ॥ ५ ॥ कवहींक काजी  
 कवहींक पाजी, कवहींक हुआ अपज्राजी ॥ कवहींक  
 जगमें कीर्त्ति गाजी, सब पुजलकी वाजी ॥ आ० ॥  
 ॥ ६ ॥ शुरू उपयोग ने समता धारी, ध्यान ज्ञान  
 मनोहारी ॥ कर्म कलंककुं दूर निवारी, जीव वरे  
 शिव नारी ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति आपस्वजाव सथाय ॥

॥ अथ श्री सहजानंदीनी सजाय ॥

बीजी अशरण जावना ॥ ए देशी ॥

॥ सहजानंदी रे आतमा, सूतो कांइ निश्चित रे  
 ॥ मोह तणा रणीया जमे, जाग जाग मतिवंत रे,  
 लूटे जगतना जंत रे, नाखी बांक अत्यंत रे, नरका  
 वास ठवंत रे, कोइ विरला उगरंत रे ॥ स० ॥ १ ॥  
 राग द्वेष परिणति जजी, माया कपट कराय रे ॥  
 काश कुसुम परें जीवसो, फोगट जनम गमाय रे,  
 माथे जय जम राय रे, श्योमन गर्व धराय रे, सह  
 एक मारग जाय रे, कोण जग अमर कहाय रे ॥

॥ स० ॥ २ ॥ रावण सरीखा रे राजवी, नागा चा  
 द्या विण धाग रे ॥ दश माथां रण रम्बड्यां, चांच  
 दीए शिर काग रे, देव गया सवि जागरे, न रह्यो  
 माननो ठागरे, हरि हाथें हरिनाग रे, जोजो जाइज  
 ना राग रे ॥ स० ॥ ३ ॥ केइ चाढ्या केइ चालशे,  
 केता चालणहार रे ॥ मारग वहेतो रे नित्य प्रत्ये,  
 जोतां लग्न हजार रे, देश विदेश साधार रे, ते नर  
 इणें संसार रे, जातां जम दरवार रे, न जुवे वार  
 कुवार रे ॥ स० ॥ ४ ॥ नारायणपुरी द्वारिकां, व  
 लती मेढी निराश रे ॥ रोता रणमां ते एकला, ना  
 ठा देव आकाश रे, किहां तरु ढाया आवास रे, ज  
 ल जल करी गयो सास रे, बल जड सरोवर पास  
 रे, सुणी पांरुव शिववास रे ॥ स० ॥ ५ ॥ गाजी  
 गाजीने बोलता, करता हुकम हेरान रे ॥ पोढ्या  
 अग्निमां एकला, काया राख समान रे, ब्रह्मदत्त  
 नरक प्रयाण रे, ए कृद्धि अथिर निदान रे, जेवुं  
 पीपल पान रे, म धरो जूठ गुमान रे ॥ स० ॥ ६ ॥  
 बालेसर बिना एक घमी, नवि सहातुं लगार रे ॥  
 ते बिना जनमारो वही गयो, नहीं कागल समाचार  
 रे, नहीं कोइ कोइनो संसार रे, स्वारथीयो परिवार  
 रे, माता मरुदेवी सार रे, पहोतां मोक्ष मोजार रे  
 ॥ स० ॥ ७ ॥ माता पिता सुत बांधवा, अधिको राग  
 विचार रे ॥ नारी असारी रे चित्तमां, वंठे विष

य गमार रे, जुवो सूरिकांता जे नार रे, विष देती  
 जरतार रे, नृप जिनधर्म आधार रे, सज्जन नेह  
 निवार रे ॥ स० ॥ ७ ॥ हसी हसी देती रे ताली  
 यो, शय्या कुसुमनी सार रे ॥ ते नर अंते माटी  
 थया, लोक चणें घर वाररें, घरता पात्र कुंजार रे,  
 एहवुं जाणी असार रे, ठोडे विषय विकार रे, धन्य  
 तेहतो अवतार रे ॥ स० ॥ ८ ॥ यावच्चासुत शिव  
 वस्या, वली एलाची कुमार रे ॥ धिक् धिक् विषया  
 रे जीवने, लइ वैराग्य रसाल रे, मेहेली मोह जंजा  
 लरे, घर रमे केवल बाळ रे, धन्य करकंसु चूपाल  
 रे ॥ स० ॥ ९ ॥ श्री शुभविजय सुगुरु लही, धर्म  
 रयण धरी ठेक रे ॥ वीर वचन रस शेलडी, चाखे  
 चतुर विवेक रे, न गमे ते नर जेक रे. धारता धर्म  
 नी ठेक रे, जवजल तरिया अनेक रे ॥ स० ॥ १० ॥  
 इति सहजानंदी सद्याय ॥

॥ अथ सांजल सयणानी सद्याय ॥

॥ लांजल सयणा साची सुणावुं, पूरवपूण्यें तुं  
 पाम्यो रे जाइ ॥ नरक निगोदमां जमतां नरजव, तें  
 निःफल केम वाम्यो रे जाइ ॥ सां० ॥ १ ॥ जैनधर्म  
 जयवंतो जगमां, धारी धर्म न साध्यो रे जाइ ॥  
 मेघघटा सरिखा गज साटे, गर्दज घरमां बांध्यो रे  
 जाइ ॥ सां० ॥ २ ॥ कट्पवृद्ध कूहाडे कापी, धंतुरो  
 घेर धारे रे जाइ ॥ चित्तामणि चित्ति पूरण ते, का

ग उमाडण डारें रे चाइ ॥ सां ॥ ३ ॥ इम जाणी  
जावा नवि दीजें, नर नारी नरजवनें रे चाइ ॥ उ  
लखी शुद्ध धर्मने साधो, जे मान्यो मुनि मनने रे  
चाइ ॥ सां० ॥ ४ ॥ जे विज्ञाव परज्ञावमा जजीयें,  
रमण स्वज्ञावमां करीयें रे चाइ ॥ उत्तम पदपद्मने  
अवलंबी, जवियण जवजल तरीयें रे चाइ ॥ सां० ॥  
॥ ५ ॥ इति श्रीआत्म हित सदाय ॥

॥ अथ रात्रिजोजननी सदाय प्रारंभ ॥

॥ पुण्य संजोगें नरजव लाधो, साधो आत्म  
काज ॥ विषया रस जाणो विष सरिखो, इम जांखे  
जिनराज रे प्राणी ॥ रात्रिजोजन वारो ॥ १ ॥ आ  
गम वाणी साची जाणी, समकित गुण सही नाणी  
रे प्राणी ॥ रात्रि० ॥ ए आंकणी ॥ अजह्य वाकी  
शमां रयणीजोजन, दोष कहा परधान ॥ तेणें का  
रण रातें मत जमजो, जो हुवे हड्डे शान रे ॥  
॥ प्रा० ॥ १ ॥ दान खान आयुधने जोजन, एटला  
रातें न कीजें ॥ ए करवां सूरजनी साखें, नितिवच  
न समजीजें रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ उत्तम पशु पंखी पण रातें,  
टाळे जोजन टाणो ॥ तुमे तो मानवी नाम धरावो,  
केम संतोष न आणो रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ माखी जू  
कीमी कोढी आवमो, जोजनमां जो आवे ॥ कोढ  
जलोदर वमन विकलता, एवा रोग उपावे रे ॥ प्रा०  
॥ ५ ॥ ठगुं जव जीवहत्या करतां, पातक जेह उपा



યું ॥ એક તલાવ ફોમંતાં તેટલું, દૂપણ સુગુરુ વતાયું  
 રે ॥ પ્રા૦ ॥ ૬ ॥ એકલોત્તર જવ સર ફોડ્યા  
 સમ, એક દવ દેતાં પાપ ॥ અઠલોત્તર જવ દવ  
 દીધા જિમ, એક કુવણિજ સંતાપ રે ॥ પ્રા૦ ॥ ૭ ॥  
 ॥ એક શો ને ચુમ્માલીશ જવ લગેં, કુવણિજના જે  
 દોષ ॥ કૂડું એક કલંક દિયંતાં, તેહવો પાપનો પોષ  
 રે ॥ પ્રા૦ ॥ ૮ ॥ એક શો એકાવન જવ લગેં દીધાં,  
 કૂમાં કલંક અપાર ॥ એક વાર શીલ યંડ્યા જેવો,  
 અનર્થનો વિસ્તાર રે ॥ પ્રા૦ ॥ ૯ ॥ એકશો નવાણું  
 જવ લગેં યંડ્યાં, શીયલ વિષય સંબંધ ॥ એકેં રાત્રિ  
 જોજનેં તેહવો, કર્મ નિકાચિત વંધ રે ॥ પ્રા૦ ॥  
 ॥ ૧૦ ॥ રાત્રિજોજનમાં દોષ ઘણા ઢે, શ્યો કહિયેં  
 વિસ્તાર ॥ કેવલી કેહતાં પાર ન પાવે, પૂરવ કોડી  
 મઝાર રે ॥ પ્રા૦ ॥ ૧૧ ॥ રાતેં નિત્ય ચોવિહાર ક  
 રીને, શુદ્ધ પરિણામ ધરીજેં ॥ માસેં માસેં પાસખમ  
 ણનો, લાજ શણે વિધ લીજેં રે ॥ પ્રા૦ ॥ ૧૨ ॥ મુનિ  
 વસતાની એહ શિલામણ, જે પાલે નર નારી ॥ સુર  
 નર સુખ વિલસીને હોવે, મોદા તણા અધિકારી રે  
 ॥ પ્રા૦ ॥ ૧૩ ॥ ઇતિ રાત્રિજોજનની સઘાય ॥

॥ અથ જોવન અસ્થિરની સઘાય ॥

॥ રાગ પ્રજાતિ ॥

જોવનીયાની મોજાં ફોજાં, જાય નગારાં દેતી  
 રે ॥ ઘમ્મિ ઘમ્મિ ઘમ્મિયાલાં વાજે, તોય ન જાગે તેથી

रे ॥ १ ॥ जो ॥ जरा राक्षसी जोर करे ठे, फेलावे  
फजेती रे ॥ आवी अवघें जशंके नहीं, लखपतिने  
लेती रे ॥ जो० ॥ २ ॥ मालें वेठा मोज करे ठे,  
खातें जोवे खेती रे ॥ जमरो जमरो ताणी लेशे,  
गोफण गोला सेंती रे ॥ ॥ जो० ॥ ३ ॥ जिनराजाने  
शरणें जाउं, जोरालो को न जेथी रे ॥ डुनीयामा  
दूजो दीसे नहीं, आखर तरशो तेथी रे ॥ जो० ॥  
॥ ४ ॥ दंत पड्याने मोसो थयो, काज सखुं नहीं  
केथी रे ॥ उदयरल कहे आपें समजो, कहीयें  
वातो केती रे ॥ जो० ॥ ५ ॥

॥ अथ निंदावारक सव्वाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइ पारकी रे, निंदानां  
बोल्यां महा पाप रे ॥ वयर विरोध बाधे घणो रे,  
निंदा करतां न गणे माय वाप रे ॥ निंदा ॥ १ ॥  
दूर बलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमां बलती जुवो  
सहु कोय रे ॥ परना मेलमां धोयां लूगमां रे, कहो  
केम जजलां होय रे ॥ नि० ॥ २ ॥ आप संजालो  
सहुको आपणो रे, निंदानी मूको पमी टेव रे ॥ थो  
डे घणे अवगुणें सहु जस्या रे, केहनां नलियां चुए  
केहेनां नेव रे ॥ नि० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी  
रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो क  
रजो आपणी रे, जेम लुटकवारो थाय रे ॥ नि० ॥  
॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणो रे, जेहमां देखो

युं ॥ एक तलाव फोमंतां तेढलुं, दूषण सुगुरु वतायुं  
 रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ एकलोत्तर जव सर फोड्या  
 सम, एक दव देतां पाप ॥ अठलोत्तर जव दव  
 दीधा जिम, एक कुवणिज संताप रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥  
 ॥ एक शो ने चुम्मालीश जव लगें, कुवणिजना जे  
 दोष ॥ कूडुं एक कलंक दियंतां, तेहवो पापनो पोप  
 रे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ एक शो एकावन जव लगें दीधां,  
 कूमां कलंक अपार ॥ एक वार शील खंड्या जेवो,  
 अनर्थनो विस्तार रे ॥ प्रा० ॥ ९ ॥ एकशो नवाणुं  
 जव लगें खंड्यां, शीयल विषय संबंध ॥ एकें रात्रि  
 जोजनें तेहवो, कर्म निकाचित बंध रे ॥ प्रा० ॥  
 ॥ १० ॥ रात्रिजोजनमां दोष घणा ठे, श्यो कहियें  
 विस्तार ॥ केवली केंहतां पार न पावे, पूरव कोडी  
 मजार रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ रातें नित्य चोविहार क  
 रीने, शुज परिणाम धरीजें ॥ मासें मासें पासखम  
 णनो, लाज झणे विध लीजें रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ मुनि  
 वसतानी एह शिखामण, जे पावे नर नारी ॥ सुर  
 नर सुख विलसीने होवे, मोक्ष तणा अधिकारी रे  
 ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ इति रात्रिजोजननी सद्याय ॥

॥ अथ जौवन अस्थिरनी सद्याय ॥

॥ राग प्रजाति ॥

जौवनीयानी मोजां फोजां, जाय नगरां देती  
 रे ॥ घनि घनि घनियालां वाजे, तोय न जागे तेथी

रे ॥ १ ॥ जो ॥ जरा राहसी जोर करे ठे, फेलावे  
फजेती रे ॥ आवी अवघें जशंके नही, लखपतिने  
लेती रे ॥ जो० ॥ २ ॥ माळें वेठा मोज करे ठे,  
खातें जोवे खेती रे ॥ जमरो जमरो ताणी लेशे,  
गोफण गोला सेंती रे ॥ ॥ जो० ॥ ३ ॥ जिनराजाने  
शरणें जाऊं, जोरालो को न जेथी रे ॥ हुनीयामा  
दूजो दीसे नहीं, आखर तरशो तेथी रे ॥ जो० ॥  
॥ ४ ॥ दंत पड्याने कोसो थयो, काज सखुं नहीं  
केथी रे ॥ उदयरत्न कहे आपें समजो, कहीयें  
वातो केती रे ॥ जो० ॥ ५ ॥

॥ अथ निंदावारक सव्वाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइ पारकी रे, निंदानां  
बोल्यां महा पाप रे ॥ वयर विरोध बाधे घणो रे,  
निंदा करतां न गणे माय वाप रे ॥ निंदा ॥ १ ॥  
दूर बलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमां बलती जुवो  
सहु कोय रे ॥ परना मेलमां धोयां लूगमां रे, कहो  
केम ऊजलां होय रे ॥ नि० ॥ २ ॥ आप संजालो  
सहुको आपणो रे, निंदानी मूको पमी टेव रे ॥ थो  
डे घणे अवगुणें सहु जस्या रे, केहनां नलियां चुण  
केहेनां नेव रे ॥ नि०॥३॥ निंदा करे ते थाये नारकी  
रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो क  
रजो आपणी रे, जेम टुटकवारो थाय रे ॥ नि० ॥  
॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणो रे, जेहमां देखो

एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो रे, समयसुं  
दर सुखकार रे निं० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ शीयलविषे पुरुषने शिखामणनी सव्वाय ॥

॥ चाल ॥ सुण सुण कंता रे, शीख सोहा मणी  
॥ प्रीत न कीजें रे, परनारी तणी ॥ उथलो ॥  
परनारी साथे प्रीत पिउमा, कहो किण परें कीजी  
यें ॥ उंध वेची आपणी, उजागरो केम लीजीयें ॥  
काठडीतुटो कहे लंपट, लोकमांहे लाजीये ॥ कुल  
विषय खंपण रखे लागे, सगामां केम गाजीयें ॥ १ ॥  
चाल ॥ प्रीति करंतां रे, पहेलां वीहीजीयें ॥ रखे  
कोइ जाणे रे मनशुं धुजीयें ॥ उ० ॥ धुजीयें मनशुं  
छुरीयें पण, जोग मलवो ठे नहीं ॥ रात दिन बिल  
पंत जाये, अवटाइ मरबुं सही, ॥ निज नारीथी  
संतोष न वढ्यो, परनारीथी कहो शुं हशे ॥ जो ज  
यें जाणे तृप्ति न वली तो, एठ चाटे शुं हशे ॥ २ ॥  
मृग तृष्णाथी रे, तृष्णा नवि टखे ॥ वेबु पीढ्यां रे,  
तेल न नीसरे ॥ उ० ॥ न नीसरे पाणी बलोवतां,  
लव लेश मांखणनो वली ॥ बुरुतां वाचक ज्यया  
पाणी ते, तस्या वात नसांजली ॥ तेम नार रमतां  
पर तणी संतोष न वढ्यो एक घमी ॥ चित्त चट  
पटी उच्चाट लागे, नयणें नावे निझडी ॥ ३ ॥  
चाल ॥ जेवो खोटो रे रंग पतंगनो ॥ तेवो चटको  
रे, परस्त्रीसंग नो ॥ उ० ॥ परनारी साथें प्रेम पिउ

मा, रखे तुं जाणे खरो ॥ दिन चार रंग सुरंग रू  
 डो, पठी नहीं रहे निर्धरो ॥ जे घणा साथें नेह  
 मांडे ठांरु तेहशुं प्रीतकी ॥ एम जाणी म म कर  
 नाहला, परनारि साथें प्रीतकी ॥ ४ ॥ चाल ॥ जे  
 पति बाहालो रे, वंचे पापिणी ॥ परशुं प्रेमेंरे राचे  
 सापिणी ॥ ७० ॥ सापिणी सरखी वयण निरखी,  
 रखे शीयलथकी चले ॥ आंखने मटके अंग लटके,  
 देव दानवने ठले ॥ ए मांहे काली अति रसाली,  
 वाणी मीठी शेलकी ॥ सांजली रे जोला रखे चूले  
 जाणजे विष वेलकी ॥ ५ ॥ चाल ॥ संग निवारो रे,  
 पररामा तणो ॥ शोक न कीजें रे, मन मिलवातणो  
 ॥ ७० ॥ शोक शाने करो फोगट, देखवुं पण दोहि  
 लुं ॥ कृण मेजियें कृण सेरीयें, जमतां न लागे सो  
 हिलुं ॥ उश्वासने निःश्वास आवे, अंग जांजे मन  
 जमे ॥ बली कामिनी देखी देह दाजे, अन्न दीतुं  
 नवि गमे ॥ ६ ॥ चाल ॥ जाये कलाखे रे, मनशु  
 कल मले ॥ उन्मत्त थडने रे, अलल पलल लवे ॥  
 ॥ ७० ॥ लवे अलल पलल जाणे, मोहगहिला मन  
 रडे ॥ महा मदन कठिन कारी, मरण वारु ब्रेवडे ॥  
 ए दश आवस्था काम केरी, कंत कायानेदहे ॥ एम  
 चित्त जाणी तजेराणी, पारकी ते सुख लहे ॥ ७ ॥  
 चाल ॥ परनारीनां रे, परीजव सांजलो ॥ कंता की  
 जें रे, जाव ते निर्मलो ॥ ७० ॥ निर्मलें जावे नाह

समजों, परवधू रस परिहरो ॥ चांपीउं कीचक नी  
 मसेनें, शिला हेठल सांजलो ॥ रण पड्यां रावण  
 दशे मस्तक. ररु वड्यां ग्रंथे कह्यां ॥ तेम मूंजपति  
 दुःखपुंज पाम्यो, अपजश जग मांहे लह्यां ॥ ८ ॥  
 ॥ चाल ॥ शीयल सलूणा रे, माणस सोहीयें ॥  
 विण आजरणें रे, जग मन मोहीये ॥ ७० ॥  
 मोहीयें सुर नर करे सेवा, विष अमिय थई  
 संचरे ॥ केसरी सिंह शीयाल थाये, अनल तिम  
 शीतल करे ॥ साप थाए फूलमाला, लढी घरे  
 पाणी जरे ॥ परनारी परिहरी, शीयल मन धरी,  
 मुक्ति वधू हेला वरे ॥ ९ ॥ चाल ॥ ते माटे हुं रे,  
 वालम विनवुं ॥ पाए लागीनें रे, मधुर वयणे स्तवुं  
 ॥ ७० ॥ वयण महारुं मानीयें, परनारीथी रहो वेग  
 ला ॥ अपवाद माथे चढे मोटा, नरकें थइयें दोहि  
 ला ॥ धन्य धन्य ते नर नारि जे हढ, शीयल पाले  
 कुल तिलो, ते पामशे यश जगतमांहि, कुमुद चंद  
 सम ऊजलो ॥ १ ॥

॥ अथ नारी शिखामणनी सद्याय ॥

॥ चाल ॥ एक अनोपम, शिखामण खरी ॥ स  
 मजी लेजो रे, सघली सुंदरी ॥ ७० ॥ सुंदरी सहे  
 जें हृदह हेजें, पर सेजें नवि वेसीयें ॥ चित्तथकी  
 चूकी लाज मूकी, परमंदिर नवि पेसीयें ॥ बहु घेर  
 हींमी, नार निर्लज, शास्त्रे पण, तजवी कही ॥ जेम

प्रेत दृष्टें, पड्युं चोजन, जमवुं ते, जुग तुं नही ॥  
 १ ॥ चाल ॥ परशुं प्रेमें रे, हसीय न बोलीयें ॥ दां  
 त देखामी रे, गुह्य न खोलीयें ॥ ७० ॥ गुह्य धरनुं,  
 परनी आगें, कहोने केम प्रकाशीयें ॥ बली वात जे,  
 विपरीत जांखे तेहथी दूरें नाशीयें ॥ असुर सवारा,  
 अने अगोचर, एकलां नवि, जाश्यें ॥ सहसात्कारें,  
 काम करतां, सहेजें शील गमावीयें ॥ १ ॥ चाल ॥  
 नट विट नरशुं रे नयण न जोकीयें ॥ मारग जातां  
 रे, आघुं उढीयें ॥ ७० ॥ आघु ते उढी, वात करतां,  
 घणुंज रुमां, शोकीयें ॥ सासू अने, माना जएया  
 विण, पलक पास न, थोकीये ॥ सुख दुःख सरज्युं,  
 पामीयें पण, कुलाचार, न मूकीये ॥ परवश वसंतां,  
 प्राण तजतां, शीयलथी, नवि चूकीयें ॥ ३ ॥ चाल ॥  
 व्यसनी साथें रे, वात न कीजीयें ॥ परनर हाथेरे, ताली  
 न लीजीयें ॥ ७॥ ताली न लीजे, नजर न दीजे चंचल  
 चाल न चालिये ॥ एक विषयबुद्धे, वस्तु केहनी हाथे  
 पण नवि ऊलियें ॥ कोटी कंदर्प, रूप सुंदर, पुरुष पेखीन  
 मोहिये ॥ तणखला तोले गणिय तेहने, फरिय सामुं  
 न जोश्यें ॥ ४॥ चाल ॥ पुरुष पीयारो रे, बलि न ब  
 खाणीयें ॥ वृद्ध ते पिता रे, सरखो जाणीयें ॥ ७०॥  
 जाणीयें पीयु विण, पुरुष सघला, सहोदर, समो वडे  
 ॥ पतिव्रतानो, धर्म जोतां, नावे कोड तडोवमें ॥ कुरूप  
 कुष्टी कूचमोने दुष्ट दुर्वल निर्गुणो ॥ जरतार पामी,



कामिनी ते इंद्राणी अधिको गणो ॥ चाल ॥ अमर  
 कुमारें रे, तजी सुर सुंदरी ॥ पवनंजयें रे, अंजनापरि  
 हरी ॥ ७० ॥ परिहरी रामेवनमां सीता, नले दमयंति  
 वली ॥ महा सती माथे, कष्ट पड्यां पण शीयलथी  
 ते, नवि चली ॥ कसोटीनी परें, कसीअ जोतां कंतशुं  
 विहडे नहीं ॥ तन मन्न वचनें, शीयल राखे, सती  
 ते जाणो सही ॥ ६ ॥ चाल ॥ रूप देखाडी रे, पुरुष  
 न पाडीयें ॥ व्याकुल अइने रे मन न वगाडीयें ॥  
 ॥ ७० ॥ मन न वगामीयें, पर पुरुषनुं, जोग जोतां,  
 नवि मले ॥ कलंक माथे, चढे कूमां सगा सहु, दूरें  
 टले ॥ अणसरज्यो, उच्चाट, थाये, प्राण तिहां, ला  
 गी रहे ॥ इह लोक पामे आपदा, परलोक पीना  
 बहु सहे ॥ ९ ॥ चाल ॥ रामने रूपें रे, शूर्पनखा  
 मोही ॥ काज न सीधुं रे, अने इजत खोइ ॥ ७०  
 ॥ इजत खोइ देख अजया, शेठ सुदर्शन, नवि च  
 ढ्यो ॥ जरतार आगल, पमी जोंगी, अपवाद सघ  
 ले, उन्नद्यो ॥ कामिनी देखी, कामनी बुद्धें, वंकचूल,  
 वाह्यो घणुं ॥ पणशीयलथी, चुकी नहीं, दृष्टांत एम,  
 केतां जणुं ॥ ८ ॥ चाल ॥ शीयल प्रजावें रे, जुवो  
 शोले सती ॥ त्रिभुवनमांहे रे, जेह थई ठती ॥ ७० ॥  
 सती थईने, शीयल राख्युं, कल्पना, कीधी नहीं ॥  
 नाम तेहना, जगत् जाणे विश्वमां जगी रही ॥ वि  
 विध रले, जडित चूपण, रूपसंदरि, किन्नरी ॥ एक

शियल विण शोजे नही ते सत्य गणजो सुंदरी ॥९॥  
चाल ॥ शीयल प्रजावे रे, सुर सेवा करे ॥ नव वा  
केंरे जेह निर्मल धरे ॥ धरें निर्मल, शीयल उज्वल,  
तास कीर्ति जलहले ॥ मनकामना, सवि सिद्धि पामे,  
अष्ट जय, दुरे टले ॥ धन्य धन्य ते, जाणो धरा,  
जे शीयल चोखुं, आदरे, ॥ आनंदना ते, उंध पामे  
उदय महा जस, विस्तरे ॥ १० ॥ इति नारीने

॥ अथ धोवीकानी सद्य ॥

॥ धोवीका तुं धोजे मननुं धोतीयुं रे, रखे राख  
तो मेल लगार रे ॥ एणेंमेले जग मेलो कख्यो रे, विण  
धोयुं न राखे लगार रे ॥ धो० ॥१॥ जिनशासन सरो  
वर सोहामणुं रे, सम कित तणी रूकी पाल रे ॥  
दानादिक चार वारणां रे, मांहि नव तत्त्व कमल  
विशाल रे ॥ धो० ॥२॥ तिहां जीले मुनीवर हंसला रे,  
पी ये ठे तप जप नीर रे ॥ शम दम आदि जे शील रे,  
तिहां खाले आपणुं चीर रे ॥ धो० ॥३॥ तपवजे तप तमके  
करी रे, जालवजे नव तत्त्व वारु रे ॥ ठांटा उमाडे रखे  
पाप अढारना रे, एम उजळुं होशे ततकाल रे ॥ धो०  
॥४॥ आलोयण सावूडो सूधो करे रे, रखे आवे माया  
शेवाल रे ॥ निश्चे प वित्रपणुं राखजे रे, पठे आपण  
नीमी संजाल रे ॥ धो० ॥५॥ रखे मूकतो मन मोकलुं  
रे ॥ चल मेलीनें संकेल रे ॥ समयसुंदरनी शीखरी रे,  
सुखरी अमृत वेल रे ॥ धो० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री ज्ञरतचक्रीनी सद्याय ॥

॥ मनहीमे वैरागी ज्ञरतजी, मनहीमें वैरागी ॥  
 सहस्स वत्रीश मुकुट बंध राजा, सेवा करे वडवागी  
 ॥ चोशठ सहस्स अतेजरी जाके, तोहि न हुवा  
 अनुरागी ॥ ज० ॥ १ लाख चोराशी तुरंगम जाके,  
 ठठुं कोरु हे पागी ॥ लाख चोराशी गज रथ सो  
 हिये, सुरता धर्मशुं लागी ॥ ज० ॥ २ ॥ चार करो  
 ड मण अन्नज उपडे, लूण दश लाख मण लागे ॥  
 तीन कोरु गोकुल डुजे, एक कोरु हल सागी ॥ ज० ॥  
 ॥ ३ ॥ सहस्स वत्रीश देश वरुजागी, जये सरवके  
 त्यागी ॥ ठठुं कोरु गामके अधिपति ॥ तोहे न हुआ  
 सरागी ॥ ज० ॥ ४ ॥ नव निधि रतन चोगडा वा  
 जे, मन चिंता सब जांगी ॥ कनक कीरत मुनिवर  
 वंदत हे, देजो मुक्ति में मागी ॥ ज० ॥

चेत चतुरनर निज मनमार्हिं ॥ द्रुण द्रुण आयुष  
 जायजी कांई निचिंत यइने सुतो, नरजव ए ले जाय  
 जी ॥ १ ॥ चे ॥ काम क्रोध तृष्णारसें रातो, तेणें न जाण्युं,  
 कांय जी ॥ लागे घरे किम कूप खण्णसेसांजे न बांधि  
 पावजी ॥ २ ॥ चे ॥ आयु अ स्थिर जिम जल पंपोटो मर  
 ण ते आवे निदानजी ॥ राय रंक केहने नवि बोडे,  
 पंडित जाण अजाणजी ॥ ३ ॥ चे ॥ पुण्य पाप दोय साथें  
 आवे, अवर न आवे कोयजी ॥ कहे नारायण धर्म  
 करो जिम, आवागमण न होयजी ॥ ४ ॥ चे ॥ इति ॥

॥ अथ श्री बाहुवलजीनी सद्याय ॥

॥ वहेनी बोले हो बाहुवल सांजलो जी ॥ रूडा  
रूमा रंगनिधान ॥ गयवर चढिया हो, केवल केम  
हुवे जी ॥ जाण्युं जाण्युं पुरुष प्रधान ॥ व० ॥ १ ॥  
तुज सम उपशम जगमां कुण गणेजी, अकल निरं  
जन देव ॥ जाइ जरतेसर बाहाला विनवे जी, तुज  
करे सुर नर सेव ॥ व० ॥ २ ॥ जर वरसालो हो  
वनमां वेठीउं जी, जिहां घणां पाणीनां पूर ॥ जर  
मर वरसे हो, मेहुलो घणुं जी, प्रगट्या पुण्य अंकूर  
॥ व० ॥ ३ ॥ चिहुं दिशि वीट्यो हो वेलमीये घणुं  
जी, जेम वादल ठायो सूर ॥ श्री आदिनाथे हो,  
अमने मोकळ्यां जी ॥ तुम प्रतिबोधन नूर ॥ व० ॥  
॥ ४ ॥ वर संवेगरसे हो, मुनि जख्या जी ॥ पाम्युं  
पाम्युं केवल नाण ॥ माणकमुनि जस नामे हो,  
हरख्यो घणुं जी ॥ दिन दिन चढते रे, वान ॥ व०  
॥ ५ ॥ इति सद्याय ॥

॥ अथ श्री ढंढण रुपिजीनी सद्याय ॥

॥ ढंढण रुपिजीने चंदण ॥ हुं वारी लाल ॥ उ  
त्कृष्टो अणगार रे ॥ हुं वारी लाल ॥ अजिग्रह  
दीधो आकरो ॥ हुं वारी ॥ लब्धे लेशुं आहार रे  
॥ हुं वारी लाल ढं ॥ १ ॥ दिन प्रति जावे गोचरी  
॥ हुं ॥ न मळे शुद्ध आहार रे हुं ॥ न दीये मू  
ल असूऊतो ॥ हुं ॥ पींजर हुवो गात रे ॥ हुं ॥

ढं० ॥ २ ॥ हरि पूठे श्री नेमने ॥ हुं० ॥ मुनिवर  
 सहस्स अठार रे ॥ हुं० ॥ उत्कृष्टो कोण एहमें ॥  
 ॥ हुं० ॥ मुजने कहो कृपाल रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ३ ॥  
 ढंढण अधिको दाखीयो ॥ हुं० ॥ श्रीमुख नेम जि  
 णंद रे ॥ हुं० ॥ कृष्ण उमाह्यो वांदवा ॥ हुं० ॥ ध  
 न्य जादवकुल चंद रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ४ ॥ गलीआ  
 रे मुनिवर मढ्या हुं० ॥ वांदे कृष्ण नरेश रे ॥ हुं० ॥  
 किणही मीथ्यात्वी देखिने ॥ हुं० ॥ आव्यो जाव  
 विशेष रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ५ ॥ आवो अम घर साधु  
 जी ॥ हुं० ॥ ढ्यो मोदक ठे शुरू रे ॥ हुं० ॥ रिषीजी  
 लइ आवीया ॥ हुं० ॥ प्रजुजी पास विशुरू रे ॥  
 ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ६ ॥ मुज लब्धे मोदक मिढ्या ॥  
 ॥ हुं० ॥ मुजने कहो कृपाल रे ॥ हुं० ॥ लब्धि न  
 हिं वत्स ताहरी ॥ हुं० ॥ श्रीपति लब्धि निहाल रे  
 ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ७ ॥ तो मुजने लेवो नहीं ॥ हुं० ॥  
 चाढ्यो परठण काज रे ॥ हुं० ॥ इंट निंजाडे जाइ  
 ने ॥ हुं० ॥ चूरे कर्म समाज रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ८ ॥  
 आवी सूधी जावना ॥ हुं० ॥ पाम्यो केवल नाण रे  
 ॥ हुं० ॥ ढंढण रुपि मुगते गया हुं० ॥ कहे जिन  
 ढर्प सुजाण रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ए ॥ इति ढंढण रु  
 पिनी सद्याय ॥

॥ अथ श्री अश्मंताजीनी सद्याय ॥

॥ श्री अश्मंता मुनिवरजूके, करणीकी बलि हा

री वे ॥ खट वर्पनके संजम लीनो, वीरवचन चित्त  
धारी वे ॥ श्री० ॥ १ ॥ विजय नृपति श्रीदेवी नंद  
न, कोलासपुर अवतारी वे ॥ अंग अग्यार पढे गुण  
आदर, त्रिविध त्रिविध अविकारी वे ॥ श्री० ॥  
॥ २ ॥ तपगुण रयण संवत्सर आदिक, करकें काय  
उझारीवे ॥ प्रजु आदेशे विपुलाचल परि, करी अ  
णसण अति जारी वे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ केवल पाय  
मुक्ति गये मुनिवर, कर्म कलंक निवारी वे ॥ अढा  
र अमृतादे तिहिं गिरि उपर, कीनी थापना सारी  
वे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ वाचक अमृत धर्म सुगुरुके, सुपसाये,  
सुवि चारी वे ॥ शिष्य दामाकदयाण हरख धर, गावे  
आति जयकारी वे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति सद्याय ॥

॥ अथ श्री करकंडू प्रत्येक बुधजीनी सद्या ॥

॥ चंपा नगरी अति जली ॥ हुं वारी लाल ॥  
दधिवाहन जूपाल रे ॥ हुं वारी लाल ॥ पद्मावती  
कूखें उपनो ॥ हुं ॥ कर्म कीधो चंमाल रे ॥ हुं ॥  
॥ १ ॥ करकंडुने करु वंदणा ॥ हुं ॥ पहिलों प्रत्येक  
बुध रे ॥ हुं ॥ गिरुवाना गुण गावतां ॥ हुं ॥ स  
मकित थाये शुरू रे ॥ हुं ॥ २ ॥ लाधी वांशनी  
लाकमी ॥ हुं ॥ थयो कंचनपुर राय रे ॥ हुं ॥  
घापसुं संग्राम मांमीर्ज ॥ हुं ॥ साधवी लीर्ज सम  
जाय रे ॥ हुं ॥ ३ ॥ वृषज रूप देखी करी ॥ हुं ॥  
॥ प्रतिबोध पास्यो नरेश रे ॥ हुं ॥ उत्तम संजम

आदस्यो ॥ हुं० ॥ देवतादीधो वेश रे ॥ हुं० ॥ ४॥  
 कर्म खपाय मुगते गया ॥ हुं० ॥ करकंडू ऋषि राय  
 रे ॥ हुं० ॥ समयसुंदर कहे साधुने ॥ हुं० ॥ प्रण  
 म्यां पातक जाय रे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मनोरमा सतीनी सद्याय ॥

॥ मोहनगारी मनोरमा, शेठ सुदर्शन नरीरे ॥  
 शील प्रजावें शासनसुरी, थइ जस सान्निध्यकारी  
 रे ॥ मो०॥१॥ दधिवाहन नृपनी प्रिया अजया दीए  
 कलंक रे कोप्यो चंपापति कहे, शूली रोपण वंक रे  
 ॥ मो० ॥ २ ॥ ते निसुणीने मनोरमा, करे काउस्स  
 ग धरी ध्यान रे ॥ दंपती शील जो निरमलुं, तो  
 वधो शासन मामरे ॥ मो०॥३॥ शूली सिंहासन थयुं  
 शासन देवी हजूर रे ॥ संजम ग्रही अया केवली,  
 दंपती दोय सनूर रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ ज्ञानविमल गुण  
 शीलथी, शासन शोज चढावे रें सुर नर सवि तस  
 किंकरा, शिव सुंदरी ते पावे रे ॥ मो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ क्रोधनी सद्याय ॥

॥ कडवां फल ठे क्रोधनां, ज्ञानी एम बोले ॥  
 रीशतणो रस जाणीयें, हलाहल तोलें ॥ क० ॥  
 ॥ १ ॥ क्रोधें क्रोम पूरव तणुं, संजम फल जाय ॥  
 क्रोध सहित तप जे करे, ते तोलेखें न आय ॥ क०॥२॥  
 साधु घणो तपीयो हुतो, धर तो मन वेराग ॥ शिष्य  
 ते क्रोधथकी थयो, चंरुकोशोयो नाग ॥ क० ॥ ३ ॥

आग उठे जे घरथकी, ते पहेलु घर वाले ॥ जल  
नो जोग जो नवि मले, ते पासैनुं परजाले ॥ क० ॥  
॥ ४ ॥ क्रोधतणी गति एहवी, कहे केवलनाणी ॥  
॥ हाण करे जे हेतनी, जालवजो एम जाणी ॥  
॥ क० ॥ ५ ॥ उदयरतन कहे क्रोधने, काढजो गले  
साही ॥ काया करजो निर्मली, उपशम रस नाही  
॥ क० ॥ ६ इति क्रोधनी सद्याय ॥

॥ अथ माननी सद्याय ॥

॥ रे जीव मान न कीजीयें, माने विनय न आ  
वे रे ॥ विनय विना विद्या नहीं, तो किम समकित  
पावे रे ॥ रे० ॥ १ ॥ समकित विण चारित्र नहीं,  
चारित्र विण नहीं मुक्ति रे ॥ मुक्तिनां सुख ठे शा  
श्वतां, ते केम लहियें जुक्ति रे ॥ रे० ॥ २ ॥ विन  
य वनो संसारमां, गुणमां अधिकारी रे ॥ मानें गुण  
जाये गली, प्राणी, जो जो विचारी रे ॥ रे० ॥ ३ ॥  
मान कखुं जो रावणे, तेतो रामे माख्यो रे ॥ डुर्यो  
धन गरवे करी, ते अंते सवि हाख्यो रे ॥ रे० ॥ ४ ॥  
शूकां लाकमां सारिखो, दु.खदायी एखोटो रे॥उद  
यरल कहे मानने, देजो तमे देशवटो रे॥रे०॥५॥इति

॥ अथ मायानी सद्याय ॥

॥ समकितनुं मुल जाणीयें जी, सत्य वचन सा  
क्षात ॥ साचामां समकित वसे जी, मायामां मि  
थ्यात्व रे ॥ प्राणी म करीश माया लगार ॥ १ ॥



ए आंकणी ॥ मुख मीठो जूठो मनं जी, कूरु कपट  
 नो रे कोट ॥ जीजें तो जी जी करे जी, चित्तमांहे  
 ताके चोट रे ॥ प्रा० ॥ १ ॥ आप गरजें आघो पडे  
 जी, पण न धरे विश्वास ॥ मनशुं राखे आंतरो जी,  
 ए मायानो पास रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ जेहशुं बांधे प्री  
 तमी जी, तेहशुं रहे प्रतिकूल ॥ मेल न ठंडे मन  
 तणोजी, ए माया नु मूल रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ तप की  
 धुं माया करी जी, मित्रशुं राखे रे जेद ॥ मद्धि  
 जिनेश्वर जाणजो जी, तो पाम्या स्त्री वेद रे ॥  
 ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ उदयरल कहे सांजलो जी, मेलो  
 मायानी बुद्धि ॥ मुक्ति पुरी जावा तणो जी, ए मा  
 रग ठे शुद्ध रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ आचारांग सूत्रत्री वाच ॥

॥ कोइलो पर्वत धूंधलो रेलो ॥ ओ देशी ॥

आचारांग पहेलुं कह्युं रेलो अंग इग्यार मजार  
 रे ॥ चतुरनर ॥ अठार हजार पदें जिहां रेलो, दा  
 ख्यो मुनि आचार रे ॥ च० ॥ १ ॥ जावधरीने सां  
 जलोरेलो जिम जाजे जव जीति रे ॥ च० ॥ पू  
 जा जक्ति प्रजावना रेलो, साचविये सवि रीति रे  
 ॥ च० ॥ जाव० ॥ ए आंकणी ॥ दो सुअवंध सुहा  
 मणां रेलो, अल्लयणां पणवीस रे ॥ च० ॥ शाश्वता  
 अर्थे इहां कहे रेलो, युक्ति श्रीजगदीश रे ॥ च० ॥  
 जा० ॥ २ ॥ मीठडेवयणें गुरु कह्युं रेलो, मीठडुं अं

गज एह रे ॥ च० ॥ मीठडीरीते सांजले रेलो, सु  
ख लहे मीठडां तेह रे ॥ च० ॥ जा० ॥ ३ ॥ सुर  
तरु सुरमणि सुरगवी रेलो, सुरघट पूरे काम रे  
॥ च० ॥ सांजलवुं सिद्धांतनुं रेलो, तेहथी अति अ  
जिराम रे ॥ च० ॥ जा० ॥ ४ ॥ श्रीनयविजयविवु  
द्धतणो रेलो, वाचक जस कहे शीश रे ॥ च० तुम  
ने पहिला अंगनो रेलो, शरण होयो निशदीश रे  
॥ च० ॥ जा० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥

॥ अथ कलियुगनी सव्वाय ॥

॥ सरसती सामिनी पाय नमीने, जलट मनमां  
हे आयो ॥ तीरथ नहीं कोइ इण संसारे, तेणे ए  
कलियुग आयो ॥ देखो वे यारो कूनो कलियुग  
आयो ॥ एआंकणी ॥ बावो कहे मारी नानकी  
वेटी, दिन दिन मूल्य सवायो ॥ यारो कूनो कलियु  
ग आयो ॥ १ ॥ राजा ते परजाने पीडे, कुनर काम  
जलायो ॥ बोल बंध नहि मंत्रीने, गोचर खेत्र-खे  
मायो ॥ वे यारो ॥१॥ गुरुने गाल दिये नित चेलो,  
वेद पुराण पढायो ॥ सासु चूले ने बहु खाटलडे,  
फुके शरीर जलायो ॥ वे यारो ॥ ३ ॥ एशी वरस  
नो हींडे होंशे, मूठे हाथ घलाये ॥ पंच तणी साखे  
परणीने, अवला अर्थ गमायो ॥ वे यारो ॥४॥ जोगी  
जंगम ने संन्यासी जांग जखे मदवाहो ॥ चोर चाड  
परधनने खाये, साधु जन सीढायो ॥ वे यारो ॥५॥

निर्धनने बहु वेटा बेटी धनवंत एक न पायो ॥  
नीच तणे घर अति वणी लखमी उत्तम जन सीढा-  
यो ॥ वे यारो ॥ ६ ॥ न मले वाप संगाते वेटो,  
घणेरें मनोर्थे जायो ॥ हाथउपाडे मायने मारे, पर-  
णी शुं उमाह्यो ॥ वे यारो ॥ ७ ॥ घरमाने घेलो  
कहे वेटो, आद तणो मद वाह्यो ॥ बहु सूतीने वर  
हींकोले, सासरे सूवाने धायो ॥ वे यारो ॥ ८ ॥  
हलखेडे ब्राह्मण गौ जोत्ति, निर्दय नाक फमायो ॥  
मा वापे वेटी वेचीने, वेटाने परणायो ॥ वे यारो  
॥ ९ ॥ राग तणे वश गुरुने गुरुणी, काम करे परा  
यो ॥ कांगानी पेरे कलहो मांमी, कुल गुरु नाम  
धरायो ॥ वे यारो ॥ १० ॥ बैयर वार वरसनीने  
वेटो, दीठो गोद खेलायो ॥ माग्यां मेह न वरसे  
महीयल, लाजें धख्यो सवायो ॥ वे यारो ॥ ११ ॥  
कूमा कलियुगनी ए माया, देखी गीत गवायो ॥  
पन्नणे प्रीति विमल परमारथ, जीन वचनें सुख  
पायो ॥ वे यारो कूमो ॥ १२ ॥

॥ अथ शियल स्वाध्याय ॥

धन्य धन्य ते दीन माहारो ॥ ए देशी ॥ शिय-  
ल समुं व्रत को नहि, श्री जीनवर चाखे रे ॥ सुख  
आपे जे शाश्वतां, दुर्गति पमता राखेरें ॥ शि० ॥ १ ॥  
व्रत पचस्काण विना जुओ, नव नारद जेहरे ॥ एक  
ज शियल तणें चले, गया मुक्तें तेहरे ॥ शि० ॥

॥ १ ॥ साधु अने श्रावक तणां, व्रत ठे सुखदायीरे  
 शियल विना व्रत जाणजो, कुशका सम चाहरे ॥  
 ॥ शि० ॥ ३ ॥ तरुवर मूल विना जिस्यो, गुण विण  
 लाल कमानरे ॥ शियल विना व्रत एहवुं, कहे वीर  
 जगवानरे ॥ शि० ॥ ४ ॥ नव वारें करी निर्मळुं, प  
 हेळुं शीलज धरजोरे ॥ उदय रत्न कहे ते पढी,  
 व्रतनो खप करजोरे ॥ शि० ॥ ५ ॥

॥ निझमीनी सद्याय ॥

निझमी वेरण हुइ रही, कीम कीजें हो सा पुरु  
 श निदानके; चोर फरे चिहुं पासथी, किम सूता  
 हो कांइ दिनने रात के ॥ नि० ॥ १ ॥ वीर कहे  
 सूणो गोयमा, मत करजो हो एक समय प्रमादके  
 ॥ जरा आवे यौवन गले, किम सूता हो कांइ कव  
 ण सवादके ॥ नि० ॥ २ ॥ चउद पूरवधर मुनिवरा  
 निझा करता हो गया नरक निगोद के ॥ अनंतो  
 अनंत काल तिहारहे, इम वगडे हो, कांइ धरमनो  
 मोदके ॥ नि० ॥ ३ ॥ जोरावर घणा जालमी, यम  
 राजा हो कांइ सवल करुरके ॥ नीज सेन्या लइ  
 चिहुं दिशे, किम जागता हो नर कहिये शूर के ॥  
 नि० ॥ ४ ॥ जागतडां गंजे नहि, ठेतराये हो नर  
 सूतो नेटके ॥ सूतारीणी पामा जण्णा, किम कीजें  
 हो शा पुरुषनी जेटके ॥ नि० ॥ ५ ॥ श्री वीरे इम  
 नाखीयुं, पंखी नारंड हो न करे परमाद के; तेह

तार रे ॥ श्री महा० ॥ १ ॥ दानें दोलत पामीयें  
 सखी दाने कोड कल्याणरे ॥ दान सुपात्र प्रजाव  
 थी, सखी कयवन्नो शालिजद्र जाणरे ॥ श्री महा०  
 ॥ २ ॥ शियले संकट सवि टले, सखी शिलें वंदित  
 सिद्धरे ॥ शियलें सुर सेवा करे, सखी सोल सति  
 परसिद्धरे ॥ श्री महा० ॥ ३ ॥ तप तपो जवि जाव  
 शुं, तपें निर्मल तन्नरे ॥ वर्षोपवासी रूपजजी, सखी  
 धन्नादिक धन्य धन्यरे ॥ श्री महा० ॥ ४ ॥ जरता  
 दिक शुज जावथी, सखी पाम्यो पंचम ठाम रे ॥  
 उदयरत्त मुनि तेहने, सखी नित्य किरे प्रणामरे ॥  
 श्री महावीरे ॥ ५ ॥

॥ सामायिक लाज सदाय ॥

॥ कर पक्किमणुं जावशुं, दोय घन्नी शुज ध्यान  
 ॥ लालरे ॥ परजव जातां जीवने, संवल साचूं जा  
 ण ॥ लालरे ॥ कर० ॥ १ ॥ श्री वीर मुख इम उ  
 चरे, श्रेणिक राय प्रत्यें जाण ॥ लालरे ॥ लाख खांकी  
 सोना तणी, दिये दिन प्रत्यें दान ॥ लालरे ॥ क० ॥  
 ॥ २ ॥ लाख वरस लगें ते वली, एम दीये  
 अपार ॥ ला० ॥ एक सामायिकने तोलें,  
 लगार ॥ ला० ॥ क० ॥ ३ ॥ यिक  
 लो, देव वंदन ॥ ४ ॥ वत सं  
 आपणां, ते जव कर्म ॥ कर०  
 कर काउस्तगग शुज

चार ॥ ला० ॥ दोय सद्यायें ते वती, टालो टालो  
अतिचार ॥ ला० ॥ कर ॥ ५ ॥ श्री सामायिक  
प्रतापथी, लहियें अमर विमान ॥ लालरे ॥ धर्म  
सिंह मुनि एम जणे, ए ठे मुकित निदान ॥ ला  
लरे ॥ कर० ॥ ६ ॥

॥ अथ ठीक विचार सवाय ॥

॥ देशी चोपाइनी ॥ ठीक शुक्लननो कहुं विचार,  
सुगुरु समीप सूण्यो में सार ॥ आगलमां जो ठीकज  
होय, अशुच तणी जाणे जे, कोय ॥ १ ॥ पहेला शुक्ल  
हुवां शुच घणां ॥ ठीकज हुआ निष्फल तेतणां पठी  
कज हुआ पठी जे जाण, शुक्ल हुआं ते करो प्रमा  
ण ॥ २ ॥ गावी ठीक होय अर्ध फली कहे, जमणी  
ठीक बुरी सज कहे ॥ पूठे ठीक सुखदायक सही,  
घणी ठीक ते निःफल कही ॥ ३ ॥ हांसे जय उपा  
धीयें करी, हठ घणो मनमांहे धरी ॥ एक ठीक ते  
निःफल जाण, कुतर ठीक तो निःखर आण ॥ ४ ॥  
मंजार ठीक ते मरणज करे, इसी ठीक कष्टकारी  
सरे, ॥ वस्तु वेचतां ठीकज होय, आण्युं करीयाणुं  
मोघु होय ॥ ५ ॥ वस्तु लेतां ठीकज होय, वमणो  
लाज सघलानो जोय ॥ गइ वस्तु जो जोवा जाय,  
ठीक होय तो लाज न थाय ॥ ६ ॥ नवां वस्त्र वली  
पेहेरतां, ठीक होये आगल अण ठतां ॥ जोजन  
होम पूजानुं काम, मंगलीक जेधर्म सुगम ॥ ७ ॥

॥ अथ वीश स्थानकना तपनो सधाय ॥

॥ श्रीसीमंध साहेव आर्गे ॥ ए देशी ॥ अरि  
हंत पहेले थानक गणीयें, वीजे पद सिद्धाणं ॥ त्री  
जे पवयण आयरिय चोथे, पांचमे पद थे राणं रे  
॥ जविया ॥ वीश थानक तप कीजें ॥ ओली वीश  
करीजें रे ॥ ज० ॥ गणणुं एह गणीजें रे ॥ ज० ॥  
जिम जिनपद पामीजें रे ॥ ज० ॥ नर जव लाहो  
लीजें रे ॥ ज० ॥ वी० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ उवद्याए ठठे  
सव्वसाहूणं, सातमे आठमे नाण नवमे दंसण दस  
मे विणयस्स, चारित्र अगियारमे जाण रे ॥ ज० ॥  
॥ वा० ॥ २ ॥ चारमे वंजवय धारीणं, तेरस मे कि  
रियाणं ॥ चउदमे तव पन्नरमे गोयम, सोलसमें न  
मो जीणाणं रे ॥ ज० ॥ वी० ॥ ३ ॥ चारित्तस्स सत्त  
रमे जपीगें, अठारसमे नाणस्स ॥ उंगणीशमे नमो  
सुयस्स संजारो, वीशमे नमो तित्थस्स रे ॥ ज० ॥  
॥ वी० ॥ ४ ॥ एकासणादिक तप देव वंदन, गणणुं  
दोय हजार ॥ संध विनय बुध शिष्य सुदर्शन, जंपे  
एह विचारो रे ॥ ज० ॥ वी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ शीयल विपे शीखामणनो सधाय ॥

॥ ढाल ॥ एतो नारी रे, वारी ठे डुर्गति तणी ॥  
ठांरु संगत रे मूरख तुं परखी तणी ॥ जीव चोखा  
रे, मोखा तेहशुं मंम करे ॥ शीख मानी रे, ठानी  
वात तुं परिहरे ॥ १ ॥ झुटक ॥ जो वात करीश

परनारी साथें, लोक सहु हेरे अठे ॥ राय रांक थ  
 इ ने रदया रानें, सुखें नहीं बेसे पठे ॥ ए मदनमा  
 ती विषय राती, जेसी काती कामिनी ॥ पहेलुं तो  
 वली सुख देखाडे पठे, पठाडे जामिनी ॥१॥ ढाल कर  
 पगना रे, नयण वयण चाला करी ॥ चोलावी रे, नर  
 लेइ धाइ सुंदरी ॥ चोलावी रे, हाव जाव देखाडशे ॥  
 पगे लागी रे, मरकलडे पठे पाडशे ॥३॥ त्रुटक ॥ ए  
 पास पाडे धन गमाडे, मान खंडे ले लठी ॥ घोळं  
 ती रुडी चित्त कूडी, कूरु कपटनी कोथली ॥ ए नर  
 अमूलक वस्य पडिजं, पठे नपोसायें पायको दीवा  
 नरुंडे मानखंमे मारसहे पठे रायको ॥ ४ ॥ ढाल ॥  
 ठांकी लेशे रे, बेझ्याना लंपट नरा ॥ सहु सधवा  
 रे, विधवा दासी दूरे करा जा नाशी रे, रुप देखी  
 जीव एह तणुं ॥ उजो रही रे, एह साहामुं, मम  
 जो घणुं ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ घणुं म जोइश एह साहा  
 मुं, कुलस्त्री दीठे नवि गमे ॥ जीम शूनी पूतें श्वान  
 हींडे, तिम परनारि पूते कां जमे ॥ जिम विलामो  
 दूध देखे, मोलें डांग न देख ए, परनारि वेधो पुरुष  
 पापी किसो जय नवि, लेख ए ॥ ६ ॥ ढाल ॥ फू  
 ल वेणी रे, शिर सिदूर सेंथोजस्यो ॥ ते देखी रे,  
 फट मूरख मन कां कस्यो ॥ देखी टीलां रे, ढीलां  
 इंद्रिय करी गह गह्यो ॥ शिर राखनी रे, आंखें दे  
 इ तुं कां रह्यो ॥ ७ ॥ त्रुटक ॥ कां रह्यो मूरख आं.



खें देइ, शणगार चार एणें धर्या ॥ ए उली जीहा  
 आखें पीहा, कान कूपा मल चर्या ॥ नारी अग्नि  
 पुरुष माखण, बोलतां वीगरे ॥ स्त्री देहमां शुं सार  
 दीगो, मूढ महिआंकां करे ॥ ७ ॥ ढाल ॥ इंद्रिय  
 बाह्यो रे, जीव अज्ञानी पापिउं ॥ माने नरगह रे,  
 सरग करी विष व्यापीउं ॥ कां झूलो रे, शणगार  
 देखी एहना ॥ जाणी प्राणी रे, ए ठे दुःखनी अंग  
 ना ॥ ए॥ नुटका ॥ अंगना तुं ठोमी जो करे, तो जश की  
 र्ति सघले लहे ॥ कुशीलनुं जो नाम लियेको, पर  
 लोक दुरगति दुखसहे, विजय जड बोले जे न  
 मोले, शीघल थकीजे नरवरा ॥ तस पायें लागुं सेवा  
 मागुं, जे जगमांहे जयकरा ॥ १० ॥ इति ॥ शील सद्याय ॥

॥ अथ प्रजातें वाहाणलां गावानो सद्याय ॥

॥ मिथ्यामति रे रजनी असरालके ॥ वाहाणलां  
 जलें वायांरे ॥ जीहां उघे रे प्राणी बहुकाल के ॥  
 बहाणां ॥ नवि जाणे रे जीहां यमनी फाल के ॥  
 ॥ बा० ॥ तिहां पामे रे पग पग जंजाल के ॥ बा०  
 ॥ १ ॥ जीहां ऊरुपे रे क्रोध दवनी जाल के ॥ बा० ॥  
 मानरूपी रे अजगर विकराल के ॥ बा० ॥ डंसे मा  
 या रे सापणी रोपाल के ॥ बा० ॥ जीहां चावो रे  
 लोचन रुप चमाल के ॥ बा० ॥ २ ॥ रागादिक रे राक्ष  
 स महावृंद के ॥ बा० ॥ आठ कर्मना रे जीहां मांड्या  
 फंद के ॥ बा० ॥ जीहां देखे रे दुरगति दुःख दंद के

॥ वा० ॥ नवी ढीसे रे जीहां ज्ञान दिणंद के ॥  
 ॥ वा० ॥ ३ ॥ धसमसतां रे जीहां विषयनी जाल  
 के ॥ वा० ॥ लीये लूटी रे नगणे पक्षिवाल के ॥  
 ॥ वा० ॥ अटवी अनंती रे जीहां विकट उजारु के  
 ॥ वा० ॥ चाले नही रे जीहां व्रतनी बाड के ॥  
 ॥ वा० ॥ ४ ॥ निरखंतारे श्रीजिनमुख नूर के ॥  
 ॥ वा० ॥ हवे जग्यो रे महासमकेत सूर के ॥वा०॥  
 दुखदायी रे दोषि गया दूर के ॥वा०॥ बली प्रगट्या  
 रे पुण्यतणा अंकूर के ॥ वा० ॥ ५ ॥ सुता जागो रे  
 देसविरतिना कंत के ॥ वा० ॥ बली जागो रे सर्व  
 विरति गुणवंत के ॥वा०॥ तमे जेटो रे जावे जगवंत  
 के ॥वा०॥ पक्कमणां रे करो पुण्यवंत के ॥वा०॥६॥  
 तमे लेजो रे देवगुरुनु नाम के ॥वा०॥ बली करजो  
 रे तमे धर्मनां काम के ॥ वा० ॥ गुरुजन नारे गावो  
 गुण ग्रामको ॥वा०॥ प्रेम धरीनें रे करो पूज्य प्रणा  
 म के ॥वा०॥७॥ तमे करजो रे दशविध पञ्चखाण के  
 ॥ वा० ॥ तुमे सुणजो रे श्रीसूत्रवखाण के ॥ वा०॥  
 आराधो रे श्री जिननी आण के ॥ वा० ॥ जिम  
 पामो रे शिवपुर संठाणके ॥ वा० ॥ ८ ॥ सांजलीने  
 रे श्रीमुखनी वाण के ॥ वा० ॥ तमे करजो रे सही  
 सफल विहाण के ॥ वा० ॥ वदे वाचक रे उदयर  
 ल सुजाण के ॥ वा० ॥ एह जणतां रे लहीये कोड  
 कट्याण के ॥ वा० ॥ ९ ॥ इति ॥ बाहला ॥

॥ अथ वैराग्य सहाय ॥

कोउ काज न आवे रे दुनियांके लोको, कोउ  
काज न आवे ॥ जूठी वातका आनि जरोंसा, पीठे  
सें पस्तावे रे ॥ दु० ॥ १ ॥ मतलबकी सब म  
लि लोकाइ, बहोतहिं रंग बानावे रे ॥ दु० ॥ २ ॥  
अपना अर्थ न देखे सो तो, पलकमे पीठ देखावे  
रे ॥ दु० ॥ ३ ॥ बाजीगरकी बाजी जेसा, अजब  
दिमाक देखावे रे ॥ दु० ॥ ४ ॥ देखो दुनियां सकल  
खीली है, युंहीं मन ललचावे रे ॥ दु० ॥ ५ ॥ जि  
नें जान्या तिने आप पिठान्या, वे खबरी दुःख पा  
वे रे ॥ दु० ॥ ६ ॥ हंस सयाने एक सांझुं ठर,  
काहेकुं चित्त न लावे रे ॥ दु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ चैतन्य शिक्षाज्ञास प्रारंभ ॥

॥ आप विचारजो आतमा, ज्ञातें शुं जूले; अ  
थिर पदारथ उपरें, फोगट शुं फूले ॥ आ० ॥ १ ॥  
घटमांहे ठे घरधणी, मेढो मननो ज्ञामो ॥ बोले  
ते बीजो नथी, जोने धरी तामो ॥ आ० ॥ २ ॥ पा  
मीश तुं पासंथकी, बाहेर शुं खोले ॥ वेसे कां तुं  
बूझा, मायानी उलें ॥ आ० ॥ ३ ॥ प्रीठा विण  
केम पामीये, सुण मूरख प्राणी ॥ पीवाये किम पश  
लीयें, जांजवानां पाणी ॥ आ० ॥ ४ ॥ आप स्वरूप  
न उलखे, मायामांहे जूले ॥ गरथ पोतानी गांठनो,  
व्याजमां जिम डूले ॥ आ० ॥ ५ ॥ जोतां नाम न

जाणिये, नहिं रुप न रेख ॥ जगमांहे ते केम जडे,  
 अरुपी अलेख ॥ आ० ॥ ६ ॥ अंध तणी पेरे आ  
 फले, सघला, संसारी ॥ अंतरपट आमो रहे, कोण  
 जूवे विचारी ॥ आ० ॥ ७ ॥ पहेले पाबुं करी, पठी  
 जोने निहाली ॥ नजरें देखीश नाथने, तेहशुं ले  
 ताली ॥ आ० ॥ ८ ॥ वधण हारो को नथी, नथी ठोका  
 वण हारो ॥ प्रवृत्ते बांधियें पोतें, निवृत्तें निस्तारो ॥  
 आ० ॥ ९ ॥ जेदाजेद वुळू करी, जासे ठे अनेक ॥ जेद  
 तजीने जो जजे, तो दीसे एक ॥ आ० ॥ १० ॥ काले  
 धोळुं जेलीये, तो ते थाये वेरंगू वेरंगें वुडे सहि, मन  
 न रहे चंगु ॥ आ० ॥ ११ ॥ मन मरें नहिं जिहां लगें,  
 घूमे मद घेख्यो ॥ तव लगें जग जूळ्युं जमे, न मटे  
 जव फेरो ॥ आ० ॥ १२ ॥ उघ तणे जोरे करी, शुं  
 मोह्यो सुहणे ॥ अलगी मेली उंघने, खोली जोने  
 खूणे ॥ आ० ॥ १३ ॥ त्वारे जगमां तुज विना, वी  
 जो नवी दीसे ॥ जिन जाव मटशे तदा, सेहेजे  
 सुजगीशें ॥ आ० ॥ १४ ॥ मारुं तारुं नवि करे, स  
 हुथी रहे न्यारो ॥ इणेएहिनाणे उंलीख्यो, प्रभु  
 तेहने प्यारो ॥ आ० ॥ १५ ॥ सिद्धदिशायें सिद्धने,  
 मलीयें एकांति ॥ उदयरत्न कहे आतमा, तो जांगे  
 त्रांति ॥ आ० ॥ १६ ॥ इति चैतन्यशिक्षाज्ञास संपूर्ण ॥  
 ॥ अथ वैराग्य सद्याय ॥ राग आशावरी ॥  
 ॥ किसीकुं सब दिन सरखे न होय ॥ प्रहजग

त अस्तंगत दिनकर, दिनमें अवस्था दोय ॥ कि०  
 ॥ १ ॥ हरि बलिचंद्र पांरुव नल राजा, रहे खट  
 खंट रिद्धि खोय ॥ चंमल के घर पाणी आयुं,  
 राजा हरिचंद जोय ॥ कि० ॥ २ ॥ गर्व म कर तुं  
 मूढ गमारा, चरुत परुत सव कोय ॥ समय सुंदर  
 कहे इतर परत सुख, साचो जिनधर्म सोय ॥ कि०  
 ॥ ३ ॥ इति वैराग्य सद्याय ॥

॥ अथ निद्रानी सद्याय ॥

॥ बेटी मोह नरिंदकी, निद्रा नामें विख्यात वे  
 ॥ धर्म छेषणि पापणी, न गमे धर्मनी बात वे ॥  
 निंद न लहे जे सज्जनां, सज्जनां वे दुःखजंजना वे  
 ॥ टेक ॥ नि० ॥ १ ॥ घेरे सघला जीवने, जिहां  
 जमनो पास वे ॥ जा घनि निंद न पाइयें, ता घ  
 नि प्रजुको वास वे ॥ नि० ॥ २ ॥ आलस उमराव  
 एहनो, जालिम जोरु जुवान वे ॥ दूत बगासूं जा  
 एजो, चाले आगेतान वे ॥ नि० ॥ ३ ॥ जाति पां  
 च ठे जेहनी पसरी विश्व ॥ केवली बिना  
 एक जेहनी, कोइ न  
 ठूकडी धर्में प  
 तिहां होय  
 उंघने,  
 जीतिये,

॥ अथ वैराग्य सहाय ॥

॥ प्राणी काया माया कारमी, कूडो ठे कुटुंब  
परिवाररे ॥ जीवमला ॥ समरण कीजें सिद्धनुं ॥ मा  
हरं माहरं म कर रे मानवी, पंथ वहेवुं परले पार रे  
जीवमला ॥ सम० ॥ १ ॥ प्राणी सहुने बलावे सांक  
ल्या. मलिया ठे मोहने संबंध रे जीवमला ॥ प्राणी  
आयु दायें अलग्नां थयां, धीगो एवो संसारी धंध  
रे जी० ॥ सम० ॥ २ ॥ प्राणी काष्ठ परें रे काया  
बले, वली केश बले जेम घास रे ॥ जी० ॥ प्राणी  
मानवी मर्कट वैरागीया, वली पडे माया विश्वास  
रे जी० ॥ ३ ॥ प्राणी पनाइ उडे जीव उपरें, दोरी  
पवन बले लेश जाय रे जी० ॥ प्राणी त्रुटी दोरी  
संधाय ठे, आउखु त्रुटुं न संधाय रे जी० ॥ सम० ॥  
॥ ४० ॥ प्राणी काचे कुंजे पाणी केम रहे, हंस उनी  
जाय काय रे जी० ॥ प्राणी आशा अतिघणी आद  
रे, थावा वालो तेहिज थायरे जी० ॥ सम० ॥ ५ ॥  
प्राणी जेने घरे नोवत गरुगडे, गावे वली खट रा  
ग रे जी० ॥ प्राणी गोखें तेहने धूमता, शून्यथये०  
वली उडे काग रे जी० ॥ सम० ॥ ६ ॥ प्राणी एम  
संसार असार ठे, सारमां श्रीजिनधर्म सार रे जी  
प्राणी शांति समर समता घरी, चार त्यजी वली  
आदरो चाररे जी० ॥ सम० ॥ ७ ॥ प्राणी पांचे त  
जो रे पांचे नजो, त्रण जीपो त्रण गुणधार जीरे ॥

अविवेकें करे, अर्थ विचार न हैडे धरे ॥ मन उठे  
 ग वंठे यश घणो, न करे विनय बडेरातणो ॥ १ ॥  
 जय आणे चिंते व्यापार, फल संशयनी आणुं सार  
 ॥ हवे वचनना दोष विचार, कुवचन बोले करे  
 टुंकार ॥ २ ॥ ले कुंची जा घर उधार, मुख छवरी  
 करतो बढवाड ॥ आवो जावो बोले गाल, मोह  
 करी हुलरावे बाल ॥ ४ ॥ करे विकथाने हास्य अ  
 पार, ए दश दोष वचनना वार ॥ काया केरां दूषण  
 वार, चपलासन जोवे दिश चार ॥ ५ ॥ सावद्य  
 काम करे संघात, आलस मोडे उंचे हाथ ॥ पग  
 लंबे वेसे अवनीत, उठिंगन द्ये थांजो नीत ॥ ६ ॥  
 मेल उतारे खरज खणाय, पग उपर चढावे पाय ॥  
 अति उघाडुं मेले अंग, ढांके तेम बली अंग उपंग  
 ॥ ७ ॥ निद्रायें रस फल निर्गमें, करहा कंटक तरु  
 ए जमे ॥ ए वत्रीशे दोष निवार, सामायिक कर  
 जो नर नार ॥ ८ ॥ समता ध्यान घटा उजली,  
 केशरी चोर हुवो केवली ॥ श्रीशुजवीर वचन पा  
 लती, स्वर्गे गइ सुलसा रेवती ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ अश्मंताजीनी सद्याय ॥

॥ श्री अश्मंता मुनिवरजूकी, करणी की बलि  
 हारी वे ॥ खट वर्पनके संजम लीनो, वीरवचन  
 चित धारी वे ॥ श्री ॥ १ ॥ विजय नृपति श्री  
 देवी नंदन, पोलासपुर अवतारी वे ॥ अंग अग्यार

पढे गुण आदर, त्रिविध त्रिविध अविकारी वे ॥  
 ॥ श्री० ॥ २ ॥ तप गुण रयण संवत्सर आदिक,  
 करकें काय उद्धारी वे ॥ प्रभु आदेशें विपुलाचल  
 पर, करी अणसण अति चारी वे ॥ श्री० ॥ ३ ॥  
 केवल पाय मुक्ति गये मुनिवर कर्म कलंक  
 निवारी वे ॥ अढारसैं अमृताढें तिहि गि  
 रि, कीनी थापना सारी वे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ वाचक  
 अमृत धर्म सुगुरुके, सुपसायें सुविचारी वे ॥ शिष्य  
 दामा कळ्याण हरख धर, गुण गावे जयकारी ते ॥  
 ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति अश्मंता मुनिनो सद्याय ॥

॥ अथ समकेतनी चोपाइ ॥

॥ धुर प्रणमुं जिनवर चोवीश, सविगणधरने  
 नामुं शीश ॥ तेहनां वयण सुणे जे कान, मन रा  
 खे समकितने ध्यान ॥ १ ॥ साचो देव एक वीतरा  
 ग, धर्म तणो जेणें दाख्यो माग ॥ ते जिनवरनी  
 पाळुं आण, जे होये साचा सुगुरु सुजाण ॥ २ ॥  
 पंच महाव्रत मनमां धरे, राग द्वेष पेहेळुं परिहरे ॥  
 चारित्र पाळेटाळे दोष, लीये आहार थोडे संतोष ॥ ३ ॥  
 दोषमांहे जे आधाकर्म, टाळे ते त्रोडे आठ कर्म ॥  
 आधाकर्म करे नर नार, ते पण घणुंए रुळे संसार  
 ॥ ४ ॥ मूकी देह तणा सुखवास, सहे परीसह वा  
 रे मास ॥ तपे करिने जेणें जस लाध, वंदनिक ते  
 त्रिभुवन साध ॥ ५ ॥ एक संयमने बीजी दामा,



शत्रु मित्र जेहने वेहु समा ॥ दृष्टिराग तरी उत्तरी  
 ते जाशे जव सायर तरी ॥ ६ ॥ एकआपणुं करी  
 मन ठाम, जणैगुणै सिद्धांत तमाम ॥ सद्गुरुनो उपदेश  
 आचार, जोइ समजो हैये विचार ॥ ७ ॥ एकपहेरे  
 मुनिवरनो वेश, पण साचो न दीये उपदेश ॥ जेह  
 उत्थापे जिनवर वयण, तेहने किहां हियानां नय  
 ण ॥ ८ ॥ घर मूकीने थया माहातमा, ममता जइ  
 दागा आतमा ॥ मारुं मारुं एम कहे घणुं, तेह मू  
 रख वदनता पणुं ॥ ९ ॥ एक त्यागी दीसे ठे इस्या,  
 लोभें शिष्य करे आण कश्या ॥ पंच महाव्रत कहे, उचरे,  
 उपशम रस ते कहो किम गरे ॥ १० ॥ आधाकमीं  
 बहोरे घणो धरम विगोवे जिन वरतणो यंत्र  
 तंत्र मूली करी करी, चूरण आपे घर घर फरी  
 ॥ ११ ॥ कुगुरु तणा जाणी अहि नाण, सेवा  
 न करे जे होये जाण ॥ जिनवाणी सांजलीयें  
 इसी, सोनुं गुरु बे लीजें कसी ॥ १२ ॥ सोनाथीहोय  
 एकज बहाण कूगुरुकरे जव जवनीहाण, सोने घाठा  
 पण ते मले, कुगुरु पसायें जव जव रुखे ॥ १३ ॥ स  
 र्प रुसे हुए जवनो अंत, कुरुगु करे संसार अनंत  
 ॥ एम जाणी वली लीजे साप, कुगुरु नमि नवि  
 वोलियें आप ॥ १४ ॥ एक बहे जिनवरनी आण,  
 वैर बहे तिहां एक अजाण ॥ एह आपणा नही  
 गुरु एम, बोली लीये वदंतुं तेम ॥ १५ ॥ एक जणै

मारा गुरु देव, में करवी एहि जनी सेव ॥ पढ़  
तणा स्वामीने मान, अवर पढ़ने दे अपमान ॥१६॥  
एक सगा जाणी माहात्मा, गुणपाखें तारे आत्मा ॥  
पात्र जणी पूजे तेहने, समकित केम ठे तेहने ॥  
॥ १७ ॥ देखी परखी गुरु गुणवंत, श्रावकने मनसं  
यमवंत ॥ एह आपणा नही इम जणे, दान मान  
सघले अवगणे ॥ १८ ॥ एका ने गठनो अनुराग,  
पण न लहे साचो जिनमाग ॥ वीर वचन लेइने  
पाधरुं, कुगुरु सुगुरु जोइ आदरुं ॥ १९ ॥ जेहने  
आगमनुं बहु मान, तेहना उघडे एणे कान ॥  
ए साधारण गुरुनी बात, जइने जोस्ये मुक्ति मात ॥  
॥ २० ॥ हृदय नयन तम जुठं सुजाण, ठंमो कुगुरु  
ए जिन आण ॥ सदगुरु तणा चरण आचरो, जेम  
जवसायर लीलायें तरो ॥ २१ ॥ जे जिन आण व  
हे निशदीश, ते उपर जे नाणे रीश ॥ नवे तत्त्व  
निरता सदहे, सूधूं समकित ठैते कहै ॥२२॥ एहवुसम  
कित सूधु जाण, धर्मकाजनु म करीश काण ॥  
जिनवर पूजासजुगुरु जक्ति, जावें करवी आत्म  
सक्ति ॥ २३ ॥ पक्कमणुंने फासुं नीर, कीजें  
धर्म कहुं जे वीर ॥ धर्में ऋद्धि खिद्धि घर हूत,  
धर्में संकट सवि जाजंत ॥२४॥ धर्में सूर्य निरतो तपे,  
धर्में पाप करम सवि खपे ॥ धर्में होये रुपनो योग,  
धर्मपसायें संपत्ति जोग ॥२५॥ जणे गुणे ने बहु तप

करे, पण समकित सूधुंनादरे ॥ समकित विण  
 ते सहुए फोक, समकित आदर करवुं रोक ॥ १५ ॥  
 समकित माय वाप संसार, समकित सुख संपत्तिनो  
 सार ॥ समकित एह धर्मनु मूल, समकितथी सहु  
 ए अनुकूल ॥ १७ ॥ समकित रुद्धि सिद्धि घर घणी  
 समकित लगें होये सुर धणी ॥ समकित सीजे सघ  
 लां काज, समकित लगें त्रिभुवननुं राज ॥ १८ ॥  
 समकित सहितनुं सुणो प्रमाण, कृष्णरायनुं जुड  
 मंमाण ॥ तपविण श्रेणिक राजह धणी, लेशे पदवी  
 अरिहंत तणी ॥ १९ ॥ समकित पावेजे नर नार,  
 वली नआवे ते संसार ॥ एम जाणी समकित आ  
 दरो, सिद्धि रमणी जेम लीला वरो ॥ २० ॥ इति ॥

॥ अथ आत्मशिक्षा सधाय ॥ राग रामग्रीमा  
 सहेजानंदी देशी ॥

॥ आत्मरामेंरे मुनि रमे, चित्त विचारीने जोय  
 रे ॥ ताहारुं दीसे न कोय रे, सहु स्वारथी मढ्युं  
 तोय रे, जन्म मरण करे लोयरे, पूछें सवि मली  
 मली रोय रे ॥ आ० ॥ १ ॥ सजन वर्ग सवि का  
 रिमुं, कूमो कुटुब परि, वार रे ॥ कोइ न करे तुज  
 सार रे, धर्म विण नही कोइ आधार रे, जिणें पा  
 मे जव पार रे ॥ आ० ॥ २ ॥ अनंत कलेवर मूकी  
 यां, तें कीयां सगपण अनंत रे ॥ जव उद्देगें रे तुं

जन्म्यो तोही न आव्यो तुज अंत रे ॥ चेतो हृदय  
मां संत रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ जोग अनंता तें जोग  
व्या, देव मणुए गतिमांहे रे ॥ तृप्ति न पाम्यो रे  
जीवमो, हजी तुज वांठा ठे त्यांहिरे, आण संतोष  
चित्तमांहे रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ ध्यान करो रे आतम  
तणुं, परवस्तुथी चित्त वारी रे ॥ अनादि संबंध  
तुज को नहीं, शुद्ध निश्चें इम धारी रे इणविध नि  
ज चित्त ठारी रे, मणिचंद्र आतम तारी रे ॥ आ० ॥

॥ अथ समय सुंदरजीकृन मायानी स्वाध्याय ॥

॥ माया कारमी रे, माया म करो चतुर सुजाण  
॥ जा० ॥ ए आंकणी ॥ मायायें वाह्या जगत विदु  
द्धा, दुखीया थाये अजाण ॥ मा० ॥ १ ॥ न्हाना  
महोटा नरने माया, नारीने अधिकेरी ॥ वल्ली वि  
शेपें अतिघणी व्यापे, घरमाने जाजेरी ॥ मा० ॥ २ ॥  
योगी जंगम यती संन्यासी नग्नथड परवर्या ॥ उंधे  
मस्तक अग्नि धखंती, मायाथी नवि रुरिया ॥ मा० ॥  
॥ ३ ॥ माया मेढी करी बहु जेढी लोचें लक्षण  
जाय ॥ चोर रुं धरतीमां घाले, उपर तिसहर  
थाय ॥ मा० ॥ ४ ॥ माया कारण दुरदेशांतर, अ  
टवी वनमां जाय, प्रवहण वेसीछी पदि पोतर सायरमा  
जंपाय ॥ मा० ॥ ५ ॥ शिवभूति सरिखा सत्यवादी,  
सत्यगोप कहावे ॥ रतन देखी मन तेहनुं चलीजं,  
मरीने दुर्गति जावे ॥ मा० ॥ ६ ॥ लब्धिदत्त मा

यायें नमीयो, पमीयो समुद्र मजार ॥ मुख माख  
 णीउं यइने मरीयो, पमीयो नरक दु वार ॥ मा० ॥  
 ७ ॥ इंद्रे तो सिंहासनथापी, संजूर्यें माया राखी ॥  
 नेमीसर तो माया मैली, मुगतीमां यया साखी ॥  
 मा०॥७॥ मन वचन कायायें माया, महेली वनमा  
 जाय ॥ धन्य धन्य तेह मुनि सर जेहना तीन  
 जवन गुणगाय ॥ मा० ॥ ८ ॥ एवुं जाणीने जविप्रा  
 णी, माया मूको अलग्गी ॥ सम यसुंदर कहे सार ठे  
 जगमां, धर्म रंगशुं वलग्गी ॥ मा० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ शीलविपे सवाय ॥

॥ रखेकोइ रमणी रागमां, प्राणी मुंजाउं ॥ अ  
 थिर ए वाला उपरे, थिरशाने थाउं ॥ १ ॥ एतो  
 अनरथनुं आश्रम ठे; कलेशनो ठे कंदो ॥ वैरोदधी  
 पूर वधारवा, आवो पूनमचंदो ॥ २० ॥ २ ॥ कुलटा  
 नारीने कारणें, केइ कुलवंता ॥ आचरण हीणा आ  
 चरे, वहालाशुं वेढंता ॥ २० ॥ ३ ॥ दुखनी दरी  
 ए सुंदरी, दुरगतीनी दाता ॥ आगमथी द्यो उल  
 खी, गुण एहना झाता ॥ २० ॥ ४ ॥ खांन मीठी  
 करी लेखवे, मलतां मूढप्राणी ॥ उदेवदे कह्यें पठे,  
 जिनमतीयें जाणी ॥ २० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मुनि दान विजयजी कृत कर्म उपर सज्जाय ॥

॥ कपूर होये अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥  
 सुख दुःख सरज्या पामीयें रे, आपठ संप्रद होय ॥

लीला देखी परतणी रे, रोप म धरजो कोय रे, ॥  
 प्राणी मन नाणो विष वाद ॥ एतो कर्मतणा पर  
 साद रे ॥ प्रा० म० ॥ १ ॥ फलने आहारे जीवीआ  
 रे, वारवसर वन राम ॥ सीता रावण लइ गयो रे. कर्म  
 तणां ए काम रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ नीर पाखें वन एकलो रे  
 मरणपाम्यो मुकुंद ॥ नीच तणे घर जल बह्यो रे, शीसधरी  
 हरिचंद रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ नले दमयंति परिहरी रे, रात्रि सम  
 य वन वाल ॥ नाम ठाम कुल गोपवी रे, नले निर  
 बाह्यो काल रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ रूप आधिक जग जा  
 णियें रे, चक्री सनत कुमार ॥ वरस सातशें जोग,  
 वी रे, वेदना सात प्रकार रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ रुपें  
 वली सुर सारिखा रे, पांडव पांच विचार ॥ ते वन  
 वासैं रमवड्या रे, पाम्या दुःख संसार रे ॥ प्रा० ॥  
 ॥ ६ ॥ सुरनर जस सेवा करे रे, त्रीजुवनपति वि  
 ख्यात ॥ ते पण कर्मविटंवीया रे, तो माणस केइ  
 मात रे, ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ दोष न दीजें केहने रे, क  
 र्मविटवण हार ॥ दान मुनि कहे जीवने रे, धर्म  
 सदा सुखकार रे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ इति कर्मनी स्वाध्याय ॥

॥ अथ सुमति विलाप सद्याय प्रारंभ ॥

॥ परजो कुमतिगढना कांगरा, मरजो मोहमहे  
 राण ॥ बाधो महरो निजघरें नावीयो, एणे परघर  
 कीधां प्रयाण ॥ बा० ॥ इम कहे सुमती सुजाण ॥

वा० ॥ १ ॥ दांतपाडुरे डुती तणा, पामोसणना लोउं  
 प्राण ॥ जेणें महारो जीवन जौलव्यो ॥ लइ ना  
 ख्यो नरकनी खाण ॥ वा० ॥ २ ॥ माययें मद पाइ  
 रे, वास्यो पोताने वास ॥ माहारोने वासो एणें टा  
 लीयो, इणे मुज कीधी निरास ॥ वा० ॥ ३ ॥ गुण  
 वंतना गुण गोपवी, निगुणाशुं मांडे गोठ ॥ आप  
 स्वरूप न ओलखे, एतो पापनी चलवे पोठ ॥ वा० ॥  
 ४ ॥ अपूज्य साथें धरे आसकी, एतो पूज्यना  
 पूजे पाय ॥ परम महोदय पामशे ज्यारें आवशे  
 आपणे ठाय ॥ वा० ॥ ५ ॥ श्रीदादापास पसाउलें,  
 मेंतो कुमतीनो पाम्यो कोट ॥ धरें आण्यो निज  
 घरधणी, मेंतो शोकनी चूकवी चोट ॥ वा० ॥ ६ ॥  
 उदयरतन वाचकवदे, पूजशे जे प्रजुना पाय ॥ ते  
 परमपदें पधारशे, वली संपद लेशे सवाय ॥ वा० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री शान्तिनाथनो दशमो जव मेघरथ

राजानी सहाय प्रारंभः ॥

॥ दशमें जवें श्रीशान्तिजी, मेघरथ जीवडा राय  
 रुक्मारजा ॥ पोसद्द शालामां एकला, पोसद्द लीयो  
 मन जाय ॥ रुक्मा राजा ॥ धन्य धन्य मेघरथ राय  
 जी, जीवदया गुण खाण ॥ धर्मी राजा ॥ धन्य ॥  
 १ ॥ ए आंकणी ॥ इशानाधिप इंद्रजी, वखाण्यो  
 मेघरथ राय ॥ रुक्मा राजा ॥ धर्मे चलाव्यो नवि' च  
 ले, महासुर देवता आय ॥ रुक्मा राजा ॥ धन्य ॥ १॥

पारेवुंसींचाणा मुखें अवतरी, पमीयुं पारेवुं खोला  
मांय ॥ रुमा राजा ॥ राख राख मुज राजवी, मुज  
ने सींचाणो खाय ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ ३ ॥  
सींचाणो कहे सुणो राजीया, ए ठे महारो आहार  
॥ रुडा राजा ॥ मेघरथ कहे सुण पखीया, हिंसाथी  
नरक अवतार ॥ रुमा पंखी ॥ धन्य० ॥ ४ ॥ शरणे  
आव्युं रे पारेवडुं, नहीं आपुं निरधार ॥ रुमा पंखी  
॥ माटी मगावी तुजने देजं, तेहनुं तुं कर आहार  
॥ रुडा पंखी ॥ धन्य० ॥ ५ ॥ माटी खपे मुज एह  
नी, कां वली ताहरी देह ॥ रुडा राजा ॥ जीवदया  
मेघरथ वसी, सत्य न मेले धर्मी तेह ॥ रुडा राजा  
॥ धन्य० ॥ ६ ॥ काती लेइ पिंरु कापीनें, ले मांस  
तुं सींचाण ॥ रुमा पंखी ॥ त्राजुए तोलावी मुजने  
दीजं, ए पारेवा प्रमाण ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ ७ ॥  
त्राजुठ मगावी मेघरथ रायजी, कापी कापी मुकेठे मंस  
रुमा राजा ॥ देवमाया धारण समी, नावे एकण  
अंश ॥ रुडा राजा ॥ धन० ॥ ८ ॥ जाइ सुत राणी  
वलवले, हाथ जाळी कहे तेह ॥ घेला राजा ॥ एक  
पारेवाने कारणे, शुं कापोठो देह ॥ घेला राजा ॥  
धन्य० ॥ ९ ॥ महाजन लोक वारे सहु, म करो  
एवडी वात ॥ रुमा राजा मेघरथ कहे धर्म फल  
जलां, जीवदया मुजधात ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥  
॥ १० ॥ त्राजुयें वेग राजवी, जे जावे ते खाय ॥



रुमा पंखी ॥ जीवघ्नी पारेवो अधिको गण्यो, धन्य  
 पिता तुज माय ॥ रुमा राजा धन्य० ॥ ११ ॥ चढ  
 ते परिणामे राजवी, सुर प्रगट्यो तिहां आय ॥  
 रुमा राजा ॥ खमावे बहुविधें करी, लढी लढी  
 लागे ठे पाय ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ १२ ॥  
 इंडे प्रशंसा ताहारी करी, तेहवो तुं ठो राय ॥ रु  
 डा राजा ॥ मेघरढ काया साजी करी, सुर पोहोतो  
 निज ठाय ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ १३ ॥ संयम  
 दीयो मेघरथ रायजी, लाख पूरवतुं आय ॥ रुमा  
 राजा ॥ वीशस्थानक विधें सेवियां, तीर्थकर गोत्र  
 बंधाय ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ १४ ॥ इग्यारमे ज  
 वें श्रीशांतिजी, पोहोता सर्वार्थसिद्ध ॥ रुमा राजा ॥  
 तेत्रीस सागर आलखुं, सुख विलसे सुर रिद्ध ॥  
 रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ १५ ॥ एक पारेवा दयाथकी,  
 वे पदवी पाम्या नरिंद ॥ रुडा राजा ॥ पांचमा च  
 क्रवर्त्ति जाणियें, शोलमा शांतिजिणंद ॥ रुमा राजा  
 ॥ धन्य० ॥ १५ ॥ वारमे जवें श्रीशांतिजी, अचिरा  
 कूखें अवतार ॥ रुडा राजा ॥ दीक्षावेइने केवल व  
 स्था, पहोता मुगति मोजार ॥ रुडा राजा ॥ १७ ॥  
 त्रीजेजवें शिवसुख लह्यो, पाम्या अनंतु ज्ञान ॥ रु  
 मा राजा ॥ तीर्थकरपदवी लही, लाखवर्ष आयु  
 जाण ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ १८ ॥ दयाथकी नव  
 निधि होवे, दया ये सुखनी खाण ॥ रुडा राजा ॥

जव अनंतनी ए सगी, दया ते माता जाण ॥ रुमा  
 राजा ॥ धन्य० ॥ १९ ॥ गजचर्वें शशलो राखियो,  
 मेघकुमार गुंण जाण रुडां राजा ॥ श्रेणिकराय सुत  
 सुख लह्यां, पोहोता अनुत्तर विमान ॥ रुमा राजा  
 ॥ धन्य० ॥ २० ॥ एम जाणी दया पालजो, मनमांहे  
 करुणा आण ॥ रुमा राजा समयसुंदर एम वीनवे,  
 दयाशी सुख निरवाण ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ २१ ॥  
 ॥ अथ श्री लब्धिविजयजी कृत पंदर तिथिनी पंदर  
 ॥ सद्याय प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ श्रीमद्गोडी जगधणी, दायक शिवग  
 ति जेह ॥ अक्षय विघन दूरें हरे, टाळे डुरित अ  
 ठेह ॥ १ ॥ सुधादृष्टि होवे सदा, एहवी जेहनी दृ  
 ष्टि ॥ उरग तजी सुरपति कस्यो, गिरुड गुणें गरिष्ट  
 ॥ २ ॥ जावियपद पंकज सदा, हुं नित्य प्रणमुं तास  
 ॥ सकल मनोरथ पूरवे, ते वीशमो जिनपाश ॥ ३ ॥  
 जावे प्रणमू जारती पूरे पूरण आश ॥ मूरखनें पंनि  
 त करे, आपे वचन विलास ॥ ४ ॥ ( पांठांतरें )  
 मूरखने पंनि त करे, जेवी तुज आख्यत ॥ वचन  
 सुधारस पोपवा, वर दे शारद मातु ॥ ४ ॥ शक्ति  
 नहिं सिद्धांतनी, बुद्धि नही खलेश ॥ वचन विला  
 स करी कहूं, ते पण नहिं सुविशेष ॥ ५ ॥ पण मु  
 ज एक आधार ठे, सगुरु तणो पसाय ॥ तस अनु  
 जावें उपजे, वचन सदा सुखदाय ॥ ६ ॥ आगमना

अनुसारथी, आणी मन पवित्र ॥ पंदर तिथि  
सात वारनां, पञ्चणुं तेह चरित्र ॥ ७ ॥ जिम मृग  
नाद दीनो थको, निसुणे थइ एक रंग ॥ तिम सु  
एजो नवियण तुमें, आणी चित्त अजंग ॥ ८ ॥

॥ अथ प्रतिपदानी सत्ताय प्रारंभः ॥

॥ कपूर होवे अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥  
पहेली तिथि एणीपरें वदे रे, सांजलो प्राणी  
सार ॥ एक धर्म जग आदरो रे, जाणी अथिर सं  
सार रे प्राणी ॥ धरजो धर्मशुं राग, जिम पामो  
नवतागो रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥  
दश दृष्टातें दोहिलो रे, मानवजव अवतार ॥ पामी  
धर्मने सद्दहो रे, पामो जिम जयकारो रे ॥ प्रा० ॥  
॥ ध० ॥ २ ॥ धर्म वनो संसारमां रे, ज्ञांखे श्रीकी  
रतार ॥ सुरमणिसम ए धर्म ठे रे, अरुवनियां आ  
धारो रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥ ३ ॥ धर्मथकी संपद मले  
रे, धर्मथकी नवनिधि धर्मथकी संकट टले रे, धर्म  
थकी रुद्धि वृद्धि रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥ ४ ॥ जुठ धर्म  
प्रजावथी रे, चक्री जरत नरेंद्र ॥ अजरामर पद  
शाश्वतां रे, पाम्यो परमाणंदो रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥  
॥ ५ ॥ जे नर जिनधर्म पामीने रे, करशे प्रमाद  
लगार ॥ तो पडवे कहे जीवमो रे, परुशे नरक म  
कारो रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥ ६ ॥ एम जाणी नवि जा

वशुं रे, कीजे अनुत्तर धर्म ॥ विजय लब्धि सदा  
लहो रे, ठंकी मिथ्या जरमो रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥

॥ अथ द्वितीयानीसजजाय प्रारंभः ॥

॥ कोइलो वर्वत धुंधलो रे लो ॥ ए देशी ॥  
धीज कहे जव्य जीवने रे लो, निसुणो आणी  
रीऊ रे ॥ सुगुणनर ॥ सुकृतकरणी खेतमें रे  
लो, वावो समकित धीज रे ॥ सु० ॥ धरजो धर्मशुं  
प्रीतमी रे लो, करि निश्चय व्यवहार रे ॥ सु० ॥  
इह जवें परजवे जवोजवें रे लो, होवे जयुं जग ज  
यकार रे ॥ सु० ॥ धर० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ कि  
रिया ते खातर नाखियें रे लो, समता दिजें खेरु  
रे ॥ सु० ॥ उपशम नीरे सींचीयें रे लो, उगें जयुं  
समकित ठोरु रे ॥ सु० ॥ घ० ॥ २ ॥ वारु करो सं  
तोषनी रे लो, तस पांखनी चिहु ठोर रे ॥ सु० ॥  
व्रत पञ्चरूपाण चोकी ठवो रे लो, वारे युं कर्मना  
चोर रे ॥ सु० ॥ ध० ॥ ३ ॥ अनुजव केरे फूलडे रे  
लो, महोरे समकित वृद्ध रे ॥ सु० ॥ श्रुतिचरित्र  
फल उतरे रे लो, ते फल चाखो शिद्धरे ॥ सु० ॥  
ध० ॥ ४ ॥ ज्ञानामृत रस पीजीयें रे लो, खाद ल्यो  
साम्य तांवूळ रे ॥ सु० ॥ इण रसें संतोष पामशो  
रे लो, लेहशो जवनिधि फूल रे ॥ सु० ॥ ध० ॥ ५ ॥  
इण विध बीज तमे सदहो रे लो, ठांडी राग ने  
छेप रे ॥ सु० ॥ केवल कमला पामीयें रे लो, वरि

यें मुक्तिविवेक रे ॥ सु० ॥ ध० ॥ ६ ॥ समकित ची  
ज ते सद्दे रे लो, ते टाले नरक निगोद रे ॥ सु० ॥  
विजय लब्धि सदा लहे रे लो, नित नित विविध  
विनोद रे ॥ सु० ध० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीयानी सद्याय प्रारंभः ॥

॥ इडर आंवा आंवली रे ॥ ए देशी ॥  
त्रीज कहे मुजल्लखी रे, आदरो देवगुरु धर्म ॥  
जनम जरा मृत्यु तुटस्यो रे, टालो जवजय कर्म ॥  
जविकजन, धरजो धर्मशुं राग ॥ जिम पामो ज  
वनिधि ताग ॥ ज० ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥  
मोहिनी त्रणे परिहरो रे, राखो मन निःशब्द ॥ गां  
रव त्रणे मत करो रे, ठको त्रणये शब्द ॥ ज० ॥  
ध० ॥ २ ॥ मानव जवमां मोटकां रें, कहियां तीने  
रत्न ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र अठे रे, तेहनुं करियें य  
त्न ॥ ज० ॥ ध० ॥ ३ ॥ ए त्रणये रत्नयोगथी रे, पा  
मियें त्रीजुवन राज ॥ श्रीजगवंत शकारशे रे, सर  
शे वंठित काज ॥ ज० ॥ ध० ॥ ४ ॥ त्रिवर्गनां सुख  
मेलवो रे, आणी त्रणये योग ॥ मन वचन काया  
योगथी रे, टालो कर्मना रोग ॥ ज० ॥ ध० ॥ ५ ॥  
त्रण गुप्ति सूधी धरे रे, जे नर त्रीज आराधि ॥ वि  
जयलब्धि ते पामशे रे, दिन दिन सुख समाधि ॥

॥ अथ चतुर्थीनी सद्याय प्रारंभः ॥

॥ कपूर हवे अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥

चोथ कहे जवि सांजलो रे, माहुरा गुण अ  
जिराम ॥ माहुरी शीखें चालशो रे, तो लेशो मु  
क्तिनु ठाम रे ॥ प्राणी, जिनवाणी धरो चित्त ॥ ए  
तो आणी मन शुज रीत रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ए  
आंकणी ॥ १ ॥ विकथा चारे परिहरो रे, परिहरो  
चार कषाय ॥ द्रमा रुपी धन संचियें रे जवोजव  
पातक जाय रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ २ ॥ त्रिगडे वेसी  
जिनवरें रे, जांख्यो चउविह धर्म ॥ दान शियल  
तप जावना रे, ए चारे सुखनां हर्म्य रे ॥ प्रा० ॥  
जि० ॥ ३ ॥ दानें ते दोलत पामीयें रे, शीलें जस  
सौजाग्य ॥ तप करी कर्म विनाशियें रे, जावें जाव  
ठ जाग रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ४ ॥ जवनिधि पार उ  
तारवा रे, ए चारे नाव समान ॥ सकल पदारथ  
आपवा रे, ॥ ए चारे प्रगट निधान रे ॥ प्रा० ॥  
जि० ॥ ५ ॥ इम जाणी पुण्य कीजीयें रे, सांजली  
सदगुरु वाणी ॥ चिहुं गतिनां दुःख टालीयें रे, हो  
वे कोनी कल्याण रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ६ ॥ चोथ  
तणा गुण जाणिने रे, जे धरे चउ धर्मद्वार ॥ विज  
य लब्धि सदा लहे रे, साधि पदारथ चार रे ॥

॥ अथ पंचमीनी सद्याय प्रारब्धते ॥

॥ जय जगनायक जगगुरु रे ॥ ए देशी ॥  
पुनरपि पांचम एम वदे रे, सांजलो प्राणी सु  
जाण ॥ श्रीजिन अनुमते चालीयें रे, जिम ल

हियें सुखनी खाण ॥ १ ॥ जविक जन, धरजो धर्म  
 शुं प्रिति ॥ ए तो आणी मन शुज रीत ॥ ज० ॥  
 ध० ॥ ए आंकणी ॥ आश्रव पंच दूरें करी रे, कीजें  
 संवर पंच, सुमिति सखी शुज पालीनें रे, तुमें मेलो शिव  
 वधूसंच ॥ ज० ॥ ध० ॥ २ ॥ पंच महाव्रत अनुस  
 री रे, पालों पंच आचार ॥ त्रिकरण शुद्धियें ध्याव  
 जो, रे पंचपरमेष्ठी नवकार ॥ ज० ॥ ध० ॥ ३ ॥ सम  
 कित पंच आजुवालजो रे, धरजों चारित्र पंच ॥ पं  
 च जूषणें पडिवजी रे, टालो दुषण पंच ॥  
 ज० ॥ ध० ॥ ४ ॥ मत करो पंच प्रमादनें रे, मत  
 करो पंच अंतराय ॥ पंचमी तप शुज आदरो रे, जि  
 म दिन दिन दोलत थाय ॥ ज० ॥ ध० ॥ ५ ॥ पं  
 चमी तप महिमा घणो रे, कहेतां नावे पार ॥ वर  
 दत्तनें गुणमंजरी रे, जुड पाम्या जवनो पार ॥ ज० ॥  
 ध० ॥ ६ ॥ पांचमी एम आराधीयें रे, लहियें पंच  
 म नाण ॥ चउद रज्जावात्मक लोकना रे, एतो मनप  
 ज्जाव शुज जाण ॥ ज० ॥ ध० ॥ ७ ॥ घनधाति क  
 र्म खपावतां रे, वाजे हो मंगल शब्द ॥ पंचमी ग  
 ति अविचल लहे रे, तिहां सुख अनंत सुलब्ध ॥  
 ज० ॥ ध० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ पष्ठीनी सखाय प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ इण विध पांचे तिथि जलि बोली  
 शुज परिणाम ॥ एक एकथी चढते गुणें, मनोहर

ठे अजिराम ॥ १ ॥ ठठी तणा गुण वर्णवुं, मूकी  
मन अजिमान ॥ हवे जवियण जावें करी, निसुणो  
थइ सावधान ॥ २ ॥ ढाल ॥ जुवखमानी दे  
शी ॥ ठठी कहे मुज उलखी रे, ठटको पापथी दूर  
सनेहा सांचलो ठकाय रक्षा कीजीयें रे, होवे ज  
युं सुखसनूर ॥ स० ॥ १ ॥ चार कपाय राग छेपने  
रे, नाखजो दूर विचारि ॥ स० ॥ ठए डव्यने उल  
खी रे, पाखो निरतिचार ॥ स० ॥ २ ॥ समकित  
शुरू जगावियें रे, जांगियें दुःखनी वेनि ॥ स० ॥  
मग्न रहो जिनधर्ममे रे, नाखो कुगति उखेनि ॥  
॥ स० ॥ ३ ॥ ठठ आराधो जावशुं रे जवियण थइ  
उजमाल ॥ स० ॥ जकित मुकित सदा लहो रे,  
होवे युं मंगल माल ॥ स० ॥ ४ ॥ लब्धि कहे सा  
जन तुमें रे, म करो प्रमाद लगार ॥ स० ॥ दिन  
दिन संपदा अजिनवी रेहोवे श्री श्रीकार ॥ स० ॥ ५ ॥

॥ अथ सप्तमीनी सहाय प्रारंजः ॥

॥ बुद्धारणे जायो दीकरो सो नारी हे ॥ ए  
देशी ॥ सातम कहे सात आतमा ॥ सुखकारी  
हे ॥ प्राणी राखीये सोय ॥ सदा सुखकारी हे ॥  
सुख आवे गर्व न कीजीयें ॥ सु० ॥ दुःख  
आवे दीन न होय ॥ स० ॥ १ ॥ सात जय निवा  
रियें ॥ सु० ॥ ठकियें मिथ्या शंस ॥ स० ॥ सात  
अमीरस कुंरमां ॥ सु० ॥ जलीयें थइनें हंस ॥



॥ स० ॥ २ ॥ सातम दिन साखे तमें ॥ सु० ॥ वा  
 वीयें डव्य विशेष ॥ स० ॥ सुकृतकर्पण उगीनें ॥  
 ॥ सु० ॥ उपजे धान्य विवेक ॥ स० ॥ ३ ॥ वारु  
 करो तुमें शीलनी ॥ सु० ॥ तस पांखनी चिहुं छोर  
 ॥ स० ॥ चोकी ठवो सही धर्मनी ॥ सु० ॥ अध  
 को न करे जोर ॥ स० ॥ ४ ॥ मनरूपी माल वनावियें  
 ॥ सु० ॥ वेसी यें तिहां सावधान ॥ स० ॥ विरतिरूपी गोफ  
 णे करी ॥ सु० ॥ नाखियें गोला शान ॥ स० ॥ ५ ॥  
 दुष्कृत पंखी उमाडीयें ॥ सु० ॥ करी निश्चयव्यव  
 हारे ॥ स० ॥ पोंक आरोगियें पुण्यना ॥ सु० ॥ जवियण  
 थइ हुशियार ॥ स० ॥ ६ ॥ सात नय जाणी तुमें  
 ॥ सु० ॥ तडूपी खलां बनाव ॥ स० ॥ करुणारस  
 जल आणीने ॥ सु० ॥ सात नय खलां पिवराव ॥  
 ॥ स० ॥ ७ ॥ जीवदया सकटे जरि ॥ सु० ॥ सुकृत  
 कर्पण सार ॥ स० ॥ संवर बलदनें जोतरि ॥ सु० ॥  
 आणियें खला मजार ॥ स० ॥ ८ ॥ ध्यानरूपी थंज  
 रोपीने ॥ सु० ॥ लणियें क्षपक संयोग ॥ स० ॥ जि  
 नआण सही जावीयें ॥ सु० ॥ हालरुआं अशोक  
 ॥ स० ॥ ९ ॥ दुःखरूपी बूरां झाटकी ॥ सु० ॥ ना  
 खियें दूर सुजाण ॥ स० ॥ आतमवल जंमारमें ॥  
 ॥ सु० ॥ जरजो सुकृत ध्यान ॥ १० ॥ स० ॥ इह जव  
 परजव जवो जवें ॥ सु० ॥ पामियें सुख विचित्र ॥ स० ॥  
 संतोष राखी आतमा ॥ सु० ॥ कीजें पुण्य पवित्र ॥

॥ स० ॥ ११ ॥ लब्धि कहे जविष्ण विधे ॥ सु० ॥  
आदरे प्राणी जेह ॥ स० ॥ सात रज्ज्वातम जेदीनें  
॥ सु० ॥ सवि सुख लेहेशे तेह ॥ स० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमीनी सद्याय प्रारंभः ॥

॥ हरिया मन लागो ॥ ए देशी ॥ आठम कहे  
आठ मदनो, प्राणी मूको ते ठाम रे जवियण हित  
धरी ॥ आठ प्रकारे आत्मा, उलखो तुमें अजिरा  
म रे ॥ ज० ॥ १ ॥ पडिक्कमणां पोपा करी, तोमो  
दुःखना वर्ग रे ॥ ज० ॥ सुमिति गुप्ति सूधां धरी,  
मेलो सुख अपवर्ग रे ॥ ज० ॥ २ ॥ अष्ट महागुण  
सिद्धना, ध्यावो ते निश दीस रे ॥ ज० ॥ अष्ट म  
हासिद्ध संपजे, पहोचे मनह जगीश रे ॥ ज० ॥  
॥ ३ ॥ जिनदेवनी करो हाजरी, दिल पाक करी  
मन कोड रे ॥ ज० ॥ मनरूपी घोडो वनावियें, गुरु  
ज्ञान लगाम जोरु रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ शीलनी पाखर  
नाखीयें, तपरूपी खरुग लेऽ हाथ रे ॥ ज० ॥ कृमा  
वक्तर पेहेरीनें, ध्यान कवाण सलोथ रे ॥ ज० ॥  
॥ ५ ॥ विरति तीर चलाविनें, अष्ट करम मद मो  
डि रे ॥ ज० ॥ विषय कवाय जे आकरा, तेहनां ते  
मस्तक तोरि रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ श्रीजिन आगल आ  
वीनें, मजरो करो कर जोडि रे ॥ ज० ॥ श्रीजिन  
केरा पसायथी, मोक्ष शहेरें जालु दोमी रे ॥ ज० ॥  
॥ ७ ॥ आठम दिन शुभ जाणिनें, धर्मेनां करियें

वखाण रे ॥ ज० ॥ कपटनो कोट उमाभियें, वाजे  
 युं जीत निशान रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ इणि परें अष्टमी जा  
 वशुं, आदरे प्राणी जेह रे ॥ ज० ॥ लब्धि कहे ज  
 वि तस घरे, प्रगटी पुण्यनी रेह रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ इति

॥ अथ नवमीनी सव्वाय प्रारंज ॥

॥ वन्यो रे विद्याजीनो कलपनो ॥ ए देशी ॥  
 जीरे नवमी कहे नमीयें सदा, एतो श्रीजनकेरां  
 विंव हो विशेष ॥ नव अंगें पूजा वनावीयें, ए तो  
 मूकी मननो दंज हो ॥ विशेष ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥  
 जवियण शुज्जनावें करी ॥ ठंनो विषयकपाय अतीव  
 हो ॥ वि० ॥ स्नात्र महोत्सव कीजीयें, एतो दीजें  
 दान सदीव हो ॥ वि० ॥ ज० ॥ २ ॥ जीरे पूजा ज  
 क्ति प्रजावना, करि रोपे जे कीर्ति थंज हो ॥ वि०  
 ॥ सुख अनंतां ते वरे, तस जस जणिसुर रंग हो ॥  
 ॥ वि० ॥ ज० ॥ ३ ॥ जिरे जिन आगें स्तवना जा  
 वशुं, एतो जे करे नाटारंज हो ॥ वि० ॥ लाज अ  
 नंतो जिन जणे, जुळ महिमा जाव अचंज हो ॥  
 ॥ वि० ॥ ज० ॥ ४ ॥ जिरे जिन स्तवना गुण गाव  
 तां, एतो समकित होये उद्योत हो ॥ लंकापति रा  
 वण परें, एतो वांधि तीर्थकर गोत हो ॥ वि० ॥  
 ॥ ज० ॥ ५ ॥ जिरे अरिहंत जक्ति प्रजावथी, ए  
 तो जाये जवनां पाप हो ॥ वि० ॥ जिरे नव निधा  
 न सुख संपजे, वली होवे युं अधिक प्रताप हो ॥

॥ वि० ॥ ज० ॥ ६ ॥ जिरे नवपद ध्यान सदा धरी,  
 ए तो पात्नीयें नव विध शील हो ॥ वि० नव नोकपायने परहरी,  
 एतो लहीयें सुखनी लील हो ॥ वि० ॥ ज० ॥ ७ ॥ जिरे नवेतत्त्वने ओलखी,  
 ए तो पामी मनुष्य अवतार हो ॥ वि० ॥ शत्रुमित्र स रिखा गणो,  
 एतो सकल जंतु निर्धार हो ॥ वि० ॥ ज० ॥ ८ ॥ जिरे उपकार ते कीजीयें,  
 ए तो टाकीयें प रनी पीरु हो ॥ वि० ॥ नवमीयें नवपुण्य अनुसरी,  
 ए तो जांगीयें जवनी जीरु हो ॥ वि० ॥ ज० ॥ ए॥ जिरे इणविध नवमी प्रमोदशुं,  
 एतो आदरे प्राणी जेह हो ॥ वि० ॥ लब्धिविजय रंगें करी,  
 एतो शि वसुख लेहशे तेह हो ॥ वि० ॥ ज० ॥ १० ॥ इति॥

॥ अथ दशमीनी सद्याय प्रारंभः ॥

॥ राम जणे हरि उठीयें ॥ ए देशी ॥ दशमीयें डुपमन वारियें काम क्रोध मद जोर रे ॥ दशविध यति धर्म आचरी,  
 कापीयें दुःख तणी दोर रे, लाल सुरंगारे अत्तमा बहिये धर्मनी होररे प्रगटे पुण्यनो तोर रे,  
 लहियें मुकितनुं ठोर रे, वाधे जस चिहुं उर रे ॥ ला० ॥ १ ॥ दशविध विनय अज्यासथी,  
 तोळीयें मोहजजाल रे ॥ दशविध मिथ्या त्व परहरी, ठंकीयें आल पपाल रे ॥ ला० ॥ मेली यें सुकृतमाल रे,  
 प्रगटे जाग्य विशाल रे, होवे मंगलमाल रे, लहियें सुख ततकाल रे ॥ ला० ॥ २ ॥

त्रस थावर सर्व जीवने, संज्ञा कही तस रंग रे ॥  
 संज्ञा प्रत्ये उलखी, कीजें गुरुनो प्रसंग रे ॥ ला० ॥  
 संज्ञा धर्म न चंग रे, राखीयें चित्त अजंग रे, सुख  
 तटिनी वहे अंग रे, उलटे ज्युं गंगरंग रे ॥ ला० ॥  
 ॥ ३ ॥ दशविध प्राण त्रस जीवनें, चाखे जिनवर  
 वीर रे ॥ ते दश प्राण तुं पामीनें, धरियें, मन दया  
 धीर रे ॥ ला० ॥ दशविध सुख शरीर रे. हरियें द  
 श विध पीर रे, तोडीयें दुःखजंजीर रे, पामीयें न  
 बोदधि तीर रे ॥ ला० ॥ ४ ॥ दश पञ्चस्काण सिद्धांत  
 मे, पाळ्यां ठे सहि बोल रे ॥ तेहमां नित्य एक जा  
 वशुं, करे पञ्चस्काण अमोल रे ॥ ला० ॥ जाण ला  
 न अतोल रे, मुकितशुं करि बंध कोल रे, लब्धि  
 जणे दिल खोल रे, वाजे जीतना ढोल रे ॥ ला० ॥ ५ ॥

॥ अथ एकादशीनी सद्याय ॥

॥ दोहा: एम दशतिथि अधिकार अथ, किंचित्  
 कह्यो चरित्र ॥ शास्त्र तणा अनुसारथी, वर्णन करी  
 विचित्र ॥ १ ॥ हवे एकादशितिथि तणा, कहे सूरि  
 जन माहाराज ॥ त्रिकरण करीनें आतमा, निसुणी  
 यइ मृगरज ॥ २ ॥ ढाल ॥ नथरो नगीनो माहरो ॥  
 ए देशी ॥ हवे एकादशी इज वदे, जवि, जन ठंडी  
 यें विपयासत्त हो ॥ वसन उढो निर्विकारनां ॥  
 ॥ ज० ॥ जेहनी ठे सवल प्रतीत हो ॥ १ ॥ गुणना  
 रागी नवी, अवगुण त्यागी सही होइ ऐ ॥ ज० ॥

पामी अनुभव संतहो ॥ एआंकणी ॥ ध्यान तणी अं  
गीठिका ॥ ज० ॥ जोजन तिम संतोष हो ॥ आस  
व समता पीवतां ॥ ज० ॥ करजो काया पोष  
हो ॥ गुण० ॥ अ० ॥ २ ॥ मायानिशादूरें कीजीयें  
॥ ज० ॥ शुद्ध स्वजावें क्षीण हो ॥ तैलाज्यंग  
तिम उदासीनता ॥ ज० ॥ श्रुत तंबोल प्रवीण हो  
॥ गु० ॥ अ० ॥ ३ ॥ उचा महेल विवेकना ॥ ज० ॥  
वास करो तेह मांहे हो ॥ अग्यार बोल ते धारियें  
॥ ज० ॥ रसपोषण ठे जेह हो ॥ गु० ॥ अ० ॥ ४ ॥  
अग्यार अंगरस सांजली ॥ ज० ॥ प्रतिमा बहो अ  
ग्यार हो ॥ कर्म कठिन दूरें करी ॥ ज० ॥ लहियें  
यु मुक्ति डुवार हो ॥ गु० ॥ अ० ॥ ५ ॥ एकाद  
शी तप कीजियें ॥ ज० ॥ एम एकादश वर्ष हो ॥  
अग्यार अंग वाचक होवे ॥ ज० ॥ पामियें सुजस  
हर्ष हो ॥ गु० ॥ ६ ॥ इणविध जवियण आदरो ॥  
ज० ॥ जाणो एकादशी सार हो ॥ लब्धि कहे जवि  
सांजलो ॥ ज० ॥ होवे ज्युं जवनिस्तार हो ॥ गु० ॥ ७ ॥

॥ अथ द्वादशीनी सद्याय प्राज्ञरंः ॥

॥ रहो रहो बालहा ॥ ए देशी ॥ द्वादशी कहे  
जविजावशुं, कीजें धर्मनी गोठ लाल रे ॥ विण दा  
में रस लीजीये, जिम साकरनी जरी पोठ ॥ लाल रे  
॥ १ ॥ जावे जवियण सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ वा  
रसें वार उपांगना. निसुणो जे कह्या बोल लाल रे

॥ स्वाद ल्यो अमृत तेहना, टालीजरुतानिटोल  
 लाल रे ॥ जा० ॥ २ ॥ वारे व्रत जवि उच्चरी, मेली  
 यें सुकृत माल लाल रे ॥ कर्म मलीन दूरें करी, श्रावक  
 कुल अजुवाल लाल रे ॥ जा० ॥ वारे जेदें तप जे  
 अठे, आदरो ठंडी क्रोध लाल रे ॥ वारे जावना  
 जावियें ममता वारियें विरोध लाल रे ॥ जा० ॥ ४ ॥  
 कुरस वचन कहेतां थकां, दिवस तणुं तप जाय  
 लाल रे ॥ अधिक खीजतां मासनुं, तप तणुं निष्फ  
 ल थाय लाल रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ शाप दिद्यंतां वर्पनुं,  
 तप जाये सुणो धीर लाल रे ॥ हणतां श्रमणपणुं  
 हणे, एणी परें बोले वीर लाल रे ॥ जा० ॥ ६ ॥  
 श्रीजिनवरें हो वर्णवी, जिस्कुप्रतिमा वार लाल रे  
 ॥ ते तुमें जवियण पडिवछी, पाद्वीयें शुरू आचार  
 लाल रे ॥ जा० ॥ ७ ॥ इणविध जे नर द्वादशी,  
 आदरे शुभ परिणाम लाल रे ॥ ते नर वंछित पाम  
 शे, शाश्वतां सुख अजिराम लाल रे ॥ जा० ॥ ८ ॥  
 द्वादशी जेह आराधशे, धरशे जिनशुं राग लाल रे  
 ॥ लब्धिविजय कहे ते नरा, पामशे जवनो त्याग  
 लाल रे ॥ जा० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ त्रयोदशीनी सद्याय प्ररंजः ॥

॥ रंगरो रे रसीया रे फुला गुलावरो ॥ ए दे  
 शी ॥ ते रस श्रोता आगले, जाखे मन आदहाद  
 हे ॥ श्रीजिनवाणी सांजावली, ते रस चाखो स्वाद

हे ॥ १ ॥ रसिया रे सूरिजन जावें हे सांजलो ॥  
 श्रीजिन विंव जरावियें, कीजें जिन प्रासाद हे ॥  
 ज्ञानजक्ति सवि साचवो, ते रस चाखो स्वाद हे  
 ॥ २० ॥ २ ॥ काठीया तेरे परहरी, कीजें नव पद  
 याद हे ॥ समकित वास सदा लही, ते रस  
 चाखो स्वाद हे ॥ २० ॥ ३ ॥ श्रीजिन अनुमति  
 चाखियें, तजीयें मिथ्यावाद हे ॥ अनुजवरूपी शेख  
 की, ते रस चाखो स्वाद हे ॥ २० ॥ ४ ॥ तेरमे गुण  
 ठाणे संचरी, शुक्तिध्यान प्रसाद हे ॥ केवलकमला  
 पामीने, ते रस चाखो स्वाद हे ॥ २० ॥ ५ ॥ ते  
 रसना गुण जाणीनें, जे नर तजशे प्रमाद हे ॥ ते  
 नरना गुण बोलशे, सुर नर अमृत वाद हे ॥ २० ॥  
 ६ ॥ शुजजावे सुकृतपणे, तेरशगुण आराधी हे ॥  
 लब्धि विजय कहे नेहशुं, लहियें सुख समाधि  
 हे ॥ २० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्दशीनी सद्याय प्रारंभः ॥

॥ प्यारी ते पीयुने विनवे हो राज ॥ ए देशी ॥  
 हवे चउदशतिथि इम वदे रे हां, एतो सांजलो चतुर  
 सुजाण ॥ जवियां जावशुं ॥ श्रुत सिद्धांतना बोलजे  
 रे हां, एतो ते करो वचन प्रमाण ॥ ज० ॥ १ ॥ व  
 रुना कुसुम तणी परें रे हां, एतो दोहिलो मनु  
 अवतार ॥ ज० ॥ आर्यदेश पण दोहिलो रे हां,  
 एतो दोहिलुं श्रावक कुल सार ॥ ज० ॥ २ ॥ श्रद्धा



ते पण दोहिलुं रे हां, एतो दोहिलो ज्ञानसंयोग  
 ॥ ज० ॥ दोहिली जिननी सेवना रे हां, एतो दो  
 हिलो मननो योग ॥ ज० ॥ ३ ॥ ए सविडुर्लज  
 पामवां रे हां, जिम रयणतणे दृष्टांत ॥ ज० ॥ ते  
 तुम पुण्यप्रज्ञावथी रे हां, एतो पाम्यो मनुजव संत  
 ॥ ज ॥ ४ ॥ पामी चउदश तप तणो रे हां, एतो  
 खप करो मननें प्रमोद ॥ ज० ॥ चौद नियम संज्ञा  
 रजो रे हां, एतो संक्षेपजो तिम चौद ॥ ज० ॥ ५ ॥  
 चौद पूरवना ज्ञावथी रे हां, एतो चौदमे चढे गुण  
 ठाण ॥ ज० ॥ अंतगरु केवली होवे रे हां, एतो  
 अक्षर पंच प्रमाण ॥ ज० ॥ ६ ॥ चौद जुवन ए  
 लोकनां रे हां, एतो देखी जाणे ज्ञाव ॥ ज० ॥ चौद  
 रज्ज्वात्मक जेदीने रे हां, एतो शिव सुख ते नित्य  
 पाव ॥ ज० ॥ ७ ॥ चौद लाख मनु योनिना रे हां, ए तो  
 वूटीयें दुःखथी जीव ॥ ज० ॥ इम जाणी चउदश  
 आदरो रे हां, एतो ढिल करि ज्ञाव अतीव ॥ ज० ॥  
 ॥ ८ ॥ चउदशना गुण सांजली रे हां, धरियें सुवि  
 हित बुध ॥ ज० ॥ लब्धिविजय रंगे करी रे हां,  
 एतो लहिये कृद्धि समृद्धि रे ॥ ज० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अक पूर्णिमानी सशाय प्रारंजः ॥

॥ सुमला संदेशो रे कहे माहरा पूज्यनें रे ॥ ए  
 देशी ॥ पूनम कहे चव्य जीवनें रे, सांजलो सद्गुरु  
 वाणी रे ॥ अथिर तन धन आउखुं रे, जलबुद

परें जाण रे ॥ जावें हे जवियण सांजलो ॥ ए आ  
 कणी ॥ १ ॥ असार संसारने पेखीनें रे, धर्मशुं ध  
 रो प्रतिबंध रे ॥ बांधव सयण ए जाणजो रे, स्वार्थ  
 जूत संबंध रे ॥ जाण ॥ २ ॥ सकल कुटुंबनें पोपवा  
 रे, जे नर करेय ठे पाप रे ॥ तेह तणां रे फल दो  
 हिलां रे, सद्देशे ते एकलो आप रे ॥ जाण ॥ ३ ॥  
 जिम मृग तृष्णानें कारणें रे, जमतो रणमां धाय रे  
 ॥ जमे पठे ए जीवमो रें, जव जव दुःखीयो थायरे  
 ॥ जाण ॥ ४ ॥ ए धन घरणी ए धामने रे, कांइ न  
 ले गयो साथ रे ॥ जिहां जइनें जीव उपनो रे, ति  
 हां सहि होये तेहनें हाथ रे ॥ जाण ॥ ५ ॥ इम  
 जाणीनें धर्म कीजीयेरे, टाली ते विषय विकार रे  
 ॥ दिन दिन दोलत अजिनवी रे, पामियें हर्ष अ  
 पार रे जाण ॥ ६ ॥ पूरण जीवितव्य पामीनें रे, आ  
 दरो पूरण धर्म रे ॥ पूरण शांत स्वभावशी रे, पूर  
 ण ठेदो ए कर्म रे ॥ जाण ॥ ७ ॥ पूरण जन्म जरा  
 थकी रे, पूरण वृटीयें दुःख रे ॥ पूरण लीला पा  
 मीयें रे, पूरण सुरनर सुख रे ॥ जाण ॥ ८ ॥ पूरण  
 पद्मर सिद्धना रे जाणियें पूरण जेद रे ॥ पूरण पंद  
 र योगना रे ते पण जावनिर्वेद रे ॥ जाण ॥ ९ ॥  
 पंदर जातिना जांख्यां रे, परमाधामी जोर रे ॥  
 ॥ ते पण दुःखथकी वृथीयें रे, टाली ते कर्म अघो  
 र रे ॥ जाण ॥ १० ॥ पंदर कर्म जूमि उलखी रे,

ठंनो कपाय ते शोल रे ॥ जत्रियण दिन' दिन पा  
 सीयें रे, संपदा पुण्यरंग रोल रे ॥ ज्ञा० ॥ ११ ॥  
 जिम शशी शोलकली सही रे, ज्ञांखे जिनवर वाच-  
 रे ॥ तिम ए धर्म कला सशी रे, पामीयें जगतमां साच  
 रे ॥ ज्ञा० ॥ १२ ॥ पूरणमासी ए जाणीने रे, जे स  
 सही करशे ए पुण्य रे ॥ विजयलब्धि ते पामशे  
 रे, दिन दिन निज सुखतन्न रे ॥ ज्ञा० ॥ १३ ॥  
 आठम चउदश पूर्णिमा रे, अंग उपांगें अधिकार  
 रे ॥ जिनवरें कहियो माहानिशीथमां रे, वीजप्रमु  
 खनो विचार रे ॥ ज्ञा ॥ १४ ॥ ते सवि जाणो व्यव  
 हारथी रे, धर्म उद्यम उपदेश रे ॥ निश्चयमागें अ  
 प्रमादी जे होवे रे, ते पाळे पंदर तिथि विशेष रे ॥  
 ॥ ज्ञा० ॥ १५ ॥ एम जाणीने जवि जावियें रे, द्रव्य  
 ने जावथी धर्म रे ॥ सघली तिथि आराधतां  
 रे, लब्धि कहे सदा सुख शर्म रे ज्ञा० ॥ १६ ॥

॥ अथ उपदेशी पद ॥

मैं हूं मुसाफर आया हो प्यारा, नहीं कोइ मे  
 रा ॥ नहीं० ॥ जनम हुवा तब अपना कहावे, न  
 ही रेहेणेका डेरा हो प्यारा ॥ नहीं० ॥ १ ॥ सजन  
 कुटुब सब अपना कहावे, ज्युं तीरथका मेला हो  
 प्यारा ॥ २ ॥ धन कंचन कलु स्थिर नहीं रेहेणां,  
 ज्युं बादलका घेरा हो प्यारा ॥ नहीं० ॥ ३ ॥ रुपचंद  
 कहे प्रेमकी वातां, ज्युं धानीका फेरा हो प्यारा ॥ ४ ॥

॥ अथ उपदेशी प्रजाती पद ॥

जाग जाग रयण गइ जोर जयो प्यारे ॥ पंचकुं  
प्रपंच कर, वश यारे ॥ जाग जाग रयण गइ जोर  
जयो प्यारे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ तृषनामे मीन  
मरे, जोगमें सतंगा ॥ श्रवणमें कुरंग मरे, नयनमें  
पतंगा ॥ जा० ॥ २ ॥ वासनामें त्रमर मरे नासा रस  
लेतां ॥ एक एक इंड्रीसंग, मरे जीव केता ॥ जा० ॥ ३ ॥  
पंचके पड्यो तुं फंद, कयुं कर वश आवे ॥ मार तुं  
मन इष्टा झूत, ज्युं निरंजन पावे ॥ जाग० ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रजाती रागमां पद ॥

में परदेशी दूरका, प्रजु दरसनकुं आया ॥ ला  
ख चोराशी देश फिरया, तेरा दरिसन पाया ॥ मे० ॥  
॥ १ ॥ सूक्ष्म वाढर निगोदमें, वनस्पति वसाया ॥  
अप तेज वायुकायमें काल अनंत गमाया ॥ में० ॥  
॥ २ ॥ स्वर्ग नर्क तिर्यचमे, केता जन्म गमाया ॥  
मनुष्य अनारजमें जम्या, तिहां नही दरिसन पा  
या ॥ मे० ॥ ३ ॥ तेरो मेरो दरिसन अव जयो, पुर  
न पुन्य पसाया ॥ रुपचंद कहे जाग्य खुले, निरंज  
न गुण गाया ॥ मे० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ मनहित शिद्धानुं पद ॥

॥ राग कल्याण ॥ रे मन लोकी तेरो कोण पति  
यारो ॥ रे मन० ॥ आठ गांठको सांठो मीठो, गांठ  
गांठ रस न्यारो ॥ रे मन० ॥ १ ॥ ठिनमे उरे पल

कमें दूजो, घमी घमी दिलसैं न्यारो ॥ रे मन० ॥  
॥ २ ॥ चंचल मन वरज्यो नही माने, प्रजुजवपार  
उतारो ॥ रे मन लोत्री. ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्यपद ॥

॥ राग बेलावल ॥ रे मन कयुं जिन नाम विसा  
रयो ॥ कयुं० ॥ रे मन० ॥ विषय विकार महामद  
धारयो, जनम जुआ ज्युं हारयो ॥ रे मन० ॥ १ ॥  
जीने तोकुं नरदेही दीनी, गर्जकी आंच उछारयो ॥  
प्रजुजीकु तैं शठ मूरख, एक घमी न संचार्यो ॥ रे  
मन० ॥ २ ॥ नही कटु दान शियल तप पूजा, न  
ही जीन नाम उचार्यो ॥ जैन धर्म चिंतामणी सरी  
खो, काच जाणकर काय्यो ॥ रे मन० ॥ ३ ॥ कर ले  
सुकृत दया उछरले, जो ज्व चाहत सुधार्यो ॥ हर  
खचंद वर्धमान जीनेसर अवसर मांहेन संचार्यो ॥  
रे मन० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राघ जंगलो काफी ॥ जगमें नही तेरा कोइ,  
नर देखहु निहचें जोइ ॥ जग० ॥ ए आंकणी ॥  
सुत मात तात अरु नारी, सहु स्वारथके हीतकारी  
बिन स्वारथ शत्रु सोइ ॥ जग० ॥ १ ॥ तुं फीरत  
महा मदमाता, विषयन संग मूरख राता ॥ निज  
संगकी सुध बुरु खोइ ॥ जग० ॥ २ ॥ घट ज्ञानक  
ला नवि जाकुं, पर निज मानत सून ताकुं ॥ आख

र पठतावा होइ ॥ जग० ॥ ३ ॥ नवि अनुपम नर  
जव हारो, निज शुरू स्वरूप निहारो ॥ अंतर मम  
ता मल धोइ ॥ जग० ॥ ४ ॥ प्रजु चिदानंदकी वा  
णी, धार तुं निश्चे जग प्राणी ॥ जिम सफल होत  
जव दोइ ॥ जग० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ जूठी जूठी जगतकी माया, जिन जाणी जेद  
तिन पाया ॥ जू० ॥ ए आंकणी ॥ तन धन जोवन  
सुख जेता, सज जाणहुं अस्थिर सुख तेता ॥ नर  
जिम वादलकी ठाया ॥ जूठी ॥ १ ॥ जिम अनित्य  
जाव चित्त आया ॥ लख गलित वृषजकी काया ॥  
बूजे कर कंजुराया ॥ जूठी ॥ २ ॥ इम चिदानंद  
न मनमांही, कहु करीए ममता नाहीं ॥ सदगुरुए  
जेद लखाया ॥ जूठी ॥ ३ ॥

॥ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग प्रजाती ॥ मान कहा अब मेरा मधुकर  
॥ मान० ॥ ए आंकणी ॥ नाजिनंदके चरण सरोज  
मे, कीजे अचल बसेरा रे ॥ परिमल तास लहत  
मन सेहेजे, त्रिविध पाप उतेरा रे ॥ मान० ॥ १ ॥  
उदित निरंतर ज्ञान जान जिहां, तिहां न मिथ्यात  
अंधेरा रे ॥ संपुट होत नहीं ताते कहा, सांज क  
हा सवेरा रे ॥ मान० ॥ २ ॥ नहितर पठतावोगे

आखर वीतगया यो वेरा रे ॥ चिदानंद प्रभु पदपंक  
ज सेवत, बहुरि न होय जव फेरारे ॥ मान० ॥ ३॥

॥ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग धनाश्री ॥ चूड्यो जमत कहा वे अजा  
न ॥ चूड्यो० ॥ ए आंकणी ॥ आल पंपाल सकल  
तज मूरख, कर अनुजव रस पान ॥ क० १ ॥ आप कृ  
तांत गहेगो इक दिन, हरि मृग जेम अचान ॥  
होयगो तन धनथी तुं न्यारो, जेम पाको तरु पान  
॥ कड्यो० ॥ २ ॥ मात तात तरुणी सुत सेंती, गर  
ज न सरत निदान ॥ चिदानंद ए वचन हमारो,  
धर राखो प्यारे कान ॥ कड्यो ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग जैरव ॥ जागरे बटाज अव, जइ जोर  
वेरा ॥ जाग० ए आंकणी ॥ जया रविका प्रकाश,  
कुमुदहु थये विकास ॥ गया नाश प्यारे मिथ्या,  
रेनका अंधेरा ॥ जा० ॥ १ ॥ सूता केस आवे घाट,  
चालवी जरुर बाट ॥ कोइ नांहि मित्त परदेशमें  
ज्युं तेरा ॥ जा० ॥ २ ॥ अवसर वीत जाय, पिठे  
पिठतावो थाय ॥ चिदानंद निहचें, ए मान कहा  
मेरा ॥ जागरे बटाज अव जइ जोर वेरा ॥ ३ ॥ इति

॥ अथ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग आशावरी ॥ उं घट विणसत वार न  
लागे ॥ उंघट ॥ ए आंकणी ॥ याके संग कहा अ

व मूरख, ठिन ठिन अधिको पागे ॥ ओ० ॥ १ ॥  
 काया गमा काचकी शीशी, लागत ठणका जागे ॥  
 उं घट० ॥ २ ॥ आवि व्याधि व्यथा दुःख इण ज  
 व, नरकादिक फुनि आगे ॥ रुगहु न चलत संग  
 विण पोण्या, मारगहुमें त्यागे ॥ उं० ॥ ३ ॥ मदठक  
 ठाक गहेल तज वीरला, गुरु किरपा कोउ जागे ॥  
 तनधन नेह निवारी चिदानंद, चलीये ताके  
 सागे ॥ उं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्यपदेशी पद ॥

॥ राग विज्ञास ॥ जूठी जग माया नर केरी  
 काया, जिम वादरकी ठाया माइरी ॥ ए आंकणी  
 ॥ ज्ञानंजन कर खोल नयण मम, सदगुरु इणे विग  
 प्रगट लखाइरी ॥ जूठी० ॥ मूल विगत विषवेल  
 प्रगटीइक, पत्र रहित त्रिजुवनमें ठाइरी ॥ तास पत्र  
 चुण खात मिरगवा, मुखवीन अचरिज देखहुंआइरी  
 ॥ जूठी० ॥ २ ॥ पुरुष एक नारी निपजाइ, तेतो नपुंसक  
 घरमे समाइरी ॥ पुत्र जुगल जायेति एवालाते जगमां  
 हे अधिक दुःख ठाइरी ॥ जूठी० ॥ ३ ॥ कारण  
 विन कारजकी सिद्धि, केम जइ मुख कही नवि  
 जाइरी ॥ चिदानंद एम अकल कलाकी, गति मति  
 कोइ विरले जन पाइरी ॥ जठी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ ज्ञानोपदेशी पद ॥

॥ राग सारंग ॥ मेरे घट ग्यात जानु जयो



जोर ॥ मेरे० ॥ चेतन चकवा चेतन चकवी, जागो  
 विहरको सोर ॥ मेरे० ॥ १ ॥ फैली चिंहु दीश चतु  
 रा जाव सचि, मिट्यो जरम तम जोर ॥ आपकी  
 चोरी आपही जानत, औरे कहत न चोर ॥ मेरे०  
 ॥ २ ॥ अमल कमल विकस जये झूतल, मंद विष  
 य शशी कोर ॥ आनंद घन एक बटलज लागत,  
 और न लाख किरोर ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ इति पद ॥

॥ अथ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग कट्याण ॥ या पुद्गलका क्या विसवासा,  
 है सुपनेका वासारे ॥ या० ॥ ए आंकणी ॥ चमत  
 कार विजुली दे जैसा, पाणी बीच पतासा ॥ या  
 देहीका गर्व न करना, जंगल होयगा वासा ॥ या०  
 ॥ १ ॥ जूछे तन धन जूछे जोंखन, जूछे है घरवा  
 सा ॥ आनंद घन कहे सबही जूछे, साचा शिव  
 पुर वासा ॥ या० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ इति पंचम परिच्छेद समाप्त ॥

॥ शष्ठमपरिच्छेद प्रारंभः ॥

॥ अथ श्रीगौतमाष्टक उदः ॥

॥ वीर जिण्णसर केरो, शिष्य, गौतम नाम जपो  
निशदीश ॥ जो कीजें गौतमनुं ध्यान, तोघर विल  
से नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामें गिरि वर चडे  
मनोवांठित हेल्ला संपजे ॥ गौतम नामें नावे रोग,  
गौतम नामें सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे बैरी विरूआ  
वंकडा, तस नामें नावे डुकमा ॥ जूत प्रेत नविमंडे  
प्राण, ते गौतमनां करुं बखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामें  
निर्मल काय, गौतम नामें बाधे आय ॥ गौतम जि  
नशासन शणगार, गौतम नामें जय जयकार ॥ ४ ॥  
शाल दाल सुरहा घृत गोळ, मनोवांठित कापरु  
तंबोल ॥ घरसुघरिणी निर्मल चित, गौतम नामें पुत्र  
विनित ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल जाण, गौत  
म नाम जपो जग जाण ॥ सहोटां मंदिर मेरुसमान,  
गौतम नामें सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल  
घोरानी जोरु, वारू पहांचे वांठित कोरु ॥ मही  
यल माने सहोटा राय, जो तुवे गौतमना पाय ॥ ७ ॥  
गौतम प्रणम्यां पातक टले, उत्तम नरनी संगत  
मले ॥ गौतम नामें निर्मल ज्ञान, गौतम नामे बाधे  
वान ॥ ८ ॥ पुण्यवतं अवधारो सहु, गुरु गौतमना

एण ठे बहु ॥ कहे लावण्यसमय कर जोरु, गौत  
 ठे संपत्ति कोरु ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री तिजयपहुत्त प्रारंभ ॥

॥ तिजयपहुत्त पयासय, अछ महापाणिहेरजुत्ता  
 ॥ समयखित्त ठिआणं, सरेमि चक्रं जिणंदाणं  
 ॥ १ ॥ पणवीसाय असीआ, पन्नरस पन्नास जिण  
 र समूहो ॥ नासेउ सयल डुरिअं, जविआणं  
 नत्ति जुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पण्या लाविय, तीसा  
 मन्नत्तरी जिणवरिंदा ॥ गहजूअ रस्क साइणि, घोरु  
 सगंगं पणासंतु ॥ ३ ॥ सित्तिरि पणतीसाविय,  
 सछी पंचेव जिणगणो एसो ॥ बाहि जल जलण  
 हरि करि, चोरारि महाजयं हरउ ॥ ४ ॥ पणपन्नाय  
 दसेव थ, पन्नछी तहय चेव चालीसा ॥ रस्कंतु मे  
 सरीरं देवासुर पणामिआ सिआ ॥ ५ ॥ उ हरहुं  
 हः सरसुंसः, हरहुंहः तहचेव सरसुंसः ॥ आलिहिय  
 नाम गप्प, चक्रं किर सबजंजदं ॥ ६ ॥ उ रोहिणी  
 पन्नत्ती, वज्जासिखला तहय वज्जाअंकुसिआ ॥ चक्रे  
 सरि नरदत्ता कालि महाकालि तह गोरी ॥ ७ ॥  
 गंधारी महाजाला, भाणवि वइरुह तहय अहुत्ता ॥  
 भाणसि महभाणसिआ, विद्यादेवीज रस्कंतु ॥ ८ ॥  
 पंचदस कम्म जूमिसु, उप्पन्नं सत्तरिं जिणाणसयं ॥  
 विविह रयणाइवन्नो, वसोहिअं हरउ डुरिआइं  
 ॥ ९ ॥ चउतीस अइ सय जुआ, अछ महापाडि

हेर कयसोहा ॥ तिब्बयरा गयमोहा, जाएअवा पय  
 तेणं ॥ १० ॥ उँ वरकणय संख विद्रुम, मरगय घण  
 सन्निहं विगयमोहं ॥ सत्तरिसय जिणणं, सवामर  
 पूइअं वंदे ॥ स्वाहा ॥ ११ ॥ उँ जवणवइ वाण  
 वंतर, जोइसवासी विमाणवासी अ ॥ ॥ जे केवि  
 दुठ देवा, ते सबे जवसमंतु मम ॥ स्वाहा ॥ १२ ॥  
 चंदण कपूरेणं, फलए लिहिज्जण खालिअं पीअं ॥  
 एगंतराइ गहजूअ, साइणि मुग्गं पणासेइ ॥ १३ ॥  
 इअ सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं, डुवारि पन्नि  
 हिअं ॥ डुरिआरि विजयवंतं, निप्रंतं निच्चमच्चेह ॥  
 ॥ १४ ॥ इति ॥ ए१ ॥

॥ अथ श्री नमिज्जणनामक स्मरणं लिख्यते ॥

॥ नमिज्जण पणय सुरगण, चूमामाणि किरण  
 रंजिअ मणिणो ॥ चलणजुअलं महाजय, पणासणं  
 संथवं बुठं ॥ १ ॥ सडिय कर चरण नह मुह, निबु  
 ह नासा विवन्न लायन्ना ॥ कुठ महा रोगानल,  
 फुलिग निदह सवंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा राहण,  
 सलिलंजलि सेय बुद्धिय ञ्जाया ( जब्हा ) वण दव  
 दह्वा गिरिपा, यव व पत्ता पुणो खर्वा ॥ ३ ॥ डुवाय  
 खुप्रिय जलनिहि, उप्परु कल्लोल जीसणारावे ॥ संजं  
 त जय विसंतुल, निद्यामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अवि  
 दलिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इठ्ठिअ कूलं ॥  
 पासजिण चलण जुअलं, निच्चंचिअ जेन मंति

नरा ॥ ५ ॥ खर पवणुञ्जुअ वणदव, जालावलि  
 मिलिय सयल दुम गहणे ॥ उप्पंत मुळ मय  
 बहु, जीसणरव जीसणंमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो  
 कमजुअलं, निधाविअ सयल तिहु अणाजोअं ॥ जे  
 संचरंति मणुआ, न कुणइ जलणो जयं तेसिं ॥ ७ ॥  
 विलसंत जोग जीसण, फुरिआरुण नयण तरल जी  
 हालं ॥ उगगजुअंगं नवजलय सव्वहं जीसणायारं ॥ ८ ॥  
 मन्नंति कीरु सरिसं दूर परिबुढ विसम विसवेगा ॥  
 तुह नामरकर फुरुसि, ऊमंत गुरुवा नरा लोए  
 ॥ ९ ॥ अरुवीसु जिल्ल तकर, पुलिंद सहुल सद्दी  
 मासु ॥ जयविहुर बुन्नकायर, उल्लुरिअ पहिअ सव्वासु  
 ॥ १० ॥ अविबुत्तविहवसारा, तुह नाह पणाम मत्त  
 वावोरा ॥ ववगय विग्घासिग्घं, पत्ता हिय इच्चिय  
 ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलि आनलनयणं, दूरवियारियसु  
 हं महाकायं ॥ नह कुलिसवायविअलिअ, गइंद  
 कुंजठलाजोअं ॥ १२ ॥ पणय ससंजम पच्चिव, नह  
 मणिमाणिक पन्निअ पन्निमरस ॥ तुह वयणपहरण  
 धरा, सीहं कुंजपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवल  
 दंतमुसलं, दीहकरुद्धाल बुद्धि उवाहं ॥ महुपिंग  
 नयणजुअलं, ससलिल नवजलहरारावं ॥ १४ ॥  
 जीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गणंति ॥ जे  
 तुह चलण जुअलं, मुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥

समरम्मि तिख्क खग्गा, जिग्घाय पविळ्ळ उळ्ळूय कवं  
 धे ॥ कुंतविणिज्जिन्न करि कलह, मुक्कसिक्कार पउरं  
 मि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुळ्ळर रिउ, नरिंद निवहा  
 नडा जसं धवलं ॥ पावंति पाव पसमिण, पासजि  
 ण तुह प्पजावेण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर,  
 चोरारि मइंद गय रण जयाइं ॥ पासजिण नाम  
 संकी, तणेण पसमंति सवाइं ॥ १८ ॥ एवं महा  
 जयहरं, पासजिणिंदस्स संथवमुआरं ॥ जविय जणा  
 णंदयरं, कल्लाण परंपर निहाणं ॥ १९ ॥ राय जय  
 जक्करक्कस, कुसुमिण दुस्सउण रिक्कपीकासु ॥  
 संजासु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥  
 जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणंकइणो य माणतुंग  
 स्स ॥ पासो पावं पसमेउ, सयल जुवणच्चिअ चलणो  
 ॥ २१ ॥ उवसग्गंते कमठा, सुरम्मि जाणाउं जोन सं  
 चलिउं ॥ सुरनर किन्नर जुवईहिं, संथुउं जयउ पा  
 सजिणो ॥ २२ ॥ एअस्स मप्पयारे, अठारस अक्केरहिं  
 जो मंतो ॥ जो जाणइ सो कायइ, परम पयव्व फुलं  
 पासं ॥ २३ ॥ पासह समरण जो कुणइ, संतुठे हिययेण  
 ॥ अतुत्तर सय वाहि जय, नासइ तस्स दूरेण ॥ २४ ॥

॥ अथ श्री जक्कामर स्मरण प्रारंभः ॥

॥ जक्कामर प्रणत मौलिमणि प्रजाणा, मुद्योतकं  
 दलित, पापत मोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिन्न  
 पादयुगं युगादा, वालंवनं जवजले पततां जनानाम्

॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलबाहू मयतस्त्वबोधा, दुद्र  
 जूतबुद्धि पटुजिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्लज्जित त्रितय  
 चित्त हरैरुदारैः स्तोष्येकिलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्र  
 म् ॥ १॥ बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित पादपीठ, स्तोतुं  
 समुद्यतम तिर्विगतत्रपोऽहं ॥ बालं विहाय जलसं  
 स्थितमिंद्रु विंब, मन्यः क इहति जनः सहसा ग्रही  
 तुं ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांककांतान्, क  
 स्ते क्षमः सुरगुरु प्रतिमोपि बुद्ध्या ॥ कट्पांत कालप  
 वनोद्ध तनक्रचक्रं, कोवा तरीतुमल मंबुनिधिं शुजा  
 ज्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव जक्ति वशान्मु  
 नीश, कर्तुं स्तवं विगत शक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्म  
 वीर्यमविचार्य मृगोमृगेंद्रं, नान्येति किंनिजशिशोः  
 परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥ अद्वपश्रुतं श्रुतवतां परिहास  
 धाम, त्वदजक्तिरेव मुखरीकुरु ते बलान्मां ॥ यत्को  
 किलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारु च्यूतकलि  
 कानिकरै कहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन जवसंततिस  
 न्निवर्द्धं, पापं क्षणात्क्षय मुपैतिशरीर चाजाम् ॥  
 आक्रांत लोकमलिनी लमशेषमाशु, सूर्यांशुजिन्नमिव  
 शार्वर मंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ तव संस्तवनं  
 मयेद, मारज्यते तनुधियापि तव प्रज्ञावात् ॥ चेतो  
 हरिष्यतिसतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफल ह्युतिमुपैति  
 ननूदविंद्रुः ॥ ८ ॥ आस्तां तव स्तवन मस्तसमस्त  
 दोष, त्वत्संकथापि जगतां दुरितानिहंति ॥ दूरे सह

स्रकिरणः कुरुते प्रज्ञैव, पद्मा करेषु जलजानि विका  
 शजांजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवन भूषणभूतनाथ, भूतै  
 र्गुणैर्भुविभवंतमन्निष्ठुवंतः ॥ तुल्या भवंति भवतो  
 ननु तेन किंवा, भूत्याश्रितं यद्दृष्टं नात्मसमं करोति  
 ॥ १० ॥ दृष्ट्वा भवंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तो  
 षमुपया तिजनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिनर  
 द्युतिदुग्धसिंधोः, क्षारं जलं जलनिधेर शितुं कश्चेत्  
 ॥ ११ ॥ यैः शांतराग रुचिभिः परमणुभिस्त्वं, निर्मा  
 पितस्त्रिभुवनै कललामभूत् ॥ तावंतएव खलु तेप्य  
 णवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२  
 ॥ वक्रं क ते सुरनरोरग नेत्रहारि, निः शेषनिर्जित  
 जगस्त्रित योपमानम् ॥ विवं कलंकमलिनं क निशा  
 करस्य, यद्भासरे भवति पांशुष लाशकल्पम् ॥ १३ ॥  
 संपूर्णं संमूल शशांक कलाकलाप, शुभ्राशुणा स्त्रिभु  
 वनं तव लंघयन्ति ॥ ये संश्रितास्त्रि जगदीश्वर ना  
 थमेकं, कस्तान्निवारयति संचरतोय येष्टम् ॥ १४ ॥  
 चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशागनाभि, नीतं मनागपि  
 मनो न विकारमार्गम् ॥ कल्पांत कालमरुता चलि  
 ताचलेन, किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित्  
 ॥ १५ ॥ निर्झूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः कृत्स्नं जगद्भ  
 यमिदं प्रकटीकरोपि ॥ गम्योनजातु मरुता चलता  
 चलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥  
 नास्तं कदाचिदुपयासि नराहुगम्यः, स्पष्टीकरोपि



सहसा युगपज्जगंति ॥ नाञ्जोधरोदरनिरुद्धमहाप्रजा  
 वः, सूर्यातिशायिमहिमासि मुनीन्द्र लोके ॥ १७ ॥ नि  
 त्योदयं दक्षितमोहम हांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य  
 न वारिदानाम् ॥ विज्राजते नव मुखाब्जमनद्वपकांति,  
 विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥ किंशर्वरी  
 षु शशिनाहि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेंद्रुदक्षिते षुत  
 मस्सु नाथ ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके,  
 कार्यं कियज्जालधरैर्जलचारनम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं य  
 था त्वयि विजाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरा  
 दिषु नायकेषु ॥ तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा मह  
 त्वं, नैवं तु काचशकले किरणाकुलेपि ॥ २० ॥ मन्ये  
 वरं हरिहरा द्यएव दृष्ट्वा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि  
 तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन जवता जुवि येन नान्यः,  
 कश्चिन्म नोहरति नाथ जवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां  
 शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं  
 जननी प्रसूता ॥ सर्वादिशो दधति जानिसह स्त्ररश्मिं,  
 प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशु जालम् ॥ २२ ॥ त्वामा  
 मनंति मुनयः परमं पुमांस, मादित्य वर्णममलं तम  
 सः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलज्य जयंति मृत्युं  
 नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनिन्द्र पंथाः ॥ २३ ॥ त्वाम  
 व्ययं विजुमर्चित्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माण्मीश्वरमनं त  
 मनंग केतुम् ॥ योगीश्वरं विदित योगमने कमेकं,  
 ज्ञानस्वरूप ममलं प्रवदंति संतः ॥ २४ ॥ बुद्ध स्त्व

मेव विबुधार्चित बुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोसि ज्ञुवन  
 त्रयशंकरत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्गं विधेर्विधा  
 नात्, व्यक्तं त्वमेव जगवन् पुरुषोत्तमो ऽसि ॥१५॥  
 तुज्यं नमस्त्रिजुवनार्तिं हराय नाथ, तुज्यं नमः  
 क्षितितलामलभूषणाय ॥ तुज्यं नमस्त्रिजगतः परमे  
 श्वराय, तुज्यं नमोजिनजवोदधिशोषणाय ॥ १६ ॥  
 कोविस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषैः, स्त्वं संश्रितो  
 निरवकाशतया मुनीश ॥ दोषैरुपात्तं विविधाश्रय  
 जातगर्वैः स्वप्नां तरेपि न कदाचिदपीक्षितोसि ॥ १७ ॥  
 ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, माज्ञातिरूप  
 ममलं जवतोनितांतम् ॥ स्पष्टोद्वसत्किरणमस्ततमो  
 वितानं, विंबं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ १८ ॥  
 सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, विज्राजते तव  
 वपुः कनकावदातम् ॥ विंबं वियच्छिलसदंशुलतावि  
 तानं, तुंगोदयाद्विशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ १९ ॥  
 कुंदावदातचलचामरचारुशोचं, विज्राजते तव वपुः  
 कलधौतकांतम् ॥ उच्चैः शंकांशुचिर्निर्जरवारिधार,  
 मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिवशातकौजम् ॥ २० ॥ उच्चैः तत्र  
 तव विजातिशंकाकांतं, मुच्चैः स्थितं स्थगितजानु  
 करः प्रतापम् ॥ मुक्ताफलप्रकरजालविधृष्टशोचं, प्रख्या  
 पयस्त्रिजगतः परमेश्वरत्वं ॥ २१ ॥ उच्चैः ह्येमेनव  
 पंकजपुंजकांति, पर्युद्वसन्नखमयुखशिखाजिरामौ ॥  
 पादौपदानि तव यत्र जिनेन्द्रधत्तः, पद्मानि तत्र

विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इहं यथा तव विभू-  
 तिरभूज्जिनेन्द्र, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥  
 यादृक्प्रज्ञा दिनकृतः प्रहृतांधकारा, तादृकुतो ग्रहग-  
 णस्य विकाशिनोपि ॥ ३३ ॥ श्रयोतन्मदाविलविलोकक-  
 पोलकमूल, सत्तत्रमद त्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐरा-  
 वताजमिजमुद्धतमापतंतं, दृष्टा जयं जवति नो जव-  
 दाश्रितानाम् ॥ ३४ ॥ जिज्ञेजकुंजगलदुज्ज्वलशोणि-  
 ताक्त, मुक्ताफलप्रकरभूपितभूमिजागः ॥ वरूक्रमः क्र-  
 मगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसं-  
 श्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकाल पवनोद्धतवह्निकल्पं,  
 दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्फुल्लिङ्गम् विश्वं जिघत्सुमि-  
 व संमुखमापतंतं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम्  
 ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं  
 फणिनमुत्फणमापतंतम् ॥ आक्रामति क्रमयुगेन  
 निरस्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः  
 ॥ ३७ ॥ वद्वगत्तुरंगगजगर्जित जीमनाद, माजौ चलं  
 चलवतामपि भूपतीनां ॥ उद्यद्दिवाकरमयूखशिखा-  
 पविंश, त्वत्कीर्तनाथमश्वाशु जिदामुपैति ॥ ३८ ॥  
 कुंताग्रजिन्नगजशोणित वारिवाह, वेगावतारतरुणालु-  
 रयोधजीमे ॥ युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्त्व-  
 त्पादपंकजवनाश्रयिणो लज्जन्ते ॥ ३९ ॥ अञ्जोनिधौ  
 क्षुजितजीपणनक्रचक्र, पाठीनपीठजयदोद्वणवारुवा-  
 शो ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा स्वासं विहाय

नवतःस्मरणाद्व्रजंति ॥ ४० ॥ उद्भूतजीपणजलो  
 दरभारक्षुभाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः॥  
 त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या नवंति मकर  
 ध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृखलवेष्टि  
 तांगा, गाढं बृहन्निगरुकोटिनिघृष्टजंघाः ॥ त्वन्नाम  
 मंत्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्वयंविगतबंधन  
 या नवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि,  
 संग्रामवारिधिमहोदरबंधनोढम् ॥ तस्याशु नाशमुप  
 याति नयं जियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमान  
 धीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्वजं तव जिनेन्द्रगुणौर्निवद्धां,  
 नक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पां ॥ धत्ते जनो य  
 इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुगमवशा समुपैति ल  
 इमीः ॥ ४४ ॥ इति श्री नक्तामरस्तोत्रं संपूर्णं ॥

॥ अथ श्रीकल्याणमंदिरस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

॥ वसंततिलकावृत्तम् ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवयजेदि, जीतान्नयप्रदम  
 निंदितमंग्रिपद्मम् ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजलं, पो  
 ता यमानमजिनम्य जिनेश्वरस्य ॥१॥ यस्य स्वयं सुर  
 गुरुर्गरिमांबुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधा  
 तुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो, स्तस्याहमेव  
 किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ सामान्य  
 तोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप, मस्मादृशाः कथमधीश  
 नवंत्यधीशाः ॥ धृष्टोपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिव

धो, रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥ मोह  
 क्षयादनुजवन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं  
 न तव क्षमेत ॥ कट्पांतवांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मा,  
 न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अन्युद्य  
 तोस्मि तव नाथ जम्भाशयोऽपि, कर्तुं स्तवं लसदसं  
 ख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं ननिजवाहुयुगं वित  
 त्य, विस्तीर्णतांकथयति स्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगि  
 नामपि न यांति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं जवति तेषु  
 ममावकाशः ॥ जाता तदेव मसमीक्षित कारितेयं, ज  
 द्दपंति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आ  
 स्तामर्चिल्यमहिमाजिनसंस्तवस्ते, नामापि पातिज  
 वतो जवतो जगंति ॥ तीव्रातपोपहत पांथजनान्नि  
 दाधे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥  
 हृद्भर्त्तिनि त्वयि विजो शिथिलीजवंति, जंतोः क्षणेन  
 निविन्ना अपि कर्मबंधाः ॥ सद्यो जुजंगम मया श्व  
 मध्यजाग, मज्यागते वनशिखंभिनि चंदनस्य ॥ ८ ॥  
 मुच्यंत एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र, रौद्रैरुपद्रव शतै  
 स्त्वयि वीक्षितेऽपि ॥ गोखामिनि स्फुरिततेजसि  
 दृष्टमात्रे, चैरैरिवाशु पशवः प्रपलाय मानैः ॥ ९ ॥  
 त्वं तारको जिन कथं जविनां त एव, त्वामुद्धरंति  
 हृदयेन यदुत्तरंतः ॥ यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेपनु  
 न, मंतर्गतस्य मरुतः स किलानुजावः ॥ १० ॥ य  
 स्मिन्हर प्रचृतयोऽपि ६ ५ , सोऽपि त्वयार

तिपतिः क्षपितः क्षणेन ॥ विध्यापिता हुत जुजः  
 पयसाथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्धरवारुवेन ॥  
 ११ ॥ स्वामिन्न नटपगरिमाण मपि प्रपन्ना, स्त्वां जं  
 तवः कथमहो हृदये दधानाः ॥ जन्मोदधिं लघु  
 तरंत्यति लाघवेन, चित्तो न हंत महतां यदि वा  
 प्रज्ञावः ॥१२॥ क्रोधस्त्वया यदि विज्ञो प्रथमं निरस्तो,  
 ध्वस्ता स्तदा वत कथं किल कर्मचौराः ॥ प्लोपत्यमुत्र  
 यदिवा शिशिरापि लोके, नीलद्रूमाणि विपिनानि  
 न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो जिन सदा  
 परमात्मरूप, मन्वेपयन्ति हृदयांबुज कोशदेशे ॥ पूत  
 स्य निर्मल रुचेर्यदि वा किमन्य, दक्षस्य संज्ञवि प  
 दं ननु कर्णिकायः ॥ १४ ॥ ध्याना ज्ञानेश जवतो  
 जविनः क्षणेन, देहं विहाय परमात्मदशां व्रजति ॥  
 तीव्रानला दुपल जावमपास्य लोके, चामीकरत्वम  
 चिरादिव धातुजेदाः ॥ १५ ॥ अंतः सदैव जिनयस्य  
 विज्ञाव्यसेत्वं, जव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ॥  
 एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनोहि, यद्विग्रहं प्रशमयं  
 तिमहानुजावाः ॥१६॥ आत्मा मनीषिजिरयं त्वदज्ञे  
 दबुद्ध्या, ध्यातो जिनेन्द्र! जवतीह जवत्प्रज्ञावः ॥ पा  
 नीयमप्य मृतमित्यनु चिंत्यमानं, किनाम नो विपवि  
 कारमपाकरोति ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादि  
 नोपि, नूनं विज्ञो हरिहरा दिधियाप्रपन्नाः ॥ कि का  
 चकामलिजि रीश सितो ऽपि शंखो, नो गृह्यते विवि

धवर्णविपर्ययेण ॥ १७ ॥ धर्मोपदेशसमये सविधानु  
 ज्ञावा, दास्तां जनो जवति ते तरुरप्यशोकः ॥ अ  
 च्युजते दिनपतौ स महीरुहोपि, किंवा विबोधमु  
 पयाति न जीवलोकः ॥ १८ ॥ चित्रं विज्ञो कथमवा  
 द्मुखवृंतमेव, विष्वक् पतत्यविरला सुर पुष्पवृष्टिः ॥  
 त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश गठंति नूनम  
 धएव हि बंधनानि ॥ १९ ॥ स्थाने गज्जीर हृदयोदधि  
 संजवायाः, पीयूषतां तवगिरः समुदीरयंति ॥ पीत्वा  
 यतः परम संमदसंग ज्ञाजो, जव्या ब्रजंति तरसाप्य  
 जरामरत्वम् ॥ २० ॥ स्वामिन् सुदूर मवनस्यसमुत्प  
 तंतो, मन्ये वदंति शुचयः सुरचामरौघाः ॥ येऽस्मै  
 नतिं विदधते मुनिपुंगवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः  
 खलु शुरुज्ञावाः ॥ २१ ॥ श्यामं गज्जीरगिरमुज्ज्वलहे  
 मरत्न, सिंहासनस्थमिह जव्य शिखंदिन स्त्वाम् ॥  
 आलोकयंतिरजसेन नदंत मुच्चै, श्रामी कराडि  
 शिरसीव नवांबुवाहम् ॥ २२ ॥ उद्गच्छता तव  
 शितिद्युति मंरुलेन, लुप्त हृदछवि रशोक तरुर्वजूव ॥  
 सान्निध्य तोऽपि यदिवातववीतराग, नीरागतां ब्र  
 जतिको न सचेत नोपि ॥ २३ ॥ जोजोः प्रमाद म  
 वधूय जजध्वमेन, मागत्य निर्वृतिपुरिं प्रतिसार्थवा  
 हम् ॥ एतन्निवेदयति देवजगन्नयाय, मन्ये नदन्ननि  
 नजः सुरडुंडुजिस्ते ॥ २४ ॥ उद्द्योतितेषु जवता जुवने  
 पु नाथ, तारान्वितो विधुरयं विहृताधिकारः ॥ मुक्ताक

लाप कलितोद्भुसितातपत्र, व्याजात्रिधा धृततनुर्ध्रुव  
 मच्युपेतः ॥२६॥ स्वेन प्रपूरितजगन्नयपिंकितेन, कां  
 तिप्रताप यशस्तामिव संचयेन ॥ माणिक्यहेमरजत  
 प्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण जगवन्नजितोविजासि ॥  
 ॥ २७ ॥ दिव्यसृजोजिन नमस्त्रिदशाधिपाना, मुत्सृ  
 ज्य रत्नरचितानपि मौलिवधान् ॥ पादौ श्रयंति जव  
 तो यदि वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमंतएव  
 ॥ २८ ॥ त्वं नाथ जन्मजलधेर्विपराडमुखोपि, यत्ता  
 रयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्त हि पार्थिवनि  
 पस्य सतस्तवैव, चित्रं विजो यदसि कर्मविपाकशून्यः  
 ॥ २९ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं, किंवा  
 हारप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव  
 कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः  
 ॥३०॥ प्राग्भारसंच्रुत नजांसि रजांसि शेपाडुष्ठापि  
 तानि कमठेन शठेन यानि ॥ ठायापितैस्तव न नाथ  
 हताहताशो, अस्तस्त्वमी जिरयमेव परं दुरात्मा ॥  
 ॥ ३१ ॥ यदगर्ज्जदुर्जितघनौघमदन्नजीमं, अश्य  
 त्तडिन्मुसलमांसल घोरधारम् ॥ दैत्येन मुक्तमथ दु  
 स्तरवारि दध्ने, तेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम्  
 ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृता कृतिमर्त्यमुंरु, प्रालंब  
 नृद् जयदवक्र विनिर्यदग्निः ॥ प्रेतव्रजः प्रतिजवंतम  
 पीरितोयः, सोऽस्याऽनत्प्रतिजवंत वदुःखहेतुः ॥३३॥  
 धन्यास्त एव जुवनाधिप ये त्रिसंध्य, माराधयंति



विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥ जक्तयोद्धसत्पुलकपद्मल  
 देहदेशाः, पादद्वयं तव विज्ञो जुवि जन्मजाजः ।  
 ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारजववारिनिधो मुनीश, मन्ये न  
 मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु तव गोत्र  
 पवित्रमंत्रे, किंवा विपद्भिषधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥  
 जन्मांतरेऽपि तव पादयुगं न देव, मन्ये मया महित  
 मीहित दानदक्षम् ॥ तेनेह जन्मनि मुनीश पराजवा  
 नां, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नुनं  
 न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विज्ञोसकृदपि प्रविलो  
 कितोऽसि ॥ मर्माविधो विधुरयंति हि मामनर्थाः, प्रोद्य  
 त्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि  
 महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नुनं न चेतसि मयाविधु  
 तोऽसिजक्त्या ॥ जातोऽस्मि तेन जनवांधव दुःख  
 पात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति न ज्ञावशून्याः ॥ ३८ ॥  
 त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारुण्य पुण्यव  
 सते वशिनां वरेण्य, ॥ जक्त्या नते मयि महेदं दयां  
 विधाय, दुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥  
 निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्य, मासाद्य सादितरि  
 पुप्रथितावदातम् ॥ त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानव  
 ध्यो, वध्योऽस्मिचेद् जुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥  
 देवैर्द्रव्यं विदिताखिलवस्तुसार, संसारतारक विज्ञो  
 जुवनाधिनाथ ॥ त्रायस्व देव करुणाहृद मां पुनीहि,  
 सीदंतमद्य जयदव्यसनांबुराशेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति

नाथ जवदंगिसरोरुहाणां, जक्तेः फलं किमपि संतति  
संचितायाः ॥ तन्मेत्वदेकशरणस्य शरण्य ज्ञूयाः, स्वा  
मीत्वमेव जुवनेऽत्र जवांतरेऽपि ॥ ४१ ॥ इहं समा  
हितधियो विधिवज्जिनैऽ, सांद्रोद्धसत्पुलककंचुकि  
तांग जागाः ॥ त्वद्विंवनिर्मलमुखांबुजवद्भलद्वया,  
ये संस्तवं तवविज्ञो रचयंति जव्याः ॥ ४३ ॥ आर्या ॥  
जननयनकुमुदचंद्र, प्रजास्वराः स्वर्गसंपदो जुक्त्वा ॥ ते  
विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥ युग्म  
म् ॥ ४४ ॥ इति श्रीकल्याणमंदिरसंपूर्ण ॥

॥ अथ वृद्ध गोतम स्वामीनो रासलि ॥ वीर जिणे  
सरचरण कमल, कमला कय वासो ॥ पणमवि पजणी  
सुसामिसाल, गोयम गुरुरासो ॥ मण तण वयणे  
एकांत करवि, निसुणज जो जविया ॥ जिम निवसै  
तुम देह गेह, गुण गण गह गहियां ॥ १ ॥  
जंवूछिव सिर जरह खित्त, खोणी तल मंरुण ॥ मग  
ह देश सेणिय नरेस, रिउ दल बल खंरुण ॥ धण  
वर गुवर गांम नाम, जिहा गुणगण सज्जा ॥ विप्प  
वसै वसुज्जूइ तत्थ, तसु पुहवीजज्जा ॥ २ ॥ ताण  
पुत्त सिरी इंद जुय, जूवलय पसिज्जो ॥ चउदह विज्जा  
विविह रूव, नारी रस बुज्जो ॥ विनय विवेक विचार  
सार, गुण गणह मनोहर ॥ सात हाथ सुप्रमाण  
देह, रूवहि रंजा वर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर  
चरण जिण विपंकज जल पारिय, तेजेहि तारा,

चंद सूर, आकास जमाकिय ॥ रूवहिमयण अनं  
 ग करवि मेढयो निरधाकिय धीरमें मेरु गंजीर  
 सिंधु, चंगम चयचाडिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम  
 रूव जास, जिण जंपे किंचिय ॥ एकाकी किल  
 जीत इठ, गुण मेढ्या संचिअ अहवा निश्चै पुव  
 जम्म, जिणवर इणअंचिय ॥ रंजा पउमा गौरी  
 गंगा, रति हा विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नहिं बुरू  
 नहिं गुरु कवि न कोइ, जसु आगल रहिउं ॥  
 पंचसया गुणपात्र ठात्र, हींढे पर वरिउं ॥ करे  
 निरंतर यज्ञकर्म, मिथ्यामति मोहिय ॥ इण ठल  
 होशे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु,  
 ठंड ॥ जंबूदीवह जंबूदीवह, जरह वासंमि, खो  
 णीतलमंरुणो, मगधदेस सेणिय नरे सर ॥ धण  
 वर गुठवरगाम तिहां, विप्प वसे वसुज्जूइ सुंदर,  
 तसु पुहवी जज्जा सयल, गुणगणरुव निहाण ॥  
 ताणपुतवीद्या निलउं, गोयम अतिहि सुजाण  
 ॥ ७ ॥ जापा ॥ चरम जिणेशर केवल नाणी, चउ  
 विहसंधपइछाजाणी ॥ पावापुर सामी संपत्तो, चउ  
 विह देव निकायें जुत्तो ॥ ८ ॥ देवें समवसरण तिहां  
 कीजें, जिणें दीछे मिथ्यामति सीजे ॥ त्रिजुवन गुरु  
 सिंहासण वइछा, ततखिण मोह दिगतें पइछा ॥  
 ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा  
 जिम दिनचोरा ॥ देवहुंहुजि आकाशें वाजी, धर्म

नरेसर आविर्ल गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि विरचे  
तिहां देवा, चोशठ इंद्र जसु मागे सेवा ॥ चामर  
ठत्र सिरोवरि सोहे, रूपेंहिं जिणवर जग सहु मोहे  
॥ ११ ॥ उवसम रसजर नरी वरसंता, जोजन वाणी  
वखाण करंता ॥ जाणवि वळ्ळमाण जिण पाया, सुर  
नर किन्नर आवे राया ॥ १२ ॥ कंतिसमूहें जलजल  
कंता, गयण विमाणें रणरणकंता ॥ पेखवि इंद्रचूड  
मन चिंते, सुर आवे अह जगन होवेंते ॥ १३ ॥  
तीर तरंकक जिम ते वहता, समव सरण पुहता  
गहगहता ॥ तो अजिमानें गोयम जपे, इणि अवसरे  
कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाणिउं बोले,  
सुर जाणंता इम कांइ कोले ॥ मूं आगल कोइ जाण  
नणीजें, मेरु अवर किम उपमा दीजें ॥ १५ ॥ वस्तु  
छंद ॥ वीरजिणवर वीरजिणवर नाण, संपन्न पावा  
पुरि सुर महिय पत्तनाह संसार तारण ॥ तिहि  
देवेहिं निम्मविय समवसरण बहु सुखकारण ॥  
॥ जिणवर जग उज्जोय करे, तेजें करि दिनकार ॥  
सिंहासण सामिय ठविउं, हुउं सुजयजयकार ॥ १६ ॥  
जापा ॥ तो चढिउं घणमाण गजें, इंद्रचूड चूय देव  
तो ॥ हुंकारो करी संचरिउं, कवण सुजिणवर-देव  
तो ॥ जोजन चूमि समोसरण, पेखवी प्रथमारंज  
तो ॥ दह दिसि देखे विबुधवधू, आवंती, सुररंज  
तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंरुधजा, कोसीसे नव

चंद सूर, आकास जमाकिय ॥ रूवहिमयण अनं  
 ग करवि मेढ्यो निरधामिय धीरमें मेरु गंजीर  
 सिंधु, चंगम चयचाडिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम  
 रूव जास, जिण जंपे किंचिय ॥ एकाकी किल  
 नीत इठ, गुण मेढ्या संचिअ अहवा निश्चें पुव  
 जम्म, जिणवर इणअंचिय ॥ रंजा पउमा गौरी  
 गंगा, रति हा विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नहिं बुद्ध  
 नहिं गुरु कवि न कोइ, जसु आगल रहिउं ॥  
 पंचसया गुणपात्र ठात्र, हींठे पर वरिउं ॥ करे  
 निरंतर यइकर्म, मिथ्यामति मोहिय ॥ इण ठल  
 होशे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु,  
 ठंद ॥ जंबूदीवह जंबूदीवह, जरह वासंमि, खो  
 णीतलमंरुणो, मगधदेस सेणिय नरे सर ॥ धण  
 वर गुव्वरगाम तिहां, विप्प वसे वसुच्छूइ सुंदर,  
 तसु पुहवी जज्जा सयल, गुणगणरुव निहाण ॥  
 ताणपुतवीद्या निलउं, गोयम अतिहि सुजाण  
 ॥ ७ ॥ जाया ॥ चरम जिणेसर केवल नाणी, चउ  
 विहसंघपइछाजाणी ॥ पावापुर सामी संपत्तो, चउ  
 विह देव निकायें जुत्तो ॥ ८ ॥ देवें समवसरण तिहां  
 कीजें, जिणें दीछे मिथ्यामति सीजे ॥ त्रिजुवन गुरु  
 सिंहासण बइछा, ततखिण मोह दिगतें पइछा ॥  
 ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा  
 जिम दिनचोरा ॥ देवहुंहुजि आकाशें वाजी, धर्म

नरेसर आविर्लं गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि विरचे  
तिहां देवा, चोशठ इंद्र जसु मागे सेवा ॥ चामर  
उत्र सरोवरि सोहे, रूपेहिं जिणवर जग सहु मोहे  
॥ ११ ॥ उवसम रसजर जरी वरसंता, जोजन वाणी  
वखाण करंता ॥ जाणवि वळ्ळमाण जिण पाया, सुर  
नर किन्नर आवे राया ॥ १२ ॥ कंतिसमूहे जलजल  
कंता, गयण विमाणे रणरणकंता ॥ पेखवि इंद्रचूड  
मन चिंते, सुर आवे अह्म जगन होवंते ॥ १३ ॥  
तीर तरंकक जिम ते वहता, समव सरण पुहता  
गहगहता ॥ तो अजिमानें गोयम जंपे, इणि अवसरें  
कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाणिउ बोले,  
सुर जाणंता इम कांड मोले ॥ मूं आगल कोइ जाण  
जणीजें, मेरु अवर किम उपमा दीजें ॥ १५ ॥ वस्तु  
छंद ॥ वीरजिणवर वीरजिणवर नाण, संपन्न पावा  
पुरि सुर महिय पत्तनाह संसार तारण ॥ तिहि  
देवेहिं निम्मविय समवसरण बहु सुखकारण ॥  
॥ जिणवर जग उज्जोय करे, तेजें करि दिनकार ॥  
सिंहासण सामिय ठविळ, हुळ सुजयजयकार ॥ १६ ॥  
जाषा ॥ तो चढिळ घणमाण गजें, इंद्रचूड चूय देव  
तो ॥ हुंकारो करी संचरिळ, कवण सुजिणवर देव  
तो ॥ जोजन जूमि समोसरण, पेखवी प्रथमारंज  
तो ॥ दह दिसि देखे विबुधवधू, आवंती सुररंज  
तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंरुधजा, कोसीसे नव

॥ २८ ॥ खीरखंरु घृत आणि, अमिअ वूठ अंगुठ  
 ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणुंसवे ॥ पंच  
 सया शुभ्र जाव, उज्जाल जरिउं खीरमीसैं ॥ साचो  
 गुरुसंजोग, कवल ते केवल रूप हुउं ॥ २९ ॥ पंच  
 सया जिणनाह, समवसरण प्रकारत्रय ॥ पेखवि  
 केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे जिणह  
 पीयूष, गाजंती घणमेघ जिम ॥ जिणवाणी निसुणेश,  
 नाणी हूआपंचसया ॥ ३० ॥ वस्तुठंद ॥ इणे अनु  
 क्रमे इणे अनुक्रमें नाणसंपन्न ॥ पन्नरह सय परवरिय,  
 हरिय डुरिय जिणनाह वंदिय ॥ जाणवी जगगुरु  
 वयण, तिह नाण अप्पाण निंदइ ॥ चरम जिणे  
 सर इम जणइ, गोयम मकरिस खेउ ॥ ठेह जइ  
 आपण सही, होसुं तुल्ला वेउ ॥ ३१ ॥ जाषा ॥ सामि  
 उं ए वीर जिणंद, पूनिम चंद जिम उल्लसिअ ॥  
 विहरिउं ए जरहवांसम्मि वरिस बहुत्तर संवसिअ ॥  
 ठवतो ए कणय पठमेव, पायकमल संघें सहिअ ॥  
 आविउं ए नयणाणंद, जयर पावापूरिसुरमहिय ॥  
 ॥ ३२ ॥ पेखीउं ए गोयम सामी, देवशर्मा प्रति  
 बोध करे ॥ आपण ए त्रिशला देव, नंदन पढोतो  
 परम पए ॥ वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाणिय  
 जिणसमे ए ॥ तो मुनि ए मन विखवाद, नाद जेद  
 जिम उपनो ए ॥ ३३ ॥ कुण समो ए सामिय देखि  
 आप कन्हे हुं टालिउं ए ॥ जाणंतो ए तिहुअण

नाह, लोक वेवहार न पालिउं ए ॥ अति जलुं ए  
 कीधलुं सामि, जाणिऊ केवल मागशे ए ॥ चिंतवि  
 जुं ए बालक जेम, अहवा केरें लागशे ए ॥ ३४ ॥  
 हुं किम ए वीरजिणंद, जगतें जोलो जोलविउं ए ॥  
 आपणो ए अविहल नेह, नाह न संपे सूचव्यो ए ॥  
 साचो ए इह वीतराग, नेह न जेणें बालिउं ए ॥  
 इण समे ए गोयमचित्त, राग वेरागें बालिउं ए  
 ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उलट, रहेतो रागें साहिउं  
 ए ॥ केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहेंजें उमा  
 हिउं ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा  
 सुर करे ए ॥ गणहरु ए करय वखाण, जवियण जव  
 इम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥ वस्तुउंद ॥ पढम गणहर  
 पढम गहणर वरस पंचास गिहिवासें संवसिय ॥  
 तीस वरिस संजम विजूसिय ॥ सिरिकेवल नाण पुण,  
 बार वरिस तिहुयणनमंसिय ॥ रायगिहि नयरीहिं  
 ठविअ, बाणवइ वरिसाउं ॥ सामी गोयम गुणनिलो,  
 होशे शिवपुर ठाउं ॥ ३७ ॥ जाषा ॥ जिम सहकारें  
 कोयल टहुके, जिम कुसुमवनें परिमल महेके, जिम  
 चंदन सुगंधनिधि ॥ जिम गंगाजल लहेरें लहके,  
 जिम कणयाचल तेजें ऊलके, तिम गोयम सौजाग्य  
 निधि ॥ ३८ ॥ जिम मान सरोवर निवसे हंसा, जिम  
 सुर वर सिरि कणयवतंसा, जिम महुयर राजीव  
 वनी ॥ जिम रयणायर रयणें विलसे, जिमअवर



तारा गण विकसैं, तिम गोयम गुण केलिवनी ॥ ३९ ॥  
 पूनिम निसि जिम ससिहर सोहे, सुरतरु महिमा  
 जिम जग मोहे, पूरवदिसि जिम सहसकरो ॥ पचा  
 नन जिम गिरिवर राजे, नरवर घर जिम मयंगल  
 गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम सु  
 रतरुवर सोहे शाखा, जिम उत्तममुख मधुरी चाखा,  
 जिम वनकेतकी महमहे ए ॥ जिम भूमिपति भूय  
 बल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, तिम गो  
 यम लब्धे गहगहे ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढिउ  
 आज, सुरतरु सारे बंठिय काज, कामकुंज सवि वश  
 हुज ए ॥ कामगवी पूरे मनकामिय, अष्ट महासिद्धि  
 आवे धामिय, सामिय गोयम आणुसरो ए ॥ ४२ ॥  
 पणवरकर पहेलो पजणीजें, मायावीज श्रवण निसु  
 णजें, श्री मती शोजा संजवे ए ॥ देवहधुरि अरि  
 हंत नमीजें, विनयपहु उवघाय थुणीजें, इण मंत्रें  
 गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ पुर पुर वसतां कांइ करीजें, देश  
 देशांतर कांइ जमी जें, कवण काज आयास करो ॥  
 प्रह् इठी गोयम समरीजें काजसमग्रह ततखण  
 सिजे, नवनिधि बिलसे तास घरे ॥ ४४ ॥ चउदह  
 सय वारोत्तर वरसैं, गोयम गणहर केवल दिवसे,  
 किउं कवित उपगारकरो ॥ आदिहिंमंगल एहपज  
 णीजे, परव महोदव पहिलो दीजे, रुद्धि वृद्धि क  
 द्वाण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिणे ऊयरे धरिया,

धनपिता जिण कुल अवतरिया धन सहगुरु जिणे  
 दिखियाए ॥ विनयवंत विद्या चंमार, जसुगुण कोइ  
 न लपे पार, विद्यावंत गुरु विनवे ए ॥ गौतमसामीनो  
 रास जणीजे, चउविह संघ रलि यायत कीजे, रुद्धि  
 वृद्धि कळ्याण करो ॥ ४६ ॥ कुकुम चंदन ठमो देव  
 रावो ॥ माणक मोतिनां चोक पुरावो ॥ रयण सिंहा  
 सण ॥ वेसणुंए ॥ तिहां वेसी प्रजु देसना देसे ॥ जविक  
 जीवनां काज सरसे ॥ नित्य नित्य मंगल उदयकरो ॥  
 इति श्री गौतम स्वामीनो रास संपूर्ण

॥ अथ श्रीमहावीरजिन ठंद ॥

॥ सेवो वीरने चित्तमां नित्य धारो, अरिक्रोधने  
 मन्नथी दूर वारो ॥ संतोष वृत्ति धरो चित्तमांहिं, राग  
 द्वेषथी दूर थारु उछाहि ॥१॥ पड्यामोहना पासमां  
 जेह प्राणी, शुद्ध तत्वनी वात तेणें न जाणी ॥ मनु  
 जन्म पामी वृथा कां गमोठो, जैनमार्ग ठंकी जुला  
 कों जमो ठो ॥२॥ अलोत्री अमानी निरागी तजो ठो  
 सलोत्री समानी सरागी जजो ठो ॥ हरि हरादि अ  
 न्यथी शुं रमो ठो, नदी गंगा मूकी गलीमां पमोठो ॥३॥  
 केइ देव हाथें असि चक्रधारा, केइ देव घाले रुंड मा  
 ला ॥ केइ देवउत्संगें राखे ठे वामा, केइ देव साथें रमे  
 वृद्ध रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे लेइ जपमाला, केइ  
 मांसजही महावीकराला ॥ केइ योगिणी जोगिणि  
 जोग रागें, केइ रुद्राणी ठागनो होम मागे ॥ ५ ॥

इसा देव देवी तणी आश राखे, तदा मुक्तिना सुख  
 ने केम चाखे ॥ जदा लोचना थोकलो पार नाव्यो,  
 तदा मधनो विंछु जेमन्न चाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवलां  
 आपणी आश राखे, तेह पिंरुने मन्नशुं लेअ चाखे ॥  
 दीन हीननी जीडते केम जांजे, फुटो ढोल होये  
 कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ ज्ञाता जजो मोक्ष  
 दाता, अलोकी प्रभूने जजो विश्वख्याता ॥ रत्न  
 चिंतामणि सारिखो एह साचो, कलंकी काच ना  
 पिंरुशुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंद बुद्धिसु जेह प्राणी  
 कहे ठे, सवि धर्म एकत्व जूलो जमे ठे ॥ कीहां  
 सर्षवाने कीहां मेरु धीरं, कीहां कायरा ने कीहां  
 शूर वीरं ॥ ९ ॥ कीहां स्वर्णथालं कीहां कुंजखंडं ॥  
 किहा क्रोडवा ने कीहा खीर मंजं ॥ कीहां खीरसिं  
 धु कीहां क्षारनीरं, कीहां कामधेनु कीहां ठाग  
 क्षीरं ॥ १० ॥ कीहां सत्यवाचा कीहां कूडवाणी, कीहां  
 रंकनारी कीहां रायराणी ॥ कीहां नारकीने कीहां  
 देवजोगी, कीहा इंद्र देही कीहां कुष्टरोगी ॥ ११ ॥  
 कीहां कर्म घाती कीहां कर्मधारी, नमो वीर स्वामी  
 जजो अन्यवारी ॥ जिसी सेजमां स्वप्नपी राज्य  
 पामी, राचे मंदबुद्धि धरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥  
 अथिर सुख संसारमां मन्न माचे, ते जना मूढमां  
 श्रेष्ठशुं इष्ट ठाजे ॥ तजो मोह माया हरो दंजरपी,  
 सजो पुण्य पोषीजजो ते अरोपी ॥ १३ ॥ गतिचा

र संसार अपार पामी, आव्या आस धारी प्रभु  
पाय स्वामी ॥ तुहिं तुहिं तुहिं प्रभु परम रागी,  
जव फेरनी शृंखला मोह जागी ॥ १४ ॥ मानीयें  
वीरजी अर्ज ठे एक मोरी, दीजे दासकुं सेवना  
चरण तोरी ॥ पुण्य उदय हुठे गुरु आज मेरो  
वीवेकें लह्योमे प्रभू दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नवकारनो ठंद ॥

॥ दोहा ॥ वंठित पूरे विविध परे, श्री जिन  
सासनसार ॥ निश्चय श्रीनकार नित्य, जपतां जयज  
यकार ॥ १ ॥ अरुशठ अक्षर अधिक फल, नव पद  
नवे निधान ॥ वीतराग स्वय मुख वदे, पंच परमेष्टि  
प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समस्या  
संपत्ति थाय ॥ संचित्त सागर सातनां, पातिक दूर  
पलाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र शिर मुकुट मणि, सजुरु  
जापित सार ॥ सो जवियां मन शुद्धुं, नित्य जपीये  
नवकार ॥ ठंदहाटकी ॥ नवकार थकी श्रीपाल नरेशरा ॥  
पाम्यो राज्य प्रसिद्ध ॥ समशान विषे शिवनाम  
कुमरने, सोवन पुरिसो सिद्ध ॥ नव लाख जपंता  
नरक निवारे, पामे जवनो पार ॥ सो जवियां जत्तें  
चोखे चित्ते, नित्य जपीये नवकार ॥ ५ ॥ बांधि  
वरुशाखा शिके वेसि, हेठल कुंड हुताश ॥ तस्कर  
ने मंत्र समर्प्यो श्रावके, उढ्यो ते आकाश ॥ विधि

इसा देव देवी तणी आश राखे, तदा मुक्तिना सुख  
 ने केम चाखे ॥ जदा लोचना थोकलो पार नाव्यो,  
 तदा मधनो विंदु उमन्न जाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवलां  
 आपणी आश राखे, तेह पिंरुने मन्नशुं लेअ चाखे ॥  
 दीन हीननी जीडते केम जांजे, फुटो ढोल होये  
 कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ त्राता जजो मोक्ष  
 दाता, अलोची प्रजूने जजो विश्वख्याता ॥ रत्न  
 चिंतामणि सारिखो एह साचो, कलंकी काच ना  
 पिंरुशुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंद बुद्धिसु जेह प्राणी  
 कहे ठे, सवि धर्म एकत्व जूळो जमे ठे ॥ कीहां  
 सर्षवाने कीहां मेरु धीरं, कीहां कायरा ने कीहां  
 शूर वीरं ॥ ९ ॥ कीहां स्वर्णथाळं कीहां कुंजखंडं ॥  
 किहा क्रोडवा ने कीहा खीर मंरुं ॥ कीहां खीरसिं  
 धु कीहां द्वारनीरं, कीहां कामधेनु कीहां ठाग  
 द्वीरं ॥ १० ॥ कीहां सत्यवाचा कीहां कूडवाणी, कीहां  
 रंकनारी कीहां रायराणी ॥ कीहां नारकीने कीहां  
 देवजोगी, कीहा इंद्र देही कीहां कुष्टरोगी ॥ ११ ॥  
 कीहां कर्म घाती कीहां कर्मधारी, नमो वीर स्वामी  
 जजो अन्यवारी ॥ जिसी सेजमां स्वप्नशी राज्य  
 पामी, राचे मंदबुद्धि धरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥  
 अथिर सुख संसारमां मन्न भाचे, ते जना मूढमां  
 श्रेष्ठशुं इष्ट ठाजे ॥ तजो मोह माया हरो दंजरोपी,  
 सजो पुण्य पोषीजजो ते अरोपी ॥ १३ ॥ गतिचा

र संसार अपार पामी, आव्या आस धारी प्रजु  
पाय स्वामी ॥ तुहिं तुहिं तुहिं प्रजु परम रागी,  
नव फेरनी शृंखला मोह जागी ॥ १४ ॥ मानीयें  
वीरजी अर्ज ठे एक मोरी, दीजे दासकुं सेवना  
चरण तोरी ॥ पुण्य उदय हुठे गुरु आज मेरो  
विवेकें लह्योमे प्रजु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नवकारनो ठंद ॥

॥ दोहा ॥ वंठित पूरे विविध परे, श्री जिन  
सासनसार ॥ निश्चय श्रीनकार नित्य, जपतां जयज  
यकार ॥ १ ॥ अरुशठ अक्षर अधिक फल, नव पद  
नवे निधान ॥ वीतराग स्वय मुख वदे, पंच परमेष्टि  
प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समस्या  
संपत्ति थाय ॥ संचित्त सागर सातनां, पातिक दूर  
पलाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र शिर मुकुट मणि, सज्जु  
जापित सार ॥ सो जवियां मन शुद्धुं, नित्य जपीये  
नवकार ॥ ठंदहाटकी ॥ नवकार थकी श्रीपाल नरेशरा ॥  
पाम्यो राज्य प्रसिद्ध ॥ समशान विषे शिवनाम  
कुमरने, सोवन पुरिसो सिद्ध ॥ नव लाख जपंता  
नरुक्त जिवारे, पामे जवनो पार ॥ सो जवियां जत्तें  
चिखे चित्तें, नित्य जपीये नवकार ॥ ५ ॥ बांधि  
वरुशाखा शिके वेसि, हेगल कुंड हुताश ॥ तस्कर  
ने मंत्र समप्यो आवके, उड्यो ते आकाश ॥ विधि

॥ अथ श्री शोल सतीनो ठंद ॥

॥ आदि नाथ आदिजिनवर वंदी, सफल मनो  
रथ कीजियें ए ॥ प्रजातें उठी मांगलिक कामें, शोल  
सतीनां नाम लीजियें ए ॥ १ ॥ बाल कुमारी जग  
हितकारी, ब्राह्मी जरतनी बहेनमी ए ॥ घट घट  
व्यापक अक्षर रूपें, शोल सतीमांहि जे बनी ए ॥  
॥ २ ॥ बाहुबल जगिनी सतीय शिरोमणि, सुंदरी  
नामे रिषज सुता ए ॥ अंग स्वरूपी त्रिजुवनमांहे,  
जेह अनुपम गुणजुता ए ॥ ३ ॥ चंदनवाला बाल  
पणाथी, शीयलवती शुद्ध श्राविका ए ॥ अडदनां  
बाकुलां वीर प्रतिलज्या, केवल लही ब्रत जाविका  
ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुआ धारिणी नंदनी, राजिमती  
नेम बल्लजा ए ॥ जोवन वेशें कामने जीत्यो, संयम  
लेइ देव दुल्लजाए ॥ ५ ॥ पंच जरतारी पांरुव नारी,  
जुपदतनया बखाणीयें ए ॥ एक शो आठे चीरपूरा  
णां, शीयल महिमा तस जाणीयें ए ॥ ६ ॥ दशरथ  
नृपनी नारी निरुपम, कौशल्या कुलचंद्रिका ए ॥  
शीयल सलूणी राम जनेता, पुण्य तणी परनालिका  
ए ॥ ७ ॥ कोशंघिक ठामें संतानिक नामें, राज्य  
करे रंग राजीयो ए ॥ तस घर घरणी मृगावतीसती,  
सुरजुवनें जश गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची  
शीयलें न काची, राची नहीं विषयारसें ए ॥ मुख  
रुं जोतां पाप पलाए, नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥

॥ ए ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामिनी, जनकसुता  
सीता सती ए ॥ जगसहु जाणे धीज करंतां, अनल  
शीतल थयो शीयलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे  
चालणी वांधी, कूवाथकी जल काढीयुं ए ॥ कलंक  
उतारवा सतीय सुजझा, चंपा वार उघामीयुं ए  
॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शीयल अखंमित, शिवा शिव  
पदगामिनी ए ॥ जेहने नामें निर्मल थय्यें, बलि  
हारी तस नामनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुरें पांशुरायनी,  
कुंता नामें कामिनी ए ॥ पांशुव माता दसे दसारनी,  
वहेन पवित्रता पद्मनी ए ॥ १३ ॥ शीलवती नामे  
शीलव्रतधारिणी, त्रिविधेंतेहने वंदीयें ए ॥ नाम  
जपंतां पातक जाए, दरिसण दुरित निकंदीयें ए  
॥ १४ ॥ निषधा नगरी नलहनरिदनी, दमयंती तस  
गेहनी ए, ॥ संकट परुतां शीयलज राख्युं, त्रिजुवन  
कीर्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीता जगजन  
पूजिता, पुष्पचूला ने प्रजावती ए ॥ विश्वविख्याता  
कामित दाता, शोभनी सती पदमा वती ए ॥ १६ ॥  
वीरेंजांखी शाखें साखी, उद यरतन जांखे मुदा ए ॥  
वहाणु वातां जे नर जणशे, ते लेशे सुख संपदा ए  
॥ १७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नवकार लघु ठद ॥

॥ सुखकारण जवियण, समरो नित्य नवकार ॥  
जिनशासनआगम, चौद पूरवनो सार ॥ ए मंत्रनो



महिमा, कहेतां न लहुं पार सुरतरु जिम चिंतित  
 वंठित फल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव, सेव  
 करे करजोड ॥ जुविमंरुल विचरे, तारे जवियण  
 कोरु ॥ सुर ठंदें विलसे, अतिशय जास अनंत ॥ पहे  
 ले पद नमियें, अरिगंजन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पन्नरे  
 जेदें, सिद्ध थया जगवंत ॥ पंचमी गति पोहोता,  
 अष्ट करम करि अंत ॥ कल अकल स्वरूपी, पंचानं  
 तक जेह ॥ जिनवर पय प्रणमुं, वीजे पद वलि एह  
 ॥ ३ ॥ गच्छचार धुरंधर, सुंदर शशिहर सोम ॥  
 करे सारण वारण, गुण ठत्तीसैं थोम ॥ सुत्र जाण  
 शिरोमणि, सागर जेम गंजीर ॥ त्रीजे पद नमीयें,  
 आचारज गुणधीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगर, सूत्र  
 जणावे सार ॥ तपविधि संयोगें, जांखे अर्थ विचा  
 र ॥ मुनिवर गुण जुता, कहियें ते जवझकाय ॥ चो  
 थे पद नमियें, अहोनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पंचा  
 श्रवटाले, पाले पंचाचार ॥ तपसी गुण धारी, वारे  
 विषय विकार ॥ त्रस थावर पीहर, लोकमांहें जे  
 साध ॥ त्रिविधें ते प्रणमुं, परमारथ जिणें लाघ ॥  
 ॥ ६ ॥ अरि करि हरि सायणी कायणी जूत वैता  
 ल ॥ सवि पाप पणासे, बाधेमंगल माल ॥ एणें  
 समरण संकट, दूर टले ततकाल ॥ इम जंये जिन  
 प्रज, सूरि शिष्य रसाल ॥ ७ ॥ इति ॥ १३ ॥  
 ॥ इति श्री पंचपरमेष्ठी ठंद ॥

॥ श्री ॥

जिनपञ्जरस्तोत्रं

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भयो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं  
श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं अर्हं आचा-  
र्येभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो  
नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं अर्हं गौतम प्रमुखसर्वसाधुभ्यो  
नमोनमः ॥ १ ॥ एष पञ्चनमस्कारः सर्व पाप क्षयं  
करः ॥ मङ्गलानां च सर्वेषां, प्रथमं जवति मङ्गलम्  
॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जये विजये, अर्हं परमात्मनेन  
मः ॥ कमलप्रज्ञसूरीन्द्रो, ज्ञापते जिनपञ्जरम् ॥ ३ ॥  
एकजकोपवासेन, त्रिकालं यः पठेद्विदम् ॥ मनोऽजि-  
लपितं सर्वं, फलं स लज्जते ध्रुवम् ॥ ४ ॥ जूशय्याब्र-  
ह्मचर्येण, क्रोधलोभविर्वर्जितः ॥ देवताग्रे पवित्रात्मा,  
पण्मासैर्लज्जते फलम् ॥ ५ ॥ अर्हन्तं स्थापयेन्मूढि,  
सिद्धं चक्षुर्ललाटके ॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये उपाध्या-  
यं तु नासिके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनःशुद्धिं  
विधाय च ॥ सूर्यचन्द्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्ध-  
ये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेपी, वामपार्श्वे स्थितो जि-  
नः ॥ अङ्गसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः ॥ ८ ॥  
पूर्वाशां च जनो रक्षेद्दक्षिणीं विजितेन्द्रियः ॥ दक्षि-  
णाशां परब्रह्म, नैर्ऋतीं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥ पश्चि-  
माशां जगन्नाथो, वायव्यां परमेश्वरः ॥ उत्तरां तीर्थं  
कृत्सर्वामीशानेऽपि निरञ्जनः ॥ १० ॥ पातालं जगवा

नर्हन्नाकाशं पुरुषोत्तमः, ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो,  
 रक्षन्तु सकलं कुलम् ॥ ११ ॥ ऋषजो मस्तकं रक्षे.  
 दंजितोऽपि विलोचनम् ॥ संजवः कर्णयुगलेऽजिनन्द  
 नस्तु नासिके ॥ १२ ॥ जटं श्रीसुमती रक्षेदन्तान्प  
 द्मप्रजो विभुः ॥ जिह्वां सुपार्श्वदेवोऽयं, तालु चन्द्र  
 प्रजाजिधः ॥ १३ ॥ कंठं श्रीसुविधि रक्षेद्, हृदय  
 श्रीसुशीतलः ॥ श्रेयांसो बाहुयुगलं, वासुपूज्यः करद्व  
 यम् ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्षेदनन्तोऽसौ नखानपि ॥  
 श्रीधर्मोऽप्युदरास्थीनि श्रीशान्तिर्नाभि मंजुलम् ॥ १५ ॥  
 श्रीकुन्धुर्गुह्यकं रक्षे, दरो लोम कटी तटम् ॥ मस्तिरू  
 रुपृष्ठवंशं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमीरक्षे  
 ह्वीनेमिश्ररणद्वयम् ॥ श्रीपार्श्व नाथः सर्वाङ्गं वर्धमा  
 नश्चिदात्मकम् ॥ १७ ॥ पृथिवीजलतेजस्क, वाय्वा  
 काशमयं जगत् ॥ रक्षेदशेष पापेभ्यो, वीतरागो नि  
 रज्जनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे स्मशाने च, संग्रामे शत्रु  
 संकटे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, जूत प्रेतजयाश्रिते ॥  
 ॥ १९ ॥ अकाले मरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥  
 अपुत्रत्वे महादुःखे, मूर्खत्वे रोगपीकिते ॥ २० ॥  
 भाकिनीशाकिनी ग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते ॥ नद्युत्ता  
 रेऽध्ववैपन्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव  
 समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपञ्जरम् ॥ तस्य किञ्चिद्भयं  
 नास्ति, लज्जते सुखसंपदः ॥ २२ ॥ जिन पिञ्जरनामेदं, यः  
 स्मरेदनुवासर ॥ कमलप्रज राजेन्द्र- श्रियं सलज्जते

नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समुत्थाय पठेत्कृतज्ञो, यस्तोत्र मेत  
ज्जिन पञ्जराख्यं ॥ आसादयेद्द्वी कमल प्रज्ञाख्यं, लक्ष्मी  
मनोवांछितपूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपद्मो वरेण्यगच्छे,  
देवप्रज्ञाचार्य पदाब्जहंसः ॥ वादीन्द्रचूडामणिरेषजै  
नो, जीयाद्गुरुः श्रीकमल प्रज्ञाख्यः ॥ २५ ॥ इति श्रीकम  
लप्रज्ञाचार्य विरचितं श्रीजिन पञ्जरस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ श्री ॥

॥ ग्रहशान्तिस्तोत्रम् ॥

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुज्ञापितम् ॥ ग्रह  
शान्तिं प्रवक्ष्यामि जव्यानां सुखहेतवे ॥ १ ॥ जन्म  
लभे च राशौ च, यदा पीरन्ति खेचराः ॥ तदा  
संपूजयेद्धीमान्, खेचरैः सहिताज्जिनान् ॥ २ ॥ पुष्पै  
र्गन्धैर्धूपदीपैः, फलनैवेद्यसंयुतैः ॥ वर्णसदृशदानैश्च  
वस्त्रैश्च दक्षिणान्वितैः ॥ ३ ॥ पद्मप्रज्ञस्य मार्तरुश्च  
न्द्रश्चन्द्रप्रज्ञस्य च ॥ वासुपूज्येजूसुतश्च, बुधोऽप्यष्ट  
जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ विमलानन्तधर्माऽराः, शान्तिः  
कुन्थुर्नमिस्तथा ॥ वर्धमानो जिनेन्द्राणां, पादपद्मे  
बुधो न्यसेत् ॥ ५ ॥ रूपज्ञाजितसुपार्श्वाश्चाजिनन्द  
नशीतलो ॥ सुमतिःसंजवस्वामी, श्रेयांसस्य बृहस्प  
तिः ॥ ६ ॥ सुविधेःकथितः शुक्रः सुव्रतस्य शनैश्च  
रः ॥ नेमिनाथस्य राहुः स्यात्, केतुः श्रीमल्लिपार्श्व  
योः ॥ ७ ॥ जिनानामग्रतः कृत्वा, ग्रहाणां शान्ति

तवे ॥ नमस्कारशतं जप्त्वा, जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥८॥  
जप्त्वाहुस्वाचैव पञ्चमश्रुतकेवली ॥ विद्याप्रवादतः  
पूर्वात् ग्रहशान्तिविधिं शुभम् ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ग्रहाश्चन्द्रसूर्याङ्गारकबुधवृहस्पतिशुक्रश  
नैश्वरराहुकेतुसहिताः खेटा जिनपतिपुरतो वति  
ष्ठन्तुः मम धनधान्यजयविजयसुखसौजाग्यधृति  
कीर्तिकान्तिशांतितुष्टिपुष्टिबुद्धिदमीधर्मार्थकामदाः  
स्युः स्वाहा ॥ इति ग्रहशान्ति स्तोत्र समाप्तं

॥ अथ मंत्राधिराज स्तोत्रं ॥

श्रीपार्श्वः पातु वो नित्यं, जिनः परमशंकरः ॥  
नाथः परमशक्तिश्च, शरण्यः सर्वकामदः ॥ १ ॥ सर्व  
विघ्नहरः स्वामी, सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ सर्वसत्त्वहितो  
योगी श्रीकरः परमार्थदः ॥ २ ॥ देवदेवः स्वयंसि  
द्धश्चिदानन्दमयः शिवः ॥ परमात्मा परब्रह्म, परमः  
परमेश्वरः ॥ ३ ॥ जगन्नाथः सुरज्येष्ठो, भूतेशः पुरु  
षोत्तमः ॥ सुरेन्द्रो नित्यधर्मेश्च, श्रीनिवासः शुभार्ण  
वः ॥ ४ ॥ सर्वज्ञः सर्व देवेशः, सर्वदः सर्वगोत्तमः ॥  
सर्वात्मा सर्वदर्शी च, सर्वव्यापी जगद्गुरुः ॥ ५ ॥  
तत्त्वमूर्तिः परादित्यः, परब्रह्मप्रकाशकः ॥ परमेन्दुः  
परप्राणः, परमामृतसिद्धिदः ॥ ६ ॥ अजः सनातनः  
शम्भुरीश्वरश्च सदाशिवः ॥ विश्वेश्वरः प्रमोदात्मा,  
क्षेत्राधीशः शुभप्रदः ॥ ७ ॥ साकारश्च निराकारः,  
सकलो निष्कलोऽव्ययः निर्ममो निर्विकारश्च, निर्वि

कल्पो निरामयः ॥ ८ ॥ अमरश्चा जरोऽनन्त, ए  
कोऽनन्तः शिवात्मकः ॥ अलक्ष्यश्चैवामेयश्च, ध्यानल  
क्ष्यो निरञ्जनः ॥ ९ ॥ ऊँकाराकृतिरव्यक्तो, व्यक्तरू  
पस्त्रयीमयः ॥ ब्रह्मद्वयप्रकाशात्मा, निर्जयः परमाक्ष  
रः ॥ १० ॥ दिव्यतेजोमयः शान्तः, परामृतमयोऽच्यु  
तः ॥ आद्योऽनाद्यः परेशानः, परमेष्ठी परः पुमान्  
॥ ११ ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशः, स्वयञ्चूः परमाच्युतः ॥  
व्योमाकारस्वरूपश्च, लोकालोकावज्ञासकः ॥ १२ ॥  
ज्ञानात्मा परमानन्दः, प्राणारूढो मनःस्थितिः ॥  
मनःसाध्यो मनोध्येयो, मनोदृश्यः परापरः ॥ १३ ॥  
सर्वतीर्थमयो नित्यः, सर्वदेवमयः प्रभुः ॥ जगवान्  
सर्वतत्त्वेशः, शिवश्रीसौख्यदायकः ॥ १४ ॥ इति श्री  
पार्श्वनाथस्य, सर्वज्ञस्य जगद्गुरोः ॥ दिव्यमष्टोत्तरं  
नामशतमत्र प्रकीर्तितम् ॥ १५ ॥ पवित्रं परमं ध्येयं,  
परमानन्ददायकम् ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदं नित्यं पठते मङ्ग  
लप्रदम् ॥ १६ ॥ श्रीमत्परमकल्याणसिद्धिदः श्रेय  
सेऽस्तुवः ॥ पार्श्वनाथजिनः श्रीमान्, जगवान् परमः  
शिवः ॥ १७ ॥ धरणेन्द्रफणञ्चालंकृतो वः श्रियं  
प्रभुः ॥ दद्यात्पद्मावतीदेव्या, समधिष्टितशासनः ॥  
॥ १८ ॥ ध्यायेत्कमलमध्यस्थं, ॥ श्रीपार्श्वजगदीश्व  
रम् ॥ ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं समायुक्तं, केवलज्ञानज्ञास्कर  
म् ॥ १९ ॥ पद्मावत्यान्वितं वामे, धरणेन्द्रेण दक्षिणे ॥  
परितोऽष्टदलस्थेन, मन्त्रराजेन संयुतम् ॥ २० ॥ अष्ट

पञ्चस्थितैः यस्य नमस्कारैस्तथा त्रिभिः ॥ ज्ञानाद्यैर्वैष्टितं  
 नाथ, धर्मार्थकाममोक्षदम् ॥ ११ ॥ शतषोडशदला  
 रूढं, विद्यादेवीजिरान्वितम् ॥ चतुर्विंशतिपत्रस्थं,  
 जिनं मातृसमावृतम् ॥ १२ ॥ मायावेष्टयत्रयाग्रस्थं,  
 क्रौंकारसहितं प्रभुम् ॥ नवग्रहावृतं देवं, दिक्पालै  
 र्दशजिवृतम् ॥ १३ ॥ चतुष्कोणेषु मन्त्राद्यचतुर्विंजा  
 न्वितैर्जिनैः ॥ चतुरष्टदशद्वीति, द्विधाकसंज्ञकैर्युतम्  
 ॥ १४ ॥ दिक्षु द्वाकारयुक्तेन, विदिक्षु लाकि तेन  
 च ॥ चतुरस्त्रेण वज्रांकक्षितितस्त्रे प्रतिष्ठितम् ॥ १५ ॥  
 श्रीपार्श्वनाथमित्येवं, यः लमाराधयेज्जिनम् ॥ तं  
 सर्वपापनिर्मुक्तं, नजते श्रीः शुभप्रदा ॥ १६ ॥ जिने  
 शः पूजितो नम्रया, संस्तुतः प्रस्तुतोऽथवा ॥ ध्यात  
 स्त्वं येः क्षणं वापि, सिद्धस्तेषां महोदयः ॥ १७ ॥  
 श्रीपार्श्वयन्त्रराजान्ते, चिन्तामणिगुणास्पदम् ॥ शान्ति  
 पुष्टिकरं नित्यं, हृद्रोपद्रवनाशनम् ॥ १८ ॥ रुद्धि  
 सिद्धिमहाबुद्धिधृतिश्रीकान्तिकीर्तिदम् ॥ मृत्युंजयं  
 शिवात्मानं, जपनान्नन्दितो जनः ॥ १९ ॥ सर्वकल्या  
 णपूर्णः स्याज्जामृत्युविवर्जितः ॥ २० ॥ निमादिमहासि  
 ङ्गि, लक्षजापेन वाभुयात् ॥ २१ ॥ प्राणायामः

लसिद्धिदम् ॥ त्रिसंध्य यः पठे नित्यं, नित्यं प्राप्नो  
ति स श्रियम् ॥ ३३ ॥

अथ लघु जिनसहस्रनाम लिख्यते ॥

॥ नमः त्रिलोकनाथाय ॥ सर्वज्ञाय महात्मने ॥  
वक्ष्ये तस्यैव नामानि ॥ मोक्षसौख्याजिलाषया ॥ १ ॥  
निर्मलः शास्वतो शुद्धः ॥ निर्विकल्पो निरामयः ॥  
निःशरीरो निरातंकः ॥ सिद्धः शुद्धो निरंजनः  
॥ २ ॥ निष्कलंको निरालंबो ॥ निर्मोहो निर्मलो  
त्तमः ॥ निर्मयो निरहंकारो ॥ निर्विकारोऽनिष्क्रियः  
॥ ३ ॥ निर्दोषो निरुजः शान्तः ॥ निमद्यो निर्मलः शि  
वः ॥ निस्तरंगो निराकारो ॥ निष्कर्मो निष्कलप्रभुः  
॥ ४ ॥ निर्वादो निरुपज्ञानः ॥ निरागो निरयोजिनः  
निःशब्दः प्रतिमश्लेषः ॥ उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥ ५ ॥  
निःशङ्गात् प्राप्तकेवलयो नैष्टिकः शब्दवर्जितः ॥ अनि  
द्यो महपूतात्मा ॥ जगत्शिखर शेषरः ॥ ६ ॥ निः  
शब्दो गुण संपूर्ण ॥ पापतापप्रणाशनः ॥ सोपयोगात्  
शुचं प्राप्तः कर्मद्योतिवला वहः ॥ ७ ॥ अजरो अमरः  
सिद्धः ॥ अर्चितः अक्षयो विभुः ॥ अमूर्तः अच्यु  
तो ब्रह्म ॥ विष्णु रीश प्रजापति ॥ ८ ॥ अनिद्यो वि  
श्वनाथश्च ॥ अजो अनुपमोजवः ॥ अप्रमेयोजगन्ना  
थ ॥ बोधरूपो जिनात्मकः ॥ ९ ॥ अव्ययसकलारा  
ध्यो ॥ निष्पन्नो ज्ञानलोचनः ॥ अद्वैद्यो निर्मलो नि  
त्यः ॥ सर्वसद्यविवर्जितः ॥ १० ॥ अजेयः सर्वतोऽजः ॥



निष्कषायो ज्ञवांतकः ॥ विश्वनाथः स्वयंबुद्धः ॥ वीत  
 रागोजिनेश्वरः ॥ ११ ॥ अंतको सहजा नंद ॥ अवा  
 ज्ञानसगोचरः ॥ असाध्यशुद्धश्चैतन्यः ॥ कर्मनोकर्म  
 वर्जितः ॥ १२ ॥ अनंतविमलज्ञानी ॥ निस्पृहो नि  
 ष्प्रकाशकः ॥ कर्माजितो महात्मानः ॥ लोकत्रयशि  
 रोमणिः ॥ १३ ॥ अव्यावाधो वरःशंभुः ॥ विश्व वे  
 दी पितामहः ॥ सर्वभूतहितोदेव ॥ सर्वलोकसरण्य  
 कः ॥ १४ ॥ आनंदरूपचैतन्यो ॥ जगवांस्त्रिजगद्गु  
 रुः ॥ अनंतानंतधीशक्तिः ॥ सत्यव्यक्त व्ययात्मकः  
 ॥ १५ ॥ अष्टकर्म विनिर्मुक्तः ॥ सप्तधातुविवर्जित  
 गौरवादित्रयावारः ॥ सर्वज्ञानादिसंयुतः ॥ १६ ॥ अ  
 जयःप्राप्तकैवल्यः ॥ निर्माणे निरपेक्षकः ॥ निष्कलं  
 केवलज्ञानी ॥ मुक्तिसौख्यप्रदायकः ॥ १७ ॥ अना  
 मयो महाराध्यो ॥ वरदो ज्ञानपावकः ॥ सर्वेशःसत्  
 सुखावासः ॥ जिनेन्द्रोमुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥ अन्यून  
 परमज्ञानी ॥ विश्वतत्त्वप्रकाशकः ॥ प्रबुद्धो जगवान्ना  
 थः ॥ प्रस्तुतः पुण्यकारकः ॥ १९ ॥ शंकरः सुगतो  
 रौद्रः सर्वज्ञो मदनांतकः ॥ ईश्वरो ज्ञवनाधीशः ॥  
 सचित्तः पुरुषोत्तमः २० ॥ सदोजातमहात्मानं ॥ वि  
 मुक्तोमुक्तिवद्वज्रः योगीन्द्रो नादिसंसिद्धः ॥ निरीहो  
 ज्ञानगोचरः ॥ २१ ॥ सदा शिवां चतुर्वेक्रः ॥ सत्सौ  
 ख्य त्रिपुरांतकः ॥ त्रिनेत्रः त्रिजगत्पूज्यः ॥ कट्या  
 णकोष्ठ मूर्त्तिकः ॥ २२ ॥ सर्वसाधुजनैर्वन्द्यः ॥ सर्वपा

पविवर्जित ॥ सर्वदेवाधिकोदेवः ॥ सर्वभूतहितंकरः  
 ॥१३॥ स्वयंविद्यो महात्मानं ॥ प्रसिद्धः पापनाशनः  
 तनुमात्रचिदानंद ॥ चैतन्यश्चैत्यवैभवः ॥ १४ ॥ सक  
 लातिशयोदेव ॥ मुक्तिस्थो महतांमहः ॥ मुक्तिका  
 र्यायसंतुष्टो ॥ निरागः परमेश्वरः ॥ १५ ॥ महादेवो  
 महावीरो ॥ महामोहविनाशकः ॥ महाभावो महा  
 दर्शः ॥ महामुक्तिप्रदायकः ॥ १६ ॥ महाज्ञानी महा  
 योगी ॥ महातपो महात्मकः ॥ महर्षिको महावीर्यो  
 महांतिकपदस्थितः ॥ १७ ॥ महापूज्यो महाबंधो ॥  
 महाविघ्नविनाशकः ॥ महासौख्यो महापुंसो ॥ महा  
 महिमः अच्युतः ॥ १८ ॥ मुक्तामुक्तिजसंबोधः ॥  
 एकानेकविनिश्चलः सर्वबंधविनिर्मुक्तो ॥ सर्वलोकप्र  
 धानकः ॥ १९ ॥ महासूरो महाधीरो ॥ महादुःख विना  
 शकः ॥ महामुक्ति प्रदोधीरो ॥ महाहृद्यो महा  
 गुरुः ॥ २० ॥ निर्मारोमारविध्वंसी ॥ निष्कामो  
 विषयाच्युतः ॥ अगवंता महान्नांतो ॥ शांतिकल्या  
 णकारक ॥ २१ ॥ परमात्मापरं ज्योतिः ॥ परमेष्ठी प  
 मेश्वरः ॥ परमात्मापरानंद परंपरम आत्मकः ॥ २२ ॥  
 प्रस्तुतो नंत विज्ञानी ॥ संख्यानिर्वाणसंयुतः ॥ नाक्र  
 ति नाक्षरोवर्णी ॥ व्योमरूपो जितात्मकः ॥ २३ ॥  
 व्यक्ताव्यक्तजसंबोधः ॥ संसारद्वेदकारणः ॥ निरव  
 द्योमहाराध्यः ॥ कर्मजिह्मनायकः ॥ २४ ॥ बोध  
 सत्सुजगद्ध्वो ॥ विश्वात्मानरकांतकः ॥ स्वयंभूपाप

हृत्पूज्यः पुनीतोविजयस्तुतः ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो  
महातीतः ॥ रूपातीतो निरंजनः ॥ अनंतज्ञानसंपू  
र्णो ॥ देवदेवेशनायकः ॥ ३६ ॥ वरेण्योजवविध्वं  
सी ॥ योगिनांज्ञानगोचरः ॥ जन्ममृत्यु जरातीतः ॥  
सर्वविघ्नहरोहरः ॥ ३७ ॥ विश्वदृक्कृजव्यसंवंधः ॥ पवि  
त्रोगुणसागरः ॥ प्रसन्नः परमाराध्यः लोकालोकप्रका  
शकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्जोजगत्स्वामी इंद्रवंधः सुरार्चि  
तः ॥ निष्प्रपंचो निरातंको ॥ निःशेषक्लेश नाशकः  
॥ ३९ ॥ लोकेशो लोकसंसेव्यो ॥ लोकालोकविश्लो  
कनः ॥ लोकोत्तमो त्रिलोकीशो ॥ लोकाग्रशिखरस्थि  
तः ॥ ४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि ॥ ये पठन्ति पुनः पुनः  
ते निर्वाणपदं यांति ॥ मुच्यते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥  
इति लघुसहस्रनाम संपूर्ण ॥

॥ सकलमङ्गलकैलिनिवेशनं ॥ सहृदयं हृदयं गम  
देशनं ॥ अजिनतोत्तमजक्तसुरेश्वरं ॥ नमतशीतल  
नाथजिनेश्वरं ॥ १ ॥ सहजसुन्दरसङ्गुणमन्दिरं ॥  
विमलकेवलबोधविकस्वरं ॥ अतिसुवर्णसुवर्णसमद्युतं ॥  
प्रवरबंधुरलक्षणसंयुतं ॥ २ ॥ ( युग्मं ) यदीयजक्ति  
र्जविनां जवे जवे जवेवजीष्टार्थनिदानमद्भुतं ॥ स  
एव नन्दात्मसमुद्भवो जिनः ॥ समर्चनीयः खलुशी  
तलः प्रभुः ॥ ३ ॥ कर्माजितसान् जविनः सुशीतला  
न् ॥ कुर्वन्मदावाक् सुधया दयापरः ॥ सदेव देवो  
जवतात्सदैव मे ॥ सदिष्टसिद्ध्यै जिनराजशीतलः

॥ ४ ॥ अधिगतशिवशर्मा वीतमोहादिकर्मा ॥ दृढ  
रथ तनुजम्ना सर्वतः साधधर्मा ॥ त्रिदशमहितमूर्तिः  
स्फूर्तिमत्पुण्यकीर्ति ॥ जयतु गतजवार्तिः शीतलः  
सौम्यमूर्तिः ॥ ५ ॥ इति श्रीशीतलजिनः स्तोत्रम् ॥

॥ यस्य ज्ञान दयासिन्धो ॥ दर्शनं श्रेयसे ध्रुवं ॥  
सश्रीमान् पार्श्वतीर्थेशो ॥ निपेव्यः सततं सतां ॥ १ ॥  
वामासूनोर्यशः पुंजै रगाधस्यानघागुणाः ॥ स्मर्यन्ते येन  
स स्मार्यो ॥ जवेत्प्राचीन बर्हिषा ॥ २ ॥ विहाय  
विषयाशक्तान् ॥ संसारिकसुरासुरान् ॥ सेव्यतामह  
यो धीराः पार्श्व देवोपरः प्रभुः ॥ ३ ॥ जिनाः सर्वार्थ  
दानेन ॥ येन कल्पद्रुमाश्चपि ॥ जवेदन्यर्चितो लो  
के ॥ सश्रियेचाम्रताय च ॥ ४ ॥ संस्तुतो मधुर श्लोकैः ॥  
जैनलाजप्रदायकः ॥ कल्याणकारको ज्ञयात् ॥ श्री  
मान् शंखेश्वरः प्रभुः ॥ ५ ॥ इति पार्श्वजिन स्तुतिः

॥ शालिनीष्ठन्दः ॥ ॥ गौमीग्रामे स्तंजने चारु  
तीर्थे ॥ जीरावल्यां पत्तने लोड्रवाख्ये ॥ वाणारस्यांचा  
पिविख्यातकीर्त्ती श्रीपाश्वेशं नौमि शंखेश्वरस्थं ॥ १ ॥ इष्टा  
र्थानां स्पर्शने पारिजातं ॥ वामादेव्यानन्दनं देववं  
द्यं ॥ स्वर्गेज्जूमौ नागलोके प्रसिद्धं ॥ श्रीपा० ॥ २ ॥  
जित्वा ज्ञेयं कर्मजालं विशालं ॥ प्राप्यानन्तं ज्ञानर  
त्नचिरत्नं ॥ लब्धममंदानंदनिर्वाणसौख्यं ॥ श्री पा०  
॥ ३ ॥ विश्वधीशं विश्वालोके पवित्रं ॥ पापागम्यं मो  
क्षलक्ष्मीकलत्रं, अञ्जो जातं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ श्री

पा० ॥ ४ ॥ वर्षेरम्ये खं गदो न्नागिचंद्र ॥ संख्येमासे  
माधवे कृष्णपक्षे ॥ प्राप्तं पुण्यै दर्शनं यस्य तंच ॥  
श्रीपा० ॥ इति शंखेश्वर जिनस्तवः ॥

॥ विशदसङ्गुणराजि विराजितं ॥ घनघनाघनना  
दविज्ञाजितं ॥ जजतजक्तिजरेण रमेश्वरं ॥ जगति  
पार्श्वजिनेशमनश्चरं ॥ १ ॥ विविधवर्णविभूषितविग्र  
हाः ॥ विहितदूर्धम दर्पक निग्रहाः ॥ वसुयुगार्कमि  
ताः सुकृताकराः जिनवरा प्रजवंतु शिवंकरा ॥ २ ॥ रु  
चिरवर्ण निवर्द्धमनिन्दितं ॥ सुमनसां प्रकरैरजिवंदि  
तं ॥ निखिलसाधुजनाः खलुनिर्मिदं, जिनमतं नम  
तांचितशर्मदं ॥ ३ ॥ सकलजव्यसरोज विकाशिका ॥  
कुमत संतमसोच्चयनाशिका ॥ जिनवरानन पद्मग  
तोन्मुदा ॥ जवतु वाग्जिन लाजशुचार्थदा ॥ ४ ॥  
इति पार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥

॥ श्रीमन्नम्र सुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतिरत्नप्रज्ञा ॥  
ज्ञास्वत्पादनखेन्दव प्रवचनांजोधौ व्यवस्थायिनः ॥  
ये सर्वे जिनसिद्धसूरिसुगतास्ते पाठकासाधवः ॥  
स्तुत्यायोगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ १ ॥  
सम्यग्दर्शनबोधवृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं ॥ मुक्तिश्री  
नगरायनं जिनपतेः स्वर्गापवर्गप्रदः धर्मः सूक्ति  
सुधाश्च चैत्यमखिलं जैनालयं श्यालयं प्रोक्तं तत्त्रि  
विधं चतुर्विधं ममीकुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ २ ॥ नाग्नेयादि  
जिनाधिपास्त्रिभुवनेख्याताश्चतुर्विंशतिः ॥ श्रीमन्तो

जरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश ॥ ये विष्णु  
 प्रतिविष्णुलाङ्गलधराः सप्ताधिकाविंशति ॥ स्त्रैलो  
 क्ये जयदास्त्रिषष्टिपुरुषाः ॥ कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ ३ ॥  
 कैलाशे वृषजस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरी ॥  
 चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः ॥ सम्मेतशैलेर्हतां ॥  
 शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरेनेमीश्वरस्यार्हतो ॥ नि  
 र्वाणाविनयः प्रसिद्धविजवाः कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥  
 ॥ ४ ॥ ज्योतिर्व्यंतर जावनामर गृहे मेरौ कुलाद्रौ  
 स्थिता ॥ जंबूशाढमलि चैत्यशाखिषु तथावद्धार  
 रूप्यादिषु ॥ इक्ष्वाकारगिरौच कुंभलनगेष्ठीपेच नंदी  
 श्वरे ॥ शैलेयेमनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वंतु मे मङ्गलं  
 ॥ ५ ॥ यो गर्जावतरोपिजय त्यर्हतां जन्मान्निषेको  
 त्सवे ॥ यो जातः परिनिक्रमेवचनवोयः केवलज्ञान  
 नाक् ॥ यः कैमल्यपुरप्रवेशमहिमासंजावितः स्वर्गि  
 निः ॥ कट्याणानि च तानि पंचसततं कुर्वंतु मे  
 मङ्गलं ॥ ६ ॥ ये पंचौषधिरुद्रयः श्रुततयोर्द्धिग  
 ताः पंचये ॥ येचाष्टांगमहा निमित्तकुशला ये षोवि  
 धाचारणा ॥ पंचज्ञानधराश्च येपि बलिनो ये बुद्धि  
 रुद्धीश्वरा ॥ सप्तै ते सकलाश्च ते गणनृताः कुर्वंतु  
 मे मङ्गलं ॥ ७ ॥ देव्यश्चाष्टजयादिका छिगुणिता  
 विद्यादिका देवता ॥ श्रीतीर्थं कर मातृकाश्च जन  
 कायक्षाश्च यक्षीश्वराः ॥ द्वात्रिंशत् त्रिदशग्रहानिधि  
 सुरादिकन्यकाश्चाष्टधा ॥ दिक्पाला दश इत्यमीसुर

गणाः कुर्वं तु मे मङ्गलं ॥ ८ ॥ इत्थं श्रीजिनमङ्ग  
लाष्टकमिदं कल्याण कालेर्हतां ॥ पूर्वाह्णेपि महोत्स  
वेपि सततं श्रीसौख्यसंपत्करं ॥ ये शृण्वन्ति पठन्ति  
तैश्च मनुजैर्धर्मार्थकामान्विता ॥ लक्ष्मीराश्रयतेषु  
पायरहिताः कुर्वं तु मे मङ्गलं ॥ ९ ॥ इति श्री ॥

शिवं शुरु बुरुं परं विश्वनाथं ॥ नदेवंनवंधुर्नकर्म  
नकर्ता नश्रंगं नसंगं नश्र्वा नकामं ॥ चिदानन्दरूपं  
नमोवीतरंगं ॥ १ ॥ नवंधो नमोक्षो नरागादिभोक्तं ॥  
नयोगंनजोगं नव्याधिर्नशोक्तं ॥ नक्रोधं नमानं नमाया  
नलोचं चि० ॥ २ ॥ नहस्तौ नपादौ नघ्राणं नजिह्वा  
नचक्रुर्नकर्णं नवक्त्रं ननिद्रा ॥ नस्वादं नखेदं नवर्णं  
नमुद्रा ॥ चि० ॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्युं नमोदं नचिं  
ता ॥ नकुदत्रद्र ॥ नजीतं नकृष्यं नतुंदा, नस्वामीन  
भृत्यं नदेवोनमर्त्य ॥ चि० ॥ ४ ॥ त्रिदंडे त्रिखंडेह  
रेविश्वव्यापं ॥ कृषीकेश विध्वस्त कर्मरिजालं ॥ न  
पुण्यं नपापं नश्रद्ध्यानप्राणं ॥ चि० ॥ ५ ॥ नबालं  
नवृद्धं नविघ्नात्तमूढा ॥ नठेयं नजेयं नमूर्तिर्नमीहा  
नकृष्णं नशुक्लं नमोदं नतंद्रा ॥ चि० ॥ ६ ॥ नश्रा  
द्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या ॥ नद्रव्यं नक्षेत्रं नदृष्टौ न  
जव्या ॥ नगुर्वो नशिष्यो नश्राद्यो नदीनं चि० ॥ ७ ॥  
इदंज्ञानरूपं स्वयंतत्त्ववेदी ॥ नपूर्णं न शून्यंसचैतन्य  
रूपं ॥ न अन्योजिजिह्वंनपरमार्थमेकं ॥ चि० ॥ ८ ॥  
निधिश्चैतन्यरत्नाकरं ॥ सर्वे

भूतगतागते सुखदुःखज्ज्ञातात्वयासर्वग ॥ त्रैलोक्याधि  
पतिस्वयंस्व मनसा ध्यायन्ति योगीश्वराः ॥ वंदे तं हरि  
वंश हर्षहृदयं श्री मान भू दच्युतः ॥ ए ॥ इति  
श्रीपरमात्मास्तोत्रं ॥

॥ दर्शनं देवदेवस्य ॥ दर्शनं पापनाशनं ॥ दर्शनं  
स्वर्ग सोपानं ॥ दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन  
जिनेन्द्राणां ॥ साधूनां वंदनेनच ॥ नतिष्ठतिचिरं पा  
पं ॥ द्विद्वहस्तेयथोदकं ॥ २ दर्शनं जिनसूर्यस्य ॥ सं  
सारध्वातनाशनं ॥ बोधनंचित्तपद्मस्य समस्तार्थप्रका  
शकं ॥ ३ ॥ दर्शनंच जिनेन्द्रस्य ॥ सद्गुणैर्मृतवर्षेण जन्म  
दाघविनाशाय ॥ वृंहणं सुखवारिधेः ॥ ४ ॥ जिनेजक्ति  
जिनेजक्ति ॥ जिनेजक्ति दिनेदिने ॥ सदामेस्तु, स  
दामेस्तु, सदामेस्तु जवेजवे ॥ ५ ॥ नहित्राता नहि  
त्राता ॥ नहित्राता जगत्त्रये ॥ वीतरागसमोदेवो ॥  
न भूतो न जविष्यति ॥ ६ ॥ अन्यथा शरणं नास्ति ॥  
त्वमेवशरणं मम ॥ तस्मात् सर्वं प्रयत्नेन ॥ रक्षरक्षजि  
नेश्वर ॥ ७ ॥ वीतरागमुखं दृष्ट्वा ॥ पद्मरागसमप्रज्ञं ॥  
ने कजन्मकृतं पापं ॥ दर्शनेन विनश्यति ॥ ८ ॥ अर्हतो  
मंगलं नित्यं ॥ सिद्धाजगतिमंगलं ॥ मंगलं साधवो मु  
ख्यं ॥ धर्मः सर्वत्र मंगलं ॥ ९ ॥ लोकोत्तमा इहार्ह  
तः ॥ सिद्धालोकोत्तमाः सदा ॥ लोकोत्तमोयतीशा  
नां ॥ धर्मो लोकोत्तमोर्हतां ॥ १० ॥ शरणं सर्वदार्हताः ॥





ज्ञानदर्शनचारित्र्येभ्योनमः ॥ जंबूवृक्षधरोद्गीपः ॥ द्वारो  
 दधिसमावृतः ॥ अर्हदाद्यष्टकेष्ट ॥ काष्ठाधिष्ठैरलंकृ  
 तः ॥ ११ ॥ तन्मध्य संगतो मेरुः ॥ कूटलक्षैरलंकृतः ॥  
 उच्चैरुच्चैस्तरस्तार ॥ स्तारामंजुलमंक्षितः ॥ १२ ॥  
 तस्योपरिसकारांतं बीजमध्यास्यसर्वगं ॥ नमामि विं  
 वमार्हत्यं ॥ ललाटस्थं निरंजनं ॥ १३ ॥ अक्षयं  
 निर्मलं शांतं ॥ बहुलं जामयतो ज्जितं ॥ निरीहं  
 निरहंकारं ॥ सारं सारतरं घनं ॥ १४ ॥ अनुद्धतं  
 शुभ्रं स्फीतं ॥ सात्त्विकं राजसंमतं ॥ तामसं चिर  
 संबुद्धं ॥ तैजसं शर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकारं च निरा  
 कारं ॥ सरसं विरसंपरं ॥ परापरं परातीतं ॥ परं  
 पर परापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णं च ॥ त्रिवर्णं तुर्य  
 वर्णकं ॥ पंचवर्णं महावर्णं ॥ सपरं च परापरं ॥ १७ ॥  
 सकलं निष्कलंतुष्ट ॥ निवृतं त्रांतिवर्जितं ॥ निरंज  
 नं निराकारं ॥ निर्लेपं वीतसंश्रयं ॥ १८ ॥ ईश्वरं  
 ब्रह्मसंबुद्धं ॥ बुद्धं सिद्धं मतंगुरु ॥ ज्योतीरूप महा  
 देवं ॥ लोका लोक प्रकाशकं ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु,  
 वर्णातिः ॥ सरेफोविद्रुमंक्षितः तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहु  
 धानादमालितः ॥ २० ॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः  
 सर्वे ॥ वृषजाद्याजिनोत्तमाः ॥ वर्णे निर्जैर्निजैर्यु  
 क्ता ॥ ध्यातव्यास्तत्रसंगताः ॥ २१ ॥ नादश्च असमा  
 कारो ॥ विंदुर्नीलसमप्रज्ञः ॥ कलारुणसमासांतः ॥  
 स्वर्णाक्षः सर्वतोमुखः ॥ २२ ॥ शिरः संलीन ईकारो ॥

विनीलोवर्णतः स्मृतः ॥ वर्णानुसारसंलीनं तीर्थकृन्मंरुलं  
 स्तुमः ॥ २३ ॥ चंद्रप्रज्ञपुष्पदंतौ ॥ नादस्थिति समाश्रितौ  
 ॥ विंदुमध्यगतौ नेमि ॥ सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥  
 पद्म प्रज्ञवासुपूज्यौ ॥ कलापदमधिष्ठितौ शिरईस्थि  
 तिसंलीनौ ॥ पार्श्वमल्लीजिनेश्वरौ ॥ २५ ॥ शेषा  
 स्तीर्थकृतः सर्वे ॥ हरस्थाने नियोजिताः ॥ माया  
 बीजाक्षरंप्राप्ता ॥ श्रुतुर्विंशतिरर्हतां ॥ २६ ॥ गतरागद्वे  
 षमोहाः ॥ सर्वपापविवर्जिताः ॥ सर्वदाः सर्वकालेषु ॥  
 ते जवंतु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य  
 चक्रस्य याविजा ॥ तथा ह्यादित सर्वाङ्ग मामांहीनस्तु  
 काकिनी ॥ २८ ॥ देवदेवस्य ॥ मामांहीनस्तु, राकि  
 नी ॥ २९ ॥ देवदेव ॥ मामांहीनस्तु, लाकिनी ॥  
 ॥ ३० ॥ देवदेव ॥ मामांहीनस्तु, काकिनी ॥ ३१ ॥  
 देवदेव ॥ मामांहीनस्तु शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदेव ॥  
 मामांहीनस्तु हाकिनी ॥ ३३ ॥ देवदेव ॥ मामांहि  
 नस्तु याकिनी ॥ ३४ ॥ देवदेव ॥ मामांहिंसंतु पन्नगाः  
 ॥ ३५ ॥ देवदेव ॥ मामांहिंसंतु हस्तिनः ॥ ३६ ॥  
 देवदेव ॥ मामांहिंसंतुराक्षसाः ॥ ३७ ॥ देवदेव ॥  
 मामांहिंसंतु वह्नयः ॥ ३८ ॥ देवदेव ॥ मामांहिंसंतु  
 सिंहकाः ॥ ३९ ॥ देवदेव ॥ मामांहिंसंतु दुर्ज्जनाः  
 ॥ ४० ॥ देवदेव ॥ मामांहिंसंतु चूमिपाः ॥ ४१ ॥ श्री  
 गौतमस्य यामुद्रा ॥ तस्यायाजुविलब्धयः ॥ तान्निरञ्ज्यु  
 यतज्योति ॥ रहंसर्वनिधीश्वरः ॥ ४२ ॥ पातालवा

सिनो देवा ॥ देवाञ्छूषीष्ठवासिनः ॥ स्वर्वासिनोपि  
ये देवाः ॥ सर्वे रक्षन्तु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिल  
ब्धयो येतु ॥ परमावधिलब्धयः ॥ ते सर्वे मुनयोदे  
वाः ॥ मां संरक्षन्तु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जनाञ्छूतवेता  
लाः ॥ पिशाचामुज्जलास्तथा ॥ तेसर्वेऽप्यु पशाम्यन्तु दे  
वदेव प्रजावतः ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीश्चमृतिर्लक्ष्मी ॥ गौ  
री चंकी सरस्वती ॥ जया वा विजयानित्या ॥ क्लि  
न्नाजितामद द्रवा ॥ ४६ ॥ कामांगाकामवाणाच ॥  
सानंदानंदमालिनी ॥ माया मायाविनी रौद्री ॥ क  
ला कालीकलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वामहादेव्यो ॥  
वर्त्ततेयाजगत्त्रये ॥ मह्यसर्वाः प्रयत्नन्तु ॥ कांतिंकीर्ति  
धृतिं मतिं ॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्यः सुदुः प्राप्यः श्री  
ऋषिमंरुलस्तवः ॥ जापितस्तीर्थनाथेन जगत्त्राण कृ  
तेनयः ॥ ४९ ॥ रणेराजकुलेवह्नौ ॥ जलेऽप्युर्गे गजे ह  
रौ ॥ श्मशाने विपिने घोरे ॥ स्मृतो रक्षति मानवं  
॥ ५० ॥ राज्यत्रष्टा निजं राज्यं ॥ पदत्रष्टा निजं प  
दं ॥ लक्ष्मीञ्छूषानिजां लक्ष्मी ॥ प्राप्नुवंति न संश  
यः ॥ ५१ ॥ चार्यार्थीलक्षते चार्या ॥ पुत्रार्थी लक्षते  
सुतं ॥ वित्तार्थी लक्षते वित्त ॥ नरः स्वरण मात्रतः  
॥ ५२ ॥ स्वर्णैरूप्ये पटेकांस्ये ॥ लिखित्वा यस्तु पूज  
येत् ॥ तस्यैवाष्टमहासिद्धिः ॥ गृहेवसति शाश्वती  
॥ ५३ ॥ नृज्यपत्रेलिखित्वदं ॥ गलके मूर्ध्नि वाञ्छुजं ॥  
धारितं सर्वदा दिव्यं ॥ सर्वजीति विनाशकं ॥ ५४ ॥

ठाण ॥ ३० ॥ सिलावटो सीरोही वसे ॥ कोढपरा  
 जवियो किसमिसै ॥ तिहां थकी तू इहां आणजे ॥  
 सत्यवचन माहरो मान जे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मनथि  
 र थापियो ॥ सिलावटनें सुहणो दियो ॥ रोगगमी  
 नें पूरुं आस ॥ पास तणो मंके आवास ॥ ३२ ॥  
 सुपन माहे मान्यो तेवैण ॥ हेम वरण देखाड्यो  
 नैण ॥ गोठी मनह मनोरथ हुवा ॥ सिलावटने  
 गया तेनुवा ॥ ३३ ॥ सिला वटो आवै समरो ॥  
 जीमें खीरखांरु घृत चूरमो ॥ घमै घाट करै कोर  
 णी ॥ लगन जलै पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ अंजश कीधी  
 पूतली ॥ नाटक कौतिक करती रखी ॥ रंग मंरुप  
 रलियामणो रसै ॥ जोतां मानवनो मन हसै ॥ ३५ ॥  
 नीपायो पूरो प्रासाद ॥ स्वर्गसमो मंडे संवाद ॥  
 दिवस विचारी ईडोघड्यो ॥ ततखिण देवल ऊपर  
 चड्यो ॥ ३६ ॥ शुज लगन शुज बेलावास ॥ पद्मासण  
 वैठा श्रीपास ॥ महिमा मोटी मेरुसमान ॥ एकल  
 मद्धवगडे रहै वान ॥ ३७ ॥ वात पुराणी में सांज  
 ली ॥ तवन मांहि सूधी सांकली ॥ गोठी तणा  
 गोतरिया अठै ॥ यात्र करीनें परणे पठै ॥ ३८ ॥ (दूहा)  
 विघन विडारण यद्द जगि ॥ तेहनो अकल सरूप ॥  
 प्रीतकरी श्रीसंघनें ॥ देखाडै निजरूप ॥ ३९ ॥ गिरु  
 ओ गौरी पासजिन ॥ आपै अरथजंकार ॥ सानि  
 ध करै श्रीसंघनें ॥ आस्या पूरणहार ॥ ४० ॥ नील

पलाणै नीलहय ॥ नीलो थइ असवार ॥ मारग  
चूकामानवी ॥ बाट दिखावण हार ॥ ४१ ॥ (ढाल)  
घरण अढार तणो लहै जोग ॥ विघन निवारै टालै  
रोग ॥ पवित्र थइ समरै जे जाप ॥ टालै सगला  
पाप संताप ॥ ४२ ॥ निरधनने घरि धन नो सूत्र ॥  
आपै अपुत्रीयानें पुत्र ॥ कायरनें सूरापण धरै ॥  
पार उतारै लढी वरै ॥ ४३ ॥ दो जागीनें दै सोजा  
ग ॥ पगविहूणानें आपै पग ॥ ठामनही तेहनें द्यौग  
म ॥ बढित पूरै अजिराम ॥ ४४ ॥ निरधास्या नें छे  
आधार ॥ जवसायर उतारै पार ॥ आरतीआनी आर  
त जंग ॥ धरे ध्यान ते लहै सुरंग ॥ ४५ ॥ समख्यां  
सहाय दीयै यक्ष राज ॥ तेहना मोटा अठै दिवाज ॥  
बुद्धि हीणनें बुद्धि प्रकास ॥ गूंगानें द्यौ वचन विला  
स ॥ ४६ ॥ दुखियांने सुखनो दातार ॥ जय जंजण  
रंजण अवतार ॥ बंधन तूटै वेडी तणा ॥ श्रीपार्श्व  
नाम अक्षर समरणा ॥ ४७ ॥ ( दूहा ) श्रीपार्श्व  
नाम अक्षर जपै ॥ विश्वानर विसराल ॥ हस्ति यूथ  
दूरेटले ॥ दुद्धरसीह सियाल ॥ ४८ ॥ चोर तणा  
जयचकवै ॥ विष अमृत उडकार ॥ विपधरनो विप  
उतारै ॥ संग्रामे जयजयकार ॥ ४९ ॥ रोग दालिद्र  
दु.ख ॥ दोहग दूर पुलाय ॥ परमेसर श्री पासनो ॥  
महिमा मन्त्र जपाय ॥ ५० ॥ ( कम्बुखानीचाल ) १  
उंजितुं उंजितुं उंज उपसम धरी ॥ उँ ही श्री श्री

पार्श्व अक्षर जपंतै ॥ चूतनें प्रेत जोटिंग व्यंतर  
 सुरा उपसमै ॥ वार इकवीस गुणंतै ॥ ५१ ॥ ( उं० )  
 डुळरा रोग सोगा जरा जंतनें ॥ ताव एकांतरा  
 डुत्तपंतै ॥ गर्जबंधन ब्रणं सर्पवित्रू विषं ॥ चालिका  
 वालमेवा ऊखंतै ॥ ५२ ॥ ( उं ) साइणी माइणी  
 रोहणी रंकणी ॥ फोटका मोटका दोषहुंतै ॥ दाढ  
 उंदरतणी कोल नोला तणी ॥ खान सीयाल विक  
 रालदंतै ॥ ५३ ॥ ( उं ) धरणेंद्र पदमावती समर  
 सोजावती ॥ वाट आघाट अटवी अटंतै ॥ लखमी  
 लीलामिलै सुजस वेला वलै ॥ सयल आस्या फलै  
 मन हसंतै ॥ ५४ ॥ ( उं० ॥ अष्टमहाजंय हरै कान  
 पीका टलै ॥ ऊतरै सूल सीसगजणंतै ॥ वदत वर  
 प्रीतसुं प्रीति विमला प्रभू ॥ श्रीपास जिण नाम  
 अजिराम मंतै ॥ ५५ ॥ ( उं जितु ) इति श्रीगोडी  
 पार्श्वनाथ जी वृद्ध स्तवन समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीजीरुजंजन पार्श्वनाथ ठंद ॥

॥ जुजंगी ठंदनी चाल ॥

॥ वारु विश्वमां देश काशी विराजे, जिहां जान्ह  
 वी नीर गंजीर गाजे ॥ पुरी नाम वाराणसी तिहां  
 प्रसिद्धि, शोजा स्वर्गनी जिणे उलाढी लीधी ॥ १ ॥  
 घणुं शुं वखाणे कवि घाट तेहनो, सहु चित्त चाहे  
 जीवा रूप जेहनो ॥ धराधीश तिहां खड्गधारी धरा  
 ने पावे, प्रेमशुं अश्वसेनाजिधाने ॥ २ ॥ वामा तेह

नी गेहनी रूपे रंजा, शीले सर्व नारी जीती ए अचं  
 ना ॥ सदा सुंदरी ते सोहे चंद्र वयणी, सुती सेज  
 मां एकदा मध्य रयणी ॥ ३ ॥ सुरलोक दशमां थकी  
 जे सनूरे, प्रभुपार्श्व वामाकुखे पुण्यपूरे ॥ चतुर्थिदिने  
 चैत्रनी कृष्ण पक्षे, वस्या गर्जवासे विशाखा सुरक्षे  
 ॥ ४ ॥ देवी चौढ सुहृणां तदा दिव्य देखे, महामो  
 द पामी माने तेह देखे ॥ जायो पोश मासे दशमी  
 अंधारी, आखाविश्वनो जेह उद्योतकारी ॥ ५ ॥  
 मलि दिगकुमारी सुरेंद्रे मलायो, गायो हूलरायो  
 पूजीने वधायो ॥ वधंते प्रभु यौवने जाम जायो,  
 प्रजावती राज कन्या प्रणायो ॥ ६ ॥ विषय जोग  
 विलशी वस्या गृहवासे, वरश त्रीशमे व्रत लीधुं  
 उद्धासे ॥ श्याशी रात्रि मौने रह्या मुक्ति वासी, तप  
 स्या करी शुक्ल ध्यानाज्यासी, ॥ ७ ॥ चोखे चित्त निर  
 दोष चारित्र पाद्री, बहु कर्मना वृक्षनां मूल वाली ॥  
 थया केवली चैत्रनी कृष्ण चोखे, देखे लोक अलोकने  
 ज्ञान ज्योते ॥ ८ ॥ मली देवताये महामोदधारी, कस्यो  
 त्रिगडो विश्व व्यामोहकारी ॥ स्वामी दिव्य सिंहासने  
 वेठासोहे ॥ बारे परखदानां बहु मन्त्रमोहे ॥ ९ ॥  
 नवे नेहशुं एहने जे निहाले ॥ त्रिधा ताप संताप ते छूर  
 टाले ॥ अहो एक नजरे जिणे एह दीगो, मुने मान  
 खो तेहनो लागे मीगो ॥ १० ॥ ढीये देशना दीन  
 बंधु दयानी, प्राणी पुण्य पामी सुणो जैन वाणी ॥



लही दुर्लभं मानवं ए शरीरं, मुधा कां गमोढो बुध  
 बोध हीरं ॥ ११ ॥ मदे जेह माता पड्या मोह पा  
 से, धने जेह धाता विषयने विलासे ॥ मुंजाया मुग्ध  
 माया तणा फंद मांही, मिथ्या ते ग्रस्या शुरूने ते न  
 चाही ॥ १२ ॥ धरे धर्मने जे होइ धर्म धोरी, तजी  
 कर्मने ते कापे कर्म दोरी ॥ नजी शुरूने ते लहे शुरू  
 हेतु, आय तेह मिथ्यातनो धूम केतु ॥ १३ ॥ वसी  
 वासना जेहनी जैन वयणे, नावे आमलो तेहने को  
 इ नयणे ॥ जेहनां चित्त सिद्धांत मांहे रमेठे, किम  
 तेह जूला कहोने जमेठे ॥ १४ ॥ मिथ्याते लीना  
 तेहने ते गमेठे, दोषी जीवना ते जिहां तिहां दमे  
 ठे ॥ फरी लाख चोराशीना फेर मांहे, विना नाथ  
 तेहने धरे कोण वाहे ॥ १५ ॥ जिणे जैन सिद्धांत  
 नी युक्ति जाणी, कहोनेकोइ तेहने गमे अन्यवाणी ॥  
 हीरे जे हव्यो जलखी हेत आणी, कहो किम  
 ते संग्रहे काच प्राणी ॥ १६ ॥ देइ देशनाने प्रभु  
 तीर्थ आपे, जग जंतु बंधुपणे बोध आपे ॥ सही मं  
 रुदे विचरे जेम वायु, पुरं जोगवी एकसो वर्ष आयु  
 ॥ १७ ॥ मासे श्रावणे शैल समेत श्रृंगे, वश्या श्वेत  
 पट्टी दिने मुक्तिसंगे ॥ प्रभु जीव जंजन नामे नजं  
 ता, जांजे जीडने सुख आपे अनंता ॥ १८ ॥ सेवो  
 शुद्ध बुद्धे सदा बोध दाता, नजो नाव नक्ते प्रभु  
 भूत नाता ॥ सेव्यो हेजशुं एह सहजे सधारे,

पूज्यो प्रैमशुं पापना बंध वारे ॥ १९ ॥ वधे बंदतां  
संपदा जे वधारे, धखुं ध्यानमां सेवकां वाहे धारे ॥  
अच्यों उल्लटे आपदाथी उगारे, स्तव्यो त्रिविधे जेह  
संसार तारे ॥ २० ॥ नम्यो नेहशुं जेह नवेनिद्धि  
आपे, कीजे चाकरी तो चारे गति कापे ॥ जोतां  
जेहनी आदि कोई न जाणे, कवि तेहना गुण केता  
वखाणे ॥ २१ ॥ नमो नाथ अनाथ सनाथ कारी,  
नमस्ते अरूपी बहु रूपधारी ॥ नमो बुद्धि शुद्धा  
तमा सिद्धि जर्ता, नमो पारगामी नमो सौख्य कर्ता  
॥ २२ ॥ नमो मुक्ति दाता नमो तु विधाता, नमो  
विश्वनेता नमो तुं विख्याता ॥ नमो सर्व वेदी अवे  
दी नमस्ते नमो शंकरो सर्वव्यापी नमस्ते ॥ २३ ॥  
सेढी वेत्रवलोपकंठे दिदारु, खेकुं हरीआलुं वसे  
गाम वारु ॥ राजे तत्र त्रेवीशमो तीर्थराय, जेहना  
नामथी कोटि कल्याण थाय ॥ २४ ॥ धरणेंद्र पद्मा  
वतीने पसाय, सदा संघना विघ्न हूरे पलाय ॥ उद  
यरल जांखे गाता पार्श्वस्वामी, पूरी आजमेतो नवे  
निद्धिपामी ॥ २५ ॥

॥ अथ सरस्वती अष्टक प्रारंभः ॥

॥ हरिगीत ठंद ॥

॥ बुद्ध विमलकर नाव बुधवर, निरूप रमनी,  
निर खियें ॥ वर देय न बाला, पद प्रवाला, मंत्रमा  
ला हर खियें ॥ स्थिर थानंजा, अति अचंजा, रूप

रंजा चलकती ॥ जजियें जवानी, जगत जानी, राज  
 रानी सरस्वती ॥ १ ॥ सुरराज सेवित, देख दैवत,  
 पद्म पेखत, आसनं ॥ सुखदाय सूरति, माय मूरति,  
 दुःख दुरति निवारनं ॥ त्रिहु लोक नारक, विघ्न  
 वारक, धरा धारक, धरपती ॥ जजियें ॥ २ ॥  
 केवियां कोपित, लोच लोपित, अवनि उपित, ईश्व  
 री ॥ शंतोष धारन, विघन वारन, मदन मारन,  
 महेश्वरी ॥ खल दह्यां खंरुन, ठिड ठंडन, दुष्ट दंरुन,  
 नरपती ॥ जजियें ॥ ३ ॥ शिव शक्तिसाची, रंग राची,  
 अज अजाची, योगिनी ॥ मद ऊरन मत्ता तरन तत्ता,  
 धत्त धत्ता ध्वंगिनी ॥ जिनआणपंति, मन रमंति, धवल  
 दंति, वरमती ॥ जजियें ॥ ४ ॥ जलथल जनानी पव  
 न पानी, मति वखानी, वीजली ॥ गिरवरां गहन,  
 वाघ वाहन, सर्प साहन, शीतली ॥ हृदहांक धारी,  
 हत्त हजारी, धनुष धारी, जगवती ॥ जजियें ॥ ५ ॥  
 ऊणणाट ऊल्लरि, धिधिम धपवरि, रिरिरिरधर, खज्जि  
 यें ॥ धिधिधौंकिधौं, गरुदि धिधिक धिरतं, धिधिक धौंग  
 रुदी गज्जियें ॥ ऊंकिऊंऊं रुरु मतिऊं तत्तकि  
 त्रांत्रां दमकती ॥ जजियें ॥ ६ ॥ रिरि रमकि रमि  
 रिमि, जिजिम जिमि जिमि ठमकि ठम पग रच्चि  
 यें ॥ घम घमकि घम घम ग्रहणिक ग्रहणि, गमअ  
 ति अमग नृत्ति मच्चियें ॥ तत येइय तांनन, मात  
 मानन, अचल आनन दरसती ॥ जजियें ॥ ७ ॥ चव

चक्र चालन, ऊटिक जालन, गर्व गालन, गंजनी ॥  
 विरदां विदारन, महिष मारन, दलिङ्ग दारन, जंज  
 नी ॥ चरचिये चंडी, खलांखंकी, मदन मंडी मलक  
 ती ॥ जजियें ॥ ८ ॥ कविकरे अष्टक, टले कष्टक  
 विसन पृष्टक कज्जियें ॥ मणिमौलि मंडित, पढेपंक्ति  
 त, ए अखंरित पेखियें ॥ दयासुर देवी, सुरांसेवी,  
 नित नमेवी, जगपती ॥ जजियें ॥ ९ ॥ इति समाप्त ॥

॥ अथ क्रोध मान माया लोचनो ठंड ॥

॥ चोपाइ ॥

॥ पद्मेलां सरस्वतीनुं लीजे नाम, चोवीश जिनने  
 करु प्रणाम ॥ क्रोध मान मायाने लोच, जाखुं  
 अर्थ करी थिर थोच ॥ क्रोधें तप कीधो परजले,  
 क्रोधें कर्म घणेरों फले ॥ क्रोधें करणी रूडी जाय,  
 क्रोधें समतारस सूकाय ॥ १ ॥ क्रोध तणे वश कांइ  
 नवि गणे, मातपिता गुरुने अवगणे ॥ क्रोधें पंचेंद्रि  
 य मंजाय, क्रोधें केर घणेरों थाय ॥ २ ॥ क्रोधें  
 विकथा वाधे घणी, क्रोधें कर्म निकाचित जणी ॥  
 क्रोधें वे बंधव आंफले, क्रोधें जरत वाहुंवल लडे ॥  
 ॥ ३ ॥ क्रोधें अचंकारी जटा, क्रोधें परशुं करे खटप  
 टा ॥ क्रोधें अरजुन माखि नाम, महावीर स्वामी  
 किधो सुठाम ॥ ४ ॥ क्रोधें कूड कपट केलवें, क्रोधें  
 जुनि गति मेलवे ॥ क्रोधें फरसराम फरसी फेरवे,  
 क्रोधे सुशुभ दल मेलवे ॥ ५ ॥ क्रोधें ब्रह्मदत्त थयो

कठोर, ब्राह्मण डोला काढ्या जोर ॥ क्रोधें सासु  
 थई नणंद, सुजडासती शिर कीधो फंद ॥ ७ ॥  
 क्रोधें काया कर्मनो बंध, क्रोधें घरमां पैसे धंध ॥  
 क्रोधें चेडो ते महाराय, हल विहल मामा घरजा  
 य ॥ ८ ॥ क्रोधें कोणिक कटकी करे, जांगी विशा  
 ला पढो फरे ॥ क्रोधें लखमणने बलि राम, क्रोधें  
 रावण टाळ्यो ठाम ॥ ९ ॥ क्रोधतणी ठे खोटी वात,  
 कोईन करशो एहनी तात ॥ क्रोधें कर्म घणां बंधा  
 य, क्रोधें दुर्गति परुवा जाय ॥ १० ॥ तेह जणीसहु  
 ठंडो क्रोध, सुख निरवाध लहो बलि बोध ॥ मान  
 तणी हवे सुणजो वात, मानतजे ते सबल सुजात  
 ॥ ११ ॥ माने मान तुरंगें चडे, माने मोह जालमां  
 पडे ॥ माने नीच कुलें अवतरें, माने विनय मूल  
 नविजडे ॥ १२ ॥ माने चउगतिने अनुसरे, माने  
 जंबुक जव मांहे फिरे ॥ शांब प्रद्यम्न कह्यो विचार,  
 माने शियाल तणो अवतार ॥ १३ ॥ माने बलराजा  
 निरधार, ब्राह्मण रूप धर्यो मोरार ॥ मान गयंद  
 तणोठे जोर, बाहुबले ठांड्यो एकठोर ॥ १४ ॥ मान  
 तणीठे बधती बेल, माने नमिया दुखनी रेल ॥ माने  
 वीरमती ते नार, चंदनें कीधो कुर्कट सार ॥ १५ ॥  
 प्रेमला लढी हाथें चक्री, सूरज कुंडे कीधो नर फरी ॥  
 माने दुर्योधन दुःख लहे, माने सर्पनी उपमा कहे  
 ॥ १६ ॥ माने धर्म न पामे कदा, माने कर्म बंधाये

सदा ॥ माने मान वधंतो होय, माने जीव फरे सहु  
 कोय ॥ १७ ॥ माने बुद्ध गलें नर सोय, मान तजे  
 ते सुखियो होय ॥ माने गज असवारी करे, माने  
 जीव अगोचर फिरे ॥ १८ ॥ मानतणी ते ए गति  
 कही, धर्मी नरते सुणजो सही ॥ हवे मायांनो कंह  
 विचार, माया नरक तणो ठे ठार ॥ १९ ॥ मायामोह  
 तणोठे दोष, माया कर्म तणोठे पोष ॥ माया कपटें  
 मद्धिनाथ, माया मोह तणोठे साथ ॥ २० ॥ माया  
 यें कूरु कपट केलवे, माहायें जुंमी गति मेलवे ॥  
 माया मानव जूगोलवे, माया नरनारी शोषवे ॥ २१ ॥  
 माया आखारु भूति मुणींद, मायायें लारु वोंहोस्या  
 फद ॥ माया मोहो टो ठे मकरंद, माया पडिया सू  
 रज चंद ॥ २२ ॥ माया फंद तणीजे जाल, माया सिंह  
 तणीठे फाल ॥ माया अधिक करे उफंड, माया कर्म  
 तणोठे कुरु ॥ २३ ॥ माया मांहे धर्म न थाय, माया  
 पुण्य करे अंतराय ॥ २४ ॥ ठोहोटो महोटो माया  
 धरे, माया सवल संसारें फिरे ॥ माया जालें वांध्यो  
 जीव, मायाये प्राणी करतो रीव ॥ २५ ॥ अर्थ कह्यो  
 मायांनो सार, लोच तणो हवे कहुं विस्तार ॥ लो  
 चे लक्षण जाये सहु, लोचे पनिया दाणव बहु ॥ २६ ॥  
 लोचे लाज घणोरो थाय, लोचे नरनारी उजाय ॥ लो  
 चे गांमो घेलो होय, लोचे धर्म न जाणे कोय ॥ २७ ॥  
 लोचे सागर दत्त जलमां पळ्यो, लोच सुचुस चक्रीने

नढ्यो ॥ लोभे संचय धननो करे, माखी जिम महू  
 आलें फिरे ॥ १८ ॥ लोभे धन नवि खरचे धणी,  
 वागुल जव पामशे कां फणी ॥ लोभे देश विदेशें  
 जाय, लोभे नरनारी अफलाय ॥ १९ ॥ पुण्य होय  
 तो पामें वली, वेठा धर्म करो मन रली ॥ क्रोध लो  
 जनो ठांमोपास, श्रावक धर्म करी उद्दास ॥ २० ॥  
 लोभे नाना मोटो जीव, लोभे अकार्य करे सदीव ॥  
 लोभ तणी गति ठांमो सार, तीर्थयात्र करो उदार  
 ॥ २१ ॥ अढार पांत्रीसा वरश मजार, वागमुदेश  
 वडो डुसारा॥देवदर्शनकरोसुखकार, पामो जिम जव  
 सायर पार ॥ २२ ॥ क्रोध मान माया नो संग, वली  
 ठांडो लोभ प्रसंग ॥ कहे कवि सुणो पंक्ति राय,  
 कांतिविजय हरखे गुण गाय ॥ २३ ॥

॥ अथ श्रीमण्णिज्जजीनो ठंद प्रारंजः ॥

॥ श्री मण्णिज्ज सदा समरो, उर बीचमें ध्यान  
 अखंरु धरो ॥ जपियां जय जयकार करो, जजियां  
 सहु नित्य जंमार जरो ॥ १ ॥ जेकुशल करे नामज  
 क्षियां, आनंद करे देव आश कियां ॥ सौजाग्य वधे  
 जग सहस्सगुणो, दिलसेव्यादे प्रजु जश डुगुणो ॥ २ ॥  
 अरियण सहु अलगा जागे, विरुआवैरी जन पाय  
 लागे ॥ संकट शोक वियोग हरे, उंण वेला आय  
 सहाय करे ॥ ३ ॥ जूत जयंकर सहु जागे, जद  
 योगणी सायणी नवि लागे ॥ वाय चोराशी जायअ

लगी, लखमी सहु आय मले वेगी ॥ ४ ॥ गुल पा  
पनियां गुरुवार दिने, लापसिया लारु शुद्ध मने ॥  
धुप दिप नैवेद्य धरो, आठम दिन पूजा अवश्य क  
रो ॥ ५ ॥ जेहने दिनप्रति जाप सदा, तस सुपनांतरमे  
प्रत्यक्ष कदा ॥ जपियां सहु जाये आपदा, कोश  
मणा घरे रहे न कदा ॥ ६ ॥ मुहमद सारु तमें जस  
करी, गुण सार जिस्थो तमें गुण कस्थो ॥ श्री दी  
ना नाथजी दया करो, शिर उपर हाथ दियो सख  
रो ॥ ७ ॥ जत्रियण जे जावे जजशे, कारज सिद्धि  
आपणी करशे ॥ पूज्यां पुत्र वधे दुगणा, किणी वा  
तें कदि रहें नहि जंणा ॥ ८ ॥ श्री मणिजद्र मनमें  
ध्यावो, सुख संपत्ति जहु वेगें पावो ॥ लक्ष्मी कीर्तिवर  
आप लहे, शिवकीर्ति मुनि एम सुजस कहे ॥ ९ ॥

॥ अथश्रीमणिजद्रजीनी आरति प्रारंभः ॥

॥ जय जय निधि, जय माणिक देवा ॥ जयमा० ॥  
हरि हर ब्रह्म पुरंदर, करता तुज सेवा ॥ जयदेव  
जयदेव ॥ १ ॥ तुं वीराधिप वीरा, तुं वंठित दाता ॥  
तुंव० ॥ माता पिता तुं सहोदर, तो प्रभु जगन्नाता  
॥ जय दे० ॥ २ ॥ हरि करी बंधन उदधी, फणिधर  
अरि अनला ॥ फणि० ॥ ए तुज नामे नासे, साते  
जय सधला ॥ जयदे० ॥ ३ ॥ काक त्रिसुल फूल  
माला, पासांकुस ठाजें ॥ पासां० ॥ एक कर दाणव  
मस्तक, एम पट् तुज राजे ॥ जयदे० ॥ ४ ॥ तुं



जैरव तुं किन्नर, तुं जग महादीवो ॥ तुंज० ॥ काम  
 कदपतरु धेनु, तुं प्रभु चिरंजीवो ॥ जयदे० ॥ ५ ॥  
 तपगहपति सुरि, ध्यावे तुज ध्यानं ॥ ध्यावे० ॥ मणि  
 जड जडंकर, आशा विसरामं ॥ जयदे० ॥ ६ ॥  
 संवत् अठारहसैं पांसठ, श्री माधव मास ॥ श्रीमा० ॥  
 दीपविजय कविरायनी, पूरो सहु आस ॥ जयदे० ॥  
 ॥ ७ ॥ इति श्रीमणिजडजीनी आरति ॥

॥ अथ ज्वर ( ताव ) ठंद ॥

॥ दोहा ॥

॥ ॐ नमो आनंद पुरनगरे, अजयपाल राजान ॥  
 साता अजया जनमियो, ज्वर तुं कृपा निधान ॥ १ ॥  
 सातरूप शक्ति हुज, करवा खेल जगत्त ॥ नाम धरा  
 वे जूजुवा पसख्यो तुं इत्त उत्त ॥ २ ॥ एकांतरो  
 वेयांतरो, त्रयो चोथो ताम, शीत उष्ण विषम  
 ज्वरो, ए साते तुज नाम ॥ ३ ॥

॥ ठंद ॥

॥ ए साते तुज नाम सुरंगा, जपता पूरे कोरि  
 उमंगा ॥ तैं नाम्या जे जालिम जूगां, जगमां व्यापी  
 तुज जस गंगा ॥ ४ ॥ तुज आगे चूपति सब रंका,  
 त्रिचूवनमां वाजे तुज रुंका ॥ माने नहिं तुं केहनी  
 शंका, तूवो आपे सोवन टका ॥ ५ ॥ साधक सिद्ध  
 तणा मद मोडे, असुर सुरा तुज आगल दोडे ॥ दुष्ट  
 धीछना कंधर तोडे, नमीचाखे तेहने तुं ठोडे ॥ ६ ॥

आवंतो थरहर कंपावे, काह्याने जिम तिम वहकावे  
 पहिलो तुं केडमां थी आवे, सात शिरख पण शीत  
 न जावे ॥ ७ ॥ ह्रीं ह्रीं हुं हुंकार करावे, पांशलिया  
 हासां करुणावे ॥ उनाळे पण अमल जगावे, तापें  
 पहिरणमां मूतरावे ॥ ८ ॥ आशो कार्तिकमां तुज  
 जोरो, हव्यो न माने धागो दोरो ॥ देश विदेश  
 पन्नावे शोरो, करे सर्व तुं तातो तोरो ॥ ९ ॥ तुं  
 हाथीनां हाडां जंजे, पापीने ताडे करपंजे ॥ जक्ति  
 वत्सल जावे जो रंजे, तो सेवकने कोय न गंजे ॥ १० ॥  
 फोमक तोमक कमरु नाकं, सुरपति सरिखा माने  
 हाकं ॥ धमके धुंसड धांसरु धाकं, चढतो चाले चंच  
 ल चाकं ॥ ११ ॥ पिशुन पठारुण नहीको तोथी,  
 तुज जस जीव्या जाय न कोथी ॥ शी अणखील  
 करो ए थोथी, मेहर करी अलगा रहो मोथी ॥ १२ ॥  
 जक्त थकी एवमीकां खेम्हो, अवल अमिनां ठांटां  
 रेडो ॥ लाखा जक्तनो ए निवेम्हो, महाराज मूको  
 मुज केम्हो ॥ १३ ॥ लाजवसोमां अजया राणी, गुरु  
 आण मानो गुण खाणी ॥ घरें सिवावोकरुणा आणी,  
 कहुंदु नाके लीटी ताणी ॥ १४ ॥ मंत्र सहित ए  
 ठंदजे पढशे, तेहने ताव कदी नव चढशे ॥ कांति  
 बल देही नीरोगं, लेहेशे लखमी लीला जोगं ॥ १५ ॥

॥ ॐ नमो धरि आदि, वीज गुरु नाम वदीजें ॥  
 आनंदपुर अवनीश, अजयपाल आखीजें ॥ अजया

जात अढार, वांचिये साते वेटा ॥ जपतां एहिज  
जाप, जक्तसुं न करे खेटा ॥ उतरें अंग चढियो पद  
कमे, तारा वयणें मुदा ॥ कहे कांति रोग नावे कदि,  
सार मंत्र गणियें सदा ॥ १६ ॥ इति ज्वरठंद समा  
प्त ॥ ए ठंद सात वार, अथवा एकवीश वार सांज  
ले गणे तो ताप जतो रहे ॥

॥ अथ श्री यंत्र महिमा वर्णन ठंद ॥

॥ चोपाइ ॥

॥ जिण चोवीशे पय प्रणमेवि, सह गुरु तणा व  
चन निशुणेवि ॥ यंत्र तणो महिमा अति घणो, जावे  
बोळुं जवियण सुणो ॥ १ ॥ शोळे कोठे लखियें वी  
श, सघला जय टाळे जगदीश ॥ अठावीसमां रोग  
जय हरे, वत्रीसैं द्युति जय करे ॥ २ ॥ त्रीशे वलि  
सायणि नासंति, वत्रीसे सुख प्रसवते हुति ॥ देवध्व  
जा जो लखियें इमें, परचक्र जय न होवे किमें ॥  
॥ ३ ॥ घर वारणे जो लखियें एह, कामण नव परा  
जवे तेह ॥ शाकणि संहारी न हुवे तिहां, चोत्रीसो  
यंत्र लखिये जिहां ॥ ४ ॥ चाळिसे शीस रोग टले,  
पागे वयरी हेला दळे ॥ अने वली ठाकरवे बहु मान  
वसुधा वलि वधारे वान ॥ ५ ॥ वासठे वंध्या गर्जज  
धरे, एसा वयण सद्गुरु उच्चरे ॥ चोसठनो महीमा  
ठे घणो, मार्गे जय न होय कोइ तणो ॥ ६ ॥ वारि  
जय रिपु शाकणि तणां, चोसठना महिमा नहिं म

णां ॥ वावत्तरीचूत चूरि जेह जूंजे नर जय पामे ते  
 ह ॥ ९ ॥ पंचाशी पंथे जय हरे, अद्योतरशो शिव  
 सुख करे ॥ बीसोत्तरशो नयणे निरखंत, प्रवस वेद  
 न ते नवि हुंत ॥ ८ ॥ वावनशोनो उली नीर, मुख  
 धोवे हुवे वाहालो वीर ॥ सतरिसयनो महिमा अ  
 नंत, तुठ बुद्धि किम जाणे जंत ॥ ७ ॥ एकसो बहु  
 त्तरो यंत्र प्रभाव, बालकने टाले दुष्ट नाव ॥ विहुंसो  
 नो यंत्र लखियें वार, वाणिज्य घणां होय हाट मजा  
 र ॥ १० ॥ त्रणशे नरनारीनो नेह, विंणठो वाधे  
 नही संदेह ॥ चारशे घर जय नवि होय, कण उत्प  
 त्ति घणी खेत्रे जोय ॥ ११ ॥ पांचसे महिला गर्जज  
 धरे, पुरुषहने पुत्र संतति करे ॥ ठसे यंत्र होये सुख  
 कार, सातसे जगडे होये जय कार ॥ १२ ॥ नवसें  
 पंथे न लागे चोर, दशसें दुःखन पराजवे घोर ॥  
 झग्यारसें ठे जे जीव दुष्ट, तेहना जय टाले उत्कृष्ट  
 ॥ १३ ॥ बंदि मोक्ष वारसे होय, दश सहसे पुनः ते  
 हिजहोय ॥ बली सयलनीरक्षा करे, एमयंत्र तणी  
 महिमा विस्तरे ॥ १४ ॥ पंचाससे राजादिक मान,  
 शाकणि दोष निवारण ग्यान ॥ कंठे तथा मस्तक  
 जे धरे, अशुभ कर्मते शुद्ध करे ॥ १५ ॥ वावनना  
 नो मस्तके तथा, कंठे खेत्रपालनो हित सदा ॥ पण  
 यालीस शिर कंठे होय, सर्व वश्य थाय तस जोय ॥  
 ॥ १६ ॥ कुंकुम गोरोचंदन सार, मृगमदसों चौदश

रवि वार ॥ पवित्र पाणें पुण्य मूल नक्षत्र, एकमनां  
जो लखियें यंत्र ॥१७॥ पार्श्व जिनेश्वर तणे पसाय,  
अलिय विघन सब दूर पलाय ॥ पंक्ति अमर सुंद  
र इम कहे, पूजे परमारथ सब लहे ॥ १८ ॥

॥ अथ मंगल चार ॥

॥ सिद्धार्थ जूपति शोहे क्षत्रियकुंभें, तस घेर  
त्रिशलाकामिनीए ॥ गजवर गामिनी पोढीय जामि  
नी, चउद सुपन लहे जामिनी ए ॥ त्रुटक जामि  
नी मध्ये शोचतांरे, सुपनदेखे वाल ॥ मयगल रूप  
जनें केसरी, कमला कुसुमनो माल ॥ इंदु दिनकर  
ध्वजा सुंदर, कलश मंगल रूप ॥ पद्म सरजलनिधि  
उत्तम, अमर विमान अनूप ॥ रत्ननो अंवार उज्ज्व  
ल, वन्हि निर्धूम ज्योत ॥ कल्याण मंगलकारी माहा,  
करत जग उद्योत चउद सुपन सूचित विश्व पूजि  
त, सकल सुख दातार ॥ मंगल पहेलुं बोली एए,  
श्री वीर जगदाधार ॥ १ ॥ मगध देशमां नयरी  
राजगृही, श्रेणिक नामें नरेशरू ए ॥ धनवर गोवर  
गाम वसे तिहां, वसुज्जुति विप्र मनोहर ए ॥ त्रुट  
क ॥ मनोहर तस मानिनी, पृथिवी नामें नार ॥  
इंद्रजुति आदेश्य ठे, त्रण पुत्र तेहने सार ॥ यज्ञकर्म  
तेणें आदर्युं, बहु विप्रने समुदाय ॥ तेणें समे ति  
हां समोसख्या, चौवीशमा जिनराय ॥ उपदेश तेह  
नो सांजली, लीधो संजमचार ॥ अगीयार गणधर

थापीया, श्रीवीरें तेणी वार॥ ईन्द्रजूति गुरुजगतें थयो  
 माहा लब्धिनो जंमार ॥ मंगल वीजु बोलीयें, श्री  
 गौतम प्रथम गणधार ॥ २ ॥ नंद नरिंदनो पामली  
 पुरवरें, सकलाल नामें मंत्री सरू ए ॥ लाठलदे  
 तस नारी अनुपम, शीयलवती बहुसुखकरू ए ॥ त्रु  
 टक ॥ सुखकरू संतान नव दोय, पुत्र पुत्री सात ॥  
 शीयलवंतमां शिरोमणि, श्रूलीजद्र जग विख्यात ॥  
 मोह वशें वेश्या मंदिर, वस्या वर्षजवार ॥ जोग  
 जली पेरें जोगव्या, ते जाणे सहु संसार ॥ शुरू  
 संजम पामी विषय वामी, पामी गुरु आदेश ॥  
 कोश्या आवासें रह्यो निश्चल, रुग्यो नहीं लवलेश ॥  
 शुरू शीयल पाले विषय टाळे, जगमां जे नर नार ॥  
 मंगल त्रीजुं बोलीए, श्रीश्रूलीजद्र अणगार ॥ ३ ॥  
 हेममणि रूप मय धरित अनुपम, जडित कोशीसां  
 तेजेंजगेए ॥ सुरपति निर्मित त्रण गढ शोचित, मध्य  
 सिंहासन जगमगे ए ॥ त्रुटक ॥ जगमगे जिन सिं  
 हासने ए, वाजिन्न कोमाकोरु ॥ चार निकायना दे  
 वता, ते सेवे वेहुकरजोड ॥ प्रातिहारज आठशुं रे,  
 घोत्रीश अतिशयवंत ॥ समवसरणें विश्वनायक, शो  
 ने श्री जगवंत ॥ सुरनर किन्नर मानवी, वेठीते पर्प  
 दा वार ॥ उपदेश दे अरिहंतजी, धर्मना चारप्रका  
 रा॥ दान शीयल तप जावना रे, टाळे सघलां कर्म ॥  
 मंगल चोशुं बोलीयें, जगमांहे श्रीजिनधर्म ॥ ए

चार मंगल गावशेजे, प्रजातें धरी प्रेम ॥ ते कोनि  
मंगल पामशे, उदयरल जांखेएस ॥ ४ ॥

॥ अथ श्रीरुचंजन पार्श्वनाथनो ठंद ॥

॥ फूलणा ठंद प्रजाती ॥ श्रीरुचंजन प्रभु श्रीरु  
चंजन सदा, नहिंकदा निष्फल थायसेवा ॥ नविजन  
जावशुं नजन मांही नजे, परमपद संपदा तखत  
लेवा ॥ १ ॥ काशी वणारसी जिनपद पुरे जयो,  
वामा अश्वसेन सुत विश्वदीवो ॥ सेढीवेत्रक तटे  
खेटकपुरतपें, कदपनी कोड कृपाल जीवो ॥ २ ॥  
श्रीरु नव त्रित्तिनय जावठ चंजणो, नक्ति जनरंज  
णोजावें नेट्यो ॥ आज जिनराज मुज काज सिखा  
सवे, मोह राजाननो मान मेट्यो ॥ ३ ॥ कोटि मन  
कामना सुजस बहु ठामना, शिवसुख धामना आज  
साध्यां ॥ मंगल मालिका आज दीपालिका, मुज मन  
मंदिरें मोज वाध्या ॥ ४ ॥ पाठकें ठाठमें कात्ति वढ  
आठमें, सतर अट्योत्तरें पासगायो ॥ उदयनिज व  
सनो एह अरदास सुणि, हितधरी नाथजी हाथ  
सायो ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री गौतम गुरु प्रजात ठंद ॥

जयोजयो गौतम गणधार, मोटी लब्धितणो व  
डार ॥ समरे वंठित सुख दातार, जयो जयो गौतम  
गणधार ॥ १ ॥ वीरवजीरवको अणगार, चौद हजा  
मुनि शिर दार ॥ जपतां नाम होय जयकार ॥ २ ॥

यो० ॥ २ ॥ गय गमणी रमणी जग सार, पुत्र कल  
त्र सज्जन परिवार ॥ आपे कनक कोमि विस्तार ॥  
जयो० ॥ ३ ॥ घरे घोडा पायक नहीं पार, सुखासन  
पालखी उदार ॥ बैरी विकट थाये विसराल ॥  
जयो० ॥ ४ ॥ ग्रह उठी जपियें गणधार, रुद्धि  
सिद्धि कमला दातार ॥ रूपरेख मयण अवतार  
॥ जयो० ॥ ५ ॥ कवि रूप चंद गुरु केरो शिष्य,  
गौतम गुरु प्रणमो निशदिस ॥ कहे गुण चंद ए  
शमता गार ॥ जयो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वनाथ ठंड ॥

॥ चोपाइ ॥ सकलसार सुरतरु जगजाणं, जसु  
जस वास जगत परिमाणं ॥ सकल देव शिरमुगुट  
सुचंगं, नमो नमो जिनपति मनरंगं ॥ १ ॥ पारुधी  
छंद ॥ जो जन मन रंगं, अकल अचंगं, तेज तुरं  
गं नीलंगं ॥ सवि शोभा संगं, दग्ध अनंगं, शिश  
जुजंगं चतुरंग ॥ बहु पुण्य प्रसंगं, नित्य उठरंगं,  
नव नव रंगं नारंगं ॥ कीरति जलगंगं, देश डुरंगं,  
सुरपति संगं सारंगं ॥ १ ॥ सारंगा वक्रं, पुण्य पवि  
त्रं, रुचिर चरित्र जीवित्रं ॥ तेजो जित मित्रं, पंक  
ज पत्रं, निर्मल नेत्रं सावित्रं ॥ जग जीवन मित्रं,  
तरु सत सत्रं, मित्रामित्र मावित्रं ॥ विश्वत्रय चित्रं,  
चामर ठत्रं, सीस धरित्रं पावित्रं ॥ २ ॥ पावित्रा  
चरणं, त्रिजुवन सरणं मुगुटा चरणं आचरणं ॥ सुर



अर्चित चरणं, शिव सुख करणं, दारिद्र्य हरणं,  
 आवरणं ॥ सुख संपत्ति चरणं जवजल तरणं, अध  
 संहरणं, उद्धरणं ॥ गोश्रमृत ऊरणं, जन मन हर  
 णं, वरणावरणं आदरणं ॥ ३ ॥ आदरणां पालं,  
 काकजमालं, नित नूपालं अयुपालं ॥ अष्टमी शशि  
 समजालं, देव दयालं, चैतन चालं सुकमालं ॥ त्रिभु  
 वन रखवालं, महाडुकालं, महाविकरालं, जय  
 टालं ॥ शृंगार रसालं, महकेमालं, हृदयविशालं  
 नूपालं ॥ ४ ॥ कलश ॥ ठप्पय ॥ अकल रूप उदा  
 र, सार शिव संपत्ति कारक ॥ रोग सोग संताप,  
 डुरिय दुह दुःख निवारक ॥ चिहुं दिश आण  
 अखंरु, चंरु तप तेज दिणंदह ॥ अमर अपठर  
 कोरि, गावे जस नमे नरिंदह ॥ श्री शंखेश्वर सुर  
 मणि, पाय अधिक मंगल नीलो ॥ मुनि मेघराज कहे  
 जिनवर जयो. श्रीपार्श्वनाथ त्रिभुवन तिलो ॥ ५ ॥

॥ अथ गोमीपार्श्वनाथनो ठंद ॥

॥ दोहा ॥ धवलधिग गोमी धणी, सेवक जन  
 साधार ॥ पंचम आरे पेखियें, साहिव जग आ  
 धार ॥ १ ॥ जुजंग प्रयात वृत्तं ॥ तजोमान माया  
 जजो जाव आणी, वामानंदनें सेवियें सार जाणी ॥  
 जुवो नाग नागिणी नाथ ध्यानें, पाम्या शक्रनी संप  
 दा बोधि दानें ॥ २ ॥ वस्या पाटणें काल केतो  
 धरामां, पधास्या पळे प्रेमजुं पार करमां ॥ थलीमा

बली वास कीधो विचारी, पूरे लोकनी आश त्रैलो  
क्य धारी ॥ ३ ॥ धरी हाथमां लाल कव्वान  
रंगें, ॥ जिनी गातनी, रातनी नील अंगें ॥ चडी  
नीलमे तेजीयें विघ्न वारे, अराध्या थकां पंथ चूलां  
सधारे ॥ ४ ॥ जेणें पाशगोनी तणा पाय पूज्या,  
शत्रु सर्वदा तेहना सर्व धूज्या ॥ सर्व देव देवी  
थयां आज ठोटां, प्रभु पार्श्वनां एक प्राक्रम मोहो  
टां ॥ ५ ॥ गोनी आप जोरे नव खंरु गाजे, जेह  
थी शाकिनी डाकिनी दूर जाजे ॥ पुरे कामना पार्श्व  
गोडी प्रसिद्धो, हेलां मोहराज जेणें जेर कीधो  
॥ ६ ॥ महा दुष्ट दुर्दंत जे भूत भूडा, प्रभु नाम  
पामें सर्वत्रास गुंता, जरा जन्मने रोगनां मूल कापे,  
आरध्यो सदा संपदा सुख आपे ॥ ७ ॥ उदय रत्न  
चांखे नमो पार्श्व गोडी, नाखो नाथजी दुःखनी  
जाल त्रोडी ॥ ८ ॥

अथ चोत्रीस अतिशयनो ठंद ॥

॥ श्री सुमति दायक, दुरित घायक, ज्ञान अनु  
भव श्रीवरी ॥ तस सुगुरु केरा, चरण प्रणमुं, जुग  
म कर जोडी करी ॥ १ ॥ बहु जाव भक्ते, थुणु  
जिनवर, चोत्रीसैं अतिशयें करी ॥ जे सुगुरु मुख  
थी, सुण्यांते कहूं, आगम शास्त्रें अनुसरी ॥ २ ॥  
तिहां प्रथम अतिशयें, श्री जिन केरा, रोम नख  
वाधे नहीं ॥ नीरोग निर्मल गात्र अस्ति द्वितीय

अतिशय ए सही ॥ ३ ॥ गोडुग्ध सरिखो, मांस  
 लोही, तृतीय तेह वखाणियें ॥ चोथो ते उत्पल  
 गंध सरिखो, श्वासोच्छ्वास सुजाणियें ॥ ४ ॥ आ  
 हारने नीहार प्रबन्न, एह अतिशय पांचमो ॥  
 आकाश गत धर्मचक्र बढो, गगन ठत्र ए सातमो  
 ॥ ५ ॥ रह्या अंबर श्वेत चामर, जुगम अष्टम ए  
 कह्यो ॥ फटिक सिंहासन सुनिर्मल, नवम अतिश  
 यए लह्यो ॥ ६ ॥ आकाशगत ध्वज सहस्र संकित,  
 इन्द्र ध्वज आगें चले ॥ ए दशमो अतिशय कह्यो  
 श्रुतमां, देखी परमत खलजले ॥ ७ ॥ इग्यारमें जि  
 हां, स्वामी उजा, रहे वली बेसे जिहां ॥ च्छाय शु  
 धज देव ततद्गण, अशोक तरुवर रचे तिहां ॥ ८ ॥  
 द्वादशम अतिशय प्रज्ञामंडल, पुछें रविकर जीपए ॥  
 रमणिक सुंदर जोमी जागसो, तेरमो ए दीपए ॥  
 ॥ ९ ॥ अधोमुख होय सर्व कंटक चउदमें अतिश  
 य वली ॥ अनुकूल यइने परिणमें ऋतु, पंच दशमो  
 सुख लली ॥ १० ॥ संवर्तक पवनें जोमी पूंजे, जो  
 जन लगें ए शोलमे ॥ सुगंध वृष्टी तिहां वरसे,  
 प्रगट अतिशय सतरमे ॥ ११ ॥ जानु प्रमाणे वीट  
 नीचो, पंचवरण सुहासणा ॥ जलने ते थलना फूल  
 वरसे, अठारमें अतिशय घणा ॥ १२ ॥ अमनोइ  
 शब्दादिकही नासे. उगणीसमें अतिशयें वली ॥  
 बीशमें शुजिह्म थाये, एम कहेते केवली ॥ १३ ॥

एकवीशमें प्रभुतणी देशना, जोजन-लगें सविजन  
सुणे ॥ वाविशमें प्रभु अर्ध मागध, जापायें जिन  
जी जणे ॥ १४ ॥ त्रेवीशमे जिनवाणी जननें, हेतु  
गिव जणी परिणमे ॥ चोवीसमे प्रभु चरण मूळें,  
वैर जंतुना उपशमे ॥ १५ ॥ अन्यलिंगी नमे जिननें,  
पंचविंशति अतिशयें ॥ अन्य तीरथी मौन्य थाये,  
ठवीसमें प्रभु निश्चयें ॥ १६ ॥ पण वीश जोजन  
लगे जिनथी, इतनें मारी नहीं ॥ स्वचक्रनें परचक्र  
न होये, तीस अतिशय ए सही ॥ १७ ॥ अति  
वृष्टिने अनावृष्टि, दुर्जिह्वा त्रण ए नवि उपजे ॥ चोत्री  
समे प्रभु आधि पीडा, व्याधि दुःख न संपजे ॥  
॥ १८ ॥ चोत्रीस अतिशय एह कहिया, सूत्र सम  
वा यांगमां ॥ जे जणतां गुणतां हिये धरतां, रहे आत  
म रंगमां ॥ १९ ॥ निज शुरू आतम रूप प्रगटे,  
जावशु जो ध्याइयें ॥ दर्शनादिक रत्न लहियें, पर  
म सुख पद पाइये ॥ २० ॥ अरिहंत जगवंत तणा  
अतिशय, जणो आणी आसता ॥ बहु पुण्य करि  
यें ध्यान धरियें, सुख लहिये सासता ॥ २१ ॥ श्री  
सूरि विद्या उदधि सेवक, शिष्य एणी परें संस्त  
वे ॥ मुनि ज्ञान सागर कहे प्रभुपद, सेव मांगुं  
जवो जवे ॥ २२ ॥ १७ ॥

॥ अथ शिखामणनो ठंद ॥

॥ त्रोटक वृत्त ॥ वरदायक माय सलाम करी,

कहुं सार शिखामण एकखरी ॥ नर नारी सहुहिय  
 डे धरियें, जिम आपद संकट उरुरियें ॥ १ ॥ पर  
 जात समे गुरु देव नमो, जिम दारिद्र दोहग दूरें  
 गमो ॥ जगवंत सदा चरणां जजियें, कुलरीति कबू  
 कबु नां तजियें ॥ २ ॥ लभियें नहिं मायनें वापथकी,  
 बढियें नहिं कोयथी वाधि जकी ॥ विश्वास न  
 कीजें नारि तणो, गुरुराज समीपथी ज्ञान जणो ॥  
 ॥ ३ ॥ दरबार अलिकन नां जखियें, घरजीतर अहार  
 नहिं लखियें ॥ रखियें नहिं चारु पनोस सदा, तरियें  
 नहिं नीर सजोर कदा ॥ ४ ॥ विवसाय सहू  
 विधिसें करियें, छग दाव रमी धन ना जरियें ॥ पर  
 देशमां गांफिल नां फरियें, नरपति थकी डरता रहि  
 यें ॥ ५ ॥ जुगटां व्यसनी परि ना रमियें, कृषि साध  
 अनाथकुं ना दमियें ॥ करियें नहिं आल अगन्नी  
 तणी, बलि दीजियें सीख सुमिन्न जणी ॥ ६ ॥ गुरु  
 आसन उपरि ना धसियें, दुर्जनसे संगति ना बसि  
 यें ॥ बलि धीज न कीजियें गुठ किसी, घणीवार  
 न कीजियें वात हसी ॥ ७ ॥ वयणां मुख बोलहू तें  
 पलियें, सज्जनथी स्नेह धरी मलियें ॥ परनारिनी  
 संगति प्यार तजो, परमारथ कारज नित्य जजो ॥ ८ ॥  
 सुखकार शिखामण एम कहे, कवि उत्तमते जय  
 माल लहे ॥ गुरु चार लहू अरु दीर्घ धरो, इम  
 चोटकनामक ठंढ करो ॥ ९ ॥ इति शिखामण ठंढ

॥ अथ श्रीअंतरिक पार्श्वनाथ ठंद ॥

॥ प्रभु पासजी ताहरुं नाम मीतुं, त्रिहुं लोकमां  
एटहुं सार दीतुं ॥ सदा समरतां सेवतां पाप नीतुं,  
मन माहरे ताहरुं ध्यान चेत्तुं ॥ १ ॥ मन तुह्य पासे  
वसे रात दीसें, मुखपंकज निरखवा हंस हींसे ॥  
धन्य ते घडीजेघडी नयण दीसे, जली जक्ति जावें  
करीबीनबीसे ॥२॥ अहो एह संसार ठे दुःख दोरी,  
इंद्रजालमां हित्त लागुं ठगोरी ॥ प्रभु मानिये  
बिनती एक मोरी, मुऊ तार तु तार बलिहारि तो  
री ॥ ३ ॥ सही स्वप्न जंजालनां मन्न मोह्यो, घडी  
यालमां काल रमतां न जोयो ॥ मुधा एम संसा  
रमां जन्म खोयो, अहो घृत तणे कारणें जल बिलो  
यो ॥ ४ ॥ एतो जमरलो केंसुआं त्रांति धायो, जई  
शुक तणी चंचुमांहे जरायो ॥ शुके जंबु जाणी गळ्यो  
दुःख पायो, प्रभु लालचें जीवमो एम बाह्यो ॥ ५ ॥  
जम्यो जर्म जूळो रम्यो कर्मजारी, दयाधर्मनी  
शर्म में न विचारी ॥ तोरी नर्मबाणी परम  
सुख कारी, त्रिहुं लोकना नाथ में न संजारी ॥ ६ ॥  
विषय बेलमी सेलमी करिय जाणी, जजी मोह तृष्णा  
तजी तुळा वाणी ॥ एहवो जलो जूमो निज दास  
जाणी, प्रभुराखियें बांहिनी ठांहि प्राणी ॥७॥ माहा  
रा विविध अपराधनी कोनि सहीयें, प्रभु शरण आ  
व्या तणी लाज वहीयें ॥ बली घणी घणी बीएतिन

म कहीयें, मुक्त मानसरें परम हंस रहीयें ॥ ७ ॥  
 कलश ॥ ए कृपा मूरति पास स्वामी, मुगतीगामी  
 गाईयें ॥ अति जक्ति जावें विपति नावे, परम संपद  
 पाईयें ॥ प्रभु महिम सागर गुण विरागर, पास अंत  
 रिक जे स्तवे ॥ तस सकल मंगल जय जयारव,  
 आनंद बरूँन वीनवे ॥

॥ अथ श्री शांतिजिन विनतिरूप ठंद ॥

॥ शारद माय नमुं शिर नामि ॥ हुं गाढं त्रिभुव  
 नको स्वामी ॥ शांति शांति जपे जो कोइ, ता घर  
 शांति सदा सुख होइ ॥ १ ॥ शांति जपी जे कीजें  
 काम, सोइ काम होवे अचिराम ॥ शांति जपी पर  
 देश सिधावे, ते कुशलें कमला लेइ आवे ॥ २ ॥ गर्ज  
 थकी प्रभु मारि निवारी, शांतिजी नाम दियो हित  
 कारी ॥ जे नर शांति तणा गुणगावे, रुधि अचिं  
 ती ते नर पावे ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रभु शांति सहाइ,  
 ता नरकूं क्या आरति जाइ ॥ जो कबु वंठे सोई पूरे,  
 दारिद्र दुख मिथ्यामति चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरं  
 जन ज्योत प्रकाशी, घट घट अंतरके प्रभु वासी ॥  
 स्वामी स्वरूप कहुं नवि जाय, कहेतां मोमन अच  
 रिज थाय ॥ ५ ॥ डार दीए सबही हथियारा, जीत्यां  
 मोह तणा दल सारां ॥ नारि तजी शिवशुं रंग  
 राचे, राज तज्युं पण साहेब साचे ॥ ६ ॥ महा  
 चलवंत कहिजें देवा, कायर कुंथु न एक हणेवा ॥

रुद्धि सयल प्रभु पास लहीजें, जिह्वा आहारी नाम  
 कहीजें ॥ ७ ॥ निदक पूजककूं सम जायक, पण  
 सेवकहीकूं सुख दायक ॥ तज्यो परिग्रह जये जगना  
 यक, नाम अतित सवे सिद्धि लायक ॥ ८ ॥ शत्रु  
 मित्र सम चित्त गणीजें, नामदेव अरिहत जणीजें ॥  
 सयल जीव हितवंत कहीजें, सेवक जाणी महापद  
 दीजें ॥ ९ ॥ सायर जैसा होत गजीरा, दूषण एक  
 न मांहे शरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी, पण  
 न रहे प्रभु एकण ठामी ॥ १० ॥ लोक कहे जिन  
 जी सब देखे, पण सुपनांतर कवहु न पेखे ॥ रीश  
 विना बावीश परीसा, सेना जीती ते जगदीश ॥ ११ ॥  
 मान विना जग आण मनाई, माया विना शिवशुं  
 लय लाई ॥ लोच विना गुणराशि ग्रहीजें, निह्नु  
 जये त्रिगुणो सेवीजें ॥ १२ ॥ निर्ग्रथपणें शिर ठत्र  
 धरावे, नाम यति पण चमर ढलावे ॥ अन्नयदान  
 दाता सुख कारण, आगल चक्र चले अरिदारण  
 ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल जणीजें, करम सर्वेको  
 मूल खणीजें ॥ चउविह संघह तीरथ थापे, लट्ठी  
 घणी देखो नवि आपे ॥ १४ ॥ विनयवंत जगवंत  
 कहावे, न काहूकूं शीश नमावे ॥ अकिंचनको विरुद्ध  
 धरावे, पण सोवनपद पंकज ठावे ॥ १५ ॥ रागनहि  
 पण सेवक तारे, छेप नही निगुणा संग वारे ॥ तजी  
 आरंज निज आतम ध्यावे, शिव रमणीको साथ



चलावे ॥ १६ ॥ तेरो महिमा अद्भुत कहियें, तोरा  
 गुनको पार न लहीयें ॥ तुं प्रभु समरथ साहेव मोरा,  
 हुं मनमोहन सेवक तेरा ॥ १७ ॥ तुं रे त्रिलोकतणो  
 प्रतिपाल, हूं रे अनाथ तुं ठे दयाल ॥ तुं शरणागत  
 राखणधीरा, तुं प्रभु तारक ठोवरु वीरा ॥ १८ ॥ तुंहि  
 समोवरु जागज्युं पायो, तोमेरो काज चढ्यो रे सवायो  
 कर जोडी प्रभु विनवूं तोसुं, करो कृपा जिनवरजी  
 मोसुं ॥ १९ ॥ जनम भरणना दोष निवारो. जव  
 सागरथी पार उतारो ॥ श्री हृदिणाजरमंरुन सोहे,  
 तिहां प्रभु शांति सदा मन मोहे ॥ २० ॥ पद्मसागर  
 गुरुराज पसाया, श्री गुणसागरके मन जाया ॥ जेनरनारी  
 एक चित्तें गावे, ते मनोवन्धित निश्चें पावे ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वनाथनो ठंद ॥

॥ जय जय जगनायक पार्श्वजिनं, प्रणताखिल  
 मानवदेवगनं ॥ जिनशासन मंडन स्वामि जयो, तुम  
 दरिसन देखी अनंद जयो ॥ १ ॥ अश्वसेन कुळां  
 वर जानुनिजं, नव हस्तशरीर हरितप्रतिजं ॥ धर  
 णेंद्र सुसेवित पादयुगं, जर चासुरकांति सदा सुजगं  
 ॥ २ ॥ निजरूपविनिर्जित रंजपति, वदनो द्युति शा  
 रद सौमतीति ॥ नयनांबुज दीप्ति विशालतरा, तिल  
 कुसुम सन्निज नासा प्रवरा ॥ ३ ॥ रसनामृत कंद  
 समान सदा, दशनाखि अनार कली सुखदा ॥ अ  
 धरारुण विडूम रंगधनं, जय शंखपुरा जिध पार्श्व

जिनं ॥ ४ ॥ अतिचारु मुकुट मस्तक दीपे, कानें  
कुंमल रवि शशि जीपे ॥ तुम महिमा महि मंमल  
गाजे, नित्य पंच शब्द वाजां वाजे ॥ ५ ॥ सुर किन्नर  
विद्याधर आवे, नर नारी तोरा गुण गावे ॥ तुज  
सेवे चोशठ इंद्र सदा, तुज नामें नावे कष्ट कदा ॥  
॥ ६ ॥ जे सेवे तुजने जाव घणे, नवनिधि थाये घर  
तेह तणे ॥ अमयडियां तुं आधार कह्यो, समरथ सा  
हिव में आज लह्यो ॥ ७ ॥ दुखीयाने सुखमां तुं दा  
खे, अशरणे शरणे तुं राखे ॥ तुज नामे संकट वि  
कट टले, वीठकीयां वालां आवि मले ॥ ८ नट विट  
लंपट दूरें नासे, तुज नामें चोरचरु त्रासे ॥ रण  
राजल जय तुज नाम थकी, सघले आगल तुज  
सेवथकी ॥ ९ ॥ यक्ष राक्षस किन्नर सवि उरगा,  
करी केशरी दावानल विहगा ॥ बध बंधन जय सघ  
लां जाये, जे एक मनां तुजने ध्याये ॥ १० ॥ जूत  
प्रेत पिशाच बली न श्के, जगदीश तवाजिध जाप  
थके ॥ महोटा जोटिंग रहे दूरे, दैत्यादिकना तुं मद  
चूरे ॥ ११ ॥ डायणी सायणी जाय हटकी, जगवंत  
जयां तुज जजनथकी ॥ कपटी तुज नाम लीया  
कंपे, दुर्जन मुखथी जीजी जंपे ॥ १२ ॥ मानी मठ  
राजा मुह मोडे, तेपण आगलथी कर जोडे ॥ दुर्मु  
ख दुष्टादिक तुंही दमे, तुज जापे महोटा म्लेच्छ नमे  
॥ १३ ॥ तुज नामे माने नृप सवाला, तुज यश उ

ज्ज्वल जेम चंडकला ॥ तुज नामें पामे ऋद्धि घ  
 णी, जय जय जगदीश्वर त्रिजग धणी ॥ १४ ॥ चिं  
 तामणि कामगवी पामे, ह्यगय रथ पायक तुज ना  
 में ॥ जन पद ठकुराइ तुं आपे, दुर्जन जननां दारि  
 ड कापे ॥ १५ ॥ निर्धनने तुं धनवंत करे, तूठो को  
 ठार जंमार जरे ॥ घर पुत्र कलत्र परिवार घणो,  
 ते सहु सहिमा तुम नाम तणो ॥ १६ ॥ मणि मा  
 णक मोती रत्न जड्या, सोवन जूषण बहु सुघरु घ  
 ड्या ॥ बली पेहेरण नवरंग वेश घणा, तुम नामें  
 नवि रहे कांइ मणा ॥ १७ ॥ वैरी विरुड नवि ताकि  
 सके, बली चारु चुगल मनथी चमके ॥ ठल ठिड  
 कदा केहनो नलगे, जिनराज सदा तुज ज्योति जगे  
 ॥ १८ ॥ ठग ठाकुर सवि थर हर कंपे, पाखंदी पण  
 को नवि फरके ॥ लूटा दिक सहु नासी जाए, मा  
 रग तुज जपतां जय थाए ॥ १९ ॥ जरु मूरख जे  
 मति हीन बली, अज्ञान जगे गेर तसु जाय टली ॥  
 तुज समरणथी काह्या थाये, पंक्ति पद पामी पूजाये  
 ॥ २० ॥ खस खांशि खयन पीडा नासे, दुर्वल मुख  
 दीनपणुं त्रासे ॥ गरु गुंवरु कुष्ट जिके सवलां, तुज  
 जापें रोग समे सघला ॥ २१ ॥ गहिला गुंगा बहिरा  
 य जिके, तुज ध्यानें गतदुख थाय तिके ॥ तनु कां  
 ति कला सुविशेष बधे, तुज समरणशुं नवनिधिसधे  
 ॥ २२ ॥ करि केसरी अहि रण बंध सय, जल जल

ए जलोदर अष्ट जय ॥ रांधणी पमुहा सवि जाय  
 टली, तुज नामे पामे रंग रली ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं  
 श्रीपार्श्व नमो, नमिऊण जपंतां छुष्ट दमो ॥ चिंता  
 मणि मंत्र जिके ध्याये, तिण घर दिन दिन दोलत  
 थाये ॥ १४ ॥ त्रिकरण शुद्ध जे आराधे, तस जश  
 कीर्ति जगमां बाधे ॥ बली कामित काम सवे साधे,  
 समहित चिंतामणि तुज लाधे ॥ १५ ॥ मद मछर  
 मनथी दूर तजे, जगवंत जली परें जेहजजे ॥ तसघर  
 कमला कल्लोल करे. बली राज्य रमणी बहु लील  
 बरे ॥ १६ ॥ जय वारक तारक तुं त्राता, सज्जन मन  
 गति मतिनो दाता ॥ मात तात सहोदर तु स्वामी;  
 शिवदायक नायक हितकामी ॥ १७ ॥ करुणाकर ठा  
 कुर तुं महारो, निशिवासर नाम जपुं ताहारो, ॥  
 सेवकशुं परम कृपा करजो, बालेसर वंठित फल दे  
 जो ॥ १८ ॥ जिनराज सदा जय जयकारी, तुज मूर्ति  
 अति मोहन गारी ॥ गुज्जार जनपद मांहे राजे, त्रि  
 शुवन ठकुराइ तुज ठाजे ॥ १९ ॥ इम जाव जले जि  
 नवर गायो, वामासुत देखी बहु सुख पायो ॥ रवि  
 मुनि शशि संवत्तर रंगें, जयदेवसूरिमहा सुख संगें  
 ॥ २० ॥ जय शंखपुराजिध पार्श्व प्रजो, सकलार्थ  
 समीहित देहि विजो ॥ बुध हर्षरुचि विजयाय मुदा,  
 तप लब्धि रुचि सुख दाय सदा ॥ २१ ॥ कलश ॥  
 इष्टं स्तुतः सकलकामितसिद्धिदाता, यक्षधिराजनत

ज्ज्वर  
णी,  
नार  
में  
ड  
व

शंखपुराधि राजः ॥ स्वस्ति श्रीहर्ष रुचि  
सादात् शिष्येण लब्धि रुचिनेति मुदा प्र  
॥ ॥ सरसति संपति दिश्यो मुजसदा  
विघननविश्वावेकदा ॥ नयरि उजेणी विक्र  
सत्तापूरीने वेगो गाय ॥ १ ॥ जोतिषीया सत्ता  
ण ॥ नवग्रहनाते करेवखाण ॥ एककहे शनि  
तिकूर ॥ देखाडे अति प्राणी नैरुड ॥ २ ॥ नि  
शनिसर पांगलो ॥ पितासारथी तुमेसांजलो ॥  
विक्रमबोलेइस्थुं ॥ इणेरंक बापडे चाळे किस्थुं ॥  
इणे अवसर सनीसरठै जठ ॥ अवधी ज्ञाने  
तठ ॥ जोतांमुज विक्रम अवगुणे ॥ वेगिआवी  
प्रते जणे ॥ ४ ॥ सांजल राजा माहरांकांम ॥ हुंरु  
हुंतुऊ ठांम ॥ विहृतो विक्रम बोले वांण ॥ खमज  
बोड्युं अज्ञान ॥ पुजी प्रणमी शनीस्वर पाय ॥  
प्यो निज थानक जाय ॥ पिण संका मनमांहि पय  
केतेक काळे शनिस्वर वेठ ६ निसदिन वीहृतो जे  
नाम ॥ ते लाग्यो मुजशनीस्वर स्वांम ॥ तेनी  
आपैराज ॥ मेंजावुं पर देसे आज ॥ ७ ॥ सुं  
गयो परदेस ॥ चंपा नयरी करे प्रवेस ॥ ४ ॥ त  
जइ वेठ ॥ तव तसनयणें अमीय पयठ ॥ ८  
ने हाटठे वस्तु अनेक ॥ थोमीवेला मांहि वेची  
जग्यवंत नर जाण्यो जांम ॥ जिमवानें घर ल  
ताम ॥ ९ ॥ जोजन जक्की जली सांचवे ॥ सुख

सुवापाठवे ॥ पासे जीतवे ठोहित ठाम ॥ सारस हंसने  
मोर चित्रांम ॥ १० ॥ जोवेराजा कौतिक धरी ॥  
नाहितव श्रीपति कुंमरी ॥ हारघोरुले मुकेजांम ॥  
इणें अवसर शनि जोवेतांम ॥ ११ ॥ मुज उवेपी  
विक्रम राय ॥ चंपा नगरी वेठोठाय ॥ सुख शब्दा  
सुतो रंगधरी ॥ तो प्राक्रम देखाडुं करी ॥ १२ ॥  
शनी संक्रम्योहंस मुजार ॥ चुणी हारनें वेठोठार ॥  
तेदेपीने वीहनो राय ॥ कलंक जणीते नाठोजाय  
॥ १३ ॥ पुत्री नाहि करे सिणघार ॥ नवि देखे एकाव  
लहार ॥ श्री पतिजोवे घणोखपकरी ॥ रायजणे तव जा  
व्योफरी ॥ १४ ॥ चोरजणी तेठेद्या हाथ ॥ चउटे  
पमीउं तवनरनाथ ॥ तेखी एके दीठो जिसें ॥ जाली  
हाथने आण्यो तिसे ॥ १५ ॥ काष्टतणा तव कर जोरुवे ॥  
वलीवेठो घाणी फेरवे ॥ खायखोलनें तेल रोटला ॥  
ठत्रीस राग करें तिहां जळा ॥ १६ ॥ दुःख वीसरीउं नी  
जघरतणो ॥ सरळें सादे गावेघणो ॥ नरपति पुत्री मंदिर  
पास ॥ सुणी साद जोवा थड् आस ॥ १७ ॥ तव तिंहारी  
दासीनें कहे ॥ घांची घरपुरुष जे रहे ॥ वेगें तेमी तेह  
ने लाव्य ॥ आवे घांची घर तव धाव ॥ १८ ॥ तेह पुरुष  
लावे सापास ॥ तव उत्तरीउं शनिशरतास ॥ अरूत रूप  
देखी अतिघणुं ॥ वचन कहे तव वरवा तणुं ॥ १९ ॥  
कहे विक्रम कर माहरे नथी ॥ नवी परणांम में तेहथी ॥  
चंमी मंत्र कुयरीयें साधीउं ॥ सोवर मागीते कर लीउं ॥

शंखपुराधि राजः ॥ स्वस्ति श्रीहर्ष रुचि पंकजसुप्र  
 सादात्, शिष्येण लब्धि रुचिनेति मुदा प्रसन्नः ॥३३॥  
 ॥ ॥ सरसति संपति दिव्यो मुजसदा ॥ अलिय  
 विघननविआवेकदा ॥ नयरि उजेणी विक्रमराय ॥  
 सजापूरीने वेठो ठाय ॥ १ ॥ जोतिषीया सजामां हिजां  
 ण ॥ नवग्रहनाते करेवखाण ॥ एककहै शनिश्वर अ  
 तिकूर ॥ देखाडे अति प्राणी नेरुड ॥ २ ॥ निजद्रष्टि  
 शनिसर पांगलो ॥ पितासारथी तुमेसांजलो ॥ राजा  
 विक्रमबोलेइस्युं ॥ इणेरंक बापडे चाले किस्थुं ॥ ३ ॥  
 इणे अवसर सनीसरहै जह ॥ अवधी ज्ञाने जोवे  
 तह ॥ जोतांमुज विक्रम अवगुणे ॥ वेगिआवी राय  
 प्रते जणे ॥४॥ सांजल राजा माहरांकांम ॥ हुंरुठो टा  
 भुंतुज ठांम ॥ विहृतो विक्रम बोले वांण ॥ खमजो जे

सुवापाठवे ॥ पासे जीतवे ठोहित ठाम ॥ सारस हंसने  
 मोर चित्रांम ॥ १० ॥ जोवेराजा कौतिक धरी ॥  
 नाहितव श्रीपति कुंमरी ॥ हारघोरुले मुकेजांम ॥  
 इणें अवसर शनि जोवेतांम ॥ ११ ॥ मुज उवेपी  
 विक्रम राय ॥ चंपा नगरी वेठोठाय ॥ सुख शब्दा  
 सुतो रंगधरी ॥ तो प्राक्रम देखाडुं करी ॥ १२ ॥  
 शनी संक्रम्यो हंस मुजार ॥ चुणी हारनें वेठोठार ॥  
 तेदेपीने वीहनो राय ॥ कलंक जणीते नाठोजाय  
 ॥ १३ ॥ पुत्री नाहिकरे सिणघार ॥ नवि देखे एकाव  
 लहार ॥ श्री पतिजोवे घणोखपकरी ॥ रायजणे तव जा  
 द्योफरी ॥ १४ ॥ चोरजणी तेठेया हाथ ॥ चउटे  
 पकीठ तवनरनाथ ॥ तेली एके दीठो जिसें ॥ जाली  
 हाथने आण्यो तिसे ॥ १५ ॥ काष्टतृप्तवन कर जोरुने  
 नलीवेठो घाणी फेरवे ॥ नति पृथ्वीसुत प्रात जठी  
 नमो गणधर गौतम नाम गेलें ॥ प्रहसमे प्रेमशुं  
 जेह ध्यातां सदा, चढती कला होय वंशवेले ॥ मा०  
 ॥ १ ॥ वसुधूपति नंदन विश्वजन वंदन, डुरित  
 निकंदन नाम जेहनं ॥ अजेद बुद्ध करी नविजन  
 जे जजे, पूर्ण पोहोचे सहि जाग्य तेहनं ॥ मा० ॥ २ ॥  
 सुरमणि जेह चितामणि सुरतरु, कामित पूरण काम  
 धेनु ॥ तेह गौतमनुं ध्यान हृदयें धरो, जेहथकी  
 अधिक नहीं माहात्म्य केनुं ॥ मा० ॥ ३ ॥ प्रणव  
 आदे धरी माया बीजें करी, स्वमुखें गौतमनाम



ध्याये ॥ कोरि मनकामना सफल वेगें फले, विष  
न वैरी सवे दूर जाये ॥ मा० ॥ ४ ॥ ज्ञान बल  
तेजने सकल सुखसंपदा, गौतमनामथी सिद्धि प  
मे ॥ अखंरु प्रचंरु प्रताप होय अवनिमां, सुर नर  
जेहनें शीश नामे ॥ मा० ॥ ५ ॥ दुष्ट दूरें टले स्वज  
न मेलो मले, आधिउपाधिनें व्याधि नासे ॥ जूत  
नां प्रेतनां जोर जांजे वली, गौतमनाम जपतां उद्धा  
सें ॥ मा० ॥ ६ ॥ तीर्थ अष्टापदे आप लब्धें जइ,  
पन्नरसें त्रणने दीस्कदीधी ॥ अठमनें पारणे तापस  
कारणें, क्षीरलब्धें करी अखुट कीधी ॥ मा० ॥  
॥ ७ ॥ वरस पच्चास लगें गृहवासें वस्या, वरस वली  
त्रीश करी वीरसेवा ॥ वार वरसां लगें केवल जोग  
व्युं, जक्ति जेहनी करे नित्य देवा ॥ मा० ॥ ८ ॥  
महियल गोतम गोत्रमहिमा निधि, गुणनिधि कृष्णि  
ने सेद्धि दाई ॥ उदय जस नामथी अधिक लीला  
लहे, सुजस सौजाग्य दोलत सवाई ॥ मा० ॥ इति ॥

॥ अथ दोधक बावनी लिख्यते ॥ उँयह अक्षर  
सारहें॥ऐसा अवरन कोय॥सिद्ध सरूप जगवान शिव  
सिरसा बंदू सोय ॥ १ ॥ नमीयें देव जगतगुरु, नमी  
यें सद गुरुपाय॥दयायुक्त नमीयें धरम, शिव सुखलेय  
उपाय ॥ २ ॥ मनकी ममता दूरकर, समता धर घट  
मांहिं, रमतां रामपिठानकें, शिव सुख ले क्युं नाहि  
॥३॥ शिवमंदिरकी चाह धर, अथिरअंध तजिदूर ॥

लपट रह्यो क्या कीचमें, अशुचि जिहां जरपूर ॥ ४ ॥  
 धंधाहीमें पचरह्यो ॥ आरंजकीए अपार ॥ उठ चलेगो  
 एकलो, शिरपर रहेंगो चार ॥ ५ ॥ अन्यायी जन  
 देतधन, बहुत, रहित फल सोय ॥ दान स्वल्प फल  
 पिण बहुत न्याय उपार्जित होय ॥ ६ ॥ आतम  
 परहित आपकुं, क्या परकुं उपदेश, निज आतम  
 समज्यो नही, किनो बहुत कलेस ॥ ७ ॥ इतनाही  
 में समजलें, क्या बहुत पढेंसो ग्रंथ ॥ उपशम विवेक  
 संवर लहें, याको शिव पुर पंथ ॥ ८ ॥ इति निति  
 याथें गई, प्रगट नई सवरीत ॥ गीत मार्ग पेदाकीउं  
 गाउं तिनके गीत ॥ ९ ॥ उदय नएरविके जसा, जावे  
 सब अंधार ॥ त्योंसद गुरुकें वचनथें, मिटें मिथ्यात  
 अपार ॥ १० ॥ जगत बीज सुखेतमें, जसा सुजल  
 संयोग ॥ त्योंसद गुरुके वचनथें, उपजत बोध प्रयोग  
 ॥ ११ ॥ एक टेकधरीए जसा, निर्गुण निर्मम देह ॥  
 दोपरोग जामें नही, करीयें ताकीसेव ॥ १२ ॥ ए  
 विषम गति कर्मकी, लिखी नकाहुं जात ॥ रंकनथें  
 राजाकरें, राजारंक दिखात ॥ १३ ॥ उंस विंदु कुशअ  
 ग्रथें, परत नलगें वार, आयु अथिरतेसे जसा, कर  
 कहु धर्म विचार ॥ १४ ॥ ऊपध न मिलें मीत्त  
 ज्युं जाथें मरें न कोय ॥ करउपध एक धर्मको, जसा  
 अमर तुं होय ॥ १५ ॥ अंध पंगु ज्यों एक हे, जरे  
 न पावक मांहि ॥ ग्यान सहित क्रिया करे, जसा

अमर पुर जांहि ॥ १६ ॥ अमर जगतमें कोनही ॥  
 मरें अमर सुर राज ॥ गढ मढ मंदिर ढह परै, अमर सुज  
 स जस राज ॥ १७ ॥ कंचनसें पीतर गृहै, मूरख मुढ  
 गिमार ॥ तजै धर्म मिथ्यामती, जजै अधर्म असार  
 ॥ १८ ॥ खल संगति तजियें जसा, विद्या सोजिन  
 तोय ॥ पन्नग मणि संयुक्तसो ॥ क्योंन जय कर होय  
 ॥ १९ ॥ गाज सरदकी कारिमी, करतहें बहुत अ  
 वाज ॥ तनक न वरसे दान त्यों, कृपण नदें जसराज  
 ॥ २० ॥ घरटी के दो पुरु विचे, कण चूरण ज्यों  
 होय ॥ त्यों दो नारी विच पोड्यो, नर उगरे न कोय ॥ २१ ॥  
 नही ग्यान जामें जसा ॥ नही विवेक विचार ॥ ताको  
 संगन कीजीइं, पर हरीइं निरधार ॥ २२ ॥ चपला  
 कमला जानकें, कतु खरचो कतु खाउ ॥ इकदिन जोइं  
 सुबो जसा ॥ लांवा करकें पाउ ॥ २३ ॥ ठलकर बलकर  
 बुधिकर, करकें जसा उपाय ॥ आतम बसकर आपनो  
 दूर जन दूर तजाय ॥ २४ ॥ जुवती सब युगवस  
 कीउं किसीन राखीमांम ॥ तासों जो न्यारारहै, ताको  
 जसा प्रणाम ॥ २५ ॥ जाकी बात न कीजीइं, थोडा  
 हीमें आनि ॥ जसा बरावर देखवो, आप प्राणपर प्राण  
 ॥ २६ ॥ नग दुहिता पति आचरण ॥ ताको अरि  
 जसराज ॥ तसपति नारी विनु पुरुष ॥ नवधें सोजा  
 लाज ॥ २७ ॥ टांणा टुणा ठोरदें, याथें न सरें काज ॥  
 चोखे चित जिन धर्मकर, ज्युं काजसरें जसराज

॥ २७ ॥ ठगसो जो पर मनछगें, पर उपजावें रीऊं ॥  
जासकरें वस जगतकौं ॥ साचा ठग सोईज ॥ २८ ॥  
करें कहा जस राज कहें, जो अपने मन साचा ॥ द्विण  
में परगट होयगा, ज्यों प्रगटायो काच ॥ २९ ॥ दहै  
कोट अग्यांनका, गोलाग्यांन लगाय ॥ मोहरायकौं मार  
लैं, जसा लगें सब पाय ॥ ३० ॥ नदी नखीनारी  
तणो ॥ नागन कुल जसराज ॥ नरखी नरपति निर्गुणिन,  
आठे करें अकाज ॥ ३१ ॥ तारे ज्यों नरकौं जसा  
जर सायरमें पोत ॥ त्यों गुरु तारे जव जलधि ॥  
करें ग्यांन उद्योत ॥ ३२ ॥ थोज लोजनहि जीउकौं,  
जो लाख कोटिधन होत ॥ समता जो आवें जसा, सुखी  
सदा मन पोत ॥ ३३ ॥ दक्षिण उत्तर च्यारदिस,  
जसाजमें धन काज ॥ प्रापति विना नपाईयें, कोनि करो  
सुउपाय ॥ ३४ ॥ धन पाया खाया नही, दीयाजि  
कतु नाहिं, सो वागुरी होयें धनमें जसा, दुढतहै धन  
मांहि ॥ ३५ ॥ निर्गुन पतित नारी निलज, कूपक  
खारो नीरा ॥ नीच भीत जसराज कहें, पांचों दहें शरीर  
॥ ३६ ॥ पर उपगारी जगतमे ॥ अल्प पुरुष जसराज,  
सीतल वचन दया मया, जाके मुख परलाज ॥ ३७ ॥  
फोज दिसो दिस मिल गई, जसा घुरे निसाण ॥ जुजे  
सन मुख जायनें, सूरगणे नहि प्राण ॥ ३८ ॥ बुंव  
परें सब दोर है, लैलै आयुध हाथ ॥ वदन मलिन  
कर है जसा, जव जाचें कोय अनाथ ॥ ३९ ॥

जगति जली जगवंतकी, संगति जली सुसाध ॥ ज  
 नकी संगति जसा, आठों पोहोर उपाध ॥ ४१ ॥ म  
 ख मरण नदेखकें, करत बहुत आरंज ॥ सात विस  
 सेवें जसा, करें धर्म विच दंज ॥ ४२ ॥ याग करें प्रा  
 हणें, जापें धर्म जलंत ॥ देखोग्यान विचारकें, क्यों पा  
 वैकुंठ ॥ ४३ ॥ रीस त्याग वैरागधर, होय जोग  
 अधूत ॥ शिव नगरी पावें जसा, कर एसी कर तूं  
 ॥ ४४ ॥ लहेणा देणा कलु नही, मुहकि मिठी बात  
 हृदय कपट धर है जसा, ताके शिरपर लात ॥ ४५ ॥  
 वरसैं वारधि अहोनिसें, खाखरतीनुंपान ॥ जाग्य विन  
 पावें नही, याचक दाता दान ॥ ४६ ॥ शंखसरीख  
 जजला, नर फूटरा फरक ॥ जसा न सोजें दान वि  
 टुटी कान धरक ॥ ४७ ॥ परोपंथ हैं सूरको, रणवि  
 च मुंड विहंड ॥ पाठा पाल धरें नही, जो दोई शतखंड  
 ॥ ४८ ॥ सायर मोती नीपजै, हीरा हीरा खाण ॥ ग्यांन  
 ध्यांन त्यां नीपजै, जसा सुगुरुकी वाण ॥ ४९ ॥ हस्त  
 को मंडण दांनहें, घर मंरुण वर नार ॥ कुल मंडण अंग  
 ज जसा, धन मंडण संसार ॥ ५० ॥ लंठन निसपति  
 श्यामरुचि, सूरज लंठन ताप ॥ दाता लंठन धनवि  
 ना, सवहुं देत सराप ॥ ५१ ॥ द्वांत दांत समतार  
 ती, हणें नही पट काय ॥ जसा ग्यांन किरिया गमन  
 सो साधु कहें वाय ॥ ५२ ॥ सतरसैं तीसैं समें, नव  
 मी शुक्ल आपाढ ॥ दोधक वावनी जसमुनी, पुरन  
 करी आगध ॥ इति पष्ठम परिच्छेद समाप्त ॥

॥ सप्तमपरिच्छेद प्रारंभः ॥

साधुसाध्वीयोग्य आवश्यक क्रियाके सूत्रे.

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं । नमो उवञ्जायाणं । नमो लोए सब साहुणं । एसो पंच नमुक्कारो सब पाव पणा सणो । मंगलाणं च सबेसिं । पढमं हवइ मंगलं ॥

॥ १ ॥ श्री करेमिजंते ॥

॥ करेमि जंते सामाइयं । सबं सावज्जां जोगं पच्च र्खामि । जावज्जीवाए । तिविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए काएणं । न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुज्जाणामि । तस्स जंते पक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

॥ २ ॥ श्री इहामि ठामि ॥

॥ इहामि ठामि काउस्सग्गं । जो मे देवसिउं अइयारो कउं । काइउं वाइउं माणसिउं । उस्सुत्तो । उम्मग्गो । अकप्पो । अकरणिज्जो । डुज्जालं । डुवि चित्तिउं । अणायारो । अणिब्बियवो । असमण पाउग्गो । नाणे दंसणे चरित्ते । सुए सामाइए । तिएहं गुत्तीणं । चउएहं कसायाणं । पंचएहं मह वयाणं । ठएहं जीव निकायाणं । सत्तएहं पिंडेसणाणं । अठ एहं पवयण माउणं । नवएहं वंजचेरगुत्तीणं । दस विहे समण धम्मे । समणाणं जोगाणं । जं खंनियं जं विराहियं । तस्स मिहामिडुक्कं ॥

इष्ठाकारेण संदिसह जगवन् देवसियं आलोउं । जो  
मे देवसिउ अइ थारो कउं ॥ शेषं उपर प्रमाणे ॥  
इष्ठांमि पडिक्कसिउं । जो मे देवसिउं अइ थारो  
कउं ॥ शेषं उपर प्रमाणे

॥ ३ ॥ देवसिक अतिचार ॥

॥ ठाणे कमणे चंकमणे । आऊत्ते अणाऊत्ते ।  
हरियकाय संघट्टे । वीयकाय संघट्टे । त्रसकाय संघट्टे ।  
थावरकाय संघट्टे । ठप्पइसंघट्टे । ठाणउं ठाणं  
संक्रामीया । देहरे गोचरी मार्गे जातां आवतां  
स्त्री तीर्यचतणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ,  
दिवस मांहि चार वार सजाय सात वार चैत्यवंदन  
कीधां नहिं, प्रतिद्वेखण आधी पठी जणावी, अस्तो  
व्यस्त कीधी, आर्त्तध्यान रौद्रध्यान ध्यायां, धर्मध्यान  
शुक्लध्यान ध्यायां नहीं, गौचरीतणा दोष उपजता  
जोया नहीं, पांच दोष संरुलितणा टाढ्या नहीं,  
मात्रुं अणपुजे दीधुं, अणपूंजी जूमिकायें परठव्युं,  
देहुरा उपाश्रयमांहिपेसतां निसरतां निसिही आव  
ससही कहेवी विसारी, जिनजुवने चोराशी आशा  
तना, गुरु प्रतें तेत्रिश आशातना, अनेरुं जे कांइ  
दिवस सवंधीऊं पापदोष लाग्युं होय ते सवीहुं मने  
वचने कायाए करीने तस्स मिहामि डुक्कमं ॥

॥ ४ ॥ रात्रिक अतिचार ॥

। संथाराऊट्टणकी । परियट्टणकी । आऊंटणकी ।

पसारणकी । ठप्पिय संघट्टणकी । संथारो ऊत्तरपट्ठो  
 टाली अधिकुं उपगरण घादयुं, अणपडि लेवु हला  
 व्युं, मात्रुं अणपडिलेवुं लीधुं, अणपुजी चूमिए पर  
 ठव्युं, परठवतां अणुजाणह जस्सगो कीधो नहीं,  
 परठव्या पुंठे चार त्रण वोसिरे वोसिरे कीधुं नहीं,  
 संथार पोरसी जणवी विसारी, पोरसी जणाव्या  
 विना सुता, कुस्वप्न लाधुं सुपनांतरमांहि शिलनी वि  
 राधना दुइ, आहट्ट दोहट्ट चिंतव्युं, संकटप विकटप  
 कीधो, रात्रीसंवंधीउं जे कोइ अतिचार लाग्यो होय,  
 तेसवी मने वचने कायाए करी तस्स मित्रामि डुक्कम ॥

॥ ५ ॥ श्री श्रमणसूत्र ॥

॥ नमो अरिहंताणं ॥ करेमि जंते सामाइ  
 अं ॥ चत्तारि मंगलं ॥ अरिहंता मंगलं । सिद्धा  
 मंगलं । साहु मंगलं । केवली पन्नतो धम्मं मंगलं ॥  
 चत्तारी सरणं पवज्जामि । अरिहंते सरणं पवज्जामि  
 सिद्धं सरणं पवज्जामि साहु सरणं पवज्जामि । केवली  
 पन्नतो धम्मो सरणं पवज्जामि ॥ चत्तारी लोगुत्तमा अरि  
 हंता लोगुत्तमा ॥ सिद्धा लोगुत्तमा । साहु लोगुत्तमा केव  
 ली पन्नतो । धम्मो लोगुत्तमो ॥ इत्थामि पक्कमिउं जो मे  
 देवसिउं ॥ इत्थामि पक्कमिउं । इरिआवहिआए ॥  
 इत्थामि पक्कमिउं ॥ पगामसिज्जाए ॥ निगामसि  
 ज्जाए ॥ संथारा उवट्टणाए ॥ परिअट्टणाए ॥ आउ  
 टण पसारणाए । ठप्पइया संघट्टणाए ॥ कुइए ।



ककराइए ढीए । जंजाइए ॥ आमोसे ॥ ससरका  
 मोसे ॥ आउलमाउलाए ॥ सोअणवत्तिआए ॥ इढी  
 विप्परिआसिआए । दिठीविप्परिआसिआए । मण  
 विप्परिआसिआए । पाणजोअणविप्परिआसिआए ।  
 जो मेदेवसिउं अइआरो कलं । तस्स मिठामि डुक्कं ॥  
 पक्कमामि गोअचरिआए ॥ जिस्कायरिआए ॥ उग्घा  
 रुकवारु उग्घारु णाए । साणावढादारा संघट्टणाए ॥  
 मंनिपाहुनिआए ॥ वलिपाहुडिआए ॥ ठवणापाहु  
 निआए संकिए ॥ सहसागारिए । अणेसणाए पाणे  
 सणाए ॥ पाणजोअणाए ॥ वीअजोअणाए ॥ हरि  
 अजोअणाए ॥ पढेकम्मिआए ॥ पुरेकम्मिआए ॥  
 अदिठह्माए ॥ दगसंसठह्माए रयसंसठह्माए ॥  
 पारिसारुणिआए ॥ पारिठावणिआए ॥ उहासण  
 जिस्काए ॥ जं उग्गमेणं उप्पायणेसणाए ॥ अपरि  
 सुळं पडिगाहिअं ॥ परिभुत्तं वा ॥ जं न परिठविअं  
 तस्स मिठामि डुक्कं ॥ पक्कमामि चाउक्कालं  
 सञ्जा यस्स अकरणयाए ॥ उन्नउकालं जंमोव  
 गरणस्स अप्पमिलेहणाए ॥ डुप्पमिलेहणाए ॥ अ

मामि तिहिं दंडेहिं ॥ मणदंडेणं । वयदंडेणं । कायदंडेणं ॥ पक्किमामि तिहिं गुत्तीहिं ॥ मनगुत्तीए ॥ वयगुत्तीए ॥ कायगुत्तीए ॥ पक्किमामि तिहिं सद्धेहिं ॥ माया सद्धेणं ॥ निश्चाण सद्धेणं ॥ मिच्छादंसण सद्धेणं ॥ पक्किं ॥ तिहिं गारवेहिं ॥ इट्ठी गारवेणं । रसगारवेणं ॥ साया गारवेणं ॥ पक्किं ॥ तिहिं विराहणाहिं ॥ नाण विराहणाए दंसण विराहणाए । चरित्त विराहणाए ॥३॥ पक्किं॥चउहिं कसाएहिं ॥ कोह कसाएणं ॥ माण कसाएणं ॥ माया कसाएणं ॥ लोच कसाएणं ॥ पक्किं ॥ चउहिं सन्नाहिं ॥ आहार सन्नाए ॥ जय सन्नाए ॥ मेहुण सन्नाए ॥ परिग्गह सन्नाए ॥ पक्किं ॥ चउहिं विकहाहिं ॥ इट्ठिकहाए ॥ जत्तकहाए ॥ देसकहाए ॥ रायकहाए ॥ पक्किं ॥ चउहिं जाणेहिं ॥ अट्ठेणं जाणेणं ॥ रुद्धेणं जाणेणं ॥ धम्मेणं माणेणं ॥ सुक्खेणं जाणेणं॥४॥ ॥ प० ॥ पंचहिं किरिआहिं ॥ काइआए ॥ अहिग रणियाए ॥ पाउसिआए ॥ पारितावणिआए ॥ पाणाइवाय किरिआए ॥ प० ॥ पंचहिं कामगुणेहिं ॥ सद्धेणं ॥ रूवेणं रसेणं ॥ गधेणं ॥ फासेणं ॥ प० ॥ पंचहिं महवएहिं पाणाइवायाउं वेरमणं ॥ मुसावायाउं वेरमणं ॥ अदिन्नादाणाउं वेरमणं ॥ मेहुणाउं वेरमणं ॥ परिग्गहाउं वेरमणं ॥ प० ॥ पंचहिं समिइहिं ॥ इरिआसमिइए ॥ जासासमिइए ॥

एसणासमिइए ॥ आयाणञंरुमतनिखेवणा समि  
 इए ॥ उच्चारपासवणखेवजद्वसिंघाण पारिछावणि  
 आ समिइए ॥५॥ ५० ॥ ठहिं जीवनिकाएहिं॥पुढवि  
 काएणं ॥ आउकाएणं ॥ तेउकाएणं ॥ वाउकाएणं ॥  
 वणस्सइकाएणं तसकाएणं ॥ ५० ॥ ठहिं लेसाहिं ॥  
 किएहलेसाए ॥ नील लेसाए ॥ काउ लेसाए ॥ तेउलेसाए  
 पउमलेसाए ॥ सुक्क लेसाए ॥६॥५०॥ सत्तहिं जयछाणे  
 हिं ॥ अछहिं मयछाणेहिं ॥ नवहिं वंजचेर गुत्तीहिं ॥  
 दसविहे समणधम्म ॥ इगारसहिं उवासग पक्किमा  
 हिं ॥ वारसहिं निख्खुपक्किमाहिं ॥ तेरसहिं किरिआ  
 ठाणेहिं ॥ चउदसहिं ॥ चूअगामेहिं ॥ पन्नरसहिं ॥  
 परमाहम्मिहिं ॥ सोलसहिं गाढासोलसएहिं ॥ सत्त  
 रसविहे असंजमे ॥ अछारसविहे अबंजे ॥ एगूण  
 वीसाए नायश्चयणेहिं ॥ वीसाए असमाहि छाणेहिं॥  
 इक्कवीसाए सवलेहिं ॥ वावीसाए परीसहेहिं ॥ ते  
 वीसाए सुअगरुप्पयणेहिं ॥ चउवीसाए देवेहिं ॥  
 पणवीसाए जावणाहि ॥ ठवीसाए दसाकप्पववहारा  
 णं उहेसणकावेहिं ॥ सत्तावीसाए अणगार गुणेहिं ॥  
 अछावीसाए आयारपकप्पेहिं ॥ एगुणतीसाए पाव  
 सुअपसंगेहिं ॥ तीसाए मोहणीअछाणेहिं ॥ इगती  
 साए सिद्धाइ गुणेहिं ॥ वत्तीसाए जोग संगहेहि ॥  
 तित्तीसाए आसायणाएहिं ॥ अरिहंताणं आसाय  
 णाए ॥ सिद्धाणं आसायणाए आयरिआणं आसा

यणाए ॥ उवझायाणं आसायणाए ॥ साहूणं आसा  
 यणाए ॥ साहुणीणं आसायणाए ॥ सावयाणं आसा  
 यणाए ॥ सावियाणं आसायणाए ॥ देवाणं आसा  
 यणाए ॥ देवीणं आसायणाए ॥ इहलोगस्स आसा  
 यणाए ॥ परलोगस्स आसायणाए ॥ केवल्लि  
 पन्नत्तस्स धम्मस्स आसायणाए ॥ सदेवमणु  
 आसुरस्सलोगस्स आसायणाए ॥ सवपाणञ्चूअ  
 जीवसत्ताणं आसायणाए ॥ कालस्स आसायणाए ॥  
 सुअस्स आसाणाए ॥ सुअदेवयाए आसायणाए ॥  
 वायणारिअस्स आसायणाए ॥ जं वाइळं वच्चामेद्विअं  
 हीणस्करं । अच्चस्करं । पयहीणं विणयहीणं । घोस  
 हीणं । जोगहीणं । सुहुदिन्न डुहुपनिष्ठिअं । अका  
 ले कउंसझाउं । काले न कउं सझाउं । असझाए  
 सझाइअं । सझाए न सझाइअं । तस्स मिठामिडु  
 क्कनं ॥ नमो चउवीसाए तिठयरानं । उसत्ताइ  
 महावीर पज्जवसाणाणं । इणमेव निग्गं थंपावयणं ।  
 सच्च । अणुत्तरं । केवल्लिअं । पन्निपुत्र । नेआउअं ।  
 संसुळं । सल्लगत्तणं । सिद्धिमग्गं । मुत्ति मग्गं निज्जा  
 ण मग्गं । निवाण मग्गं । अवितहमविसंधिं । सव  
 डुरक्कप्पहीण मग्गं । इत्थं ठिआ जीवा । सिज्जति ।  
 बुजंति । मुच्चंति । परिनिवायति । सवडुरक्काणमंतं  
 करंति । तं धम्मं सदहामि । पत्तिआमि । रोएमि ।  
 फासेमि । पादेमि अणुपादेमि । तं धम्मं सदहंतो । पत्ति

अंतो । रोअंतो । फासंतो । पादंतो । अणुपादंतो ।  
 तस्सधम्मस्स अपुट्ठिजमि आराहणाए । विरजमि  
 विराहणाए । असंजमं परिआणामि । संजमं उव  
 संपज्जामि । अवंचं परिआणामि । वंचं उवसंपज्जा  
 मि । अकप्पं परिआणामि । कप्पं उवसंपज्जामि  
 अनाणं परि आणामि । नाणं उवसंपज्जामि । अकि  
 रिअं परिआणामि । किरिअं उवसंपज्जामि । मिअ  
 त्तंपरिआणामि । सम्मत्तं उवसंपज्जामि । अचोहिं  
 परिआणामि । चोहिं उवसंपज्जामि । अमग्गं परिआ  
 णामि । मग्गं उवसंपज्जामि । जं संजरामि । जं च  
 न संजरामि । जं पडिक्कमामि । जं च न पक्किमा  
 मि तस्स सबस्स देवसिअस्स अईआरस्स पडिक्क  
 मामि।समणोहं संजय । विरय पक्किअ पच्चकाय पाव  
 कम्मे । अनिआणो । दिट्ठिसंपन्नो । मायामोस विव  
 ज्जिअ । अट्ठाइज्जेसु दीवसमुद्देसु । पन्नरससु कम्म  
 जूमीसु । जावंत केइ साहू । रयहरण गुणपग्गिगह  
 धारा । पंचमहवय धारा । अट्ठारससहस्स सीलंग  
 धारा । अरकआयार चरित्ता । ते सबे सिरसा मणसा  
 मण्णवण वंदामि । खामेमि सब जीवे, सबेजीवा खमंतु  
 मे ॥ मित्ती मे सबजूएसु । वेरं मअं न केणइ ॥ १ ॥  
 एवमहं आलोइ अ । निंदिअ गरहिअडुगंविअं  
 सम्मं ॥ तिविहेण पक्किंतो । वंदामि जिणे चउवी  
 सं ॥ २ ॥ इतिश्री यतिप्रतिक्रमणसूत्रं ॥

॥ ६ ॥ पाक्षिक अतिचार ॥

॥ नाणंमि दंसणंमि अ । चरणंमि तवम्मि तहय  
विरयंमि । आयरणं आयारो । इय एसो पंचहा जणि  
उं । १ । ज्ञानाचार । दर्शनाचार । चारित्राचार । त  
पाचार । वीर्याचार । ए पंचविध आचार मांहे जे  
कोइ अतिचार पक्ष दिवस मांहिं सूक्ष्म वादर जा  
णतां हुं होय ते सविहुं मन वचन कायाइं करी  
मिठामि दुक्कमं । १ ।

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार । काले विणये बहु  
माणे । उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अष्ठ त  
दुजए । अष्ठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ ज्ञान काल  
वेला मांहिं पढ्यो गुण्यो परावर्त्यो नहीं । अकाले  
पढ्यो । विनयहीन बहुमानहीन योग उपधानहीन अ  
नेराकन्हे पढ्यो अनेरो गुरु कह्यो । देववंदण वांढ  
णे । पक्कमणे सदाय करतां । पढतां गुणतां कूमो  
अद्धर कानें मात्रें आगलो उंठो जण्यो गुण्यो । सूत्रा  
र्थ तदुजय कूमां कहां । काजो अणउधर्यां । मांडा  
अण पन्निह्यां वस्ति अणसोध्यां अणपवेयां । अस  
द्याइ । अणोद्या कालवेला मांहिं श्री दशवैकालिक  
प्रमुख सिद्धांत पढ्यो गुण्यो परावर्त्यो । अविधें योगो  
पधान कीधा कराव्या । ज्ञानोपगरण । पाटी पोथी  
ठवणी ॥ कवली । नोकारवाली । सांपमां । सांपनी ।  
दस्त्री वही । कागलिआ उंलिआप्रतें । पग लाग्यो

शूकलाग्यो । शूकें अक्षर जांज्यो । ज्ञानवंतप्रते छे  
 प महर बह्यो । अंतराय अवज्ञा आशातना कीधी ।  
 कुणहिप्रते तोतलो बोवमो देषी हस्यो वितक्यो ।  
 मतिज्ञान । श्रुतज्ञान । अवधिज्ञान । मनपर्यवज्ञान ।  
 केवलज्ञान । ए पांच ज्ञानतणी आशातना कीधी ।  
 ज्ञानाचार विषइउ । अनेरो जे कोइ अतिचार ० । २ ।

दर्शनाचारे आठ अतिचार । निस्संकिअ निक्कं  
 खिअ । निव्वित्तिगिअमूढदिछीअ ॥ उववूयथिरी  
 करणे । बह्व पचावणे अछ ॥ २ ॥ देव गुरु धर्म  
 तणे विषे निस्संकपणुं न कीधुं । तथा एकांत निश्च  
 य धखुं नही । धर्म संवधिआ फलतणे विषे निस्सं  
 देह बुद्धि धरी नही । साधु साध्वीतणी निंया जुगु  
 प्सा कीधी । मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रचावना देखी ।  
 संघमांहिं गुणवंततणी अनुपवृहणाकीधी । अस्थिरीकर  
 ण अवात्सदय अजक्ति निपजावी । तथा देवद्रव्यगुरु  
 द्रव्य । नदित उपेक्षित । प्रज्ञापराधे विणास्यो ।  
 विणसंतो उवेख्यो । ठतीशक्ति सारसंजाल न कीधी ।  
 ठवणायरिउ हाथथकी पाड्यो । पमिलेहवो विस  
 स्यो । जिनजुवनतणी चोरासी आशातना कीधी ।  
 दर्शनाचार विषइउ । अनेरो जे कोइ अतिचार ० । ३ ।  
 चारित्राचारे आठ अतिचार ॥ पणिहाणजोग  
 जुत्तो । पंचहिंसमिईहिं तिहिं गुत्तिहिं ॥ एस चरित्तां  
 यारो । अछविहो होइ नायवो ॥४॥ ईर्यासमिति, जा

षासमिति, एषणासमिति, आदानजडमत्त निक्षेपणा  
समिति, पारिष्ठापनिका समिति, मनोगुप्ति, वचनगु  
प्ति, कायगुप्ति ए अष्ट प्रवचनमाता रूडी परे पाली  
नही, साधुतणे धर्मे सदैव, श्रावकतणे धर्मेसामायिक  
पोसह लीधे, जे कांइ खंन विराधना कीधी होय,  
चारित्राचार विषडुं अनेरो जेकोइ अतिचार ॥ ४ ॥

॥ विशेषतश्चारित्राचारे तपोधनतणे धर्मे ॥ वयठ  
कं कायठक, अकप्पो गिहि जायणं ॥ पक्षिअंक नि  
सिज्जाए, सिणाणं सोत्तवज्जाणं ॥ ५ ॥

॥ व्रत पट्टके, पहिले महाव्रतें प्राणातिपात,  
सूक्ष्म वादर, त्रस थावर जीवतणी विराधना हूई,  
वीजें महाव्रतें क्रोध लोच हास्य जय लगे जूतुं वोढ्या,  
तीजें अदत्तादानविरमण महाव्रते ॥ सामिजीवादत्तं,  
तिष्ठयरत्तं तद्देवय गुरुहि ॥ एवमदत्तंचउहा । पण  
त्तंवीयराएहिं ॥ १ ॥ स्वामी अदत्त, जीव अदत्त,  
तीर्थंकर अदत्त, गुरु अदत्त, ए चतुर्विध अदत्तादान  
मांहि जेकांइ अदत्तपरिजोगव्युं ॥ चोथे महाव्रते ॥  
वसहीकह निसिज्जिदिय, कुमिंतरपुवकी लिए पणिए ॥  
अश्मायाहारविजूसणाइ, नववचचेरगुत्तिउं ॥ २ ॥  
ए नववाडी सूधी पाली नही, सुहणे स्वप्नांतरें दृष्टि  
विपर्यास हूउं ॥ पंचमे महाव्रते, धर्मोपगरणे विपे  
इत्ता मूर्खा गृद्धि आसक्ति धरी, अधिका उपगरण  
वावस्वार्या, पर्व तिथि पक्खिहवो विसाखो ॥ ठे



रात्री जोजन विरमण व्रतें, असूरां पाणी कीधां,  
ठारोद्गार आव्यो, पात्रे पात्रावंधे तक्रादिकनो ठांटो  
लाग्यो, खरक्यो रह्यो, लेप तेल उपधादिकतणो  
संनिधि रह्यो, अतिमात्रायें आहार लीधा, ए ठछा  
व्रत विषइउं अनेरो जे कोइ अ० ॥ ६ ॥

॥ कायषट्के ॥ गामतणे पइसारे नीसारे पग  
पकिलेहवा विसाख्या, माटी मीतुं खमी धावमी  
अरणेटो, पाषाणतणी चातली उपर पग आव्यो,  
अप्पकाय वाधारी फूसणा हुवा, विहरवा गया, ऊल  
खो हाव्यो, लोटो ढोव्यो, काचा पाणीतणा ठांटा  
लाग्या, तेजकाय बीज दीवातणी उंजेही हुइ, वाउ  
काय, उघामें मुखें चोल्या, महावाय वाजतां कपनां  
कांचली तणा ठेमा साचव्या नहीं, फूक दीधी ॥  
वनस्पतिकाय, नीलफूल सेवाल थरुमूल फल फूलवृद्ध  
शाखा प्रशाखातणा संघट्ट परंपर निरंतर हूवा ॥  
त्रसकाय, वेरिंझी तेरिंझी चउरिंझी पंचेंझी काग  
वग उमाव्या, ढोर त्रासव्यां बालक बीहाव्यां षट्  
काय विषइउं अनेरो जे कोइ अतिचार० ॥ ७ ॥

अकट्पनीय सय्या वस्त्र पात्र पिंरु परिजोगव्यो,  
सिज्जातरतणो पिंरु परिजोगव्यो, उपयोग कीधा  
पाखे विहस्या, धात्री दोष, त्रस बीजसंसक्त पूर्वक  
र्म पश्चात्कर्म उद्गम उत्पादना दोष चिंतव्या नहीं,  
गृहस्थतणो जाजन जांज्यो, फोरक्यो, बली पाठो

आप्यो नहीं, सूतां संथारिया उत्तरपट्टा टलतो अधिको उपगरण वावर्यो, देशतः स्नान मुखें जीनो हाथ लगाक्यो, सर्वतः स्नानतणी बांठा कीधी, शरी रतणो मल फेक्यो, केश रोम नख समाख्या, अने री जे कांइ गाडाविचूषा कीधी, अकल्पनीय पिंमादि विपश्च अनेरो जे कोण ॥ ७ ॥

आवस्सयसद्याए, पक्खिलेहणद्याण निरुक्क अज्ज त्ते ॥ आगमणे नीगमणे । ठाणे निसिअणे तु अट्ठे ॥ १ ॥ आवश्यक उज्जयकाल व्याहिसि चित्तपणे पक्कमणुं कीधुं, पक्कमणा मांहि उंघ आवी, वेठां पक्कमणुं कीधुं, दिवस प्रते चार वार सद्याय, सात वार चैत्यवंदन न कीधां, पक्खिलेहणा आधी पाठी जणावी, अस्तो व्यस्त कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायां नहीं, गोचरी गयां वेंतालीश दोष उपजता चिंतव्या नहि, उती शक्तिए पर्व तिथे उपवासादिक कीधो नहि, उपा सरा देहरामांहि पेसतां निसिही निसरतां आवस्स ही कहेवी विसारी, इच्छामिच्छादिक दशविध चक्रवाल समाचारी सांचवी नहि, गुरुतणो वचन तहत्ति करी पडिवज्यो नहि, अपराध आव्यां मिठामि डुक्करु दी धा नहि, स्थानके रहेतां हरियकाय वियकाय कीमी नगरां सोच्यां नहीं, उंघो मुहपत्ति चोलपट्टो संघट्या, स्त्री तीर्यचतणा संघट्ट अनंतर परंपर हूवा,

वक्ता प्रतें पसारु करी, लहुडां प्रतें श्वाकार इत्या  
दिक विनय साचव्यो नहि, साधु सामाचारी वि०  
अ० पद्दि० सु० वा० जाणतां अजाणतां हुजं होय,  
ते सविहु मन वचन कायायें करी मिठामी डुकमं.  
॥ ए ॥ इति साधु अतिचार संपूर्णः ॥

७ ॥ पाक्षिक सूत्रः ॥

तिष्ठंकरे अतिठे, अतिठसिद्धेअ तिष्ठसिद्धेअ ॥  
सिद्धेजिणे अ रिसी, महरिसी नाणं च वंदा  
मि ॥ १ ॥ जे इमं गुण रयण सायर, मविराहिजण  
तिष्ठसंसार ॥ ते मंगलं करित्ता, अहमविश्वा-  
राहणाजिमुहो ॥ २ ॥ मम मंगल मरिहंता । सिद्धा  
साहु सुअं च धम्मोअ ॥ खंती गुत्ती मुत्ती । अज्जा  
वया मइवं चेव ॥ ३ ॥ लोगंमि संजया जं करिंति ।  
परमरिसि देसियमुआरं ॥ अहमवि उवछिउतं ।  
महवय उच्चारणं काउं ॥ ४ ॥ से किं तं महवय उ  
च्चारणा । महवय उच्चारणा पंच विहा पणत्ता ॥ राइ-  
जोअणवेरमण ठठा । तंजहा ॥ सवारु पाणाइवाया  
उं वेरमणं ॥ १ ॥ सवारु मुसावायाउं वेरमणं ॥ २ ॥  
सवारु अदिन्नादाणाउं वेरमणं ॥ ३ ॥ सवारु मेहुणा  
उं वेरमणं ॥ ४ ॥ सवारु परिग्गहाउं वेरमणं ॥ ५ ॥  
सवारु राइजोअणाउं वेरमणं ॥ ६ ॥

तठखलु पढमे जंते महवय. पाणाइवायाउं वेर  
मणं सव्वं जंते पाणाइवायं पच्चस्कामि से सुहुमं वा ।

वायरं वा । तसं वा । थावरं वा । नेवसयं पाणे अइ  
वाइज्जा । नेवनेहिं पाणे अइवायाविज्जा । पाणेअ  
इवायंते वि । अन्ने न समणुज्जाणामि । जावज्जीवाए  
तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि  
न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुज्जाणामि । तस्स  
जंतं पक्खिमामि निंदामि गरिहामि आप्पाणं वोसि  
रामि ॥ से पाणइवाए चउविहे पन्नत्ते । तंजहा ।  
दवउं खित्तउं कालउं जावउं । दवउं पाणाइवाए  
उसु जीवनिकाएसु । खित्तउं पाणाइवाए सबलोए ।  
कालउं पाणाइवाए दिआवा राउंवा । जावउं पा  
णाइवाए रागेणवा दोसेणवा । जं मए इमस्स धम्मस्स  
केवलियस्सत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिंछिअस्स  
विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरक्खसोवणियस्स  
उवसमप्पजवस्स नववंजचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स  
जिस्कावित्तिअस्स कुक्कीसंवलस्स निरग्गिसरणस्स  
संपरकालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गहिअस्स निवि  
त्तिलक्खणस्स पंचमहद्वयजुत्तस्स असंनिहिंसंचियस्स  
अविसंवाइअस्स संसारपारगामिअस्स निवाणगम  
णपज्जावसाणफलस्स पुर्विअन्नाण्याए असवयाए अ  
वोहिआए अणजिगमेणं अजिगमेणवा पमाएणं राग  
दोसपक्खिअए बालयाए मोहयाए मंदयाए किडु  
याए तिगारवगुरुआए चउक्कसारुवगएण पंचिदिउव  
सट्ठेणं पक्खिपुत्तजारिआए सायासुक्कमणुपालयंतेणं

इहंवाचवे अन्नेसु वा जवग्गहणेसु पाणाश्वाजं कजं  
 वा । कराविजंवा कीरंतोवा परेहिंसमणुज्जाजं तं निं  
 हामि गरिदामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए  
 काएणं अइअं निंदामि पमुप्पन्नं संवरेमि अणागयं  
 पच्चरकामि सव्वं पाणाश्वायं जावज्जीवाए अणिस्सि  
 जंहं नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवायते  
 वि अन्ने न समणुजाणिज्जा तं जहा अरिहंतसस्सि  
 अं सिद्धसस्सिअं साहुसस्सिअं देवसस्सिअं एवंज  
 वइ निस्सूणीवा संजयविरयपनिहय पच्चरकाय पाव  
 कस्से दिआवा राजंवा एगजंवा परिसागजंवा सु  
 तेवा जागरमाणेवा एस खलु पाणाश्वायस्स वेर  
 मणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पार  
 गामिए सवेसिं पाणाणं सवेसिं जूआणं सवेसिं जी  
 वाणं सवेसिं सत्ताणं असोअणयाए अजूरणयाए अ  
 तिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद  
 वणयाए महहे महाणुजावे महापुरिसाणुचिन्ने परम  
 रिसिदेसिए पसहे तंडुस्सककयाए कम्मरकयाए  
 मुखकयाए वोहिलाजाए संसारुत्तारणाए तिकट्ट उव  
 संपज्जित्ताणंविहरामि पढमेजंतेमहव्वए उवठ्ठिजंमि  
 सवाजंपाणाश्वायाजंवेरमणं ॥ १ ॥

अहावरे दोच्चे जंते महव्वए मुसावाजं वेरमणं ।  
 सव्वं जंतेमुसा वायं पच्चरकामिसे कोहा वा १ लोहा  
 वा २ जया वा ३ हासा वा ४ नेवसयं मुसंवइज्जा ने

वन्नेहिं मुसंवायाविज्जा मुसंवयंतेवि अन्ने न समण  
 ज्जाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वा  
 याए काएणं न करेमि न कारवेमि ॥ तस्स जंते प  
 ण्णिकमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥  
 से मुसाए चउविहे पन्नत्ते । तं जहा । दवउ १ खित्तउ २  
 कलउ ३ जावउ ४ । दवउणं मुसावाए सबेदवेसु ।  
 खित्तउणं मुसावाए लोएवा अलोएवा । काल  
 उणं मुसावाए दिआवा राउवा । जावउणं मुसा  
 वाए रागेणवा दोसेणवा । जं मए इमस्स धमस्स  
 केवल्लि पणत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिंछिअ  
 स्स विणय मूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरस्सो  
 वस्सियस्स उवसमप्पजवस्स नववज्जचेरगुत्तस्स अ  
 पय माणस्स त्रिक्कावित्तिअस्स कुक्खि संबलस्स  
 निरगिसरणस्स संपरकालिअस्स चत्तदोसस्स गुण  
 ग्गाहिअस्स निव्विआरस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पंच  
 महवयजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइअस्स  
 संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमण पज्जावसा णफल  
 स्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अवोहियाए अण  
 त्तिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिवरूयाए मोहयाए  
 मंदयाए किड्डयाए तिगारवगुरुआए चउक्खसारउवगएणं  
 पंचिंदिउवसट्टेणं पण्णिपुसं जारयाए सायासुक्कमण  
 पालयंतेणं इह वा जवे अन्नेसु वा जवग्गहणेसु  
 मुसावाउ जासिउ वा जासाविउ वा जासिजंतोवा परेहिं

समणुन्नाउं तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं  
 मणेणं वायाए काएणं अईअंनिंदामि पनुपन्नंसंवरे  
 मि अणागयंपच्चस्कामि सव्वंमुसावायं जावज्जीवाए  
 अणिस्सिउहं नेवसयं मुसं वाइज्जा नेवन्नेहिंसुसं  
 वायाविज्जा मुसं वायंतेवि अन्ने न समणुज्जाणिज्जा ।  
 तं जहा अरिहंतसखिअं सिअसखिअं साहुसखि  
 अं देवसखिअं अप्पसखिअं एवंहवइ जिअकुवा जि  
 अकुणीवा संजय विरय पणिहय पच्चख्खाय पावकम्ममे  
 दिआवा राउंवा एगउंवा परिसागउंवा सुत्तेवा जाग  
 रमाणेवा एसखलु मुसावायस्सवेरमणे हिए सुहे ।  
 खमे निस्सेसिए आणुगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वे  
 सिंअणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अडुअक  
 णयाए असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए  
 अपीअणयाए अपरिआवणयाए अणुइवणयाए मह  
 ठे महागुणे महाणुजावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरि  
 सिदेसिए पसहे तं डुअकअकयाए कम्मअकयाए अक  
 याए बोहिअज्जाए संसारुत्तारणयाए तिकहु उवसं  
 पज्जिताणं विहरामि दोअे जंते महवए उवठिउमि  
 सवाउं मुसावायाउं वेरमाणं ॥ ५ ॥

॥ अहावरेतअे जंते महवए अदिअादाणाउं वेर  
 मणं । सव्वं जंते अदिअादाणं पच्चस्कामि । से गामे  
 वा नगरेवा रसेवा अप्पंवा वहुंवा अणुंवा थुअंवा  
 चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा । नेवसयं अदिअं गिएहि

ज्ज्ञा नेवन्नेहिं अदिष्णं गिएहाविज्ज्ञा अदिष्णं गिएहंतेवि  
 अन्नेन समणुज्ज्ञाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं  
 मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि  
 अन्नं न समणुज्ज्ञाणामि तस्स जंते पक्कमामि  
 निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ से अदि  
 न्नादाणे चउव्विहे पन्नते । तं जहा । दव्वउं खित्तउं  
 कालउं जावउं । दव्वउणं अदिन्नादाणे गहणधारणि  
 वेसु दव्वेसु; खित्तउणं अदिन्नादाणे गामेवानगरेवा  
 रणेवा, कालउणं अदिन्नादाणे रागेणवा दोसेणवा,  
 जं मए इमस्स धम्मस्म केवलिपन्नत्तस्स अहिंसाखरक  
 णस्स उवसमप्पजवस्स नववज्जचेरगुत्तस्स अपयमा  
 णस्स त्तिस्कावित्तियस्स कुक्खिसंवलस्स निरगिसरण  
 स्स संपस्काखियस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअस्स  
 निवियारस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स  
 असंनिहिसंचयस्स अविसंवाश्यस्स संसारपारगामि  
 अस्स निव्वाणगमणपद्यवसाणफलस्स पुर्व्विअन्नाण  
 याए असवणयाए अवोहियाए अणत्तिगमेणं अत्ति  
 गमेणवा पमाएणं रागदोसपडिवद्धआए बालआए  
 मोहयाए मंदयाए किङ्कयाए तिगारवगुरुआए चउ  
 क्कसाउव्वगएणं पंचिदिअवसट्ठेणं पक्किपुष्पं चारियाए  
 सायासुखमणुपालयंतेणं इहंवा जवे अन्नेसुवा जव  
 गहणेसु अदिन्नादाणं गहिअंवा गाहाविअंवा घिप्पं  
 तंवा परेहिं समणुज्ज्ञाउं तंनिंदामि गरिहामि तिविहं



तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईअं निंदामि  
 पडुप्पसंसंवरेमि अणागयं पच्चस्कामि सव्वं अदिन्ना  
 दाणं जावज्जीवाए अणिस्सिज्जं नेवसंयं अदिन्नं  
 गिएहज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नंगिएहाविद्या अदिन्नं  
 गिएहंतेवि अन्ने न समणुज्जाणिज्जा । तं जहा ।  
 अरिहंतसस्सिअं सिद्धसस्सिअं साहुसस्सिअं देवस  
 स्सिअं अप्पसस्सिअं एवं हवइ जिस्कुणीवा संजय  
 विरयपडिहय पच्चस्काय पावकम्मे दिआवा राउवा  
 एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस  
 खलु अदिन्ना दाणस्स वेरमणे हिए सुहे खमे  
 निस्सेसिए आणुगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं  
 जीवाणं सव्वेसिं जूआणं सव्वेसिं सत्ताणं अट्ठरक  
 णयाए असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अ  
 पीरुणयाए अपरिआवणयाए अणुहवणयाए महब्बे म  
 हाणुणे महाणुजावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसि दे  
 सिए पसब्बे तंडुरककयाए कम्मरकयाए मुरकयाए  
 वोहिवाजाए संसारुत्तारणयाए तिकहु उवसंपच्चि  
 ताणं विहरामि तच्चे जंते महव्वए उवठिउमि स  
 व्वाउ अदिन्नादाणाउ वेरमाणं ॥ ३ ॥

अहावरे चउहे जंते महव्वए मेहुणाउ वेरमाणं ।  
 सव्वं जंते मेहुणं पच्चस्कामि । से दिव्वंवा माणुस्संवा  
 तिरिक्कजोणिअंवा । नेवसअं मेहुणं सेविद्या नेवन्नेहिं  
 मेहुणं सेवाविद्या मेहुणं सेवंतेवि अन्ने नसमणुज्जाणा

मि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए  
 काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतं पि अन्नन समणुज्जा  
 णामि तस्स जंतं पक्कमामि निंदामि गरिहामि अ  
 प्पाणं वोसिरामि ॥ से मेहुणे चउव्विहे पन्नते । तंज  
 हा दव्वजं खित्तजं कालजं जावजं । दव्वजं मेहुणे रूवे  
 सुवा रूवसहगएसुवा । खित्तजं मेहुणे उहंलोएवा अ  
 होलोएवा तिरियलोएवा कालजं कालजं दिआवा  
 राजंवा । जावजं मेहुणे रागेणवा दोसेणवा । जंम  
 ए इमस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अहिंसालक्षण  
 स्स सच्चादिष्ठिअस्स विणयमूलस्स । खंतिप्पहाण  
 स्स अहिरन्नसोअस्स उवसमप्पजवस्स नववंजचेर  
 गुत्तस्स अपथमाणस्स जिस्कावित्तिअस्स कुक्सिं व  
 लस्स निरगिसरणस्स संपस्कादिअस्स चत्तदोसस्स  
 गुणगगहिअस्स निव्विआरस्स निव्वित्तिलक्षणस्स  
 पंच महव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अवि  
 संवाइअस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमणप  
 च्चवसाणफलस्स पुर्व्वि अन्नाणयाए असवणयाए  
 अवोहियाए अणजिगमेणं अजिगमेणवा पमाएणं  
 रागदोसपक्खिअयाए चालयाए मोहयाए मंदयाए  
 किड्डयाए तिगारवगुरुआए चउक्कसारजवगएणं पचिं  
 दिजं वसट्ठेणं पक्खिपुत्तं जारियाए सायासुक्कमणुपाल  
 यंतं ॥ इहंवाजवे अन्नेसुवा जवग्गहणेषु मेहुणं सेवि  
 अंवा सेवाविअंवा सेविज्जंतंवा परेहि समणुज्जाजं

निन्दामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वाया  
 ए काएणं अश्यं निन्दामि पक्खिपुन्नं संवरेमि अणा  
 यं पच्चस्कामि सव्वंमेहुणं जावज्जीवाए अणिसि  
 हं नेवसयं मेहुणं सेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं सेवा  
 वेद्या मेहुणं सेवंतेवि अन्ने नसमणुज्जाणिद्या । तं  
 तहा अरिहंत सखिअं सिद्धसखिअं साहुसखिअं  
 इवसखिअं अप्पसखिअं एवं हवइ जिस्कूवा जि  
 कूणीवा संजयविरय पडिइय पच्चस्काय पावकम्मे  
 दिआवा राउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा  
 एसखलुमेहुणस्सवेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए  
 आणुगामिए सबेसिंषाणाणं सबेसिं जूआणं सबे  
 सिं जीवाणं सबेसिं सत्ताणं अट्ठरक्कयाए असोयण  
 याए अजूरणआए अतिप्पणपाए अपीडणयाए अ  
 परिधावणयाए अणुद्वणयाए महत्ते, महागुणे म  
 हाणुजावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए  
 पसधे तंठ्ठरक्कयाए कम्मरक्कयाए मुखयाए वोहि  
 लाजाए संसारुत्तारणयाए उवसंपच्चित्ताणं विहरामि  
 चउत्तेजंतेमहव्वए उवठ्ठिउमिसव्वाउ मेहुणाउवेरमणं ४  
 अहावरे पंचमे जंते महव्वए परिग्गहाउवेरमणं ।  
 सबं जंते परिग्गहं पच्चस्कामि । अप्पंवा वहुंवा अणुं  
 वा थूळंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयंपरिग्ग  
 हं परिगिण्हिद्या नेवन्नेहिं परिग्गिहं परिगिण्हाविद्या  
 परिग्गहं परिगिएहंतेवि अन्नेन समणुज्जाणामि जाव

जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणंवायाए काएणं नकरे  
मि नकारवेमि करंतंपि अन्नं नसमणुज्जाणामि तस्स  
जंते पक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसि  
रामि ॥ सेपरिग्गहे चउविहे पन्नत्ते तंजहा दवउं  
खित्तउं कालउं जावउं । दवउणं परिग्गहे सचि  
त्ताचित्तमीसेसु दवेसु, खित्तउणं परिग्गहे सबलोए  
कालउणं परिग्गहे दिआ वा राउं वा जावउणं प  
रिग्गहे अप्पग्घे वा महग्घे वा रागेण वा दोसेण वा  
जं मए इमस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अहिंसा  
खरक्खणस्स सच्चाहि छिअस्स विण्णयमूलस्स खंतिप्पहा  
णस्स अहिरन्नसोवन्निअस्स उवसमप्पज्जवस्स नव  
वंजचेर गुत्तस्स अपयमाणस्स जिस्कावित्तिअस्स कु  
रिक्संवलस्स निरगिसरणस्स संपरकालिअस्स चत्त  
दोसस्स गुणगाहिअस्स निविआरस्स निवित्ति ल  
क्खणस्स पंचमहव्वय जुत्तस्स असंनिहि संचयस्स  
अविसंवाअस्स संसारपारगामिअस्स निवाणगमणप  
च्चवसाणफलस्स पुर्विअन्नाणयाए असवणयाए अ  
वोहिआएअणजिगमेणं अजिगमेणं वा पमाएणं रा  
गदोसपक्कि वरूआए वालयाए मोहयाए मंदयाए  
किड्डयाए तिगारवगुरुयाए चउक्कसारुवगएणं पंचिं  
दिउवसट्ठेणं पडिपुन्नंजारियाए साया सुखकमणुपालयं  
तेणं इहं वा जवे अन्नेसु वा जवग्गहणेसु परिग्गहो  
गहिउंवा गाहाविउं वा घिप्पंतो वा परोहिं समणु

नान्तं तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं  
 वायाएकाएणं अईअं निंदामि पमुप्पन्नं संवरेमि अ  
 णागयं पच्चस्कामि सबं परिग्गहं जावज्जीवाए अणि  
 स्सिउहं नेवसयं परिग्गहं पगिरिण्हिज्जा नेवन्नेहिं प  
 रिग्गहं परिगिण्हाविद्या परिग्गहं परिगिण्हतेवि अन्ने  
 न समणुज्जाणिज्जा तंजहा अरिहंतसस्किअं सिद्ध  
 सस्किअं साहु सस्किअं देव सस्किअं अप्प सस्किअं  
 एवं हवइ जिस्कु वा जिस्कुणी वा संजय विरय पडिहय  
 पच्चस्काय पावकम्मे दिआवा राउं वा एगउं वा परि  
 सागउं वा सुत्ते वा जागरमाणे वा एस खलु परिग्ग  
 हस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामि  
 ए सबेसिं पाणाणं सबेसिं जूआणं सबेसिं जीवाणं  
 सबेसिं सत्ताणं अट्ठुक्कयाए असोणयाए अजूरण  
 आए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए  
 अणुवणयाए महत्ते महागुणे महाणुजावे महापुरि  
 साणुचिन्ने परमरिसि देसिए पसत्ते तंट्ठुक्कयाए  
 कम्मस्कयाए वोहिलाजाए संसारुत्तारणायाए तिक  
 हु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि पंचमे जंतंते महवए उ  
 वठ्ठिउंमि मवाउं परिग्गहाउं वेरमणं ॥ ५ ॥

अहावरे ठठे जंतंते महवए राईअ जोअणाउं वेर  
 मणे सबं जंतंते राईजोअणं पच्चस्कामि ॥ से असणं वा  
 पाणं वा खाइमं वा साइमं वा नेवसयं राइ जोअणं  
 चुंजिज्जा नेवन्नेहिं राइजोअणं चुंजाविद्या राइजोअ

णं जुजंते वि अन्ने न समणुज्जाणामि जावज्जीवाए  
 तिविहं तिविणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नका  
 र्वेमि करंतं पि अन्नं न समणुज्जाणामि तस्सजंते प  
 ण्णिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि॥  
 से राइज्जोअणे चउव्विहे पन्नत्ते दव्वउं खित्तउं कालउं  
 जावउं॥दव्वउंणं राइज्जोअणं असणे वा पाणे वा खाइमे  
 साइमे वा खित्तउंणं राइज्जोअणे समयखित्ते कालउं  
 णं राइज्जोअणे, दिआ वा राउं वा,जावउंणं राइज्जोअ  
 णे, तित्ते वा कमुए वा कसायले वा अंविहे वा महु  
 रे वा लवणे वा रागेण वा दोसेण वा जंमए डमस्स  
 धम्मस्स केवल्लि पन्नत्तस्स अहिंसा लक्खणस्स सच्चाहि  
 ठिअस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरणसो  
 वस्सिअस्स उव्वसमप्पज्जवस्स नववज्जचेर गुत्तस्स अप  
 यमाणस्स जिस्कावित्तिअस्स कुक्खिसंवल्लस्स निरग्गि  
 सरणस्स संपक्कालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअ  
 स्स निव्विआरस्सनिव्वितिलखणस्स पंचमइद्वयजुत्तस्स  
 असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइअस्स संसारपारगामि  
 अस्स निव्वाणगमणपच्चवसाणफलस्स पुव्विअन्नाण्याए  
 असवण्याए अवोहिआए अणज्जिगमेणं अज्जिगमेणं  
 वा पमाएण रागदोस पडिवरूयाए चालयाए मोहयाए  
 मंदयाए किडयाए तिगारवगुरुआए चउक्कसारुवएणं  
 पंचिंदिअवसट्ठेणं पण्णिपुणंज्जारिआए सायासुखमणुपा  
 लयतेणं इहं वा जवे अन्नेसु वा जवग्गहणेसु वा राइज्जो

विहार समिउं ॥ जुत्तो गुत्तो ठिउं समण धम्म ॥ पढ  
 मंवयमणुरस्के । विरयामो पाणाइ वायाउं ॥ १३ ॥  
 आलय विचारसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समण धम्म ॥  
 वीयं वय मणुरस्के ॥ विरयामो मुसावायाउं ॥ १४ ॥ आ  
 लयवियारसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समणधम्म ॥ तीयं  
 वयमणुरस्के । विरयामोअदिष्ठा दाणाउं ॥ १५ ॥ आलय  
 विचारसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समणधम्म ॥ चउव्ववय  
 मणुरस्के । विरयामो परिग्गहाउं ॥ १६ ॥ आलय विया  
 रसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समणधम्म ॥ पंचम  
 वयमणुरस्के । विरयामो परिग्गहाउं ॥ १७ ॥ आलय  
 विचारसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समणधम्म ॥ ठठव  
 यमणुरस्के ॥ विरयामो राईजोयणउं ॥ १८ ॥ आलय  
 विहार समिउं ॥ जुत्तो गुत्तो ठिउं समण धम्म ॥  
 तिविहेण अप्पमत्तो । रक्कामि महव्वए पंच ॥ १९ ॥  
 सावज्जजोगमेगं ॥ मिहत्तं एगमेव अन्नाणं ॥ परिव  
 दंतो गुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ २० ॥ अणवव  
 जोगमेगं ॥ सम्मत्तं एगमेवनाणं तु ॥ उवसंपन्नो जु  
 त्तो ॥ रक्कामि महव्वएपंच ॥ २१ ॥ दो चेव रागदो  
 से ॥ दुष्णिअ जाणाइअट्ठरुदाइ ॥ परिवदंतो गुत्तो ।  
 रक्कामि महव्वएपंच ॥ २२ ॥ दुविहं चरित्त धम्मं ।  
 दुन्निअ जाणाइ धम्मसुक्काइ ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥  
 रक्कामि महव्वए पंच ॥ २३ ॥ किएहा नीला काउ ॥  
 तिन्निअ वेसाउं अप्पसन्नाउं ॥ परिवदंतो गुत्तो र

रक्कामि महव्वए पंच ॥ २४ ॥ तेज पद्दा सुक्का ॥ ति  
 न्निअ वेसाउं सुप्पसत्ताउं ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥ र  
 रक्कामि महव्वए पंच ॥ २५ ॥ मणसा मणसच्चविउ ॥  
 वायासच्चेण करण सच्चेण ॥ तिविहेण सच्चविउ  
 ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ २६ ॥ चत्तारि अ डुह  
 सिज्जा ॥ चउरो सन्ना तहाकसायाय ॥ परिवर्धंतो  
 गुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ २७ ॥ चत्तारि अ  
 सुह सिज्जा ॥ चउव्विहं संवरं समाहिठाणं ॥ उवसं  
 पन्नो जुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ २८ ॥ पंचेवय  
 काम गुणे ॥ पंचेवय अएहवे महादोसे ॥ परिवर्धंतो  
 गुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ २९ ॥ पच्चिदिअ सं  
 वरणं ॥ तद्देव पंच विहमेव सद्यायं ॥ उवसंपन्नो  
 जुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ ३० ॥ ठज्जीवनिकाय  
 वहं ॥ ठप्पिअ जासाउं अप्पसत्थाउं ॥ परिवर्धंतो  
 गुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ ३१ ॥ ठव्विहमप्पित्त  
 रयं ॥ बप्पिअ ठव्विहं तवो कम्मं ॥ उवसंपन्नो  
 जुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ ३२ ॥ सत्त य जय  
 ठाणाइं ॥ सत्तविहं चेव नाणविजंगं ॥ परिवर्धंतो  
 गुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ ३३ ॥ पिंडेसण पाणेसण  
 उग्गह सत्ति कया महप्पयणा ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥  
 रक्कामि महव्वए पंच ॥ ३४ ॥ अठय मयठाणाइं अ  
 ठय कम्मइं तेसिं वंधंच ॥ परिवर्धंतो गुत्तो ॥ रक्कामि  
 महव्वए पंच ॥ ३५ ॥ अठय पवयण माया ॥ दिठा अठ



विह निष्ठिअष्टेहिं॥उवसंपन्नो जुत्तो । रक्कामि महव्व  
 ए पंच ॥३६॥ नव पाव निश्चाणाइं ॥ संसारव्हाय न  
 वविहा जीवा ॥ परिवच्चंतो गुत्तो । रक्कामि महव्वए  
 पंच ॥ ३७ ॥ नव वंजचेर गुत्तो ॥ पुनवविहं वंजचे  
 र परिसुळ ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ।  
 रक्कामि महव्वए पंच ॥ ३८ ॥ उवघायं च दसविहं॥  
 असंवरं तहय संकिळेसं च ॥ परिवच्चंतागुत्तो रक्कामि  
 महव्वए पंच ॥३९॥ सच्च समाहिष्ठाणे ॥ दसचेव दसउं  
 समण धम्मंच ॥ उव संपन्नो जुत्तो ॥ रक्कामि म  
 हव्वए पंच ॥ ४० ॥ आसायणं च सबं ॥ तिगुण  
 इक्कारसं विवच्चंतो ॥ परिवच्चंतो गुत्तो ॥ रक्कामि  
 महव्वए पंच ॥ ४१ ॥ एवंतिदंन विरउं ॥ तिगरण  
 सुळो तिसल्ल निसल्लो ॥ तिविहेण पक्किंतो ॥  
 रक्कामि महव्वए पंच ॥ ४२ ॥

इच्चेइअं महव्वय उच्चारणं थिरत्तं सल्लुळरणं । धिइ  
 वलं ववसाउं । साहणठो पाव निवारणं । निकाय  
 णा जाव विसोही पडागाहरणं । निळ्ळूहणाराहणा  
 गुणाणं । संवरजोगो पसह्वाणो । वउत्तया जुत्तयाय  
 नाणे परमठो उत्तमठोय । एसखलु तिठंकरेहिं ।  
 रइ राग दोस महणेहिं । देसिउं पवयणस्ससारो ।  
 ठज्जीवनीकाय संजमं । उवएसिअं । तेलुक्क सक्कअं  
 गाणं । अप्पुवगया नमोहु ते । सिळ्ळु बुळ्ळु मुत्त निरय ।  
 निसंग भाणमूरण । गुण रयण । सायर । मणंत

मप्पमेअ । नमोवुते महइ महावीर वरूमाण सामि  
स्स । नमोवुते अरहउ । नमोवुते जगवउ । तिकहु ।  
एसाखलु । महवय उच्चारणाकया ॥

इधामो सुत्त कित्ताणं काउं । नमोतेसिं खमासम  
णाणं । जेहिं इमं वाइअं । ठविह भावस्सयं । जग  
वंतं तंजहा । सामाइअ ॥ १ ॥ चउवीसठउ ॥ २ ॥  
वंदणयं ॥ ३ ॥ पक्किमणं ॥ ४ ॥ काउसग्गो ॥ ५ ॥  
पच्चरकाणं ॥ ६ ॥ सवेहिंपि एअंमि । ठविहे आव  
स्सए । जगवंते ससुत्ते । सअठे सगंथे सनिज्जुत्ती  
ए । ससंगहणिए जेगुणावाजावावा । अरिहंतंतेहिंजग  
वंतेहि । पणत्तावा । परूविआवा । तेजावेसइहामो ।  
पत्तियामो । रोएमो फासेमो । पालेमो । अणुपाले  
मो । तेजावेसइहंतंतेहिं पत्तिअंतंतेहिं । रोअंतंतेहिं । फासं  
तेहिं । पालंतंतेहिं । अणुपालंतंतेहिं । अंतोपक्कस्स जंवा  
इअं । पढिअं परिअट्ठिअं । पुड्ढिअं अणुपालिअं ।  
तंडुरक्कयाए कम्मक्कयाए । सुक्कयाए । बोहिला  
जाए । संसारुत्तारणयाए । तिकहु । उवसंपज्जित्ताणं  
विहरामि । अंतोपक्कस्स । जंनवाइअं नपढिअं नप  
ढिअं नपरिअट्ठिअं । नपुड्ढिअं । नाणुपेहिअं । नाणु  
पालिअं संतेवले संतेवीरिए । संतेपुरिसकारपरिक्कमे ।  
तस्सआलोएमो । पक्किमामो । निंदामो गरिहामो ।  
विउट्टेमो । अकरणयाएअपुठ्टेमो । अहा रिहंतवो  
कम्मं । पायष्ठित्तंपडिवज्जामो । तस्समिढा मिडुकडं ।

नमोतेसिखमासमणाणं । जेहिंश्मंवाइअं । अंग  
 वाहिरं उकालिअंजगवंतं । तंजहा । दसवेआलिअं ।  
 कप्पिआकप्पिअं । चुल्लकप्पसुअं । महाकप्पसुअं ।  
 उवाइअं रायप्पसेणिअं । जीवाज्जिगमो । पणवणा ।  
 महापन्नवणा । नंदी अणुउगदाराइं देविंदथ्यउ । तंडुल  
 विश्वालिअं चंदाविस्त्रियां पमायप्पमायं । पोरिसिमंमलं ।  
 मंडलप्पवेसो गणिविद्या । विद्याचारणविणीहउ । जाण  
 विज्जन्ती । मरणविज्जन्ती । आयविसोही । संलेहणा  
 सुअं । वीयरायसुअं । विहारकप्पो । चरणविहि ।  
 आउरपच्चरकाणं । महापच्चरकाणं ॥ १० ॥ सवेहिपि  
 एअंमि । अंगवाहिरे उकालिए । जगवंते ससुत्ते ।  
 सअठे । संगंथे । सनिज्जुत्तिए । ससंगहणिए जेगु  
 णावा जावावा । अरिहंतेहिं । जगवंतेहिं । पन्नत्ता  
 वा । परूविआवा । तेजावे सदहामो पत्तिआमो ।  
 रोएमो फासेमो । पालेमो अणुपालेमो । तेजावे सद  
 हंतेहिं । पत्तिअंतेहिं । रोअंतेहिं । फासंतेहिं पालंते  
 हिं । अणुपालंतेहिं । अंतोपस्कस्स । जंवाइअं पढि  
 अं । परीअट्ठिअं । पुठिअं । अणुपेहिअं । अणुपालि  
 अं । तंडुरकरकयाए । कम्मख्खयाए । मुख्खयाए ।  
 वोहिलाजाए संसारुत्तारणयाए । तिकहु । उवसंप  
 धित्ताणंविहरामि । अंतोपरूखस्स । जंनवाइअं नप  
 ढिअं नपरिअट्ठिअं । नपुठिअं । नाणुपेहिअं । नाणु  
 पालिअं । संतेवले संतेविरिए । संतेपुरिसकारपरिक

मे । तस्सआलोएमो । पम्भिकमामो । नींदामो । गरिहामो ।  
विउट्टेमो । विसोहेमो । अकरणयाएअपुठेमो । अहारिहं  
तवोकम्मं । पायवित्तं पम्भिवद्यामो । तस्समिहामिदुक्कडं ।

नमोत्तेसिखमासमणाणं । जेहिंश्मंवाश्चं अंगवा  
हिरंकाळिअंजगवंतं । तंजहा । उत्तरऊयणां । द  
साकप्पो । ववहारो । इसिजासिआं । निसीहं ।  
महानिसीहं । जंबुद्वीवपणत्ती । सूरपणत्ती । चंदपन्न  
त्ती । दीवसागरपन्नत्ती । खुड्डयाविमाणपविजत्ती ।  
महद्धिआविमाण पविजत्ती । अंगचूलिआए । वंग  
चूलिआए । विवाहचूलिआए अरुणोववाए । वरुणो  
ववाए गरुलोववाए । धरणोववाए । वेलंधरोववाए ।  
वेसमणोववाए । देविंदोववाए । उछाणसुए । समुछा  
णसुए । नागपरिआवलिआणं । निरयावलिआणं ।  
कप्पिआणं । कप्पवर्किसिआणं । पुप्फिआणं । पुप्फ  
चूलिआणं । वण्हीयाणं । वण्हीदसाणं आसीविस  
जावणाणं । दिठ्ठि विसजावणाणं । चारणसुमिण जा  
वणाणं । महासुमिणजावणाणं । तेअग्गिनिसग्गाणं  
॥३६॥ सवेहि पिण्अंमि । अंगवाहिरे कालिए जग  
वंते । ससुत्ते । सअहे सगंथे । सणिज्जुत्तिए । ससं  
गहणिए जेगुणावां जावावा । अरिहंतेहिं । जगवंते  
हिं । पणत्तावा परूवीआवा तेजावेसदहामो । पत्ति  
आमो रोएमो । फासेमो पाळेमो । अणुपाळेमो । ते  
जावेसदहतेहिं । पत्तिअंतेहिं । रोयंतेहि फासंतेहि ।

पालंतेहिं । अणु पालंतेहिं । अंतोपखस्स जंवाइअं  
 पट्ठिअं परिअट्ठिअं पुट्ठिअं अणुपेहिअं अणुपालिअं  
 तंडुखखखाए । कम्मखखाए ॥ मुखखाए । वोहि  
 दानाए । संसारुत्तारणाए । त्तिकट्ट । उवसंपच्चित्ताणं  
 विहरामि । अंतोपखस्स । जंनवाइअं नपढीअं नप  
 रियट्ठिअं नपुट्ठिअं । नाणुप्पेहिअं नाणुपालिअं । सं  
 तेवळे । संतेवीरिए । संतेपुरिसकारपरिक्रमं । तस्सआ  
 लोएमो । पक्किमामो । निंदामो गरिहामो । विउट्ठेमो  
 विसोहेमो । अकरणयाए । अपुठेमो । अहारिहंतवो  
 कम्मं । पायच्चित्तंपक्खिदामो । तस्समिच्चामिडुक्कनं ॥

नमोतेसिंखमासमणाणं । जेहिंश्मंवाइअं । डुवा  
 लसंगंगणिपिग्गं । जगवंतं । तंजहा । आचारो सुअ  
 गगो ठाणं । सगवाउं । विवाहपन्नत्ती । नायाधम्मक  
 हाउं । उवासगदसाउं अंतगरुदसाउं । अणुत्तरोववा  
 इअदसाउं । पएहावागरणं । विवागसुअं दिट्ठिवाउं ॥  
 सवेहिंपि एअंमि । डुवालसंगे गणिपिग्गे । जगवंते ।  
 सअठ्ठे । ससुत्ते । संगंथे । सणिल्लुत्तिए । ससंग ह  
 णिए । जे गुणा वा । जावा वा । अरिहंतेहिं । जग  
 वंतेहिं । पन्नत्ता वा । परूविआ वा । ते जावे सद्द  
 हामों । पत्तिआमो । रोएमो । फासेमो । पालेमो ।  
 अणुपालेमो । ते जावे सद्दहंतेहिं । पत्तिअंतेहिं ।  
 रोयतेहिं । फासंतेहिं । पालंतेहिं । अणुपालंतेहिं ।  
 अंतोपखस्स । जंवाइअं । पट्ठिअं । परिअट्ठिअं । पु

द्विञ्च । अणुपेहिञ्च । अणुपाद्विञ्च । तन्दुरककयाए ।  
 कम्मकयाए । मुक्कयाए । वोहिलाजाए । संसारुत्ता  
 रयाए । तिकट्ट । उवसंपवित्ताणं विहरामि । अंतो  
 परकस्स जं न वाइञ्च । न पढिञ्च । न परिअट्टिञ्च ।  
 न पुट्टिञ्च । नाणुपेहिञ्च । नाणुपाद्विञ्च । संते वळे ।  
 संते वीरिए । संते पुरिसक्कारपरिक्रमे । तस्स आलो  
 एमो पक्कमामो । निंदामो गरिहामो । विउट्टेमो  
 विसोहेमो । अकरणयाए । अपुठेमो । अहारिहं  
 तवोकम्मं । पायट्ठित्तं पक्खिद्वामो । तस्स मिठामि  
 डुक्कं ॥ ७ ॥ नमो तेसिं खमासमणाणं । जेहिं इमं  
 वाइञ्च डुवा लसंगं गणिपिरुगं । जगवंतं । तं जहा  
 सम्मं काएणं । फासंति । पालंति । पूरंति । तीरंति ।  
 किट्ठंति । सम्मं आणाए । आराहंति । अहं च  
 नाराहेमि । तस्स मिठामिडुक्कं ॥ ८ ॥

सुअदेवआ जगवई । नाणावरणीअकम्मसंघायं ।  
 तेसि खवेउ सययं । जेसिं सुअ सायरे जत्ति ॥ ९ ॥

इति पाक्षिक सूत्र समाप्तं ॥

पाक्षिकद्वामणा. ॥

इठामि खमासमणो पिञ्चं च मे जंजे । हठाणं तु  
 ठाणं अप्पायंकाणं । अजग्गजोगाणं । सुसीलाणं । सु  
 वयाणं । सायरिउवप्पायाणं । नाणेणं । दंसणेणं ।  
 चरित्तेणं । तवसा । अप्पाणं । जावेमाणानं । बहुसु  
 जेण जे दिवसो पोसहो । परको वड्कंतो । अन्नो जे

कृद्धाणेणं । पद्भुवट्टिणं । सिरसा मणसा । मण्णएण  
वंदामि ॥ १ ॥ तुप्पेहिं समं ॥

इठामि खमासमणो । पुब्बि चेइआइं वंदित्ता । न  
मंसित्ता । तुप्पण्हं पायमूढे । विहरमाणेणं । जे केइ  
वहुदेवसिआ । साहुणो । दिठासमाणा वा वसमाणा  
वा गामाणुगामं । दुइच्चमाणा वा । राइणिआ संपु  
ठंति । उमराइणिआ वंदंति । अज्झया वंदंति अ  
ज्झियाउं वंदंति । सावया वंदंति । सावियाउं वंदंति  
अहंपि निस्सहो । निक्कसाउं । त्तिकहु । सिरसा मण  
सा । मण्णएण वंदामि ॥ २ ॥ अहमवि वंदामि चेइआइं ॥

इठामि खमासमणो । अपुठ्ठिउंहं । तुप्पण्हं । सं  
तिअ । अहाकप्पं वा । वणं वा । पडिग्गहं वा । कं  
वलं वा । पायपुठ्ठणं वा । रयहरणं वा । अस्करं वा ।  
पयं वा । गाहं वा । सिलोगं वा । सिलोगऊं वा ।  
अठं वा । हेउ वा । पसिणं वा । वागरणं वा । तुप्पे  
हिं । चिअत्तेण दिन्नं । मए । अविणएण । पडिठ्ठिअं ।  
तस्समिठामिडुक्कं ॥ ३ ॥ आयरियसंतिअं ॥

इठामि खमासमणो । अहमपुवाइं । कयाइं च मे ।  
किइक्कम्माइं । आचारमंतरे । विणयमंतरे । सेहि  
उं । सेहाविउं । संगहिउं । उवग्गहिउं । सारिउं ।  
वारिउं चोइउं । पडिचोइउं । चिअत्ता मे । पडिचो  
यणा । अपुठ्ठिउंहं । तुप्पण्हं तवतेयसिरीए । इमाउं  
चाउरंत संसारकंताराउं । साहुहु । निठारिस्सामि

तिकट्टु । सिरसा मणसा । मन्त्रेण वंदामि ॥ ४ ॥

निवारणपारगाहोह ॥ इति पाद्विक्रम द्वावणा ॥

साधुर्लोकों दैवसिक और रात्रिक प्रतिक्रमणमें  
अतिचारकी आठ गाथाके स्थानपर

गुणनेकी एक गाथा

सयणासन्न पाणे, चेइ जइ सिद्ध काय उच्चारै ।

समिइ जावणा गुत्ती, वितहायरणे य आइयारो ॥ १ ॥

यह गाथा गुण तेतिस्में कहिहुइ बातें संबंधी  
जो कुछ अतिचार लगां होसो सांधुने याद करना.  
सामान्य साधुसैं गुरुको अद्वय व्यापार होनेसैं गुरुने  
द्वोवार यह गाथा अर्थ सह विचारनी.

( प्रातः पन्डितेहणकी विधि ),

इरियावही पन्डितमी, खमासमण देके, इच्छाका  
रेण संदिसह जगवन् पन्डितेहण करुं ? 'इच्छा' कही  
मुहपत्ति ५० बोलसैं, उंघो १० बोलसैं, कटासण २५  
बोलसैं, कंदोरा १० और चोलपट्टा २५ बोलसैं पन्डि  
लेहना पिठे इरियावही पन्डितमके, खमासमण  
देके, इच्छाकारी जगवन् पसाय करी पन्डिते हणा प  
न्डितेहवोजी, एसा कहकें स्थापनाचार्यकी पडिलेह  
णा करनीसो नीचे प्रमाण

प्रथम कामली पन्डितेही संकेलके तिस उपर  
स्थापनाचार्य रखणी. पिठे थापनाजी. ठोनीके प्रथम  
उपरकी एक मुहपत्ति पन्डितेहे पिठे "शुरूस्वरूपके



धारक गुरु ज्ञानमयी. दर्शनमयी चारित्र्यमयी, शुद्ध श्रद्धामय, शुद्ध प्ररूपणामय, शुद्ध स्पर्शनामय, पंचाचार पाले पलावे, अनुमोदे, मनगुप्ति वचनगुप्ति, कायगुप्तिसैं गुप्ता” यह तेरह बोल बोलके पांचोंस्थापनाजीकी पृथक् पृथक् पन्विलेहणा करे. पिठें स्थापनाजी संबंधी दुसरी मुह पत्तिये पन्विलेहे. ( सांज की पन्विलेहण वखत पढेली स्थापनाजीकी सब मुहपत्तियें पन्विलेहना पिठें स्थापनाजी बांधके ठवणी उपर रखके खमा समण देके इच्छा० उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं कही मुहपत्ति पन्विलेही, खमा० इच्छा० उपधि संदिसाहुं ? इच्छं, खमा० इच्छा० उपधि पन्विलेहु ? इच्छं. कही दूसरे सबवस्त्रें पडिलेहने अंतमें मंरुक पडिलेहना पिठें डंभासण लेके पन्विलेही, इरिआवही पन्विकमी, काजा लेना पिठें इरिआवही पन्विकमी काजा परठवना. पिठें इरिआवही पन्विकमी, खमासण देके इच्छा० सजाय करुं ? इच्छं कही एक नवकार गणी ‘धम्मो मंगल मुक्किंठं, ए सजाय कहेना इतिप्रातः पन्विलेहणविधि

( संध्या पन्विलेहणविधि )

खमासमण देके इच्छा० बहु पन्विपुत्रा पोरिसि ? खमासमण देके इरियावही पन्विकमी खमासमण देके इच्छा० पन्विलेहण करुं ? इच्छं खमा० इच्छा० वस्ती प्रमार्जु ? इच्छं कहके उपवास कीया होय तो मुहप

त्ति, उँघो, कटासणं पन्डिलेहना नहीं तो पूर्ववत् पांच चीजें पन्डिलेहना. पिठें इरियावही पन्डिकमी खमासमण देके, इच्छाकारी जगवन् पसाय करी पडिलेहणा पन्डिलेहावोजी. यों कहके पूर्वोक्त रीत स्थापनाजीनी पन्डिलेण करनी. पिठें खमा० इच्छा० उपधि मुहपत्ति पन्डिलेहुं ? इच्छं कही मुहपत्ति पन्डिलेहि खमा० इच्छा० सजाय करूं ? इच्छं कही एक नवकार गुणके “ धम्मो मंगल मुक्किंठं ” एसजाय कहे. पिठें आहार कीया होयतो वांदणा देके योग्य पच्चस्काण करना. उपवास किया होयतो खमसमण देके इच्छाकारी जगवन् पसाय करी पच्चस्काण आदेश दिजीयें योंकहके पच्चस्काण करे. पिठें खमा० इच्छा० उपधि संदिसाहुं ? इच्छं खमा० इच्छा० उपधि पडिलेहुं ? इच्छं कही सर्व वत्त पडिलेहे. पिठें पूर्वोक्त रीत इरियावही पन्डिकमी, काजा लेके, इरियावही पन्डिकमी, काजा परठवना. ॥ इति ॥

( पोरसिविधि )

ठ घनी दिवस चडे पिठे खमासमण देके इच्छा० बहु पन्डिपुत्ता पोरिसि ? इच्छं कही खमासमण देके इरियावही पन्डिकमना पिठें खमासमण देके इच्छा० पन्डिलेहण करूं ? इच्छं कही मुहपत्ति पन्डिलेहनी. इति.

पच्चस्काण पानेकी विधि.

खमासमण देके इरियावही पन्डिकमी, खमासम

ए देके इच्छा० चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कही जगचिंता मणीका चैत्यवंदन जयवियराय संपुर्ण पर्यंत करना. (स्तवन स्थान उव सग्वहरं कहेना.) पिठें खमास मण देके इच्छा० सजाय करुं ? इच्छं कही एक नव कार गणी धम्मो मंगलमुक्किठं सजाय कहेना खमा समण देके इच्छा० मुहपत्ति पफिलेहुं ? इच्छं कही मुहपत्ति पहिलेहणी. पिठें खमा० इच्छा० पच्चरकाण पारुं 'तहत्ति' कही जमणा हाथ उंघा उपर स्थापन करके एक नवकार गुणके आंवल पर्यंतके पच्चरकाण नीचे प्रमाणे कह करपारणा.

“उग्गए सूरे नमुक्कार सहिअं पोरिसिं साढपो रसिं सूरुएउग्गए पुरिमहु मुट्ठि सहिअं पच्चरकाण कीया चउविहार ॥ आंवील, नीवी, एकासणं पच्च रकाण किया तिविहार ॥ पच्चरकाण फासिअं, पालि अं सोहिअं, तीरिअं किट्ठिअं, आराहिअं जं च न आराहिअं तस्स मिळामि डुक्कं. ॥

इस्में जो पच्चरकाण कीया होय उहांतक बोलनां आगेकेपाछ न बोलवां तिविहार उपवासवालो ने नीचे प्रमाणे कहेना

“सूरे उग्गए पच्चरकाण किया तिविहार; पाण हार पोरिसि साढपोरिसि पुरिमहु मुट्ठि सहिअं पच्चरकाण किया पाणहार; पच्चरकाण फासिअं० पूर्ववत् ए प्रमाणे पच्चरकाण पार्या पिठे नीचे प्रमाणे ॥ १७ ॥

गाथा कहेनी.

धम्मो मंगल मुक्किठं । अहीसा संज्जमो तवो  
 देवावि तं नमंसंति । जस्स धम्मो सया मणो ॥ १ ॥  
 जहा दुमस्स पुप्फेसु । जमरो आवियइ रसं । नय  
 पुप्फं किलामेइ । सो अ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥ एमेए  
 समणा मूत्ता । जे लोए संति सोहुणो । विहंगमाव  
 पुप्फेसु । दाण जत्तेसणे रया ॥ ३ ॥ वयं च वित्तिं ल  
 प्रामो । न य कोइ उवहम्मई । अहा गडेसुरीयंते ।  
 पुप्फेसु जमरी जहा ॥ ४ ॥ महुकार समा बुद्धा । जे  
 जवति अणिस्सिया । नाणापिंरया दंता ॥ तेणबुच्चं  
 ति साहुणो तिवेमि ॥ ५ ॥ दुम्म पुप्फिआ अज्जयणम्  
 ॥ १ ॥ कहन्नु कुवा सामण । जो कामे न निवारण ।  
 पए पए विसीयतो । संकप्पस्स वसंगठं । ६ । वच्च  
 गंधमलंकारं । इत्थिउं सयणाणि य । अठंदा जे न जुंजं  
 ति । न से चाइत्तिबुच्चई । ७ । जेअ कंते पिए जोए ।  
 लळेवि पिठि कुवई । साहीणे चवइ जोए । सेहु  
 चाइत्ति बुच्चई ॥ ८ ॥ समाइपेहाइ परिवयंतो । सिआ  
 मणो निस्सरई वहिआ ॥ न सामहं नो वि अहंपि  
 तीसे । इच्चेव ताउं विणइच्च रागं ॥ ९ ॥ आयावया  
 हीचयसोगमह्वं । कामेकमाहीकमि यं खु दुखं । ठिं  
 दाहिदोसं विणइज्जा रागं । एवंसुही होहिसि संपरा  
 ए ॥ १० ॥ पस्कंदे जलियं जोउं । धूमकेउं दुरासयं ।  
 निवृंति वंतयं जोत्तं । कुले जाया अगंधणे ॥ ११ ॥

धिगढु ते जसो कामी । जोतं जोवियकारणा । वंतं इ  
 षसिश्चावेउं । से अंतं मरणं जवे ॥ १२ ॥ अहं च  
 जोग रायस्स । तं चसि अंधगवन्हिणो । माकुले गंध  
 णाहो मो । संजमं निहुउंचर ॥ १३ ॥ जइ तं काहि  
 सि जावं । जा जा दिहसि नारीउं । वायाविजुवह  
 को । अठि अप्पा जविस्ससि ॥ १४ ॥ तीसे सो व  
 यणं मुच्चा । संजयाइसु चासियं । अंकुसेण जहा ना  
 गो । धम्मे संपडिवाइउं ॥ १५ ॥ एवं करंति संबुद्धा ।  
 पंक्किया पवियरक्का । विणिअहंति जोगेसु । जहा  
 से पुरिसुत्तमो । तिवेमि ॥ १६ ॥ संजमे सुठियप्पा  
 णं । विप्पमुक्काण ताइणं । तेसिमेय मणाइन्नं । निग्गं  
 थाण महेसिणं ॥ १७ ॥ इतिसामन्नपुवियच्चयणम् ॥

गोचरी आलोचन विधि.

निसिद्धी कहके उपाश्रयमें प्रवेश करके गुरु स  
 न्मुख आके नमो खमासमणाणं मण्णवण वंदामी'  
 कहके पिठें पग जूमि प्रमार्जी शुद्ध करके गुरु स  
 न्मुख खडे रहके माये पग उपर मांमा रखके  
 दक्षिण हाथमे मुहपत्ति रखके खडेखडे खमासमण  
 देय. पिठें आदेश मांगके इरिआवही पक्कमे. एक  
 लोगस्सका काउसग्ग करे. काउसग्गमें जो क्रमसें  
 गोचरीकी जो जो वस्तुयें लीनी होय सो यादकरे  
 तिस्में जहां जहां जो जो दोष लागे होय सो याद  
 करे पिठें नमो अरि हंताणं कह पाणके क्रम प्रमाण

गुरुकों कह वतावे. पिठें गुरुकों आहार दिखावे. पिठें गोचरी आलोवे सो ए प्रमाणे—

पन्निक्कमामि गोअरचरिआएसें मिठामिडुकमं प  
यंत (अमण सूत्र पगाम सजाय) मे आवे सो आलावा  
कहे. पिठे तस्स उत्तरी० अन्नठ० कहके काउसग्ग  
करे. सो काउसग्गमे नीचेकी गाथा तिन वार विचारे.  
अहो जिणेहीं असावज्जा, वित्ती साहुण देसिया ।  
मुक्कसाहुण हेउस्स, साहु देहस्स धारणा ॥ १ ॥

पिठें काउस्सग्ग पारके लोगस्स कहे. ॥ इति ॥

स्थंडिल शुद्धिका विधि.

सायंकाले दैवसिक प्रतिक्रमणके प्रारंभमे इरिआ  
वही पन्निक्कमी पच्चखाण करे पिठें खमा० इष्ठ० स्थं  
निल पन्निवेहुं? इष्ठं कही मंडलाकरे सो ए प्रमाणे—

१ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे.

२ आघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे.

३ आघाडे मज्जे उच्चारे पासवणे अणहियासे.

४ आघाडे मज्जे पासवणे अणहियासे

५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे.

६ आघाडे दूरे पासवणे अणहियासे.

दूसरे ठ मांडलेमे अणहियासेके वदल अहिया  
से' कहेना. तत्पश्चात् दूसरी वारमे आघाडेके वदल  
आणाघाडे कहेना शेष उपर प्रमाणे कहेना. एकंदर  
२४ मंडले करना.

पिठें इरिआवही पम्किमी, चैत्यवंदन करके पम्किमणां शरु करे. ॥ इति. ॥

संधारा पोरिसीकी विधि.

पहोर रात्री पर्यंत सजाय ध्यानकिये पिठे संधारा करनेके अवसर खमा० इच्छा० बहु पडिपुन्ना पोरिसि कही खमासमेण देके इरिआवही पम्किमे पिठें खमा० इच्छा० 'बहु पम्किपुन्ना पोरिसि राश्य संधारण ठाउं ?' यौ कहके चउक्सायका चैत्यवंदन जय विय रायपर्यंत करना पिठे खमा० इच्छा० संधारा विधि जणनेकी मुहपत्ति पडि लेहुं ? इच्छं कही मुहपत्तिपम्कि लेना. 'निसिही निसिही नमो खमासमणाणं गोयमा इणं महामुणीणं' इतना पाठ, कहके नवकार तथा करेमिजंते—त्रणवार कहना पीठे संधारा पोरिसि बोलना ( प्रतिक्रमणकी बुकमे ठपगयाहे. )

तिस्से चौदमी गाथा तीनवार कहना पिठे तीन नवकार गुणना पिठे ठेछी तीन गाथा कहेनी तत्पश्चात् निद्रा न आवे तहांतक सजाय ध्यानकरना.

पाक्षिक प्रतिक्रमणमें कोइको ठीक आवे तो करनेकी विधि.

जो पाक्षिक अतिचारके पहिले ठीक आवेतो सब पुनः करना. तत्पश्चात् वृद्धशांति तकमे ठीक आवे तो डुस्करकउके काउसग्गके पहिले इरिआवही पम्किमी लोगस्स कही खमासण देके इच्छा० छुड्रो

पञ्च उन्नावणार्थ काजस्सग करुं ? इत्थं कही अन्नत्थ कही चार लोगस्सका काजस्सग सागरवरगंजिरा त क करना नीचेकी गाथा कहके पारना.

सर्वे यद्वांविक्काया ये, वैयावृत्यकरा जिने ॥

हुड्रोपञ्च संघातं, ते डुत्तं डावयंतु नः ॥ १ ॥

पिठे प्रगट लोगस्स कहेना.

उमासि काजस्सग करनेकाविधि

चैत्र सुदि ११-१२-१३ तथा आसो सुदि ११-१२-१३ ए तीनतीन द्विसोमे हररोज वैवसिक प्रतिक्रमणमे सजाय कहे पिठें ए काजस्सग करना प्रथम खमासमण देके इत्था० सचित्त अचित्तरज उन्नावणत्थं काजस्सग करुं ? इत्थं करेमी काजस्सगं अन्नत्थ कही चार लोगस्सका सागरवर गंजिरा तक काजस्सग करना पारके लोगस्स कहेना:

लोच करनेके समय काजस्सग करनेका विधि.

लोच करना होय तिस दिन लोचकिये अगाड इरिआवही पम्किमी खमा० इत्था० सचित्तअचित्तरज उन्नावणत्थं काजस्सग करुं ? इत्था करेमी काजस्सगं अन्नत्थ० कही चार लोगस्सका काजस्सग सागरवरगंजिरा तक करना. पारके प्रगट लोगस्स कहेना.

कोइ साधु काल करे तव साधुकों करनेका विधि.

जो साधुनें काल किया होय तिनके पास आके एक साधु नीचेप्रमाण कहे-‘कोटिक गण, वज्जीशा



खा, चंद्रकुल, अमुक आचार्य, उपाध्याय, स्थवीर, अमुक पंक्तिके शिष्य (अमुक मुनि) महा पारिठावणीया करेमि काउस्सगं' अन्नत्थं कही एक नवकार कहे. पिठे तीन वार 'वोसिरे' कहे. पिठे श्रावक संस्कार करनेको ले जाय. तत्पश्चात् जीर्ण काचली प्रमुख चांगना. जीर्ण वस्त्र परठवना. पवित्र अचित्त पाणीसे जूमिशुद्धि हस्तपाद वस्त्र शुद्धि करना पिठे श्रावक पास गोमूत्रादि ठंढायके अवले देव वंदानें. तिसकी विधि नीचे प्रमाणे—

अंतिम देव वंदन विधि.

काल करने वाले साधुके एक शिष्य अथवा लघु पर्यायवाला कोइ शिष्य प्रथम उलटा काजा (छारसैं आसन तरफ) लेवे. वस्त्रादि पहरे उलटा. पिठे काजा संवंधी इरियावही पणिक्रमके उलटा देव वंदन करे सो इस प्रमाणे.

प्रथम कट्ठाणकंदकी एक थोइ. पिठे एक नवकारका काउस्सग, पिठे अन्नत्थं अरिहंत चे० जयवि० उवसग० नमोर्हत्त० जावंति के० खमासमण० जावंतीचे० नमुत्थुणं० चैत्यवंदन० लोगस्स० एक लोगस्सका० काउस्सग० अन्नत्त० तस्सउ० इरिया वही० खमासमण देके. अविधि आशातना मिठामि डुक्कमं कहे. पिठे सीधा काजा लेके इरियावही पणिक्रमे.

पिठे सत्ता समद सर्व साधु साध्वीने आठ

थोड़सें सीधे देववंदन करना. तिसमें स्तवनके स्थान अजीसंता कहना. और देव पूरा होनेसें खमा० इवा० छुओपद्रव उमावण्ठं काउस्सग कं० इव० करेमि काउस्सगं अन्नव० कही चार लोगस्सका काउस्सग सागरवर गंजीरा तक करना. स्तुतिके स्थान वृद्ध शांति कहना. पिठें प्रगट लोगस्स कहना.

दूसरे गामसें स्वसमाचारीवाले साधुके काल धर्म का समाचार मिलनेसेंजी उपर प्रमाणे आठ थोड़ेसे, सीधे देव वांदने तथा अजीसंता वृद्धशांति कहना. साध्वीने समाचार आनेसे साध्वीओंने देव वंदन करना. कोइसाधु कालधर्म पामे तब श्रावककों करनेका विधि.

प्रथम स्नान करना केश होय तो प्रथम उत्तरा ना जरा पगकी अंगुलीको ठेदकरना. हाथ पगकी आंगुलीयोंकों बंध करना. शरीरपर चंदन केशर वरासकाविलेपनकरना. मृत्यु स्थानके तथा स्नान करायके बैठानेके स्थानक लोखंडकी खीली ठोकनी. नये वस्त्र पहनाना. दक्षिण तर्फ रजोहरण ( चरवली ) मुहपत्ति रखना मांही तर्फ जोली, उसमे जत्र पात्र एक लरु सहित रखना रोहिणी, विशाखा. पुनर्वसु तिन उत्तरा ए व नक्षत्र में दो पुतले दर्ज के करके रखना. ज्येष्ठा, आर्द्रा, स्वाति, शतजिपा, ज्येष्ठा अश्लेषा ए व नक्षत्रे पुतलें न करणा दूसरे १५ नक्षत्रेमें एक पुतला करणा. वो पुतलेके जमणे

हाथमे उधा ( चरवला ) मुहपत्ति देना ऊर वाम हाथमे जग्न पात्र तथा एक लघु सहीत जोड़ी देनी. दो पुतले होय तो दोनोको देना. पिठें शोकयुक्त चित्तसें महोत्सव सहित योग्य स्थानके ले जाके चंदनादि काष्ठोंसें अग्नि संस्कार करना. प्रांतमें सर्व अग्नि शांत कर रक्षा योग्य स्थानकमें परवणी पिठे गुरु पास आयके लघुशांति वा वृद्धशांति सुनके अनित्यताका उपदेश श्रवण कर स्वस्थानक जाना. साधु दररोज सात चैत्यवंदन करे सो नीचे प्रमाण.

१ राइपम्निकमण्णके प्रारंजमें जग चिंतामणीका.

२ राइपम्निकमण्णके अंतमें विशाल लोचनका

३ मंदरजीमें दर्शन करने जाय उहां करे

४ पच्चरकाण पारतें जगचिंतामणीका.

५ आहार कर रहे पिठे जगचिंतामणीका.

६ दैवसिक प्रतिक्रमके प्रारंजमे.

७ संथारा पोरिसी जणावणमें चउक्कसायका

२४ साधु दररोज चारवार सजाय करे सोइस प्रमाणे,

१ सवेरकी पडिलेहणके अंतमें धम्मो मंगल० की.

२ सांजकी पडिलेहण मध्यमे धम्मो मंगल० की.

३ दैवसिक प्रतिक्रमणके अंतमें कहतें हैं सो.

४ राइ पम्निकमण्णके प्रारंजमे चरहेसर की.

सप्तम परिच्छेदः समाप्तः

॥ अथ अष्टम परिच्छेदः प्रारंभः ॥

॥ अथ पौकश संस्कार प्रारंभः ॥

तत्त्वज्ञानमयो लोके, य आचारं प्रणीतवान् ॥

केनापि हेतुना तस्मै, नम आध्याययोगिने ॥

गर्जाधानं पुंसवनं जन्मवन्द्यार्कदर्शनम् ॥

क्षीराशनं चैव षष्ठी तथा च शुचिकर्म च ॥

तथा च नामकरणमन्नप्राशनमेव च ॥

कर्णवेधो मुण्डनं च तथोपनयनं परम् ॥

पाठारम्भो विवाहश्च व्रतारोपान्तकर्म च ॥

अमी षोडशसंस्कारा गृहिणां परिकीर्त्तिताः ॥

ज्ञापार्थः—गर्जाधान १, पुंसवन २, जन्म ३, चंद्र  
सूर्यदर्शन ४, क्षीराशन ५, षष्ठी ६, शुचिकर्म ७, ना  
मकरण ८, अन्नप्राशन ९, कर्णवेध १०, मुंडन ११,  
उपनयन १२, विद्यारंभ १३, विवाह १४, व्रतारोप  
१५, अंतकर्म १६ येह सोलां संस्कार गृहस्थीको  
करने चाहिये व्रतारोपसंस्कारको वर्जके, शेष १५ पंदरां  
संस्कार, साधुर्जने नहीं करणे.

संस्कार कराने वाले गुरु विपे

अर्हन्मंत्रोपनीतश्च ब्राह्मणः परमार्हतः ॥

ब्रह्मको वाऽऽप्तगुर्वाज्ञो गृहिसंस्कारमाचरेत् ॥ १॥

अर्थः—अर्हन्मंत्रोपनीत परमश्रावक, ब्राह्मण, औ  
र प्राप्त करी है गुरुकी आज्ञा जिसने ऐसा ब्रह्मक

( श्रावक विशेष ) जिसका स्वरूप आगे लिखेंगे. इन दोनोंमेंसे कोई एक गृहस्थोंको संस्कार करावे.

### प्रथम गर्जाधान संस्कारका विधि

जब गर्जधारण को पांच मास होवे, तब गर्जाधानविधि, गृहस्थगुरु जैन ब्राह्मणों ने कराना. गर्जाधान १, पुंसवन २, जन्म ३, नाम ४ और अंत ५, इन पांच संस्कारोंमें अवश्य कर्मके वास्ते मास दिन दिकोंकी शुद्धि न देखनी. । श्रवण, हस्त, पुनर्वसु, मूल, पुष्य, मृगशीर्ष, येह नक्षत्र और रवि, मंगल, बृहस्पति, येह वार पुंसवनादिकर्मोंमें कहे हैं. । इसवास्ते पांचमे मासमें शुभ तिथि, वार, नक्षत्रके दिनमें पतिको बलवान् चंद्रादि देखकर, देश विरतिगुरु जिसने स्नान करा है, चोटी बांधी है, उपवीत और उत्तरासंग धारण करा है, श्वेतवस्त्र पहिना है, पंचकक्षा धारण करा है, मस्तकमें चंदनका तिलक करा है, सुवर्णमुद्रासहित दक्षिणकर सावित्रीक प्रकोष्ठवद्ध पंचपरमेष्ठि मंत्रोद्दिष्ट पांच ग्रंथियुक्त दर्जसहित कौसुंज सूत्रका कंकण है जिसके, तथा जिसने रात्रिमें ब्रह्मश्चर्य पाला है, जिसने उपवास, आचाम्ल, निर्विकृति, एकाशनादि प्रत्याख्यान करा है, संप्राप्तकरी है आजन्मसे यतिगुरुकी आज्ञा जिसने, ऐसे पूर्वोक्त विशेषणयुक्त, जैनब्राह्म

ए, अथवा कुल्लक, गृहस्थोंके संस्कारकर्म करणोंके योग्य होता है. ॥

उक्तं च ॥

शांतो जितेंद्रियो मौनी दृढसम्यक्त्ववासनः ॥

अर्हत्साधुकृतानुज्ञः कुप्रतिग्रहवर्जितः ॥

जापार्थः—शांत, जितेंद्रिय, मौनी, दृढसम्यक्त्ववान्, अर्हन् और साधुकी आज्ञा करनेवाला, बुरा दान न लेवे, क्रोध मान माया लोभका जीपक, कुलीन, सर्व शास्त्रोंका जानकार, अविरोधी, दयावान्, राजा और रंकको समदृष्टिसे देखनेवाला, प्राणोंके नाश होते भी अपने आचारको न त्यागे सुंदर चेष्टावाला होवे, अंगहीन न होवे, सरल होवे, सदा सज्जुकी सेवा करने वाला होवे, विनीत, बुद्धिमान्, द्वांतिमान्, कृतज्ञ, दोषकारसें अव्यजावसें शुचि होवे; गृहस्थोंके संस्कार करनेमें ऐसा गुरु चाहिये.

सो पूर्वोक्त विशेषणविशिष्ट गुरु, गर्जाधान कर्ममें प्रथम गर्जवंतीके पतिकी आज्ञा लेवे. । और सो गर्जवंतीका पति, नखसें लेके शिखा (चोटी) पर्यंत स्नान करके, शुचि वस्त्र पहिनके निज वर्णानुसार उपवीत उत्तरीय वस्त्र उत्तरासंग करके, प्रथम शास्त्रोक्त बृहत्स्नात्रविधिसें अर्हत्प्रतिमाका स्नात्र करे. और तिस स्नात्रके पाणीको शुचि जाजनमें स्थापन करे. । तिसपीठे शास्त्रोक्त विधिसें गंध, पुष्प, धूप,

दीप, नैवेद्य, गीत, वादित्रोंकरके जिनप्रतिमाकी पूजा करे. । पूजाके अंतमें गुरु, गर्जवंतीको, अविधवायोंके हाथोंकरी स्नात्रोदककरके सिंचनरूप अग्नि पोक करवावे. । पीठे सर्व जलाशयोंके जलोंके जलोंकों एकत्र मिलाके, सहस्रमूलचूर्ण तिसमें प्रक्षेप करके, तिस जलको शांतिदेवीके मंत्रकरके, अथवा शांतिदेवीके मंत्रगर्जित स्तोत्रकरके मंत्रें. ॥

शांतिदेवीमंत्रो यथा ॥

“ॐ नमो निश्चितवचसे । जगवते । पूजामर्हते । जयवते । यशस्विने । यतिस्वामिने । सकलमहासंपत्तिसमन्विताय । त्रैलोक्यपूजिताय । सर्वासुरामरस्वामिपूजिताय । अजिताय । ब्रुवनजनपालनोद्यताय । सर्वदुरितौघनाशनकराय । सर्वाशिवप्रशमनाय । दुष्टग्रहचूतपिशाचशाकिनीप्रमथनाय । यस्येतिनाममंत्रस्मरणतुष्टा । जगवती । तत्पदभक्ता । विजयादेवी ॐ ह्रीं नमस्ते । जगवति । विजये । जय १ । परे । परापरे । जये । अजिते । । अपराजिते । जयावहे । सर्वसंघस्य चक्रकल्याणमंगलप्रदे । साधूनां शिवतुष्टिपुष्टिप्रदे । जय २ चव्यानां कृतसिद्धे । सत्त्वानां निर्वृतिनिर्वाणजननि । अजयप्रदे । स्वस्तिप्रदे भक्तानां जंतूनां शुभप्रदानाय नित्योद्यते । सम्यग्दृष्टीनां धृतिरतिमतिबुद्धिप्रदे । जिनशासनरतानां शांतिप्रणतानां जनानां श्रीसंपत्कीर्त्तियशोव

र्द्धिनि । सलिलात् रक्ष २ । अनिलात् रक्ष २ । वि  
पात् रक्ष २ । विपधरेज्यो रक्ष २ । दुष्टग्रहेज्यो रक्ष  
२ । राज जयेज्यो रक्ष २ । रोग जयेज्यो रक्ष २ । रण  
जयेज्यो रक्ष २ । राक्षसेज्यो रक्ष २ । रिपुगणेज्यो रक्ष  
२ । मारिज्यो रक्ष २ । चौरैज्यो रक्ष २ । ईतिज्यो  
रक्ष २ । श्वापदेज्यो रक्ष २ । शिवं कुरु २ । शान्तिं  
कुरु २ । तुष्टिं कुरु २ । पुष्टिं कुरु २ । स्वस्तिं कुरु २ ।  
जगवति । गुणवति । जनानां शिवशान्तितुष्टिपुष्टि  
स्वस्तिं कुरु २ । ॐ नमो ॐ ह्रः यः द्रः ह्रीं फुद् २  
स्वाहा ” ॥ इति ॥

शान्तिदेवी स्तोत्र ॥

“ॐ नमो जगवतेऽर्हते । शान्तिस्वामिने । सकला  
तिशेषकमहासंपत्समन्विताय । त्रैलोक्यपूजिताय ।  
नमः शान्तिदेवाय । सर्वामरसमूहस्वामिसंपूजिताय ।  
जुवनपालनोद्यताय । सर्वदुरितविनाशनाय । सर्वा  
शिवप्रशमनाय । सर्वदुष्टग्रहभूतपिशाचमारिकाकिनी  
प्रमथनाय । नमो जगवति । विजये । अजिते । अ  
पराजिते । जयन्ति । जयावहे । सर्वसंघस्य । जडक  
द्वयाणमंगलप्रदे । साधूनां शिवशान्तितुष्टिपुष्टिस्वस्ति  
दे । जव्यानां सिद्धिबुद्धिनिवृत्तिनिर्वाणजननि । सत्त्वा  
नां अजयप्रदाननिरते । जक्तानां शुचावहे । सम्यग्  
दृष्टीनां धृतिरतिमतिबुद्धिप्रदानोद्यते । जिनशासन  
निरतानां श्रीसंपत्त्यशोवर्द्धिनि । रोगजलज्वलनविष



विपधरदुष्टज्वरव्यंतरज्वरराक्षसरिपुमारि चोरेतिश्वा  
पदोपसर्गादिजयेज्यो रक्ष १ । शिवं कुरु १ । शांतिं  
कुरु १ । तुष्टिं कुरु १ । पुष्टिं कुरु १ । स्वस्तिं कुरु १ । न  
गवतिश्रीशांतितुष्टिपुष्टिस्वस्तिं कुरु १ । ॐ नमो नमो  
कुंङ्कः यः कः क्ली फट् १ स्वाहा” ॥ इति ॥

इस स्तोत्र करके अथवा पूर्वोक्त मंत्र करके सहस्र  
मूल चूर्ण सर्व जलाशयोंके जलको सातवार मंत्रके,  
पुत्रवाली सधवा स्त्रियोंके हाथेंकरी मंगलगीतोंके  
गातेहुए गर्जवंतीको स्नानकरावे, सुगंधका अनुलेपन  
करी सदश वस्त्र (विवाह समय पहिरनेका वस्त्र) प  
हिराके, संपत्तिअनुसार आभरण धारण करवाके,  
पतिके साथ वस्त्रांचलका ग्रंथिवंधन करके, पतिके  
वामेपासे शुद्ध आसनके ऊपर स्वस्तिक मंगलकरके,  
गर्जवंतीको बिठलावे ग्रंथियोजनमंत्रो यथा ॥  
ॐ अहं । स्वस्ति संसारसंबंधवद्भ्योः पतिनार्ययोः ॥  
युवयोरवियोगोस्तु नववासांतमाशिषा ॥ १ ॥

विवाहको वर्जके, सर्वत्र इसीमंत्रकरके दंपतीका  
( स्त्रीजर्त्ताका ) ग्रंथिवंधन करना । तदपीठे गुरु,  
तिस गर्जवंतीके आगे शुद्ध पट्टे ऊपर पद्मासन  
लगाके बैठके, मणिस्वर्णरूप्यताम्रपत्रके पात्रोंमें  
जिनस्नात्रके जलसंयुक्त तीर्थोदकको स्थापन करके,  
आर्यवेदमंत्र पढके, कुशाग्र विंदुयोंकरके, गर्जवं  
तीको सींचन करे.

आर्यवेदमंत्रो यथा ॥

“ॐ अहं । जीवोसि । जीवतत्त्वमसि । प्राण्यसि । प्राणोसि । जन्मासि । जन्मवानसि । संसार्यसि । संसरन्नसि । कर्मवानसि । कर्मबद्धोसि । जवत्रांतोसि । जववित्रमिषुरसि । पूर्णाङ्गोसि । पूर्णपिण्गोसि । जातोपाङ्गोसि । जायमानोपाङ्गोसि । स्थिरो जव नन्दिमान् जव । वृद्धिमान् जव । पुष्टिमान् जव । ध्यातजिनो जव । ध्यातसम्यक्त्वो जव । तत्कुर्या येन न पुनर्जन्मजरामरणसंकुलं संसारवासं गर्जवासं प्राप्नोषि । अहं ॐ ॥”

इस मंत्रकरके दक्षिणहाथमें धारण करे कुशाग्र तीर्थोदक बिंदुयोंकरके गर्जवंतीके शिर और शरीर ऊपर सातवार सींचन करे । तदपीठे पंच परमेष्ठिमंत्र पठनपूर्वक दंपतीको आसनसें उठायकरके, जिनप्रतिमाके पास ढेजाके शक्रस्तव पाठ करके जिनवंदन करवावे । यथाशक्ति फलमुद्रा वस्त्र स्वर्णादि जिनप्रतिमाके आगे ढोवे तदपीठे गर्जवंती स्वसंपत्तिके अनुसार वस्त्राभरण अव्य सुवर्णादिदान गुरुको देवे । तदपीठे गुरु, पतिसहित गर्जवंतीको आशीर्वाद देवे । यथा ॥

ज्ञानत्रयं गर्जगतोपि विदन् संसारपारैकनिवर्ह्य चित्तः ॥ गर्जस्य पुष्टिं युवयोश्च तुष्टिं युगादिदेवः प्रकरोतु नित्यम् ॥ १ ॥

तदपीठे आसनसें उठायके ग्रंथिवियोजन करे.  
ग्रंथिवियोजनमंत्रो यथा ॥

ॐ अहं । ग्रंथौ वियोज्यमानेऽस्मिन् लेहग्रंथिः स्थिरो  
स्तु वां ॥ शिथिलोस्तु ज्वग्रंथिः कर्मग्रंथिदृढीकृतः ॥१॥

इस मंत्रकरके ग्रंथि खोलके धर्मागारमें दंपतीको  
लेजाके गुरु को बंदना करवावे, और साधुयोंको नि  
दोष जोजन वस्त्र पात्रादि दिलवावे. ॥

तदपीठे स्वकुलाचारयुक्तिकरके कुलदेवता, गृह  
देता, पुरदेवतादि पूजन जानना.

॥ जैन वेद मंत्रोत्पत्ति ॥

यहां जो कहाहै कि, जैनवेदमंत्र; सो कथन करतेहैं.  
यथा आदिदेव ( ऋषजदेव ) का पुत्र. अवधिज्ञानवान्,  
आदिचक्री, जगत राजा, श्रीमदादिजिनरहस्योपदेशसें  
प्राप्त किया है सम्यक् श्रुतज्ञान जिसने—सो जगत  
राजा—सांसारिक व्यवहारसंस्कारकी स्थितिकेवास्ते,  
अर्हन्की आज्ञा पाकरके, धारे हैं ज्ञानदर्शनचारि  
त्रय, करणा करावणा अनुमतिसें त्रिगुणरूप  
तीनसूत्र—मुद्राकरके चिन्हितवद्धः स्थलवाले ब्राह्म  
णोंको ( माहनोंको ) पूज्यतरीके मानता हुआ, और  
तिस अवसरमें अपनी वैक्रियलब्धिसें चार मुखवा  
छा होके, चार वेदोंको उच्चारण करता गया. तिन  
के नाम—संस्कारदर्शन १, संस्थापनपरामर्शन २, त  
त्त्वावबोध ३, विद्याप्रबोध ४, । सर्व नयवस्तु कथन

करनेवाले इन चारों वेदोंको, माहनोंको पठन कराता हुआ । तदपीठे वह माहन, सात तीर्थ करोंके तीर्थतक अर्थात् चंद्रप्रजतीर्थकरके तीर्थतक सम्यक्त्वधारी रहें, और आर्हतश्रावकोंको व्यवहार दिखाते रहें, तथा धर्मोपदेशादि करते रहें । तदपीठे नवमे तीर्थकर श्रीसुविधिनाथपुष्पदंतके तीर्थके व्यवहेद हुए, तिस वीचमें तिन माहनोंने परिग्रहके लोभी होके, स्वच्छंदसें तिन आर्यवेदों कि जगे कुठकसुनी सुनाइ बातो लेके नवीन श्रुतियां रची, तिनमें हिंसक यज्ञादि और अनेक देवतायोंकी स्तुति (प्रार्थना) रची (क्रमसें ऋगू, यजुः साम, अथर्व,) नाम कल्पना करके, मिथ्यादृष्टिपणेको प्राप्तकरे तब व्यवहारपाठसें पराङ्मुख अर्थात् परमार्थरहित मनःकल्पित हिंसक यज्ञप्रतिपादकशास्त्रोंसें पराङ्मुख, ऐसे श्रीशीतलनाथादिके साधुयोंने तिन हिंसक वेदोंको ठोसके, जिनप्रणीत आगमकोही प्रमाणभूत माने । तिन ब्राह्मणोंमेंसें जी, जिन माहनोंने (ब्राह्मणोंने) सम्यक् न त्यागन करा, अर्थात् जे माहन पुन. तीर्थकरोके उपदेशसें सम्यक्त्व पाके दृढ रहे, तिनोके संप्रदायमें आजभी चरत प्रणीत वेदका लेश कर्मांतरव्यवहार गत सुनते हैं; सोही यहां कहते हैं.

यत उक्तमागमे ॥

सिरिजरहचक्रवट्टी आरियवेयाण विस्सुजं कत्ता ॥  
 माहणपढणहमिणं कहिअं सुहजाणववहारं ॥ १ ॥  
 जिणतिष्ठे बुद्धिन्ने मिष्ठत्ते माहणेहिं ते ठविया ॥  
 असंजयाण पूया अप्पाणं कारिया तेहिं ॥ २ ॥

व्याख्या;—श्रीजरतचक्रवर्ती आर्यवेदोंका कर्त्ता प्र  
 सिद्ध है. जरतने आर्यवेद किसवास्ते करे, माहनोंके  
 पढनेके वास्ते, शुज ध्यानकेवास्ते, और जगत्व्यवहार  
 केवास्ते । जिन तीर्थकरके तीर्थके व्यवछेद हुए वह  
 आर्यवेद तिन माहनोंने मिथ्यामार्गमें स्थापन करे,  
 और असंयतिहोके तिनोने अपनी पूजा जगत्में  
 करवाइ इन वेदोंका विशेष निर्णय जैनतत्त्वादर्शग्रंथसे  
 जानना ॥

इस गर्जाधानसंस्कारमें इतनी वस्तु चाहिये ॥  
 पंचामृत स्नात्र १, सर्वतीर्थोदक २, सहस्रमूलचूर्ण ३,  
 दर्ज ४, कौसुंजसुत्र ५, द्रव्य ६, फल ७, नैवेद्य ८,  
 सदशवस्त्र दो (चुनकी) ९, शुजआसन १०, शुजपट्ट  
 ११, स्वर्णताम्रादिजाजन १२, वादित्र १३, पतिवाली  
 स्त्रीयां १४ और गर्जवंतीका पति १५,

इति गर्जाधान संस्कार विधि.

॥ अथ पुंसवन संस्कार वर्णन ॥

गर्जसें आव मास व्यतीत हुए, सर्व दोहदोंके

पूर्ण हुए, सांगोपांग गर्जके उत्पन्न हुए, तिसके शरीरमें पूर्णजाव प्रमोदरूप स्तनोंमें दूधकी उत्पत्तिका सूचक, पुंसवन संस्कार करना । मूल, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मृगशिर, श्रवण, येह नक्षत्र; और मंगल, गुरु आदित्य, येह वार, पुंसवन कर्ममें संमत है । रिक्ता दग्धा, क्रूरा, तीन दिनको स्पर्शनेवाली, अवम् (टूटी तिथी) पष्ठी, अष्टमी, द्वादशी, अमावास्या, ये तिथियां वर्जके, गंभांत और अगुज नक्षत्रवर्जित, पूर्वोक्त वारनक्षत्रसहित दिनमें पतिको चंद्रमाके बल हुए, पुंसवनका आरंभ करे; सो ऐसैं है । पूर्वोक्त वेष, और स्वरूपवाला गुरु पतिके समीप हुए, अथवा नहुए, गर्जाधान कर्मके अनंतर, जो वस्त्रवेप और केशवेप धारण करे है, तिसही वस्त्रवेप और केशवेषवाली गर्जवतीको, रात्रिके चौथे प्रहरमें तारेसहित आकाशहोवे तब मंगलगीतगानपूर्वक आजरणसहित अविधवा स्त्रीयोकरके, अज्यंग उद्धर्त्तन जलाजिपेकोंकरके स्नान करावे । तदपीछे प्रजात हुए नवीन वस्त्र गंधमा द्यभूपित गर्जवतीको साक्षिणी करके, घरदेहरामें अर्हत्प्रतिमाको तिसका पति, वा तिसका देवर, वा तिसके कुलका पुरुष, वा गुरु, आप पचामृतकरके बृहत्स्नात्रविधिसे स्नात्र करावे । तदपीछे सहस्रमूलीस्नात्र प्रतिमाको करे । पीछे तीर्थोंदक स्नात्रकरे पीछे सर्वस्नात्रोदकोंको सुवर्णरूप्यताम्रादि जाजनमें

यत् उक्तमागमे ॥

सिरिजरहचक्रवट्टी आरियवेयाण विस्सुजं कत्ता ॥  
 माहणपढण्णमिणं कहिअं सुहजाणववहारं ॥ १ ॥  
 जिणतिष्ठे बुद्धिन्ने मिष्ठत्ते माहणेहिं ते ठविथा ॥  
 असंजयाण पूया अप्पाणं कारिया तेहिं ॥ २ ॥

व्याख्या;—श्रीजरतचक्रवर्ती आर्यवेदोंका कर्ता प्र  
 सिद्ध है. जरतने आर्यवेद किसवास्ते करे, माहनोंके  
 पढनेके वास्ते, शुज ध्यानकेवास्ते, और जगत्व्यवहार  
 केवास्ते । जिन तीर्थकरके तीर्थके व्यवष्टेद हुए वह  
 आर्यवेद तिन माहनोंने मिथ्यामार्गमें स्थापन करे,  
 और असंयतिहोके तिनोने अपनी पूजा जगत्में  
 करवाइ इन वेदोंका विशेष निर्णय जैनतत्त्वादर्शग्रंथसे  
 जानना ॥

इस गर्जाधानसंस्कारमें इतनी वस्तु चाहिये ॥  
 पंचामृत स्नात्र १, सर्वतीर्थोदक २, सहस्रमूलचूर्ण ३,  
 दर्ज ४, कौसुंजसुत्र ५, द्रव्य ६, फल ७, नैवेद्य ८,  
 सदशवस्त्र दो (चुनकी) ९, शुजआसन १०, शुजपट्ट  
 ११, स्वर्णताम्रादिजाजन १२, वादित्र १३, पतिवाली  
 स्त्रीयां १४ और गर्जवंतीका पति १५,

इति गर्जाधान संस्कार विधि.

॥ अथ पुंसवन संस्कार वर्णन ॥

गर्जसें आठ मास व्यतीत हुए, सर्व दोहदोंके

पूर्ण हुए, सांगोपांग गर्जके उत्पन्न हुए, तिसके शरीरमें पूर्णोच्चाव प्रमोदरूप स्तनोंमें दूधकी उत्पत्तिका सूचक, पुंसवन संस्कार करना । मूल, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मृगशिर, श्रवण, येह नक्षत्र, और मंगल, गुरु आदित्य, येह वार, पुंसवन कर्ममें संमत हैं । रिक्ता दग्धा, क्रूरा, तीन दिनको स्पर्शनेवाली, अवम् (टूटी तिथी) षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी, अमावास्या, ये तिथियां वर्जके, गंगांत और अशुभ नक्षत्रवर्जित, पूर्वोक्त वारनक्षत्रसहित दिनमें पतिको चंद्रमाके बल हुए, पुंसवनका आरंभ करे; सो ऐसे हैं । पूर्वोक्त वेष, और स्वरूपवाला गुरु पतिके समीप हुए, अथवा नहुए, गर्जाधान कर्मके अनंतर, जो वस्त्रवेष और केशवेष धारण करे हैं, तिसही वस्त्रवेष और केशवेषवाली गर्जवतीको, रात्रिके चौथे प्रहरमें तारेसहित आकाशहोवे तब मंगलगीतगानपूर्वक आजरणसहित अविधवा स्त्रीयोंकरके, अज्यग उद्धर्त्तन जलाभिषेकोंकरके स्नान करावे । तदपीठे प्रजात हुए नवीन वस्त्र गंधमाद्यभूषित गर्जवतीको साक्षिणी करके, घरदेहरामें अर्हत्प्रतिमाको तिसका पति, वा तिसका देवर, वा तिसके कुलका पुरुष, वा गुरु, आप पंचामृतकरके, बृहत्स्नात्रविधिसे स्नात्र करावे । तदपीठे सहस्रमूलीस्नात्र प्रतिमाको करे । पीठे तीर्थोदक स्नात्रकरे पीठे सर्वस्नात्रोदकोंको सुवर्णरूप्यताम्रादि जाजनमें



यत उक्तमागमे ॥

सिरिजरहचक्रवट्टी आरियवेयाण विस्सुजं कत्ता ॥  
 माहणपढणव्वमिणं कहिअं सुहजाणववहारं ॥ १ ॥  
 जिणतिष्ठे बुद्धिन्ने मिच्चत्ते माहणेहिं ते उविया ॥  
 असंजयाण पूया अप्पाणं कारिया तेहिं ॥ २ ॥

व्याख्या;—श्रीजरतचक्रवर्ती आर्यवेदोंका कर्त्ता प्रसिद्ध है. जरतने आर्यवेद किसवास्ते करे, माहनोंके पढनेके वास्ते, शुज ध्यानकेवास्ते, और जगत्व्यवहार केवास्ते. । जिन तीर्थकरके तीर्थके व्यवछेद हुए वह आर्यवेद तिन माहनोंने मिथ्यामार्गमें स्थापन करे, और असंयतिहोके तिनोने अपनी पूजा जगत्में करवाइ इन वेदोंका विशेष निर्णय जैनतत्त्वादर्शग्रंथसे जानना ॥

इस गर्जाधानसंस्कारमें इतनी वस्तु चाहिये ॥  
 पंचामृत स्नात्र १, सर्वतीर्थोदक २, सहस्रमूलचूर्ण ३,  
 दर्ज ४, कौसुंजसुत्र ५, द्रव्य ६, फल ७, नैवेद्य ८,  
 सदशवस्त्र दो (चुनमी) ९, शुजआसन १०, शुजपट्ट  
 ११, स्वर्णताम्रादिजाजन १२, वादित्र १३, पतिवाली  
 स्त्रीयां १४ और गर्जवंतीका पति १५,

इति गर्जाधान संस्कार विधि

॥ अथ पुंसवन संस्कार वर्णन ॥

गर्जसे आठ मास व्यतीत हुए, सर्व दोहदोंके

पूर्ण हुए, सांगोपांग गर्जके उत्पन्न हुए, तिसके शरीरमें पूर्णजाव प्रमोदरूप स्तनोंमें दूधकी उत्पत्तिका सूचक, पुंसवन संस्कार करना । मूल, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मृगशिर, श्रवण, येह नक्षत्र; और मंगल, गुरु आदित्य, येह वार, पुंसवन कर्ममें संमत है । रिक्ता दग्धा, क्रूरा, तीन दिनको स्पर्शनेवाली, अवम् (दूटी तिथी) षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी, अमावास्या, ये तिथियां वर्जके; गंरांत और अशुभ नक्षत्रवर्जित, पूर्वोक्त वारनक्षत्रसहित दिनमें पतिको चंद्रमाके बल हुए, पुंसवनका आरंभ करे, सो ऐसे है । पूर्वोक्त वेष, और स्वरूपवाला गुरु पतिके समीप हुए, अथवा नहुए, गर्जाधान कर्मके अनंतर, जो वस्त्रवेप और केशवेप धारण करे है, तिसही वस्त्रवेप और केशवेपवाली गर्जवन्तीको, रात्रिके चौथे प्रहरमें तारेसहित आकाशहोवे तब मंगलगीतगानपूर्वक आचरणसहित अविधवा स्त्रीयोंकरके, अज्यंग उद्धर्तन जलाभिषेकोंकरके स्नान करावे । तदपीठे प्रजात हुए नवीन वस्त्र गंधमा द्यञ्जूपित गर्जवन्तीको साक्षिणी करके, घरदेहरामे अर्हत्प्रतिमाको तिसका पति, वा तिसका देवर, वा तिसके कुलका पुरुष, वा गुरु, आप पंचामृतकरके बृहत्स्नात्रविधिसे स्नात्र करावे । तदपीठे सहस्रमूलीस्नात्र प्रतिमाको करे । पीठे तीर्थोदक स्नात्रकरे पीठे सर्वस्नात्रोदकोको सुवर्णरूप्यताम्रादि-जाजनमें

स्थापन करके, शुभासन ऊपर बैठी हुई साक्षीभूत करे हैं पनिदेवरादि कुलज जिसने, ऐसी गर्जवंतीको, दक्षिणहस्तमें कुशा धारण करके, कुशाग्रविंदुयोंकरके स्नात्रोदकसें गर्जवंतीके शिरस्तनउदरको सिंचन करता हुआ, इस वेदमंत्रको पढे. ॥

“॥ ॐ अर्हं । नमस्तीर्थकरनामकर्मप्रतिबंधसंप्राप्तसुरासुरेन्द्रपूजायार्हते । आत्मन् त्वमात्मायुः कर्मबंधप्राप्यं मनुष्यजन्मगर्जवांसमवाप्नोषि तद्भव जन्मजरामरणगर्जवासविवृत्तये प्राप्तार्हर्द्धमः अर्हन्नक्तः सम्यक्त्वनिश्चलः कुलभूषणः सुखेन तव जन्मास्तु । नवतु तव त्वन्मातापित्रोः कुलस्याज्युदयः । ततः शान्तिः पुष्टिः तुष्टिर्वृद्धिर्ऋद्धिः कान्तिः सनातनी अर्हं ॥

इस वेदमंत्रको आठवार पढता हुआ, गर्जवंतीको अग्निपेचन करे. । तदपीठे गर्जवंती आसनसें ऊठके सर्वजातिके आठ २ फल, स्वर्णरूप्यमयी मुद्रा आठ, प्रणाम (नमस्कार) पूर्वक जिनप्रतिमाके आगे ढोवे. । तदपीठे गुरुके चरणोंको नमस्कार करके, दो वस्त्र, सोनेरूपेकी आठ मुद्रा, और तंबोलसहित आठ सुपारी गुरुको देवे । तदपीठे धर्मागार (पोषधशाला) में जाकर साधुओंको वंदना नमस्कार करे, और साधुओंको यथाशक्तिसे शुरु अन्न वस्त्र पात्र देवे. । कुलवृद्धोंको नमस्कार करे. ॥ तदपीठे स्वकुलाचारकरके कुलदेवतादिपूजन जानन.

पंचामृत १, स्नात्रवस्तु २, स्त्रीके नवीन वस्त्र ३, नवीन वस्त्रयुगल ४, स्वर्णकी आठ मुद्रा ५. रूपेकी आठ मुद्रा ६, सोनेकी ७, और रूपेकी ७ एवं पोरुश (१६) मुद्रा और ७, फलकी जाति ७; मूलसहित दर्चण, तांबूल १०, सुगंध पदार्थ ११, पुष्प १२, नैवेद्य १३, सधवा स्त्रीयां १४, गीत मंगल १५, इतनी वस्तु पुंसवनसंस्कारमें चाहिये ॥

इति द्वितीय पुंसवन संस्कार विधि

अथ तृतीयं जन्मनामा संस्कार वर्णनं ॥

जन्मसमय हुए, ज्योतिषि सहितगुरु, सूतिकागृह के निकट गृहमें एकांतस्थानमें जहां रौला न सुनाइ देवे, स्त्री, बाल, पशु, जहां न आवे, तहां घटियंत्र ( घड़ी-कलाक ) सहित ज्ययोगसहित चित्तवाला होकर, परमेष्ठिजापमें तत्पर हुआ थका रहे. । यहां पहिलां तिथि वार नक्षत्रादि देखना न चाहिये क्यों कि, यह जीव कर्म और कालके अधीन है. ॥

बालकके जन्म हुए समीप रहा हुआ गुरु, ज्योतिषिको जन्मक्षण जाननेके वास्ते आज्ञा करे तिसने जी सम्यक् जन्मकाल, करगोचर करके धारण करना तदपीठे बालकके पिता, पितृव्य ( चाचा-काका ) पितामहोंनें, नाल विना ठेद्यां गुरुका, और ज्योतिषिका बहुत वस्त्र आज्ञापणवित्तादिसें पूजन करना. क्योंकि, नाल ठेद्यांपीठे सूतक हो जाता है. । गुरु

बालके पिता, पितामह ( दादा ) आदिकों आशी  
वाँद देवे. ॥

यथा ॥

‘ॐ अहं कुलं वो वर्द्धतां । संतु शतशः पुत्रप्रपौ  
त्राः । अक्षीणमस्त्वायुर्द्धनं यशः च अहं ॐ ॥’ इति  
वेदाशीः ॥

यो मेरुशृंगे त्रिदशाधिनाथैर्देव्याधिनाथैस्सपरिह  
दैश्च ॥ कुंजामृतैः संस्त्रपितस्सदेव आव्यो विदध्यात्  
कुलवर्द्धनंच ॥ १ ॥

ज्योतिषिकाशीर्वादो यथा शार्दूलविक्रीनितवृत्तम् ॥

आदित्यो रजनीपतिः क्षितिसुतः सौम्यस्तथा वाकूप  
तिः शुक्रः सूर्यसतो विधुंतुदशिखिश्रेष्ठा ग्रहाः पांतुवः ॥  
अश्विन्यादिजमण्मूलं तदपरो मेषादिराशिक्रमः

कल्याणं पृथुकस्य वृद्धिमधिकां संतानसप्यस्य च ॥१

तदपीठे लग्न धारण करके, ज्योतिषिके स्वघर  
गये हुए, गुरु सूतिकर्मकेवास्ते कुलवृद्धा स्त्रीयोको,  
और दाईयोको निर्देश करे । अन्य घरमें रहाही  
बालकको स्नान करानेवास्ते जलको मंत्रके देवे ॥

जलाजिमंत्रणमंत्रो यथा ॥

॥ॐ अहं । नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः॥  
क्षीरोदनीरैः किल जन्मकाले, यैर्मेरुशृङ्गे स्त्रपितो जि  
नेन्द्रः॥ स्नानोदकं तस्य जवत्विदं च, शिशोर्महामङ्गल  
लपुण्यवृद्धैः ॥ १ ॥

इस मंत्रकरके सात बार जलको मंत्रें, तिस जल करके कुलवृद्धा स्त्रीयों बालकको स्नान करावे । और अपने शकुलाचारके अनुसार नालछेद करे । तदपीठे गुरु स्वस्थानमें बैठाही चंदन, रक्तचंदन, विट्ठिका पादि दग्ध करके तिनकी जस्य श्वेतसर्पप और लवण मिश्रित करके पोदलिका बांधे.

रक्षाजिमंत्रणमंत्रो यथा ॥

“ ॐ ह्रीं श्रीं अंवे जगदवे शुभे शुभंकरे अमुं बालं भूतेभ्यो रक्ष १ । ग्रहेभ्यो रक्ष १ । पिशाचेभ्यो रक्ष १ । वेतालेभ्यो १ । शाकिनीभ्यो रक्ष १ । गगनदेवीभ्यो रक्ष १ । दुष्टेभ्यो रक्ष १ । शत्रुभ्यो रक्ष १ । कर्मणेभ्यो रक्ष १ । दृष्टिदोषेभ्यो रक्ष । १ जयं कुरु विजयं कुरु । तुष्टिं कुरु । पुष्टिं कुरु । कुलवृद्धिं कुरु । श्रीं ह्रीं ॐ जगवति श्रीं अंबिके नमः ॥

इस मंत्रकरके सातवार मंत्रित रक्षापोदलीको काले सूत्रसें बांधके, लोहेका टुकड़ा, वरुणमूलका टुकड़ा, रक्तचंदनका टुकड़ा और कौडी, इनोसहित रक्षापोदलिको कुलवृद्धा स्त्रीयोंके पास बालकके हाथ ऊपर बांधावे. ॥

सांवरत्तर(पंचांग)घटीपात्र, चंदन, रक्तचंदन, समीपमें एकांत रह, सरसव, लवण कौशेय कृष्णसूत्र, कौमी गीतमंगल, लोहा, रक्षा, वस्त्र, दक्षिणावास्ते धन, सूतिका, कुलवृद्धा, सर्व जलाशयका जल, जन्मसंस्कारमें

इतनी वस्तु चाहिये. ॥ इतिजन्म सं० विधि; ॥ अथ कदाचित् अश्लेषामें, ज्येष्ठामें, मूलमें, गंभांतमें जडामें बालकका जन्म होवे तो बालकको, बालकके मातापिताको, बालकके कुलको, दुःख, दारिद्र्य, शोक, मरणदि कष्ट होवे, इसवास्ते बालकका पिता और कुलज्येष्ठ (कुलका वरु) शांतिकविधिमें कहे विधानके करेबिना बालकका मुख न देखे ॥

इति जन्मसंस्कार विधि:

अथ चतुर्थ सूर्यचंद्रदर्शन संस्कार वर्णन

तीसरे दिन गुरु समीपके घरमें अर्हत् पूजन पूर्वक जिनप्रतिमाके आगे स्वर्णताम्रमयी वा रक्तचंदनमयी सूर्यकी प्रतिमा स्थापन करे. तदपीठे स्नान करके अलंकृत बालककी माताको जिसने दोनों हाथोंमें बालकको धारण किया है ऐसी माताको प्रत्यक्ष सूर्यके सन्मुख लेजाके, वेदमंत्रको उच्चारण करता हुआ, गुरु पुत्रको सूर्यका दर्शन करावे ॥

सूर्यवेदमंत्रो यथा ॥

“॥ ॐ अर्ह । सूर्योऽसि । दिनकरोऽसि । सहस्रकिरणोऽसि । विज्ञावसुरसि । तमोपहोऽसि । प्रियं करोऽसि । शिवं करोऽसि । जगच्चक्षुरसि । सुरवेष्टितोऽसि । विततविमानोऽसि । तेजोमयोऽसि । अरुणसारथिरसि । मार्त्तमोऽसि । द्वादशात्माऽसि । वक्रबांध

बोऽसि । नमस्ते जगवन् प्रसीदास्य कुलस्य तुष्टिं  
पुष्टिं प्रमोदं कुरु २ सन्निहितो जव अर्ह ॥”

ऐसैं गुरुके पठन करे हुए, सूर्यको देखके, माता  
पुत्रसहित, गुरुको नमस्कार करे. गुरु पुत्रसहित मा  
ताको आशीर्वाद देवे. ।

यथा । आर्या ॥

सर्वसुरासुरवंद्यः कारयिता सर्वधर्मकार्याणाम् ॥

भूयाद्विजगच्चक्षुर्मगलदस्ते सपुत्रायाः ॥ १ ॥

सूतकमें दक्षिणा नहीं है. । तदपीठे गुरु स्वस्था  
नमें आयकर जिन प्रतिमाको और स्थापित सूर्यको  
विसर्जन करे. माता और पुत्रको सूतकके ज  
यसैं तहां जिनप्रतिमाके पास न लावे. तिस दिनमें  
ही संध्याकालमें गुरु जिनपूजापूर्वक जिनप्रतिमाके  
आगे स्फटिकरूप्यचंदनमयी चंद्रमाकी मूर्ति स्थापन  
करे, तिस चंद्रमाकी मूर्तिका शान्तिकादिक प्रक्र-  
मोक्त विधिकरके पूजन करे तदपीठे तैसैंही सूर्य  
दर्शनरीतिसैं चंद्रमाके उदय हुए प्रत्यक्ष चंद्रसन्मुख  
माता और पुत्रको ले जाके, वेदमंत्र उच्चार करता  
हुआ, मातापुत्र दोनोंको चंद्रका दर्शन करावे. ॥  
चंद्रस्य वेदमंत्रो यथा ॥

“॥ ॐ अर्ह । चंद्रोऽसि । निशाकरोऽसि । सुधा  
करोऽसि । चंद्रमा असि । ग्रहपतिरसि । नक्षत्रपति  
रसि । कौमुदीपतिरसि । निशापतिरसि । मदनमि



अथ पष्टमं पष्ठीसंस्कारस्वरूपं ॥

ठठे दिनमें संध्याके समयमें गुरु प्रसूतिधरमें आकरके पष्ठीपूजन विधिका आरंज करे, पष्ठीपूजनमें सूतक नहीं गिणना. यत उक्तम् ।

स्वकुले तीर्थमध्ये च तथावश्ये वलादपि ॥

पष्ठीपूजनकाले च गणयेन्नैव सूतकम् ॥ १ ॥

इसवचनसें ॥ सूतिकागृहकी जीत और जूमि दोनोंको सधवायोंके हाथसें गोवरसें लेपन करावे, । तदपीठे दृश्य शुक्रवृहस्पतिके वर्त्तनेवाली दिशाके जीतजागको खड़ी आदिसें धवल ( श्वेत ) करावे, और जूमिजागको चौंकमंडित करावे. । तदपीठे श्वेत जीतजागके ऊपर सधवाके हाथेंकरी कुंकुम हिंगुलादिवर्णोंसें आठमाताओंको उर्झा, ( खनीयां ) आठ वैठी, और आठ सुती, लिखवावे. कुलकर्मांतरमें गुरुकर्मांतरमें पद् (६) पद् (६) लिखनीया. । तदपीठे सधवा स्त्रीयोंके गीतमंगल गाते हुए चौंकमें शुजासनके ऊपर बैठा हुआ गुरु, अनंतरोक्त पूजा क्रम करके मातायोंको पूजे. यथा ॥

“ ॥ ॐ ह्रीं नमो जगवति । ब्रह्माणि । वीणापुस्तकपद्मादासूत्रकरे । हंसवाहने श्वेतवर्णे । इह पष्ठी पूजने आगच्छ १ स्वाहा ॥ ”

तीनवार पढके पुष्पकरके आह्वान करे ॥ तदपीठे ॥

“ ॥ ॐ ह्रीं नमो जगवति । ब्रह्माणि । वीणापुस्त

कपद्माक्षसूत्रकरे । हंसवाहने । श्वेतवर्णे । मम सन्नि-  
हिता जव २ स्वाहा ॥”

तीनवार पढके सन्निहित करे ॥ पीठे ॥

“ ॥ ॐ ह्रीं नमो जगवति । ब्रह्माणि । वीणा  
पुस्तकपद्माक्षसूत्रकरे । हंसवाहने । श्वेतवर्णे । इह  
तिष्ठ २ स्वाहा ॥”

इति । तीनवार पढके स्थापन करे ॥ पीठे ॥

“ ॥ ॐ ह्रीं नमो जगवति । ब्रह्माणि । वीणा  
पुस्तकपद्माक्षसूत्रकरे । हंसवाहने । श्वेतवर्णे । गंधं  
गृह्ण २ स्वाहा ॥”

चंदनादि गंध चढावे ॥

“ ॐ ह्रीं नमो जगवति । ब्रह्माणि । वीणापुस्त-  
कपद्माक्षसूत्रकरे । हंसवाहने । श्वेतवर्णे । पुष्पं  
गृह्ण २ स्वाहा ॥”

इसीतरे मंत्रपूर्वक ।

“ धूपं गृह्ण २ । दीपं गृह्ण २ । ’ अक्षतान् गृह्ण  
२ । ’ नैवेद्यं गृह्ण २ स्वाहा ॥”

ऐसे एकएकवार मंत्रपाठपूर्वक इन पूर्वोक्त गंधा  
दिवस्तुयोंकरके जगवतीको पूजे. ॥ ऐसैही अन्य  
सात मातायोंकी पूजा करणी. ।

विशेष मंत्रोंमें है, सो लिखते हैं. ॥

“ ॐ ह्रीं नमो जगवति । माहेश्वरि । शूलपि-  
नाककपालखट्वांगकरे । चंद्रार्कललाटे । गजचर्मवृते ।

त्रोदक, सर्वोपधिजल और तीर्थजल, इनोकरके स्नान कराये हुए बालकको वस्त्राचरणादि पहिनावे. ॥ तथा स्त्रीयोंको सूतकदिनोंके पूर्ण हुएत्री, आर्द्र नक्षत्रोंमें, और सिंह गजयोनि नक्षत्रोंमें सूतकस्नान नहीं करावणा. । आर्द्र नक्षत्र दश है. । कृत्तिका १, चरणी २, मूल ३, आर्द्रा ४, पुष्य ५, पुनर्वसु ६, मघा ७, चित्रा ८, विशाखा ९, श्रवण १०, ये दश आर्द्र नक्षत्र हैं; इनमें स्त्रीको सूतकस्नान न करावे. यदि स्नान करे तो, फिर प्रसूति न होवे. ॥ धनिष्ठा १, पूर्वाषाढपदा २, ये दो सिंहयोनि नक्षत्र जाणने; और चरणी १, रेवती २, ये दो नक्षत्र गजयोनि जाणने. ॥ कदाचित् सूतक पूर्ण हुए दिनमें इन पूर्वोक्त नक्षत्रोंमेंसे कोई नक्षत्र आवे, तब एक एक दिनके अंतरे शुचिकर्म करणा. ॥ पूजावस्तु, पंच गव्य, स्वगोत्रज जन, तीर्थोदक, शुचिकर्मसंस्कारमें चाहिये. ॥

इति सप्तमशुचिकर्मसंस्कार विधि

अथ नामकरणसंस्कार विधि ॥

मृडु, ध्रुव, क्षिप्र और चर, इन नक्षत्रोंमें पुत्रका जातकर्म करना. अथवा गुरु वा शुक्र, चतुर्थ स्थित होवे, तब नाम करना, सज्जन पुरुषोंको सम्मत हो. ॥ शुचिकर्मदिनमे अथवा तिसके दूसरे वा तीसरे

शुभ दिनमें बालकको चंद्रमाके बल हुए, ज्योतिषिकसहित गुरु तिसके घरमें शुभस्थानमें शुभासनके ऊपर बैठा हुआ, पंचपरमेष्ठिमंत्रको स्मरण करता हुआ रहे । तिस अवसरमें बालकके पिता, पितामहादि, पुष्प फलकरके हाथ परिपूर्ण करके ज्योतिषिकसहित गुरुको साष्टांग नमस्कार करके ऐसे कहें- हे जगवन् ! पुत्रका नामकरण करो. । तब गुरु तिन पिता, पितामहादिको, तिसके कुलके पुरुषोंको, और कुलवृद्धा स्त्रीयोंको, आगे बैठाके, ज्योतिषिको जन्मलग्न कहनेकेवास्ते आदेश करे. । तब ज्योतिषिक शुभपट्टेऊपर खटिका ( खमी ) करके तिस बालकके जन्मलग्नको लिखे, स्थान २ में ग्रहोंको स्थापन करे. तब बालकके पितापितामहादि जन्मलग्नकी पूजा करे. । तिसमें स्वर्णमुद्रा १२, रूप्यमुद्रा १२, ताम्रमुद्रा १२, क्रमुक ( सुपारी ) १२, अन्य फल जाति १२, नालिकेर १२, नागवल्लीदल ( पान ) १२. इनोंकरके द्वादश लग्नका पूजन करे । इनही नव नव वस्तुयोंकरी नव ग्रहोंका पूजन करे. ऐसे लग्नके पूजे हुए, तिनोंके आगे ज्योतिषिक लग्न विचार कहें. वेजी उपयोगसहित सुणे. । तदपीठे व्यावर्णनसहित लग्नको ज्योतिषिक कुंकुमाक्षरोकरके पत्रे में लिखके, कुलज्येष्ठको सौप देवे. । बालकके पितादिकोंने ज्योतिषिका अपनी संपदानुसार वस्त्र

स्वर्णदान करके सन्मान करणा. और ज्योतिषिक जी तिनोंके आगे जन्मनक्षत्रानुसारे, नामाक्षरको प्रकाश करके, स्वधरको जावे. तदपीठे गुरु, सर्व कुलपुरुषोंको और कुलवृद्धा स्त्रीयोंको आगे स्थापन करके ( बिठलाके ) तिनोंकी सम्मतिसें हाथमें दूर्वा लेके परमेष्ठिमंत्रपठनपूर्वक ( कुलवृद्धाके ) कानमें जातिगुणोचित नाम सुणावे. । तिसपीठे कुलवृद्धा नारीयां गुरुकेसाथ पुत्र गोदीमें लीया तिसकी माता शिविकादि नरवाहनमें बैठी हुई, वा पादचारिणी अविधवायोंके गीत गाते हुए, जिनमंदिरमें जावे. । तहां मातापुत्र दोनों जिनको नमस्कार करे, माता चौबीस १ सुवर्णमुद्रा, रूप्यमुद्रा, फलनालिकेरादि करके जिनप्रतिमाके आगे ढौकनिका करे. । तदपीठे देवके आगे कुलवृद्धा स्त्रीयां बालकका नाम प्रकाश करें. चैत्य न होवे तो, घरदेरासरकी प्रतिमाके आगे यह विधि करना. तदपीठे तिसही रीतिसें पौषध शालामें आवे, तहां प्रवेश करके जोजनमंडली स्थानमें मंरुलीपट्ट स्थापन करके तिसकी पूजा करे. मंरुलीपूजाका विधि यह है. पुत्रकी माता “श्रीगौ तमाय नमः” ऐसा उच्चार करती हुई, गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य करके मंडलीपट्टकी पूजा करे. मंरुलीपट्टोपरि स्वर्णमुद्रा १०, रूप्यमुद्रां १०, क्रमुक १०८, नालिकेर १८, वस्त्रहस्त १८, स्थापन

करे. । तदपीठे पुत्रसहित माता तीन प्रदक्षीणा करके यतिगुरुको नमस्कार करे. । नव सोनेरूपेकी मुद्रा करके गुरुके नवांगकी पूजा करे. । निरुंठना और आरात्रिका ( आरती ) करके क्षमाश्रमणपूर्वक हाथ जोडके, “ वासस्केवंकरेह ” ऐसा पुत्रकी माता कहे. तब यतिगुरु वासक्षेपको, ॐ कार ॐ कार श्रीकार सन्निवेशकरके कामधेनुमुद्राकरके, वर्कमान विद्याकरके जपके, मातापुत्र दोनोंके शिरपर क्षेप करे. तहां जी तिनके शिरमें ॐ ॐ श्री अहं रोका सन्निवेश करे. । तदपीठे बालकको अक्षतसहित चंदनकरके तिलक करके, कुलवृद्धाके अनुवाद करके, नाम स्थापन करे. । तदपीठे तिसही युक्ति करके सर्व अपने घरको आवे. । यतिगुरुयोंको शुद्ध आहार वस्त्र पात्रका दान देवे. । गृहस्थगुरुको वस्त्र अलंकार स्वर्णदान देवे. ॥ नांदी, मंगलगीत, ज्योतिषिकसहित गुरु, प्रचूत फल, और मुद्रा, विविधप्रकारके वस्त्र, वास, चंदन, दूर्वा, नालिकेर, धन, इतनी वस्तु नामसंस्कार कार्यमें चाहिये. ॥

इति अष्टम नामकरणसंस्कार विधिः

॥ अथ नवमं अन्नप्राशनविधि ॥

रेवती, श्रवण, हस्त, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, अनुराधा, अश्विनी, चित्रा, रोहिणी, उत्तरात्रय, धनिष्ठा, पुष्य, इन निर्दोष नक्षत्रांमें और रवि, चंद्र, बुध, शुक्र, गुरु

वारोंमें पुरुषोंको नवीन अन्नप्राशन ( खाना ) श्रेष्ठ है. और बालकोंको अन्नजोजनरिक्तादि कुतिथीयां और कुयोगोंको वर्जके श्रेष्ठ है. । पुत्रको ठठे मासमें, और कन्याको पांचमे मासमें अन्नप्राशन, सत्पुरुषों ने कहा है. । जे नक्षत्र कहे तिनमें और पूर्वोक्त वारमें सङ्गृहोंके विद्यमान हुए अमावासी और रिक्ता, तिथीको वर्जके शुभ तिथीमें करणा. क्यों कि, लग्नमें रवि होवे तो, कुष्टी होवे; मंगल होवे तो, पित्तरोगी होवे; शनि होवे तो, वातव्याधि होवे; क्षीणचंद्र होवे तो, जीख मांगनेमें रत होवे; बुध होवे तो, झानी होवे; शुक्र होवे तो, जोगी होवे; बृहस्पति होवे तो, चिरायु होवे; और पूर्ण चंद्रमा होवे तो, पूजा करनेवाला और दान देनेवाला होवे. कंडक ४ । ७ । १० । अंत्य १२ । निधन ७ । त्रिकोण ५ । ए । इन घरोंमें पूर्वोक्त ग्रह होवे तो, शरीरमें शुभफल देते हैं. । ठठे और आठमे घरमें चंद्रमा अशुभ होता है, । केंद्र १ । ४ । ७ । १० । त्रिकोण ५ । ए । इन घरोंमें सूर्य होवे तो, अन्ननाश होवे. ॥ तिसकास्ते ठठे मासमें बालकको, और पांचमे मासमें कन्याको पूर्वोक्त तिथी वार नक्षत्र योगोंमें बालकको चंद्रवलके हुए अन्नप्राशनका आरंभ करे. । तद्यथा । पूर्वोक्त वेपधारी गुरु, तिसके घरमें जाके सर्वदेशोत्पन्न अन्नोंको एकत्र

करे; देशोत्पन्न और अन्य नगरोंमेंसे जे प्राप्त होवे, तिन सर्व फलोंको, और पद्विकृत्योंको गृहण करे। तदपीठे सर्व अन्नोंको, सर्व शाकोंको, सर्व विकृतीयोंको, घृत, तैल, इक्षुरस, गोरस, जल, इत्यादिकोंसे पकाये हुए बहुतप्रकारके पदार्थोंको पृथक् न्यारे २ करे। तदपीठे अर्हत्प्रतिमाका बृहत्स्नात्रविधिसे ( प्रतिष्ठा विधिमें लिखेंगे ) पंचामृतस्नात्र करके पृथक् पात्रोंमें तिन अन्न शाक विकृति पाकादिकोंको जिनप्रतिमाके आगे अर्हत्कटपोक्त विंशोपचारी नैवेद्यमंत्रकरके ढोवे. सर्वजातके फलजी ढोवे। तदपीठे बालकको अर्हत्स्नात्रोदक पिछावे। फिर जिनप्रतिमाके नैवेद्यसे उद्धरित बची (हुइ) तिन सर्ववस्तुओंको सूरिमंत्रके मध्यगत अमृताश्रवमंत्रकरके श्रीगौतमप्रतिमाके आगे ढोवे,। तिससे उद्धरित वस्तुओंको कुलदेवताके मंत्रकरके गोत्रदेवीकी प्रतिमाके आगे चढावे,। तदपीठे कुलदेवीके नैवेद्यमेंसे योग्य आहार मंगलगीत गाते हुए माता पुत्रके मुकमें देवे.। और गुरु यह वेदमंत्र पढे. ॥ यथा ॥

“॥ ॐ अर्हं जगवानर्हन् त्रिलोकनाथस्त्रिलोक पूजितः सुधाधारधारितशरीरोपि कावलिकाहारमाहारितवान्। तपस्यन्नपि पारणाविधाविक्षुरसपरमान्न भोजनात् परमानंदादापकेवलं तद्देहिन्नौदारिकशरी



“॥ ॐ अर्हं श्रुतेनाङ्गोपाङ्गैः कालिकैरुत्कालिकैः  
पूर्वगतैश्चूलिकाजिः परिकर्मजिः सूत्रैः पूर्वानुयोगैः  
ठन्दोनिर्द्ध्वक्षणैर्निरुक्तैर्धर्मशास्त्रैर्विरूकणो भूयात् अर्हं  
ॐ ॥”

शुद्रादिकोंको ॥ ‘॥ ॐ अर्हं तव श्रुतिद्वयं हृदयं  
अमं? विरूढनस्तु ॥’ ऐसैं कहना. ॥

तदपीठे बालकको यानमें बैठाके, वा नर नारी  
उत्संगमें लेके धर्मागारमें लेइ जावे; तहां पूर्वोक्त  
विधिसें मंडलीपूजा करके बालकको गुरुके चरणों  
आगे छोटावे. तब यतिगुरु विधिसें वासक्षेप करे. ।  
तदपीठे बालकको घरमें ल्याके गृहस्थगुरु कर्णाक्षरण  
पहिनावे. । यतिगुरुओंको शुद्ध चार प्रकारका आ  
हार वस्त्र पात्र देवे. । गृहस्थगुरुको वस्त्र स्वर्णदान  
देवे. ।

इति दशमंकर्णवेधसंस्कारवर्णनं

अथ दौरे

विधि

ग्रह केंद्रमें १।४।७ । १० होने चाहिये. ।  
 यदि केंद्रमें सूर्य होवे तो ज्वर होवे. मंगल होवे  
 तो शस्त्रसे नाश होवे. । पष्ठी (६), अष्टमी (७),  
 चतुर्थी (४), सिनीवाली (चतुर्दशीयुक्तअमावास्या )  
 चतुर्दशी (१४), नवमी (९), इन तिथियोंमें और  
 रवि, शनि, मंगल, इन वारोंमें दौरकर्म न करा  
 वणा. । धन २, व्यय १२, त्रिकोण ५ । ९, इन  
 ग्रहोंमें असङ्ग होवे तो, मृत्यु हुए जी कुरकिया  
 सुंदर नहीं होवे, और इनही घरोंमें शुभ ग्रह होवे  
 तो कुरकिया पुष्टिकी करणहार जाणनी । तिसवा  
 स्ते बालकको सूर्यवल्युक्त मासके हुए, चंद्रताराव  
 ल्युक्त दिनमें, पूर्वोक्त तिथिवार नक्षत्रमें कुलाचारा  
 नुसार कुलदेवताकी प्रतिमाके पास अन्य ग्राममें,  
 वनमें, पर्वतके ऊपर, वा घरमें शास्त्रोक्त रीतिसें  
 प्रथम पौष्टिक करे. । तदपीठे पष्ठीपूजावर्जित मात्र  
 पूजा पूर्ववत्. । तदपीठे कुलाचारानुसार नैवेद्य  
 देवपक्वान्नादि करणा. । तदपीठे सुस्नात ग्रहस्थगुरु  
 बालकको आसनऊपर बैठाके बृहत्स्नात्रविधिकृत  
 जिनस्नात्रोदकसें शांतिदेवीके मंत्रकरके सिंचन करे.  
 तदपीठे कुलक्रमागत नापित ( नाइ ) के हाथसे  
 मुंरुन करावे. । तीन वर्णके शिरके मध्यभागमें  
 शिखा स्थापन करे और शुद्धको सर्वमुंरुन. । चूड़ा  
 करण करते हुए यह वेदमंत्र पढ़े. ॥ यथा ॥

“॥ ॐ अर्हं ध्रुवमायु, ध्रुवमारोग्यं, ध्रुवाः श्रीयो,  
ध्रुवं कुलं, ध्रुवं यशो, ध्रुवं तेजो ध्रुवं कर्म, ध्रुवा च  
गुण संतति रस्तु. अर्हं ॐ ॥”

यह सातवार पढता हुआ बालकको तीर्थोदकक  
रके सींचे. । गीत वाजंत्र सर्वत्र जाणने. तदपीठे पंच  
परमेष्ठिपाठपूर्वक बालकको आसनसे उठायकर स्ना  
न करावे. । चंदनादिकरके लेपन करे. । श्वेतवस्त्र  
पहिनावे. । जूषणोंकरके जूषित करे. । तदनंतर  
धर्मागारमें लेजावे. तदपीठे पूर्वरीतिसें मंडलीपूजा  
गुरुवंदना वासद्धेपादि. । तदपीठे साधुओंको शुद्ध  
वस्त्र, अन्न, पात्र और पद्मरस विवृति दान देवे. ।  
गृहस्थगुरुको वस्त्र स्वर्ण दान देवे. । नापितको वस्त्र  
कंकण दान देवे. ॥

॥ इति दशमचूनाकरणसंस्कारवर्णनं ॥

अथ उपनयनसंस्कारविधि लिख्यते

तिहां उपनयन नाम मनुष्योंको वर्णक्रममें प्रवेश  
करणेवास्ते संस्कारही वेपमुद्राके उद्धहनसें स्व १  
गुर्योंके उपदेशे धर्ममार्गमें प्रवेश करना. यदुक्तं ।

धम्मायारे चरिए वेसो सब्ब कारणं पढमं ॥

संजमलज्जाहेज साहाणं तहय साहूणं ॥ १ ॥

मुनीन्द्रियः—धर्माचारके आचरण करते हुए वेप जो

है, सो सर्वत्र प्रथम कारण है. श्रावक तथा साधु  
योंको संजमलज्जाका हेतु है. ॥

तथा च श्रीधर्मदासगणिपादैरुपदेशमालायामप्यु  
क्तम् ॥ यथा

धम्मं रक्कइ वेसो संकइ वेसेण दिखिउमि अहं  
उम्मग्गेण परंतं रक्कइ राया जणवज्जव ॥ १ ॥

अर्थ:-वेष धर्मकी रक्षा करता है. क्योंकि, वेप  
होनेसें अकार्य करता हुआ मनमें शंका करता है  
कि, मैं दीक्षितवेषवाला हूं, मुझको देखके लोक निंदा  
करेगे, इसवास्ते उन्मार्गमें परते हुएकी जी वेप  
रक्षा करता है, जैसे राजा देशकी रक्षा करता है. ॥  
तथा इक्ष्वाकुवंशी, नारदवंशी, वैश्य, प्राच्य, उदी  
च्य, इन वंशोंके जैन ब्राह्मणको उपनयन और जि  
नोपवीत धारण करणा. । तथा क्षत्रीयवंशमें उत्पन्न  
हुए जिन, चक्रि, वलदेव, वासुदेवोंको, श्रेयांसकुमार  
दशार्णजद्वादि राजायोंको, हरिवंश, इक्ष्वाकुवंश,  
विद्याधरवंश, इन वंशोंमें उत्पन्न हुएको जी, उपन  
यन जिनोपवीतधारणविधि है. । जिसवास्ते कहा  
है. । आगममें,

“देवाणुप्पिआ, न एअं जूअं, न एअं जव्वं, न  
एअं जविस्सं, जन्नं, अरहंता वा, वलदेवा वा, वासु  
देवा वा, अंतकुलेसु वा, तुल्लकुलेसु वा, दरिदकुलेसु  
वा, जिरकागकुलेसु वा, माहणकुलेसु वा, आयांसु

वा आयाइंति वा, आयाइस्संति वा, एवं खलु, अरहंता  
 वा, चक्रवलवासुदेवा वा उग्रकुलेसु वा, जोगकुलेसु  
 वा, राइन्नकुलेसु वा, खत्तियकुलेसु वा, इरकागकुलेसु  
 वा, हरिवंशकुलेसु वा, अन्नयरेसु वा, तहप्पगारेसु  
 विसुऊ जाइकुलवंसेसु आयाइंसु वा, आयाइंति वा,  
 आयाइस्संति वा, अग्नि पुण एसेवि जावे, लोग्गेय  
 चूए, अणंताहिं उसप्पिणि ऊसप्पिणीहिं वइक्कंताहिं  
 समुपवइ, नागगुत्तस्स, वा, कम्मस्स, अरकीणस्स,  
 अवेइयस्स, अणिच्चिणस्स, उदणं, जन्नं, अरहंता  
 वा, चक्रवलवासुदेवा वा, अंतकुलेसु वा, पंतकिविण  
 तुठदरिइ निरकागमाहणकुलेसु वा, आयाइंसु वा,  
 आयाइंति वा, आयाइस्संति वा, नो चेवणं, जोणी  
 जम्मणनिरकमिंसु वा, निरकमंति वा, निरकमिस्संति  
 वा, तं जीअमेअं, तीअपच्चुप्पन्नमणागयाणं सक्राणं,  
 देविंदाणं, देवराइणं, अरहंते जगवंते, तहप्पगारे  
 हिंतो, अंतकुलेहिंतो, पंतकुलेहिंतो, तुठदरिइकिविण  
 निरकागमाहणकुलहिंतो; तहप्पगारेसु उग्रजोगराय  
 न्नखत्तियइरकागहरिवंसकुलेसु वा, अन्नयरेसु वा, तह  
 प्पगारेसु विसुऊजाइकुलवंसेसु साहरावित्तए. ॥”❀  
 तिसवास्ते कार्तिकशेठ कामदेवादिवैश्योंको जी उप

\* इस पाठका 'जावार्थ' यह है कि पूर्वोक्त अंतादिकुलमें अ-  
 रिहंतादि नहीं उत्पन्न होते हैं, किंतु उग्रादि उपनयनादिसंयुक्त  
 कुलमें उत्पन्न होते हैं, शुद्ध होनेसे. ॥

नयन जिनोपवीत धारण करणा. । आनंदादि शुद्धो को ज्ञी उत्तरीय धारण करणा. । शेष वणिगादिकों को उत्तरासंगकी अनुज्ञा है. जिनोपवीत जो है सो जगवान् जिनकी गृहस्थपणकी मुद्रा है. । सर्व बाह्य अच्यंतर कर्मविमुक्त निर्ग्रथ यतियोंको तो, नव ब्रह्मगुप्तिगुप्ताज्ञानदर्शनचारित्ररत्नत्रयी, हृदयमेंही है क्योंकि, ॥ मुनिजन सर्वदा तज्ज्ञावनाजावितही होते हैं. इसवास्ते नवब्रह्मगुप्तियुक्तरत्नत्रयी सूत्ररूप बाह्य मुद्राको नहीं धारण करते हैं, तन्मय होनेसे. नहीं समुद्र, जलपात्रको हस्तमे करता है. । नहीं सूर्य दीपकको धारण करता है. यदुक्तं ॥

अग्नौ देवोस्ति विप्राणां हृदि देवोस्ति योगिनाम् ॥  
प्रतिमास्वल्पबुद्धीनां सर्वत्र विदितात्मनाम् ॥ २ ॥

अर्थः—अग्निहोत्रि ब्राह्मणोका तो अग्निही देव है, अर्थात् अग्निविपेही देवबुद्धि है; और योगिजनोंके हृदयमेंही देव है; क्योंकि, योगाज्यासी मुनि जन तो, अपने पिंडस्थ, पदस्थ, रूपस्थ, रूपातीत, ध्यानके बलसे अपने हृदयमेंही देवका स्वरूप ध्याय सकते हैं; और जो अल्पबुद्धि अर्थात् गृहस्थधर्मी श्रावकादि हैं, तिनोंको जगवान्की प्रतिमाही देव है; और तिसकेहो पूजन, ध्यान, प्रज्ञावना, उत्सव, रथयात्रा, करनेसे कल्याण है. और जिनोंने आत्म स्वरूप जाना है, ऐसे यति, ऋषि, मुनियोंको तो

सर्वजगें देव माबुम होता है, अर्थात् ध्याता, ध्येय, ध्यान, ज्ञाता, ज्ञेय, ज्ञान रूपकरके सर्व देवस्वरूपही है. ॥ इसवास्ते शिखासूत्रविवर्जित ब्रह्मगुप्तिरत्नत्रय करण कारण अनुमतिमें सदैव आदरवाले यतिजन हैं. । और गृहस्थी, ब्रह्मगुप्तिरत्नत्रयलेशश्रवणस्मरण मात्रसें ब्रह्मगुप्तिरत्नत्रयकोसूत्रमुद्राकरके हृदयमें धारण करते हैं. । 'प्रतिम। स्वल्पबुद्धीनां इसवचनसें' ॥

तदात्मकत्वके न हुए मुद्राका धारण है. । जैसे ब्रह्मस्थको बाह्य अन्यंतर तपःका करण है. । तथा नवतंतुगर्जितसूत्रमय एक अग्र ऐसें तीन अग्र ब्राह्मणको, दो अग्र क्षत्रियको, एक अग्र वैश्यको, शूद्रको उत्तरीमक, और अपरको उत्तरासंगकी अनुज्ञा है. । ऐसा विशेष क्यों है ? सोही कहते हैं. ब्राह्मणोंने नवब्रह्मगुप्तिगुक्त ज्ञान दर्शनचारित्ररूप रत्नत्रय आप पालन करणे, अन्योसें करावणे, अन्य करतांको अनुमति देणी. ॥ ब्रह्मगुप्तिगुप्ताइति । ब्राह्मण आप रत्नत्रयीको ध्ययन सम्यक्दर्शन चारित्र क्रियायोकरके आचरते है, अन्योसें अध्यापन सम्यक्त्वोपदेश आचार प्ररूपणा करके रत्नत्रयीका आचरण करवाते हैं, और ज्ञानोपाशन सम्यग्दर्शन धर्मोपाशनादिकों करके श्रद्धा करने वाले और अनुज्ञा मांगनेवासे अन्योको अनुज्ञा देते हैं, इसवास्ते नवब्रह्मगुप्तिगर्जित रत्नत्रय करण कारण

अनुमतिवाले ब्राह्मणोंको जिनोपवीतमें तीन अग्र. ।  
 और क्षत्रियोंको आप रत्नत्रयका आचरण करणा.  
 और निजशक्तिसँ न्याप्रवृत्तिकरके अन्योसँ आच  
 रण करावणा योग्य है. परंतु तिन क्षत्रियोंको अन्य  
 जनोंको अनुज्ञा देनी योग्य नहीं है. क्योंकि. वे  
 ठकुराइवाले प्रजुहोंनेसँ अन्योविषे नियमादिकी  
 अनुज्ञा नहीं देतेहैं इसवास्ते क्षत्रियोंको जिनोपवी  
 तमें दो अग्र. । वैश्योंने ज्ञानशक्तिकरके सम्यक्त्व  
 धृतिकरके उपासकाचारशक्तिकरके स्वयमेव रत्नत्रय  
 आचरणा । तिन वैश्योंको असामर्थ्य होनेसँ अनु  
 पदेशक होनेसँ रत्नत्रयका करावणा और अनुमति  
 का देणा योग्य नहीं है; इसवास्ते वैश्योको जिनो  
 पवीतमें एक अग्र. । श्रूजोंको तो ज्ञानदर्शनचारित्र  
 रूप रत्नत्रयके करणमें आपही अशक्त है तो करा  
 वणा और अनुमतिका देणा तो दूरही रहा. तिनों  
 को अधमजाति होनेसँ, निःसत्त्व होनेसँ, अज्ञान  
 होनसे, तिनोंको जिनाज्ञानरूप उत्तरीयका धारण  
 है । तिनसँ अपर वणिगादिकोंको देवगुरुधर्मकी  
 उपासनाके अवसरमें मात्र जिनाज्ञानरूप उत्तरासंग  
 मुझाहै. ॥ जिनोपवीतका स्वरूप यह है. ॥ स्तनांतर  
 मात्रको चौराशी गुणा करिये तब एकसूत्र होवे  
 तिसको त्रिगुणा करणा, तिसको जी त्रिगुणा  
 करके वर्त्तन करणां (बटना) ऐसँ एक तंतु हुआ



इसी रीतिसें दो तंतु और योजन करिये, तबतीनो तंतु मिलाके एक अग्र होवे है. । तहां ब्राह्मणको तीन अग्र, क्षत्रियोको दो और वैश्योंको एक. । परम तमें तो ऐसा कथन है ॥

॥ कृते स्वर्णमयं सूत्रं त्रेतायां रौप्यमेव च ॥

छापरे ताम्रसूत्रं च कलौ कर्पासमिष्यति ॥ १ ॥

कृतयुगमें स्वर्णमयसूत्र, त्रेतायुगमें रूपेका, छाप रयुगमें तांबेका और कलियुगमें कर्पासका यज्ञोपवीत करना ॥ ” परंतु जिनमतमें तो, सर्वदा ब्राह्मणोंको सौवर्णसूत्र, और क्षत्रियवैश्योंको सर्वदा कार्पाससूत्र हीहै. ॥ इतिजिनोपवीतयुक्तिः ॥

अथ उपयनविधि कहते हैं:—उपनीयते वर्णक्रमारोहयुक्तिकरके प्राणीको पुष्टिको प्राप्त करिये; इत्युपनयनं. । श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, मृगशिर, अश्विनी, रेवती, स्वाति, चित्रा, पुनर्वसू. । तथा च । मृगशिर, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, स्वाति, चित्रा, पुष्य, अश्विनी, इन नक्षत्रोंमें मेखलाबंध, और मोक्ष करणा, आचार्यवर्य कहतें हैं. । गर्जाधानसें वा जन्मसें आठमे वर्षमें ब्राह्मणोंको मौंजीबंध उपनयनका प्रारंभ कथन करते हैं, क्षत्रियोंको इग्यारह (११) वर्षमें, और वैश्योंको बारमे वर्षमें. । वर्णाधिपके बलवान हुए उपनीतिक्रिया हितकारिणी होती है, अथवा सर्व वर्णोंको गुरु चंद्र सूर्य बल

वान् हुष, हित है. । बृहस्पतिवार होवे, बृहस्पति बलमान् होवे, वा केंद्रगत होवे, तो, द्विजोंको उ पनयन श्रेष्ठ है. और बृहस्पति तथा शुक्र नीच घरमें होवे, शत्रुके घरमें होवे, वा पराजित होवे तो श्रवणविधीमें स्मृतिकर्म हीन होवे । लग्नमें बृहस्पति होवे, त्रिकोणमें शुक्र होवे, और शुक्रांशमें चंद्रमा होवे तो जैनवेदवित् होवे, शुक्रसहित सूर्य लग्नमें शनिके अंशमें स्थित होवे, तदा सीखा हुइ विद्या झूल जावे ऐसा कृतघ्न हांवे. । केंद्रमें बृहस्पति होवे तो, स्वअनुष्ठानमें रक्त होवे, प्रवरप्रतियुत होवे शुक्र होवे तो, विद्या सौख्य अर्थ युक्त होवे, बुध होवे तो, अध्यापक होवे, सूर्य होवे तो, राजाका सेवक होवे, मंगल होवे, तो, शूरवीर होवे चंद्रमा होवे तो, व्यापारी होवे. शनि होवे तो, नीच जातीका सेवक होवे. । शनिके अंशमें मूर्खता उदय होवें, सूर्यके जागमे क्रूरपणा होवे, मंगलके अंशमें पाप बुद्धि होवे, चंद्रांशमें अतिजरुपणा होवे, बुधांशमे अति पटुपणा होवे, गुरु शुक्रके जागमे सुझपणा होवे, सूर्य सहित बृहस्पति होवे तो निर्गुण होवे, अर्थ हीन होवे, मंगल सहित सूर्य होवे, तो क्रूर होवे, बुध सहित होवे तो पटु होवे, शनि सहित होवे तो आलसु और निर्गुण होवे, चंद्र सहित शुक्र होवे तो अर्थहीन जाणना, पूर्वोक्त निर्दोष नक्षत्रो

स्तवसंयुक्त शक्रस्तव पाठ करे । तिस दिनमें, जल जवान्न चोजन करके आचाम्लका प्रत्याख्यान उपनेयको करावे । तदपीठे उपनेयको वामे पासे स्थापके सर्वतीर्थोदकोंकरके अमृताजलमंत्रकरके कुशायोंसे सिंचन करे ।

तदनंतर परमेष्ठिमंत्र पढके.

“ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ”

ऐसा कहके, जिन प्रतिमाके आगे उपनेयको पूर्वाभिमुख बैठावे; तदपीठे गृहीगुरु, चंदनमंत्रकरके अभिमंत्रण करे. ॥ चंदनमंत्रो यथा ॥

“ ॥ ॐ नमो जगवते. चंद्रप्रज्ञजिनैन्द्राय, शशांक हारगोक्षीरधवलाय, अनंतगुणाय, निर्म्मलगुणाय, जव्यजनप्रबोधनाय, अष्टकर्ममूलप्रकृतिसंशोधनाय, केवलालोकावलोकितसकललोकाय, जन्मजरामरण विनाशनाय सुमंगलाय, कृतमंगलाय, प्रसीद जग वन् इह चंदनेनामृताश्रवणं कुरु १ स्वाहा ॥ ”

इस मंत्रकरके चंदनको मंत्रके हृदयमें जिनो पवीतरूप, कटिमें मेखलारूप और ललाटमें तिल करूप, रेखाकरे, तदपीठे उपनेय “ नमोस्तु १ ऐसे कहता हुआ, गुरुके चरणोंमें पद्मके खन्दा होके हाथ जोड़के ऐसे कहै. ।

“ ॥ जगवन् वर्णरहितोऽस्मि । आचाररहितोऽस्मि । मंत्ररहितोऽस्मि । गुणरहितोऽस्मि । धर्मरहितोऽस्मि ।

शौचरहितोऽस्मि । ब्रह्मरहितोऽस्मि । देवर्षिपितृति  
थिकर्मसु नियोजय मां ॥”

ऐ सैं कहकर फिर “नमोस्तु १ ” ऐसैं कहता  
हुआ, गुरुके चरणोंमें पड़े; गुरु जी. इस मंत्रको पढ़के  
उपनेयको चोटीसैं पकड़के खड़ा करे । मंत्रो यथा ॥

“ॐ अर्हं देहिन् निमग्नोऽसि जवाण्वे तत्कर्षति  
त्वां जगवतोऽर्हतः प्रवचनैकदेशरज्जुना गुरुस्तदुत्तिष्ठ  
प्रवचनादानाय श्रद्धाधाहि अर्हं ॐ ॥”

ऐसैं पढ़के उपनेयको खड़ा करके अर्हत्प्रतिमाके  
आगे पूर्वाङ्गिमुख खड़ा करे. तदपीठे गृहीगुरु, त्रितं  
तुवर्त्तित—तीन तंतुकी बुणी, एकाशीति (७१) हाथ  
प्रमाण, मुंजकी मेखलाको अपने दोनों हाथोंमें  
लेके, इस वेदमंत्रको पढ़े.

“॥ ॐ अर्हं आत्मन् देहिन् ज्ञानावरणेन बद्धो  
ऽसि । दर्शनावरणेन बद्धोऽसि । वेदनीयेन बद्धोऽसि ।  
मोहनीयेन बद्धोऽसि । आयुषा बद्धोऽसि । नाम्ना  
बद्धोऽसि । गोत्रेण बद्धोऽसि । अंतरायेण बद्धोऽसि  
कर्माष्टकेन प्रकृतिस्थितिरसप्रदेशैश्च बद्धोऽसि ।  
तन्मोचयति त्वां जगवतोऽर्हतः प्रवचनचेतना तद्गु  
ह्यस्व मामुहःमुच्यतां तव कर्मवधनमनेन मेखलाव  
धेन अर्हं ॐ ॥”

ऐसा पढ़के उपनेयकी कटिमें नवगुणी मेखला  
को बांधे । तदपीठे उपनेय ‘नमोस्तु १’ कहता

हुआ, गृहीगुरुके पगोंमें पड़े । मेखलाको एकाशी (७१) हाथपणा विप्रको एकाशीतंतुगर्ज जिनोपवीत सूचनकेवास्ते, क्षत्रियको चौपन (५४) हाथ तावत्प्रमाणतंतुगर्ज जिनोपवीत सूचनकेवास्ते, और वैश्यको सत्ताइस (१९) हाथ तर्जनीसूत्रसूचनके वास्ते हैं । ब्राह्मणको नवगुणी क्षत्रियको ठगुणी और वैश्यको त्रिगुणी, मेखला बांधनी । तथा मौंजी, कौपीन, जिनोपवीत, इनोंका पूजन, गीतादिमंगल, निशाजागरण, तिसके पूर्वदिनकी रात्रिमें करणा । मेखलाबंधनके पीठे फेर गृहस्थगुरु, उपनेयके विलस्त (वेंत) प्रमाण पृथुल (चौका) और तीन विलस्त प्रमाण दीर्घ (लंबा) कौपिन दोनों हाथोंमें लेके ॥

“ ॥ ॐ अहं आत्मन् देहिन् मतिज्ञानावरणेन श्रुतज्ञानावरणेन अवधिज्ञानावरणेन मनःपर्यायावरणेन केवलज्ञानावरणेन इन्द्रियावरणेन चित्तावरणेन आवृतोऽसि तन्मुच्यतां तवावरणमनेनावरणेन अहं ॐ ॥ ”

इस वेदमंत्रको पढ़ता हुआ, उपनेयके अंतःकक्षकों कौपीन पहरावे । तदपीठे उपनेय ‘नमोस्तु २’ कहता हुआ, फिर जी गुरुके पगोंमें पड़े । फिर तीन २ प्रदक्षिणा करके चारों दिशामें शक्रस्तव पाठ करे ॥

तदनंतर लग्नवेलाके हुए गुरु, पूर्वोक्त जिनोपवीतको अपने हाथमें लेवे पीठे उपनेय फेर खन्ना होकर हाथ जोरके ऐसैं कहे ॥

“॥ जगवन् वर्णोद्यितोऽस्मि । ज्ञानोद्यितोऽस्मि । क्रियोद्यितो । तज्ज्ञिनोपवीतदानेन मां वर्णज्ञानक्रियासु समारोपय ॥”

ऐसैं कहके ‘नमोस्तु १, कहता हुआ गुरुके पगों में पड़े गुरु फिर पूर्वोक्त उठापनमंत्रकरके तिसको उठाके खन्ना करे । तदपीठे गुरु दक्षिण हाथमें जिनोपवीत रखके ॥

“॥ ॐ अर्हं नवब्रह्मगुप्तीः स्वकरणकारणानुमती ऊरियेः तदक्षयमस्तु ते व्रतं स्वपरतरणतारणसमर्थो नव अर्हं ॐ ॥” दक्षिणको

‘॥ करणकारणाज्यां धारयेः स्वस्य तरणसमर्थो नव ॥” वैश्वको

“॥ करणेन धारयेः स्वस्य तरणसमर्थो नव ॥” शेषं पूर्ववत् ॥

इस वेदमंत्रकरके पंच परमेष्ठिमंत्र पढता हुआ उपनेयके कंठमें जिनोपवीत स्थापन करे । पीठे उपनेय तीन प्रदक्षिणा करके ‘नमोस्तु १’ कहता हुआ, गुरुको नमस्कार करे. गुरु जी “निस्तारगण रगो नव” ऐसा आशीर्वाद कहे । तदपीठे गुरु पूर्वाभिमुख होके, जिनप्रतिमाके आगे शिष्यको

वामेपासे बैठे, सर्व जगत्में सार, महा आगम रूप क्षीरोदधिका माखण, सर्ववांछितदायक, कल्पद्रुम कामधेनु चिंतामणिके तिरस्कारका हेतु, निमेषमात्र स्मरण करनेसे मोक्षका दाता, ऐसे पंचपरमेष्ठिमंत्रको गंधपुष्पपूजित शिष्यके दक्षिणकानमें तीनवार सुणावे पीठे तीनवार तिसके मुखसे उच्चारण करावे ॥ यथा ॥

“ ॥ नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं । नमो उवञ्जायाणं । नमो लोए सब साहूणं ॥ ” पीठे उपनेयको मंत्रका प्रज्ञाव सुणावे ॥ तद्यथा ॥

सोलससु अक्षरेसु, इक्किं अक्षरं जगुज्जोअं ॥  
जवसयसहस्त महणो, जम्मि छिउं पंच नवकारो ॥ १ ॥  
अंजेइ जलं जलणं चिंतियमत्तो इ पंच नवकारो ॥  
अरिमारिचोरराजलघोरुवसगं पणासेइ ॥ २ ॥

एकत्र पंचगुरुमंत्रपदाक्षराणि । विश्वत्रयं पुनरनंतगुणं परत्र ॥ यो धारयेत्किल तुलानुगतं ततोऽपि । वंदे महागुरुतरं परमेष्ठिमंत्रम् ॥ ३ ॥ ये केचनापि सुखमाद्यरका अनंता । सत्सर्पिणीप्रचृतयः प्रययुर्विवर्त्ताः ॥ तेष्वप्ययं परतरः प्रथितः पुराऽपि । लब्ध्वै नमेव हि गताः शिवमत्र लोकाः ॥ ४ ॥ जग्मुर्जि नास्तदपवर्गपदं यदैव । विश्वं वराकमिदमत्र कथं विनास्मान् ॥ एतद्विलोक्य जुवनोद्भरणाय धीरैः ।

मंत्रात्मकं निजवपुर्निहितं तदाऽत्र ॥ ५ ॥ इन्द्रुर्दिवा  
 करतया रविरिन्द्रुरूपः । पातालमंवरमिलासुरलोक  
 एव ॥ किञ्जद्विपतेन बहुना जुवनत्रयेऽपि तन्नास्ति  
 यन्न विषमं च समं च तस्मात् ॥ ६ ॥ सिद्धांतोदधि  
 निर्म्मथान्नवनीतमिवोद्धतम् ॥ परमेष्ठिमहामंत्रं धार  
 येत् हृदि सर्वदा ॥ ७ ॥ सर्वपातकहर्त्तारं सर्ववांछि  
 तदायकम् ॥ मोक्षारोहणसोपाने मंत्रे प्राप्नोति पुण्य  
 वान् ॥ ८ ॥ धार्योयं जवता यत्नात् न देयो यस्य  
 कस्यचित् ॥ अज्ञानेषु श्रावितोयं शपत्येव न संशयः  
 ॥ ९ ॥ ❀ न स्मर्त्तव्योऽपवित्रेण न जने नाऽन्यसं  
 श्रये ॥ नाऽविनीतेन नो दीर्घशब्देनाऽपि कदाचन  
 ॥ १० ॥ न बालानां नाऽशुचीनां नाऽधर्म्माणां न दुर्ह  
 शाम् ❀ न प्लुतानां न दुष्टानां दुर्ज्ञातीनां न कुत्र  
 चित् ॥ ११ ॥ अनेन मंत्रराजेन ज्ञूयास्त्वं विश्वपू  
 जितः ॥ प्राणान्तेऽपि परित्यागमस्य कुर्यान्न कुत्रचित्  
 ॥ १२ ॥ गुरुत्यागे जवेदःखं मंत्रत्यागे दरिद्रता ॥ गुरु  
 मंत्रपरित्यागे सिद्धोऽपि नरकं व्रजेत् ॥ १३ ॥ इति

\* न स्मर्त्तव्योपचित्तेन न शठेनान्यसंश्रये इति पुस्तकातरे ॥  
 तथा अन्येषु श्राद्धदिनकृतश्राद्धविधिकामुदीपंचाशकादिषु शास्त्रे  
 प्येवमुक्तं यथा सा काप्यवस्था नास्ति यस्या नमस्कारो न  
 स्मर्त्तव्य इति ॥

\* नाऽप्लुतानां न दुष्टानां दुर्ज्ञानानां न कुत्रचित् । इति  
 पुस्तकातरे ॥



ज्ञात्वा सुगृहीतं कुर्या मंत्रममुं सदा ॥ सेत्स्यन्ति  
सर्वकार्याणि तत्रास्मान्मंत्रतो ध्रुवम् ॥ १४ ॥

गुरुने ऐसे शिक्षा दिया हुआ उपनेय तीन प्रद  
क्षिणा करके “नमोस्तु १” ऐसे कहता हुआ,  
गुरुको नमस्कार करे. पीठे गुरुको स्वर्णका जिनोप  
वीत, सुवर्णमौजी, श्वेत वस्त्र रेशमी स्वसंपदानुसारें  
देवे. और सर्वसंघको जी तांबूल वस्त्रादि देवे ॥  
इत्युप नयने व्रतबंधविधिः ॥

अथ व्रतादेशविधि लिख्यते हैं. ॥ तिसही अव  
सरमें, तिसही संघके संगममें, तिसही गीतवाजं  
त्रादि उत्सवमें, तिसही वेदचतुष्किकामें प्रतिमास्था  
पन संयोगमें, व्रतादेशका आरंभ करे. तिसका यह  
क्रम है. । गृहस्थगुरु, उपनीत पुरुषके कार्पास रेशमी  
अंतरीय (उत्तरीय) वस्त्र दूर करके मौंजी, जिनोपवीत  
कोपीन, येह वस्तुयां तिसकी देहमें तैसेही स्थापके,  
तिसके ऊपर कृष्णसाराजिन ( कालामृगचर्म ) बा,  
वृक्षके बटकलका वस्त्र पहिरावे. । हाथमें पलाशका  
दंसा देवे. और इस मंत्रको पढे.

“ ॥ ॐ अहं ब्रह्मचार्यसि । ब्रह्मचारिवेपोऽसि  
अवधिब्रह्मचर्योऽसि । धृतब्रह्मचर्योऽसि । धृताजिनदं  
नोऽसि । बुद्धोऽसि । प्रबुद्धोऽसि । धृतसम्यक्त्वोऽसि  
दृढसम्यक्त्वोऽसि । पुमानसि । सर्वपूज्योऽसि । तद  
वधिब्रह्मव्रतं आगुरुनिदेशं धारयेः अहं ॐ ॥ ”

ऐसें पढ़के व्याघ्रचर्ममय आसनके ऊपर, वा कद्वित काष्ठमय आसनके ऊपर उपनीतकों बिठलावे. तिसके दक्षिण हाथकी प्रदेशिनी अंगुलीमें दर्जसहित कांच नमयी पोमश १६ मासे प्रमाण ( पांच गुजाका एक मासा जाणना ) पवित्रिका मुद्रा पहरावे. । पवित्रिका परिधापनमंत्रो यथा ॥

“पवित्रं दुर्लभं लोके सुरासुरनृवह्वजम् ॥

सुवर्णं हंति पापानि, माखिन्यं च न संशयः॥ १ ॥

तदपीठे उपनीत, मुखसें पंचपरमेष्ठिमंत्र पढ़ता हुआ, गंध पुष्प अक्षत धूप दीप नैवेद्यकरके चारों दिशामें जिनप्रतिमाको पूजे । तदपीठे जिनप्रतिमाको प्रदक्षिणाकरके और गुरुको प्रदक्षणा करके ‘नमोस्तु १’ कहता हुआ, हाथ जोरके ऐसें कहे ॥ “जगवन् उपनीतोऽहं” गुरु कहे “सुप्नूपनीतो जव ।” फेर उपनीत ‘नमोस्तु , कहता हुआ नमस्कार करके कहे । “कृतो मे व्रतबंधः ।” गुरु कहे । “सुकृतोऽस्तु ।’ फेर ‘नमोस्तु’ कहके नमस्कार करके शिष्य कहे । “जगवन् जातो मे व्रतबंधः ।” गुरु कहे । “सुजातोऽस्तु ।” फेर नमस्कार करके शिष्य कहे । “जातोऽहं ब्राह्मणः । क्षत्रियो वा । वैश्यो वा ।” गुरु कहे । “दृढव्रतो जव । दृढसम्य त्ववो जव ।” फेर शिष्य नमस्कार करके कहे । “जगवन् यदि त्वया कृतो ब्राह्मणोऽहं तदादिश

कृत्यं । ” गुरु कहे अर्हजिरा दिशामि । ” फेर नमस्कार करके शिष्य कहे । “जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्ज रत्नत्रयंममादिष्टं । ” गुरु कहे । “आदिष्टं । फेर नमस्कार करके शिष्य । “जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्ज रत्नत्रयं मम समादिश । ” गुरु कहे । “समादिशामि । ” फेर नमस्कार करके शिष्य जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्ज रत्नत्रयं मम समादिष्टं । ” गुरु कहे । “समादिष्टं । ” फेर नमस्कार करके शिष्य कहे । “जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्ज रत्नत्रयं समानुजानीहि । ” गुरु कहे । “अनुजानामि ” फेर नमस्कार करके शिष्य कहे । “जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्ज रत्नत्रयं समानुज्ञातं । ” गुरु कहे । “अनुज्ञातं । ” फेर नमस्कार करके शिष्य कहे । “जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्ज रत्नत्रयं मया स्वयं करणीयं । ” गुरु कहे । “ करणीयं । ” फेर नामस्कार करके शिष्य कहे । “जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्ज रत्नत्रयं मया अन्यैः कारयितव्यं । ” गुरुकहे “कारयितव्यं” फेर नमस्कार करके शिष्य कहे । “जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्ज रत्नत्रयं कुर्वतोऽन्ये मया अनुज्ञातव्याः ” गुरु कहे । “अनुज्ञातव्याः ” क्षत्रियो को यह विशेष है ‘जगवन् अहं क्षत्रियो जातः’ आदेश समादेश दोनों कहने, अनुज्ञा न कहनी. करणकारणमें ‘कर्तव्यं’ ‘कारयितव्यं’ ऐसे कहना, ‘अनुज्ञातव्यं’ ऐसे न कहना. । और वैश्यको

आदेश ही कहना, समादेश अनुज्ञा यह दोनों न कहने. । 'कर्त्तव्यं' कहना, 'कारायितव्यं' अनुज्ञा तव्यं 'यह न कहने. । तदपीठे उपनीत हाथ जोरु के कहे. । 'हे जगवन् । आदिश्यतां व्रतादेशः । ' तव गुरु आदेश करे अर्थात् व्रतादेश कथन करे । तहां प्रथम ब्राह्मणप्रति व्रतादेश कहते हैं. यथा ॥

॥ मूलम् ॥

परमेष्ठिमहामंत्रो विधेयो हृदये सदा ॥  
 निर्ग्रथानां मुनीन्द्राणां कार्यं नित्यमुपासनम् ॥ १ ॥  
 त्रिकालमर्हत्पूजा च सामायिकमपि त्रिधा ॥  
 शक्रस्तवैस्सप्तवेलं वंदनीया जिनोत्तमाः ॥ २ ॥  
 त्रिकालमेककालं वा स्नानं पूतजलैरपि ॥  
 मद्यं मांसं तथा क्षौद्रं तथोडुवरपंचकम् ॥ ३ ॥  
 आमगोरससंपृक्तं द्विदलं पुष्पितौदनम् ॥  
 संधानमपि संसक्तं तथा वै निशि जोजनम् ॥ ४ ॥  
 शूद्रान्नं चैव नैवेद्यं नाश्रीयान्मरणेऽपि हि ॥  
 प्रजार्थं गृह्वासेऽपि संजोगो न तु कामतः ॥ ५ ॥  
 आर्यवेदचतुष्कं च पठनीयं यथाविधि ॥  
 कर्पणं पाशुपाद्यं च सेवावृत्तिं विवर्जयेः ॥ ६ ॥  
 सत्यं वचः प्राणिरक्षामन्यस्त्रीधनवर्जनम् ॥  
 कषायविषयत्यागं विदध्याः शौचज्ञागपि ॥ ७ ॥  
 प्रायः क्षत्रियवैश्यानां न ज्ञोक्तव्यं गृहे त्वया ॥  
 ब्राह्मणानामार्हतानां जोजनं युज्यते गृहे ॥ ८ ॥

स्वज्ञातेरपि मिथ्यात्ववासितस्य पलाशिनः ॥  
 न ज्ञोक्तव्यं गृहे प्रायः स्वयंपाकेन ज्ञोजनम् ॥ ए ॥  
 आम्रात्रमपि नीचानां न ग्राह्यं दानमंजसा ॥  
 त्रमता नगरे प्रायः कार्यः स्पर्शो न केनचित् ॥ १० ॥  
 उपवीतं स्वर्णमुद्रां नांतरीयमपि त्यजेः ॥  
 कारणांतरमुत्सृज्य नोष्णीपं शिरसि व्यधाः ॥ ११ ॥  
 धम्मोपदेशः प्रायेण दातव्यः सर्वदेहिनाम् ॥  
 व्रतारोपं परित्यज्य संस्कारान् गृहमेधिनाम् ॥ १२ ॥  
 निर्ग्रथगुर्वनुज्ञातः कुर्याः पंचदशापि हि ॥  
 शांतिकं पौष्टिकं चैव प्रतिष्ठामर्हदादिषु ॥ १३ ॥  
 निर्ग्रथानुज्ञया कुर्याः प्रत्याख्यानं च कारयेः ॥  
 धार्यं च दृढसम्यक्त्वं मिथ्याशास्त्रं विवर्जयेः ॥ १४ ॥  
 नानार्यदेशो गंतव्यं त्रिशुद्ध्याशौचमाचरेः ॥  
 पालनीयस्त्वया वत्स व्रतादेशो जवावधिः ॥ १५ ॥

॥ इतिब्राह्मणव्रतादेशः ॥

(भाषार्थः ) परमेष्ठिमहामंत्र सदा हृदयमें धारण  
 करना, निर्ग्रथ मुनीन्द्रोकी नित्य उपासना करनी ।  
 तीन कालमें अरिहंतकी पूजा करनी, तीनवार  
 सामायिक करनी, शक्रस्तवमें सातवार चैत्यवंदना  
 करनी. ठाने हुए शुद्ध जलसें त्रिकालमें वा, एकका  
 लमें स्नान करना, मदिरा, मांस, मधु, माखण  
 पांच जातिके उडुंबरफल, आमगोरससंयुक्त अर्थात्

कच्चे बिना गरम करे गोरस दूध दही ठाठके साथ छिदल अन्न, जिसपर नीली फूली आजावे सो अन्न, जीवोत्पत्तिसंयुक्त संधान अर्थात् तीन दिन उपरांतका आचार, रात्रिभोजन, शूद्रका अन्न, देवके आगे चढा नैवेद्य इन पूर्वोक्त वस्तुयोंको मरणांतमें न्नी न खाना । संतानोत्पत्तिकेवास्ते गृहवासमें स्त्रीसैं संभोग करना न तु कामासक्त होके । चारों आर्य जैन वेद विधिसैं पढने खेती, पशुपालपणा और सेवा वृत्ति (नौकरी) येह नही करने । शुचिमान् होके सत्य वचन बोलना, प्राणिकी रक्षा करनी, अन्य स्त्री और अन्य धन येह वर्जने, कषाय विषयको त्यागने, प्रायः क्षत्रिय और वैश्योंके घरमें तेरे जो जन न करना, आर्हत् ब्राह्मणोंके घरमें भोजन करना तुजको योग्य है । अपनी ज्ञातिका जो मिथ्या त्ववासित होवे, और मांसाहारी होवे तिसके घरमें न्नी भोजन नही करना । प्रायः आपही पकाके भोजन करना । कच्चे अन्नका न्नी दान नीचोंके हाथ का न ग्रहण करना, नगरमें भ्रमण करतां किसीका न्नी प्रायः स्पर्श न करना । उपवीत, स्वर्णमुद्रा और अंतरीय, इनको त्याग न करने. कारणंतरको वर्जके शिरके ऊपर उष्णीष (पगड़ी) धारण न करना । प्रायः सर्व मनुष्योंको धर्मोपदेश देना, व्रतारोपको वर्जके निर्गृथ गुरुकी आज्ञासैं पंचदश १५ संस्कार

गृहस्थांको करने तथा शांतिक, पौष्टिक, जिनप्रति  
माकी प्रतिष्ठादि करावने । निर्ग्रन्थकी आज्ञासँ प्रत्या  
ख्यान करना, और अन्यको करावना; सम्यक्त्वको  
दृढ धारण करना, मिथ्याशास्त्रकी श्रद्धा वर्जनी ।  
अनार्य देशमें जाना नहीं, तीनों शुद्धियां गरके  
शौच आचरण करना; हे वत्स ! तैनें पूर्वोक्त व्रता  
देश जवतग संसारमें रहे तवतक पालना ॥ १५ ॥  
इतिब्राह्मणव्रतादेशः ॥ अथक्षत्रियव्रतादेशः ॥

॥ मूलम् ॥

परमेष्ठिमहामंत्रः स्मरणीयो निरंतरम् ॥  
शक्रस्तवैस्त्रिकादं च वंदनीया जिनेश्वराः ॥ १ ॥  
मद्यं मांसं मधु तथा संधानोदुवरादि च ॥  
निशि जोजनमेतानि वर्जयेदतियत्नतः ॥ २ ॥  
डुष्टनिग्रहयुद्धादिवर्जयित्वा वधोगिनाम् ॥  
न विधेयः स्थूलमृपावादस्त्यक्तव्य एव च ॥ ३ ॥  
परनारीं परधनं त्यजेदन्यत्रिकत्थनम् ॥  
युक्त्यासाधूपासनं च द्वादशव्रतपालनम् ॥ ४ ॥  
विक्रमस्याविरोधेन विधेयं जिनपूजनम् ॥  
धारणं चित्तयत्नेन स्वोपवीतांतरीययोः ॥ ५ ॥  
लिंगिनामन्यविप्राणामन्यदेवालयेष्वपि ॥  
प्रणामदानपूजादि विधेयं व्यवहारतः ॥ ६ ॥  
सांसारिकं सर्वकर्म धर्मकर्मपि कारयेत् ॥  
जैनविप्रैश्च निर्ग्रन्थैर्दृढसम्यक्त्ववासितः ॥ ७ ॥

रणे शत्रुसमाकीर्णे धार्यो वीररसो हृदि ॥  
 युद्धे मृत्युञ्जयं नैव विधेयं सर्वथापि हि ॥ ८ ॥  
 गोब्राह्मणार्थे देवार्थे गुरुमित्रार्थ एव च ॥  
 स्वदेशजंगे युद्धेन सोढव्यो मृत्युरप्यलम् ॥ ९ ॥  
 ब्राह्मणक्षत्रियोर्नैव क्रियान्नेदोस्ति कश्चन ॥  
 विहायान्यव्रतानुज्ञाविद्यावृत्तिप्रतिग्रहान् ॥ १० ॥  
 दुष्टनिग्रहणं युक्तं लोचं भूमिप्रतापयोः ॥  
 ब्राह्मणव्यतिरिक्तं च क्षत्रियोदानमाचरेत् ॥ ११ ॥  
 ॥ इति क्षत्रियव्रतादेशः ॥

अथ क्षत्रियव्रतादेश कहते हैं ॥ परमेष्ठिमहा  
 मंत्र निरंतर स्मरण करना, शक्रस्तवांकरके त्रिकाल  
 जिनेश्वरको वंदन करना । मद्य, मांस, मधु, संधा  
 न, पांच उडुवरादि, ( आदिशब्दसें अमगोरससंयु  
 क्त छिदल, पुष्पितौदन, ) और रात्रिभोजन, इनको  
 यत्नसे वर्जें । दुष्टका निग्रह करना, और युद्धादि  
 वर्जके प्राणियोका वध न करना, स्थूलमृपावाद न  
 बोलना, परस्त्रीका और परधनका त्याग करना; पर  
 की निंदाका त्याग करे, युक्तिसे साधुयोकी उपास  
 ना करे, और चारों व्रत पालन करे । अपनी शक्ति  
 अनुसार जिनपूजन करना चित्तयत्नसें अर्थात् उप  
 योगसें खजपवीत, और अंतरीयको धारण करना ।  
 लिंगियोंको, अन्य ब्राह्मणोंको, और अन्यदेवालयों  
 में जी, प्रणाम दान पूजादि काम पड़े तो, लोक



व्यवहारसें करने । संसारिक सर्व कर्म जैनब्राह्मणों और धर्म कर्म निर्ग्रथों करके करावे. दृढसम्यक्त्वकी वासनावाला होवे । शत्रुयोंकरके समाकीर्णरणमें हृदयके विषे वीररस धारण करना, युद्धमें मृत्युका जय सर्वथा नहीं करना । गौ ब्राह्मणके अर्थ, देवके अर्थ, गुरु और मित्रके अर्थ, स्वदेशके जंग होते, और युद्धमें, मृत्यु जी सहन करना योग्य है । ब्राह्मण और क्षत्रियकी क्रियामें कुठ जी जेद नहीं है, परं अन्यको व्रतअनुज्ञा देनी विद्यावृत्ति, दान लेनेमे जेद है. दुष्टोंका निग्रह करना योग्य है, जूमि और प्रतापका लोभ करना, ब्राह्मणसें व्यतिरिक्त क्षत्रिय दान आचरण (गृहण) करे ॥११॥ इति क्षत्रियव्रतादेशः ॥ अथ वैश्यव्रतादेशः ॥

॥ मूलम् ॥

त्रिकालमर्हत्पूजा च सप्तवेदं जिनस्तवः ॥  
 परमेष्ठिस्मृतिश्चैव निर्ग्रथगुरुसेवनम् ॥ १ ॥  
 आवश्यकं द्विकालं च द्वादशव्रतपालनम् ॥  
 तपोविधिर्गृहस्थाहो धर्मश्रवणमुत्तमम् ॥ २ ॥  
 परनिंदावर्जनं च सर्वत्राप्युचितक्रमः ॥  
 वाणिज्यपाशुपाट्याज्यां कर्षणेनोपजीवनम् ॥ ३ ॥  
 सम्यक्त्वस्यापरित्यागः प्राणनाशेऽपि सर्वथा ॥  
 दानं मुनिज्य आहारपात्राद्यादनसद्गनाम् ॥ ४ ॥

कर्मादानविनिर्मुक्तं वाणिज्यं सर्वमुत्तमम् ॥  
उपनीतेन वैश्येन कर्त्तव्यमिति यत्नतः ॥ ५ ॥

॥ इतिवैश्यव्रतादेशः ॥

अथ वैश्यव्रतादेश कहते हैं ॥ त्रिकाल अर्हत् पूजा करनी, सातवार जिनस्तव चैत्यवन्दन करना, पंचपरमेष्ठिमंत्रका स्मरण करना, निर्यथ गुरुकी सेवा करनी. । दो कालमें ( प्रातः कालमें और सायं कालमें ) आवश्यक ( प्रतिक्रमणादि ) करना. वारां व्रत पालने, गृहस्थोचित तपोविधि करना, उत्तम धर्म श्रवण करना, परकी निर्दा वर्जनी, सर्वत्र उचित काम करना, वाणिज्य, पशुपालन और खेती करके आजीविका करनी । सर्वथाप्रकारे प्राणोंका नाश होवे तो जी, सम्यक्त्व नहीं त्यागना; मुनियोंको अहार, पात्र, वस्त्र, मकान ( उपाश्रय ) का दान करना. । कर्मादानसें रहित सर्व उत्तम वाणिज्य ( व्यापार ) करना, उपनीत वैश्यको ये पूर्वोक्त यत्नसें करणे योग्य है. ॥ इतिवैश्यव्रतादेशः ॥ अथ चातुर्वर्ण्यस्य समानो व्रतादेशः ॥

॥ मूलम् ॥

निजपूज्यगुरुप्रोक्तं देवधर्मादिपालनम् ॥

देवार्चनं साधुपूजा प्रणामोविप्रलिङ्गिषु ॥ १ ॥

धनार्जनं च न्यायेन परनिंदाविवर्जनम् ॥

अवर्णवादो न क्वापि राजादिषु विशेषतः ॥ २ ॥

स्वसत्त्वस्यापरित्यागो दानं वित्तानुसारतः ॥  
 आयोचितो व्ययश्चैव काले काले च जोचनम् ॥ ३ ॥  
 न वासोऽद्वपजले देशे नदीगुरुविवर्जिते ॥  
 न विश्वासो नरेन्द्राणां नागरीयनियोगिनाम् ॥ ४ ॥  
 नारीणां च नदीनां च लोचिनां पूर्ववैरिणाम् ॥  
 कार्यं विना स्थावराणामहिंसा देहिनामपि ॥ ५ ॥  
 नासत्याहितवाक् चैव विवादो गुरुज्जिनं च ॥  
 मातापित्रोर्गुरोश्चैव माननं परतत्त्ववत् ॥ ६ ॥  
 शुचशास्त्राकर्णनं च तथा नाऽजक्ष्यजक्षणम् ॥  
 अत्याज्यानां न च त्यागोप्यऽघात्यानामघातनम् ॥ ७ ॥  
 अतिथौ च तथा पात्रे दीने दानं यथाविधि ॥  
 दरिद्राणां तथांधानामापन्नारञ्जितामपि ॥ ८ ॥  
 ह्रीनाङ्गानां विकलानां नोपहासः कदाचन ॥  
 समुत्पन्नक्षुत्पिपासाघृणाक्रोधादिगोपनम् ॥ ९ ॥  
 अरिपुरुवर्गविजयः पक्षपातो गुणेषु च ॥  
 देशाचाराऽऽचरणं च जयं पापापवादयोः ॥ १० ॥  
 उद्धाहः सदृशाचारैः समजात्यन्यगोत्रजैः ॥  
 त्रिवर्गसाधनं नित्यमन्योन्याप्रतिबन्धतः ॥ ११ ॥  
 परिज्ञानं स्वपरयोर्देशकालादिचिंतनम् ॥  
 सौजन्यं दीर्घदर्शित्वं कृतज्ञत्वं सलज्जता ॥ १२ ॥  
 परोपकारकरणं परपीरुनवर्जनम् ॥  
 पराक्रमः परिजवे सर्वत्र ह्यंतिरन्यदा ॥ १३ ॥  
 जलाशयश्मशानानां तथा दैवतसद्मनाम् ॥

निद्राहाररेतादीनां संख्यासु परिवर्जनम् ॥ १४ ॥

प्रवेशोल्लंघनं चैव तटे शयनमेव च ॥

कूपस्य वर्जनं नद्यालंघनं तरणीं विना ॥ १५ ॥

गुर्वासनादिशय्यासु तालवृद्धे कुञ्जमिषु ॥

दुर्गोष्ठिषु कुकार्येषु सदैवासनवर्जनम् ॥ १६ ॥

न लंघनं च गच्छादिर्नदुष्टस्वामिसेवनम् ॥

न चतुर्थीदुनश्चस्त्रीशक्रचापविलोकनम् ॥ १७ ॥

हस्त्यश्वनखिनां चापवादिनां दूरवर्जनम् ॥

दिवासंज्ञोगकरणं वृद्धस्योपासनं निशि ॥ १८ ॥

कलह तत्समीपं च वर्जनीयं निरंतरम् ॥

देशकालविरुद्धं च ज्ञेयं कृत्यं गमागमौ ॥ १९ ॥

ज्ञापितं व्यय आयश्च कर्तव्यानि न कर्हिचित् ॥

चातुर्वर्ण्यस्य सर्वस्य व्रतादेशोयमुत्तमः ॥ २० ॥

॥ इतिचातुर्वर्ण्यस्यसमानोव्रतादेशः ॥

अथ चारों वर्णोंका समान व्रतादेश कहते हैं. ॥  
अपने पूज्य गुरुके कहे देवधर्मादिकापालना, देव  
पूजा करनी, साधुकी यथायोग्य पूजा करनी, ब्राह्म  
ण और लिंगधारीको प्रणाम करना. । न्यायसे धन  
उपार्जन करना. परकी निंदा वर्जनी, किसीका जी  
अवर्णवाद न बोलना, राजादिविषयक तो विशेषसे  
अवर्णवाद न बोलना. । अपने सत्त्वको ठोसना नहीं,  
धनके अनुसार दान देना, लाजानुसार खरच कर  
ना, जोचनके कालमें जोजन करना. । थोड़े जल

वाले देशमें वसना नहीं, नदी और धर्मगुरुवर्जित देशमें भी नहीं वसना. । राजा, राज्याधिकारी, स्त्री, नदी, लोभी, पूर्ववैरी, इनका विश्वास नहीं करना. । कार्यविना स्थावर जीवोंकी भी हिंसा नहीं करनी. । असत्य अहितकारि वचन नहीं बोलना, गुरुओं ( वनों ) के साथ विवाद नहीं करना. माता पिता और गुरु, इनका उत्कृष्ट तत्त्वकीतरें मान सत्कार करना । शुभ अष्टादश दूषणरहित सर्वज्ञोक्त शास्त्रका श्रवण करना; अज्ञद्वय ( नहीं खाने योग्य ) का भक्षण नहीं करना; जे त्यागने योग्य नहीं है, उनका त्याग नहीं करना; जे मारणे योग्य नहीं है, तिनको मारना नहीं. अतिथि, सुपात्र, और दीन, इनको यथाविधि यथा योग्य दान देना; दरिद्र, अंधे, दुःखी, इनको भी यथाशक्ति दान देना. । हीन अंगवालोंको, और विकलोंको कदापि हसना नहीं. । जूख, तृष्णा, (तृषा,) घृणा, क्रोधादि उत्पन्न हुए भी, गोपन करने. । षट् ( ६ ) अरिवर्गका विजय करना, गुणोंमें पक्षपात करना, देशाचार आचरण करना, पाप और अपवादका जय करना. । सदृश आचारवाले, समजाति, और अन्य गोत्रजोंके साथ विवाह करना; धर्म अर्थ कामको निरंतर परस्पर अप्रतिबंधसे साधन करना. । अपने और परायेका ज्ञान करना, देशका

छादिका चिंतन करना, सौजन्य धारण करना, दीर्घ दर्शी होना, लज्जाबु होना. परोपकार करना, परको पीडा न करनी, अपना परिजव (तिरस्कार) होवे तब पराक्रम दिखाना, अन्यथा सर्वत्र क्षांति करनी. । जलाशय, श्मसान, देवल, इनमें और तीन संध्यामें निद्रा, आहार, मैथुनादि वर्जना. । कूपमें प्रवेश, कूपका उल्लंघन, कूपकांठेपर शयन, इन सर्व को वर्जना; तथा नावाविना नदीका लंघना वर्जना. । गुरुके आसनशय्यादिके ऊपर, तारुवृक्षके हेठे, बुरी भूमिमें, दुर्गोंष्टिमें, कुकार्यमें, बैठना सदा ही वर्जना । खारूकूदनी नहीं, लोचनी स्वामीकी सेवा, नहीं करनी; चौथका चंद्र, नग्न स्त्री, इंद्रधनुः, इनको देखना नहीं. । हाथी, घोडा, नखोंवाले, जनावरों और निंदक, इनको दूरसे वर्जना. । दिन में संजोग (मैथुन) न करना, रात्रिको वृक्षका सेवन न करना. । कलह, और कलहका समीप, निरंतर वर्जना. । देशकाल विरुद्ध, भोजन, कार्य, गमन, आगमन, जाषण, व्यय (खरच) और आय (लाभ) ये कदापि न करने. यह पूर्वोक्त उत्तम व्रतादेश चारों वर्णोंका है. ॥ १० ॥ इति चातुर्वर्ण्यस्य समानोव्रतादेशः ॥

गृहस्थगुरु, पूर्वोक्त प्रकारसे शिष्यको व्रतादेश करके, आगे करके जिन प्रतिमाको तीन प्रदक्षिणा

वाले देशमें वसना नहीं, नदी और धर्मगुरुवर्जित देशमें जी नहीं वसना । राजा, राज्याधिकारी, स्त्री, नदी, लोत्री, पूर्ववैरी, इनका विश्वास नहीं करना । कार्यविना स्थावर जीवोंकी जी हिंसा नहीं करनी । असत्य अहितकारि वचन नहीं बोलना; गुरुओं ( वनों ) के साथ विवाद नहीं करना । माता पिता और गुरु, इनका उत्कृष्ट तत्त्वकीतरें मान सत्कार करना । शुभ अष्टादश दूषणरहित सर्वज्ञोक्त शास्त्रका श्रवण करना; अज्ञदय ( नहीं खाने योग्य ) का जक्षण नहीं करना; जे त्यागने योग्य नहीं है, उनका त्याग नहीं करना; जे मारणे योग्य नहीं है, तिनको मारना नहीं । अतिथि, सुपात्र, और दीन, इनको यथाविधि योग्य दान देना; दरिद्र, अंधे, दुःखी, इनको जी यथाशक्ति दान देना । हीन अंगवालोंको, और विकलोंको कदापि हसना नहीं । झूख, तृष्णा, (तृपा,) घृणा, क्रोधादि उत्पन्न हुए जी, गोपन करने । षट् ( ६ ) अरिवर्गका विजय करना, गुणोंमें पद करना, देशाचार आचरण करना, पाप और वादका जय करना । सदृश आचारवाले, समजा और अन्य गोत्रजोंके साथ विवाह करना; अर्थ कामको निरंतर परस्पर अप्रतिबंधसे करना । अपने और परायेका ज्ञान करना, देशका

लादिका चिंतन करना, सौजन्य धारण करना, दीर्घ दर्शी होना, लज्जाबु होना. परोपकार करना, परको पीसा न करनी, अपना परिजव (तिरस्कार) होवे तब पराक्रम दिखाना, अन्यथा सर्वत्र क्रांति करनी. । जलाशय, श्मसान, देवल, इनमें और तीन संध्यामें निद्रा, आहार, मैथुनादि वर्जना. । क्रूपमें प्रवेश, क्रूपका उल्लंघन, क्रूपकांठेपर शयन, इन सर्व को वर्जना; तथा नावाविना नदीका लंघना वर्जना. । गुरुके आसनशय्यादिके ऊपर, ताम्रवृद्धके हेठे, बुरी जूमिमें, दुर्गोष्टिमें, कुकार्यमें, बैठना सदा ही वर्जना । खाम कूदनी नहीं, लोचनी स्वामीकी सेवा, नहीं करनी; चौथका चंद्र, नग्न स्त्री, इंद्रधनुः, इनको देखना नहीं. । हाथी, घोडा, नखोंवाले, जनावरों और निंदक, इनको दूरसे वर्जना. । दिन में संजोग (मैथुन) न करना, रात्रिको वृद्धका सेवन न करना. । कलह, और कलहका समीप, निरंतर वर्जना । देशकाल विरुद्ध, भोजन, कार्य, गमन, आगमन, जापण, व्यय (स्वर्च) और आय (लाभ) ये कदापि न करने. यह पूर्वोक्त उत्तम व्रतादेश चारों वर्णोंका है. ॥ २० ॥ इति चातुर्वर्ण्यस्य समानोव्रतादेशः ॥

गृहस्थगुरु, पूर्वोक्त प्रकारसे शिष्यको प्रवृत्त करके, आगे करके जिन प्रतिमाको तीन



करावे. फिर पूर्वाभिमुख होके शक्रस्तव पढ़े. । उस पीठे गृहस्थगुरु, आसन ऊपर बैठ जावे, और शिष्य 'नमोस्तु' कहता हुआ गुरुके पगोंमें पंरुके ऐसे कहें, " जगवन् जवज्जिर्मम व्रतादेशो दत्तः " तब गुरु कहे, " दत्तःसुगृहीतोस्तु सुरक्षितोस्तु स्वयं तर परं तारय संसारसागरात् " ऐसे कहके नमस्कार पढ़ता हुआ ऊठके दोनों (गुरु शिष्य) चैत्यवंदन करें. उसपीठे ब्राह्मणने, विप्र क्षत्रिय वैश्यके घरमें जिज्ञादन करना; क्षत्रियने शस्त्र ग्रहण करना; और वैश्यने अन्नदान करना. ॥

इत्युपनयने व्रतादेशः ॥

अथ व्रतविसर्गःकथ्यतेः—अथ व्रतविसर्ग कहते हैं. ॥ ब्राह्मणने आठ वर्षसें लेके सोलां वर्षपर्यंत, दंरु और अजिन धारण करके, जिज्ञावृत्ति करके जोजन करना, यह उत्तम पद्धति है क्षत्रियने दंरु अजिन धारण करके दश वर्षसें लेके सोलां वर्ष पर्यंत आपहिं पाक करके, देवगुरुकी सेवामें तत्पर होके, जोजन करना; और वैश्यने दंरु अजिन धारण करके सप्तकृत जोजन करके चारां वर्षसें लेके सोलां वर्ष पर्यंत जोजन करना; यह उत्तम पद्धति है. । यदि कार्यव्यग्रता तितने दिन न रह सके तो, ठ (६) मास पर्यंत रहना. तदजावे एक मास पर्यंत, तदजावे पद्ध पर्यंत, तदजावे तीन दिन रहना. यदि तीन दिन जी न

रह सके तो, तिसही उपनयनव्रतादेशके दिनमेंही विसर्ग करिये, सोही कहने हैं। उपनीत, तीन २ प्रदक्षिणा करके चारों दिशायोंमें जिनप्रतिमाके आगे पूर्ववत् युगादिजिनस्तोत्र सहित शक्रस्तव पढ़े. तदपीठे आसनपर बैठे गुरुके आगे नमस्कार करके हाथ जोरके ऐसे कहे ॥ “जगवन् देशका लाव्यपेक्षया व्रतविसर्गमादिश” ॥ गुरु कहे ॥ “आदिशामि ॥” फिर नमस्कार करके शिष्य कहे ॥ “जगवन्ममव्रतविसर्ग आदिष्टः ॥ गुरु कहे ॥ “आदिष्टः ॥” फिर नमस्कार करके शिष्य कहे ॥ “जगवन् व्रतबंधो विसृष्ट ॥” गुरु कहे ॥ “जिनो पवीतधारणेन अविस्मृतोस्तु स्वजन्मतः षोडशाब्दी ब्रह्मचारी पाठधर्मनिरतस्तिष्ठेः ॥ उसपीठे पंचपरमेष्ठिमंत्र पढ़ता हुआ शिष्य, मौजी, कौपीन, बद्धकल, दंड, इनको दूर करके, गुरुके आगे स्थापन करे; और आप जिनोपवीतधारी श्वेतवस्त्र उत्तरीय होके गुरुके आगे नमस्कार करके बैठे, तब गुरु तिस वारां तिलकधारी उपनीतके आगे उपनयनका व्याख्यान करे।

तद्यथा ॥ आठ वर्षके ब्राह्मणको दश वर्षके क्षत्रियको, और चारों वर्षके वैश्यको, उपनयन करना तिसमें गर्जमास जी बीचमेंही गणने। तथाच ॥ “जिनोपवीतमिति जिनस्य उपवीतं मुद्रासूत्रमित्यर्थः”

जिनका उपवीत अर्थात् मुद्रासूत्र सो कहावे जिनोपवीत. । नवब्रह्मगुप्ति गर्जरत्नत्रय, येह पुरा, श्रीयुगादिदेवने ग्रहस्थीवर्णत्रयको अपनी मुद्राका धारण करना यावत् जीवतांइ कहा था. । तदपीठे तीर्थके व्यवहृद हुए, मिथ्यात्वको प्राप्त ब्राह्मणोंने हिंसा प्ररूपणसे चारों वेदको मिथ्या पथमें प्राप्त करे हुए, पर्वत और वसुराजासे प्रायः हिंसक यज्ञके प्रवृत्त हुए, 'यज्ञोपवीत' ऐसा नाम धारण करा. मिथ्या दृष्टि यथेच्छासे प्रलाप करो । परंतु जिनमतमें तो, जिनोपवीतही नाम है, नतु यज्ञोपवीत. तिसवास्ते तैनें इस जिनोपवीतको अङ्गीतरें धारण करना मासमासपीठे नवीन धारण कराना, प्रमादसे जिनो, पवीत जाता रहे, वा टुट जावे तो, तीन उपवास करके नवीन धारण करना. प्रेतक्रियामें दक्षिण स्कंधके ऊपर, और वाम कक्षाके हेठे, ऐसे विपरीत धारण करना. क्योंकि, सो विपरीत कर्म है. । मुनि जी, मृत मुनिके त्यागनेमें तथाविध विपरीतही वस्त्र पहनते हैं, जिसवास्ते, तूं जन्मकरके गूढ़ आज तक था सांप्रत संस्कारविशेषकरके ब्रह्मगुप्तिके धारणसे ब्राह्मण, वा क्षत्रियाण्येन-रक्षणकरनेसे क्षत्रिय, वा न्यायधर्ममें प्रवेश करनेसे वैश्य हुआ है; तिसवास्ते, क्रियासहित इस जिनोपवीतको अङ्गीतरें ग्रहण करना अङ्गीतरें रखना. तेरेको सद्धर्मवासना उपन

यनविधि क्षयरहित हो. ऐसे व्याख्यान करके पर  
मेष्ठिमंत्र पढ़कर दोनों गुरु शिष्य खड़े, होवे. पीठे  
चैत्यवंदन, और साधुवंदन करे. ॥ इत्युपनयने व्रत  
विसर्गविधिः ॥ अथ गोदानविधिर्यथा ॥

अथ गोदानविधि लिखते हैं. ॥ तदा व्रतविसर्गके  
अनंतर शिष्यसहित गुरु, जिनको तीन २ प्रदक्षिणा  
करके पूर्ववत् चारों दिशामें शक्रस्तवका पाठ करे.  
पीठे गृहस्थगुरु, आसनपर बैठे तब शिष्य गुरुको  
तीन प्रदक्षिणा करके नमस्कार करके हाथ जोड़के  
खड़ा होके, गुरुको विज्ञापना करे. यथा ॥

“॥ जगवन् तारितोहं, निस्तारितोहं, उत्तमः  
कृतोहं, सत्तमःकृतोहं, पूतः कृतोहं, पूज्यकृतोहं,  
तद्भगवन्नादिश, प्रमाद बहुले गृहस्थधर्म्ममें, मम किंच  
नापि रहस्यभूतं सुकृतं ॥”

हे जगवान् ! तारा मुझको, निस्तारा मुझको,  
उत्तम करा मुझको, अतिशयसाधु (श्रेष्ठ) करा  
मुझको, पवित्रकरा मुझको, पूज्य करा मुझको,  
तिसवास्ते, हे जगवन् ! प्रमादबहुल गृहस्थधर्ममें  
मेरेको कुछजी रहस्यभूत सुकृत कथन करो. ॥ तब  
गुरु कहे ॥

“॥ वत्स ! सुष्टुनुष्ठितं सुष्टु पृष्टं ततः श्रूयताम् ॥”

हे वत्स ! अच्छा करा, जला पूजा, तिसवास्ते  
तू श्रवण कर. ॥

दानं हि परमो धर्मो दानं हि परमा क्रिया ॥  
 दानं हि परमो मार्गस्तस्मादाने मनः कुरु ॥ १ ॥  
 दया स्यादज्ञयं दानमुपकारस्तथाविधः ॥  
 सर्वो हि धर्मसंघातो दानेन्तर्जावमर्हति ॥ २ ॥  
 ब्रह्मचारी च पाठेन त्रिह्रस्त्रैव समाधिना ॥  
 वानप्रस्थस्तु कष्टेन गृही दानेन शुद्ध्यति ॥ ३ ॥  
 ज्ञानिनः परमार्थज्ञा अर्हन्तो जगदीश्वराः ॥  
 व्रतकाले प्रयच्छन्ति दानं सांवत्सरं च ते ॥ ४ ॥  
 गृह्णतां प्रीणनं सम्यक् ददातां पुण्यमक्षयम् ॥  
 दानतुल्यस्ततो लोके मोक्षोपायोऽस्ति नाऽपरः ॥ ५ ॥

अर्थः—दानही परम उत्कृष्ट धर्म है, दानही परमा क्रिया है, दानही परम मार्ग है, तिसवास्ते दान देनेमें मन कर. । अज्ञयदानसें दया होवे है, दानसेंही तथाविध उपकार होवे है, सर्वही धर्म समूह दानमें अंतर्जाव हो सकता है । ब्रह्मचारी पाठ करके, साधु समाधि करके, वानप्रस्थ कष्ट करके, और गृहस्थी दान करके शुद्ध होता है. । तीन ज्ञानके धर्ता परमार्थके जाणकार, ऐसे अर्हत जगवंत जगदीश्वर जी व्रतसमयमें सांवत्सर दान देते हैं. । दान ग्रहण करनेवालेको तो, दान तृप्त करता है; और देनेवालेको अक्षय पुण्य प्राप्त कराता है; तिसवास्ते दानके समान दूसरा कोई मोक्ष का उपाय लोकमें नहीं है. ॥ ५ ॥ जिसवास्ते हे

वत्स । तैनें ब्राह्मणपणा, वा क्षत्रियपणा, वा वैश्य  
पणा प्राप्त करा है, अंगीकार करा है; तिसवास्ते  
हे वत्स । तूं गृहस्थधर्ममें मोक्षके सोपानरूप दान  
देनेका प्रारंभ कर । तब नस्कार करके शिष्य कहे,  
हे जगवन् । मुझको दानका विधी कहो । गुरु  
कहे 'आदिशामि' कहता हूं । यथा ॥

गावो जूमिः सुवर्णं च रत्नान्यन्नं च नक्तकाः ॥

गजाश्वा इति दानं तदष्टधा परिकीर्तयेत् ॥ १ ॥

एतच्चाष्टविधं दानं विप्राणां गृहमेधिनाम् ॥

देयं न चापि यतयो गृह्णन्त्येतच्च निःस्पृहाः ॥ २ ॥

यतिभ्यो योजनं वस्त्रं पात्रमौषधपुस्तके ॥

दातव्यं द्रव्यदानेन तौ द्वौ नरकगामिनौ ॥ ३ ॥

अर्थः—गौ १, जूमि २, सुवर्ण ३, रत्न ४, अन्न ५,  
नक्तक वस्त्रविशेष ६, हाथी ७, और घोड़ा ८, येह  
आठ प्रकारका दान कहाहे । यह पूर्वोक्त आठ  
प्रकारका दान, गृहस्थी ब्राह्मणगुरुओंको देना । और  
निःस्पृह यति साधु मुनिराज, इस दानको नहीं  
लेते हैं । साधवोंको तो, योजन, वस्त्र, पात्र, औषध  
पुस्तक, इनका दान देना साधुकों द्रव्य ( धन ) का  
दान देनेसें, देनेलेनेवाले दोनोंही नरकगामी होते  
हैं ॥ ३ ॥ तिसवास्ते प्रथम गोदान ग्रहण करना  
उपनीत, वठडेसहित कपिला, वा पाटला, वा श्वेत  
रंगकी, स्नापित, चर्चित, जूपित, धेनुको, आगे दिया

यके पूंठसे पकड़के, रूप्यमय खुरा है जिसके, स्वर्ण मय शृंग है जिसके, ताम्रमय पृष्ठ है जिसकी, कांस्य मय दोहपात्र है जिसका, ऐसी धेनु, गृहस्थगुरुके तांड़ देवे । गुरु तिस गौकी पूंठको हाथमें धारण करके, यह वेदमंत्र पढे । यथा ॥

“ ॥ ॐ अर्हं गौरियं धेनुरियं प्रशस्यपशुरियं सर्वोत्तमक्षीरदधि घृतेयं पवित्रगोमयमूत्रेयं सुधास्त्रा विणीयं रसोज्जाविनीयं पूज्येयं हृद्येयं अजिवाद्येयं तदन्तेयं त्वया धेनुः कृतपुण्यो जव प्राप्त पुण्यो जव अक्षयं दानमस्तु अर्ह ॐ ॥ ”

यह कहकर गृहीगुरु धेनुको ग्रहण करे. शिष्य तिस गौकेसाथ झोणप्रमाण सात धान्य, तुलामात्र षट् (६) रस और पुरुषतृप्तिमात्र षट् (६) विकृती (विगय) देवे ॥ इतिगोदानम् ॥ अन्य सर्व जूमिर रत्नादिदानोंविषे यह मंत्र पढना. । यथा ॥

“ ॥ ॐ अर्हं एकमस्ति दशमकमस्ति शतमस्ति सहस्रमस्ति अयुतमस्ति लक्षमस्ति प्रयुतमस्ति कोट्यस्ति कोटिदशकमस्ति कोटिशतकमस्ति कोटिसहस्रमस्ति कोट्ययुतमस्ति कोटिलक्षमस्ति कोटिप्रयुतमस्ति कोटाकोटिरस्ति संख्येयमस्ति असंख्येयमस्ति अनंतानंतमस्ति दान फलमस्ति तदक्षयं दानमस्तु ते अर्ह ॐ ॥ ” इति परेषां दानानां मंत्रपाठः ॥

यहां उपनयनमें गोदानकाही निश्चय है, शेष दान क्रमकरके अन्यदा भी देना. गोदानादि दान गृहस्थगुरु ब्राह्मणोंकोही देना. निःस्पृह यतियोंको न देना. तथा तिन यतियोंको, अन्न, पान, वस्त्र, पात्र, श्रेष्ठ, वसति, पुस्तकादि दानमें 'धर्मलाजः' यही मंत्र जाणना. । अथ गृहस्थगुरु, उपनीतसें गोदान लेके, पर्णानुज्ञा देके, चैत्यवंदन, और साधु वंदन करायके, तैसैही संघके मिले हुए, मंगलगीत वाजत्रोंके वाजते हुए, शिष्यको साधुओंकी वसतिमें (उपाश्रयमें) ले जावे. तहां मंडलीपूजा, वासक्षेप, साधुवंदनादि सर्व पूर्ववत् करना. । पीठे चतुर्विध संघकी पूजा, और मुनियोंको वस्त्र, अन्न, पात्रादि दान करे. ॥ इति गोदानविधिः ॥

संपूर्णोयं चतुर्विधउपनयनविधिः ॥

अथ शूद्रको उत्तरीयक देनेकी विधि लिख है. ॥ सात दिन तैलनिपेकस्नान पूर्ववत् जाणना. । तदनंतर यथाविधि पौष्टिक, सर्व शिरका मुंरुन, वेदिकरण, चतुष्किकाकरण, जिनप्रतिमास्थापन, पूर्ववत् । पीठे गृहस्थगुरु, जिनेश्वरकी अष्टप्रकारी पूजा करे. चारोंदिशायोंमें शक्रस्तव पाठ करे. पीठे गुरु आसनऊपर बैठ जावे. तब शिष्य श्वेत वस्त्र पहिरके, उत्तरासंगकरके समवसरण और गुरुको, प्रदक्षिणा करके, 'नमोस्तु २' कहता हुआ, गुरुको



नमस्कार करके हाथ जोरके, खमा होयके कहे.  
 “ ॥ जगवन् प्राप्तमनुष्यजन्मार्यदेशार्यकुलस्य मम  
 वोधिरूपां जिनाज्ञां देहि ॥ ” गुरु कहे “ ॥ ददा  
 मि ॥ ” शिष्य फिर नमस्कार करके कहे “ ॥ न  
 योग्योहमुपनयनस्य तज्जिनाज्ञां देहि ॥ ” गुरु कहे  
 ददामि ॥ ” पीठे द्वादश (१२) गर्जतंतुरूप, जि  
 नोपवीतप्रमाण दीर्घ (लंबा) कार्पासका, वा रेश  
 मका, उत्तरीयक, परमेष्ठिमंत्र पढता हुआ, जिनो  
 पवीतवत् पहिरावे. पीठे गुरु, पूर्वाभिमुख शिष्यको  
 चैत्यचंदन करावे. । पीठे शिष्य ‘ नमोस्तु १ ’  
 कहता हुआ, सुखसँ बैठे गुरुके पगोंमें पदके, फिर  
 खडा होके, हाथ जोरके, ऐसँ कहे. “ ॥ जगवन्  
 उत्तरीयकन्यासेन जिनाज्ञामारोपितोहं ॥ ” गुरु कहे  
 “सम्यगारोपितोसि तर जवसागरसं ॥ ” गुरु

कार्यं व्रतं प्रेतकर्मकरणं वृषल त्वया ॥  
 युक्तिरेषोत्तरासंगानुज्ञायां च विधीयते ॥ ५ ॥  
 क्षात्राणामथ वैश्यानां देशकालादियोगतः ॥  
 त्यक्तोपवीतानां कार्यमुत्तरासंगयोजनम् ॥ ६ ॥  
 धर्मकार्ये गुरोर्दृष्टौ देवगुर्वालयेऽपि च ॥  
 धार्यस्तथोत्तरासंगः सूत्रवत् प्रेतकर्मणि ॥ ७ ॥  
 अन्येषामपि कारूणां गुर्वानुज्ञां विनापि हि ॥  
 गुरुधर्मादिकार्येषु उत्तरासंग इष्यते ॥ ८ ॥

अर्थः—सम्यक्त्वके संयुक्त झाडश व्रत तैने धार  
 ण करने, और कुलका मद न करना । जैन ब्राह्म  
 णोंकी उपासना करनी; तथा गीतार्थाचीर्ण तप  
 करना. । किसी पापात्माको निदना नहीं, अपनी  
 प्रशंसा नकरनी, हित इच्छके ब्राह्मणको मान  
 देना. । शेष चतुर्वर्णशिक्षाश्लोकमें कहे आचारको  
 आचरण करना, ( उत्तरीयके परित्रंशमे, वा जंगजे  
 उपवीतवत् जाणना. । व्रत करना, प्रेतकर्म करना, )  
 हे वृषलशूद्र । उत्तरासंगकी अनुज्ञामें तैने यह  
 युक्ति करनी । देशकालादियोगसे त्याग किया हे  
 उपवीत जिनोंने, वैसे क्षत्रिय और वैश्योंको, उत्त  
 रासंग योजन करना. । धर्मकार्यमें, गुरुकी दृष्टिमें,  
 देव और गुरुके मकानमें, तथा प्रेतकर्ममे, सूत्रकी  
 तरे उत्तरासंग धारण करना. । और जी कारुओंको  
 गुरुकी आज्ञाके विना जी गुरुधर्मादिकार्योंमें उत्त

रासंग इच्छते हैं. । ऐसा व्याख्यान करके गुरु शिष्य को चैत्यवंदन करावे. । परमेष्ठिमंत्रका उच्चार और मंत्रव्याख्यान पूर्ववत्. । इतना विशेष है. शूद्रादि कोंको ' नमो ' के स्थानमें ' णमो ' उच्चारण कराना. इतिगुरुसंप्रदायः । पीठे शिष्यसहित गुरु, उत्सव करते हुए धर्मागारमें जावे. तहां मंमदीपूजा, गुरु नमस्कार, वासद्धेपादि पूर्ववत्. । पीठे मुनियोंको अन्न, वस्त्र, पात्र दान देवे. और चतुर्विध संघकी पूजा करे. ॥ इति उपनयने शूद्रादीनां उत्तरीयक न्यासोत्तरासंगानुज्ञोविधिः ॥

अथ वट्टकरणविधिः—अथ वट्टकरणविधि लिखते हैं. ॥ जिसवास्ते सम्यक् उपनीत, वेदविद्यासंयुक्त, दुष्प्रतिग्रहवर्जित, अशूद्रान्नजोजन करनेवाले, माह नोंके आचारमें रक्त, सर्व गृहस्थोंके संस्कारप्रतिष्ठादिक मोंके करानेवाले, ऐसे ब्राह्मण, पूज्य होते हैं. । परं द्व त्रियादि राजार्योंको, सेवा, अन्नपाक, तिसकी आज्ञा करनी, अच्युत्थान, चातुः—मनोहर वचन, प्रशंसा, विना नमस्कारके आशीर्वाद देना, विज्ञानकर्म, कृपि वाणिज्यकरण, तुरंगवृषजादि शिक्षाकरण, इत्यादि कर्म करनेवाले ब्राह्मणयोग्य नहींहैं. इसवास्ते ऐसे ब्राह्मणों वा हरकोइ को शूद्र ब्राह्मण बनानेके लिए “वट्ट करण” विधि करना चाहिये. सो वतातेंहैं. उक्तं च यतः ॥

व्युत्तव्रत्तानां ब्राह्मणानां तथा नैवेद्यभोजिनाम् ॥  
 कुकर्मणामवेदानामजपानां च शस्त्रिणाम् ॥ १ ॥  
 ग्राम्याणां कुलहीनानां विप्राणां नीचकर्मणाम् ॥  
 प्रेतान्नभोजिनां चैव मागधानां च वंदिनाम् ॥ २ ॥  
 घांटिकानां सेवकानां गंधतांबूलजीविनाम् ॥  
 नटानां विप्रवेपाणां पर्शुरामान्वयायिनाम् ॥ ३ ॥  
 अन्यजात्युद्भूतानां च वंदिवेपोपजीविनाम् ॥  
 इत्यादिविप्ररूपाणां बट्टकरणमिष्यते ॥ ४ ॥

अर्थः—व्रतसें ज्रष्ट हुए, संस्कारहीन, नैवेद्यका  
 भोजन करनेवाले, कुकर्मके करनेवाले, जैन वेदको नहीं  
 जाननेवाले, वेद मंत्रोंका जप न करनेवाले, शस्त्रको  
 धारण करनेवाले, कुग्रामके वसनेवाले, कुलहीन, नीच  
 कर्मके करनेवाले, प्रेतके अन्नका भोजन करनेवाले,  
 मागध—स्तुतिपाठ पठनेवाले वंदीराजादिकी स्तुति  
 पढनेवाले, घंटिका बजानेवाले, सेवा करनेवाले,  
 गंधतांबूलकरके आजीविका करनेवाले, विप्रवेप  
 धारण करनेवाले नट, पर्शुरामके संतानीय, अन्य  
 जातिसें उत्पन्न हुए, वंदिवेपसें आजीविका करनेवा  
 ले, इत्यादि विप्ररूपको बट्टकरण इच्छते हैं । तिस  
 का यह विधि है. प्रथम तिसके घरमें गृहस्थगुरु,  
 यथोक्त विधिसें पौष्टिक करे. पीछे तिसको शिखा  
 वर्जके मुंडन करावे, पीछे तिसको तीर्थोदक

मंत्रोंकरके मंत्रित जलकरके स्नान करावे. । तिर्यो  
दकाजिमंत्रणमंत्रोयथा ॥

“ ॥ ॐ वं वरुणोसि वारुणमसि गांगमसि यामु  
नमसि गौदावरमसि नाम्मदमसि पौष्करमसि सारस्व  
तमसि शातद्रवमसि वैपाशमसि सैधवमसि चांद्रजाग  
मसिवैतस्तमसि ऐरावतमसि कावेरमसि कारतोयमसि  
गौमतमसि शैतमसि शैतोदमसि रोहितमसि रोहि  
तांशमसि सारेयवमसि हारिकांतमसि हारिसलिल  
मसि नारिकांतमसि नारकांतमसि रौप्यकूटमसि  
सौवर्णकूटमसि सालिलमसि रक्तवतमसि नैमग्नस  
लिलमसि उन्मग्नसलिलमसि पाद्ममसि महापाद्म  
मसि तैगिष्ठमसि कैशरमसि जीवनमसि पवित्रमसि  
पावनमसि तदमुं पवित्रय कुलाचाररहितमपि देहिनां ॥

इस मंत्रसें कुशाग्रकरी सात बार अजिसिंचन  
करे. पीठे नदीकांठे वा तीर्थजपर, वा मंदिरमें, वा  
पवित्र गृहस्थानमें तिस बटूकरण योग्यको, प्रथम  
तीनगुणी कुशमेखला, तीन प्रकारसें बांधे. । मेखला  
बंधमंत्रो यथा ॥

“ ॥ ॐ पवित्रोसि प्राचीनोसि नवीनोसि सुग  
मोसि अजोसि शुद्धजन्मासि तदमुं देहिनां धृतव्रत  
मव्रतं वा पावय पुनीहि अब्राह्मणमपि ब्राह्मणं कुरु ॥ ”

इस मंत्रका तीन बार पाठ करे. ॥ पीठे कौपीन  
पहिरावे. । कौपीनमंत्रों यथा ॥

ॐ अब्रह्मचर्यगुप्तोपि ब्रह्मचर्यधरोपि वा ॥

व्रतः कौपीनबंधेन ब्रह्मचारी निगद्यते ॥ १ ॥

ऐसें तीन वार पढके कौपीन पहिरावणा. ।  
पीठे पूर्वोक्त ब्राह्मणसमान उपवीत, मंत्रपूर्वक पहि  
रावे. । मंत्रो यथा ॥

“ ॥ ॐ सधर्मोसि अधर्मोसि कुलीनोसि अकु  
नोसि सव्रह्मचर्योसि सुमनाअसि दुर्मनाअसि  
श्रद्धालुरसि अश्रद्धालुरसि आस्तिकोसि नास्तिकोसि  
आर्हतोसि सौगतोसि नैयायिकोसि वैशेषिकोसि  
सांख्योसि चार्वाकोसि सलिंगोसि अलिंगोसि तत्त्व  
ज्ञोसि अतत्त्वज्ञोसि तद्भव ब्राह्मणोऽमुनोपवीतेन  
जवंतु ते सर्वार्थसिद्धयः ॥ ”

इस मंत्रको नव वार पढके उपवीत स्थापन करे. ।  
पीठे तिसके हाथमें पलाशका दंरु देवे, और मृग  
चर्म तिसको पहिरावे, और जिह्वा मांगनी करावे.  
जिह्वामार्गणकेपीठे उपवीतको वर्जके, मेखला, कौपी  
न, चर्मदंरादि दूर करे. । दूरकरनेकामंत्र यथा ॥

“ ॥ ॐ ध्रुवोसि स्थिरोसि तदेकमुपवीतं धारय ॥ ”

ऐसें तीन वार पढे । पीठे गुरु, धारण किया है  
श्वेतवस्त्रका उत्तरासंग जिसने, ऐसे ब्राह्मणको, आगे  
विठलाके, शिद्धा देवे । यथा ॥

परनिंदां परद्रोहं परस्त्रीधनवांछनम् ॥

मांसाशनं म्लेच्छकंदजह्मणं चैव वर्जयेत् ॥ १ ॥

वाणिज्ये स्वामिसेवायां कपटं मा कृथाः क्वचित् ॥

ब्रह्मस्त्रीत्रूणगोरक्षां दैवर्षिगुरुसेवनम् ॥ १ ॥

अतिथीनां पूजनं च कुर्यादानं यथा धनम् ॥

अथात्मघातं मा कुर्या मा वृथा परतापनम् ॥ ३ ॥

उपवीतमिदं स्थाप्यमाजन्मविधिवत्त्वया ॥

शेषः शिक्षाक्रमः कथ्यश्चातुर्वर्ण्यस्य पूर्ववत् ॥ ४ ॥

अर्थः—परनिंदा, परद्रोह, परधनकी बांठा, मांस  
भक्षण, म्लेच्छकंदलशुनादिभक्षण, इनको वर्जना।  
वाणिज्यमें स्वामीकी सेवामें, कदापि कपट न करना;  
ब्राह्मण, स्त्री, गर्ज और गौ, इन चारोंकी रक्षा करनी  
देव ऋषि और गुरुकी सेवा करनी। अतिथीयोंका  
पूजन करना, धनके अनुसार दान देना, आत्मघात  
नहीं करना, परको पीसा न करनी। जन्मपर्यंत  
यावज्जीवे तबतक विधिपूर्वक उपवीत धारण करना,  
शेष शिक्षाक्रम पूर्ववत् चारों वर्णोंका कथन कर  
ना ॥ पीढे सो बटुकृत, गुरुको स्वर्ण, वस्त्र, धेनु,  
अन्न, दान करे। यहां बटुकरणमे वेदी, चतुष्पि  
का, समवसरण, चैत्यवंदन, व्रतानुज्ञा, व्रतविसर्ग,  
गोदान, वासदेवादि नहीं है ॥ इति बटुकरणविधिः॥  
इति द्वादशमोपनयनादिसंस्कारवर्ण समाप्तम् ॥



॥ अथ अध्ययनारंज संस्कार लिख्यते ॥

अश्विनी, मूल, पूर्वा ३, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, हस्त, शतजिषा, स्वाति, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा, येह नक्षत्र और बुध, गुरु, शुक्र, येह वार विद्यारंजमें शुभ है. अर्थात् इनमें प्रारंज करी विद्या प्राप्त होती है. रवि और चंद्र, मध्यम हैं. मंगल और शनिवार, त्यागने योग्य है. । अमा वास्या, अष्टमी, प्रतिपत् ( एकम, ) चतुर्दशी, रिक्ता, पष्ठी, नवमी, येह तिथियें विद्यारंजमें सदाही वर्जनी. ।

अथ उपनयनसदृश दिन और लग्नमें विद्यारंज संस्कारका आरंज करिये, तिसका यह विधि है. । गृहस्थगुरु प्रथम विधिसें उपनीत पुरुषके घरमें पौष्टिक करे; पीठे गुरु, मंदिरमें, वा उपाश्रयमें, वा कदंबवृक्षकेतले, कुशाके आसनउपर आप बैठके, शिष्यको वामेपासे कुशासनोपरि बिठलाके तिसके दक्षिण कानको पूजके तीनवार सारस्वत मंत्र पढे. पीठे गुरु, अपने घरमे, वा पाठ शालामें वा पौषधागारमे, शिष्यको पालखी, वा घोडेपर चढायके मंगलगीतोंके गाते हुए, दान देते हुए, वाजंत्र वाजते हुए, यति गुरु केपास लेजाके मंरुलीपूजापूर्वक वास क्षेप करवाके, पाठशालामें लेजावे. पीठे गुरु शिष्यको आगे येह शिक्षाश्लोक पढे. । यथा ॥



अज्ञानतिमिरांधानां, ज्ञानांजनशलाकया ॥

नेत्रमुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १ ॥

यासां प्रसादादधिगम्य सम्यक्, शास्त्राणि विदन्ति  
परं पदंज्ञाः ॥ मनीषितार्थप्रतिपादकाज्यो नमोस्तु  
ताज्यो गुरुपा दुकाज्यः ॥ २ ॥

सत्येतस्मिन्नरतिरतिदं गृह्यते वस्तु दूरा, दप्यासन्नेप्य  
सति तु मनस्याप्यते नैव किञ्चित् ॥ पुंसामित्यप्यवग  
तवतामुन्मनीषावहेता, विच्छा वाढं जवति न कथं  
सङ्गरूपासनायाम् ॥ ३ ॥

इति मत्वा त्वया वत्स । त्रिशुद्धोपासनं गुरोः ॥

विधेयं येन जायंते गोधीकीर्तिधृतिश्रियः ॥ ४ ॥

ऐसें शिष्यको शिक्षा देके, और तिससें स्वर्ण  
वस्त्र दक्षिणा लेके, गुरु अपने घरको जावे. पीठे  
उपाध्याय, सर्वको पहिले मातृका पढावे; पीठे  
विप्रको प्रथम आर्यवेद पढावे, पीठे परंगी, पीठे  
न्यायव्याकर्ण धर्मशास्त्र पढावे; क्षत्रियको नी ऐसेंही  
चतुर्दश विद्या पढावे. पीठे आयुर्वेद, धनुर्वेद, दंरु  
नीति और आजीविकाशास्त्र पढावे. वैश्यको धर्म  
शास्त्र, नीतिशास्त्र, कामशास्त्र और अर्थशास्त्र पढावे.  
शूद्रको नीतिशास्त्र और आजीविकाशास्त्र पढा वे,  
कारुयोंको तिनके उचित विज्ञानशास्त्र पढावे. पीठे सा  
धुयोंको चतुर्विध आहार वस्त्र पात्र पुस्तक दान देवे.

इति त्रयोदशमविद्यारंजसंस्कारवर्णनं समाप्तं ॥

अथ विवाह संस्कार विधिलिख्यते ॥

विवाह जो है सो समानकुलशीलवालोंकाही होता है. यतउक्तं ॥

ययोरेव समं शीलं, ययोरेव समं कुलम् ॥

तयोर्मैत्री विवाहश्च, न तु पुष्टविपुष्टयोः ॥ १ ॥

तिसवास्ते समकुलशील, समजाति, जाने है देशकृत्य जिनोके, तिनका विवाहसंबंध जोडना योग्य है; तिसवास्ते जो अविकृत है, तिसनें विकृतकुलकी कन्या ग्रहण नहीं करनी । विकृतकुलं यथा । जिनकेकुलमें शरीरऊपर रोम बहुत होवे, अशरोग होवे, दाद होवे, चित्रकुष्टि होवे, नेत्ररोग होवे, उदररोग होवे, ऐसे वंशोंकी कन्या न ग्रहण करनी. विकृत कुल होनेसें. । कन्या विकृता यथा । वरसें लंबी होवे, हीन अंगवाली होवे, कपिला होवे, जूंची दृष्टिवाली होवे, जिसका जापण और नाम जयानक होवे, ऐसी कन्या विचक्षणोंको त्याग ने योग्य है. तथा देवता, ऋषि, ग्रह, तारा, अग्नी नदी, वृक्षादिकके नामसे जो कन्या होवे, तथा जिसके शरीरऊपर बहुत रोम होवे, पिंगाद्धी और घरघरास्वरवाली, ऐसी कन्या जी पाणिग्रहणमें वर्जनी ॥ कन्यादाने वरस्य विकृतं कुलं यथा ॥ हीन होवे, क्रूर होवे, वधूसहित होवे, दरिद्री होवे,

व्यसन ( कष्ट ) संयुक्त होवे, कन्यादानमें ऐसे कुल और पुरुषको वर्जना. मूर्ख, निर्धन, दूर देशमें रहनेवाला, शूर, योद्धा, मोक्षान्जिलापी, कन्यासें तीन गुणासे अधिक उमरवाला, इनको जी कन्या न देनी. तिसवास्ते दोनों अविकृत कुलोंका, और दोनों विकृत कुलवालोंका विवाहसंबंध योग्य है. तथा पांच शुद्धियें देखके वधूवरका संयोग करना, सोही दिखावे हैं. राशि १, योनि २, गण ३, नारी ४, और वर्ग ५, येह पांच शुद्धियें दोनोंकी देखके वरवधूका संयोग करना. । कुल १, शील २, स्वामि पणा ३, विद्या ४, धन ५, शरीर ६, और वय ७, येह सातों गुण वरमें देखने, अर्थात् येह सात गुण वरमेंदेखके कन्या देनी. आगे जो होवे, सो कन्या का जाग्य है. गर्जसें आठ वर्षसें लेके इग्यारह वर्ष तांइ कन्याका विवाह करना \* तिसके ऊपरांत रज खला होती है. तिसको राका जी कहते हैं. तिस का विवाह शीघ्र होना चाहिये. वरको पाकरके

---

\* यह कथन प्रायः लौकिकन्यवहारानुसार है. क्योंकि, जैना गममें तो " जोवणगमणमणुपत्ता " इतिवचनात्, जब वरकन्या योवनको प्राप्त होवे, तब विवाह करना और ' प्रवचनसारोच्चार ' में लिखा है कि, सोळा वर्षकी स्त्री, और पच्चीस वर्षका पुरुष, तिनके संयोगसें जो संतान उत्पन्न होवे, सो वलिष्ठ होवे है. इत्यादि मूलागमसें तो बाललग्नका और वृद्धके विवाहका निषेध सिद्ध होता है ॥

चंद्रवलके हुए, तुच्छ महोत्सवके जी हुए, विवाह करना उचित है. यतउक्तम् ॥

वर्षमासदिनादिनां शुद्धिं राकाकरग्रहे ॥

नालोकयेच्चंद्रवलं वरं प्राप्य विधापयेत् ॥ १ ॥

पुरुषका आठ वर्षसें लेके ८० वर्षके बीच २ विवाह होना चाहिये क्योंकि, अस्सीवर्ष उपरांत प्रायः पुरुष शुक्ररहित होता है. ।

विवाह दो प्रकारके होते हैं, आर्यविवाह १, और पापविवाह २. । आर्य विवाहके चार भेद हैं. ब्राह्म्यविवाह १, प्राजापत्यविवाह २, आर्पविवाह ३, और दैवतविवाह ४. ये चारों विवाह मातापिताकी आज्ञासें होनेसें लौकिक व्यवहारमें धार्मिक विवाह गिने जाते हैं. पापविवाहके भी चार भेद हैं. गांधर्वविवाह १, आसुरविवाह २, राक्षसविवाह ३, और पैशाचविवाह ४. ये चारों स्वेच्छानुसार करनेसें पापविवाह गिने जाते हैं. ।

प्रथम ब्राह्म्यविवाहविधि लिखते हैं. । शुभ दिन में, शुभ लग्नमें, पूर्वोक्त गुणसंयुक्त वरको बुलवाके स्नान अलंकार करके संयुक्त हुए तिस वरकों अलंकृत कन्या देवे ॥ मंत्रो यथा ॥

“ ॐ अर्ह सर्वगुणाय सर्वविद्याय सर्वसुखाय सर्वपूजिताय सर्वशोचनाय तुभ्यं वस्त्रगंधमाद्यालं

कारालंकृतां कन्यां ददामि प्रतिगृह्णाष्व जडं नवतु  
ते अर्हं ॐ ॥ ”

इस मंत्रकरके बद्धांचलदंपती-स्त्रीजर्ता, अपने  
घरमें जावे. ॥ इति धाम्यो ब्राह्म्यविवाहः ॥ १ ॥

प्राजापत्य विवाह जगत्में प्रसिद्ध है, इसवास्ते  
विस्तारसें कहेंगे. ॥

आर्ष विवाहमें वनमें रहनेवाले मुनि, ऋषि,  
गृहस्थ अपनी पुत्रीको, अन्यऋषिके पुत्रकों, गौ  
वैलके साथ देते हैं. तहां अन्य कोई उत्सवादि  
नहीं होते हैं, इस विवाहका मंत्र जैनवेदोंमें नहीं  
है जैनी मंत्र जैन वेदकरके वर्णादि आश्रित हुए  
जैनोंके आचार कथन करनेवाले हे और ऐसे विवा  
ह अकृत्य होनेसें जैनोको कथन करनेकी जरूर  
नहीं है. दैवत । विवाहमें जी ऐसेंही जाणना. ।  
इन दोनों विवाहोके मंत्र पर समयसें जाणने. ॥  
इति धाम्य आर्षविवाहः ॥ ३ ॥

दैवत विवाहमें तो, पिता, अपने पुरोहितको  
इष्ट पूर्त कर्मके अंतमें अपनी कन्याको दक्षिणाकी  
तरें देवे. यह कार्य जी जैनोकों सम्मत नहीं होनेसें  
इस्के मंत्रजी कथन करतें नहीं हैं ॥ इति दैवत  
धाम्य विवाहः ॥ ४ ॥ ये चार धाम्यविवाह हैं. ॥

पितादिकोंकी सम्मतीविना, अन्योन्यप्रीतिकरके  
जो विवाह होता है, सो गान्धर्वविवाह. ॥ ५ ॥

पणवंध, सो आसूरविवाह. ॥ १ ॥ हठसें कन्या ग्रहण करे सो राक्षस विवाह ॥ ३ ॥

सुप्त, और प्रमत्तकन्याको ग्रहण करनेसें, पैशाच विवाह कहा जाता है. ॥ ४ ॥ माता, पिता, गुरु, आदिकी आज्ञा न होनेसें इन चारों विवाहोंको विवाहइ पुरुष पापविवाह कहते हैं. ॥ तथा ब्रह्माय १ आर्ष २, और दैवत ३, येह तीन विवाह दुःखमका लकलियुगमें प्रवर्त्तते नहीं है. । चारों पापविवाहोका वेदोक्तविधि जी नहीं है. अधर्म होनेसें ॥

संप्रति वर्त्तमान प्राजापत्य विवाहका विधि कहते हैं ॥ मूल, अनुराधा, रोहिणी, मघा, मृगशिर, हस्त, रेवती, उत्तरा ३, स्वाति, इन नक्षत्रोंमें लग्न करना. । वेध, एकार्गल, लत्ता, पात, उपग्रहसंयुक्त नक्षत्रोंमें विवाह नहीं करना. । तथा युति, क्रांति, साम्य, दोषमें जी नहीं करना. । तीन दिनको स्पर्श नेवाली तिथिमें, ( अयम् द्वय तिथिमें, ) क्रूर तिथि में, दग्ध तिथिमें, ) रिक्ता तिथिमें, अमावास्या, अष्टमी, पष्टी, द्वादशी इनमें विवाह नहीं करना. । चद्रामें, गंमांतमें, दुष्टनक्षत्र तिथि वार योगों, व्यतिपातमें, वैधृतिमें और निंद्यसमयमें विवाह नहीं करना सूर्यके क्षेत्रमे बृहस्पति होवे और बृहस्पतिके क्षेत्रमें सूर्य होवे तो, दीक्षा, प्रतिष्ठा, विवाह प्रमुख वर्जने. । चौमासेमें, अधिकमा

समें, गुरु शुक्रके अस्त हुए, मलमासमें, और जन्म मासमें, विवाहादि न करना. । मासांतमें, संक्रांति में, संक्रांतिके दूसरे दिनमें, ग्रहणादि सात दिनोंमें जी, पूर्वोक्त कार्य नहीं करना. । जन्मके तिथि वार, नक्षत्र, लग्नमें; राशि और जन्मके ईश्वरके अस्त हुए, और क्रूर ग्रहोकरके हत हुए जी, विवाह नहीं करणा. । जन्मराशिमें, जन्मराशि और जन्मलग्नसे वारमें और आठमेमें, और लग्नके अंशके अधिपके ठठे, और आठमे घरमें गए हुए, लग्न नहीं करना । स्थिर लग्नमें, वा द्विखजावलग्नमें, वा सज्जुण करी संयुक्त चर लग्नमें, उदयास्तके विशुद्ध हुए, विवाह करना. परंतु उत्पातादिकरके विदूषितमें नहीं करना. । लग्न और सप्तम घर, ग्रहकरके वर्जित होवे; तीसरे, ठठे, और इग्यारमे घरमें, रवि, मंगल और शनि होवे । ठठे और तीसरे घरमें, तथा पापग्रहवर्जित पांचमें घरमें राहु होवे; लग्नमें तथा पांचमें, चौथे, दशमे, और नवमे घरमें बृहस्पति होवे. । ऐसेही शुक्र, बुध, होवे; लग्न, ठठे, आठमे, वारमे घरसें, अन्यत्र चंद्रमा होवे, सो जी पूर्ण होवे. । क्रूरकरके दृष्ट, और क्रूरसंयुक्त चंद्र वर्जना; क्रूर, और अंतस्थ लग्न और चंद्र वर्जने. । इत्यादि गुणसंयुक्त, दोष विवर्जित लग्नमें, शुभ अंशमें शुभ ग्रहोंकर दृष्ट हुए, पाणिग्रहण शुभ है. ॥ इत्यादि

श्रीजडवाहु, वराह, गर्ग, लह्व, पृथुयशः, श्रीपति,  
विरचितविवाहशास्त्रके अवलोकनसें शुच लक्ष देख  
के विवाहका आरंभ करना. ॥

श्लोकः ॥

ततश्च कुलदेशादि गुरुवाक्यविशेषतः ॥

अनुज्ञातं विवाहादि गर्गादिमुनिभिः पुरा ॥१॥

वृत्तम् ॥

सूर्यः षट् त्रिदशस्थितस्त्रिदशषट्सप्ताद्यगश्रंजमा  
जीवः सप्तनवद्विपंचमगतो वक्रार्कजौ षट्त्रिगौ ॥

सौम्यः षट्द्विचतुर्दशाष्टमगतः सर्वेप्युपांते शुजाः  
शुक्रः सप्तमषट्दशाष्टरहितः शार्दूलवज्रासकृत् ॥ १ ॥

स्त्रीयोंको बृहस्पति बलवान् होवे, पुरुषोंको सूर्य  
बलवान् होवे, और दंपतीको चंद्र बलवान् होवे  
तो, लक्ष शोधना. ॥

प्रथम कन्यादानविधि कहते हैं:-पूर्वोक्त समान  
कुलशीलवाले, अन्य गोत्रीसें कन्या मांगनी. । पूर्वो  
क्त गुणविशिष्ट वरकेतांश्च कन्या देनी. । कन्याके  
कुलज्येष्ठने वरके कुलज्येष्ठको, नाखियर, क्रमुक  
( सुपारी ) जिनोपवीत, ब्रीही, दूर्वा, हरिद्रा अप  
ने १ देशकुलोचित वस्तु दानपूर्वक कन्यादान करना.  
तदा गृहस्थगुरु वेदमंत्र पठे । स यथा ॥

“ ॥ ॐ अहं परमसौभाग्याय, परमसुखाय, परम  
जोगाय, परमधर्माय, परमयशसे, परमसन्तानाय,



समें, गुरु शुक्रके अस्त हुए, मलमासमें, और जन्म मासमें, विवाहादि न करना. । मासांतमें, संक्रांति में, संक्रांतिके दूसरे दिनमें, ग्रहणादि सात दिनोंमें जी, पूर्वोक्त कार्य नहीं करना. । जन्मके तिथि वार, नक्षत्र, लग्नमें; राशि और जन्मके ईश्वरके अस्त हुए, और क्रूर ग्रहोकरके हत हुए जी, विवाह नहीं करणा. । जन्मराशिमें, जन्मराशि और जन्मलग्नसे वारमें और आठमेमें, और लग्नके अंशके अधिपके ठे, और आठमे घरमें गए हुए, लग्न नहीं करना. । स्थिर लग्नमें, वा द्विस्वजावलग्नमें, वा सज्जुण करी संयुक्त चर लग्नमें, उदयास्तके विशुद्ध हुए, विवाह करना. परंतु उत्पातादिकरके विदूषितमें नहीं करना. । लग्न और सप्तम घर, ग्रहकरके वर्जित होवे; तीसरे, ठे, और इग्यारमे घरमें, रवि, मंगल और शनि होवे. । ठे और तीसरे घरमें, तथा पापग्रहवर्जित पांचमें घरमें राहु होवे; लग्नमें तथा पांचमें, चौथे, दशमे, और नवमे घरमें बृहस्पति होवे. । ऐसैही शुक्र, बुध, होवे; लग्न, ठे, आठमे, बारमे घरसें, अन्यत्र चंद्रमा होवे, सो जी पूर्ण होवे. । क्रूरकरके दृष्ट, और क्रूरसंयुक्त चंद्र वर्जना; क्रूर, और अंतस्थ लग्न और चंद्र वर्जने. । इत्यादि गुणसंयुक्त, दोष विवर्जित लग्नमें, शुभ अंशमें शुभ ग्रहोंकर दृष्ट हुए, पाणिग्रहण शुभ है. ॥ इत्यादि

श्रीजडवाहु, वराह, गर्ग, लक्ष्म, पृथुयशः, श्रीपति, विरचितविवाहशास्त्रके अवलोकनसे शुचि लग्न देख के विवाहका आरंभ करना. ॥

श्लोकः ॥

ततश्च कुलदेशादि गुरुवाक्यविशेषतः ॥

अनुज्ञातं विवाहादि गङ्गादिमुनिभिः पुरा ॥१॥

वृत्तम् ॥

सूर्यः पट्ट त्रिदशस्थितस्त्रिदशपट्टसप्ताद्यगश्चंद्रमा  
जीवः सप्तनवद्विपंचमगतो वक्रार्कजौ पट्टत्रिगौ ॥

सौम्यः पट्टद्विचतुर्दशाष्टमगतः सर्वेष्ट्युपांते शुभाः  
शुकः सप्तमपट्टदशाष्टरहितः शार्दूलवज्रासकृत् ॥ १ ॥

स्त्रीयोंको बृहस्पति बलवान् होवे, पुरुषोंको सूर्य बलवान् होवे, और दंपतीको चंद्र बलवान् होवे तो, लग्न शोधना. ॥

प्रथम कन्यादानविधि कहते हैं:-पूर्वोक्त समान कुलशीलवाले, अन्य गोत्रीसे कन्या मांगनी. । पूर्वोक्त गुणविशिष्ट वरकेतांश कन्या देनी । कन्याके कुलज्येष्ठने वरके कुलज्येष्ठको, नालियर, क्रमुक ( सुपारी ) जिनोपवीत, वीही, दूर्वा, हरिद्रा अपने १ देशकुलोचित वस्तु दानपूर्वक कन्यादान करना. तदा गृहस्थगुरु वेदमंत्र पढे । स यथा ॥

॥ ॥ ॐ अहं परमसौभाग्याय, परमसुखाय, परमजोगाय, परमधर्म्माय, परमयशसे, परमसन्तानाय,

जोगोपजोगांतरायव्यवच्छेदाय, इमां अमुकनाम्नीं  
कन्यां अमुकगोत्रां अमुकनाम्ने वराय अमुकगोत्राय  
ददाति गृहाण अहं ॐ ॥ ”

पीठे सर्व लोकोंकेतांश कन्याके पक्षी तांबूल  
देवे. । तथा दूर रहे विवाहकालमें वरके जीते हुए,  
सो कन्या अन्यको न देवे.

उक्तंच ॥

“ सकृज्जादपन्ति राजानस्सकृज्जादपन्ति पण्डिताः ॥  
सकृत् प्रदीयते कन्या त्रीण्येतानि सकृत् सकृत् ॥१॥ ”

राजाओं एकवार बोलते हैं, पंडित जन एक  
वार बोलते हैं, कन्या एकवार दिशजाती हैं. पूर्वोक्त  
तीन कार्य एकएकहीवार होते हैं. ॥ तथा वर जी,  
तिस कन्याको वस्त्र, आभरण, गंधादिउत्सवसहित,  
तिसके पिताके घरमें देवे. । कन्याका पिता जी,  
परिजनसंयुक्त वरको, महोत्सवसहित वस्त्र मुद्रि  
कादिक देवे. ॥

लग्नदिनसें पहिले मासमें, वा पक्षमें, अवकासानु  
सारें दोनों पक्षोंके स्वजनोंको एकछे करके, सांवत्स  
र-ज्योतिषिकको उत्तम आसनऊपर बिठलाके,  
तिसके हाथसें विवाहलग्न चूमिके ऊपर लिखवावे;  
और रूप्य, स्वर्णमुद्रा, फल, पुष्प, दूर्वा करके जन्म  
लग्नवत् विवाहलग्नको पूजे. । पीठे ज्योतिषिको-

दोनों पक्षोंके वृद्धों वस्त्रालंकार तांबूलदान देना  
इति विवाहारंजः ॥

पीठे कोरे शरावल्लोंमें यव बोवने । पीठे कन्या  
के घरमें मातृस्थापना, और पट्टीस्थापना, पट्टी  
पूजनविधिके प्रकारसे करना । वरके घरमें मातृ  
स्थापन, और कुलकरस्थापन करना । परमतमें गण  
पति, कंदर्प स्थापन करते हैं. सो सुगम, और लोक  
प्रसिद्ध है. ॥

अथ कुलकर स्थापनविधि कहते हैं. ॥ गृहस्थ  
गुरु जूमिपर नही पड़े गोमय (गोबर) करके लीपी  
हुई जूमिमें, स्वर्णमय, रूप्यमय, ताम्रमय, वा श्रीप  
र्णीकाष्ठमय, पट्टा, स्थापन करे. । पट्टकस्थापन मंत्रः

“ ॥ ॐ आधाराय नमः आधारशक्तये नमः ।

इस मंत्रकरके एकवार मंत्रके पट्टेको स्थापन  
करके, तिस पट्टेको अमृतामंत्रकरके तीर्थजलोंसे  
अभिषिंचन करके. । पीठे चदन, अक्षत, दूर्वाकरके  
पट्टेको पूजे. । पीठे आदिमें.

“ ॥ ॐ नमः प्रथमकुलकराय, कांचनवर्णाय, श्या  
मवर्ण चंद्रयशः प्रियतमासहिताय, हाकारमात्रोच्चा  
रख्यापितन्याय्यपथाय, विमलवाहनाभिधानाय, इह  
विवाहमहोत्सवादौ आगच्छ १, इह स्थाने तिष्ठ १,  
सन्निहितो जव १, क्षेमदो जव १, उत्सवदो जव १,  
आनंददो जव १, जोगदो जव १, कीर्तिदो जव १,

अपत्यसंतानदो जव २, स्नेहदो जव २, राज्यदो जव २,  
इदमर्घ्यं पाद्यं वलिं चर्चां आचमनीयं गृहाण २,  
सर्वोपचारान् गृहाण ॥ ” २, पीठे ॥

“ ॥ ॐ गंधं नमः । ॐ पुष्पं नमः । ॐ धूपं  
नमः । ॐ दीपं नमः । ॐ उपवीतं नमः । ॐ नूपणं  
नमः । ॐ नैवेद्यं नमः । ॐ तांबूलं नमः ॥ ”

पूर्वोक्त मंत्रकरी आब्हान संस्थापन करके, इस  
मंत्रसे अर्घ्य, पाद्य, वलि, चर्चा, आचमनीय, दान  
देवे. यह ठोटे मंत्रोंसे गंधके दो तिलक, दो पुष्प,  
दो धूप, दो दीप, एक उपवीत, दो स्वर्णमुद्रा, दो  
नैवेद्य, दो तांबूल, चढावे. ॥१॥ पीठे दूसरे स्थानमें ॥

“ ॥ ॐ नमो द्वितीयकुलकराय, श्यामवर्णाय, श्या  
मवर्णचंद्रकांता प्रियतमासहिताय, हाकारमात्रख्या  
पितन्याय्यपथाय, चक्रुष्मदग्निधानाय, ॥ ” शेषं  
पूर्ववत् ॥ २ ॥

“ ॥ ॐ नमस्तृतीयकुलकराय, श्यामवर्णाय, श्याम  
वर्णसुरूपाप्रियतमासहिताय माकारमात्रख्यापितन्या  
य्यपथाय, यशस्वअग्निधानाय ॥ ” ॥ शेषं पूर्ववत् ॥

“ ॥ ॐ नमश्चतुर्थकुलकराय, श्वेतवर्णाय, श्याम  
वर्णप्रतिरूपाप्रियतमासहिताय, माकारमात्रख्यापित  
न्याय्यपथाय, अग्निचंद्राग्निधानाय ॥ ” शेषं पूर्ववत् ॥

“ ॥ ॐ नमः ॥ ५, श्या  
मवर्णचक्रुःकांताप्रियतमास

पितन्याय्यपथाय प्रसेनजिदन्निधानाय ॥ ” शेषं पूर्ववत् ॥ ५ ॥

“ ॥ ॐ नमः षष्ठकुलकराय, स्वर्णवर्णाय, श्यामवर्णश्रीकांताप्रियतमासहिताय, धिक्कारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय मरुदेवाजिधानाय, ॥ ” शेषं पूर्ववत् ॥ ६ ॥

“ ॥ ॐ नमः सप्तमकुलकराय, कांचनवर्णाय, श्यामवर्णमरुदेवाप्रियतमासहिताय, धिक्कारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय, नाज्जीअजिधानाय ॥ ” शेषं पूर्ववत् ॥ ७ ॥ इतिकुलकरस्थापन पूजनविधिः ॥

यह कुलकरस्थापना और परसमयमें गणेशमदन स्थापना, विवाहके पीठे जी सात अहोरात्रपर्यंत रखनी चाहिये. । पीठे वरके घरमें शांतिक, पौष्टिक करे. और कन्याके घरमें मातृपूजा पूर्ववत् । पीठे विवाहकालसें पूर्व सात, नव, इग्यारह, वा तेरह, दिनोंमें वधूवरको अपने २ घरमें, मंगलगीतवाजंत्र पूर्वक, तैलाजिषेक और स्नान, नित्य विवाहपर्यंत कराना. । प्रथमतैलाजिषेकदिनमें, वरके घरसें कन्या के घरमें, तैल, शिरःप्रसाधनगंधद्रव्य, आक्षादि खाद्य, शुष्कफल, जेजने. । नगरकी औरतें वरके घरमें और कन्याके घरमें, तैल, धान्य, ढौकन करें । वधूवरके घरकी वृद्ध नारीयों तिन तैल धान्यढौकने वाली नारीयोंको, पूछे आदि पक्कान्न देवें । तहां धारणादि देशाचार, कुलाचारोंसें करना. । तैलाजि

पेक, कुलकर गणेशादि स्थापन, कंकणबंध, अन्य विवाहके उपचारदिक सर्व, वधूवरको चंद्रवलके हुए, विवाहवाले नक्षत्रमें करना. । तथा धूलिजक्त, कौर जक्त, सौभाग्यजलध्यावन प्रमुख, कर्म, मंगलगीत वाजंत्रादिसहित देशाचार कुलार विशेषसें करना. । पीठे जेकर, वर, अन्य ग्रामांतर, नगरांतर, वा देशांतरमें होवे तो, तिसकी गमनयात्रा ( जान जनेत वरात ) कन्याके निवासस्थानप्रति करनी; तिसका विधि यह है. ॥

प्रथम एक दिनमें मातृपूर्वक सर्व लोकोंको नोजन देना; पीठे दूसरे दिन सुस्नात होके, चंदन का लेपन करके, वस्त्रगंधमाल्यादिकरके अलंकृत होके, मुकुट जूपित शिरको करके, घोड़ेपर, वा हाथी पर, वा पालखीमें आरूढ होके, वर चले. । तिसके समीप, अच्छे वस्त्रोंवाले, प्रमोदसहित, पानवीडे चावे हुए, संबंधी ज्ञातिजन, अपनी २ संपदानुसार घोड़ेआदि ऊपर चढ़े हुवे, वा पगोंसें चलते हुए, वरकेसाथ चलें. । दोनों पासे, मंगलगानमें तत्पर ऐसी ज्ञातिकी नारीयां चलें और आगे जैन ब्राह्मणलोक, गृहशांतिमंत्र पढ़ते हुए चलें. ॥

“ॐ अर्ह आदिमोर्हन्, आदिमो नृपः, आदि मो यन्ता, आदिमो नियन्ता, आदिमो गुरुः, आदिमः स्वप्ता, आदिमः कर्त्ता, आदिमो जर्त्ता, आदिमो

जयी, आदिमो नयी, आदिमः शिल्पी, आदिमो  
विद्वान्, आदिमो जटपकः, आदिमः शास्ता, आदि  
मो रौद्रः, आदिमः सौम्य, आदिमः काम्यः, आदि  
मः शरण्यः, आदिमो दाता, आदिमो वन्धः, आदि  
मः स्तुत्यः, आदिमो ज्ञेयः, आदिमो ध्येयः, आदि  
मो ज्ञोक्ता, आदिमः सोढा, आदिम एकः, आदि  
मोऽनेकः, आदिमः स्थूलः, आदिमः कर्मवान्  
आदिमोऽकर्मा, आदिमो धर्मवित्, आदिमोऽनुष्टे  
यः, आदिमोऽनुष्ठाता, आदिमः सहजः, आदिमो  
दशावान् आदिमः सकलत्रः, आदिमो निःकलत्रः,  
आदिमो विबोढा, आदिमः ख्यापकः, आदिमो  
ज्ञापकः, आदिमो विदुरः, आदिमः कुशलः, आदि  
मो वैज्ञानिकः, आदिमः सेव्यः, आदिमोगम्यः,  
आदिमो विमृश्यः, आदिमो विम्रष्टा, सुरासुरनरोरग  
प्रणतः, प्राप्तविमलकेबलो यो गीयते, सकलग्राणि  
गणहितो, दयाधुरपरापेक्षापरात्मा, परंज्योतिः, परं  
ब्रह्मा, परमैश्वर्यज्ञाक्, परंपरः, परापरो, जगदुत्तमः  
सर्वगः, सर्ववित्, सर्वजित्, सर्ववीर्यः, सर्वप्रकाश्यः  
सर्ववन्धः, सर्वपूज्यः, सर्वात्माऽसंसारोऽव्ययोऽवार्थवी  
र्यः, श्रीसंश्रयः, श्रेयः, संश्रयः, विश्वावश्याय  
संशयहृत्, विश्वसारो, निरंजनो, निर्मम्मो, नि  
को, निःपाप्मा, निःपुण्यः, निर्मना, निर्वाचा, नि  
निःसंशयो, निराधारो, निरवधिः प्रमाणं, प्रमेयं, प्रा



जीवाजीवाश्रवबंधसंवरनिर्झराबंधमोक्षप्रकाशकः, स  
एव जगवान्, शान्तिं करोतु, तुष्टिं करोतु, पुष्टिं करोतु,  
शक्तिं करोतु, वृद्धिं करोतु, सुखं करोतु, सौख्यं करोतु,  
श्रियं करोतु, लक्ष्मीं करोतु अर्हं ॐ ॥

ऐसें आर्यवेदके पाठी ब्राह्मण, आगे चलें ।  
पीठे इसी विधिसें महोत्सवकरके, चैत्यपरिपाटी,  
गुरुवंदन, मंजुलीपूजन, नगरदेवतादिपूजन, करके,  
नगरके समीप रहे; पीठे पंथमें चलें । तथा इसी  
रीतिसें कन्याधिष्ठित नगरमें प्रवेश करना । तिसही  
नगरमें विवाहकेवास्ते चले दुष्ट वरका जी, यही  
विधि जाणना । तथा नित्यज्ञानके अनंतर कौसुंज  
सूत्रकरके बधूवरके शरीरका माप करना । पीठे  
विवाहदिनके आये दुष्ट, विवाहलग्नमें पहिसे, तिस  
ही नगरका यासी, वा अन्यदेशसे आया वर, तिस  
ही पूर्वोक्त विधिसें, पाणिग्रहणकेवास्ते चले । तिस  
ही घटिन विशेषकरके नृणश्चादि ॥ करे ।  
पीठे घर, आगंवर और एहंस्थ ॥ कन्या

जसूत्रसें अलंकृत, मंथानको लाके, तिससें, तीन वार वरके ललाटको स्पर्श करे । पीठे वर, वाहन से नीचे उतरके, वामे पगसे तिस अश्लिवण संयुतसंपुटको खंभित करे ( तोडे. ) पीठे वरकी सासु, वा कन्याकी मामी, वा कन्याका मामा, कौसुं जवस्त्रको वरके कंठमें ढालके, खेंचता हुआ वरको मातृघरमें ले जावे. तहां विभूषाकरके, कौतुकमंगलकरके, प्रथम आसनऊपर बैठी हुई कन्याके वामे पासे, मातृदेवीके सन्मुख, वरको बिठलावे. । पीठे गृहस्थगुरु लग्नवेलामे शुभांशके हुए, पीसी हुई समी ( खेजनी ) की ठाल, और पीपलिकी ठाल, चंदनद्रव्यमिश्रितकरके, तिससें लीपे हुए, वधूवरके दोनों दक्षिण हाथ जोडे. । उपर कौसुंजसूत्रसें बांधे. ॥ हस्तबंधनमंत्रः ॥

“ ॥ ॐ अर्ह आत्मासि, जीवोसि, ,  
 समचित्तोसि, समकर्मासि, समाश्रयोसि नोसि,  
 समक्रियोसि, समहोसि, समचेष्टितोसि, , ना  
 पोसि, समेच्छोसि, समप्रमोदोसि, सम  
 समावस्थोसि, समनिमित्तोसि, समवचात्र।

जीवाजीवाश्रवबंधसंवरनिर्जराबंधमोक्षप्रकाशकः, स  
एव जगवान्, शान्तिं करोतु, तुष्टिं करोतु, पुष्टिं करोतु,  
शक्तिं करोतु, वृद्धिं करोतु, सुखं करोतु, सौख्यं करोतु,  
श्रियं करोतु, लक्ष्मीं करोतु अहं ॐ ॥

ऐसें आर्यवेदके पाठी ब्राह्मण, आगे चले. ।  
पीठे इसी विधिसें महोत्सवकरके, चैत्यपरिपाटी,  
गुरुवंदन, मंरुलीपूजन, नगरदेवतादिपूजन, करके,  
नगरके समीप रहे; पीठे पंथमें चले. । तथा इसी  
रीतिसें कन्याधिष्ठित नगरमें प्रवेश करना. । तिसही  
नगरमें विवाहकेवास्ते चले हुए वरका जी, यही  
विधि जाणना. । तथा नित्यस्नानके अनंतर कौसुंज  
सूत्रकरके वधूवरके शरीरका माप करना. । पीठे  
विवाहदिनके आये हुए, विवाहलग्नसें पहिले, तिस  
ही नगरका वासी, वा अन्यदेशसें आया वर, तिस  
ही पूर्वोक्त विधिसें, पाणिग्रहणकेवास्ते चले. तिस  
की बहिन विशेषकरके लूणआदि उत्तारण करे. ।  
पीठे वर, आमंवर और गृहस्थगुरुसहित कन्याके  
घरके द्वारमें आवे. तहां खडे हुए वरको, तिसके  
स्नासुजन, कर्पूरदीपकादिकरके आरात्रिक ( आरति )  
करे. । पीठे अन्य स्त्री, जलते हुए अंगारे, और  
लवणकरके संयुक्त, वर वर ऐसे शब्द करते हुए,  
सरावसंपुटको, वरको निरुंठन करके, प्रवेशमार्गके  
मे पांरवे स्थापन करे. । पीठे अन्य स्त्री कौसुं

ज्ञातीया, अमुकान्वया, अमुकप्रदौहित्री, अमुकदौहित्री अमुकावर्या तदेतयोर्वर्यावरयोर्वरवर्ययोर्नि विना विवाहसंबंधोस्तु शांतिरस्तु, तुष्टिरस्तु, पुष्टिरस्तु, धृतिरस्तु, बुद्धिरस्तु, धनसंतानवृद्धिरस्तु, अर्हं ॐ ॥” ऐसें कहे ॥

पीठे गुरु, वरवधूके पाससें गंध, पुष्प, धूप, नैवेद्य करके अग्निकी पूजा करावे । पीठे वधू लाजांजलिको अग्निमें निक्षेप करे. । पीठे फिर तैसेंही दक्षिण पासे वधू, और वामे पासे वर बैठे. । पीठे गुरु वेदमंत्र पठे

“ ॥ ॐ अर्हं अनादिविश्वमनादिरात्मा, अनादिकालः, अनादिकर्म, अनादिसंबंधो, देहिनां, देहानुमतानुगतानां, क्रोधोहंकारवृद्धलोचैः, संज्वलनप्रत्याख्यानावरणाप्रत्याख्यानानंतानुबंधिभिः शब्दरूपरसगंधस्पर्शैरिष्टानिष्ठापरिसंकलितैः संबंधो अनुबंधः प्रतिबंधः संयोगः सुगमः सुकृतः स्वनुष्ठितः सुनिवृत्तः सुप्राप्तः सुलब्धो द्रव्यज्ञावविशेषेण अर्हं ॐ ॥ ” यह मंत्र पढ़के फेर ऐसा कहे.

“ ॥ तदस्तु वां सिद्धप्रत्यक्षं केवलिप्रत्यक्षं चतुर्णिकायदेवप्रत्यक्षं विवाहप्रधानाग्निप्रत्यक्षं नागप्रत्यक्षं नरनारीप्रत्यक्षं नृप्रत्यक्षं जनप्रत्यक्षं मातृप्रत्यक्षं पितृप्रत्यक्षं मातृपक्षप्रत्यक्षं पितृपक्षप्रत्यक्षं ज्ञाति

गान, वादित्रवादन, जोजन तांबूल वस्त्र सामग्री सदैव करनेचहिये ॥ पीठे गुरु ॥

“॥ ॐ नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुज्यः ॥”

ऐसे कहके, प्रथम अक्षतपूर्ण हाथवाला होके वधूवरके आगे ऐसा कहे. ॥

“विदितं वां गोत्रं संबंधकरणेनैव ततःप्रकाश्यतां जनाग्रतः ”

जाना है तुमारा गोत्र, संबंध करनेसेही; तिस वास्ते प्रकाश करो, लोकोंके आगे. । तव प्रथम वरके पक्षीय, अपने गोत्र, अपनी प्रवर, ज्ञाति और अपने अन्वय-वंशको प्रकाश करे. । पीठे वरकी माताके पक्षीय, गोत्र, प्रवर, ज्ञाति, और वंशको प्रकाश करे. । पीठे कन्याके पक्षीय, अपने गोत्र, प्रवर ज्ञाति, वंशको प्रकाश करे. । फिर कन्याकी माताके पक्षीय, गोत्र, प्रवर, ज्ञाति, वंशको प्रकाश करे. । पीठे गुरु. ॥

“॥ ॐ अहं अमुकगोत्रीयः, इत्यप्रवरः, अमुक ज्ञातिः, अमुकान्वयः, अमुकप्रपौत्रः, अमुकपौत्रः अमुकपुत्रः, अमुकगोत्रीयः, इत्यप्रवर अमुकज्ञातीयः, अमुकान्वयः, अमुकप्रदौहित्रः, अमुकदौहित्रः, अमुकः सर्ववरगुणान्वितो, वरयिता, अमुकगोत्रीया, इत्यप्रवरा, अमुकज्ञातीया, अमुकान्वया, अमुकप्रपौत्री, अमुकपौत्री, अमुकपुत्री. अमुकगोत्रीया, इत्यप्रवरा, अमुक

ज्ञातीया, अमुकान्वया, अमुकप्रदौहित्री, अमुकदौहित्री अमुकावर्या तदेतयोर्वर्यावरयोर्वरवर्ययोर्नि विवाहसंबन्धोस्तु शांतिरस्तु, तुष्टिरस्तु, पुष्टिरस्तु, धृतिरस्तु, बुद्धिरस्तु, धनसंतानवृद्धिरस्तु, अर्हं ॐ ॥” ऐसें कहे ॥

पीठे गुरु, वरवधूके पाससें गंध, पुष्प, धूप, नैवेद्य करके अग्निकी पूजा करावे. । पीठे वधू लाजांजलिको अग्निके निक्षेप करे. । पीठे फिर तैसेही दक्षिण पासे वधू, और वामे पासे वर बैठे. । पीठे गुरु वेदमंत्र पढे

“ ॥ ॐ अर्हं अनादिविश्वमनादिरात्मा, अनादिकालः, अनादिकर्म, अनादिसंबन्धो, देहिनां, देहानुमतानुगतानां, क्रोधोद्वेगः, संज्वलनप्रत्याख्यानावरणप्रत्याख्यानानंतानुबंधिनिः शब्दरूपरसगंधस्पर्शैरिष्टानिष्ठापरिसंकलितैः संबन्धो अनुबंधः प्रतिबंधः संयोगः सुगमः सुकृतः स्वनुष्ठितः सुनिवृत्तः सुप्राप्तः सुलब्धो द्रव्यजावविशेषेण अर्हं ॐ ॥ ” यह मंत्र पढके फेर ऐसा कहे.

“ ॥ तदस्तु वां सिद्धप्रत्यक्षं केवलिप्रत्यक्षं चतुर्णिकायदेवप्रत्यक्षं विवाहप्रधानाग्निप्रत्यक्षं नागप्रत्यक्षं नरनारीप्रत्यक्षं नृप्रत्यक्षं जनप्रत्यक्षं मातृप्रत्यक्षं पितृप्रत्यक्षं मातृपक्षप्रत्यक्षं पितृपक्षप्रत्यक्षं ज्ञाति

स्वजनबंधुप्रत्यक्षं संबंधः सुकृतः सदनुष्ठितः सुप्रातः  
सुसंगतः तत्प्रदक्षिणीक्रियतां तेजोराशिर्विज्ञावसुः॥”

ऐसे कहके तैसेही ग्रथित अंचल वरवधू, अग्निकी प्रदक्षिणा करें. तैसे प्रदक्षिणाकरके तैसेही पूर्वरी तिसें बैठे. लाजांजलीकी तीनों प्रदक्षिणामें आगे वधू और पीठे वर हो. दक्षिण पासे वधूका आसन, औरवामे पासे वरका आसन. ॥ इति प्रथमलाजाकर्म॥

पीठे वरवधूके आसन ऊपर बैठे हुए, वेद मंत्र पढ़े.

“ ॥ ॐ अहं कर्मास्ति मोहनीयमस्ति दीर्घस्थि  
त्यस्ति निबिरुमस्ति दुःखमस्ति अष्टाविंशतिप्रकृ  
त्यस्ति क्रोधोस्ति मानोस्ति मायास्ति लोभोस्ति संज्व  
लनोस्ति प्रत्याख्यानावरणोस्ति अप्रत्याख्यानोस्ति  
अनंतानुबंध्यस्ति चतुश्चतुर्विधोस्ति हास्यमस्ति रति  
रस्ति अरतिरस्ति जयमस्ति जुगुप्सरस्ति शोकोस्ति  
पुंवेदोस्ति स्त्रीवेदोस्ति नपुंसकवेदोस्ति मिथ्यात्व  
मस्ति मिश्रमस्ति सम्यक्त्वमस्ति सप्तति कोटाकोटि  
सागरस्थित्यस्ति अहं ॐ ॥ ” यह वेदमंत्र पढ़के  
ऐसा कहे.

“ ॥ तदस्तु वां निकाचितनिबिरुवद्धमोहनीयक  
मौंदयकृतः स्नेहः सुकृतोस्तु सुनिष्ठितोस्तु सुसंबंधोस्तु  
आजवमदयोस्तु तत् प्रदक्षिणीक्रियतां विज्ञावसुः ॥”

फेर जी तैसेही अग्निकी प्रदक्षिणा करे ॥ इति  
द्वितीयलाजाकर्म ॥

चारोंही लाजामें प्रदक्षिणाके प्रारंभमें वधू, अग्निमें लाजामुष्टि प्रक्षेप करे. पीछे तिन दोनोंके तैसैही बैठे हुए, गुरु, ऐसा वेदमंत्र पढ़े.

“॥ ॐ अहं कर्मास्ति, वेदनीयमस्ति, सातमस्ति, असातमस्ति, सुवेद्यं सातं, दुर्वेद्यमसातं, सुवर्गणाश्र वणं सातं, दुर्वर्गणाश्रवणमसातं, शुजपुजलदर्शनं सातं, दुःपुजलदर्शनमसातं, शुजपद्मसाखादनं सातं, अशुजपद्मसाखादनमसातं, शुजगंधाघ्राणं सातं, अशुजगंधाघ्राणमसातं, शुजपुद्गलस्पर्शः सातं, अशु जपुद्गलस्पर्शोऽसातं, सर्वं सुखकृत् सातं, दुःखकृद सातं, अहं ॐ इस वेदमंत्रको पढ़के ऐसैं कहें

“ ॥ तदस्तु वां सातवेदनीयं माञ्जूदसातवेदनीयं तत् प्रदक्षिणीक्रियतां विज्ञावसुः ॥ ”

इति पुनः अग्निको प्रदक्षिणा करके वधूवर दोनों तैसैही बैठ जावे ॥ इति तृतीयलाजाकर्म ॥

पीछे गुरु ऐसा वेदमंत्र पढ़े.

“ ॥ ॐ अहं सहजोस्ति, स्वजावोस्ति, संचंधोस्ति, प्रतिवद्धोस्ति, मोहनीयमस्ति, वेदनीयमस्ति, नामास्ति, गोत्रमस्ति, आयुरस्ति, हेतुरस्ति, आश्रववद्धमस्ति, क्रि यावद्धमस्ति, कायवद्धमस्ति, सांसारिकसंबंधः अहं ॐ ॥

ऐसा वेदमंत्र पढ़के, कन्याके पिताके, चाचेके, नाशके वा कुलज्येष्ठके, हाथको तिलयवकुशदूर्वासं युक्त जलसैं पूरके, ऐसैं कहें.



“ ॥ अथ अमुकसंवत्सरे, अमुकायने, अमुकरुतौ, अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ, अमुकवारे, अमुकनक्षत्रे, अमुकयोगे, अमुककरणे, अमुकमुहूर्ते, पूर्व कर्मसंबंधानुवद्धवस्त्रगंधमाद्यालंकृतां सुवर्णरूप्यमणिभूषणभूषितां ददात्ययं प्रतिगृहीष्व ॥ ”

ऐसें कहके वधूवरके योजित हाथमें जलक्षेप करे । तब वर कहें. “प्रतिगृह्णामि ” तदनंतर गुरु कहें.

“ सुप्रतिगृहीतास्तु, शांतिरस्तु, पुष्टिरस्तु, रुद्धिरस्तु, वृद्धिरस्तु, धनसंतानवृद्धिरस्तु, ॥ ”

पीठे प्रथम तीन लाजामें कन्याके हाथ ऊपर थे अब कन्याके हाथको नीचे करे, और वरके हाथको ऊपर करे, पीठे वरवधूको आसनसें ऊठाकर वरको आगे करे, और वधूको पीठे करे. । पीठे लाजाकी मुष्टि अग्निमें प्रक्षेप करकेगुरु ऐसें कहें. “ प्रदक्षिणीक्रियतां विज्ञावसुः ” वर वधूको प्रदक्षिणा करते हुए, कन्याका पिता, यावत् कन्याका कुलज्येष्ठ, वरवधूके देनेयोग्य वस्त्र, आभरण, स्वर्ण, रूप्य, रत्न, ताम्र, कांश्य, भूमि, निष्क्रय, हाथी, घोडा, दासी, गौ, बैल, पट्यंक, तूलिका, उत्सीर्षक, दीप, शस्त्र, पाकके जाड़े, आदि सर्व वस्तुको वेदिमें ल्यावे. । और जी तिसके जाइ, संबंधी, मित्रादि, स्वसंपदाके अनुसारसें देने योग्य वस्तुयें वेदिमें ल्यावे. । पीठे प्रदक्षिणाके अंतमें वरवधू, तैसेंही आसन

ऊपर बैठें. नवरं इतना विशेष है कि, चतुर्थ लाजा के अनंतर वरका आसन दक्षिण पासे, और वधू, का आसन वामे पासे करणा. । पीठे गुरु, कुश दूर्वा अक्षत वास करके हस्त पूर्ण हुआ थाका, ऐसैं कहे.

“ ॥ शक्रादिदेवकोटिपरिवृतो जोग्यफलकर्मजोगाय संसारिजीवव्यवहारमार्गसंदर्शनाय, सुनंदासुमं गले पर्यणैपीत्, ज्ञातमज्ञातं वा तदनुष्ठानमनुष्ठितमस्तु ”

ऐसैं कहके वास, दूर्वा, अक्षत, कुशको वरवधूके मस्तक ऊपर क्षेप करे । पीठे गुरुके कहनेसैं वधूका पिता, जल, यव, तिलका तेल हाथमें लेके, ऐसैं कहे. सुदायंददामि, प्रतिग्रहाण तव वर कहे “ प्रतिग्रहामि प्रतिग्रहीतं परिग्रहीतं ” गुरु कहे “ सुग्रहीतमस्तु सुपरिग्रहीतमस्तु ” पुनः तैसैंह । वस्त्र, भूषण, हस्ति, अश्वादि दाय, देनेमें वधूके पिताका, और वरका यही वाक्य, और यही विधि है. । पीठे सर्व वस्तुके दीए हुए गुरु ऐसैं कहे.

“ ॥ वधूवरौवां, पूर्वकर्मभानुबंधेन, निविडेन, निकाचितवद्धेन, अनुपवर्त्तनीयेन, अपातनीयेन, अनुपायेन, अश्लथेन, अवश्यजोग्येन, विवाहः प्रतिबद्धो वचूव, तदस्त्वखंभितोऽक्षयोऽव्ययो, निरपायो, निर्व्याबाधः, सुखदोस्तु, शांतिरस्तु, पुष्टिरस्तु, रुद्धिरस्तु, वृद्धिरस्तु, धनसंतान वृद्धिरस्तु ॥ ”

ऐसा कहके तीर्थोदकोंकरके कुशाग्रसैं सिंचन

करे. । फेर गुरु तैसेंही वधूवरको उठाके मातृघरमें ले जावे, तहां ले जाके वधूवरको ऐसें कहे.

“ ॥ अनुष्ठितो वां, विवाहो, वत्सौ, सखेहौ सजो गौ, सायुषौ, सधर्मौ, समदुःखसुखौ, समशत्रुमित्रौ, समगुणदोषौ, समवाङ्मनःकायौ, समाचारौ, समगुणौ, जवतां ॥ ”

पीठे कन्याका पिता, करमोचनकेवास्ते गुरुप्रतें कहे. । तब गुरु ऐसा वेदमंत्र पढे.

“ ॥ ॐ अर्हं जीवत्वं कर्मणा वद्धः, ज्ञानावरणेन वद्धः, दर्शनावरणेन वद्धः, वेदनीयेन वद्धः, मोहनीयेन वद्धः, आयुषा वद्धः, नाम्ना वद्धः, गोत्रेण वद्धः, अंतरायेण वद्धः, प्रकृत्या वद्धः, स्थित्या वद्धः, रसेन वद्धः, प्रदेशेन वद्धः, तदस्तु ते मोक्षो गुणस्थानारो हक्रमेण अर्हं ॐ ॥ ”

इस वेदमंत्रको पढके फेर ऐसें कहे.

मुक्तयोः करयोरस्तु वां स्नेहसंवंधोऽखंडितः ॥ ”

ऐसें कहके करमोचन करे । कन्याका पिता करमोचनपर्वमें जामातृ (जमाइ) के मांगेप्रमाण, स्वसंपत्तिके अनुसार बहुत वस्तु देवे. । दानविधि, पूर्वमंत्रसेंही जानना. । पीठे मातृघरसें उठाके, फेर वेदिघरमें आवें पीठे गुरु, आसनऊपर बैठे दोनोंको ऐसें कहे

“ ॥ वृत्तम् । पूर्वं युगादिजगवान् विधिनैव येन,

वेश्वस्य कार्यकृतये किल पर्यणैषीत् ॥ नार्याद्यं  
द मुना विधिनास्तु युग्म,मेतत्सुकामपरिजोगफला  
मुबंधि ॥ १ ॥ ”

ऐसे कहके पूर्वोक्त विधिसे अंचलमोचन करके  
‘वत्सौलब्धविषयौ जवतां ’ ऐसे गुरुअनुज्ञात दोनो  
पती-स्त्रीजत्ता, विविध विलासिनीयोंके गणसे  
प्रेषित, शृंगारगृहमें प्रवेश करें. । तहां पूर्वस्थापित  
तदनकी कुलवृद्धानुसार पूजा करे । पीठे तहां  
वधूवरको समहीकालमें क्षीरान्नजोजन कराना.  
पीठे यथायुक्तिकरके शयन गृहमें जावे. । \*

पीठे तिसही आगमनरीतिकरके उत्सवसहि  
त अपने घरको जावे. । पीठे वरके मातापिता, वर  
को निरुंठनमंगलविधी स्वदेशकुलाचारकरके करे. ।  
कंकणबंधन, कंकणमोचन, द्यूतक्रीडा, वेणीग्रंथनादि,  
सर्व कर्म जी, तिस १ देशकुलाचारकरके करणे  
चाहिये. । विवाहसे पहिले वधूवर दोनोंके पक्षमें  
जोजन देना. । तदनंतर धूलिजक्त, जन्यजक्त, आदि  
देशकुलाचारसे करणे । पीठे सात दिनके अनं  
तर वरवधू विसर्जन करना, तिसका विधि यह है. ।  
सात दिनतक विविध जक्तिसे पूजित जमाइको,

\* इस कथनसे यो यही सिद्ध होता है कि यौवनप्राप्तोंकाही  
विवाह होना चाहिये क्योंकि उसहि समय कामक्रीडा करनेका  
विधि इस ग्रंथमें लिखा है

गोक्त रीतिसें अंचलग्रंथन करके अनेक वस्तुदान  
 एक तिसही आमंवरसें खगृहको पहुंचावे. । पीठे  
 १० रात्रिपर्यंत, वा मासपर्यंत, वा ठ मासपर्यंत, वा  
 वर्षपर्यंत स्वकुलसंपत्तिदेशाचारानुसार महोत्सव कर  
 १. सात रात्रिके अनंतर, वा मासअनंतर, कुला  
 ॥रानुसारकरके कन्याके पक्षमें पूर्वोक्त रीतिकरके  
 ॥तृविसर्जन करना.—गणपतिमदनादिविसर्जन विधि  
 लोकमें प्रसिद्ध है.—और वरपक्षमें कुलकर विसर्ज  
 ॥विधि लिखते हैं. । कुलकरस्थापनानंतर, नित्य कुल  
 ॥रकी पूजा करनी. । विसर्जनकालमें कुलकरोका  
 पूजन करके, गुरु पूर्ववत् “ॐ अमुककुलकराय”  
 इत्यादि संपूर्णमंत्र पढ़के “पुनरागमनाय स्वाहा”  
 ऐसें सर्वकुलकरोको विसर्जन करे. ॥ पीठे यह पढ़े.  
 “आज्ञाहीनं क्रियाहीनं मंत्रहीनं च यत्कृतं ॥  
 तत्सर्वं कृपया देव क्षमस्व परमेश्वर ॥ १ ॥”

इतिकुलकरविसर्जनविधिः ॥

पीठे मंडलीपूजा, गुरुपूजा, वासक्षेपादि पूर्ववत्. ।  
 साधूओंको वस्त्र पात्र देना. । ज्ञानपूजा करणी. ।  
 जैन ब्राह्मणोंको याचकोको अपर मागनेवालोंको  
 यथासंपत्तिसें दान करणा. ।

तथा देशकुलसमयांतरमें विवाहलग्नके प्राप्त हुए,  
 वरको श्वशुरके घरको प्राप्त हुए, पद (६) आचार  
 करते हैं. प्रथम अंगणमें आसन देना. । श्वशुर कहे

“विष्टरं प्रतिगृहाण ” तव वर कहे “उँ प्रतिगृह्णामि ” ऐसे कहके आसन ऊपर बैठे ॥ १ ॥ पीठे श्वशुर वरके पग प्रक्षालन करे ॥ २ ॥ पीठे दहि चंदन अक्षत दूर्वा कुश पुष्प श्वेतसरसों और जल करके श्वशुर जमाइको अर्घ देवे ॥ ३ ॥ पीठे आचमन देवे ॥ ४ ॥ पीठे गंधअक्षतसें तिलक करे ॥ ५ ॥ पीठे वरको मधुपर्क प्राशन करावे ॥ ६ ॥ पीठे गृहके अंदर बधूवरका परस्पर दृष्टिसंयोग और परस्पर दोनोंका नामग्रहण, शेषं पूर्ववत् ॥

इति चतुर्दशमः विवाह संस्कारः समाप्तः ॥

अथ पंचदशम व्रतारोप संस्कारः प्रारभते ।

इहां जैनमतमें गर्जा धानसें लेके विवाहपर्यंत चतुर्दश १४ संस्कारोंकरके संस्कृत जी पुरुष, व्रतारोपसंस्कारविना इस जन्ममें प्रशंसा पात्र नहीं होता है. और परलोकमें आर्यदेशादिजावपवित्रित मनुष्य जन्म स्वर्गमोक्षादिका नाजन नहीं होता है. इस वास्ते व्रतारोपही, मनुष्योंको परमसंस्कार है. यत उक्तमागमे ।

“ वंजणो खत्तिजं वावि, वेसो सुद्धो तहेवय ॥

पयई वादि धम्मेण, जुत्तो मुक्खस्स जायणं ॥ १ ॥ ”

अर्थः—ब्राह्मण, वा क्षत्रिय, वा वैश्य, वा शूद्र, धर्मसें युक्तहुआ, मोक्षका नाजन होता है. ॥ १ ॥

बहत्तर कलाकुशल जी, विवेकसहित जी होवे, तो जी वो नर कुशल नहीं हैं; जो, सर्वकला योंमें प्रधान जो धर्मकला तिसको नहीं जाणताहो. ॥ १ ॥ परमतमें जी कहा है । 'उपनीतोपि पूज्योपि कलावानपि जार्गव । न परत्रेह सौख्यानि प्राप्नोति च कदाचन ॥ १ ॥' इसवास्ते सर्वसंस्कार मे प्रधान व्रतसंस्कार कहते हैं. । तिसका विधि यह है.

पीठले विवाहपर्यंत संस्कार गृहस्थगुरु जैन ब्राह्मणने वा कुल्लकने कराने. परंतु व्रतारोपसंस्कार तो, निग्रंथ यतिनेही करावणा. प्रथम गुरुकी गवेषणा करणी.

गुरु कैसे होना ।

पांच महाव्रतयुक्त, ५, पांच प्रकारके आचार पालनेमें समर्थ, ५, पांच समिति, ५, और तीन गुप्ति सहित, ३, एवं ठत्तीस गुणोंवाला गुरु होता है । प्रतिरूप, तेजस्वी, युग प्रधान, आगमका जानकार, मधुर वाक्यवाला, गंजीर, बुद्धिमान्, उपदेश देनेमें तत्पर, ऐसा आचार्य होता है. । किसीका आलोचित दूषण अन्यआगे प्रकाशे नहीं, सोमप्रकृति वाला होवे, शिष्यादिका संग्रह करनेवाला होवे, अव्यादि अजिग्रहमें जिसकी मति होवे, किसीके दूषण न बोले; चपल न होवे, प्रशांतहृदयवाला होवे, ऐसे गुणोंयुक्त गुरु होता है. । कितनेही जिन वरेंद्र अजरामर पदका पंथ दिखाके मोक्षको प्राप्त

हुए हैं; परं संप्रति कालमें तो, जिनप्रवचन, आचार्य नेही धारण करा है. ॥

अब प्रकारांतरकरके गुरुके ठत्तीस गुण कहते हैं. । आचारविनय, श्रुत विनय, विक्षेपनाविनय, दोषका परिघात, एवं चार प्रकारके विनयकी प्रतिपत्ति कर नेवाले गुरु होवे. । अथवा सम्यक्त्व, ज्ञान, चारित्र्य, इनप्रत्येकके आठ १ जेद हैं; एवं १४, और तपके द्वादश १२ जेद हैं, ऐसे आचार्यके ठत्तीस गुण होते हैं. ।

अथवा आचारादि आठ ८, और दश प्रकारका स्थितकल्य १० द्वादश १२ तप और पडावश्यक ६ ये ठत्तीस गुण आचार्यके हैं. ।

अथवा संविज्ञ १, मध्यस्थ २, शांत ३, मृदु-को-मलस्वभाववाला ४, सरल ५, पंडित ६, सुसंतुष्ट ७, गीतार्थ ८, कृतयोगी ९, श्रोताके ज्ञावको जानने वाला १०, व्याख्यानादिलब्धिसंपन्न ११, उपदेशदे नेमें निपुण १२, आदेयवचन १३, मतिमान् १४, विज्ञानी १५, निरुपपाति १६, नैमित्तिक १७, शरीरका बलिष्ठ १८, उपकारी १९, धारणाशक्तिवाला २०, बहुत कुठ जिसने देखा २१, नैगमादि नयमतमे निपुण २२, प्रियवचनवाला २३, अच्छे मधुर गंजीर स्वरवाला २४, तप करणमें रक्त २५, सुंदर शरीर वाला २६, शुभ्र जली प्रतिज्ञावाला २७, वादियोंको



बहत्तर कलाकुशल जी, विवेकसहित जी होवे, तो जी वो नर कुशल नहीं हैं; जो, सर्वकला योंमें प्रधान जो धर्मकला तिसको नहीं जाणताहो. ॥ १ ॥ परमतमें जी कहा है । 'उपनीतोपि पूज्योपि कलावानपि नार्गव । न परत्रेह सौख्यानि प्राप्नोति च कदाचन ॥ १ ॥' इसवास्ते सर्वसंस्कार मे प्रधान व्रतसंस्कार कहते हैं. । तिसका विधि यह है.

पीठले विवाहपर्यंत संस्कार गृहस्थगुरु जैन ब्राह्मणने वा कुल्लकने कराने. परंतु व्रतारोपसंस्कार तो, निग्रंथ यतिनेही करावणा. प्रथम गुरुकी गवेपणा करणी.

गुरु कैसे होना !

पांच महाव्रतयुक्त, ५, पांच प्रकारके आचार पालनेमें समर्थ, ५, पांच समिति, ५, और तीन गुति सहित, ३, एवं ठत्तीस गुणोंवाला गुरु होता है. । प्रतिरूप, तेजस्वी, युग प्रधान, आगमका जानकार, मधुर वाक्यवाला, गंजीर, बुद्धिमान्, उपदेश देनेमें तत्पर, ऐसा आचार्य होता है. । किसीका आलोचित दूषण अन्यआगे प्रकाशे नहीं, सोमप्रकृति वाला होवे, शिष्यादिका संग्रह करनेवाला होवे, द्रव्यादि अन्नियहमें जिसकी मति होवे, किसीके दूषण न बोले; चपल न होवे, प्रशांतहृदयवाला होवे, ऐसे गुणोंयुक्त गुरु होता है. । कितनेही जिन वरेंद्र अजरामर पदका पंथ दिखाके मोक्षको प्राप्त

हुए हैं; परं संप्रति कालमें तो, जिनप्रवचन, आचार्य नेही धारण करा है. ॥

अथ प्रकारांतरकरके गुरुके ठत्तीस गुण कहते हैं. ।  
आचारविनय, श्रुत विनय, विक्षेपनाविनय, दोषका परिघात, एवं चार प्रकारके विनयकी प्रतिपत्ति कर नेवाले गुरु होवे. । अथवा सम्यक्त्व, ज्ञान, चारित्र्य, इनप्रत्येकके आठ ४ जेद हैं; एवं १४, और तपके द्वादश १२ जेद हैं, ऐसैं आचार्यके ठत्तीस गुण होते हैं. ।

अथवा आचारादि आठ ८, और दश प्रकारका स्थितकव्य १० द्वादश १२ तप और पडावश्यक ६ ये ठत्तीस गुण आचार्यके हैं ।

अथवा संविज्ञ १, मध्यस्थ २, शांत ३, मृदु-को-मलस्वभाववाला ४, सरल ५, पंडित ६, सुसंतुष्ट ७, गीतार्थ ८, कृतयोगी ९, श्रोताके ज्ञावको जानने वाला १०, व्याख्यानादिलब्धिसंपन्न ११, उपदेशदे नेमें निपुण १२, आदेयवचन १३, मतिमान् १४, विज्ञानी १५, निरुपपाति १६, नैमित्तिक १७, शरीरका बलिष्ठ १८, उपकारी १९, धारणाशक्तिवाला २०, बहुत कुठ जिसने देखा २१, नैगमादि नयमतमें निपुण २२, प्रियवचनवाला २३, अच्छे मधुर गंजीर स्वरवाला २४, तप करणमें रक्त २५, सुंदर शरीर वाला २६, शुच जली प्रतिज्ञावाला २७, वादियोंको

जीतनेवाला २७, परिषदादिको आनंदकारक २८, शुचि-पवित्र ३०, गंजीर ३१, अनुवर्त्ती ३२, अंगीकार करेका पालनेवाला ३३, स्थिरचित्तवाला ३४, धीर ३५, उचितका जाननेवाला ३६, ये पूर्वोक्त ३६, गुण आचार्यके सूत्रमें कहे हैं. ॥

ऐसें पितापरंपरायसें माने गुरुके प्राप्त हुए, वा, तिसके अज्ञावमें पूर्वोक्त गुणयुक्त अन्यगच्छीय गुरुके प्राप्त हुए, गृहस्थको व्रतारोपणविधि योग्य है, सो विधि यह है. ॥ चतुर्दश संस्कारोंकरके संस्कृत ऐसा गृहस्थी गृहस्थधर्मको अंगीकार करने योग्य होता है. ।

कहा हे की.

अक्षुब्ध १, रूपवान् २, प्रकृतिसौम्य ३, लोकप्रिय ४, अक्रूरचित्त ५, जीरु ६, अशठ ७, सुदाक्षिण्य ८, लज्जालु ९, दयालु १० मध्यस्थ सोमदृष्टि ११, गुणरागी १२, सत्कर्त्ता १३, सुपक्षयुक्त १४, सुदीर्घदर्शी १५, विशेषज्ञ १६, वृद्धानुग १७, विनीत १८, कृतज्ञ १९, परहितार्थकारी २०, और लब्धलक्ष २१ इकीस गुणोंवाला श्रावक धर्मरत्नके योग्य होता है; अर्थात् इकीस गुण जिस जीवमें होवे, अथवा प्रायः नवीन उपार्जन करे, तिस जीवमें उत्कृष्ट योग्यता माननी. और थोड़ेसे थोड़े इकीस गुणोंमेंसे चाहे कोइ दश गुण जीवमें होवे, तिसको जघन्य योग्य

तावाला जानना, ११-१२-१३-१४-१५-१६-१७-१८-१९-२० शेष गुणवालेको मध्यमयोग्यतावाला जानना. इन इकीस गुणोंका विस्तारसहित वर्णन अज्ञानतिमिरजास्करके द्वितीय खंभके ४६ पृष्ठसे लेके ८३ पृष्ठपर्यंतहे उहांसे देख लेना.

योगशास्त्रमे श्रीहेचंद्राचार्यनेत्री एसाहि कहाहै की.

न्यायसे धन उपार्जन करनेवाला, शिष्टाचारकी प्रशंसा करनेवाला, जिनका कुलशील अपने समान होवे, ऐसे अन्य गोत्रवालेके साथ विवाह किया है जिसने, पापसे करनेवाला, प्रसिद्ध देशाचारको करनेवाला, अर्थात् देशाचारका उल्लंघन नहीं करनेवाला, किसी जगे जी अवर्णवाद नहीं बोलनेवाला, राजा दिकोंमें विशेषसे अवर्णवाद वर्जनेवाला; । अतिप्र कट, वा अति गुप्त स्थानमें नहीं रहनेवाला, अष्टा पाकोसी होवे तिस घरमें रहनेवाला, जिस मकानके अनेक आनेजानेके रस्ते होवे तिस घरको वर्जने वाला; । सदाचारोंसे संग करनेवाला, मातापिताकी पूजा च्छक्ति करनेवाला, उपद्रवसंयुक्त स्थानको त्यागनेवाला, जगत्मे जो कर्म निंदनीक होवे तिसमें प्रवृत्त नहीं होनेवाला; । अपनी आमदनीअनुसार खर्च करनेवाला, अपने धनके अनुसार वेप रखने वाला; बुद्धिके आठ गुणोंसे संयुक्त निरंतर धर्मों पदेश श्रवण करनेवाला; अजीर्णमें भोजनका त्यागी

वखतसर साम्यतासैं जोजन करनेवाला, एक दूसरेकी हानी न होवे इस रीतिसैं धर्म अर्थ कामको सेवने वाला; । यथायोग्य अतिथि साधु और दीनकी प्रति पत्ति करनेवाला, सदा आग्रहरहित, गुणोंका पक्ष पाती; । देशकालविरुद्धचर्या त्यागनेवाला, । कोइ जी कार्य करनेमें अपना बलाबल जाननेवाला, जे पांच महाव्रतमें स्थित होवे और ज्ञानवृद्ध होवे तिनकी पूजा जक्ति करनेवाला, पोषणयोग्यका पोषण करने वाला, । दीर्घदर्शी, विशेषज्ञ, कृतज्ञ, लोकबल्लभ, लज्जालु, दयालु, सौम्य, परोपकार करणमें समर्थ, काम, क्रोध, लोभ, मान, मद, हर्ष, इन षट् ६ अंत रंग वैरियोंके त्याग करनेमें तत्पर, पांच इंद्रियोंके समूहको वश करनेवाला, ऐसा पुरुष गृहस्थधर्मके वास्ते कटपता है ॥ १० ॥

ऐसे पुरुषको व्रतारोप करना चाहिये । प्रायःकरके व्रतारोपमें गुरु शिष्यके वचन प्राकृत जाषामें होते हैं, क्यों कि गर्जाधानादि विवाहपर्यंत संस्कारोंमें प्रायः करके गुरुकेही वचन हैं, शिष्यके नहीं और गुरु प्रायः शास्त्रविद् होते हैं, इसवास्ते संस्कृतही बोलते हैं. । इहां व्रतारोपमें बाल, स्त्री, मूर्ख शिष्यों का क्षमाश्रमणदानपूर्वक वचनाधिकार है, तिस वास्ते तिनको संस्कृत उच्चार असामर्थ्य होनेसैं प्राकृत वाक्य है. तिसकी साहचर्यतासैं तिसके

प्रबोधवास्ते, गुरुके वचन जी, प्राकृतही है. ॥ यत  
उक्तमागमे ॥

“ ॥ मुत्तूण दिष्ठिवायं कालियउकादियंगसिद्धंतं ॥

श्रीबालवायणवृण्पाश्यमुश्यं जिणवरेहिं ॥ १ ॥ ”

अर्थः—दृष्टिवादको वर्जके कालिक उत्कादिक  
अंगसिद्धांतको श्रीबालकोंके वाचनार्थ जिनवरोने  
प्राकृत कथन करे है. ॥ यथाच ॥

बालस्त्रीवृद्धमूर्खाणां नृणां चारित्रकांक्षिणाम् ॥

अनुग्रहाय तत्त्वज्ञैः सिद्धांतः प्राकृतः कृतः ॥ १ ॥

और दृष्टिवाद वारमा अंग, परिकर्म १ सूत्र २  
पूर्वानुयोग ३, पूर्वगत ४, चूलिकारूप ५ पंचविध  
संस्कृतमेंही होता है, सो बालस्त्रीमूर्खको पठनीय  
नहीं है. संसारपारगामी तत्त्वउपन्यासके वेत्ता गीता  
र्थोंकोही पठनीय है. शेष एकादशांग कालिक उत्का  
दिकादिशास्त्र योगवाहि साधु साध्वी और संय  
मी बालकोंके पढ़ने योग्य है. इसवास्तेही अरिहंत  
जगवंतोंने एकादशांगादि शास्त्र प्राकृतमें करे है.  
तिसवास्ते व्रतारोपमें जी, गृहस्थ बाल स्त्री मूर्ख  
जनोके उपकारार्थ और, तैसैं यतियोंकेजी, वचन,  
प्राकृतमें कहे है ॥

अथ मृदु, ध्रुव, चर, क्षिप्र नक्षत्रोंमें प्रथम  
जिज्ञा, तप, नंदी, आलोचनादि कार्य करणे शुभ  
है. और मंगल, शनि, विना सर्व वारोंमें. । वर्ष,

मास, दिन, नक्षत्र, लग्न शुद्धिके हुए, विवाहदीक्षा प्रतिष्ठावत्, शुभ लग्नमें गुरु तिसके घरमें शांतिक पौष्टिक करके, फेर देवघरमें, शुभ आश्रममें, अन्य त्र, वा, यथाकल्पित समवसरणको स्थापन करे. । पीठे स्नान करके स्वघरमें महोत्सवसहित आये हुए श्रावकको पूर्वाभिमुख गुरु, अपने वामे पासें स्थापके ऐसें कहे—कैसे श्रावकको—सकद् श्वेत वस्त्र और श्वेत उत्तरासंग धारण किया है जिसने, तथा मुखवस्त्रिका हाथमें धारण करी है जिसने, तथा जिसकी चोटी बांधी हुई है, चंदनका मस्तकमें तिलक करा है जिसने, स्वर्णानुसार जिनोपवीत वा उत्तरीय, वा उत्तरासंग धारण किया है जिसने ऐसे श्रावकको—क्या कहे सो कहते हैं ।

“सम्मत्तंमि उलळे, थइयाइं नरयतिरियदाराइं ॥  
 दिवाणि माणुसाणि अ, मुक्कसुहाइं सहीणाइं ॥ १ ॥”  
 अर्थः—सम्यक्त्वके लाभ हुए, नरकतिर्यचगतिके द्वार ढांके हैं, और देवता मनुष्य मोक्षके सुख स्वाधीन हैं । पीठे गुरुकी आज्ञासें श्राद्धजन, नाखि केर अक्षत सुपारीसें पूर्ण हस्त करके परमेष्ठिमंत्र पढ़ता हुआ समवसरणको तीन प्रदक्षिणा करे. । पीठे गुरुके पास आयकर, गुरु श्राद्ध दोनोही श्र्या पथिकीपक्कमे. । पीठे आसन उपर बैठे गुरुके आगे, श्राद्धजन ऐसें कहे ॥

“इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए  
निसीहिआए मत्तएण वंदामि ॥ जगवन् इच्छाका  
रेण तुप्पे अहं सम्मत्ताइतिगारोवणिअंनंदिकहाव  
णियं वासरकेवं करेह ॥”

पीठे गुरु, बासांको, सूरिमंत्रसें, वा, गणिविद्या  
अर्थात् वर्द्धमान विद्यासें, अजिमंत्रके, परमेष्ठि और  
कामधेनु दोनों मुद्राकरके, पूर्वाजिमुख खना होके,  
वामे पासे रहे श्रावकके शिरमें निक्षेप करे. । तिस  
के मस्तकके उपर हाथ रखके, गणधर विद्यासें रक्षा  
करे. गुरु आसनउपर बैठ जावे, और श्राद्ध पूर्व  
वत् समवसरणको प्रदक्षिणा करके, गुरु आगे क्षमा  
श्रमण देके कहे.

“॥ इच्छाकारेण तुप्पे अहं सम्मत्ताइतिगारोव  
णिअं चेइआइं वंदावहे ॥”

पीठे गुरु और श्रावक दोनों, चार वर्द्धमानस्तु  
तियों करके चैत्यवंदन करें. । जो ठदसें वर्द्धमान होवे,  
और चरम जिनकी प्रथम स्तुतिवाली होवे,  
तिनको वर्द्धमानस्तुति कहते हे । पीठे चारस्तुतिके  
अंतमें “श्रीशांतिदेवाराधनार्थं करेमि कासग्गं वंद  
णवत्तियाण पूअणवत्तियाण सकारवण सण जावअ  
प्पाणं वोसिरामि” सत्ताइस उद्वासप्रमाण अर्थात्  
'सागरवरगंजीरा' तक चतुर्विंशतिस्तव चिंतवन  
करे. । पीठे 'नमो अरिहंताणं' कहके पारे. । पार



केहे 'नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुज्यः' यह कहके स्तुति पढे । सोलिखतेहैं ।

“ श्रीमते शांतिनाथाय, नमः शांतिविधायिने ॥  
त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटान्यर्चितांघ्रये ॥१॥” अथवा  
“ शांतिः शांतिकरः, श्रीमान् शांतिं दिशतु मे गुरुः॥  
शांतिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥१॥” पीठे

“ ॥ श्रुतदेवताराधनार्थं करेमि काउसगं अन्न  
उससिएणंयावत्अप्पाणं वोसिरामि ॥ ”

कायोत्सर्गमें एक नवकार चिंतन करे. पीठे 'नमो  
अरिहंताणं' कहके पारे, पारके 'नमोर्हत् कहके  
स्तुति ॥ यथा ॥

‘ ॥ सुअदेवया जगवई, नाणावरणीयकम्मसंघायं ॥,  
तेसिं खवउ सययं, जेसिं सुयसारेजत्ती ॥ १ ॥ ” अथवा

“ श्वसितसुरजिगंधालब्धजृंगी कुरंगं, मुखशशि  
नमजस्सं विज्रति या विज्रर्ति ॥ विकचकमलमुच्चैः  
सास्त्वर्चित्यप्रजावा, सकलसुखविधात्री प्राणजाजां  
श्रुतांगी ॥ १ ॥ ”

“ क्षेत्रदेवताराधनार्थं करेमि काउसगं अन्न  
उससिएणंयावत्आप्पाणं वोसिरामि ॥ ”

कायोत्सर्गमें एक नमस्कार चिंतन करे, पीठे  
'नमो अरिहंताणं' कहके पारे, पारके 'नमोर्ह  
कहके थूई पढे ॥

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुजिः साध्यते क्रिया ॥  
सा क्षेत्रदेवता नित्यं, जूयान्नः सुखदायिनी ॥ १ ॥

“ ॥ जुवनदेवताराधनार्थं करेमि काउसगं अन्न  
छ ॥ उससिएणं—यावत्—अप्पाणं वोसिरामि ॥ ”

कायोत्सर्गमें एक नमस्कार चिंतन करे, पीठे  
‘नमोअरिहताणं’ कहके पारे, पारके ‘ नमोर्हत् कह  
के स्तुति पढे ॥

“ज्ञानादिगुणयुक्तानां, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानां ॥  
विदधातु जुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥१॥”

“ शासनदेवताराधनार्थं करेमि काउसगं अन्न  
छ ॥ ” कायोत्सर्गमें एक नमस्कार चिंतन करे, पीठे  
‘नमोअरिहंताणं’ कहके पारे, पारके ‘ नमोर्हत्सि  
झा ॥ ’ कहके स्तुति पढे

“ या पाति शासने जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी ॥  
साजिप्रेतसमृद्धयर्थं, जूयाच्छासनदेवता ॥ १ ॥ ”

“ समस्तवैयावृत्यकराराधनार्थं करेमि काउसगं  
अन्नछ ॥ ” कायोत्सर्गमें एक नमस्कार चिंतन करे,  
पीठे ‘ नमो अरिहंताणं ’ कहके पारे, पारके ‘ नमो  
र्हत्सिझा ’ कहके स्तुति पढे.

“ ये ये जिनवचनरता वैयावृत्योद्यताश्च ये नित्यम् ॥  
ते सर्वे शांतिकरा भवंतु सर्वाण्युपहाद्याः ॥ १ ॥ ”

‘ नमो अरिहनाणं ’ कहके बैठके “ नमुश्रुणं ॥

जावंतिचेष्ट्यां ” और “ अर्हणादिस्तोत्र ” पढ़े.  
सो लिखते हे.

अरिहाण नमो पूअं, अरहंताणं रहस्स रहिआणं ॥  
पयओ परमिठ्ठीणं, अरुहंताणं धुअरयाणं ॥ १ ॥  
निदद्ध अठ्ठकम्मिधणाण, वरणाणदंसणधराणं ॥  
मुत्ताण नमो सिद्धाणं, परमपरमिठ्ठिन्नुयाणं ॥ २ ॥  
आयारधराण नमो, पंचविहायारसुठ्ठियाणं च ॥  
नाणीणायरियाणं, आयारुवएसयाण सया ॥ ३ ॥  
वारसविहं अपूव्वं, दिंताण सुअं नमो सुअहराणं ॥  
सययमुवज्जायाणं, सज्जायज्जाणजुत्ताणं ॥ ४ ॥  
सव्वेसिं साहूणं, नमो तिगुत्ताण सव्वलोएवि ॥  
तवनियमनाणदंसण, जुत्ताणं वंजयारीणं ॥ ५ ॥  
एसो परमिठ्ठीणं पंचन्हवि जावओ नमुक्कारो ॥  
सव्वस्स कीरमाणो, पावस्स पणासणो होइ ॥ ६ ॥  
जुवणेवि मंगलाणं, मणुयासुरअमरखयरमहियाणं ॥  
सव्वेसिमिमो पढमो, होइ महामंगलं पढमं ॥ ७ ॥  
चत्तारि मंगलं मे, हुंतु अरहा तहेव सिद्धा य ॥  
साहू य सव्वकालं, धम्मो य तिलोयमंगल्लो ॥ ८ ॥  
चत्तारि चैव ससुरा, सुरस्स लोगस्स उत्तमा हुंति ॥  
अरिहंत सिद्ध साहू, धम्मो जिणदेसियमुयारो ॥ ९ ॥  
चत्तारिवि अरिहंते, सिद्धे साहू तहेव धम्मं च ॥  
संसारघोररक्कस, जएण सरणं पवज्जामि ॥ १० ॥  
अहअरहओ जगवओ, महइ महा वज्जमाणसामिस्स

पण्यसुरेसरसेहर, वियलिकुसुमुच्चयकमस्स ॥ ११ ॥  
 जस्स वरधम्मचक्रं, दिणयरविंवव चासुरच्छायं ॥  
 तेएण पज्जलंतं, गच्छइ पुरओ जिणंदस्स ॥ १२ ॥  
 आयासं पायालं, सयलं महिमंरुलं पयासंतं ॥  
 मिच्छन्तमोहतिमिरं, हरेइ तिण्हंपि लोयाणं ॥ १३ ॥  
 सयलंमिवि जियलोए, चितियमित्तो करेइ सत्ताणं ॥  
 ररुक्कं ररुक्कसमाइणि, पिसायगइज्जूअजरुक्काणं ॥ १४ ॥  
 लहइ विवाए वाए, वव्हारे जावओ सरंतो अ ॥  
 जूए रणे अ रायं, गणे अ विजयं विसुद्धप्पा ॥ १५ ॥  
 पच्चूसपओसेसुं, सययं जव्वो जणो सुहज्जाणो ॥  
 एअं जाएमाणो, मुक्कं पइ साहगो होइ ॥ १६ ॥  
 वेअालरुहदाणव, नरिंदकोहंनिरेवईणं च ॥  
 सव्वेसिं सत्ताणं, पुरिसो अपराजिओ होइ ॥ १७ ॥  
 विज्जुव पज्जलंती, सव्वेसुवि अरुकरेसु मत्ताओ ॥  
 पंचनमुक्कारपए, इक्किक्के उवरिमा जाव ॥ १८ ॥  
 ससिधवलसलिलनिम्मल,आयरसहं च वन्नियं विंडुं ॥  
 जोयणसहप्पमाणं, जालासयसहस्सदिप्पंतं ॥ १९ ॥  
 सोलससु अरुकरेसु, इक्किक्क अरुकरं जगज्जोअं ॥  
 जवसयसहस्समहणो, जंमि छिओ पंच नवकारो ॥ २० ॥  
 जो गुणइहु इक्कमणो, जविओ जावेण पंच नवकारं ॥  
 सो गवइ सिवलोयं, उज्जोअंतो दसदिसाओ ॥ २१ ॥  
 तवनियमसंजमरहो, पंचनमोक्कारसारहिनिउत्तो ॥  
 नाणतुरंगमजुत्तो, नेइ फुडं परमनिवाणं ॥ २२ ॥

सुरूप्पा सुरूमणा, पंचसु समिईसु संजय तिगुत्तो ॥  
 जे तम्मि रहे लग्गा, सिग्घं गहंति सिवलोअं ॥२३॥  
 थंजेइ जलं जलणं, चिंतियमित्तोवि पंच नवकारो ॥  
 अरिमारिचोरराजल, घोरुवसग्गं पणासेइ ॥ २४ ॥  
 अठेवय अठसयं, अठसहस्सं च अठकोमीओ ॥  
 रकंतु मेसररीरं, देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥ २५ ॥  
 नमो अरहंताणं, तिलोयपुज्जो अ संथुओ जयवं ॥  
 अमरनररायमहिओ, अणाइनिहणो सिवं दिसज्ज ॥२६॥  
 निष्ठा विअ अठ कम्मो, सिवसुहज्जुओ निरंजणो सिद्धो  
 अमर नरराय महिओ, अणाइ निहणो सिवं दिसज्ज ॥२७॥  
 सबे पओसमह्वर, आहिअहिअया पणासमुवयंति ॥  
 दुगुणीकयधणुसऊं, सोजपि महाधणुसहस्सं ॥ २८ ॥  
 इय तिहुअणप्पमाणं, सोलसपत्तं जलंतदित्तसरं ॥  
 अठारअरूवलयं, पंचनमुक्कारचक्कमिणं ॥ २९ ॥  
 सयलुज्जोइअजुवणं, निहाविअसेससत्तुसंघायं ॥  
 नासिअमिहत्ततमं, विअलियमोहं गयतमोहं ॥ ३०॥  
 एयस्स य मज्जुओ, सम्मदिष्ठीवि सुरूचारिन्ती ॥  
 नाणी पवयणजत्तो, गुरुजणसुस्सूसणापरमो ॥ ३१ ॥  
 जो पंच नमुक्कारं, परमो पुरिसो पराइ जत्तीए ॥  
 परियत्तेइ पइदिणं, पयओ सुरूप्पओगप्पा ॥ ३२ ॥  
 अठेवय अठसया, अठसहस्सं च अठलरकं च ॥  
 अठेवय कोडीओ, सो तइयजवे लहइ सिद्धिं ॥३३॥  
 एसो परमो मंतो, परमरहस्सं परंपरं तत्तं ॥

नाणं परमं ऐश्र्यं, सुखं ज्ञाणं परं ज्ञेयं ॥ ३४ ॥

एवं कवयमज्ञेयं, खाद्यमच्छं पराजुवणरक्ता ॥

जोईसुन्नं विंदु, नाथो तारालवो मत्ता ॥ ३५ ॥

सोलसपरमखरवीश्रविंदुगवो जगुत्तमो जोओ ॥

सुअवारसंगसायर, महत्तपुवत्तपरमओ ॥ ३६ ॥

नासेइ.चोरसावय, विसहरजलजलणवंधणसयाइं ॥

चिंतिज्जंतो रक्खस, रणरायजयाइं जावेण ॥ ३७ ॥

॥ इति अरिहणादिस्तोत्रम् ॥

इस अरिहणादि स्तोत्रको पढके “जय वीयराय जगगुरु” इत्यादि गाथा पढे. पीठे आचार्य उपाध्याय गुरु साधुओंको वंदना करे. । यह शक्रस्तव विधि, गुरु और श्रावक दोनोंही करे । चैत्यवंदनके अनंतर. श्राद्ध, दामाश्रमणदानपूर्वक कहे

“ ॥ जगवन् सम्यक्त्वसामायिकश्रुतसामायिकदेशविरतिसामायिकआरोवणिश्रं नंदिकहावणिश्रं काउसगं करेमि ॥ ”

गुरु “कहे करेह” तव श्रावक “सम्मत्ताइतिगारोवणिश्रं करेमि काउसगं अनत्त” इत्यादि कहके सत्ताइस उद्वास प्रमाण अर्थात् ‘सागरवरगंजीरा लग कायोत्सर्ग करे । पीठे नमो अरिहंताणं कहके पारके चतुर्विंशतिस्तव अर्थात् लोगस्स संपूर्ण पढे । पीठे मुखवल्लीका प्रतिलेखनपूर्वक श्रावक द्वादशावर्त्त वंदन करे, फिर दामाश्रमण देके कहे “जग

वन् सम्मत्ताइतिगं आरोवेह ” गुरु कहे “आरो वेमि ” पीठे श्रावक गुरुके आगे खमा होके, अंजलि करके, मुखवस्त्रिकासें मुखाच्छादन करके, तीनवार परमेष्ठिमंत्र पढे । पीठे सम्यक्त्वदंरुक पढे. सयथा ॥

“ ॥ अहणं जंते तुह्माणं समीवे मिहत्ताओ पडी क्कमामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि । तंजहा दवओ खित्तओ कालओ जावओ । दवओणं मिहत्तकारणाइं पच्चक्खामि सम्मत्तकारणाइं उवसंपज्जामि नो मे कप्पइ अद्यप्पज्जिइ अन्नउट्ठिए वा अन्नउट्ठियदेवयाणि वा अन्नउट्ठियपरिग्गहियाणि अरिहंतचेइ आणि वंदित्तए वा नमंसित्तए वा पुविं अणालत्तेणं आलवित्तए वा संलवित्तए वा तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दाउं वा अणुप्पयाउं वा । खित्तओणं इहेव वा अन्नउ वा । कालओणं जावज्जीवाए । जावओणं जाव गहेणं न गहिज्जामि जाव बलेणं न ठलिज्जामि जाव सन्निवाएणं नाजिजविस्सामि जाव अन्नेण वा केणइ परिणामवसेण परिणामो मे न परिवडइ ताव मे एअं सम्मदंसणं अन्नउ रायाज्जिओगेणं वलाज्जिओगेणं गणाज्जिओगेणं देवयाज्जिओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतरएणं वोसिरामि ॥ ”

ऐसें तीनवार दंडक पाठ कहना ॥ अन्ये तु दंड कमिठमुच्चारयंति यथा ॥

“ ॥ अहणं जंते तुह्याणं समीवे मिठत्ताओ पन्नि  
 क्कमामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि नो मे कप्पइ अज्ज  
 प्पन्निइ अन्नउट्ठिए वा अन्नउट्ठियदेवयाणि वा अन्न  
 उट्ठियपरिग्ग हियाणि चेइआणि वंदित्तए वा नमं  
 सित्तए वा पुर्विं अणालत्तेणं आलवित्तए वा संल  
 वित्तए वा तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा  
 साइमं वा दाजं वा अणुप्पयाजं वा अन्नठ रायाजि  
 ओगेणं गणाजिओगेणं वलाजिओगेणं देवयाजि  
 ओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं तं चउव्विहं ।  
 तंजहा । दवओखित्तओ कालओ जावओ । दवओ  
 णं दंसणदवाइं अंगीकयाइं । खित्तओणं उट्ठलोए  
 वा अहोलोए वा तिरिअलोए वा । कालओणं जाव  
 ज्जीवाए । जावओणं जाव गहेणं न गहिज्जामि  
 जाव ठलेणं न ठलिज्जामि जाव सन्निवाएणं नाजि  
 जविस्सामि अन्नेण वा केणइ परिणामवसेण परि  
 णामो मे न परिवरुइ ताव मे एसा दंसणपन्निवत्ती ॥

इति गुरुविशेषेण द्वितीयो दंरुकः ॥ प्रथम दंरु  
 क दोनोमेसैं कोइ एक दंरुक तीन वार उच्चारण  
 करे. पीठे गाथा ॥

“ इअ मिठत्ताओ विरमिअ सम्मं उवगम्म जण  
 इ गुरुपुरओ ॥ अरिहंतो निस्संगों, मम देवो दक्ख  
 णा साहू ॥ १ ॥ ”

गुरु तीन वार यह गाथा पढके आरुके मस्तको



परि वासक्षेप करे. । पीठे गुरु, आसन ऊपर बैठके गंध अक्षत वासांको सूरिमंत्रसे, वा गणिविद्यासे मंत्रे. । पीठे गंधाक्षत वासांको हाथमें लेके जिन चरणोंको स्पर्श करावे. । पीठे साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविकाओंको देवे. ते साधुआदि, मुठ्ठीमें लेवे. । पीठे श्राद्ध गुरुके आगे क्षमाश्रमण देके कहे ॥ “ जयवं तुप्ते अहं सम्मत्ताश्यतीशं आरोवेह । ” गुरुकहे “ आरोवेमि ” फिर श्रावक क्षमाक्षमण देके कहे “ संदिसह किं जणामि ” गुरु कहे “ वंदितु पवेयह ” फिर श्रावक क्षमाश्रमण देके कहे “ जयवं तुज्जेहिं अहं सामाश्यतिशमारोविशं ” गुरु कहे “ आरोवियं २ खमासमणेणं हवेणं सुत्तेणं अवेणं तडुजणं गुरुगुणेहिं वड्ढाहि निवारगपारगो होहि ” श्रावक कहे “ इवामो अणुसठिं ” पुनः श्रावक क्षमाश्रमण देके कहे “ तुह्माणं पवेश्यं संदिसह साहूणं पएवेमि ” गुरु कहे “ पवेयह ” पीठे श्रावक परमेष्ठिमंत्र पढता हुआ, समयसरणको प्रदक्षिणा करे. । और संघ पूर्वे दिये हुए वासांको, तिसके मस्तकोपरि क्षेपण करे. । गुरु आसनऊपर बैठे, वहांसे लेके वासक्षेपपर्यंत क्रिया, तीन बार इसहि रीतिसें करना. । फिर श्रावक क्षमाश्रमण देके कहे “ तुह्माणं पवेश्यं ” फिर क्षमाश्रमण देके कहे “ साहूणं पवेश्यं संदिसह काजसगं करेमि ” गुरु कहे

“ करेह ” पीठे श्रावक-सम्मत्ताइतिगस्सथिरीकर  
 ण्हं करेमि काउसग्गं अन्नञ्च०-सागरवरगंजीरातक  
 कायोत्सर्ग करे. पारके संपूर्ण लोगस्स कहे. । पीठे  
 चारशुश्वर्जित शक्रस्तवसें चेत्यवंदन करे. । पीठे  
 श्रावक, गुरुको तीन प्रदक्षिणा देवे. पीठे आसन  
 ऊपर बैठा हुआ गुरु, श्रावकको आगे बिठाके निय  
 म देवे. ॥ नियमयुक्तिर्यथा ॥

गुलर, प्लक्षण, काकोडुंबरि, वट और पिप्पल,  
 ये पांच जातिके फल ५. मांस, मदिरा, माखण  
 और मधु, ये चार विकृति ४-एवं ए-अज्ञात फल  
 १०, अज्ञात पुष्प ११, हिम ( वरफ ) १२, विष १३,  
 करहे ( ओले-गडे ) १४, सर्वसच्चित्तमही १५,  
 रात्रिभोजन १६, घोलवना-काचे दूध दहि ठाठमें  
 गेरा हुआ विदल १७, वडंगण १८, पपोटा-खसख  
 सका दोना १९, सिंघाडे २०, वायंगण २१, और  
 कायंवाणि २२, येह बाबीस अव्य श्रावकोंको नक्ष  
 ण करने योग्य नहीं हैं. अन्य प्रकारसे २२ अन्नद्वय  
 यह हे की पांच जातिके उंबरादि फल ५ चार महा  
 विगइए, हिम १०, विष ११, करह १२, सर्व मृत्तिका  
 १३, रात्रि भोजन १४, बहुबीज वाले फल १५, अनं  
 त काय १६, अचार १७, घोलवना १८, वेडंगण १९,  
 अज्ञात फल फूल २०, तुठ फल २१, चलितरस २२ ऐसे  
 नियम देके यह गाथा उच्चारण करावे ॥

“अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥  
जिणपणत्तं तत्तं, इअ समत्तं मए गहिअं ॥ १ ॥”

तदनंतर अरिहंतको वर्जके अन्यदेवको नमस्कार करनेका, जैनयति महाव्रतधारी शुरु प्ररूपकको वर्जके अन्य लिंग विप्रादिकोंको जावसें अर्थात् मोक्षलाज जानके वंदना करनेका, और जिनोक्त सप्त तत्त्वको वर्जके तत्त्वांतरकी श्रद्धा करनेका, नियम करना.

अन्य देव और अन्य लिंग विप्रादिकोंको नमस्कार और दान, लोकिकव्यवहारकेवास्ते करना. और अन्यमतके शास्त्रका श्रवण पठन नही, ऐसेही जानना. । पीठे गुरु सम्यक्त्वकी देशना करे. ॥ सोव ताते हे. ॥

मानुष्यमार्यदेशश्च जातिः सर्वाक्षपाटवम् ॥

आयुश्च प्राप्यते तत्र कथंचित्कर्मलाघवात् ॥ १ ॥

प्राप्तेषु पुण्यतः श्रद्धा, कथकः श्रवणेष्वपि ॥

तत्त्वनिश्चयरूपं तद्बोधिरत्नं सुदुर्लभम् ॥ २ ॥

॥ गाथा ॥

कुसुमयसुईण महणं सम्मत्तं जस्स सुष्ठिअं हियए ॥

तस्स जगुज्जोयकरं नाणं चरणं च जवमहणं ॥ १ ॥

अर्थः—मनुष्यजन्म १, आर्यदेश २, उत्तमजाति ३, सर्वशुद्धि संपूर्ण ४, आयुः ५, ये कथंचित् कर्म की लाघवतासें प्राप्त होते हैं. । पुण्योदयसें पूर्वोक्त

प्राप्ति हुये जी श्रद्धा १, शुरु प्ररूपकका योग २,  
और सुणनेसें तथानिश्चयरूप बोधिरत्न सम्यक्त्व ३,  
ये अतिही दुर्लभ हैं. ॥ कुत्सितसमयएकांतवादि  
योंके शास्त्र और तिनकी श्रुतियोंको मथन करनेवाला  
सम्यक्त्व, जिसके हृदयमें अहीतरें स्थित है, तिस  
पुरुषको जगत्के उद्योत करनेवाले, और जब-संसार  
को मथनेवाले, ज्ञान और चारित्र प्राप्त होते हैं. ॥

॥ श्लोकाः ॥

या देवे देवताबुद्धिर्गुरौ च गुरुतामतिः ॥  
धर्मे च धर्मधीः श्रद्धा सम्यक्त्वमिदमुच्यते ॥ १ ॥  
अदेवे देवबुद्धिर्या गुरुधीरगुरौ च या ॥  
अधर्मे धर्मबुद्धिश्च मिथ्यात्वं तद्विपर्ययात् ॥ २ ॥  
सर्वज्ञो जितरागादिदोषस्त्रैलोक्यपूजितः ॥  
यथास्थितार्थवादी च देवोऽर्हन् परमेश्वरः ॥ ३ ॥  
ध्यातव्योयमुपास्योयमयं शरणमिष्यताम् ॥  
अस्यैव प्रतिपत्तव्यं शासनं चेतनाऽस्ति चेत् ॥ ४ ॥  
ये स्त्रीशस्त्राक्षसूत्रादिरागाद्यंककलंकिताः ॥  
निग्रहानुग्रहपरास्ते देवा स्युर्न मुक्तये ॥ ५ ॥  
नाद्व्यादृहाससंगीताद्युपलवविसंस्थुलाः ॥  
लंजयेयुः पदं शांतं प्रपन्नान् प्राणिनः कथं ॥ ६ ॥  
महाव्रतधरा धीरा जैह्वमात्रोपजीविनः ॥  
सामायिकस्था धर्मोपदेशका गुरवो मताः ॥ ७ ॥  
सर्वान्निष्ठापिणः सर्वज्ञोजिनः सपरिग्रहाः ॥

अब्रह्मचारिणो मिथ्योपदेशा गुरवो न तु ॥ ७ ॥

परिग्रहारंजमग्नास्तारयेयुः कथं परान् ॥

स्वयं दरिद्रो न परमीश्वरी कर्तुमीश्वरः ॥ ८ ॥

दुर्गतिप्रपतत्प्राणिधारणाद्धर्म उच्यते ॥

संयमादिर्दशविधः सर्वज्ञोक्तो विमुक्तये ॥ ९ ॥

अपौरुषेयं वचनमसंज्ञवि जवेद्यदि ॥

न प्रमाणं जवेद्याचां ह्यासाधीना प्रमाणता ॥ १० ॥

मिथ्यादृष्टिन्निरारव्यातो हिंसाद्यैः कलुषीकृतः ॥

स धर्म इति चित्तोपि जवन्नमणकारणम् ॥ ११ ॥

सरागोपि हि देवश्चेज्जुरुरब्रह्मचार्यपि ॥

कृपाहीनोपि धर्मः स्यात् कष्टं नष्टं हहा जगत् ॥ १२ ॥

शमसंवेगनिर्वेदानुकंपास्तिक्रयलक्षणैः ॥

लक्षणैः पंचज्ञिः सम्यक् सम्यक्त्वमुपलक्ष्यते ॥ १३ ॥

स्थैर्यं प्रज्ञावनाजक्तिः कौशलं जिनशासने ॥

तीर्थसेवा च पंचास्य भूषणानि प्रचक्ष्यते ॥ १४ ॥

शंका कांक्षा विचिकित्सा मिथ्यादृष्टिप्रशंसनम् ॥

तत्संस्तवश्च पंचापि सम्यक्त्वं दूषयंत्यमी ॥ १५ ॥

अर्थः—साचे देवमें जो देवपणेकी बुद्धि, साचे गुरुके विषे गुरुपणेकी बुद्धि और साचे धर्मके विषे धर्मकी बुद्धि, कैसी बुद्धि ? शुद्धा सूधी निश्चल संदेहरहित, इसको सम्यक्त्व कहतें हैं । ऐसी सम्यक्त्वकी बुद्धि थोड़े वखत जी जिसको आजा वेगी, सो प्राणि अर्द्धपुद्गलपरावर्तकालमेंही संसार

सैं निकलके मोक्षको प्राप्त होगा, यह निश्चय जाणना. यत उक्तम् ॥

अंतोमुहुत्तमित्तं पि फासियं जेहिं हुज्ज सम्मतं ॥

तेसिं अवट्ट पुग्गलपरिअट्टो चेव संसारो ॥ १ ॥

भावार्थः—अंतर्मुहूर्तमात्र जी जिनोंने सम्यक्त्व स्पर्श किया है, तिनोंका अर्द्धपुद्गलपरावर्त्तही उत्कृष्ट संसार जाणना, तदनंतर अवश्यमेव मोक्षको प्राप्त होवे. इति सम्यक्त्वस्वरूपम् ॥ १ ॥

अथ मिथ्यात्वस्वरूपमाह ॥ जिसमें देवके गुण नहीं हैं, ऐसे अदेवमें देवकी बुद्धि—जैसैं तममें उद्योतकी बुद्धि । जिसमे गुरुके गुण नहीं हैं, ऐसैं अगुरुमें गुरुकी बुद्धि—जैसैं नीवमे आम्र की बुद्धि । अधर्म यागादि, जीवहिंसादिक के विषे धर्म की बुद्धि—जैसैं सर्पके विषे पुष्पमालाकी बुद्धि, सो मिथ्यात्व है. सम्यक्त्वसैं विपर्यय होनेसैं, अर्थात् साचे देवके ऊपर अदेवपणेकी बुद्धि, जैसैं कौशिक (घूश्मरु) की सूर्यके तेजऊपर अंधकारकी बुद्धि, साचे गुरुऊपर अगुरुपणेकी बुद्धि, जैसैं श्वेतशंखके ऊपर काचकामलरोगवालेकी नीलशंखकी बुद्धि । तिसको मिथ्यात्व कहतेहैं. । सो मिथ्यात्व पांच प्रकारका है. १ आजिग्रहिक, २ अनाजिग्रहिक, ३ आजि निवेशिक, ४ सांशयिक, ५ अनाजोगिक. ॥

(१) प्रथम आजिग्रहिकमिथ्यात्व, सो, जिसको

मिथ्या कुशास्त्रोंके पढ़नेसें कुदेव कुगुरु कुधर्मके ऊपर आस्था दृढ है, जिससें ऐसा जानता है कि, जो कुछ मैंने समझा है सोही सत्य है, औरोंकी समझ ठीक नहीं है, जिसको सत्यासत्यकी परीक्षा करने का अब मन भी नहीं है, और जो सत्यासत्यका विचार भी नहीं करता है. यह मिथ्यात्व, दीक्षित शाक्यादि अन्यमतममत्वधारीयोंको होता है. वे अपने मनमें ऐसें जानते हैं कि, जो मत हमने अंगिकार किया है, वोही सत्य है; और सर्व मत छूठे हैं. ऐसें जिसके परिणाम होवे, सो आज्ञिग्रहिक मिथ्यात्व है.

(२) दूसरा अनाज्ञिग्रहिकमिथ्यात्व, सो सर्व मतोंको आच्छा जाणे, सर्व मतोंसें मोक्ष है, इस वास्ते किसीको बुरा न कहना सर्व देवोंको नमस्कार करना, ऐसी जो बुद्धि, तिसको अनाज्ञिग्रहिक मिथ्यात्व कहते हैं. यह मिथ्यात्व जिनोंने कोइ दर्शन ग्रहण नहीं करा ऐसें जो गोपाल बालकादि तिनको है. क्योंकि, यह अमृत और विषको एकसरिखे जाननेवाले हैं.

(३) तीसरा अज्ञिनिवेशिक मिथ्यात्व, सो जो पुरुष जानकरके छूठ बोले, प्रथम तो अज्ञानसें किसी शास्त्रार्थको चूल् गया, पीछे जब कोइ विद्वान् कहे कि, तुम इस विषयमें चूलते हो, तब अप

ने मनमें सत्य विषयको जाणता हुआ जी, जूठे पक्षका कदाग्रह, ग्रहण करे, जाल्यादि अजिमानसं कहना, न माने, उलटी स्वकपोलकल्पित कुयुक्तियों बनाकरके अपने मनमाने मतको सिद्ध करे, वादमें हार जावे तो जी न माने, ऐसा जीव, अतिपापी, और बहुल संसारी होता है. ऐसा मिथ्यात्व, प्रायः जो जैनी, जैन मतको विपरीतकथन करता है, उस में होता है, गोष्ठमाहिलादिवत् ॥

(४) चौथा सांशयिकमिथ्यात्व, सो देव गुरु धर्म जीव काल पुजलादिक पदार्थोंमें यह सत्य है कि, यह सत्य है ? ऐसी बुद्धि, तिसको सांशयिक मिथ्यत्व कहते हैं. तथा क्या यह जीव असंख्य प्रदेशी है ? वा नहीं है ? इसतरें जिनोक्त सर्व पदार्थमें शंका करनी । “ सांशयिकं मिथ्यात्वं तदशेषया शंका संदेहो जिनोक्ततत्त्वेष्विति वचनात् ॥ ”

(५) पांचमा अनाज्ञोगिकमिथ्यात्व, सो जिन जीवोंको उपयोग नहीं कि, धर्म अधर्म क्या वस्तु है ? ऐसों जे एकेंद्रियादि विशेषवैतन्यरहित जीव, तिनको अनाज्ञोगमिथ्यात्व होता है. ॥ २ ॥

अथदेवलक्षणमाह ॥ देव सो कहिये, जो सर्वज्ञ होवे, परंतु जैसें लौकिक मतमें विनायकका मस्तक ईश्वरने ठेदन कर दिया, पीछे पार्वतीके आग्रहसें सर्वत्र देखने लगा, परं किसी जगो जी



मस्तक न देखा, तब हाथीके मस्तकको दायके विनायकके मस्तकके स्थानपर चेष दिया, जिसवा स्ते विनायकका (गणेशका) नाम “गजानन” प्रसिद्ध हुआ. इत्यादि—यदि ईश्वर (महादेव) सर्वज्ञ होता तो, पार्वतीका पुत्र जाणके विनायकका मस्तक कजी न ठेदन करता. यदि ठेदा, तो जगत्में विद्यमान तिस मस्तकको क्यों न देखा ? इसवास्ते ऐसे अधूरेज्ञानवालेको देव न कहिये. । तथा ‘जित रागादिदोषः’ जे संसारके मूलकारण राग द्वेष काम क्रोध लोभ मोहादिक दोष, तिन सर्वको जिसने जीते हैं, निर्मूल किये हैं, तिसको देव कहिये. जिस में रागादि दोष होवे, तिसको अस्मदादिवत् संसारी जीवही कहिये, तिसमें देवपणा न होवे. । तथा ‘त्रैलोक्यपूजितः’ स्वर्गमर्त्यपातालके स्वामी इंद्रादिक परम भक्तिकरके जिसको वांदे, पूजे, नमस्कार करे, सेवे, सो देव कहिये. परंतु कितनेक इसलोकके अर्थीयोंके वांदनेसें, वा पूजनादिकसें देवपणा नहीं होता है. । तथा ‘यथा स्थित सत्यपदार्थका वक्ता, सो देव कहिये, परंतु जिसका कथन पूर्वापरविरोधि होवे, और विचारते हुए सत्य श मिले नहीं, सो देव न कहिये. ॥ देवो हत परमेश्वरः ये पूर्वोक्त चार गुण पूर्ण जिसमें

होवे, सो अरिहंत, वीतराग, परमेश्वर, देव, कहिये, इससें अन्य कोइ देव नहीं है. ॥ ३ ॥

ऐसा पूर्वोक्त साचा देव, पिठानके आराधना, सोही कहतें हैं । ध्यातव्योयमित्यादि—पूर्व जो देवके लक्षण कहे, तिन लक्षणों संयुक्त जो देव, तिसको एकाग्र मनसें ध्यावना, जैसें श्रेणिक महाराजने श्रीमहावीरजीका ध्यान किया. । तिस ध्यानके प्रज्ञा वसें आगमी चउवीसीमें श्रेणिक, वर्ण, प्रमाण, संस्थान, अतिशयादिकगुणोंकरके श्रीमहावीरस्वामिसरिखा 'पद्मनाभ,' नाम प्रथम तीर्थकर होगा. इसीतरें औरोंनें जी तल्लीनपणे देवका ध्यान करना, तथा 'उपास्योयम्' ऐसे पूर्वोक्त देवकी सेवा करनी श्रेणि कादिवत्. । तथा इसी देवका, संसारके जयको टाल नहार जाणके, शरण बांढना. । इसी देवका शासन, मत, आज्ञा, धर्म, अंगीकार करना. । 'चेतनास्ति चेत्' जो कोइ चेतना चैतन्यपणा है तो, सचेतन सजाण जीवको उपदेश दिया सार्थक होवे, परंतु अचेतन अजाणको दिया उपदेश क्या काम आवे ? इसवास्ते 'चेतनास्ति चेत्' ऐसें कहा. ॥ ४ ॥

अथादेवत्वमाह ॥ अथ अदेवके लक्षण कहतें हैं. ॥ ये स्त्री ॥ जिनके पास स्त्री (कलत्र) होवे तथा खड्ग धनुष्य चक्र त्रिशूलादिक शस्त्र (हथियार) होवे, तथा अक्षसूत्र जपमाळा आदि शब्द

सैं कमंरुलुप्रमुख होवे, ये कैसें है ? रा० रागादि कके अंक-चिन्ह है, सोही दिखावे हैं. स्त्री रागका चिन्ह है, । जो पासे स्त्री होवे तो जाणना कि इसमें राग हैं. । शस्त्र छेपका चिन्ह है, जो पासे हाथियार देखीए तो, ऐसा जाणिये कि तिसने किसी वैरीको मारना चूरना है, अथवा किसीका नय हैं, जिस वास्ते शस्त्रधारण किये हैं. । अक्ष सूत्र असर्वज्ञपणाकाचिह्न है. यदि होवे तो, मणके बिना गिणतीकी संख्या जाणलेवे. अथवा तिससैं अधिक बडा अन्य कोइ है, जिसका वो जाप करता है ? । कमंरुलु अशुचिपणेका चिन्ह है, यदि हाथ में कमंरुलु पाणीका जाजन देखीए तो, ऐसा जाणिये की, यह अशुचि है. शौच करणेके वास्ते यह कमंरुलु धारण करता है. यतउक्त ॥

स्त्रीसंगः काममाचष्टे छेषं चायुधसंग्रहः ॥

व्यामोहं चाक्षसूत्रादिरशौचं च कमंरुलुः ॥ १ ॥

इन पूर्वोक्त दोषोंकरके जे दूषित है, तथा निग्रहा० जिसके उपर रुष्टमान होवे, तिसको निग्रह (बंधनमरणादिक) करें, और, जिसके उपर तुष्टमान होवे, तिसको अनुग्रह (राज्यादिकके वर) देवें; तेदेवा० वे देव, मुक्तिके हेतु नहीं होते हैं.॥५॥

ऐसे पूर्वोक्त देव अपने सेवकोंको मोक्ष नहीं दे सकते हैं, सोही बात फिर कहते हैं. । नाट्याट्ट० जे

देव नाटकके रसमें मग्न हैं, अट्टाट्टहास करते हैं, इत्यादि संसारकी चेष्टा जो अस्थिर है; लंजयेयुः—जे आपही ऐसे हैं, वे देव, अपने आश्रित सेवकोंको शांतपद, ( संसार चेष्टारहित मुक्ति, केवलज्ञानादि कपद, ) कैसे प्राप्त कर सकते हैं ? जैसे एरंरुवृद्ध कल्प वृद्ध कीतरें इच्छा नहीं पूर सकता है, यदि किसी मूढ़ पुरुषने एरंरुको कल्पवृद्ध मान लिया तो, क्या वो कल्पवृद्धकीतरें मनोवांछित दे सकता है ? ऐसेही कीसी मिथ्या दृष्टीनें पूर्वोक्त दूषणोंवाले कुदेवोंको देव मान लिये तो, क्या वे देव परमेश्वर मोक्ष दाता हो सकते हैं ? कदापि नहीं हो सकते हैं॥६॥

अथगुरुलक्षणमाह ॥ अथ गुरुके लक्षण कहते हैं ॥ महाव्रतं अहिंसादि पांच महाव्रतके धारने पालनेवाले और आपदामें जी धीर साहसिक होके अपने व्रतोंको विराधे नहीं बेंतालीश ( ४२ ) दूषण रहित जिज्ञावृत्ति ( माधुकरी वृत्ति ) करके अपने चारित्रधर्मके तथा शरीरके निर्वाहवास्ते जोजन करे, जोजन जी जनोदरतासंयुक्त करे, जोजनकेवास्ते अन्न पाणी रात्रिको न राखे, धर्मसाधनके उपकरण विना और कुठ जी संग्रह न करे, तथा धन, धान्य, सुवर्ण, रूपा, मणि. मोती, प्रवालादि परिग्रह, न राखे. । सामाण रागद्वेषके परिणामरहित मध्यस्थ वृत्ति होकर सदा सामायिकमें वर्त्ते. । धर्मोपण जो

धर्मी जीवोंके उद्धारवास्ते सम्यग् ज्ञानदर्शनचारि  
त्ररूप जगवंतके स्याद्वाद अनेकांतस्वरूप निरूपण  
किया है, तिस धर्मका उपदेश करे, परंतु ज्योति  
षशास्त्र, अष्टप्रकारका निमित्तशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, धन  
उत्पन्न करनेका शास्त्र, राजसेवादि अनेकशास्त्र,  
जिनसे धर्मको बाधा पहुंचे तिनका उपदेश न करे;  
ऐसे गुरु कहियें. । काष्ठमय वेणीसमान आप जी  
तरें, और औरोंको जी तारें. ॥ ७ ॥

अथ अगुरुलक्षणमाह॥ अथ अगुरुके लक्षण कहते  
हैं ॥ सर्वा० स्त्री, धन, धान्य, हिरण्य, रूपादि सर्व  
धातु, क्षेत्र, हाट, हवेली, चतुःपदादिक अनेक प्रका  
रके पशु, इन सर्वकी अजिलाषा है जिनको, सर्व  
जोजिनः । मधु, मांस, मांखण, मदिरा, अनंतकाय,  
अजक्यादिक सर्व वस्तुके जोजन करनेवाले, सपरि  
ग्रहाः । जे पुत्र, कलत्र, धन, धान्य, सुवर्ण, रूपा,  
क्षेत्रादि सहित हैं, । अब्रह्म० तथा अब्रह्मचारी हैं ।  
मिथ्यो० मिथ्या धर्मका उपदेश करें, ज्योतिष, निमि  
त्त, वेदक, मंत्र तंत्रादिकका उपदेश देवें, वे गुरु  
नहीं. लोहमय वेणी ( नावा ) समान, आप जी  
रुवें, औरोंको जी रुवावे ॥ ७ ॥

पूर्वोक्त बातही कहते हैं ॥ परिग्रहा० स्त्री, घर,  
लक्ष्मी आदि परिग्रह, और क्षेत्र, कृषी, व्यवसा  
यादि आरंज इनमें जे मग्न है, आपही जवसमु

जमें रुवे हुए हैं, ता० वे, किसतरेंसे दूसरे जीवोंको संसारसागरसे तार सकते हैं ? इसवातमें दृष्टांत कहते हैं. । जो पुरुष आपही दरिद्री है, सो परको ईश्वर लक्ष्मीवंत करनेको समर्थ नहीं है; तैसेंही वे कुगुरु, आपही ससारमें रुवे हुए, पर अपने सेवकोंको कैसे तार सके ? ॥ ए ॥

धर्मलक्षणमाह ॥ सत्य धर्मका स्वरूप कहते हैं.॥ दुर्गति० नरक, तिर्यच, कुमनुष्य, कुदेवत्वादि दुर्गति में गिरते हुए प्राणिकी रक्षा करे, गिरने न देवे, इस वास्ते धारण करनेसे धर्म कहिये, सो, संयमादि दशप्रकार सर्वज्ञ कथित धर्म, पालनेवालेको मोक्षकेवास्ते होता है. । संयमादि दश प्रकार ये हैं. संयम जीवदया १, सत्यवचन २, अदत्तादानत्याग ३, ब्रह्मचर्य ४, परिग्रहत्याग ५, तप ६, क्षमा ७, निरहंकारता ८, सरलता ९, निर्लोचिता १०, ॥ इससें उलटा हिंसादिमय असर्वज्ञोक्त धर्म, दुर्गतिकाही कारण है. ॥ १० ॥

अधर्मत्वमाह ॥ अपौरुषेयं० अपौरुषेय वचन, असंज्ञवि—संज्ञवरहित है. क्योंकि, जो वचन है सो किसी पुरुषके बोलनेसेही है, बिना बोले नहीं. वच परिज्ञापणे इति वचनात् और अक्षरोत्पत्तिके आठ स्थान नियत है, सो जी पुरुषकोही होते हैं. इस वास्ते वचन पुरुषके बिना संज्ञवे नहीं । जवेण

दि-न प्रमाण । यहि होवे तो, वेदको प्रमाणता नहीं. क्योंकि, । जवेछाचां ह्यासाधीना प्रमाणता । वचनोंकी प्रमाणता, आस पुरुषोंके आधीन है. ॥ ११ ॥

असर्वज्ञोक्त धर्म प्रमाण नहीं यही कहते हैं. ॥ मिथ्यादृष्टि असर्वज्ञोंने अपनी बुद्धिसे कहा हुआ, पशुमेध, अश्वमेध, नरमेधादि यज्ञोंके कथनसें, और अपुत्रस्य गतिर्नास्ति इत्यादि कथनसें, जीववधादि कोंकरके जो धर्मही है, ऐसा अजाण लोकोंमें विशेष प्रसिद्ध है. तो जी, जवत्रमण (संसारत्रमण) का कारण है. यथार्थ धर्मके अभावसें ॥ १२ ॥

कुदेवकुगुरुकुधर्मनिंदामाह ॥ सरागोपि० यदि जगत्में सरागः रागद्वेषादि सहित जी देव होवे, अब्रह्मचारी मेथुनाजिलाषी जी गुरु होवे, और दया हीन जी धर्म होवे, तो, हाहा । इति खेदे वमा जारी कष्ट है, संसारलक्षण जगत् नष्ट हुआ, दुर्गतिमें पड़नेसें. क्योंकि, पूर्वोक्त देव गुरु धर्मकरके सुवनाही होवे यतः उक्तं ॥

रागी देवो दोसी देवो तामिसूमंपि देवो रत्ता मत्ता कंता सत्ता जे गुरु तेवि पुज्जा । मज्जे धम्मो मंसे धम्मो जीव हिंसाइ धम्मो हाहा कष्टं नठो लोओ अट्टमट्टं कुणंतो ॥ १ ॥ १३ ॥

ऐसें पूर्वोक्त अदेव, अगुरु, अधर्मका परित्याग करके, सत्य देव, गुरु, धर्मकी, आस्था करनी, तिसका नाम

सम्यक्त्व है. सो सम्यक्त्व हृदयमें है, ऐसा पांच लक्षणोंकरके मातुम होता है, वे पांच लक्षण कहते हैं. ॥

शमसं०—जिस जीवमें अनंतानुबंधि क्रोध मान माया लोभका उपचय देखिये, अर्थात् अपराध करनेवालेके ऊपर जिसको तीव्र कषाय उत्पन्न होवेही नहीं, यदि उत्पन्न होवे तो, तिस क्रोधादिको निष्फल करदेवे, इस शमरूप लक्षणसे जाणिये कि, इस जीवमें सम्यक्त्व है । १ । संवेग—जिसके हृदयमें संवेग संसारसे वैराग्यपणा होवे, तिस जीवमें संवेगरूप लक्षणसे सम्यक्त्व जाणना । २ । संसारके सुखों ऊपर द्वेषी, वैराग्यवान्, परवशपणेसे कुटुंबादिकके दुःखसे गृहस्थपणेमें रहा हुआ मोक्षाजि लापी, जो जीव है, तिसमें निर्वेदरूप लक्षणसे सम्यक्त्व है. । ३ । जिसके हृदयमें दुःखजीवोंको देखके अनुकंपा ( दया ) उत्पन्न होवे, दुःखजीवोंके दुःखोंको दूर करनेका जिसका मन होवे, जो दुःख जीवको देखके अपने मनमें दुःखी होवे, शक्तिअनुसार दुःखजीवके दुःखोंको दूर करे, तिसमें अनुकंपारूप लक्षणसे सम्यक्त्व उपलब्ध होता है. । ४ । जिनोक्त तत्त्वोंमें अस्तिभाव का होना, सो आस्तिक्य । ५ । एतावता शम १, संवेग २, निर्वेद ३, अनुकंपा ४, और आस्तिक्य ५, इन पांचों लक्षणों से हृदयगत सम्यक्त्व जाणना, ॥ १४ ॥



॥ अथ सम्यक्त्वके पांच जूषण कहते हैं. ॥  
 स्थैर्य०—स्थैर्य जिनधर्मकेविषे स्थिरता । १ । जिन  
 धर्मकी प्रज्ञावना । २ । जिनधर्ममें जक्ति । ३ । जिन  
 शासनमें कुशलता । ४ । और तीर्थसेवा । ५ । ये  
 पांच सम्यक्त्व के जूषण हैं. ॥ १५ ॥

अथ सम्यक्त्वके पांच दूषण कहते हैं. ॥ शं  
 का० शंका धर्म. है, वा नहीं ? इत्यादि संदेह । १ ।  
 आकांक्षाअन्य २ धर्मकी अजिलाषा । २ । विचि  
 कित्साधर्मके फलका संदेह । ३ । मिथ्यादृष्टिकी  
 प्रशंसा । ४ । और मिथ्यादृष्टियोंका परिचय । ५ ।  
 ये पांच सम्यक्त्वको दुषित करते हैं. ॥ १६ ॥

ऐसे पूर्वोक्त उपदेशकरके श्रेणिक, संप्रति, दशार्ण  
 जडादि सम्यक्त्वमें दृढ राजायोके व्याख्यान करे. ।  
 उस दिनमें श्रावक एकजक्त आचाम्लादि तप करे. ।  
 साधुओंको अन्न, वस्त्र, पुस्तक, वसति, यथायोग्य  
 देवे. । मंगलीपूजा करनी. । चतुर्विधसंघवात्सल्य  
 करना. । और संघपूजा करनी. ॥

इतिव्रतारोपसंस्कारे सम्यक्त्वसामायिकारोपणविधिः ।

### देशविरतिसामायिकारोपणविधिः

सम्यक्त्व सामायिकारोपणानंतर तत्कालही, तिस  
 की वासनानुसारें, वा मास वर्षादिके अतिक्रम हुए,

देशविरतिसामायिक आरोपण करना हैं. । तहां नंदि, चैत्यवंदन, कायोत्सर्ग, क्षमाश्रमणआदि, सर्व विधि पूर्ववत् जाणनी.

परंतु सर्वत्र सम्य क्त्वसामायिकके स्थानमें देशविरतिसामायिककानाम ग्रहण करना. । सर्वत्र तैसें करके फिर दूसरी नंदि दंरुकोच्चारकालमें नमस्कार तीन पाठानंतर, हाथमें ग्रहण करे परिग्रह परिमाण टिप्पनक(फहरिस्त-नोंध) ऐसे श्रावकको गुरु, देशविरतिसा मायिकदंरुक उच्चारवे. ॥ सयथा ॥

“ ॥ अहणं जते, तुह्माणं समीवे, थुलगं, पाणा इवायं, संकप्पओ, वीइदिआइजीवनिकायनिग्गहनि यट्ठिरूवं, निरावराहं, पच्चक्खामि जावज्जीवाए, डु विहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कार वेमि, तस्स जंते पक्खिमामि, निंदामि, गरि हामि, अप्पाणं, वोसिरामि, ॥ ’

यह पाठ तीनवार कहना ॥ १ ॥ इसीतरें सर्व ब्रतोंमें तीन २ वार पाठ पटना. ॥

“ ॥ अहणं जंते, तुह्माणं, समीवे, थूलगं, मुसा वायं, जीहावेयाइनिग्गहहेज्जअं, कन्ना, गोचूमि, निस्केवावहार, कूरु सरकाइ, पंचविहं, दस्किन्नाइ अविसए, अहागहिअ जंगएणं, पच्चक्खामि, जावज्जीवाए, डुविहं तिविहेण, मणेणं वायाए, काएणं ॥ २ ॥ ”

“ ॥ अहणं, जंते, तुह्माणं, समीवे, थूलगं, अदि  
न्नादाणं, खत्तखण्णणश्चोरकारकरं, रायनिग्गहकरं, स  
च्चित्ताचित्त वत्थुविसयं, पच्चस्कामि, जावज्जीवाए,  
डुविहं तिविहेणं ॥ ३ ॥ ”

“ ॥ अहणं, जंते, तुह्माणं, समीवे, थूलगमेहुणं,  
उरालिय, वेज्जवियजेअं, अहागहिअ जंगएणं, तव  
डुविहं तिविहेणं दिव्वं, एगविहं तिविहेणं तेरिहं,  
एगविहमेगविहेणं माणुस्सं, पच्चस्वामि, जावज्जी  
वाए, डुविहं तिविहेणं ॥ ४ ॥ ”

“ ॥ अहणं जंते तुह्माणं, समीवे, अपरिमिअं,  
परिग्गहं, धणधन्नाइनवविहवत्थुविसयं, पच्चस्कामि,  
इष्ठापरिमाणं, अहागहिअ जंगएणं, उवसंपज्जामि,  
जावज्जीवाए, डुविहं, तिविहेणं ॥ ५ ॥ ”

“अहणं जंते, तुह्माणं, समीवे, पढमं गुणवयं,  
दिसिपरिमाणरूवं, पक्खिज्जामि, जावज्जीदाए, डुवि  
हं, तिविहेणं ॥ ६ ॥ ”

“ ॥ अहणं जंते, तुह्माणं, समीवे, उवजोगपरि  
जोगवयं, जोयणउ, अणंतकाय, बहुवीय राईजोय  
णांश्वावीसवत्थुंरूवं, कम्मणा, पन्नरस, कम्मादाण,  
इंगालकम्माश्बहुसावज्जं, खरकम्माश्, रायनिउगं  
च, परिहरामि, परिमिअं, जोगउवजोगं, उवसंप  
ज्जामि, जावज्जीवाए, डुविहं, तिविहेणं ॥ ७ ॥ ”

“ ॥ अहणं जंते, तुह्माणं समीवे, अणत्थदंरुण

एवमयं, अट्टरुदश्याण, पावोवएस, हिंसोवयारदाण, पमा  
यकरणरूवं, चउविहं, जहासत्तीए, पम्बिज्जामि,  
डुविहं तिविहेणं ॥ ८ ॥ ”

“ ॥ अहणं जंते, तुह्माणं समीवे, सामाशयं,  
जहासत्तीए, पम्बिज्जामि, जावज्जीवाए, डुविहं,  
तिविहेणं ॥ ९ ॥ ”

“ ॥ अहणं जंते, तुह्माणं समीवे, देसावगासिअं,  
जहासत्तीए पम्बिज्जामि, जावज्जीवाए, डुविहं  
तिविहेणं ॥ १० ॥ ”

“ ॥ अहणं जंते, तुह्माणं समीवे, पोसहोववासं,  
जहासत्तीए, पडिबज्जामि, जावज्जीवाए, डुविहं,  
तिविहेणं ॥ ११ ॥ ”

“ ॥ अहणं जंते, तुह्माणं समीवे, अतिहिंसंवि  
जागं, जहासत्तीए, पम्बिज्जामि जावज्जीवाए, डु  
विहं तिविहेणं ॥ १२ ॥ ”

“ ॥ उच्चैयं सम्मत्तमूलं पंचाणुवश्यं, तिगुणवश्यं,  
चउसिक्कावश्यं, डुवालसविहं, सावगधम्मं, उवसं  
पज्जित्ताणं, विहरामि ॥ इति ॥

दंरुकोच्चारणानंतर कायोत्सर्ग, वंदनक, क्षमाश्र  
मण, प्रदक्षिणा, वासक्षेपादिक पूर्ववत् ॥

परिग्रहप्रमाणटिप्पनकयुक्तिर्यथा ॥ -

ज्ञापार्थः—अमुक जिनेन्द्रको नमस्कार करके, अमु

क श्राविका, वा अमुकश्रावक अमुक गुरुके पास,  
गृहस्थ धर्मको अंगीकार करता है. ॥ १ ॥

श्री अरिहंतको वर्जके अन्य देवको नमस्कार न  
करूं, जिनमतके सुसाधुकों ठोरुके अन्य लिंगिकों  
धर्मार्थे नमस्कार न करूं. ॥ २ ॥ जिन वचन स्याद्वा  
दयुक्त सप्त वा नव तत्त्व को सत्य कर जान  
ता हूं, मिथ्याशास्त्रोंके श्रवण पठन लिखनेका मुक्त  
को नियम हो. । ३। परतीर्थिको प्रणाम, गुणानुवाद,  
स्तवन, जक्ति, राग, सत्कार, सन्मान, दान, विनय,  
वर्जु-न करूं. । ४। धर्मकेवास्ते अन्य तीर्थमें तप,  
स्नान, होमादिक नहीं करूं. तिनके उचित करने  
योग्य कर्ममें जयणा मुक्तको हो. । ५। तीन, वा  
पांच, वा सातवार यथाशक्तिसें चैत्यवंदन करूं; एक,  
वा दो वा तीन बार, प्रतिदिन सुसाधुको नमस्कार  
करूं, और तिसकी सेवा करूं. । ६। एक, वा दो,  
वा तीनवार प्रतिदिन जिनपूजा करूं; और पर्व  
दिनमें स्नात्रादि अधिक अधिकतर पूजा करूं. इति  
सम्यक्त्वम् ।

कुलाचार विवाहादि कृत्यमें जीववध होते जयणा  
करूं । ७। विना प्रयोजन एकेंद्रियका जी वध न  
करूं, प्रयोजनके हुए जयणा करूं. । इतिप्रथमव्रतम् ।

कन्या आदि पांच प्रकारका मृषावाद, नियमक  
रके वर्जता हूं. । इतिद्वितीयव्रतम् ।

जिससें चोर नाम पड़े, और राजदंभ होवे, ऐसा धन वर्जु, अर्थात् चोरी वर्जु. । इतितृतीयव्रतम् ।

दो करण तीन योगसें देवतासंवधि, एकविध त्रिविधें करी तिर्यच संवधि, मैथुनका नियम करता हुं. । ९ । अनुजव करके स्तंभसमान ब्रह्मव्रतको अपने मनमें धारण करुं, और जावजीव मनुष्य संवधि मैथुनकायाकरके वर्जु । १० । परनारीको, और परपुरुषको ( स्त्री व्रतग्राहिता आश्रित ) वर्जु. इनके उपरांत अन्यक्रियाकी मुजकों जयणा. । इति चतुर्थव्रतम् ॥

नव प्रकारके परिग्रहमें परिग्रहकी संख्याका प्रमाण यह है. । ११ । इतने मात्र रूपय्ये, इतने मोहोर, इतने मात्र गिणतिमें. । १२ । इतने गिणतिमें रूपय्ये, यह गणिमवस्तुका ग्रहण है. इतनी वस्तु तोलमे और मापसें इतनी वस्तु. । १३ । हाथ अंगुलसें मेय वस्तुका इतने प्रमाण मात्रसें मुजको संग्रह करना कढ्ये, तथा दृष्टिसें देखके जिनका मोल करा जावे ऐसे पदार्थ इतने रूपय्योंके मोलके रखने. । १४ । इतनी खांकी अन्नकी एक वर्षमें रखनी, इतनी मुजको परिग्रहमें जूमि रखनी कढ्ये; इतने पुर, इतने गाम, इतने हाट, इतने घर, और इतने प्रमाण क्षेत्र, मुजको कढ्ये. । १५ । इतने सेर, वा इतने तोले प्रमाण सोना, इतना मात्र रूपा,

इतना कांसा, इतना तांबा, इतना लोहा, इतना तरुया, इतना सीसा, अपने घरमें रखना. । १६ । इतने दास, इतनी दासी, इतने सेवक-नौकर और इतने दासचेटकोंकी संख्यां मुज्जको रखनी कटपे. । १७ । इतने हाथी, इतने घोड़े, इतने बलद, इतने ऊंट, इतने गाड़े, इतनी गौ, इतनी महिषी (जैस) । १८ । इतनी बकरी, इतनी भेमें, और इतने हल रखने मुज्जको कटपे. और अमुक अमुक कर्मका मुज्जको नियम हो. । १९ । इति पंचमव्रतम् ॥

दसोंही दिशायोंमें अपने वशसे इतने योजन प्रमाण जावजीव गमन करना, और तीर्थयात्रामें जानेकी जयणा. । २० । इतिषष्ठव्रतम् ।

कर्ममें जोगोपजोगमें, खरकर्ममें, पंदरा कर्मादा नमें, दुप्पोल आहार अज्ञात फूल फल इनको वर्जु. । २१ । पांच ऊंवर ५, चार महाविगड् ४, हिम १०, विष ११, कारक १२, सर्व जातकी मट्टी १३, रात्रिजोजन १४, बहुवीजा १५, अनंतकाय १६, सं धान (बोल आचार) १७ । २२ । घोलवक्रां (विदल) १८, वृंताक १९, अज्ञात फल फूल २० तुष्ट फल २१ और चक्षितरस २२, ये बावीस वस्तुओंको वर्जु । २३ । वर्जके अन्य फल फूल पत्रमेसें अमुक अमुक प्राणांतमें जी, चक्षुण न करूं. २४ । इतने मात्र प्रासुक अनंतकायकी मुज्जको जयणा हो, इतने

अपक्व फल और अखंभित जी चक्षुष न करुं । १५ ।  
 आ जन्मतक इतनी सञ्चित्त वस्तुओं मेरेको चक्षुष  
 करने योग्य है, इतने पुष्टिकारक द्रव्य और इतने  
 व्यंजन शाकादि मुझको कटपे; तथा घृत, दुग्ध  
 दहि प्रमुख । १६ । इतनी विगड् मुझको कटपे.  
 इतने पियादे, इतने गज, इतने तुरग और इतने  
 प्रधान रथोंकी मुझको जयणा हो । १७ । इतनी  
 सुपारी, इतने लवंग, इतने एलाफल (इलायची)  
 जायफल आदि मेरेको नित्य इतने प्रमाण कटपे.  
 सूतके, रेशमके, ऊनके, औरके, इन चार प्रकारके। १८।  
 वस्त्रोंमें जी इतने वस्त्र पहिरने मुझको कटपे; और  
 इतनी जातिके फूल मेरे अंगके जोगवास्ते कटपे ।  
 १९ । आसन, सिंहासन, पीठ, पट्टे, बाजोठ,  
 पल्लक, गद्देला, रजाइ, और खाट आदि ये सर्व  
 इतने प्रमाण मुझको कटपे । २० । कर्पूर, अगर,  
 कस्तूरी, चंदन केशरादि मात्र मेरे अंगके वास्ते  
 इतने कटपे, और पूजामें जयणा । २१ । इतनी  
 नारी मेरे संजोगमे इतने कालमात्र, इतने घडे,  
 ठाणे हुए जलके और घासुक जलके मेरेको स्नान  
 वास्ते कटपे । २२ । इतनी बार दिनमें इतनी जातिके  
 तेल मर्दन के वास्ते, इतने प्रकारके जात  
 रोटी आदिक जोजन, और दिनमें इतनी बार जोन  
 न करना । २३ । यह सञ्चित्तादिका जोग परिजोग



जात्रजीवतक है, इनका जी फेर प्रमाण दिनदिनमें करूं, ॐ । ३४ । इतने मात्र मणि, कनक, रूपा, मोती नृषण, अंगजपर धारण करूं. इतने मात्र गीत, नृत्य, वाजंत्र, मुक्तको उपजोगवास्ते कल्पे. । ३५ । इतिसप्तमव्रतम् ॥

वैरिका घात, वैर लेना, इत्यादिक आर्त्त, रौद्र, ध्यान, अदाक्षिण्यताविषे पापोपदेशका देना, इनको वर्जु. । ३६ । अदाक्षिण्यताविषे हिंसाकारी गृहोप करणादि देना तथा कामशास्त्रका पढ़ना, जूआ खेलना, मद्य पीना, इनको परिहरूं. । ३७ ) हिंमोलेका विनोद, जक्त ( जोजन ), स्त्री, देश, और राजा, इनकी स्तुति, वा निंदा; पशु पक्षीका युद्ध, अकालमें नीद लेनी, संपूर्ण रात्रिमें सोना, । ३८ । इत्यादि प्रमाद स्थानक, अनर्थादंम्नामक गुण व्रत में वर्जु. । इति अष्टमव्रतम् ॥

एक वर्षमें इतने सामायिक करूं. । इतिनवमव्रतम् ॥

इतने योजन मेरेको दिन, वा रात्रिमें दशोदिशाओंमें जाना आना कल्पे. । इतिदशमव्रतम् ।

एक वर्षमें इतने पौषध करूं. इत्येकादशव्रतम् ॥

साधुओंको संविज्ञाग जोजन वस्त्र आदिकसें करूं. ४० । प्रथम यतिको देके और नमस्कार करके पीठे

\* दिन २ में जो प्रमाण करना है, सो दशम देसावकाशिकप्रनातर्गत जाणना ॥

आप पारणा करुं; जो सुविहित साधुओंका योग न होवे तो, दिशावलोकन करके जोजन करुं । ४१ ।  
इति द्वादशव्रतम् ॥

यह द्वादश व्रतरूप श्रावकधर्म, पूर्वोक्त विधिसें पाबुं, बिना ढाँया जलका पान और स्नान, मरणां तमें जी न करुं । ४२ । कंदर्प, दर्प, शूकना, सोना, चार प्रकारका आहार करना, विकथा, कलह, इत्यादि जिनमंरुपमें वर्जुं । ४३ ।

अमुक महागठमें, अमुक गुरु सूरिके संतानमें, अमुकके शिष्यके पास, अमुक सूरिके पादांतमें । ४४ । अमुक संवत्सरमें, अमुक मासमें, अमुक पक्षमें, अमुक तिथिमें, अमुक वारमें, अमुक नक्षत्रमें, अमुक नगरमें । ४५ । अमुकका पुत्र, अमुक नामका श्रावक, यहां गृहस्थधर्म ग्रहण करता है । अमुककी पुत्री अमुककी चार्या, अमुक नामकी श्राविका, वा व्रत ग्रहण करती है । ४६ ।

नवरं क्षत्रियकेवास्ते प्राणातिपात स्थानमें प्रथम व्रतमें ४७ । ४८ । यह दो गाथा, अधिक जाननी । युद्धमें, कोइ गौको चुरा लेजाता होवे तिसके हटानेमें, चैत्य, गुरु, साधु, संघको उपसर्ग देनेवा लेको हटानेमें, तथा दुष्टके निग्रहमें, जीवके बध हुए मुँको दोष नहीं । ४९ । जनोके, और देशके रक्षणवास्ते सिंह, व्याघ्र, शत्रुओंके हननेमें मुँको

दोष नहीं; अर्थात् इन कामोंके लिए हिंसा करनेसे मेरा व्रत जंग न होवे. । जल पीनेमें ठाणना, अन्यत्र स्नानादिमें यथाशक्ति. । ४७ । इनमें प्रमादके होनेसे, गुरुके वचनसे यह तप करुं; अल्प बहुत जांगेसें, तिससें मेरी विशुद्धि होवे. । ४८ ॥ इति परिग्रह प्रमाणटिप्पनकविधिः ॥

इन वारह व्रतोंमेंसें कोइ कितनेही व्रत अंगीकार करे, तिसको तितनेही उच्चार करावने. । जिसको ठ मासिक सामायिक व्रत आरोपतें हैं, तिसका यह विधि है. ॥ चैत्यवंदना, नंदि, क्षमाश्रमणादि सर्वपूर्ववत् सामायिकके अजिलाप करके; । और विशेष यह हैं; । कायोत्सर्गके अनंतर तिसके हस्तगत नूतन मुखवस्त्रिकाके ऊपर वासक्षेप करना. । तिसही मुखवस्त्रिकाकरके षट् (६) मासपर्यंत उज्जयकाल सामायिक ग्रहण करे. । पीठे तीनवार नमस्कारका पाठ करके दंरुक पढावे. सयथा ॥

“ ॥ करेमि जंते सामाश्रयं, सावज्जं जोगं पच्च स्कामि, जावनियमं पल्लुवासामि, डुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाएकाएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स जंते पम्भिमामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाणं, वोसिरामि, । से सामाश्रयं चउविहे तंजहा दव्वजं खित्तजं कालजं जावजं दव्वजं सामाश्रयं पडुच्च, खित्तजं इहेव वा अन्नत्तं वा, कालजं जाव वृम्मासं, जाव

उणं जाव गहेणं न गहिज्जामि, जाव ठवेणं न ठदिज्जामि, जाव सन्निवाएणं नाज्जिजविज्जामि, ताव मे एसासामाश्य पन्निवत्ती ॥ ”

ऐसें तीनवार पढावना. । मस्तकोपरि वासदेव करना, अक्षतवासाको अजिमंत्रणा, और संघके हाथ में वासदेव देना, यहां नहीं है परंतु प्रदक्षिणा तीन, करावनी. । इतिपाएमासिक सम्यक्त्वारोपणविधिः ॥

इसीतरें सम्यक्त्वका, और छादश व्रतोंका जो इसही दंरुक्सें तिस २ अजिलापसें मास, पट्ट (६) मास वा वर्ष पर्यंत, सम्यक्त्व व्रतोंका उच्चारण करना. । नवरं सम्यक्त्वका सम्यक्त्वदंडसें उच्चार करना. नवरं इतना विशेष है कि, सम्यक्त्वकी अधिमें ‘जावज्जीवाए’ यह पाठ न कहना. किंतु, ‘मासं ठम्मासं वरिसं’ इत्यादि कहना. शेष व्रतोंमें जो जावज्जीवाएके स्थानमें ‘मासं ठम्मासं वरिसं’ इत्यादि कहना ॥

अथ प्रतिमोद्धहनविधिः ॥ यावज्जीवतक नियम स्थिरीकरण प्रतिज्ञा जो है, तिसको प्रतिमा कहते हैं. तिनमें कालादिमें नियमव्यवच्छेद नहीं है । ते प्रतिमा एकादश ( ११ ) गृहस्थोंकी है. । तद्यथा ॥

“ ॥ दंसण १, वय २, सामाश्य ३, पोसह ४, पन्निमाय ५, वंज ६, अचित्ते ७, ॥ आरंज ८, पेस ९, उदिठ, वज्जाए १०, समणञ्जूए य ११, ॥ १ ॥ ”

अर्थः—तहां जिस प्रतिमामें मासतक श्रावक निःशंकितादि सम्यग् दर्शनवाला होवे, सा प्रथम दर्शनप्रतिमा १. व्रतधारी द्वितीया २. कृतसामायिक तृतीया ३. अष्टमी चतुर्दश्यादिमें चतुर्विध पौषध करना, चतुर्थी ४. पौषधकालमें, रात्रिकी आदि प्रतिमा, अंगीकार करनी, अस्नान, प्रासुकजोजी, दिनमें ब्रह्मचारी, रात्रिमें परिमाण करे और कृत पौषध तो, रात्रिमें जी ब्रह्मचारी, इति पंचमी ५. सदा ब्रह्मचारी षष्ठी ६. सच्चित्ताहारवर्जक सप्तमी ७. आप आरंज नहीं करना, अष्टमी ८. नौकरोंसे आरंज नहीं करावना, नवमी ९. उद्दिष्टकृताहारवर्जक, दुरमुंक्षित, शिखासहित, वा निराधारीकृतधनका, पुत्रादिकोंको वतलानेवाला, इति दशमी १०. दुरमुंक्षित, लुंचितकेश, वा रजोहरणपात्रधारी, साधु समान, निर्ममत्व, अपनी जातिमें आहारादिकेवास्ते विचरे, इति एकादशी. ॥ ११ ॥

यहां पहिली एक मास, दूसरी दो मास, तीसरी तीन मास, एवं यावत् इग्यारहमी इग्यारह मास पर्यंत. तथा जो अनुष्ठान, पूर्व प्रतिमामें कहा है, सोही अनुष्ठान, आगेकी सर्व प्रतिमायोंमें जानना. इनमें वितथ प्ररूपणा श्रद्धानादि करना, सो अति चार है. । तिनमें पहिली 'दर्शन प्रतिमा' तिसमें नंदि, चैत्यवंदन, क्षमाश्रमण, वासक्षेप, इनोंका विधि

दर्शनप्रतिमाके अजित्वापसें सोही पूर्वोक्त रीतीसें जानना. और दंडक ऐसे हैं ।

“॥अहणं जंते तुह्माणं समीवे, मिहत्तं, दवजा वज्जिन्नं, पच्चरुक्कामि, दंसणपडिमं, उवसंपज्जामि, नो मे कप्पइ, ज्जाप्पजिई अन्नउत्थिण वा, अन्नउत्थिअदेवयाणि वा, अन्नउत्थिअपरिग्गहिआणि वा, अरिहंतचेइ आणि वा, वंदित्तए वा, नमंसित्तए वा, पुण्विअणालत्तेणं आलवित्तए वा, संलवित्तए वा, तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा दाउं वा, अणुप्पयाउं वा, तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएण, न करेमि न कारवेमि, करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तद्वा अईअं निंदामि, पकुप्पन्नं संवरेमि, अणागयं पच्चइखामि, अरिहंतसक्किअं, सिद्धसक्किअं, साहुसक्किअं, अप्पसक्किअं, वोसिरामि, तद्वा दवआखित्तओ कालओ जावओ, दवओणं एसा दंसणपडिमा, खित्तओणं इहेव वा अन्नत्थ वा, कालओणं जाव मास, जावओणं जाव गहेणं न गहिज्जामि, जाव ठवेणं न ठविज्जामि, जाव सन्निवाएणं नाज्जिजविजामि, ताव मे एसा दंसणपडिमा ॥”

शेषं पूर्ववत् । प्रदक्षिणात्रयादिक, दर्शनप्रतिमा स्थिरीकरणार्थं कायोत्सर्गादि. यहां अजिग्रह मासातिक यथाशक्ति आचाम्लादि प्रत्याख्यान करना, तीनों संध्यामें विधिसैं देवपूजन करणा. पार्श्व

स्थादिवंदनका परिहार करना. शंकादि पांच अतिचारोंका त्याग करना. राजाजियोगादि ठ (६) कारणोंसें जी यह दर्शन प्रतिमा नहीं त्यागनी. ॥ इतिदर्शनप्रतिमा. ॥ १ ॥

अथ दूसरी व्रतप्रतिमा, सा, मास दो तक यावत् निरतिचार पांच अणुव्रत पालनविषया, गुणव्रत ३, शिद्धाव्रत ४, इनका पालना जी साथही जानना. अर्थात् दो मासपर्यंत निरतिचार द्वादश (१२) व्रतोंका पालना. यहां नंदिद्विमाश्रमणादि तिसतिस प्रतिमाके अजिलापसें पूर्ववत् । प्रत्याख्यान नियम चर्यादि सर्व तेसेंही जानने. दंरुक जी तिसके अजिलापसें सोही जानना. ॥ इतिव्रतप्रतिमा ॥ २ ॥

अथ तीसरी सामायिक प्रतिमा, सा, तीन मास तक उज्जयसंध्यामें सामायिक करनेसें होती है. शेष नंदिनियम व्रतादिविधि सोइ अर्थात् पूर्वोक्तही जानना. और दंडक सामायिकके अजिलापसें कहना. ॥ इतिसामायिकप्रतिमा ॥ ३ ॥

अथ चौथी पौषधप्रतिमा, सा, चार मास यावत् अष्टमी चौदशको चार प्रकारके आहारके त्यागमें रक्तको चार प्रकारके पौषधके करनेसें होती है. द्रव्यादिजेंदसें दो आदि मासपर्यंत इस कथनसें यथाशक्ति सूचन किइ गइ. यहां नंदिव्रत नियमा

दिविधि सोही और दंरुक तिसके (पौषधप्रतिमाके) अजिलापसे कहना. ॥ इतिपौषधप्रतिमा ॥ ४ ॥

ऐसे पांचमासादिकालवाली शेषप्रतिमायोमें जी यही पूर्वोक्त विधि है. नंदिकुमाश्रमण दंरुकादि तिसतिस प्रतिमाके अजिलापसे. व्रतचर्या सोही है, परं संप्रतिकालमें, पर्यायसें, वा संहननकी शिथि लतासें, पांचमी प्रतिमासें लेके इग्यारहमीतक प्रति माके अनुष्ठानका विधि शास्त्रोंमें नहि दिखताहें प्रतिमाका आरंज शुच सुदुर्तमें करना. ॥ इति देश विरतिसामायिकारोपणविधिः ॥

### उपधान विधि ॥

श्रुतसामायिकारोपणविधि कहते हैं. ॥ तहां यति योकों श्रुतसामायिकारोपण, योगोद्धनविधिसें होता है. उनका श्रुतारोपण, आगम पाठसें होता है. और योगोद्धन आगमपाठ रहित एसे गृहस्थोंको, श्रुत सामायिकारोपण, उपधानोद्धनसें होता है. सो श्रु तारोपण, परमेष्ठिमंत्र, ईर्यापथिकी, शक्रस्तव, चैत्यस्त व, चतुर्विंशतिस्तव श्रुतस्तव, सिद्धस्तवादि पाठकरके होता है. ॥

उपधीयते ज्ञानादि परीक्ष्यते अनेनेत्युपधानं—जि ससें ज्ञानादिकी परीक्षा करिये, तिसको उपधान कहते हैं. अथवा चार प्रकारके संवर समाधिरूप सुखशय्यामें उत्तम होनेसें उत्सीर्पक स्थानमें उप



धीयते स्थापन करिये, तिसको उपधान कहिये. तिस उपधानमें ठ (६) श्रुतस्कंधोंका उपधान होता है, सोही दिखाते हैं. परमेष्ठिमंत्रका १, ईर्यापथि कीका २, शक्रस्तवका ३, अर्हत् चैत्यस्तवका ४, चतुर्विंशतिस्तवका ५. श्रुतस्तवका ६.

सिद्धस्तवकी वाचना उपधानविना होती है.

प्रथम परमेष्ठिमंत्र महाश्रुतस्कंधके पांच अध्ययन है, और एक चूलिका है. दो दो पदके आलावे पांच है, सात २ अक्षरके अर्हत् आचार्य उपाध्याय नमस्कार रूप तीन पद है. सिद्धनमस्कृति. रूप दूसरा पद पांच अक्षरोंका है, साधुओंको नमस्काररूप पांचमा पद नव अक्षरोंका है, एवं पांच पद. तिसके पीछे चूलिका, तिसमें दो पदरूप प्रथम आलापक सोलां ( १६ ) अक्षरोंका है, तृतीय पदरूप दूसरा आलापक आठ ( ८ ) अक्षरोंका है, और चौथे पदरूप तीसरा आलापक नव ( ९ ) अक्षरोंका है. तहां पंचपरमेष्ठिमंत्रमें पांचो पदोंमें तीन उद्देशे हैं, और चूलिकामें भी उद्देशे तीन हैं एवं उद्देशे ६. ॥ प्रथमके पांचो पदोंमें पैंतीस (३५) अक्षर है, और चूलिकामें तेतीस ( ३३ ) अक्षर है. पांच अध्ययन ऐसे हैं ॥

नमो अरिहंताणं १ । नमो सिद्धाणं २ । नमो

आयरिश्चाणं ३ । नमो उवझायाणं ४ । नमो लोए  
सवसाहूणं ॥ ५ ॥ एका चूलिका यथा ॥

एसो पंच नमुक्कारो; सवपावप्पणासणो, मंगलाणं  
च सवेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥ दो दो पदके  
आलापक यह है ॥

नमो अरिहंताणं । नमोसिद्धाणं ॥ १ ॥ ”

नमो आयरिश्चाणं । नमो उवझायाणं ॥ २ ॥ ”

नमो लोए सवसाहूणं ॥ ३ ॥ ”

एसो पंच नमुक्कारो । सवपावप्पणासणो ॥ ४ ॥ ”

मंगलाणं च सवेसिं । पढमं हवइ मंगलं ॥ ५ ॥ ”

सात २ अक्षरके तीन पद यह है ॥

नमो अरिहंताणं । ७ । नमोआयरिश्चाणं । ७ ।

नमो उवझायाणं । ७ । ॥ १ ॥ ”

पांच अक्षरोंका तीसरा पद “नमो सिद्धाणं । ” २

पांचमां पद नव अक्षरप्रमाण “नमो लोएसवसाहूणं ३ ”

चूलिकामें ( १६ ) अक्षरप्रमाण प्रथम आलापक ॥

एसो पंच नमुक्कारो, सवपावप्पणा सणो ॥ १ ॥

चूलिकामें आठ अक्षर प्रमाण दूसरा आलापक ”

मंगलाणं च सवेसिं ॥ २ ॥ ”

चूलिकामे नव अक्षर प्रकार तीसरा आलापक

“पढमं हवइ मंगलं ॥ ३ ॥ ”

सर्व अक्षर अठसठ ( ६८ ) तिसका उपधान  
ऐसें है ॥

नंदि, देवचंदन, कायोत्सर्ग, क्षमाश्रमण, वंदनक, प्रमुख नमस्कारश्रुतस्कंधके अजिलापसैं पूर्व वत् जाणना. और अजिमंत्रित वासक्षेप जी पूर्व वत् जाणना. । तहां पूर्वसेवामें एकजक्तके अंतरे उपवास पांच, एवं दिन ११, तहां प्रथम नंदिदिन में एकजक्त, वा निविगइ, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एकजक्त, चौथे दिन उपवास, पांचमे दिन एकजक्त, ठेठे दिन उपवास, सातमे दिन एक जक्त, आठमे दिन उपवास, नवमे दिन एकजक्त, दशमे दिन उपवास, एकादशमे दिन एकजक्त. ऐसैं द्वादशम तप पूर्व सेवामें करना. । तहां पंचपरमेष्ठि पदोंकी वाचना नंदिदिना जी देनी. शक्रस्तवका पठना, वासक्षेपपूर्वक तीन नमस्कारोंका पठना, सर्व वाचनाओंमें जाणना. । तहां श्रेणिवरु आठ आचा म्ल करने, ऐसैं एकोनविंशति ( १९ ) दिन. पीठे बीसमे दिन एकजक्त, इक्कीसमे दिन उपवास, बावीसमे दिन एकजक्त, तेइवीसमे दिन उपवास, चौवीसमे दिन एकजक्त, पच्चीसमे दिन उपवास. । ऐसैं अष्टम तप उत्तर सेवामें. । पीठे चूलिकाकी वाचना एसो पंच यहांसैं लेके ह्वइ मंगलं ॥

इति नमस्कारस्योपधानं ॥ पीठे तिसकी वाचना, तिसका विधि यह है. ॥ पहिलां सामाचारीका पुस्तक पूजना, पीठे मुखवस्त्रिकासैं मुख ढांकके

ऐर्यापथिकी (इरियावहियं) पन्तिकमके द्दमाश्रमण पूर्वक कहैं. ॥

“॥ जगवन् नमुक्कारवायणासंदिसावणियं वाय णालेवावणियं वासस्केवं करेह । चेइयाइं च वंदावेह ॥”

ऐसैं नंदि करके ठवीसमें दिन एकजक्त करें, वाचना देनी. चूलिकाके चारों पदोंके सर्प उपधानोंमें प्रति दिन अव्यापार पौषध करना, सवेरे १ पौषध पारके पुनः १ नित्य पौषध ग्रहण करना, और नमस्कार सहस्र गुणना. ॥ इतिप्रथममुपधानम् ॥ १ ॥

ऐर्यापथिकीका जी उपधान ऐसैंही है. आदिकी, और अंतकी, दोनोंही नंदि तिसके—ऐर्यापथिकीके अजिलापसैं करनी. । तहां वाचनामें आठ अध्ययन, और वाचना दो,—एक पांच पदोंकी और दूसरी तीन पदोंकी; पांच पदोंकी एक चूलिका ॥

“॥ इष्टामि पडिक्कमिउं इरिआवहिआए विरा हणाए । १ । गमणागमणे । २ । पाणक्कमणे, वीयक्कमणे हरीयक्कमणे । ३ । ओसाउत्तिगणणगदगमट्ठीमक्कमासं ताणासंकमणे । ४ । जे मे जीवा विराहिया । ५ । यह एक वाचना, द्वादशम तपके पीठे देते हैं. ॥ १ ॥

“॥ एगिंदिया, वेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिदिया । ६ । अजिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइ या, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्विया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया,

तस्स मिद्वामि डुक्कमं । ७ । तस्सउत्तरीकरणेणं,  
पायवित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसह्वीकरणेणं,  
पावाणं कम्माणं निघायणछाए, ठामि काउस्सग्गं । ८ ।  
यह दूसरी वाचना, आठ आचाम्लके अंतमें देनी.  
॥ २ ॥ इसके पीठे ॥

“ ॥ अन्नथ उससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं,  
ठीएणं, जंजाइएणं उरूएणं, वायनिसग्गेणं, जमलि  
ए, पित्तमुह्वाए, ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं,  
सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं । २ ।  
एवमाइएहिं, आगारेहिं, अजग्गो अविराहिओ,  
हुज्जा मे काउस्सग्गो । ३ । जाव अरिहंताणं, जगवं  
ताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि । ४ । ताव कायं, ठाणे  
णं, मोणेणं, ऊणेणं, अप्पाणं वोसिरामि । ५ । ”  
यह चूलिकाकी वाचना, अंत दिनमें देनी. ॥  
इतिऐर्यापथिक्याउपधानम् ॥ २ ॥

अथ शक्रस्तवका उपधान कहते हैं. ॥ तहां  
नंदिआदि सर्व शक्रस्तवके अजिलापसें पूर्ववत्. ।  
तथा प्रथम दिनमें एकजक्त, दूसरे दिन उपवास,  
तीसरे दिन एकजक्त, चौथे दिन उपवास, पांचमे  
दिन एकजक्त, छठे दिन उपवास, सातमे दिन एक  
जक्त; । तहां तीन संपदायोंकी प्रथम वाचना देते  
हैं. ॥ यथा ॥

“ ॥ नमुश्रुणं अरिहंताणं जगवंताणं । १ । आङ्ग  
गराणं तिथ्यराणं सयंसंबुद्धाणं । २ । पुरिसुत्तमाणं  
पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंफरीआणं पुरिसवरगंधह  
थीणं । ३ । इत्येका वाचना ।

यह एक वाचना । नमुश्रुणं । यह पद त्रिन्न  
है । तीनोंही संपदा अनुक्रमे दो, तीन, चार पद  
वाली है । पीठे एकश्रेणिकरके निरंतर सोळां (१६)  
आचाम्ल करने । तिसमें पांच २ पदोंवाली तीन  
संपदाकी वाचना देते हैं ॥ यथा ॥

॥ लोघुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगप  
ईवाणं लोगपज्जोअगराणं । ४ । अजयदाणं चस्कुद  
याणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं । ५ । धम्म  
दयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं  
धम्मवरचाउरंतचक्कवट्ठीणं । ६ । यह दूसरी वाचना ॥

पीठे फिर जी तिसही श्रेणिकरके सोळां आचा  
म्ल करने । तिसमें दो तीन पदोंवाली तीन संप  
दाकी वाचना देनी ॥ यथा ॥

॥ अप्पहिहयवरणाणंदंसेणधराणं विश्रट्ठउमा  
णं । ७ । जिणाणं, जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धा  
णं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं । ८ । सबन्नूणं सब  
दरिसिणं सिवमयलमरुअमणंतमस्सकयमवाचाहमपुण  
राविति, सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणा  
णं जिअजयाणं । ९ । ” यह तीसरी वाचना ॥ ३ ॥

“ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ नविस्संतिणा गए काले ॥ संपइ अ वट्टमाणा, सबे तिविहेण वंदा मि ॥ ” इस अंतिमगाथाकी वाचना जी, तीसरी वाचनाके साथही देनी. ॥ इतिशक्रस्तवोपधानम् ॥ ३ ॥

अथ चैत्यस्तवका उपधान कहते हैं. ॥ नंदिआ दिपूर्ववत्. । प्रथम दिने एक जक्त, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एक जक्त; पीछे श्रेणिकरके तीन आचाम्ल करने. अंतमें तीनोंही अध्ययनोंकी सम कालें एक वाचना देनी. ॥ यथा ॥

“ ॥ अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सगं, वंदण वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माण वत्तिआए, वोहिलाजवत्तिआए, निरुवसगवत्तिआए । १ । सद्धाए, मेहाए, धीईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वट्टमाणीए, ठामिकाउस्सगं । २ । अन्नथ्यउससिण्णं—यावत्—वोसिरामि ॥ ३ ॥ ” यह एकही वाचना है. ॥ इति चैत्यस्तवोपधानम् ॥ ४ ॥

अथ चतुर्विंशतिस्तवका उपधान कहते हैं. ॥ नंदि, दो पूर्ववत् । प्रथम दिने एकजक्त, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एकजक्त, चौथे दिन उपवास, पांचमे दिन एकजक्त, छठे दिन उपवास, सातमे दिन एकजक्त. । एसें अष्टम तप । अंतमें प्रथम गाथाकी एक वाचना. यथा ॥

“ ॥ लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिथ्यरे जिणे ।

अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली । १ । ” यह  
एक वाचना ॥ १ ॥

पीठे श्रेणिकरकेही वारां ( ११ ) आचाम्ल कर  
ने. तिसके अंतमें तीन गाथाकी वाचना. ॥ यथा ॥

॥ उसज्जमजियं च वंदे, संज्जवमज्जिणंदणं च सुमइं  
च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे । १ । सुवि  
हिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जांस वासु पुज्जां च ॥ विमल  
माणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि । २ । कुंथुं अरं च  
मह्निं, वंदे मुणि सुवयं नमिजिणं च ॥ वंदामिरिठ्ठनेमिं,  
पासं तह वरू माणं च । ४ । यह दूसरी वाचना. ॥ १॥

पीठे तिस श्रेणिकरकेही तेरा ( १३ ) आचाम्ल  
करने. तिसके अंतमें तीसरी वाचना ॥ यथा ॥

॥ एवं मए अज्जिथुआ, विहुयरयमला पहीणजर  
मरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा, तिथ्यरा मे पसीयंतु  
। ५ । कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा  
सिद्धा । आरुग्गवोहिलानं समाहिवरमुत्तमं दिंतु  
। ६ । चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयास  
यरा । सागरवरगंजीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु  
॥ ७ ॥ ” यह तीसरी वाचना. ॥ ३ ॥ इति चतुर्विं  
शतिस्तवोपधानम् ॥ ५ ॥

अथ श्रुतस्तवका उपधान कहते हैं. । नंदि, दो  
पूर्ववत् । प्रथमदिने एकजक्त, दूसरे दिन उपवास,  
तीसरे दिन एकजक्त, पीठे श्रेणिकरके पांच आचाम्ल



करने. तिसके अंतमें दो गाथाओंकी और दोनों वृत्तों की समकालही वाचना.। तिसमें पांच अध्ययन है.। तिसमें प्रथमकी दो गाथाओंके दो अध्ययन ॥ यथा ॥

“ ॥” पुरकरवरदीवहे, धायइसंडे अ जंबुदीवेश्व ।  
जरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि । १ । तम  
तिमिरपम्लविळंसणस्स, सुरगणनरिंदमहिअस्स ।  
सीमाधरस्स वंदे, पप्फोमिअमोहजालस्स । २ । तीस  
रा अध्यायन वसंततिलका वृत्तसें ॥ यथा ॥

॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कद्धाणपुक्ख  
लविसालसुहावहस्स । को देवदाणव नरिंदगण  
च्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलप्प करे पमायं । ३ ।

चौथा अध्ययन शार्दूलविक्रीकृतवृत्तके पूर्वार्द्धसें । यथा

॥ लोगो जह पइठिउं जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं,  
धम्मो वट्ठुं सासउं विजयउं धम्ममुत्तरं वट्ठुं । ४।  
॥५॥” इति श्रुतस्तवोपधानम् । ६। इति पशुपधानानि ।

तथा सिद्धस्तवमें प्रथम तीन गाथाकी वाचवा यथा

“ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ।  
लोअग्ग मुवगयाणं, नमो सया सबसिद्धाणं । १ ।  
जो देवाणविदेवो, जं देवा पंजली नमंसंति । तं  
देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं । २ । इक्कोवि  
नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स । संसार  
सागराउं, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ ” शेष  
दो गाथा ॥ यथा ॥

॥ उज्जितसेवसिहरे, दिक्का नाणं च निसीहि  
 आ जस्स । तं धम्मचक्खदिं, अरिहनेमिं नमंसांमि  
 । ४ । चत्तारि अठ दस दो अ, वंदिआ जिणवरा  
 चउवीसं । परमद्वनिठिअठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसं  
 तु ॥ ५ ॥ ” इत्युपधानवाचना स्थितिः ॥ अथ  
 विस्तार, निशीथसिद्धांतसें उद्धृत उपधानप्रकरणसें  
 जानना. ॥

जावार्थः—पांच नमस्कारमें पांच उपवासका उप  
 धान होता है, आठ आचाम्ल तथा अंतमें एक  
 अष्टमतप, और वत्तीस आचाम्ल चैत्यस्तवमें एक  
 उपवास, और तीन आचाम्ल करणे. । चतुर्विंशति  
 स्तवमें एक पष्ठतप, एक उपवास, और पंचवीस  
 ( १५ ) आचाम्ल करणे. । श्रुतस्तवमें एक उपवास,  
 और पांच आचाम्ल. । तीर्थकर गणधरोंने चैत्यवं  
 दनादि सूत्रमें यह उपधान कथन करा है. ॥ ५ ॥  
 व्यापाररहित, विकथाविवर्जित, रौद्र ध्यान रहित,  
 विश्राम रहित उपयोगसहित, उपधान करे, ॥ ६ ॥  
 यह उत्सर्ग कहा. अब अपवाद कहते हैं. अथ  
 कदापि उपधानवाही बालक होवे, वा वृद्ध होवे,  
 वा शक्तिरहित तरुण होवे तो, अपनी शक्तिप्रमाण  
 उपधान प्रमाण पूर्ण करे. । रात्रिजोजनकी विरति,  
 चतुर्विधाहार, वा त्रिविधाहार, वा द्विविधाहार प्रत्या  
 ख्यानरूप करे; नवकारसहिआदि पंचखाण कर

के. १ एक शुद्ध आंबिलकरे, अथवा इतर दो आंबिल करनेसे, एक उपवास होता है. पणतालीस ( ४५ ) नवकारसहि करनेसे, एक उपवास होता है. चौबीस ( २४ ) पोरसि करनेसे, और दश ( १० ) साढपोरसी करनेसे, एक उपवास होता है. तीन निवि करनेसे, और चार एकलठाणे करनेसे, एक उपवास होता है. आचरणसें सोलां ( १६ ) पुरिमढ करनेसे उपवास होता है. चार एकासनेसे, और आठ वियासणे करनेसें जी, उपवास होता है. अर्थात् उपवासका जो फल है, सोही प्रायः पूर्वोक्त तपका फल है. इसवास्ते जिसकी पूर्वोक्त उपधानकी शक्ति न होवे सो, इन तपोंमेंसें किसी जी तपके करनेसें उपधान प्रमाण पूर्ण करे. ॥ ११ ॥

गौतमस्वामी कहते हैं. हे जगवान् ! ऐसे करते हुए प्राणीको बहोत काल होवे तो, कदापि नवकार वर्जित जि, तिसका मरण हो जावे, तो नवकार वर्जित सो प्राणी, अनुत्तर, निर्वाण, कैसें प्राप्त करें ? तिसवास्ते नवकार प्रथमही ग्रहण करो, उपधान होवे, वा न होवे. ॥ १२ ॥

महावीर स्वामी कहते हैं. हे गौतम ! जो प्राणी जिस समयमें व्रतोपचार ( उपधानारंज ) करे, तिसही समयमें, तूं जिनाज्ञाकरके ग्रहण करा है व्रतार्थ जिसने, ऐसा तिसको जाण. ॥ १४ ॥ ऐसे जिसने

उपधान करा है, सो प्राणी जवांतरमें सुलजबोधि  
होतेंहैं. और उपधानके अध्यवसायवाले जी, हे  
गौतम ! आराधक होतें है. परंतु हे गौतम ! जक्ति  
वाला जी प्राणी, जो उपधानविना श्रुतको ग्रहण  
करे, तिसको नहीं ग्रहण करनेवालेके सदृश जाण  
ना. तथा सो जीव, तीर्थकरकी, तीर्थकरके वच  
नोंकी, संघकी, और गुरुजनकी, आशातना करता  
है. सो आशातना बहुल प्राणी, हे गौतम संसा  
रमें त्रमण करता है. उपधानवीना नवकार जिसने  
पढ लिया है, तिसको जी उपधान पीठेसेजी कर  
नेसें बोधि, ( जिनधर्मप्राप्ति ) सुलज कही हैं.  
यह उपधानकरके प्रधान, निपुण, संपूर्ण जी वंदन  
विधान, जिनपूजा, पूर्वकही श्रुतोक्त नीतिकरके  
पढना. तिस पंच मंगलको स्वर, व्यंजन, मात्रा,  
विंद्, पदछेद, स्थानोंकरके शुरू पढके, चैत्यवंदन  
सूत्रको, और अर्थको विशेषकरके जाणना. तिसमे  
जहां सूत्रविषे, वा अर्थविषे, संदेह होवे तो, तिस  
को बहुशः विचारके संपूर्ण संदेहरहित करना.॥११॥

अथ शुचतीथि, करण, मुहूर्त्त, नक्षत्र, जोग,  
लग्नमें, चंद्रबलके अनुकूल हुए, कल्याणकारी प्रश  
स्त समयमें, अपने विज्ञवानुसार जगवान्का पूजन  
कर, परम जक्तिसें विधिपूर्वक साधुवर्गको प्रतिलाज  
के, अतिसमूह सहित, हर्षवशसें खडे हुवें हैं,

पुलक ( रोम ) जिसके, श्रद्धासंवेगविवेक परम वैराग्ययुक्त, निविररागद्वैषमोहमिथ्यात्वमलरूप कलंक रहित, अति उल्लसायमान, निर्मल अध्यवसाय करके, अनुसमय, त्रिचुवनगुरु जिन जगवानकी प्रतिमामें स्थापन किये हैं, नेत्र, और मन जिसने, तथा जिन चंद्रको वंदना करनेसे मैं धन्य हूं ऐसे मानते हुए, अपने मस्तकके ऊपर रचा है करकमलरूप मुकुट जिसने, जंतुरहित स्थानमें पदपदमें निःशंक सूत्रार्थको जावते ( विचारते ) हुए, ऐसे पूर्वोक्त विशेषणवाले उपधानवाहिने, जिननाथके कथन करे गंजीर समयसिद्धांतमें कुशल, शुभचारित्रसंयुक्त, अप्रमादादि बहुविध गुण संयुक्त, ऐसे गुरुके साथ, चतुर्विध संघसंयुक्त, विशेषसें निजबंधु सहित, इस निपुणविधिकरके जिनविंवको वंदना करनी. ॥ २९ ॥

तदनंतर उपधानवाही, गुणाढ्यसाधुओंको परम भक्तिसें वंदना करे. तथा साधर्मियोंको यथायोग्य प्रणामादि करे. पीठे बहुमोलके उत्कृष्ट वस्त्र प्रदान पूर्वक भक्ति करके उपधानवाहिने, श्रीसंघका जारी सन्मान करना. ॥ ३१ ॥

इस अवसरमें अढीतरें जान्या है गंजीर सिद्धांतका सार जिसने, ऐसे गुरुने, आक्षेपिणी, विक्षेपिणी, संवेदिनी, और निर्वेदिनी, यद् चार प्रकारकी

धर्मकथा श्रद्धासंवेग साधनेमें निपुण जारी प्रबंध करके करनी. ॥ ३३ ॥

पीठे तिस जव्यजीवको श्रद्धासंवेगमें तत्पर जाण के, निपुणमति आचार्य, चैत्यवंदनादि करनेमें यह वचन कहे. ॥ ३४ ॥

जो जो देवानुप्रिय । निज जन्म साफल्यताको प्राप्त करके तैने आजसे लेके जावजीवपर्यंत तिनों ही कालमें एकाग्र सुस्थिर चित्तकरके अर्हत्प्रतिमा को वंदना करनी. क्योंकि, क्षणजंगुर मनुष्यपणमें यही सार है, तहां तैने पुर्वान्हमें जिनप्रतिमाको और साधुयोको वंदना करकेही जोजन करना कल्पे, और अपराहमें जी फिर वंदना कर केही सोना कल्पे, अन्यथा नहीं. ॥ ३७ ॥

ऐसें अजिग्रहबंधन करके पीठे वर्द्धमान विद्यासें अजिमंत्रके गुरु सात मुष्टीप्रमाण गंध ( वासक्षेप ) ग्रहण करे. पीठे तिस उपधानवाहीके मस्तकऊपर " निश्चारगपारगो हविज्ञा तुमं " ऐसें उच्चारण करता हुआ गुरु, नमस्कारपूर्वक निक्षेप करे ( माले ) इस विद्याके प्रज्ञावके जोगसें निश्चय यह जव्य प्रारंजित कार्योका शीघ्र निस्तार करनेवाला, और पार होनेवाला होवे. ॥ ४१ ॥

अथ चतुर्विध संघजी, तूं, निस्तारक पारग हो,

पुलक ( रोम ) जिसके, श्रद्धासंवेगविवेक परम वैराग्ययुक्त, निविरागद्वैपमोहमिथ्यात्वमलरूप कलंक रहित, अति उल्लसायमान, निर्मल अध्यवसाय करके, अनुसमय, त्रिभुवनगुरु जिन जगवानकी प्रति मामले स्थापन किये हैं, नेत्र, और मन जिसने, तथा जिन चंद्रको वंदना करनेसे मैं धन्य हूं ऐसे मानते हुए, अपने मस्तकके ऊपर रचा है करकमलरूप मुकुट जिसने, जंतुरहित स्थानमें पदपदमें निःशंक सूत्रार्थको जावते ( विचारते ) हुए, ऐसे पूर्वोक्त विशेषणवाले उपधानवाहिने, जिननाथके कथन करे गंजीर समयसिद्धांतमें कुशल, शुभचारि त्रसंयुक्त, अप्रमादादि बहुविध गुण संयुक्त, ऐसे गुरुके साथ, चतुर्विध संघसंयुक्त, विशेषसें निजबंधु सहित, इस निपुणविधिकरके जिनविंवको वंदना करनी. ॥ ३० ॥

तदनंतर उपधानवाही, गुणाढ्यसाधुओंको परम भक्तिसें वंदना करे. तथा साधर्मियोंको यथायोग्य प्रणामादि करे. पीठे बहुमोलके उत्कृष्ट वस्त्र प्रदान पूर्वक भक्ति करके उपधानवाहिने, श्रीसंघका जारी सन्मान करना. ॥ ३१ ॥

इस अवसरमें अष्टीतरें जान्या हैं गंजीर सिद्धांतका सार जिसने, ऐसे गुरुने, आक्षेपिणी, विक्षेपिणी, संवेदिनी, और निर्वेदिनी, यद् चार प्रकारकी

धर्मकथा श्रद्धासंवेग साधनेमें निपुण चारी प्रबंध करके करनी. ॥ ३३ ॥

पीठे तिस जव्यजीवको श्रद्धासंवेगमें तत्पर जाण के, निपुणमति आचार्य, चैत्यवंदनादि करनेमें यह वचन कहे. ॥ ३४ ॥

जो जो देवानुप्रिय ! निज जन्म साफव्यताको प्राप्त करके तैंने आजसैं लेके जावजीवपर्यंत तिनों ही कालमें एकाग्र सुस्थिर चित्तकरके अर्हत्प्रतिमा को वंदना करनी. क्योंकि, द्वाणजंगुर मनुष्यपणेमें यही सार है, तहां तैंने पुर्वान्हमें जिनप्रतिमाको और साधुयोंको वंदना करकेही जोजन करना कढे, और अपराहमें जी फिर वंदना कर केही सोना कढे, अन्यथा नही. ॥ ३७ ॥

ऐसैं अजिग्रहबंधन करके पीठे वर्द्धमान विद्यासैं अजिमंत्रके गुरु सात मुष्टीप्रमाण गंध ( वासुदेव ) ग्रहण करे. पीठे तिस उपधानवाहीके मस्तकऊपर " निश्चारगपारगो हविजा तुमं " ऐसैं उच्चारण करता हुआ गुरु, नमस्कारपूर्वक निक्षेप करे ( काले ) इस विद्याके प्रज्ञावके जोगसैं निश्चय यह जव्य प्रारंजित कार्योका शीघ्र निस्तार करनेवाला, और पार होनेवाला होवे. ॥ ४१ ॥

अथ चतुर्विध संघनी, तूं, निस्तारक पारग हो,



पुलक ( रोम ) जिसके, श्रद्धासंवेगविवेक परम वैराग्ययुक्त, निविररागद्वैपमोहमिथ्यात्वमलरूप कलंक रहित, अति उल्लसायमान, निर्मल अध्यवसाय करके, अनुसमय, त्रिजुवनगुरु जिन जगवानकी प्रति मामे स्थापन किये हैं, नेत्र, और मन जिसने, तथा जिन चंद्रको वंदना करनेसे मैं धन्य हूं ऐसे मानते हुए, अपने मस्तकके ऊपर रचा है करकमलरूप मुकुट जिसने, जंतुरहित स्थानमें पदपदमें निःशंक सूत्रार्थको जावते ( विचारते ) हुए, ऐसे पूर्वोक्त विशेषणवाले उपधानवाहिने, जिननाथके कथन करे गंजीर समयसिद्धांतमें कुशल, शुभचारि त्रसंयुक्त, अप्रमादादि बहुविध गुण संयुक्त, ऐसे गुरुके साथ, चतुर्विध संघसंयुक्त, विशेषसें निजबंधु सहित, इस निपुणविधिकरके जिनविंवको वंदना करनी. ॥ २९ ॥

तदनंतर उपधानवाही, गुणाढ्यसाधुओंको परम भक्तिसे वंदना करे. तथा साधर्मियोंको यथायोग्य प्रणामादि करे. पीठे बहुमोलके उत्कृष्ट वस्त्र प्रदान पूर्वक भक्ति करके उपधानवाहिने, श्रीसंघका ज्ञारी सन्मान करना. ॥ ३१ ॥

इस अवसरमें अष्टीतरें जान्या है गंजीर सिद्धांतका सार जिसने, ऐसे गुरुने, आक्षेपिणी, विक्षेपिणी, संवेदिनी, और निर्वेदिनी, यद चार प्रकारकी

धर्मकथा श्रद्धासंवेग साधनेमें निपुण चारी प्रबंध करके करनी. ॥ ३३ ॥

पीठे तिस जव्यजीवको श्रद्धासंवेगमें तत्पर जाण के, निपुणमति आचार्य, चैत्यवंदनादि करनेमें यह वचन कहे. ॥ ३४ ॥

जो जो देवानुप्रिय ! निज जन्म साफल्यताको प्राप्त करके तैंने आजसैं लेके जावजीवपर्यंत तिनों ही कालमें एकाग्र सुस्थिर चित्तकरके अर्हत्प्रतिमा को वंदना करनी. क्योंकि, द्वाणजंगुर मनुष्यपणमें यही सार है, तहां तैंने पुर्वान्हमें जिनप्रतिमाको और साधुयोंको वंदना करकेही जोजन करना कल्पे, और अपराहमें जी फिर वंदना कर केही सोना कल्पे, अन्यथा नहीं. ॥ ३७ ॥

ऐसैं अजिग्रहबंधन करके पीठे वर्द्धमान विद्यासैं अजिमंत्रके गुरु सात मुष्ठीप्रमाण गंध ( वासुदेव ) ग्रहण करे. पीठे तिस उपधानवाहीके मस्तकजपर " निश्चारगपारगो हविज्जा तुमं " ऐसैं उच्चारण कर ता हुआ गुरु, नमस्कारपूर्वक निक्षेप करे ( काले ) इस विद्याके प्रज्ञावके जोगसैं निश्चय यह जव्य प्रारंजित कार्योंका शीघ्र निस्तार करनेवाला, और पार होनेवाला होवे. ॥ ४१ ॥

अथ चतुर्विध संघजी, तं निस्तारक पारग हो,

तूं धन्य है. सलक्षण है, इत्यादि बोलता हुआ, तिसके मस्तकऊपर वासक्षेप करे. ॥ ४३ ॥

पीठे जिनप्रतिमाके पूजादेशसें सुरजिगंधसंयुक्त अम्लान श्वेतमाला ग्रहण करके, गुरु अपने हाथों से तिस उपधानवाहीके दोनों खंधोंऊपर आरोपण करता हुआ, शुद्ध चित्तकरकेनिसंदेह ऐसा वचन कहे. ॥ ४४ ॥

अच्छीतरें प्राप्त किया निज जन्म जिसने, तथा संचय करा है अतिजारी पुण्यका समूह जिसने, ऐसैं जो जो जन्म ! तेरी नरकगति, और तिर्यग्गति, अवश्यमेव बंद होगई हे सुंदर ! आजसें लेके, तूं अपयस, नीच गोत्रोंका बंधक नहीं है. तथा जन्मांतरमें जी, यह पंचनमस्कार तुझको दुर्लभ नहीं है. पांच नमस्कारके प्रज्ञावसें जन्मांतरमें जी तुझको प्रधान जाति, कुल, आरोग्य संपदाएं प्राप्त होवेगी. और इसके प्रज्ञावसें मनुष्य कदापि संसारमें दास, प्रेय्य, दुर्जग, नीच. और विकर्षेण्य जिय नहीं होते हैं. किं बहुना. जोइस विधिसें इस श्रुतज्ञानको पढके श्रुतोक्त विधिसें शुद्ध आचारमें—क्रिया करे, वे, यदि तिसही जन्ममें उत्तम निर्वाणको प्राप्त न होवे तो, अनुत्तर ग्रैवेयकादि देवलोकोंमें चिरकाल क्रीडा करके उत्तम कुलमें उत्कृष्ट प्रधान सर्वांगसुंदर प्रकट सर्वकला प्राप्त करी

हैं जिनोंने, ऐसेलोकोंके मनको आनंद देनेवाले होके, देवेंद्रसमान ऋद्धिवाले, दयामें तत्पर, दानविनयसंयुक्त, कामजोगोंसें विरक्त, संपूर्ण धर्मके अनुष्ठानसें, शुद्ध ध्यानरूप अग्निसें चार घातिकर्मरूप इंधन कौ दग्ध किये हैं—जिनोंने, ऐसे महासत्त्व, निर्मल केवल ज्ञान, सर्व मलकर्मसें रहित, होकर शीघ्र सिद्ध होते हैं. ॥ ५३ ॥ यह निर्मल फल जाणके बहोत मान देने योग्य जो देव, सोही ज्ये सूरि, ऐसे जो जिन तिनके वचनसें यह उपधान महानि शीघ्र सूत्रसें सिद्ध करो.—इस अंतिम गाथामें प्रकरणकर्त्ता श्रीमान देवसूरिने जगवान्के 'महमाणदेवसूरिस्त' इस विशेषणद्वारा अपना जी नाम, सूचन करा है. ॥ ५४ ॥ इत्युपधानप्रकरणज्ञावार्थः॥

॥ इत्युपधानविधिः ॥

अथ मालारोपण विधि कहते हैं. ॥ तहां पिठ लाही नंदि क्रम जाणना. । और इतना विशेष है कि, मालारोपनतपके पूर्ण हुए तत्कालही, वा दिनांतरमें होता है तहां यह विधि है. ॥ मालारोपणसें पहिले दिनमें साधुओंको अन्न पान वस्त्र पात्र वस्ति पुस्तक दान देवे, संघको जोजन देवे, वस्त्रादिकसें संघकी पूजा करे, शुद्ध तिथि वार नक्षत्र लग्नमें, दीक्षाके उचित दिनमें, परम युक्तिसें बृहत्स्नात्र विधिसें जिनपूजा करे, माता पिता परिजन साधर्मि

कादिकोंको एकठे करे, पीठे मालाग्राही कृतउचित वेप, कृतधम्मिल, उत्तरासंगवाला, निजवर्णानुसारसैं जिनोंपवीत उत्तरीयादिधारी, सज करके प्रचुरगंधादि उपकरण अद्भुत नालिकेर हाथमें लेके पूर्ववत् सम वसरणको तीन प्रदक्षिणा करे. । पीठे गुरुके समीपे क्षमाश्रमणपूर्वक कहे ॥ “ इच्छाकारेण तुप्पे अम्हं पंचमंगलमहासुअरकंध इरिआवहिआ सुअरकंध, स क्खथयसुअरकंध, चेइअथयसुअरकंध, चउवीसथयसु अरकंध, सुयथयसुअरकंध, अणुजाणावणिअं, वासखे वं करेह ” ॥ पीठे गुरु जी अग्निमंत्रित वासक्षेप करे. । फिर श्राद्ध क्षमाश्रमणपूर्वक कहे “ चेइआइं च वंदावेह ” पीठे वर्द्धमानस्तुतियोंसैं चैत्यवंदन कराना, शांतिदेवादि स्तुति पूर्ववत्. फिर शक्रस्तव अर्हणादि स्तोत्र कहना. पूर्ववत्. । पीठे ऊठके “पंच मंगलमहासुअरकंध पक्कमणसुअरकंध जावारिहं तथय ठवणारिहंतथय चउवीसथय नाणथय सिद्धथय अणुजाणावणिअं करेमि काउस्सगं अन्न थय उससिएणं—यावत्—अप्पाणं वोसिरामि ” कह के चतुर्विंशतिस्तव चिंतन करे, पारके प्रकट चतुर्विंश तिस्तव पढे. । गुरु तीनवार परमेष्ठिमंत्र पढके आसन ऊपर बैठ जावे, संघ और परिजनसहित श्राद्धको जो जो देवाणुपिया, संपाविअ निययजम्मसाफह्वं ॥ तुमए अज्जाप्पजिई, तिकावं जावजीवाए ॥ १ ॥

वन्दे अवाइं चेइआइं, एगगसुथिरचित्तेणं ॥

खणजंगुराओ मणुअ, तणज इणमेव सारंति ॥ २ ॥

तथ्य तुमे पुवएहे, पाणंपि न चेव ताव पायवं ॥

नो जाव चेइआइं, साहूविअ वंदिआ विहिणा ॥ ३ ॥

मअएहे पूणरवि, वंदिऊण निअमेण कप्पए जुतुं ॥

अवरएहे पुणरवि, वंदिऊण निअमण सुअणंति ॥ ४ ॥

इत्यादि महानिशीथमध्यगत वीस गायामें कही हुई देशना देके, तीन संध्यामें त्रैलोक्यवन्दन साधुवन्दन करनेके अजिग्रह विशेषोंको देवे. पीठे वासमंत्रके सात गंधकी मुष्टी “ निश्चारगपारगो होहि ” ऐसैं कहता हुआ गुरु, तिसके शिरमें प्रक्षेप करे । पीठे अक्षतसहित वासक्षेपको मंत्रे । तिस समयमें सुर जिगंध अम्लान श्वेत पुष्पोंके समूहसे ग्रंथन करी हुई मालाको जिनप्रतिमाके पगोंऊपर स्थापन करे । सूरि खमा होके अजिमंत्रित वासको जिनचरणोंके ऊपर क्षेप करे, पास रहे साधु साध्वी श्रावक श्रावि का सबको गंधाक्षत देवे. । श्राद्ध नमस्कारअनुज्ञा केवास्ते तीन प्रदक्षिणा देवे. । तब गुरु “ निश्चारग पारगो होहि गुरुगुणेहिं बुद्धाहि ” ऐसे कहे. और जन ( संघ ) “ पूर्णमनोरथवाला तूं हुआ है, तूं धन्य है, तूं पुण्यवान् है ” ऐसैं कहते हुए उनके ऊपर गुरुसंघादि वासक्षेप करे । पीठे फिर श्राद्ध समवसरणको तीन प्रदक्षिणा देवे । पीठे गुरु और

सम वसरणको तीन प्रदक्षणा देवे, पीठे गुरुसंघसहित  
 समवसरणको तीन प्रदक्षिणा देवे, पीठे नमस्कार  
 दिश्रुतस्कंधअनुज्ञापनार्थ कायोत्सर्ग करे, एकलोग  
 सकाकाजसग करें, पारके अगट लोगस्स कहे.  
 पीठे माला धारण करनेवाला तिसके खजनौंकेसाथ  
 प्रतिमाके आगे जाके शक्रस्तव पढके “आणुजा  
 णज मे जयवं अरिहा ” ऐसैं कहके जिनपादजपरि  
 पूर्व स्थापित मालाको लेके निजबंधुके हाथमें स्थाप  
 न करके नंदिके समिप आय कर, श्राद्ध, मालाको  
 गुरुसे मंत्रित करावे, । पीठे गुरु खना होकर उपधा  
 नविधिका व्याख्यान करे. सो श्राद्ध जी, खना होके  
 श्रवण करे. “परमपयपुरिपट्ठि ” इत्यादि मालाकी  
 गाथा महिमां दर्शकसैं गुरु देशना करे. ।  
 तत्तो जिणपडिमाए, पूआदेसाओ सुरजिगंधं ॥  
 अमिलाण सिअदामं, गिण्हओ गुरुणा सहवेणं ॥१॥  
 तस्सोजयखंधेसु, आरोवंतेण सुद्धचित्तेण ॥  
 निसंदेहं गुरुणा, वत्तवं एरिसं वयणं ॥ २ ॥  
 जो जो सुलद्धनिअजम्म, निचिअअइगरुअपुत्तपज्जार ॥  
 नारयतिरिअगईओ, तुश्चावस्सं निरुद्धाओ ॥ ३ ॥  
 नो बंधगोसि सुंदर, तुममित्तो अकयनीअगुत्ताणं ॥  
 नो दुद्धहो तुह जम्मं, तरेवि एसो नमुक्कारो ॥ ४ ॥  
 पंचनमुक्कारजावओ अ जम्मंतरेवि किर तुश्च ॥  
 जाईकुलरुवग्ग, संपयाओ पहाणाओ ॥ ५ ॥

अन्नं च इमाश्चोच्चिन्नं न हन्ति मण्डुआ कया विजीअलोए  
 दासा पेसा दुजगा, नीआ विगलिंदिआ चेव ॥ ६ ॥  
 किं बहुणा जे इमिणा, विहिणा एअं सुअं अहिजित्ता ॥  
 सुअजणिअ विहाणेणं, सुऊे सीले अन्निरमिज्जा ॥ ७ ॥  
 नो ते जइ तेणंचिअ, नवेण निवाणमुत्तमं पत्ता ॥  
 तोणुत्तर गेविज्जाइएसु मुइरं अन्निरमेजं ॥ ८ ॥  
 उत्तमकुलम्मि उक्किठ, लठसवंगसुंदरापयमा ॥  
 सब्बकलापतठा, जणमणआणंदणा होजं ॥ ९ ॥  
 देविंदोवमरिद्धी, दयावरा ढाणविणयसंपन्ना ॥  
 निविणकामजोगा, धम्मं सयलं अणुठ्ठेजं ॥ १० ॥  
 सुहृक्षाणानलनिदहु, घाइकम्मिधणा महासत्ता ॥  
 उप्पन्नविमलनाणा, विहुयमला ऊत्ति सिद्धन्ति ॥ ११ ॥

यह गाथा तीनवार गुरु कहे । इन गाथायोंका  
 जावार्थ उपधानप्रकरणजावार्थमें लिख दिया है. ॥

पीठे तिसके स्कंधमें मालाप्रक्षेप करनी. ॥ पीठे  
 श्राद्धवर्ग आरात्रिक ( आरती ) गीतनृत्यादि बहु  
 त करे. । उपधानवाही श्रावकने तिस दिनमें आचा  
 म्लादि तप करना, यदि पौषधशालामें मालारोपण  
 होवे, तदा संघसहित जिनमंदिरमें जावे, चैत्यवं  
 दना करके फिर पौषधागामें आथकर मंरुलीपूजा  
 दि करे ॥ इस उपधानविधिको निशीथ, महानि  
 शीथ, सिद्धांतके पढनेवालोंनेश्रुतसामायिकसमान  
 माना है. और निशीथ महानिशयके तिरस्कार



कौशेय को ही स्वीकार करा है. तिनोंने तो प्रतिभोद्धहनविधिकोही श्रुतसामायिक कथन करा है. ॥ माला श्री कितनेक कौशेय पट्टसुत्रमयी ( रे शमी ) स्वर्ण, पुष्प, मोति, माणिक्य गर्जित, आरोपते हैं. और कितनेक श्वेत पुष्पमयी आरोपते हैं. तिसमें तो, अपनी संपत्तिही प्रमाण है.

॥ इति श्रुतसामायिक विधिः ॥

॥ अथ श्रावक दिन चर्या ॥

दो मुहुर्त्त शेष रात्रि रहे श्रावक सूता ऊठे, मल मूत्रकी शंका दूर करे, और शुचि होकर पवित्र आसनऊपर स्थित हुआ यथाविधिसें परमेष्ठि महा मंत्रका जाप करे. पीठे कुल, धर्म, व्रत, श्रद्धाका, विचार करके, और स्तोत्रपाठसंयुक्त चैत्यवंदन करे, अपने घरमें, वा पौषधशालादि में स्थित होकर, प्रतिक्रमणादि करे. । पीठे प्रत्युष कालमें अपने घरमें गान करके, शुचि होके, शुचि वस्त्र पहिरके, संसारिक सुख, और नेनेवाले, धि, के पूजा करे. । तिसवास्ते, कथनानुसारें करते हैं.

॥

करी, स्वर्णानुसार जिनोपवीत उत्तरीय उत्तरासंग धारी, मुखकोश बांधी, एकाग्रचित्त, एकांतमें जिन पूजन, करे. । प्रथम जल, पत्र, पुष्प, अक्षत, फल, धूप, अग्नि, दीपक, गंधादिकोंको निःपापता करे. ॥

॥ जलादिकोंकी शुद्धीके मंत्र ॥

“ ॥ ॐ आपोऽपकाया एकेंद्रिया जीवा निरवद्यार्हत्पूजायां निर्व्यथाः संतु, निरपायाः संतु, सद्गतयः संतु, न मेस्तु संघट्टनहिंसापापमर्हदर्वने ॥ ” इति जलाजिमंत्रणम् ॥

“ ॥ ॐ वनस्पतयो, वनस्पतिकाया जीवा, एकेंद्रिया, निरवद्यार्हत्पूजायां, निर्व्यथाः संतु, निरपायाः संतु, सद्गतयः संतु, न मेस्तु संघट्टनहिंसापापमर्हदर्वने ॥ ” इतिपत्रपुष्पफलधूपचंदनाद्यजिमंत्रणम् ॥

“ ॥ ॐ अग्नयोऽग्निकायाजीवा, एकेंद्रिया, निरवद्यार्हत्पूजायां निर्व्यथाः संतु, निरपाया संतु, सद्गतयः संतु, नमेस्तु संघट्टनहिंसा पापमर्हदर्वने ॥ ’ इति वन्हिदीपाद्यजिमंत्रणम्॥सर्वका अजिमंत्रण वासक्षेपसंतीनवार करना. ॥ पीठे । पुष्पगंधादि हाथमें लेके ॥

“ ॥ ॐ त्रसरूपोहं, संसारिजीवः, सुवासनः, सुमेध एकचित्तो, निरवद्यार्हदर्वने निर्व्यथो ज्ञूयासं, निःपापो ज्ञूयासं, निरुपद्रवो ज्ञूयासं, मत्सं श्रिता अन्येपि संसारिजीवा निरवद्यार्हदर्वने निर्व्यथा ज्ञूयासुः, नि.पापाज्ञूयासुः ॥ ”

करनेवालोंने नही अंगीकार करा है. तिनोंने तो प्रतिमोच्छहनविधिकोही श्रुतसामांयिक कथन करा है. ॥ माला जी कितनेक कौशेय पट्टसुत्रमयी ( रे शमी ) स्वर्ण, पुष्प, मोति, माणिक्य गर्जित, आरोपते हैं. और कितनेक श्वेत पुष्पमयी आरोपते हैं. तिसमें तो, अपनी संपत्तिही प्रमाण है.

॥ इति श्रुतसामांयिक विधिः ॥

॥ अथ श्रावक दिन चर्या ॥

दो मुहुर्त्त शेष रात्रि रहे श्रावक सूता ऊठे, मल मूत्रकी शंका दूर करे, और शुचि होकर पवित्र आसनऊपर स्थित हुआ यथाविधिसें परमेष्ठि महा मंत्रका जाप करे. पीठे कुल, धर्म, व्रत, श्रद्धाका, विचार करके, और स्तोत्रपाठसंयुक्त चैत्यवंदन कर के, अपने घरमें, वा पौषधशालादि में स्थित होकर, प्रतिक्रमणादि करे. । पीठे प्रत्युष कालमें अपने घरमें स्नान करके, शुचि होके, शुचि वस्त्र पहिरके, संसारिक सुख, और मोक्ष देनेवाले, अरिहंतकी पूजा करे. । तिसवास्ते जिनार्चनविधि, अर्हत्कल्पके कथनानुसारें कहते हैं ॥

॥ अर्हत् कल्पोक्त जिनपूजा विधि ॥

आरू प्राप्तगुरुउपदेश, जिनघरमें, वा बडे मंदिरमें, शिखा बांधी, शुचि वस्त्र पहिरि, उत्तरासंग

करी, स्वर्णानुसार जिनोपवीत उत्तरीय उत्तरासंग धारी, मुखकोश बांधी, एकाग्रचित्त, एकांतमें जिन पूजन, करे. । प्रथम जल, पत्र, पुष्प, अक्षत, फल, धूप, अग्नि, दीपक, गंधादिकोंको निःपापता करे. ॥

॥ जलादिकोकी शुद्धीके मंत्र ॥

“ ॥ ॐ आपोऽपकाया एकेंद्रिया जीवा निरव द्यार्हत्पूजायां निर्व्यथाः संतु, निरपायाः संतु, सद्गतयः संतु, न मेस्तु संघट्टनहिंसापापमर्हदर्चने ॥ ” इति जलाजिमंत्रणम् ॥

“ ॥ ॐ वनस्पतयो, वनस्पतिकाया जीवा, एकेंद्रिया, निरवद्यार्हत्पूजायां, निर्व्यथाः संतु, निरपायाः संतु, सद्गतयः संतु, न मेस्तु संघट्टनहिंसापापमर्हदर्चने ॥ ” इतिपत्रपुष्पफलधूपचंदनाद्यजिमंत्रणम् ॥

“ ॥ ॐ अग्नयोऽग्निकायाजीवा, एकेंद्रिया, निरव द्यार्हत्पूजायां निर्व्यथाः संतु, निरपाया संतु, सद्गतयः संतु, नमेस्तु संघट्टनहिंसा पापमर्हदर्चने ॥ ” इति व न्हिदीपाद्यजिमंत्रणम् ॥ सर्वका अजिमंत्रण वासदेवसे तीनवार करना ॥ पीठे । पुष्पगंधादि हाथमें लेके ॥

“ ॥ ॐ त्रसरूपोहं, संसारिजीवः, सुवासनः, सुमेध एकचित्तो, निरवद्यार्हदर्चने निर्व्यथो ज्ञूयासं, निःपा पो ज्ञूयासं, निरुपद्रवो ज्ञूयासं, मत्सं श्रिता अन्येपि संसारिजीवा निरवद्यार्हदर्चने निर्व्यथा ज्ञूयासुः, निःपा पाज्ञूयासुः ॥ ”

ऐसें कहके अपने आपको तिलक करना, पुष्पादिकरके अपना शिर अर्चन करना. ॥ फिर पुष्प अक्षतादि हाथमें लेके ॥

“ ॐ पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतित्रसकाया एकस्मिन्निचतुः पंचेंद्रियास्तिर्यङ्मनुष्यनारकदेवगतिगताश्च तुर्दशरज्ज्वात्मकलोकाकाशनिवासिनः इह जिनेन कृतानुमोदनाः संतु, निःपापाः संतु, निरपायाः संतु, सुखिनः संतु प्राप्तकामाः संतु, मुक्ताः संतु, बोधमाप्नुवन्तुः ॥ ”

ऐसें पढ़के दशोंदिशाओंमें गंध, जल, अक्षतादि द्रोप करना. पीठे ।

शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता ज्ञवन्तु ज्ञूतगणाः॥  
दोषा प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखी ज्ञवन्तु लोकाः ॥ १ ॥  
सर्वेऽपि संतु सुखिनः, सर्वे संतु निरामयाः ॥

सर्वे जड्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिदुःखज्ञात् जवेत् ॥२॥

यह आर्या और अनुष्टुप् ठंड पढ़ने. ॥ पीठे ॥

“ ॐ ज्ञूतधात्री पवित्रास्तु अधिवासितास्तु सुप्रोषितास्तु ॥ ” ऐसें पढ़के प्रथम दीपी हुई जूमिमें जलसें सेचन करे ॥ पीठे ॥

“ ॐ स्थिराय शाश्वताय निश्चलाय पीठाय नमः ॥ ”

ऐसें पढ़के धोयके चंदनसें लेपन करके कसें अंकित ऐसा पूजापट्ट ( २ ) करे, और चैत्यमें तो स्थिरचिह्न

मंत्रोंसे जूमिजलपट्टादि अधिवासन करने. पीठे. ॥

“ ॥ ॐ अत्र क्षेत्रे, अत्र काले, नामार्हतो, रूपार्हतो, अव्यार्हतो, जावार्हतः समागताः, सुस्थिताः, सुनिष्ठिताः, सुप्रतिष्ठिताः संतु ॥ ’

ऐसे पढके अर्हत् प्रतिमाको स्थापन करे निश्चलविंवके हुए, चरण अधिवासन करे. ॥ पीठे अंजलि में पुष्प लेके ॥

“ ॥ ॐ नमोर्हज्यः सिद्धेज्यस्तीर्णेज्यस्तारकेज्यो बुद्धेज्यो बोधकेज्यः सर्वजंतुहितेज्यः इह कल्पनविंवे जगवंतोर्हतः सुप्रतिष्ठिताः संतु ॥ ”

ऐसे मौन करके कहके जगवत्के चरणोपरि पुष्प स्थापन करे. । फिर जी जलार्द्र फूलोंसे पूजापूर्वक कहे. ॥ यथा ॥

“ ॥ स्वागतमस्तु सुस्थितमस्तु सुप्रतिष्ठास्तु ॥ ’ पीठे, फिर पुष्पाजिपेक करके ॥

“ ॥ अर्घ्यमस्तु, पाद्यमस्तु आचमनीय मस्तु, सर्वोपचारे पूजास्तु ॥ ” इन वचनोंकरके बारंवार जिनप्रतिमाके ऊपर जलार्द्र पुष्पारोपण करे ॥ पीठे जल लेके ।

ॐ अर्हं वं । जीवनं तर्पणं हृद्यं, प्राणदं मलनाशनं ॥ जलं जिनार्चनेत्रैव, जायतां सुखहेतवे ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके जलसे प्रतिमाको अजिपेक करे.

पीठे चंदन कुंकुम कर्पूर कस्तूरी आदि सुगंध हाथमें लेके ॥

ॐ अर्हं । इदं गंधं महामोदं, बृहणं प्रीणनं सदा ॥  
जिनार्चने च सत्कर्म, संसिद्ध्यै जायतां मम ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके विविध गंध जिनप्रतिमाको विलेपन करे. ॥ पीठे पुष्पपत्रादि हाथमें लेके ॥

ॐ अर्हं हं । नानावर्णं महामोदं, सर्वत्रिदशवह्मजं  
जिनार्चनेत्र संसिद्ध्यै, पुष्पं जवतु मे सदा ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके जिनप्रतिमाके ऊपर सुगंधमय विविध वर्णके पुष्प चढावे. ॥

ॐ अर्हं तं । प्रीणनं निर्मलं वद्वयं, मांगद्वयं सर्वसिद्धिदं ॥  
जीवनं कार्यसंसिद्ध्यै, ज्ञूयान्मे जिनपूजने ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके जिनप्रतिमाके ऊपर अक्षत आरोपण करे. ॥ सुपारी प्रमुख फल हाथमें लेके जायफलं स्वर्गफलं, पुण्यमोक्षफलं फलं ॥

वद्याजिनार्चनेत्रैव, जिनपादाग्रसंस्थितम् ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके जिनपादाग्रे फल ढोवे. ॥ पीठे धूप लेके ॥

ॐ अर्हं रं । श्रीखंभागरुकस्तूरी, डुमनिर्याससंजवः ॥  
प्रीणनः सर्व देवानां, धूपोस्तु जिनपूजने ॥ १ ॥

यह पढके अग्निमे धूपक्षेप करे ॥ पीठे फूल लेके ।

" ॥ ॐ अर्हं जगवद्भयोर्हद्भयो जलगंधपुष्पाक्षत  
फलधूपदीपैः संप्रदानमस्तु ॐ पुण्याहं प्रीयतां जग

वंतोर्हृतस्त्रिलोकस्थिताः नामाकृतिद्रव्यजावयुताः स्वा  
हा ॥ ” यह पढ़के फिर जिनपूजन करे ॥ पीठे  
वासक्षेप लेके ॥

“ ॥ ॐ सूर्यसोमांगारकबुधगुरुशुक्रनैश्वरराहुकेतु  
मुखाग्रहाः इह जिनपादाग्रे समायांतु पूजां प्रतीक्षं  
तु ॥ ” ऐसे पढ़के जिनपादसें नीचे स्थापित ग्रहोंके  
ऊपर, वा स्नानपट्टके ऊपर वासक्षेप करे ॥ पीठे ॥

“ ॥ आचमनमस्तु गंधमस्तु पुष्पमस्तु अक्षत  
मस्तु फलमस्तु धूपोस्तु दीपोस्तु ॥ ” ऐसे पढ़के क्रमसें  
जल, गंध, पुष्प, अक्षत, फल, धूप, दीपसें ग्रहोंका  
पूजन करे ॥ पीठे अंजलिमें फूल लेके ।

“ ॥ ॐ सूर्यसोमांगारकबुधगुरुशुक्रनैश्वरराहुके  
तुमुखाग्रहाः सुपूजिताः संतु, सानुग्रहाः संतु, तुष्टिदा  
संतु, पुष्टिदाः संतु, मांगव्यदाः संतु, महोत्सवदाः  
संतु ॥ ” ऐसे कहके ग्रहोंके ऊपर पुष्पारोपण  
करे ॥ फिर इसी रीतिकरके ।

“ ॥ ॐ इंद्राग्निमनिर्ऋतिवरुणवायुकुबेरेशानना  
गब्रह्मणो लोकपालाः सविनायकाः सक्षेत्रपालाः इह  
जिनपादाग्रे समागच्छंतु पूजां प्रतिक्षंतु ॥ ” ऐसे कहके  
पूजापट्टो परि लोकपालोंको वासक्षेप करे ॥ पीठे ॥

“ ॥ आचमनमस्तु गंधमस्तु पुष्पमस्तु अक्षत  
मस्तु फलमस्तु धूपोस्तु दीपोस्तु ॥ ” ऐसे पढ़के



क्रमसें जल, गंध, पुष्प, अक्षत, फल, धूप, दीपसें  
लोकपालोंका पूजन करे. ॥ पीठे अंजलिमें पुष्प लेके।

“ ॥ ॐ इंद्राग्निमनिर्कृतिवरुणवायुकुवैरेशाननाग  
ब्रह्मणो लोकपालाः सविनायकाः सक्षेत्रपालाः सुप्र  
जिताः संतु, सानुग्रहाः संतु, तुष्टिदाः संतु, पुष्टिदाः  
संतु, मांगल्यदाः संतु, महोत्सवदाः संतु ॥ ” यह  
पढ़के लोकपालोपरि पुष्पारोहण करे ॥ पीठे पुष्पां  
जलि देके ॥

“ ॥ अस्मत्पूर्वजा गोत्रसंज्ञवा देवगतिगताः सुपू  
जिताः संतु, सानुग्रहाः संतु, तुष्टिदाः संतु, पुष्टिदाः  
संतु, मांगव्यदाः संतु, महोत्सवदाः संतु ॥ ” ऐसैं  
कहके जिनपादाग्रै पुष्पांजलिक्षेप करे. ॥ पीठे फिर  
जी पुष्पांजलि लेके ॥

“॥ ॐ अर्हं अर्हं भूक्काष्टनवत्युत्तरशतदेवजातयः  
सदेव्यः पूजां प्रतिष्ठन्तु सुपूजिताः संतु, सानुग्रहाः  
संतु तुष्टिदाः संतु, पुष्टिदाः संतु, मांगल्यदाः संतु,  
महोत्सवदाः संतु ॥ ” ऐसैं कहके जिनपादाये अंज  
लिद्वेष करे ॥

पीठे अंजलिके अग्रजागमें 'पुष्प धारण करके  
अर्हन्मंत्र स्मरण करके तिस फूलसें जिनप्रतिमाको  
पूजे ॥ अर्हन्मंत्रो यथा ॥

“॥ ॐ अर्हं नमो अरहंताणं, ॐ अर्हं नमो सयं  
संबुद्धाणं, ॐ अर्हं ”

यह त्रिपद मंत्र श्रीमत् अर्हन् जगवन्तोंके आगे  
नित्य स्मरण करे कैसा है मंत्र ? देवलोकादि सुख  
और मोक्षका, देनेवाला, सर्व पापोंका नाश करने  
वाला है.। विशेष इतना है कि, यह मंत्र अपवित्र  
पुरुषोंने, उपयोगरहित पुरुषोंने, नहीं स्मरण करना.  
तथा उच्चशब्दसें नहीं स्मरण करना, नास्तिकोंको  
और मिथ्यादृष्टियोंको नहीं सुनाना.। यह पूर्वोक्त  
अर्हन्मंत्र एकसौआठ ( १०८ ) बार, वा तदर्द्ध ५४  
बार जपना ॥ पीछे दो पात्रोंमें नैवेद्य धरे. पीछे  
एक पात्रमें जल लेके ।

‘ ॐ अर्हं । नानापद्मसंपूर्णं, नैवेद्यं सर्वमुत्तमं ।

जिनाग्रे ढौकितं सर्वं, संपदे मम जायतां ॥ १ ॥

यह पढ़के जलढोकना ॥ फिर दूसरा जल लेके।

“ ॥ ॐ सर्वेगणेशक्षेत्रपालाद्याः सर्वेग्रहाः सर्वे  
दिक्पालाः सर्वेऽस्मत्पूर्वजोद्भवादेवाः सर्वे अष्टनवत्युत्त  
रशतं देवजातयः सदेव्योऽर्हज्जक्ताः अनेन नैवेद्येन  
संतर्पिताः संतु, सानुग्रहाः संतु, तुष्टिदाः संतु, पुष्टि  
दाः संतु, मांगद्व्यदाः संतु, महोत्सवदाः संतु ॥ ”  
ऐसे कहके दूसरे नैवेद्यके पास जल ढोकन करे. ॥  
यो जन्मकाले पुरुषोत्तमस्य, सुमेरुशृंगे कृतमज्जनैश्च ॥  
देवैः प्रदत्तकुसुमांजलिस्स, ददातु सर्वाणिसमीहितानि  
राज्याजिपेकसमये त्रिदशाधिपेन ।

उन्नध्वजांक तलयोः पदयोर्जिनस्य ॥

क्षितोतिजक्तिजरतः कुसुमांजलिर्यः ।

स प्रीणयत्वनुदिनं सुधियां मनांसि ॥ २ ॥

देवैर्द्वैः कृतकेवले जिनपतौ सानंदजक्त्यागतैः ।

संदेहव्यपरोपणक्षमशुचव्याख्यानबुद्ध्याशयैः ॥

श्यामोदान्वितपारिजातकुसुमैर्यः स्वामिपादाग्रतो ।

मुक्तस्स प्रतनोतु चिन्मयहृदां जद्वाणि पुष्पांजलिः ॥ ३ ॥

इन तीनों वृत्तोंकरके तीन बार पुष्पांजलिक्षेप करे ॥

लावण्यपुण्यांगजृतोर्हतोयस्तद्वृष्टिजावं सहसैव धत्ते ।

सविश्वजर्तुर्ध्ववणावतारो, गर्जावतारं सुधियां विहंतुः ॥ १ ॥

लावण्यैकनिधेर्विश्व, जर्तुस्तद्वृद्धिहेतुकृत् ॥

लवणोत्तारणं कुर्या, ज्वसागरतारणम् ॥ २ ॥

इन दो वृत्तोंकरके दो बार लवण उत्तारना ॥

साक्षारतां सदासक्तां, निहंतुमिव सोद्यमः ॥

लवणाब्धिर्ध्ववणांबु, मिषात्ते सेवते पदौ ॥ १ ॥

यह पदके लवणमिश्र जल उत्तारना ॥

शुवनजनपवित्रिताप्रमोदप्रणयनजीवनकारणं गरीं

यः ॥ जलमविकलमस्तु तीर्थनाथक्रमसंस्पर्शिसुखावहं

जनानाम् ॥ १ ॥

यह पदके केवल जलक्षेप करे ॥

सप्तजीतिर्विधातार्हं सप्तव्यसननाशकृत् ॥

यत् सप्तनरकद्वारसप्ताररितुलां गतम् ॥ १ ॥

सप्तांगराज्यफलदानकृतप्रमोदं ।

सत्सप्ततत्त्वविदनंतकृतप्रबोधम् ॥

तच्छक्रहस्तधृतसंगतसप्तदीप, ।

मारात्रिकं चवतु सप्तमसङ्गुणाय ॥ २ ॥

यह पढके आरात्रिकावतारण करे. ॥

विश्वत्रयज्वैर्जीवैः, सदेवासुरमानवैः ॥

चिन्मंगलं श्रीजिनेन्द्रात्, प्रार्थनीयं दिने दिने ॥ १ ॥

यन्मंगलं जगवतः प्रथमार्हतः श्री,

संयोजनैः प्रतिवच्रूव विवाहकाले ॥

सर्वासुरासुरवधूमुखगीयमानं ।

सर्वर्षिजिश्च सुमनोजिरुदीर्यमाणम् ॥ २ ॥

दास्यंगतेषु सकलेषु सुरासुरेषु ।

राज्येर्हतः प्रथमसृष्टिकृतो यदासीत् ॥

सन्मंगलं मिथुनपाणिगतीर्थवारि ।

पादाजिपेक विधिनात्युपचीयमानम् ॥ ३ ॥

यद्विश्वाधिपतेः समस्ततनुचृत्संसारनिस्तारणे ।

तीर्थे पुष्टिमुपेयुषि प्रतिदिनं वृद्धिं गतं मंगलम् ॥

तत् संप्रत्युपनीतपूजनविधौ विश्वात्मनामर्हतां ।

शूयान्मंगलमक्षयं च जगते स्वस्त्यस्तु सधाय च ॥४॥

इन चारों वृत्तोंकरके मंगल प्रदीप करे । पीठे

शक्रस्तव पढे ॥ इति कल्पोक्त जिनपूजन विधि.

॥ अथ स्नात्र विधि ॥

अथ अतिशय अर्हभक्तिवाला श्रावक, नित्य,  
वा पर्वदिनमें, वा कीसी कार्यांतरमें, जिनस्नात्र कर  
नेकी इच्छा करे, तिसका विधि यह है ।

न दुःखमतिमात्रकं न विपदां परिस्फूर्जितं ।  
 न चापि यशसां क्षितिर्न विषमा नृणां दुस्थता ॥  
 न चापि गुणहीनता न परमप्रमोद ह्ययो ।  
 जिनार्चनकृतां जवे जवति चैव निःसंशयम् ॥ १ ॥  
 एतत्कृत्यं परममसमानंदसंपन्निदानं ।  
 पाताललोकः सुरनरहितं साधुभिः प्रार्थनीयम् ॥  
 सर्वारिन्नापचयकरणं श्रेयसां सं निधानं ।  
 साध्यं सर्वैर्विमलमनसा पूजनं विश्वजर्तुः ॥ २ ॥

यह पढके फिर पुष्पांजलिक्षेप करे. । पीठे धूप  
 हाथमें लेके पढे. ।

कर्परागरुसिद्धहचंदनवलामांसीशशैलेयक ।  
 श्रीवासजुमधूपराजघुस्तृणैरत्यंतमामोदितः ॥  
 व्योमस्थप्रसरच्छशांककिरणज्योतिःप्रतिष्ठादको ।  
 धूपोत् क्षेपकृतो जगत्रयगुरोस्सौजाग्यमुत्तंसतु ॥ १ ॥  
 सिद्धाचार्यप्रभृतीन्, पंच गुरुन् सर्वदेवगणमधिकम् ॥  
 क्षेत्रे काले धूपः प्रीणयतु जिनार्चने रचितः ॥ २ ॥

यह पढके धूपोत्क्षेप करे. । शक्रस्तव पढे. ॥  
 पीठे फिर पुष्पांजलि लेके ॥

जन्मन्यनंतसुखदे जुवनेश्वरस्य ।  
 सुत्रामभिः कनकशैलशिरःशिलायाम् ॥  
 स्नात्रं व्यधायि विविधांल' । । ।  
 कासारपट्टवलसरित्स

तां बुद्धिमाधाय हृदीह्कावे, स्नात्रं जिनेन्द्रप्रतिमाग  
णस्य ॥ कुर्वति लोकाः शुचन्नावज्ञाजो, महाजनो  
येन गतः स पन्थाः ॥ १ ॥ यह पढके पुष्पांजलि  
क्षेप करे ॥ २ ॥

परिमलगुणसारसङ्गुणाढ्या, बहुसंसक्तपरिस्फुरद्भिरे  
फा ॥ बहुविधबहुवर्णपुष्पमाला, वपुषि जिनस्य जव  
त्वमोघयोगा ॥ १ ॥

यहवृत्त पढके पगोंसें लेके मस्तकपर्यंत जिनप्रति  
माको पुष्पारोपण करे । पीठे 'कर्पूरसिद्धाधि०'  
इसकरके धूपोत्क्षेप करे. । पीठे शक्रस्तव पढे. ।  
पीठे फिर पुष्पांजलि हाथमें लेके ।

साम्राज्यस्य पदोन्मुखे जगवति स्वर्गाधिपैर्गुफितो ।  
मंत्रित्वं बलनाथतामधिकृतिं स्वर्णस्य कोशस्य च ॥  
विभ्रन्निः कुसुमांजलिर्विनिहितो जक्त्या प्रजोः पाद  
योर्धुःखौघस्य जलांजलिं सतनुताढालोकनादेव हि । १।  
चेतः समाधातुमनिंज्रियार्थं, पुण्यं विधातुं गणनाद्वय  
तीतम् ॥ निक्षिप्यतेर्हत्प्रतिमापदाये, पुष्पांजलिः प्रोक्त  
तज्जक्तिजावैः ॥ २ ॥

यह पढके पुष्पांजलिक्षेप करे. । सर्व पुष्पांजलि  
योंके अंतमें धूपोत्क्षेप, और शक्रस्तवपाठ अवश्य  
करना. ॥ तदनंतर पुष्पादिकरके प्रतिमा पूजे. ।  
पीठे मणि, स्वर्ण, ताम्र, मिश्रधातु. माटीमय, कलशे  
स्नात्रकी चौकीऊपरि स्थापन करना. तिनमें गंगो

दकमिश्रित सर्व जलाशयोंके पानी स्थापन करे.  
 चंदन केसर कर्पूरादि सुगंधी द्रव्य करके वासित करे.  
 चंदनादि और पुष्पमालासैं, कलशोंको पूजे. जल  
 पुष्पादिअभिमंत्रणकेमंत्र पूर्वे कहे हैं सो जानने.  
 पीठे एक श्रावक, अथवा बहुत श्रावक, पूर्वोक्त  
 वेष शौचवाले गंधसैं हस्तको लेपन करके, मालाचू  
 पित कंठवाले तिन कलशोंको हाथऊपरि रखे पीठे  
 स्वस्वयुद्धिअनुसारसैं जिनजन्माभिपेकचिन्हित स्तोत्रों  
 को जिनस्तुतिगर्जित पट्टपदादि ( ठप्पयश्चादि ) को  
 पढे । पीठे शार्दूलवृत्त पढे ।

जाते जन्मनि सर्वविष्टपपतेरिंद्रादयो निर्जरा ।

नीत्वा तं करसंपुटेन बहुभिः सार्द्धं विशिष्टोत्सवैः ॥

शृंगे मेरुमहीधरस्य मिलिते सानंददेवीगणे ।

स्नात्रारंजमुपानयंति बहुधा कुंजांबुगंधादिकम् ॥ १ ॥

योजनमुखान् रजतनिष्कमयान् मिश्रधातुमृद्रचितान्

दधते कलशान् संख्या तेषां युगषट्खदंतिमिता ॥ २ ॥

वापीकूपद्वदांबुधितडागपट्टवलनदनिजरादिभ्यः ॥

आनीतैर्विमलजलैः स्नानाधिकं पूरयंति च ते ॥ ३ ॥

कस्तूरीधनसारकुंकुममुराश्रीखंरुकंकोद्वकै ।

ह्रीवेरादिसुगंधवस्तुजिरलंकुर्वति तत्संवरम् ॥

देवेंद्रा वरपारिजातवकुलश्रीपुष्पजातीजपा ।

मालाभिः कलशाननानि दधते संप्राप्तहारस्वजः ॥ ४ ॥

ईशानाधिपतेर्निजांककुहरे संस्थापितं स्वामिनं ।

सौधर्माधिपतिर्मितामृतचतुःप्रांशुंक्षशृंगोज्ञैः ॥  
धारावारिजैःशशांकविमलैः सिंचत्यनन्याशयः ।  
शेषाश्चैव सुराप्सरस्समुदयाः कुर्वतिकौतूहलम् ॥ ५ ॥

वीणांमृदंगतिमिलार्द्रकटारून्नूर ।

ढक्कहुमुक्कपणवस्फुटकाह्लाजिः ॥

सद्मेणुजर्क्षरकडुंडुजिपुषुणीजि-

र्वयैः सृजंति सकक्षाप्सरसो विनोदनू ॥ ६ ॥

शेषाः सुरेश्वरास्तत्र, गृहीत्वा करसंपुटे ॥

कलशांस्त्रिजगन्नाथं, स्तपयंति महामुदः ॥ ७ ॥

तस्मिंस्तादृशउत्सवे वयमपि स्वर्लोकसंवासिनो ।

त्रांता जन्मविवर्त्तनेन विहितश्रीतीर्थसेवाधियः ॥

जातास्तेन विशुद्धबोधमधुना संप्राप्य तत्पूजनं ।

स्मृत्यैतत्करवाम विष्टपविजोः स्नात्रं मुदामास्पदम् ॥ ८ ॥

बालत्तणम्मि सामिश्च, सुमेरुसिहरम्मि कणयकल  
सेहिं ॥ तियसासुरेहि एहविश्चो, ते धन्ना जेहिं  
दिठोसि ॥ ९ ॥

यह पढके कलशोंकरके जिनप्रतिमाको अजि  
पेक करे । पीठे बडे ठोटेके क्रमकरके सर्व पुरुष  
स्त्रि जी गंधोदकोंसें स्नात्र करे । पीठे अजिपेकके  
अंतमें गंधोदकपूर्ण कलश लेके वसंततिलकावृत्त पढे ।  
संधे चतुर्विध इह प्रतिज्ञासमाने, श्रीतीर्थपूजनकृत  
प्रतिज्ञासमाने ॥ गंधोदकैः पुनरपि प्रक्षवत्वजस्तं,  
स्नात्रं जगत्रयगुरोरतिपूतधारैः ॥ १ ॥



यह पढके जिनपादोपरि कलशाजिपेक करके  
स्नात्रनिवृत्ति करे पीठे पुष्पांजलि देके पढे ।

इंद्राग्ने यम निर्ऋते जलेश वायो  
वित्तेशेश्वर जुजगा विरंचिनाथ ॥

संघट्टाधिकतमजक्तिचारजाजः

स्नात्रोस्मिन् जुवनविजोः श्रीयं कुरुध्वम् ॥ १ ॥

यह पढके स्नात्रपीठके पास रहे कटिपत दिक्  
पालपीठऊपरि, पुष्पांजलिक्षेप करे. । पीठे प्रत्येक  
दिशामें यथाक्रमकरके दिकपालोंको स्थापन करे. ।

पीठे एकैक दिक्पालका पूजन करे ।

सुराधीश श्रीमन् सुहृदतरसम्यक्तववसते ।

शचीकांतोपातस्थितविबुधकोट्यानतपद ॥

ज्वलद्गज्जाघातक्षपितदनुजाधीशकटक ।

प्रजोः स्नात्रे विघ्नं हर हर हरे पुण्यजयिनाम् ॥ १ ॥

“ ॐ शक्र इह जिनस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ १ ।

इदं जलं गृहाण १ । गधं गृहाण १ । पुष्पं गृहाण १ ।

धूपं गृहाण १ । दिपं गृहाण १ । नैवेद्यं गृहाण १ ।

विघ्नं हर १ । डुरितं हर १ । शांतिं कुरु १ । तुष्टिं

कुरु १ । पुष्टिं कुरु १ । कृद्धिं कुरु १ । वृद्धिं कुरु १ ।

स्वाहा ॥ ” इति पुष्पगंधादिजिरिंद्रपूजनम् ॥ १ ॥

बहिरंतरनंततेजसा विदधत्कारणकार्यसंगतिः ॥

जिनपूजनआशुशुद्धाणे, करु विघ्नप्रतिघातमंजसा ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ श्यञ्जे इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इत्यग्निपू-  
जनम् ॥ २ ॥

दीप्तांजनप्रज्जतनो तनुसंनिकर्ष ।  
वाहारिवाहनसमुद्गुरदंरुपाणे ॥  
सर्वत्र तुल्यकरणीयकरस्थधर्म ॥

कीनांश नाशय विपद्भिसरं क्षणेत्र ॥ १ ॥

“ ॐ यम इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति यमपू-  
जनम् ॥ ३ ॥

राक्षसगणपरिवेष्टितचेष्टितमात्रप्रकाशहतशत्रो ॥  
स्त्रात्रोत्सवेत्र निर्क्षते, नाशय सर्वाणि दुःखानि ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ निर्क्षते इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति  
नैर्क्षतपूजनम् ॥ ४ ॥

कल्लोलानीतलोलाधिककिरणगणस्फीतरत्नप्रपञ्च ।  
प्रोद्भूतौर्वाग्निशोचं वरमकरमहापृष्टदेशोक्तमानम् ॥  
चचञ्चीरिद्विशृंगिप्रभृतिजपगणैरञ्चितं वारुणं नो ।  
वर्ष्मर्द्धिद्यादपायं त्रिजगदधिपतेः स्त्रात्रसत्रे पवित्रे ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ वरुण इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति-वरु-  
णपूजनम् ॥ ५ ॥

ध्वजपटकृतकीर्त्तिस्फूर्त्तिदीप्यद्भिमान ।

प्रसृमरबहुवेगलक्षसर्वोपमान ॥

इह जिनपतिपूजासंनिधौ मातरिश्च-

न्नपनयसमुदाय मध्यवाह्यातपानाम् ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ वायो इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति वायु  
पूजनम् ॥ ६ ॥

कैलासवास विलासत्कमलाविलास ।

संशुद्धासकृतदौस्थ्यकथानिरास ॥

श्रीमत्कुवेरजगत्क्षपनेत्र सर्व ।

विघ्नं विनाशय शुभाशय शीघ्रमेव ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ कुवेर इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति कुवेर  
पूजनम् ॥ ७ ॥

गंगातरंगपरिखेलनकीर्णवारि, प्रोद्यत्कपर्दपरिमंफित  
पार्श्वदेशम् ॥ नित्यं जिनक्षपनदृष्टदः स्मरारे, विघ्नं  
निहंतु सकलस्यजगत्रयस्य ॥ १ ॥

“ ॐ ईशान इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति शान  
पूजनम् ॥ ८ ॥

फणमणिमहसा विज्ञासमानाः । कृतयमुनाजलसं  
श्रयोपमानाः ॥ फणिन इह जिनाक्षिपेककाले । वलि  
जवनादमृतंसमानयंतु ॥ १ ॥

“ ॐ नागा इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति नाग  
पूजनम् ॥ ९ ॥

विशदपुस्तकशस्तकरद्वयः । प्रथितवेदतया प्रमदप्रदः ॥  
जगवतः क्षपनावसरे चिरं । हरतु विघ्नजरं दुहि  
णो विजुः ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ ब्रह्मन् इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति ब्रह्म  
णः पूजनम् ॥ १० ॥

ऐसें क्रमसें दिक्पालपूजन करे । पीठे फिर जी हाथमें पुष्पांजलि लेकर आर्या पढ़े ॥

दिनकरहिमकरक्षुसुत, शशिसुतबृहतीशकाव्यरवित नयाः ॥ राहो केतो क्षेत्रप, जिनार्चने जवत सन्निहिताः ॥ १ ॥

यह पढ़के ग्रहपीठोपरि पुष्पांजलिक्षेप करे । पीठे पूर्वादिक्रमसें सूर्य, शुक्र, मंगल, राहु, शनि, चंद्र, बुध, बृहस्पति, इनको स्थापन करे. हेठ केतु को, और उपर क्षेत्रपालकों स्थापन करे. पीठे प्रत्येक ग्रहकका पूजन करे. ।

विश्वप्रकाशकृतजव्यशुजावकाश ।

ध्वांतप्रतानपरिपातनसद्विकाश ॥

आदित्य नित्यमिह तीर्थकराक्षिषेके ।

कल्याणपद्मवनमाकलय प्रयत्नात् ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ सूर्य इह शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति सूर्य पूजनम् ॥ १ ॥

स्फटिकधवलशुद्धध्यानविध्वस्तपाप ।

प्रमुदितदितिपुत्रोपास्यपादारविंद ॥

त्रिभुवनजनशश्वज्जंतुजीवानुविद्य ।

प्रथय जगवतोर्चा शुक्र हे वीतविघ्नम् ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ शुक्र इह शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति शुक्र पूजनम् ॥ २ ॥

प्रवलवलमिलितबहुकुशल, लालनाललितकलित

विघ्नहृते । जौमजिनस्त्रपनेऽस्मिन् विघटय विघ्नागमं  
सर्वम् ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ मंगल इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति मंग  
लपूजनम् ॥ ३ ॥

अस्तांहः सिंहसंयुक्त, रथ विक्रममंदिर ॥  
सिंहिकासुत पूजाया, मत्र संनिहितो जव ॥ १ ॥

“ ॐ 'राहो इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति राहु  
पूजनम् ॥ ४ ॥

फलिनीदल लीलयांतः, स्थगितसमस्तवरिष्ठविघ्न  
जात । रवितनय प्रबोधमेतात् जिनपूजाकरणैकसा  
वधानान् ॥ १ ॥

“ ॐ शने इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति शनि  
पूजनम् ॥ ५ ॥

अमृतवृष्टिविनाशितसर्वदो, पचितविघ्नविषः शश  
लांठनः ॥ वितनुतात्तनुतामिह देहिनां, प्रसृततापज  
रस्य जिनार्चने ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ चंद्र इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” चंद्रपूज  
नम् ॥ ६ ॥

बुधविबुधगणार्चितांग्रियुग्म, प्रमथितदैत्य विनी  
तदुष्टशास्त्र ॥ जिनचरणसमीपगोधुनात्वं, रचय मतिं  
जवधातनप्रकृष्टाम् ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ बुध इह ० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति बुधपू  
जनम् ॥ ७ ॥

सुरपतिहृदयावतीर्णमंत्रप्रचुर, कलाविकलप्रकाश  
जास्वन् ॥ जिनपतिचरणान्निपेककाले, कुरु वृद्धती  
वर विघ्नविप्रणाशम् ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ गुरो इह० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति गुरु  
पूजनम् ॥ ८ ॥

निजनिजोदययोगजगद्ययी, कुशलविस्तरकारण  
तां गतः ॥ जवतुकेतुरनश्वरसंपदां, सततहेतुरवारि  
तविक्रमः ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ केतो इह० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति केतु  
पूजनम् ॥ ९ ॥

कृष्णसितकपिलवर्ण, प्रकीर्णकोपासितांघ्रियुग्मस  
दा ॥ श्रीक्षेत्रपाल पालय, जविकजनं विघ्नहरणेन ॥ १ ॥

“ ॥ ॐ क्षेत्रपाल इह० शेषं पूर्ववत् ॥ ” इति  
क्षेत्रपालपूजनम् ॥ १० ॥

पीठे गंध, पुष्प, अक्षत, धूप, दीपसैं पूर्व कहे  
मंत्रोसैंही जिनप्रतिमाकी पूजा करे. पीठे हाथमें  
वस्त्र लेके वसंततिलकावृत्तपाठ पढे. ।

त्यक्त्वाखिलार्थवनितादिकञ्चूरिराज्यं

नि.संगतामुपगतो जगतामधीशः ॥

जिह्वुर्जवन्नपि स वर्ष्मणि देवदूष्य-

मेकं दधाति वचनेन सुरेश्वराणाम् ॥ १ ॥

यह पढके वस्त्र चढावे. इति वस्त्रपूजा ॥

पीठे नानाविध खाद्य, पेय, जह्य, लेखसंयुक्त

नैवेद्य. दो स्थानमें करके तिनमेंसे एक पात्र जिनके आगे स्थापके, श्लोक पढ़े. ।

सर्वप्रधानसद्भूतं, देहिदेहिसुपुष्टिदम् ॥

अन्नं जिनाग्रे रचितं, दुःखं हरतु नः सदा ॥ १ ॥

यह पढ़के जलचुलुककरके जिनप्रतिमाको नैवेद्य देवे. पीठे दूसरे पात्रमें चुलुककरकेही, ग्रहदिकृपालादिकोंको श्लोक पढ़के नैवेद्य देवे. ।

जो जो सर्वे ग्रहालोक, पालाः सम्यग्दृशः सुराः ॥

नैवेद्यमेतद्गृह्णन्तु, ज्वंतो जयहारिणः ॥ २ ॥

स्नात्र करायाविना जी पूजामें जिनप्रतिमाको इसही मंत्रकरके नैवेद्य देना. ॥ पीठे आरात्रिक मंगलदीपक पूर्ववत् । और शक्रस्तव जी पढ़ना. ॥

जिस प्रतिमाका स्थानस्थितहीका स्नपन कराया जावे, तिसके वास्ते सर्वकुठ तहांही करना. ॥

श्रीखंडकर्पूरकूरंगनाजि, प्रियंगुमांसीनखकाकुलुं  
डैः ॥ जगन्नयस्याधिपतेः सपर्या, विधौ विदध्यात्कुश  
लानि धूपः ॥ १ ॥

इस वृत्तकरके सर्वपूष्पांजलियोंके बिचाले धूपोत्क्षेप करना, और शक्रस्तवपाठ पढ़ना. ॥

प्रतिमा विसर्जनं यथा ॥

“ ॥ ॐ अर्हं नमो जगवतेर्हते समये पुनःपूजां प्रतीठ स्वाहा ॥ ” इति पुष्पन्यासेन प्रतिमाविसर्जनं ॥

“ ॥ ॐ ह्रः इंद्रादयो लोकपाला. सूर्यादयो ग्रहा

सद्देवपाताः सर्वदेवाः सर्वदेव्यः पुनरागमनाय स्वा  
हा ॥ " इति पूष्पादिचिर्दिकृपाल ग्रहविसर्जनम् ॥

आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मंत्रहीनं च यत्कृतम् ॥

त्सर्वं कृपया देवाः, क्षमंतु परमेश्वराः ॥ १ ॥

आव्हाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम् ॥

पूजां चैव न जानामि त्वमेव शरणंमम ॥ २ ॥

कीर्त्तिः श्रियो राज्यपदं सुरत्वं, न प्रार्थये किंचन देव

देव ॥ मत्प्रार्थनीयं जगत्प्रदेयं स्वदासतां मां नय

सर्वदापि ॥ ३ ॥

इति सर्वकरणीयांते जिनप्रतिमादेवादि विसर्जनविधि

अर्हत् अर्चनविधिमें जी ऐसेही विसर्जन

जानना. ॥ इति लघुस्नात्रविधिः ॥

पीठे ( गृहचैत्यपूजानंतर ) बडे देवमंदिरमें जाक

र, शक्रस्तवादित्तोत्रोंकरके जिनराजकी स्तवना कर

के, और जिनराजका पूजन करके, प्रत्याख्यान चिंत

वन करे. । पीठे चैत्यको प्रदक्षिणा करके, पौषधशा

ला ( उपाश्रय ) में जाकर, देवकीतरें बडे श्रानंदसे

साधुर्लको वंदन करे. सुंदरबुझिवाला होकर, पूजा

सत्कार करे । पीठे एकाग्रचित्त होकर साधुके मुख

से धर्मदेशना श्रवण करे पीठे मनमे धारा हुआ

प्रत्याख्यान करे. पीठे गुरुको नमस्कार करके कर्मा

दानको अर्णीतरें त्यागके, धन उपार्जन करे. यथा

योग्य स्थानमें व्यापार समाचरे. कुत्सित बुरा कर्म



प्राणोंके नाश हुए जी न करे. । पीठे अपने घरदेह  
 रामें अर्हत्की मध्यान्हपूजा करके, अन्नपानी समा  
 चरे. जक्तिसें साधुओंको दान देके, अतिथियोंकी  
 पूजा आदरसत्कार करके, और दीन अनाथ मार्ग  
 णगणको संतोषके, अपने व्रतऔर कुलके उचित  
 जोज्य वस्तुका जोजन करे. ॥ साधुको आमंत्रण  
 ऐसें करे. ॥ क्षमाश्रमण पूर्वक गृहस्थ कहें ।

“ ॥ हे जगवन् फासुएण एसणिज्जेण असण  
 पाणखाश्मसाश्मेण वथ्थकंवलपायपुच्छणपक्किग्गहेण  
 ओसहजेसज्जेण पक्किहेरूवेण सिज्जासंथारएण  
 जयवं मम गेहे अणुग्गहो कायवो ॥ ”

जोजनानंतर गुरुके पास शास्त्रका विचार करे,  
 पढे, सुने । पीठे धन उपर्जन करके घरको जाकर  
 संध्यापूजा करके सूर्यके अस्त होनेसें दो घन्टी पहि  
 ले, निजवांठित जोजन करे. सायंकालमें धर्मागार  
 में सामायिककरके पन्नावश्यक प्रतिक्रमण करे.  
 पीठे अपने घरमें आके शांतबुद्धिवाला हुआ, जब  
 एक पहर रात्रि जावे तब अर्हत्स्तवादिक पढके  
 प्रायः ब्रह्मचर्यव्रतधारी होके सुखसें निद्रा लेवे. जब  
 निद्राका अंत आवे तब परमेष्ठिमंत्रस्मरणपूर्वक जिन,  
 चक्री, आदिके चरित्रोंको चिंतन करे. और व्रता  
 दिकोंके मनोरथ अपनी श्वासे करे, ऐसें अहोरा  
 त्रिकी चर्या अप्रमत्त होके समाचरता हुआ, और

यथावत् कहे व्रतमें रहा हुआ, यह स्थ ची कल्याण  
जागी होता है. । इति व्रतारोपसंस्कारे गृहिणां  
दिनरात्रिचर्या ॥

वासनागुरुसामग्री, विजवो देहपाटवम् ॥

संघश्चतुर्विधो हर्षो, व्रतारोपे गवेष्यते ॥ १ ॥

वरकुसुमगंधश्चकय, फलजलनेवज्जाधूवदीवेहिं ॥

अष्ठविहकम्ममहणी, जिणपूआ अछाहा होई ॥२॥

इति व्रतारोप संस्कार

॥ अथ अंत्य संस्कार विधिः ॥

श्रावक यथावत् व्रतोंकरके निज जवको पालके  
कालधर्मके प्राप्त हुए, उत्कृष्ट आराधना करे, तिस  
का विधि यह है. । जिन अरिहंतोंके कल्याणक  
स्थानोंमें, निर्जीव शुचि पवित्र स्थंभिल—जगामें, वा  
अरण्यमें, वा अपने घरमें, विधिसें अनशन करना. ।  
तहां शुजस्थानमें ग्लानको पर्यंत आराधना कराव  
नी । तथा अवश्यमेव अमुकवेला निकट मरण होवे  
गा ऐसैं ज्ञानके हुए, तिथिवारनक्षत्रचंद्रवलादि न  
देखना । तहां संघका मीलना करना । गुरु, ग्लान  
को जैसे सम्यक्त्वारोपणमें तैसेंही नंदि करे. । नवरं  
इतना विशेष है सर्व नंदि देववंदन कायोत्सर्गादि  
पूर्वोक्त विधि 'संलेहणा आराहणा' इस नाम करके  
करावणा और वैयावृत्य कर कायोत्सर्गानंतर ।

“ ॥ आराधना देवता आराधनार्थं करेमि काउ

स्सग्गं अन्नथ्यज्जससिएणं० जाव-अप्पाणं वोसि  
रामि ॥” कहके कायोत्सर्ग करमा. कायोत्सर्गमें चार  
लोगस्स चिंतवन करना, पारके आराधना स्तुति  
कहनी. ॥ सा यथा ॥

यस्याः सान्निध्यतो ज्ञेया, वांछितार्थप्रसाधकाः  
श्रीमदाराधना देवी, विघ्नवातापहास्तु वः ॥ १ ॥  
शेषं पूर्ववत् ॥

पीठे तिसही पूर्वोक्तविधिसँ सम्यक्त्वदंरुका  
उच्चारण, द्वादशव्रतोंका उच्चारण करावणा. । वास  
क्षेपकायोत्सर्गादि जी, ‘संलेखना आराधना’ के  
आलापककरके तैसँही जाणना. । प्रदक्षिणा करनी,  
ग्लानकी शक्तिके अनुसार होवे जी, और नहीं जी  
होंवे. । दंरुकादिमें ‘जावनियमंपल्लुवासामि’ के  
स्थानमें ‘जावज्जीवाए’ ऐसँ कहना. । पीठे सर्व जीवों  
केसाथ अपराधकी क्षामणा करनी. । पीठे श्रावक  
परमेष्ठिमंत्रोच्चारणपूर्वक गुरुके सन्मुख हाथ जोडके कहें  
खामेमि सबजीवे सबे जीवा खमंतु मे ॥

मिन्ती मे सबज्रूएसु वेरं मज्झ न केणइ ॥ १ ॥ गुरु कहें

“ ॥ खामेह जो खमइ तस्स अही आराहणा  
जो न खमइ तस्स नहि आराहणा ॥ ” पीठे श्राव  
क क्षमाश्रमणपूर्वक कहें । “ जयवं अणुजाणह । ”  
गुरु कहें “ । अणुजाणामि । ” श्रावक परमेष्ठिमंत्र-  
पाठपूर्वक कहें ।

“ ॥ जे मए अणंतेणं जवप्रमणेणं पुढविकाइआ आलकाइआ तेउकाइआ वाउकाइआ वणस्सइका इआ एगिंदिआ सुहमा वा, वायरा वा, पज्जात्ता वा, अपज्जात्ता वा, कोहेण वा, माणेण वा, मायाए वा, लोहेण पंचिंदिअट्टेण वा, रागेण वा, दोसेण वा, घाइआ वा, पीडिआ वा, मणेणं वायाए काएणं, तस्स मिहामि डुक्कमं ॥ जो मेरे जीवने अनंत जव जमते थके पृथिवी अप तेउ वायु वणस्पतीके एकें द्रिय जीव, सुद्धमहो वादरहो पर्यासेहो अपर्यासेहो क्रोधसें, मानसें, मायासें, लोभसें, पंचेंद्रियपणे, राग सें, द्वेषसें, घातित किएहों, पीकित किएहों, तिसका मन वचन काया करके मिहामि डुक्कम हो ॥ ” फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

“ ॥ जे मए अणंतेणं जवप्रमणेणं वेइंदिआ वा सुहमा वा वायरा वा० शेषं पूर्ववत् ॥ ” जो मेरे जीवने अनंत जव जमते थके वेरिंद्रिय जीव, सुद्धमवादर क्रोधादिकसें घातित पीकित कीए होय तिनका त्रिकोटी सि० ” फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

“ ॥ जे मए अणंतेणं जवप्रमणेणं तेइंदिया सुह मा वा, वायरा वा,० शेषं पूर्ववत् ॥ ” जो मेनें अनंत जव जमते थके तेरिंद्रि जीव सुद्धम वा वादर क्रोधादिकसें घातित वा पीकित किए होय सो त्रिकोटी सि० ॥ । मे . पाठपूर्वक कहें

जे मए अणंत जवजमणेण चउरिंदिया जीवा, सुहमा वा वायरावा, शेषं पूर्ववत् । जो मेनें अनंत जव जमते थके चउरिंदिय जीव, क्रोधादिकसें, घातित पीकित किए होय तिनका त्रिकोटी मिथ्या मि डुक्कत हो. “ ॥ जे मए अणंतेणं जवप्रमणेणं पंचिंदिया देवावा मणुआ वा, नेरइआ वा, तिर एकजोणिआ वा, जलयरा वा, थवलयरा वा, खयरा वा, सन्निआ वा, असन्निआ वा, सुहमा वा, वायरा वा शेषं पूर्ववत् ॥ जो मेनें अनंत जव जमते थके पंचेइय जीव, देव, मनुष्य, नारकी, तिर्यंच, जलचर थलचर, खेचर, संझी, असंझी, सुद्ध वादर, क्रोधा, दिकसें घातित पीकित किए होय सो त्रिकोटी मिथ्या डुष्कृत हो. ॥ फिर परमेष्ठिमंत्र पाठपूर्वक श्रावक कहें ।

“ ॥ जं मए अणंतेणं जवप्रमणेणं अलिअं जणिअं कोहेण वा, माणेण वा, मायाए वा, लोहेण वा, पंचिंदियाहेण वा, रागेण वा, दोसेण वा, मणेणं वायाए काएणं तस्स मिथ्यामि डुक्कडं ॥ जो मेनें अनंत जव जमते थके असत्य जाषण कियाहो, क्रोधा दिक करके सो त्रिकोटी मिथ्याडुष्कृतहो. ॥” फिर परमेष्ठिमंत्र पढके कहे ।

“ ॥ जं मए अणंतेणं जवप्रमणेणं अदिअं गहिअं कोहेण वा, माणेण वा शेषं पूर्ववत् ॥ जो मेनें

अनंत जब जमते थके अदत्त ग्रहण कियाहो क्रोधादि करके सो त्रिकोटीसं मिथ्यादुष्कृतहो ॥ ” फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

“ ॥ जं मए अणंतेणं जवप्पमणेणं दिव्वं माणुस्संतिरिद्धं मेहुणं सेविअं कोहेण वा माणेण वा० शेषं पूर्ववत् ॥ जो मेने अनंत जब जमते थके देव संबंधी, मनुष्य संबंधी, तिर्यच संबंधी, क्रोधादिकसं मैथुन सेवन किया हो सो त्रिकोटी मिथ्यादुष्कृतहो. ॥ ” फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

“ ॥ जं मए अणंतेणं जवप्पमणेणं अछारस्स पावठाणाइं कयाइं कोहेण वा, माणेण वा,० शेषं पूर्ववत् जो मेने अनंत जब जमते थके अछारह पापस्थानक सेवन किए हो सो त्रिकोटी मिथ्यादुष्कृत हो ॥ ” फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

“ ॥ ज मे पुढविकायगयस्स सिखावेहुसक्करात्त न्हावाहुआगेरिअसुवन्नाइमहाधाउरूवं सरीरं पाणि वहे पाणिसंघट्टणे पाणिपीरुणे पाववट्टणे मिठत्तपो सणे ठाणे संलग्गं तं निदामि गरिहामि वोसिरामि॥” जो मेराजीव पृथ्वी कायगत होके शिखा पत्थर कांकरे रेती बालुका मट्टी सुवर्णादि सप्त धातु रूप शरीर वान् होके, प्राणिवध, प्राणि संघात, प्राणि पीरुन, पाप वर्धक, मिथ्यात्व पोषक स्थानमे लगा होय

तिनकों निंदताहुं गद्दी करताहुं और तिन पापोंको त्याग करताहुं ”

“ ॥ जं मे पुढविकायगयस्स सिलालेहुसकरासन्हा वालुआगेरिअसुवन्नाह्महाधाजरूवं सरीरं अरिहंत चे इएसु अरिहंतविंवेसु धम्मछाणेषु जंतुरस्कण्ठाणेषु धम्मो वगर ऐसु संलग्ग तं अणुमोआमि कद्धाणें अज्जिनंदेमि ॥ जो में पृथ्वीकायगत शिद्धा पत्थर कांकरे वालुकारेती माटी सुवर्णादि सप्तधातु रूप शरीर हो के अरिहंत चैत्यमें अरिहंत विंवमें, धर्म स्थानमें, जीव रक्षण स्थानमें, धर्मोपकरणमें, लगा होजं तो तिनकों अनुमोद ताहुं कद्धाण कारक जाणके आ नंदित होता हुं ॥ ” फिर परमेष्टिमंत्र पढके ।

“ ॥ जं मे आजकायगयस्स जलकरगमहिआओस्साहिमहरतणूरूवं सरीरं पाणिवहे पाणिसंघट्टणे पाणिपीरुणे पाववट्टणे मिथत्तपोसणे ठाणे संलग्गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ ”

जो में अपकायगत पानी करा हिम छार औस हेम हर तनुरूप शरीर होके प्राणि वध, प्राणि संघात, प्राणि पीरक, पाप वर्धक, मिथ्यात्व पोषक स्थान में, लगा होजं तो तिनपापकों निंदा गद्दी करके त्यागताहुं ।

“ ॥ जं मे आजकायगयस्स जलकरगमहिआओस्साहिमहरतणूरूवं सरीरं अरिहंतचेइएसु अरिहं

तर्विवेसु धम्मछाणेषु जतुरस्कणछाणेषु धम्मोवगर  
णेषु जिणन्हाणेषु तन्हदाहावहरणेषु संलग्गं तं अणु  
मोआमि कद्धाणेणं अज्जिनंदेमि ॥ जो में उपरोक्त  
अप्रकाय होके अर्हत् चैत्यमें, अर्हत् विंवमें, धर्म  
स्थानमें, जीव रक्षाकाममें, धर्मोप करण कार्यमें,  
लान्नाजिपे कमें, तृपादाह शमनमें, लगा होउं तो  
तिनकों अनुमोदताहुं ॥ " फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

“ ॥ जं मे तेजकायगयस्स अगणिइंगालमम्मुर  
जालाअलायविज्जुज्झातेअरूवं सरीरं पाणिवहे पाणि  
संघट्टणे पाणिपीडणे पाववट्टणे मिठत्तपोसणे ठाणे  
संसग्गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ ” “ जो  
में अग्नी कायगत अग्नि इंगाला मुर्मुर ज्वाला धूम्र  
सहित विद्युत् उड्का रूप शरीर होके प्राणिवधमें,  
प्राणि संघातनमें, प्राणि पीदनमें, पाप वर्द्धनमें,  
मिथ्यात्व पोषककें स्थानमें, लगा होउं तिनकों,  
निंदा गर्हासैं त्यागताहुं ”

“ ॥ जं मे तेजकायगयस्स अगणिइंगालमम्मुर  
जाला अलायविज्जुज्झातेअरूवं सरीरं सीआवहारे  
जिणपूआधूवकरणे नेवेज्जापाए बुहाहरणाहारपाए  
संलग्गं तं अणुमोएमि कद्धाणेणं अज्जिनंदेमि ॥ ”  
“ जो में अग्नीकाय गत अग्नि इंगाला मुर्मुर ज्वाला  
धूम्रसहित विद्युत् उड्का रूप शरीर होके, ठंमी दूर  
करनेमें, जिनराजके आगे धूप करनेमें, पूजाके उप



योगमें, नैवेद्य काममें, क्षुधाहरण आहार पाणिके उपयोगमें, लगा होउं तिनकां अनु मोदताहुं कढ्याण कारक जाणके आनंदित होताहुं ” फिर परमेष्ठि मंत्र पढके ।

“ ॥ जं मे वाउकायगयस्स वाउजंजासासरूवं सररीरं पाणिवहे पाणिसंघट्टणे पाववट्टणे मिहत्तपो सणे ठाणे संलग्गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि

“ जो में वायु कायगत शुद्धवायु जंजावायु श्वास रूप वायु शरीर होके प्राणि वधमें, प्राणि संघातनमें, पापवर्द्धनमें, मिथ्यात्व पोषणके कारणमें, लगा होउं तिनकों निंदा गर्हा करके त्यागताहुं ॥ ”

“ ॥ जं मे वाउकायगयस्स वाउजंजासासरूवं सररीरं पाणिरस्कणे पाणिजीवणे साहूण वेयावच्चे धम्मावहारे संलग्गं तं अणुमोएमि कट्ठाणेणं अजि नंदेमि ॥ जो में वायुकायगत, शुद्धवायु जंजावायु श्वास वायुरूप शरीर होके प्राणि रक्षणके कार्यमे, प्राणि जीवनके कारणमें, साधुओंकी वैय्यावच्चके काममें, गर्मीकी शान्तिके कारणमें, लगाहोउं तिन कों अनु मोदताहुं, कढ्याण कारक जाणके आनंदित होता हुं ” फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

“ ॥ जं मे वणस्सश्कायगयस्स मूलकठवह्विपत्त पुप्फफलवीअरसनिज्जासरूवं सररीरं पाणिवहे पाणि सघट्टणे पाणिपीरुणे पाववट्टणे मिहत्तपोसणे ठाणे

गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो में  
स्पती कायगत मूल ठाल काष्ठ पत्र पुष्प फल  
रस थरु रूप शरीर होके प्राणि वधमे, प्राणि  
तनमें, पाणि पीडनमें, पाप वर्द्धनमें, मिथ्यात्व  
स्थानोमें, लगा होउं तिनकों निंदा गर्हा  
के त्याग करता हुं ”

“ ॥ जं मे वणस्सइकायगयस्स मूलकटुबल्लिपत्त  
रुफलवीअरसनिज्जासरूवंसरीरं तुहाहरणेसु अरि  
चेइअपूयणेसु धम्मठाणेसु नेवज्जाकरणेसु जंतुर  
णठाणेसु संलग्गं तं अणुमोएमि कट्वाणेणं अजि  
मि ॥ जो में वनस्पती कायगत मूल काष्ठ ठाल पत्र  
पुष्प फल बीज रस थरु रूप शरीर होके कुधादूर  
रनेमे, अर्हत् प्रतिमाके पूजनमें, धर्म स्थानमें, नैव  
करनेमें, जीव रक्षाके कारणमें, लगा होउं तिन  
अनु मोदताहुं कट्याण कारक जाणके आनं  
होता हुं ” फिर परमेष्ठिसंन पढके ।

“ जं मे तसकायगयस्स रसरत्तमंसमेअअठिमज्जा  
कचम्मरोमनहनसारूवं सरीरं पाणिवहे पाणिसंघ  
णे पाणिपीडणे पाववट्टणे मिञ्चत्तपोसणे ठाणे संल  
गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो में त्रस  
काय गत रस रुधीर मांस मज्जा मेद शुक्र चर्म,  
तेम नरक नसा रूप शरीर होके प्राणि वधमें, प्राणि  
संघातनमें, प्राणि पीडनमे, पाप वर्द्धनमे, मिथ्यात्व

योगमें, नैवेद्य काममें, द्रुधाहरण आहार पाणिके उपयोगमें, लगा होउं तिनकां अनु मोदताहुं कल्याण कारक जाणके आनंदित होताहुं ” फिर परमेष्ठि मंत्र पढके ।

“ ॥ जं मे वाजकायगयस्स वाजजंजासासरूवं सरीरं पाणिवहे पाणिसंघट्टणे पाववट्टणे मिच्चत्तपो सणे ठाणे संलग्गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि

“ जो में वायु कायगत शुद्धवायु जंजावायु श्वास रूप वायु शरीर होके प्राणि वधमें, प्राणि संघातनमें, पापवर्द्धनमें, मिथ्यात्व पोषणके कारणमें, लगा होउं तिनको निंदा गर्हा करके त्यागताहुं ॥ ”

“ ॥ जं मे वाजकायगयस्स वाजजंजासासरूवं सरीरं पाणिरक्खणे पाणिजीवणे साहूण वेयावच्चे धम्मावहारे संलग्गं तं अणुमोएमि कट्ठाणेणं अज्जि नंदेमि ॥ जो में वायुकायगत, शुद्धवायु जंजावायु श्वास वायुरूप शरीर होके प्राणि रक्षणके कार्यमें, प्राणि जीवनके कारणमें, साधुओंकी वैय्यावच्चके काममें, गर्मीकी शांतिके कारणमें, लगाहोउं तिन को अनु मोदताहुं, कल्याण कारक जाणके आनंदित होता हुं ” फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

“ ॥ जं मे वणस्सश्कायगयस्स मूलकठठल्लिपत्त पुप्फफलवीअरसनिज्जासरूवं सरीरं पाणिवहे पाणि सघट्टणे पाणिपीरुणे पाववट्टणे मिच्चत्तपोसणे ठाणे

संलग्नं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो में वनस्पती कायगत मूल ठाल काष्ठ पत्र पुष्प फल बीज रस थरु रूप शरीर होके प्राणि वधमे, प्राणि संघातनमें, पाणि पीडनमें, पाप वर्द्धनमें, मिथ्यात्व पोषक स्थानोमें, लगा होजं तिनकों निंदा गर्हा करके त्याग करता हुं ”

“ ॥ जं मे वणस्सइकायगयस्स मूलककुठद्विपत्त पुप्फेफलवीअरसनिज्जासरूवं सरीरं दुहाहरणेषु अरि हंतचेइअपूयणेषु धम्मछाणेषु नेवज्जाकरणेषु जंतुर रक्खणछाणेषु संलग्नं तं अणुमोएमि कद्धाणेणं अजि नंदेमि ॥ जो में वनस्पती कायगत मूल काष्ठ ठाल पत्र पुष्प फल बीज रस थरु रूप शरीर होके दुधादूर करनेमें, अर्हत् प्रतिमाके पूजनमें, धर्म स्थानमें, नैव द्य करनेमें, जीव रक्षाके कारणमें, लगा होजं तिन कों अनु मोदताहुं कल्याण कारक जाणके आनं दित होता हुं ” फिर परमेष्टिमंत्र पढके ।

“ जं मे तसकायगयस्स रसरत्तमंसमेअअठिमज्जा सुक्कचम्मरोमनहनसारूवं सरीरं पाणिवहे पाणिसंघ द्दणे पाणिपीडणे पाववट्टणे मिवत्तपोसणे ठाणे संलग्नं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो मे त्रस काय गत रस रुधीर मांस मज्जा मेद शुक्र चर्म, रोम नरक नसा रूप शरीर होके प्राणि वधमें, प्राणि संघातनमें, प्राणि पीडनमें, पाप वर्द्धनमें,

योगमें, नैवेद्य काममें, द्रुधाहरण आहार पाणिके उपयोगमें, लगा होउं तिनकां अनु मोदताहुं कढ्याण कारक जाणके आनंदित होताहुं ” फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

“ ॥ जं मे वाजकायगयस्स वाजजंजासासरूवं सररीरं पाणिवहे पाणिसंघट्टणे पाववट्टणे मिष्ठत्तपोसणे ठाणे संलग्गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि

“ जो में वायु कायगत शुद्धवायु जंजावायु श्वास रूप वायु शरीर होके प्राणि वधमें, प्राणि संघातनमें, पापवर्द्धनमें, मिथ्यात्व पोषणके कारणमें, लगा होउं तिनकों निंदा गर्हा करके त्यागताहुं ॥ ”

“ ॥ जं मे वाजकायगयस्स वाजजंजासासरूवं सररीरं पाणिरक्खणे पाणिजीवणे साहूण वेयावच्चे धम्मभावहारे संलग्गं तं अणुमोएमि कल्लाणेणं अजि नंदेमि ॥ जो में वायुकायगत, शुद्धवायु जंजावायु श्वास वायुरूप शरीर होके प्राणि रक्षणके कार्यमे, प्राणि जीवनके कारणमें, साधुओंकी वैय्यावच्चके काममें, गर्मीकी शांतिके कारणमे, लगाहोउं तिनकों अनु मोदताहुं, कढ्याण कारक जाणके आनंदित होता हुं ” फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

“ ॥ जं मे वणस्सश्कायगयस्स मूलकठ्ठल्लिपत्त पुप्फफलवीअरसनिज्जासरूवं सररीरं पाणिवहे पाणि संघट्टणे पाणिपीरुणे पाववट्टणे मिष्ठत्तपोसणे ठाणे

संलग्नं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो मैं वनस्पती कायगत मूल ठाल काष्ठ पत्र पुष्प फल बीज रस थरु रूप शरीर होके प्राणि वधमे, प्राणि संघातनमें, पाणि पीकनमें, पाप वर्द्धनमें, मिथ्यात्व पोषक स्थानोंमें, लगा होऊं तिनकों निंदा गर्हा करके त्याग करता हूं ”

“ ॥ जं मे वणस्सइकायगयस्स मूलकहुवह्विपत्त पुष्पफलबीअरसनिज्जासरूवंसरीरं बुहाहरणेषु अरि हंतचेइअपूयणेषु धम्मछाणेषु नेवज्जाकरणेषु जंतुर रक्षणछाणेषु संलग्नं तं अणुमोएमि कट्वाणेषं अजि नंदेमि ॥ जो मैं वनस्पती कायगत मूल काष्ठ ठाल पत्र पुष्प फल बीज रस थरु रूप शरीर होके बुधादूर करनेमें, अर्हत् प्रतिमाके पूजनमें, धर्म स्थानमें, नैव द्य करनेमें, जीव रक्षाके कारणमें, लगा होऊं तिन कों अनु मोदताहूं कट्याण कारक जाणके आनं दित होता हूं ” फिर परमेष्टिमंत्र पढ़के ।

“ जं मे तसकायगयस्स रसरत्तमंसमेअअठिमज्जा सुक्कचम्मरोमनहनसारूवं सरीरं पाणिवहे पाणिसंघं दृणे पाणिपीडणे पाववट्टणे मिठत्तपोसणे ठाणे संल ग्नं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो मैं त्रस काय गत रस रुधीर मांस मज्जा मेद शुक्र चर्म, रोम नख नसा रूप शरीर होके प्राणि वधमें, प्राणि संघातनमें, प्राणि पीडनमें, पाप वर्द्धनमें, मिथ्यात्व

पोषणमे लगा होउं तिनकों निंदापूर्वक त्यागताहुं ”

“ जं मे तसकायगयस्स रसरत्तमंसमेअअट्ठि मज्झासुक्कचम्मरोमनहनसारूवं सरीरं अरिहंतचेइ एसु अरिहंतविंवेसु धम्मछाणेषु जंतुरक्खणछाणेषु धम्मो वगरणेषु संलग्गं तं अणुमोएमि कल्लाणेणं अज्जि नंदेमि ॥ जो में त्रस काय गत रस रुधीर मांस हारु चरवी शुक्र चर्म रोम नखरूप शरीर होके अर्हच्चैत्यमें, अर्हत् विंवमें, धर्म स्थानमे, जंतु रक्षा मे, धर्मों पकणमें लगा होउं तिनकों अनु मोदके आनंदित होता हुं ॥ ” फिरपरमेष्टिमंत्र पढके ।

“ ॥ जं मए इह जवे, मणेणं वायाए काएणं दुट्ठं चिंतिअं, दुट्ठं जासिअं, दुट्ठं कयं, तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो मेनें इह जवमें अनंत जव त्रमणमें मन वचन काया करके दुष्ट विचार कियाहो दुर्वचन बोलेहो, दुष्ट प्रवृत्ति करीहो तिन कों निंदा पूर्वक त्याग करताहुं ”

“ ॥ जं मए इह जवे, मणेणं वायाए काएणं सुट्ठं चिंतिअं, सुट्ठं जासिअं, सुट्ठं कयं, तं अणुमोणुमो एमि कल्लाणेणं अज्जिनंदेमि ॥ जो मेने इह जवमें, अनंत जव त्रमणमें, मन वचन काया करके श्रेष्ठ विचार कियाहो, श्रेष्ठ जाबा बोली हो, श्रेष्ठ प्रवृत्ति करीहो तिनकी अनु मोदना करताहुं, कल्याण कार क जानके आनंदित होताहुं ॥ ”

यहां पहिलां समारोपितसम्यक्त्व व्रतको जी  
फिर सम्यक्त्व व्रतारोप करना. और जिसको पहि  
लें सम्यक्त्व व्रतारोप न करा होवे, तिसको जी  
अंतकालमें सम्यक्त्व व्रतारोप करना योग्य है. । जिस  
को पहिलां व्रतारोप करा होवे, तिसको इस अंत  
समयमें एकशेचौवीस अतिचारोंकी आलोचना करा  
नी. । वे अतिचार आश्यकदि सूत्रोंसे जान लेने. '  
पीठेआलोचनाविधि करना, सो प्रायश्चित्तविधिसें  
जानना. । पीठे गुरु सर्व संधसहित वासअक्षतादि  
ग्लानके शिरमें निक्षेप करे ॥

॥ इति अंत्य संस्कारे आराधना विधिः ॥

पीठे ग्लान ( रोगी-बीमार ) क्षमाश्रमण परमे  
ष्टिमंत्र पाठपूर्वक कहें ॥

आयरियजवश्चाए, सीसे साहिम्मिए कुलगणे अ ॥

जे मे क्या कसाया, सबे तिविहेण खासेमि ॥ १ ॥

सबस्स समणसंधस्स, जगवओअंजलिं करियसीसे ॥

सवं खमावइत्ता, खमामि सबस्स अहयंपि ॥ २ ॥

सबस्स जीवरासिस्स, जावउं धम्म निहियनियचित्तो ॥

सवं खमावइत्ता, खमामि सबस्सअहयंपि ॥ ३ ॥

“ ॥ जयवं जं मए चउगइगएणं देवा तिरिआ

मणुस्सा नेरइआ चउकसाओवगएणं पंचिंदिअवस

हेणं इहम्मि जवे अत्तेसु वा जवग्गहणेसु मणेणं

वायाए काएणं दूमिआ संताविआ अजिताइया तस्स



मिष्टामि दुक्कमं जेहिं अहं अजिदूमिअों संताविअो  
अजिह्अो तमहंपि खमामि ॥ ”

पीठे गुरु दंभकसहित इन तीनों गाथाका विस्तारसे व्याख्यान करे । पीठे ग्लान, गुरु साधु साध्वी श्रावक श्राविकाओंको प्रत्येकक्षामणां करे. । यहां गुरुओंको वस्त्रादि दान, और संघको पूजासत्कार जानना ॥ इत्यंतसंस्कारे क्षामणाविधिः ॥

अथ मृत्युकालके निकट हुए, ग्लान, पुत्रादि कोंसे जिनचैत्योंमें महापूजा स्नात्रमहोत्सव ध्वजारोपादि करावे, चैत्यधर्मस्थानादिमें धन लगावे. । पीठे परमेष्ठिमंत्रोच्चारपूर्वक पढे. ।

जे मे जाणंतु जिणा, अवराहा जेसु १ ठाणेषु ॥

तेहं आलोएमि, उवट्ठिअो सब्बकालंपि ॥ १ ॥

ठउमठो मूढमणो, कित्तियमित्तंपि संजरइ जीवो ॥

जं च न सुमरामि अहं, मिष्टामि दुक्कमं तस्स ॥२॥

जं जं मणेण वरू, जं जं वायाइ जासिअं किंचि ॥

जं जं काएण कयं, मिष्टामि दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥

खामेमि सब्बजीवे, सब्बे जीवा खमंतु मे ॥

मित्ती मे सब्बजूएसु वेरं मच्च न केणइ ॥ ४ ॥

पीठे तीन नमस्कार पाठपूर्वक कहें ।

“ ॥ चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो, मंगलं । चत्तारि लोघुत्तमा, अरिहंता लोघुत्तमा, सिद्धा लोघु

त्तमा, साह लोघुत्तमा, केवलिपन्नत्तो धम्मो लोघु  
त्तमो । चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पव  
ज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पव  
ज्जामि, केवलिपन्नत्तं धम्मं, सरणं, पवज्जामि ॥”

यह पाठ तीन बार पढे । पीठे गुरुके वचनसें  
अष्टादश ( १७ ) पापस्थानकोंको वोसरावे यथा.

“ ॥ सर्वं पाणाइवायं पच्चस्कामि । सर्वं मुसावायं  
पच्चस्कामि । सर्वं अदिन्नादाणं प० । सर्वं मेहुणं  
प० । सर्वं परिग्गहं प० । सर्वं राईजोअणं प० । सर्वं  
कोहं प० । सर्वं माणं प० । सर्वं मायं प० । सर्वं  
लोहं प० । पिज्जं प० । सर्वं दोसं कल्लहं अप्परकाणं  
अरईरईपेसुन्नं परपरिवायं मिठादसंणसल्लं इच्चेइआइ  
अछारस पावछाणाइं डुविहं तिविहेणं वोसिरामि  
अपत्तिमम्मि ज्जसासे तिविहं तिविहेणं वोसिरामि॥”

पीठे गीतार्थगुरु, श्रीयोगशास्त्रके पांचमे प्रकाशके  
कथनसें, और कालप्रदीपादिशास्त्रके कथनसें, ग्लान  
नके आयुका दाय जानके ( जक्तप्रत्याख्यानप्रकीर्णक  
शास्त्रमें लिखा है कि, यदि कोई तथ्यज्ञानी कहे,  
अथवा कोई सम्यग्दृष्टी देवता कहे कि, अमुकदि  
न तेरा अवश्य मरण है, तबतो अपना संहननधृ  
तिवल जानके यावत् जीवका अनशन करना. परंतु,  
जो कोई मरणदिनके निश्चयविना यावत् जीवका  
अनशन करे, करावे, सो आत्मघाती साधुश्रावक

घाती पंचेंद्रियघाती है;) (कालज्ञानके विषयमे कितने क शास्त्रोमे ऐसे लक्षण लिखेहैं कि निरंतर पंदरे दिन सूर्यनामी प्रातःकाल वहे तो पनरे दिनका आयु. एक मास तक प्रातःकाल सूर्यनामी वहे तोषट् मासायु. पांचदिन अखंरु सूर्य नामी वहे तो ठ मासायु. वायु की नाभि पित्तके स्थानमे, पित्तकी नामी कफके स्थानमे, कफ कंठमे आवे तो रोगी वचेगा नहीं. मस्तक गरम हृदय, नाभि, नाशिका हाथ पग ठंडे रहे तो मरण. उश्वास गरम व नीश्वास ठंढा वहे तो मरण. अंग कंप, गतिजंग, शरीरका वर्णका बदलना, खाद वा गंधकों न समजे तो अवश्य करण जाणना, हाथ पावकी घुटी, कपोल, गलेके पासकी नाडी चलनी रुक जाय वा मंद परुजाय तो मरण कहना. जो अपनी जिह्वाग्र, नासाग्र, झुकुटी, न देखेतो मरण. अपनी तीन अंगुली मुखमें न जावे तो मरण. झुकुटी न दीखे तो सातदिन, कर्णेश्वर न सूने तो पाच दिन कों मरण होना समजना. जिह्वा काली पडे वा, मुख लाल हो जाय तो मरण. पिसावकी धारामे बिंदु होजाय वा वीर्यपात हो जाय तो सातमे दिन मरण. नामीयोंका मंद परुना, इंद्रियोंके विषयका न समजना, गतीका जंग होना, कंठमें कफका रुकना, नाशिकाके पवनका ठंढा वहना, नाशिका टेढ़ी होना, जमणी जूजा मे उर्द्ध श्वासका वहना यह

तात्कालिक मरणके चिन्ह जाणने ॥ रोगी दर्पणमें अपना मस्तक न देखे तो अवश्य मरे. जरणी, मघा, अश्लेषा, मूल, कृत्तिका, जेष्ठा, आर्द्रा, शत जिया, तीनपूर्वा, यह नक्षत्रमे मांदा पड़ेतो रोगी न बचे. जिसका बलगम चिकना होके गलेसें लुटे नहीं तो समजो कि अब आयुष्य बिलकुल कम है. जिसकों ठीक आनेके साथ जाना पेसाव हो जावे तो, जिसकी जवानपर कांटे आ जावे, वा काढ़ी पड़जावे व अवाज न देशके तो, जानो तीन रोजका जीनाहै. जिसकी नेत्रोंकी एकवा दोनोहि पुतली फिरजाय वा नेत्रों सें दिखाइ न देवे तो जानो कि मरना नजीक है. जिसके हाथ फेरके वीसोनख काले पड़जाय, हाथ पेरमें ठंढाइ होके शिरमे गरमी आजाय तो जानो मरना नजीक आया. जिसका उच्चार शुद्ध न हो, नेत्रोंमें रोशनी नहो, कानोंसे सुनना, नाकसें खुशबो लेना, बंध हो जाय, अनामीका उंची नउपड शके, तो जानोकी अवश्य अपना काल समय नजीक है. यद्यपि यह लक्षणोंसे प्रायः मरणका निश्चय होजोता हि है तथापि कोइ अतिशय ज्ञानी वा देवादिकोंके यथातथ्य वचन सिवाय अनागर अणशन उच्चराने कि आज्ञानहीहै. इसलिये सागारी अनशन कराना उचितहै) संघ की, ग्लानके संबंधियोंकी, तथा नगरके राजादिकी अनुमति लेके, अनशनका उच्चार कराना.

ग्लान, शक्रस्तव पढके तीनवार परमैष्टिमंत्रको पढके गुरुके मुखसें उच्चरे. । यथा.

“ ॥ जवचरिमं पच्चस्कामि तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नान्नणाजोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ” इति सागारानशनम् ॥

अंतर्मुहूर्त शेष रहे हूए, निरागार अनशन कराना ॥ यथा ॥

“ ॥ जवचरिमं निरागारं पच्चस्कामि, सबं असणं, सबं पाणं, सबं खाइमं, सबं साइमं, अन्नान्नणाजोगेणं, सहसागारेणं, अइयं निंदामि, पक्खिपुन्नं संवरेमि, अणा गय पच्चस्कामि, अरिहंतसखियं, सिद्धसखियं, साहु सखियं देवसखियं, अप्पसखियं, वोसिरामि ॥ ”

जइ मे हुआ पमाउं, इमस्स देहस्स इमाइ वेलाए ॥ आहारमुवहिदेहं, तिविहं तिविहेण वोसिरिअं ॥१॥

तब गुरु “निवारगपारगो होहि” ऐसें कहता हुआ संघसहित वासअक्षतादि ग्लानके सन्मुख क्षेप करे. । शांतिके वास्ते ‘अछावयंमि उसहो’ इत्यादि स्तुति पढे. और, ‘चवणं जम्मणज्जुमी’ इत्यादि स्तव पढे. । गुरु निरंतर ग्लानके आगे तीनजुवनके चैत्योंका व्याख्यान करे, अनित्यतादि बारां जावनाका व्याख्यान करे, अनादिजवस्थितिका व्याख्यान करे, अनशनके फलका व्याख्यान करे. । और

संघ गीतनृत्यादि उत्सव करे. । ग्लान जीवितमरण की इच्छाको त्यागके समाधिसहित रहे. । पीठे अंतर्मु हूर्त्तके आयां, ग्लान “सर्वं आहारं, सर्वं देहं, सर्वं उवहिं, वोसिरामि” ऐसैं कहें । पीठे ग्लान पंचपरमे ष्टिस्मरणश्रवणयुक्त शरीरको त्यागे ॥

॥ इति अनशनविधिः ॥

॥ अग्निसंस्कार विधि. ॥

मरणकालमें ग्लानको कुशकी शय्याऊपर स्थापन करना । “ । जन्ममरणे भूमावेव इति व्यवहारः । ”

अथ सर्वज्ञावके जोक्ता कर्मके जोरनेवाले चेत नारूप जीवके गये हुए, अजीव पुञ्जरूप तिसके शरीरको सनाथता ख्यापनार्थ, तिसके पुत्रादिकोंके वास्ते, तीर्थसंस्कारविधि कहते हैं । सर्व ब्राह्मणको शिखा वर्जके शिर दाढी मूँठ मुंमन कराना चाहिये, कितनेक क्षत्रियवैश्यको भी कहते हैं. । तथा शवका संस्कार सर्व स्ववर्ण ज्ञातियोंने करना, अन्यवर्ण ज्ञातिवालोंने तिसका स्पर्श नहीं करना. । पीठे गंध तैलादिसैं और जले गंधोदकसैं शवको स्नान करना, गंधकुंकुमादिसैं विलेपन कराना, मालापहिराना स्वस्वकुलोचित वस्त्राभरणसैं विभूषित करना शूद्र जातिकों सर्वथा मुंमन नहीं. । पीठे नवीन काष्ठकी पगविनाकी कुश संथरी जले वस्त्रसैं ढांकी

हुई शय्याके ऊपर, शय्याके उपकरणसहित, शवको स्थापन करना। यहां गृहस्थके मृत्युनक्षत्रके नक्षत्रपूत लेका विधान, कुशपुत्रादिविधि यतिकी तरें जानना. नवरं कुशपुत्रक गृहस्थवेषधारी करणे ॐ वर्णानुसार तिसके ऊपर नानाविध वस्त्र सुवर्ण मणि विचित्र वस्त्रका करा प्रासाद (मांरवी) स्थापन करना। पीठे स्वज्ञातीय चारजणे परिजनके साथ स्कंधऊपर उठाए शवको, स्मशानमें ले जावे.। तहां उत्तरजागमें शवका शिर रखके चितामें स्थापन करके, पुत्रादि अग्निसें संस्कार करे.। अन्न नहीं खानेवाले वालकोंको भूमिसंस्कार करना। तहां प्रेतप्रतिग्राहियोंको दान देना। पीठे सर्व स्नान करके, अन्यमार्ग होकर अपने घरको आवे. तीसरे दिनमें चिताज्जस्मका, पुत्रादि नदीमें प्रवाह करावे.। तिसके हार तीर्थोंमें स्थापन करे.। तिसके अगले दिनमें स्नान करके शोक दूर करे.। जिनचैत्योंमें जाके, परिजनसहित जिनविंवको बिना स्पर्श, चैत्यवंदन करे.। पीठे उपाश्रयमें आके गुरुको नमस्कार करे गुरु जी संसारकी अनित्यतारूप

\* रोहिणी, विशाखा, पुनर्वसु, उत्तराषाढा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तरा जाषपद, ए व नक्षत्रमेंसें कोईजी एक नक्षत्र मरण समय होय तो दर्जके दो पुतले बनाके नीनामीके साथ रखणा. जेष्टा, आर्द्रा, स्वाती, शतजिषा, जरणी, अश्लेषा ए व नक्षत्रमेंसें कोईजी होय तो पुतले न करना. और दुसरे १५ नक्षत्रमेंसें कोई नक्षत्र होय तो एक पुतला करना.

धर्मदेशना करे । पीठे स्वस्वकार्यमें सर्व तत्पर होवे ।  
 अंत्य आराधनासैं लेके, शोक, दूर करनेतक सुहू  
 र्त्तादि न देखना, अवश्य कर्त्तव्य होनेसैं । यमलयो  
 गमें, त्रिपुष्करयोगमें, मृगशिर । चित्रा । धनिष्ठा ।  
 मंगल । गुरु । शनि । २ । १२ । ७ । इति त्रयाणां  
 योगे यमलयोगः ॥ कृतिका । पूर्वाषाढगुनी । विशा  
 खा । उत्तराषाढा । पूर्वाजाद्रपदा । पुनर्वसु । मंगल ।  
 गुरु । शनि २ । १२ । ७ । इति त्रिपुष्करयोगः ॥ कृति  
 का । विशाखा । जरेणी । इति मिश्रनक्षत्राणि ॥ जरे  
 णी । मघा । पूर्वाषाढगुनी पूर्वाषाढा । पूर्वाजाद्रपदा  
 इति क्रूरनक्षत्राणि ॥ रोहिणी । उत्तराषाढ । उत्त  
 राषाढ । इति ध्रुवनक्षत्राणि ॥ आर्द्रा, मूल, अनुरा  
 धा, मिश्र, क्रूर और ध्रुव, इन नक्षत्रोंमें प्रेतक्रिया  
 नहीं करनी । धनिष्ठासैं लेके पांच नक्षत्रोंमें तृणका  
 षादि संग्रह नहीं करना । शय्या, दक्षिणदिशकी  
 यात्रा, मृतक कार्य, गृहोद्यम, ( घर बनाना ) आदि  
 नहीं करना । रेवती, श्रवण, अश्लेषा, अश्विनी,  
 पुष्य, हस्त, स्वाति मृगशिर, इन नक्षत्रोंमें, और  
 सोम, गुरु, शनी, इन वारोंमें प्रेतकर्म करना बुद्धि  
 मान् कहते हैं । स्वस्व वर्णके अनुसार जन्ममरण  
 का सूतक एकसदृश होता हैं ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्यकों  
 पुरुषोंका दश और स्त्रीका एकादश दिन सूतक  
 होता है. परदेशका जन्म मरण सूतक धार्मिक



कार्यमें बाधकारी न होता है. और गर्जपातमें तीन दिनका सूतक होता है. अन्य वंशवालेके मृत्यु हुए, वा जन्म हुए विवाहित पुत्रिकों सूतकवालेके अन्न के खानेसे, इन सर्वमें तीनदिनका सूतक होता है. अन्न नहीं खानेवाले बालकका सूतक तीन दिनका होता है. आठ वर्षसे कम ऐसे बालकका भी विज्ञा-  
गोन सूतक होता है. स्वस्ववर्णानुसार सूतकके अंत में जिनस्तव महोत्सवादि और साधर्मिकवात्सल्या-  
दि करना, जिससे कल्याणप्राप्ति होवे. ॥

इति अंत्य संस्कार विधिः ॥

तत् समाप्ते समाप्तोयं अष्टम परिच्छेदः

शिवमस्तु सर्वजगतः, परहित निरता ज्वंतु चूत  
गणाः ॥ दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखिनो ज्वंतु  
लोकाः ॥ लेखकपाठकयोः शिवमस्त्विति ॥

॥ इति प्रथम विज्ञागः समाप्तः ॥

---

